# ٢- فهرس الأحاديث القولية


| الطرف | الراوى | الجزء والصفحة |
|---|---|---|
| **(الألف)** | | |
| «آلبر أردن بهذا؟ ما أنا بمعتكف» | عائشة | ١٩٢/٩ |
| «آلبر تقولون بهن؟» | عمرة بنت عبد الرحمن | ١٩٣/٩ |
| «آلبر يردن» | عائشة | ١٧٣/٩ |
| «آجرت نفسى من خديجة سفرتين بقلوص» | جابر | ١١٦/١٢ |
| «آذاك هوام رأسك» | كعب بن عجرة | ٤٦٦/٩ |
| «آرسلك أبو طلحة؟» | أنس بن مالك | ٤٢/١٥ |
| «آلصبح أربعا؟...» | ابن بحينة | ٢٨٥/٥ |
| «آلله» | ركانة | ٢٦٨/١٥، ١٠٦/٢٠ |
| «آلله الذى لا إله إلا هو قتلته؟» | عبد الله بن مسعود | ٢٠٩/١٨ |
| «آلله لقد قتل؟» | عبد الله بن مسعود | ٣٠٧/١٨ |
| «آمرك بتقوى الله وعليك بنفسك...» | سهل بن سعد | ٥٩١/١٦ |
| «آمركم بأربع وأنهاكم عن أربع» | ابن عباس | ١٠٩/١٣، ١٣٥ |
| «آمركم بالإيمان تدرون ما الإيمان؟...» | ابن عباس | ٤٠٠/٨ |
| «آمره أن يتصدق بخمسى دينار» | عمر بن الخطاب | ٤٢٦/٢ |
| «آمين» | وائل بن حجر | ٤٤٣/٣ |
| «آمين» | أبو هريرة | ٤[illegible]/٣ |
| «آمين آمين آمين» | أبو هريرة | ٣٧/٩ |
| «آية بينى وبينك يوم القيامة...» | عبد الله بن أنيس | ٤٧١/٦ |
| «آية ما بيننا وبين المنافقين أنهم لا يتضلّعون من زمزم» | عبد الله بن عباس | ١٧١/١٠ |
| «آية المنافق إذا اؤتمن خان» | - | ١٢/١٢ |
| «آية المنافق ثلاث...» | أبو هريرة | ١٣/١٢، ٨٨/١٣، ٢١/ ٤٥ |

| | | |
|---|---|---|
| «أبا جندل اصبر واحتسب...» | مروان والمسور بن مخرمة | ١٤٣/١٩ |
| «أبا عمير ما فعل النغير؟» | أنس بن مالك | ٣٦٢/١٠، ٤١٣/١٩ |
| «أبا هر...» | أبو هريرة | ٥٦٦/١٧ |
| «أبا يحيى» | شيبان | ٤٦٩/٨ |
| «أبايعك على أن تعبد الله...» | جرير بن عبد الله | ٤٣/١٨ |
| «ابتاعى وأعتقى...» | عائشة | ٣٨٦/٢١، ٥٠٤ |
| «ابتاعيها واشترطى لهم الولاء...» | عائشة | ١٦٢/١٤ |
| «ابتغوا فى مال اليتيم....» | يوسف بن ماهك | ٨٧/٨، ٣٢٤/١١ |
| «ابدأ بنفسك فتصدق عليها....» | جابر بن عبد الله | ٣٢١/٨ |
| «ابدأن بميامنها ومواضع الوضوء منها» | أم عطية | ٢٠٩/٧ |
| «ابدءوا بما بدأ الله عز وجل به» | جابر بن عبد الله | ٢٥٨/١ |
| «أبدلها» | البراء بن عازب | ٣٠٣/١٩ |
| «ابدئى بميامنها ومواضع الوضوء» | أم عطية | ٢٠٩/٧ |
| «أبرد...» | أبو ذر | ٢٢٥/٣، ٢٢٦ |
| «أبردوا بالصلاة فإن شدة الحر من فيح جهنم» | المغيرة بن شعبة | ٢٢٩/٣، ٢٣٠ |
| «أبردوا بالظهر فإن شدة الحر من فيح جنهم» | أبو سعيد | ٢٢٥/٣ |
| «أبريها فإن الإثم على المحنث» | عائشة | ٩٨/٢٠ |
| «ابسط رجلك» | البراء | ٢٦٧/١٨ |
| «أبشر بخير يوم مر عليك مذ ولدتك أمك» | كعب بن مالك | ١٢٠/١٨ |
| «أبشر فقد جاءك الله بقضائك» | بلال | ٥٨٠/١١، ١٠٧/١٩ |
| «أبشر يا هلال» | ابن عباس | ٤٢٥/١٥ |
| «أبشروا فقد جاء فارسكم» | سهل ابن الحنظلية | ٤٨٩/١٨ |
| «أبشروا فوالله لأنا بكثرة الشىء...» | عبد الله بن حوالة | ٥٩٠/١٨ |
| «أبشرى يا عائشة فإن الله قد أنزل عذرك» | عائشة | ٧٢/١٤ |
| «أبصروا فإن جاءت به أسحم أدعج...» | سهل بن سعد | ٤٤٤/١٥ |
| «أبصروها فإن جاءت به أبيض سبطًا...» | أنس | ٢٨٣/٢١ |
| «أبصروها فإن جاءت به أثيبج...» | ابن عباس | ٤٢٦/١٥ |

| | | |
|---|---|---|
| «أبصروها فإن جاءت به سابغ الأليتين...» | ابن عباس | ٢٨٤/٢١ |
| «الأبعد فالأبعد من المسجد أعظم أجرًا» | أبو هريرة | ٥٢٨/٥ |
| «أبعدك الله أنت عجلت» | عمرو بن شعيب | ٢٨٥/١٦ |
| «أبعدهما وأطيبهما» | ابن عباس | ١١٣/١٢ |
| «أبغض الحلال إلى الله الطلاق» | ابن عمر | ٢٠٨/١٥ |
| «أبغض الرجال إلى الله الألد الخصم» | عائشة | ٣١٤/٢٠ |
| «أبغض الناس إلى الله ملحد فى الحرم» | ابن عباس | ١٧٢/١٦ |
| «ابغنى أحجارًا...» | أبو هريرة | ٣٢٧/١ |
| «ابغونى الضعفاء...» | أبو الدرداء | ٦٨/٧، ٦٩، ٢٢٨/١٣ |
| «أبك جنون؟» | أبو هريرة | ١٥٨/١٧، ١٩٧ |
| «أبك جنون؟» | جابر بن عبد الله | ١٧٤/١٧ |
| «أبكر أم ثيب؟» | سعيد بن المسيب | ٢٠٤/١٧ |
| «أبكرا تزوجتها أم ثيبا؟» | جابر | ٥٤٧/١٤ |
| «أبكى للذى عرض على أصحابك» | عمر بن الخطاب | ١٩١/١٣ |
| «ابن آدم صلِّ لى أربع ركعات...» قدسى | نعيم بن همار الغطفانى | ٤٧٩/٥ |
| «ابن القشب أتصلى الصبح أربعًا؟» | محمد بن على بن الحسين | ٢٨٦/٥ |
| «ابنك له أجر شهيدين» | قيس بن شماس | ٥٧٧/١٨ |
| «ابنك هذا؟» | أبو رمثة | ١٧٠/١٦، ٥٧٩/١٧ |
| «ابنة أخى من الرضاعة» | عبد الله بن عباس | ١٣٠/١٤ |
| «ابنة أم سلمة؟» | أم حبيبة | ١١/١٦ |
| «ابنوا المساجد واتخذوها جُمًّا» | أنس بن مالك | ١٥٧/٥ |
| «أبه جنون؟» | بريدة | ٧/١٢، ٣٢٤/١٥، /١٧ ١٦٠، ١٩٩ |
| «أبو هريرة» | أبو هريرة | ٣٨١/١٨ |
| «أبوها» | عمرو بن العاص | ١٣٠/١٥ |
| «أبيع أو عطية؟» | عبد الرحمن بن أبى بكر | ١٠٥/١٩ |
| «أبينهما فضل؟» | سعد بن أبى وقاص | ١٠١/١١، ١٠٢ |

| | | |
|---|---|---|
| «أتأخذ الدية؟» | وائل بن حجر | ٢٦٧/١٦ |
| «أتأذن لى أن أعطى هؤلاء» | سهل بن سعد | ٨٤/١٥ |
| «أتاكم أهل اليمن أتاكم أهل اليمن» | أبو هريرة | ٨٦/٣، ٨٧ |
| «أتانى جبريل فأمرنى أن آمر أصحابى أن يرفعوا...» | السائب بن خلاد | ٤٢١/٩ |
| «أتانى جبريل عليه السلام فأمرنى أن أقضى...» | جابر بن عبد الله | ٥٠٩/٢٠ |
| «أتانى جبريل عليه السلام فقال: إنى أتيتك...» | أبو هريرة | ٣١/١٥ |
| «أتانى جبريل عليه السلام وأنا بالعقيق» | عمر بن الخطاب | ٣٣١/٩ |
| «أتانى داعى الجن...» | عبد الله بن مسعود | ٣٣/١، ٣٣١ |
| «أتانى الليلة آت من ربى» | عمر بن الخطاب | ٣٣٢/٩ |
| «أتانى ما شغلنى عن ركعتين بعد الظهر...» | أم سلمة | ٢١٠/٥ |
| «أتبيعنى نارها...؟» | جنادة بن جراد | ٤٥٨/١٣ |
| «أتجد رقبة؟» | أبو هريرة | ٤٨٢/٨ |
| «أتجد عتق رقبة؟» | أبو العالية الرياحى | ٣٩٩/١٥ |
| «أتجد ما تحرر رقبة؟» | أبو هريرة | ٤٧٩/٨ |
| «أتحب أن تراها عريانة؟» | عطاء بن يسار | ٦٠/١٤ |
| «أتحب ذلك؟» | عبد الله بن عباس | ٥٧٠/١٩ |
| «أتحلفون خمسين يمينا فتستحقون صاحبكم» | سهل بن أبى حثمة ورافع بن خديج | ٤٣٨/١٦ |
| «أتحلفون خمسين يمينًا وتستحقون قاتلكم...؟» | سهل بن أبى حثمة، بشير بن يسار | ٤٣٩/١٦، ٥٤٧/٢٠ |
| «أتدرون أى بلد هذا؟» | أبو بكرة | ٣٥/١٢ |
| «أتدرون أى شهر هذا؟» | أبو بكرة | ٣٤/١٢ |
| «أتدرون أى يوم هذا؟» | أبو بكرة | ٣٤/١٢، ١٤٤/١٦ |
| «أتدرون ما العضه؟» | أنس | ٢٢٢/٢١ |
| «أتدرون ما الغيبة؟» | أبو هريرة | ٢٢٣/٢١، ٢٢٤ |
| «أتدرون من المفلس...» | أبو هريرة | ٤٠/١٢ |
| «أتراه مرائى؟ أتراه مرائى» | بريدة | ٣٩٨/٥ |
| «أتردين عليه حديقته التى أصدقك؟» | عطاء | ١٨٤/١٥ |

| | | |
|---|---|---|
| «أتردين عليه حديقته التى أعطاك» | أبو الزبير | ١٨٥/١٥ |
| «أتردين عليه حديقته؟» | ابن عباس | ١٨٠/١٥، ١٨١، ١٨٣، ١٨٥ |
| «أترضون أن تكونوا ربع أهل الجنة...» | عبد الله بن مسعود | ٢٥٠/٦ |
| «أترضون نفل خمسين من اليهود ما قتلوه؟» | أبو قلابة | ٤٦٢/١٦ |
| «أترضى أن أزوجك فلانة؟» | عقبة بن عامر | ٤٧٧/١٤ |
| «أترضين أن أزوجك فلانا؟» | عقبة بن عامر | ٤٧٧/١٤ |
| «أترعون عن ذكر الفاجر؟» | بهز بن حكيم عن أبيه عن جده | ٩٥/٢١ |
| «اتركوا الحبشة ما تركوكم...» | عبد الله بن عمرو | ٥٨١/١٨ |
| «أترون فلانا يشبه منه كذا وكذا...» | ابن عباس | ٢٥٨/١٥ |
| «أتريد أن تكون فتانًا يا معاذ؟...» | جابر | ٢٠/٥ |
| «أتريد أن تميتها موتات؟» | ابن عباس | ٣١٧/١٩ |
| «أتريدين أن تدخلى الشيطان بيتًا قد أخرجه الله منه» | أم سلمة | ٤٦٧/٧ |
| «أتريدين أن ترجعى إلى رفاعة...» | عائشة | ٣٦٥/١٥ |
| «أتريدين الحج؟» | عائشة | ٤٢١/١٠ |
| «أتزكى هذا؟» | مرة الثقفى | ٢٢١/٨ |
| «أتزوجت؟» | محارب بن دثار | ٢٠٩/١٥ |
| «أتسمع النداء؟» | عمرو بن أم مكتوم | ٥٠٨/٥ |
| «أتسمعون؟ هل تسمعون؟...» | ابن عجرة الأنصارى | ٥٩٠/١٦ |
| «أتشفع فى حد من حدود الله؟» | عائشة | ٢٩٠/١٧ |
| «أتشهد أن لا إله إلا الله وأنى رسول الله؟» | ابن عباس، عكرمة | ٤٤٢/٨، ٤٤٣ |
| «أتشهد أن محمدًا رسول الله؟» | ابن عباس | ٤٤٢/٨ |
| «أتشهدين أن لا إله إلا الله؟» | عبيد الله بن عبد الله بن عتبة بن مسعود | ٤٠٧/١٥، ١٤٨/٢٠ |
| «أتشهدين أن محمدا رسول الله؟» | عبيد الله بن عبد الله بن عتبة بن مسعود | ٤٠٧/١٥، ١٤٨/٢٠ |
| «أتصلى الصبح أربعًا؟» | ابن عباس | ٢٨٧/٥ |

| | | |
|---|---|---|
| «أتعجبون من هذه الحبة ؟» | أنس بن مالك | ٥٢١/٦ |
| «أتعرفون هذه؟» | ابن عمر | ٣٨٨/١٧ |
| «أتعطين زكاة هذا؟» | عبد الله بن عمرو | ٢٠٢/٨ |
| «أتعفو؟» | وائل بن حجر | ٢٥٤/١٦، ٢٦٧ |
| «أتعلمون أى يوم أعظم؟» | عبد الله بن عمر | ٣٣/١٢ |
| «أتفعلون؟» | عبد الله بن عباس | ٢٨/١٨ |
| «اتق الله وأمسك عليك زوجك» | أنس | ٥٢٤/١٣ |
| «أتقتل؟» | وائل بن حجر | ٢٦٧/١٦ |
| «أتقرءون خلفى؟» | أبو قتادة | ٣٩/٤ |
| «أتقرءون فى صلاتكم والإمام يقرأ؟» | أنس بن مالك | ٣٧/٤ |
| «أتقعد قعدة المغضوب عليهم ؟» | الشريد بن سويد | ٤١٢/٦ |
| «اتقوا الله فى النساء...» | جابر بن عبد الله | ١٤٦/١٥ |
| «اتقوا زلة العالم وانتظروا فيئته» | عمرو بن عوف | ٩٩/٢١ |
| «اتقوا الظلم فإن الظلم ظلمات يوم القيامة...» | جابر بن عبد الله | ٣٨/١٢، ٣٩٧/٢٠ |
| «اتقوا اللاعِنَين» | أبو هريرة | ٢٩٧/١ |
| «اتقوا الملاعن الثلاث...» | معاذ بن جبل | ٢٩٨/١ |
| «اتقوا النار ولو بشق تمرة...» | عدى بن حاتم | ٣١٥/٨، ٣١٦ |
| «اتقوا هذه الكعبتين...» | عبد الله | ١١٤/٢١ |
| «اتقوا هذه المذابح» | عبد الله بن عمرو | ١٥٩/٥ |
| «اتقوا وسواس الماء» | عمران بن حصين | ١٠٧/٢ |
| «اتقى الله فإنه ابن عمك» | خويلة بنت مالك | ٤١٥/١٥ |
| «اتقى الله واصبرى» | أنس بن مالك | ٤٧٦/٧، ٥٢٤، ٢٩١/٢٠ |
| «أتم صومك فإن الله أطعمك وسقاك» | أبو هريرة | ٥٠٢/٨ |
| «أتموا الركوع والسجود» | أنس | ٥٩٥/٣ |
| «أتموا الصف الأول ثم الثانى...» | أنس | ٢٦/٦ |
| «أتموا الصف المقدم ثم الذى يليه...» | أنس | ٢٦/٦ |
| «أتموا الصفوف» | أنس | ٢٠/٦ |
| «أتؤدين زكاتهن» | عائشة | ٢٠١/٨ |
| «أتؤذيك هوامك هذه » | كعب بن عجرة | ٢٩٦/٨، ٤٦٥/٩ |

| | | |
|---|---|---|
| «أتوقنين بالبعث من بعد الموت؟» | عبيد الله بن عبد الله بن عتبة بن مسعود | ٤٠٧/١٥ |
| «أتيت هلال بن عامر ونمير بن عامر وعامر بن ربيعة...» | قرة بن دعموص | ٧٢/٨ |
| «أثبت لنا الثلثين وأبق لهم الثلث» | عبيد الله بن عمر | ١٤٥/٨ |
| «أثبت لنا النصف وأبق لهم النصف...» | أبو زبيد المزنى | ١٤٥/٨ |
| «أثقل شيء فى ميزان المؤمن خلق حسن...» | أبو الدرداء | ٣٦/٢١ |
| «الاثنان جماعة والثلاثة جماعة» | أنس | ٥٤١/٥ |
| «اثنان فما فوقهما جماعة» | أبو موسى الأشعرى | ٥٤١/٥ |
| «اثنتان لا تردان...» | سهل بن سعد | ١٥٧/٣ |
| «أثنوا عليه» | أنس بن مالك | ٥١١/٧ |
| «أثيب أثيب؟» | بريدة | ١٦٠/١٧ |
| «أثيب أنت؟» | بريدة | ٧/١٢، ٣٢٤/١٥، ١٧/ ١٦٠، ١٩٩، ٢٠٠، ٢٠٨ |
| «أجب عنى» | عبد الله بن عمر | ٣٧٢/٢٠ |
| «أجب عنى أيدك الله بروح القدس» | حسان بن ثابت، أبو هريرة | ١٨٢/٥، ١٩١/٢١ |
| «اجتنبوا السبع الموبقات» | أبو هريرة | ٧٥/١٣، ١٤٦/١٦، ١٧/ ٢٧٦، ٢٥٢/١٨ |
| «اجتنبوا ما أسكر» | عبد الله بن عمرو | ٤٦٤/١٧ |
| «اجتنبوا هذه القاذورة التى نهى الله عنها...» | ابن عمر | ٥٢٨/١٧ |
| «أجد لحم شاة أخذت بغير إذن أهلها» | رجل من الأنصار | ٢٣٧/١١ |
| «الأجر بينكما» | عمير مولى آبى اللحم | ٣٨٠/٨ |
| «أجر خمسين منكم» | أبو ثعلبة الخشنى | ٢٥٨/٢٠ |
| «الأجر والمغنم» | جرير، عروة البارقى | ٢١٩/١٣، ٢٢٠، ١٤/٢٠ |
| «الأجر والوفاء» | عبد الله بن أبى ربيعة | ٣١١/١١ |
| «اجعل صدعيها نصفين...» | دحية بن خلف | ٢٢٠/٤ |
| «أجعلتنى والله عدلًا؟...» | ابن عباس | ٣٥٠/٦ |
| «اجعلن فى الآخرة كافورًا...» | أم عطية | ٢٥٥/٧ |

| | | |
|---|---|---|
| «اجعله فى علف ناضح اليتيم» | أبو الزناد | ٥٠٤/١٩ |
| «اجعله فى مسجدنا وأجره لك» | عثمان بن عفان | ٢٨٨/١٢ |
| «اجعلها سقاية للمسلمين وأجرها لك» | عثمان بن عفان | ٢٨٨/١٢ |
| «اجعلها فى فقراء أهلك» | أنس | ٦٤/١٣ |
| «اجعلها فى قرابتك» | أنس | ٢٨٠/١٢، ٦٢/١٣ |
| «اجعلها لفقراء قرابتك» | أنس | ٦٣/١٣ |
| «اجعلها مكانها...» | البراء بن عازب | ٣٠٠/١٩ |
| «اجعلها مكانها بعدك» | البراء بن عازب | ٢٧٦/١٩، ٣٠١، ٣٠٣ |
| «اجعلوا آخر صلاتكم بالليل وترًا» | ابن عمر | ٤٤٢/٥ |
| «اجعلوا إهلالكم بالحج» | ابن عباس | ٣٥٨/٩ |
| «اجعلوا أئمتكم خياركم...» | ابن عمر | ٦٠٥/٥ |
| «اجعلوا من صلاتكم فى بيوتكم» | عبد الله بن عمر | ٩٩/٤، ١٤٤/٥ |
| «اجعلوها عمرة» | أبو سعيد الخدرى، عائشة | ٣٠٣/٩، ٣٨٤ |
| «اجعلوها فى ركوعكم» | عقبة بن عامر | ٥٠٩/٣ |
| «اجعليه بالليل وامسحيه بالنهار» | مالك | ٥٧٤/١٥ |
| «أجل إنى أوعك...» | عبد الله | ١٥٦/٧، ٥٥٨/١٣ |
| «أجل هذا طعامه فى ذباب السيف» | عبد الرحمن بن عبدالله ابن كعب بن مالك | ٣٦٥/٦ |
| «أجل ولكن لست كأحد منكم» | عبد الله بن عمرو | ٥٤٢/١٣ |
| «أجل ولكن يحلون لهم ما حرم الله...» | عدى بن حاتم | ٣٤٠/٢٠، ٣٤١ |
| «أجل ولكنى إنما أفعل ذلك غضبا لله...» | ابن عمر | ٣٨٨/١٧ |
| «اجلدوا فى قليل الخمر وكثيره...» | عائشة | ٤٧٣/١٧ |
| «اجلدوه مائة سوط» | سعيد بن سعد بن عبادة | ٢١٠/١٧ |
| «اجلس» | ابن إسحاق، ابن عباس | ٢٠٥/١٧، ٤٣١/١٨ |
| «اجلس أحدثك عن الصوم...» | أنس بن مالك | ٥٠٧/٨ |
| «اجلس فقد آذيت وآنيت» | عبد الله بن بسر | ٣٩٤/٦ |
| «اجلس يا أبان» | أبو هريرة | ٢٣٧/١٣، ٢٣٨ |
| «أجلسانى إلى جنبه» | عائشة | ٥٧٦/٥، ٥٤٠/١٦ |

| | | |
|---|---|---|
| «اجلسوا» | ابن عباس، جابر | ٣١٨/٦، ٣٥٥ |
| «اجلسوا خالفوهم» | عبادة بن الصامت | ٣٥٣/٧ |
| «اجمعوا أدراع صفوان» | ناس من آل صفوان بن أمية | ٢٦/١٢ |
| «اجمعوا ببقيع كذا وكذا ثم آذنونى» | ابن عمر | ٣٨٨/١٧ |
| «اجمعوا لها» | عمران بن حصين | ١٧١/٢ |
| «اجمعى عليك ثيابك» | عائشة | ٢١٠/٤ |
| «أجملوا فى طلب الدنيا » | أبو حميد الساعدى | ١٠/١١ |
| «أجننت؟!» | عائشة | ٢٩٧/١٨ |
| «أجيبوا هذه الدعوة إذا دعيتم لها» | ابن عمر | ٦/١٥ |
| «أحابِسَتُنا هى؟» | عائشة | ١٦٦/١٠، ٢٢٠- ٢٢٢ |
| «أحب البلاد إلى الله مساجدها...» | أبو هريرة | ٥٢٨/٥ |
| «أحب الصلاة إلى الله تعالى صلاة داود» | ابن عمر | ١١٠/٩ |
| «أحب الصيام إلى الله صيام داود...» | عبد الله بن عمرو | ٣٥١/٥ |
| «أحب الكلام إلى الله عز وجل أربع...» | سمرة بن جندب | ٣٩٩/١٩ |
| «احبس أبا سفيان عند خطم الجبل...» | عروة بن الزبير | ٣٨٧/١٨ |
| «احتاطوا لأهل الأموال فى الواطية» | جابر بن عبد الله | ١٤٨/٨ |
| «احتجبا» | أم سلمة | ٤٢/١٤ |
| «احتجبا منه» | أم سلمة | ٤١/١٤ |
| «احتجبى منه» | عائشة | ٤٨٢/١٥ |
| «احتجبى منه يا سودة» | عائشة | ١٦/١٢، ١٨ |
| «احتجم» | سلمى خادم رسول الله ﷺ | ٥٠٧/١٩ |
| «احجج عن أبيك» | أبو رزين | ٢٧٧/٩ |
| «أحججت قط» | ابن عباس | ٢٣٤/٩ |
| «أحد أحد» | أبو صالح | ٦٢٧/٣ |
| «احذروا بيتا يقال له الحمام» | طاوس ، ابن عباس | ١٦٣/١٥، ١٦٤ |
| «إحرامها التكبير» | - | ٢٨٦/٤ |
| «أحرم كل مسكر عن الصلاة» | أبو موسى | ٤٠٣/١٧ |

| | | |
|---|---|---|
| «الإحسان أن تعبد الله كأنك تراه...» | عمر | ٧١/٢١ |
| «أحسِن» | جابر بن عبد الله | ٤٩٧/١٢ |
| «أحسن إليها فإذا وضعت فجئ بها» | عمران بن حصين | ١٩٦/١٧ |
| «أحسنت» | جارية بن ظفر | ٥٣٤/١١ |
| «أحسنت» | عبد الله بن مسعود | ٤٨٠/١٧ |
| «أحسنت» | علي، أبو موسى | ٤٢٠/٩، ٥٣٤/١١، ١٦/ ٥١١، ٢٠٧/١٧، ٢٥٢، ٤٨٠ |
| «أحسنت اتركها حتى تماثل» | علي | ٢٦٠/١٧ |
| «أحسنت طف بالبيت» | أبو موسى | ٢٤١/٩ |
| «أحسنت يا عائشة» | عائشة | ١٤٨/٦، ١٤٩ |
| «أحسنتم» | المغيرة بن شعبة | ٤١٢/٤، ٨٨/٦ |
| «أحسنتم فاقتسموا واضربوا لي معكم بسهم» | أبو سعيد | ٣٩٢/١٢ |
| «أحسنتم وأجملتم...» | عبد الله بن عباس | ١٧٠/١٠ |
| «أحسنها الفأل ولا ترد مسلما...» | عروة بن عامر | ٤٩٩/١٦ |
| «أحص عددها ووكاءها وخيطها...» | أبي بن كعب | ٣٨٤/١٢ |
| «احصب وجوهها ترجع إلى أهلها» | جابر بن عبد الله | ٤٦٩/١٨ |
| «احصدوهم حصدا» | أبو هريرة | ٣٨١/١٨، ٣٨٢ |
| «أحصنت؟» | اللجلاج، جابر بن عبد الله، أبو هريرة | ١٧٣/١٧، ١٧٤، ١٩٧ |
| «أحصوا هلال شعبان لرمضان...» | أبو هريرة | ٤٢٤/٨ |
| «أحصيها حتى نرجع إليك إن شاء الله» | أبو حميد الساعدي | ١٤٢/٨ |
| «احضروا الجمعة...» | سمرة بن جندب | ٤١٧/٦ |
| «احضروا للذكر...» | سمرة بن جندب | ٤١٦/٦ |
| «احفروا وأوسعوا» | هشام بن عامر | ٢٨٠/٧، ٢٨١، ٣٧٥، ٣٧٦ |
| «احفظ عدتها ووعاءها ووكاءها...» | أبي بن كعب | ٣٥٣/١٢، ٣٥٤، ٣٧٢ |
| «احفظ عددها ووكاءها ووعاءها...» | أبي بن كعب | ٣٧٤/١٢ |
| «احفظ عورتك إلا من زوجتك...» | بهز بن حكيم عن أبيه عن جده | ١١٢/٢، ١٩٤/٤، ١٤/ ٥٠ |

| | | |
|---|---|---|
| «احفظوا علينا صلاتنا» | أبو قتادة | ١٦٨/٤ |
| «احفنى على رأسك ثلاث حفنات» | أم سلمة | ٥٨/٢، ٥٩ |
| «أحق ما صليتم عليه أطفالكم» | البراء بن عازب | ٢٩٩/٧ |
| «أحق ما يقول؟» | أبو هريرة | ٥٧٦/٤ |
| «أحق ما يقول ذو اليدين؟» | أبو هريرة | ٢٧٣/٤ |
| «أحل الذهب والحرير لإناث أمتى...» | أبو موسى | ١١٧/٥، ٥٢٥/٦ |
| «أحلت لنا ميتتان ودمان...» | ابن عمر | ٢٦٠/٢، ٢٤١/١٩، ٥٩٩ |
| «احلف بالله الذى لا إله إلا هو...» | ابن عباس | ٤٢٨/١٥، ٥٤٠/٢٠ |
| «احْلِق» | أنس بن مالك | ١٣١/١٠ |
| «احلق ثم اذبح نسكًا» | كعب بن عجرة | ٤٦٦/٩ |
| «احلق رأسك وصم ثلاثة أيام» | كعب بن عجرة | ٤٦٤/٩، ٤٦٦ |
| «أحلوا من إحرامكم بالطواف» | جابر بن عبد الله | ٢٩٤/٩ |
| «أحلوا وأصيبوا النساء» | جابر بن عبد الله | ٢٣٩/٩، ٣٤٣ |
| «احملوا هذا إلى» | عبد الله بن جعفر | ٤٥٨/٧ |
| «أحى أبواك؟» | عبد الله بن عمرو | ٨٧/١٨ |
| «أحى والداك؟» | عبد الله بن عمرو | ٨٧/١٨ |
| «أحيانا يأتينى مثل صلصلة الجرس...» | الحارث بن هشام | ٥١٢/١٣ |
| «أخبرتنى هذه فى يدى» | جابر بن عبد الله | ٢٢٦/١٦ |
| «أخبرنى بأعجب شىء رأيته بأرض الحبشة» | بريدة | ٤٥/١٢ |
| «اختتن إبراهيم النبى عليه السلام...» | أبو هريرة | ٥١٢/١٧ |
| «اختر» | ابن عباس، جابر | ٢٩/١١ |
| «اختر أيتهما شئت» | ابن الديلمى عن أبيه | ٣٣٠/١٤ |
| «اختر أيهما شئت» | أبو هريرة | ٩٠/١٦ |
| «اختر منهن أربعا» | الحارث بن قيس | ٢١٨/١٤، ٣٢٦- ٣٢٨ |
| «اختر منهن أربعا أيتهن شئت» | قيس بن الربيع | ٣٢٨/١٤ |
| «اختر منهن أربعا وخل سائرهن» | عروة بن مسعود | ٣٢٩/١٤ |
| «اختر منهن أربعا وطلق سائرهن» | عثمان بن محمد بن أبى سويد | ٣٢٤/١٤ |
| «اختر منهن أربعا وفارق سائرهن» | محمد بن أبى سويد | ٣٢٤/١٤ |

| | | |
|---|---|---|
| «الاختصار فى الصلاة راحة أهل النار» | أبو هريرة | ٣٨٦/٤ |
| «أختك هى؟» | أبو تميمة الهجيمى | ٣٤٢/١٥ |
| «أخذ بالحزم» | أبو قتادة | ٤٤٧/٥ |
| «أخذ الراية زيد فأصيب...» | أنس | ٥٥٠/١٦ |
| «أخذت بالحزم» | أبو قتادة | ٤٤٧/٥ |
| «أخذت بالقوة» | أبو قتادة | ٤٤٧/٥ |
| «أخذت بجريرة حلفائك ثقيف» | عمران بن حصين | ١٩٠/١٣، ٢٢٧/١٨، ٢٤٤ |
| «أخر» | جنادة بن جراد | ٤٥٨/١٣ |
| «أخر عنى يا عمر» | عمر | ١١١/١٧ |
| «اخرج إلى هذا فعلمه الاستئذان...» | رجل من بنى عامر | ٥٦٣/١٧ |
| «اخرج أنت وأصحابك...» | عروة بن الزبير | ١٩٧/١٨ |
| «اخرج بأختك من الحرم...» | عائشة | ٢٩٦/٩، ٢١٧/١٠ |
| «اخرج فأذّن فى الناس: من الله لا من رسوله...» | على | ١٩٣/١٢ |
| «اخرج يا على فقل: عن الله لا عن رسول الله...» | أبو جعفر | ١٩٤/١٢ |
| «اخرجا حتى تأتيا أبا سفيان ابن حرب...» | - | ١٠٣/١٩ |
| «أخرجا ما تصران» | عبد المطلب بن ربيعة ابن الحارث | ٤٤٤/١٣ |
| «اخرجوا باسم الله...» | ابن عباس | ٣٠١/١٨ |
| «اخرجوا بنا إلى هذا الذى جعله الله طهورا» | يزيد بن الهاد | ١١٤/٧ |
| «اخرجوا بنا من هذا الوادى فإنه وادٍ به شيطان» | - | ١٨٧/٥ |
| «أخرجوا صدقاتكم...» | سارية الخلجى | ١٢٨/٨ |
| «أخرجوا المخنثين من بيوتكم» | ابن عباس | ١٩٤/١٧ |
| «أخرجوا المشركين من جزيرة العرب...» | ابن عباس | ٨٤/١٩ |
| «أخرجوا يهود الحجاز وأهل نجران...» | أبو عبيدة ابن الجراح | ٨٦/١٩ |
| «أخرجوهم من بيوتكم...» | ابن عباس | ١٩٤/١٧ |
| «اخرجى فجدى فلعلك أن تصدقى...» | جابر | ٥٥٩/١٥ |
| «اخرصوها» | أبو حميد الساعدى | ١٤١/٨ |

| | | |
|---|---|---|
| «أخروا الأحمال...» | أبو هريرة | ١٢٩/١٢ |
| «اخضبهما» | سلمى خادم رسول الله ﷺ | ٥٠٧/١٩ |
| «أخفاف الإبل» | أبيض بن حمال | ٢٢٥/١٢ |
| «اخفض شيئا» | أبو هريرة | ٣٧٦/٥ |
| «اخفض من صوتك شيئا» | أبو قتادة | ٣٧٥/٥ |
| «اخلط الطين...» | طلق بن على | ٣٩٨/١ |
| «اخلع جبتك» | يعلى | ٤٧١/٩ |
| «اخلعها عنك...» | يعلى بن منية | ٤٧١/٩ |
| «أخنع اسم عند الله يوم القيامة...» | أبو هريرة | ٤٠٠/١٩ |
| «إخوانى لمثل هذا اليوم فأعدوا» | البراء بن عازب | ١٤٧/٧ |
| «أخوك صنع طعاما ودعاك...» | أبو سعيد | ١١/١٥ |
| «أخوك ومولاك» | الحسن | ٥٢٨/١٢ |
| «أخوكم يا معشر المسلمين» | رجل من أصحاب النبى ﷺ | ٤١٣/١٦ |
| «أد إلى من ائتمنك...» | - | ٢٩٩/٢١ |
| «أد الأمانة إلى من ائتمنك...» | أبو هريرة | ٣٠٠/٢١ |
| «أد العشر» | أبو سيارة المتعى | ١٥٣/٨ |
| «ادخروا الثلاث وتصدقوا بما بقى» | عائشة | ٣٥٨/١٩ |
| «ادخل» | أبو هريرة | ٣٢/١٥ |
| «ادخل المسجد فصل ركعتين» | جابر بن عبد الله | ٥٧٦/١٨ |
| «ادخل يا عوف» | عوف بن مالك | ٢٢٧/٢١ |
| «أدخلت ذلك منه فى ذلك منها...؟» | أبو هريرة | ٢٠٢/١٧ |
| «ادخلوا عشرة عشرة» | جابر بن عبد الله | ٤٦/١٥ |
| «ادخلوه الخباء» | جابر بن عبد الله | ٤٦٩/١٨ |
| «ادرءوا الحدود...» | على، عائشة | ٢٣٣/١٧، ٢٣٤، ٢٣٥، ٤٠١/١٨ |
| «ادرءوا ما استطعتم فإنه شيطان» | أبو سعيد | ٣٥٦/٤ |
| «أدركهما فارتجعهما...» | على بن أبى طالب | ٤١٣/١٨ |

| | | |
|---|---|---|
| «ادع بها» | الشريد بن سويد الثقفى | ٤٠٨/١٥ |
| «ادع لى ابن أبى ربيعة» | عبد الله بن أبى ربيعة | ٣١١/١١ |
| «ادع لى فلانًا» | جابر بن عبد الله | ٣٢١/١١ |
| «ادع لى المرأة وصاحبها» | جابر بن عبد الله | ٤٨٩/١٢ |
| «ادعوا لى أبا حسن» | غرفة بن الحارث | ٤٧٨/١٠ |
| «ادعواها» | رافع بن سنان | ٩٠/١٦ |
| «ادعوها» | ابن عباس | ٤٢٥/١٥ |
| «أدعى نبيا» | عمرو بن عبسة | ٣٥٢/١٣ |
| «ادعيها» | أبو العالية الرياحى | ٣٩٨/١٥ |
| «ادفعوا إليه ميراثه» | ابن عباس | ٥٣٣/١٢ |
| «ادفعوه إلى أكبر خزاعة» | بريدة | ٥٣٧/١٢ |
| «ادفنوا الأظفار والشعر والدم» | عبد الله بن عمر | ٦٢/١ |
| «ادْنُ» | كعب بن عجرة | ٢٤٤/١٠ |
| «ادنه أتحب أن يفعل ذلك بأختك؟» | أبو أمامة | ٥٢٧/١٨ |
| «ادنه اطعم» | عمر | ٤٤٨/١٩ |
| «ادنه هلم الغداء» | شيبان | ٤٦٩/٨ |
| «ادنى منى» | عائشة | ٤٢٠/٢ |
| «أدوا الحق الذى عليكم وسلوا الله الذى لكم» | عبد الله | ٥٦٠/١٦ |
| «أدوا صاعًا من طعام» | ابن عباس | ٢٨٩/٨ |
| «أدوا صاعًا من قمح...» | أبو صغير | ٢٨١/٨، ٢٨٢ |
| «أدومها وإن قل» | عائشة | ٢٩٨/٥ |
| «إذا آليت على يمين» | عبد الرحمن بن سمرة | ٨٥/٢٠ |
| «إذا آمن الرجل الرجل على دمه...» | عمرو بن الحمق | ٤٦٩/١٨ |
| «إذا آمن الرجل الرجل على نفسه...» | عمرو بن الحمق | ٤٦٨/١٨ |
| «إذا ابتاع الرجل سلعته ثم أفلس...» | أبو هريرة | ٤٦٣/١١ |
| «إذا ابتعت طعامًا فلا تبيعه حتى تستوفيه» | جابر بن عبد الله، حكيم بن حزام | ١٥٨/١١، ١٥٩ |
| «إذا ابتعت فكل وإذا بعت فكل» | عثمان بن عفان | ١٧٠/١١ |
| «إذا ابتعت كيلًا فاكتل وإذا بعت كيلًا فكِل» | عثمان بن عفان | ١٧٠/١١ |

| | | |
|---|---|---|
| «إذا أبق العبد إلى الشرك فقد حل دمه» | جرير بن عبد الله | ١٢٧/١٧ |
| «إذا أبيتم إلا المجلس فأعطوا الطريق حقه» | أبو سعيد الخدرى | ٢٦٦/٢٠ |
| «إذا آتاك الله مالاً لم تسأله...» | عمر | ٣٤٦/١٢ |
| «إذا أتاك الخصمان...» | علىّ | ٢٣٩/٢٠، ٤١٨ |
| «إذا أتاك المصدق فأعطه صدقتك...» | أبو هريرة | ١٩٣/٨ |
| «إذا أتاكم كريم قوم فأكرموه» | ابن عمر | ٦٠٠/١٦ |
| «إذا أتاكم المصدق فأعطه صدقتك...» | أبو هريرة | ١١٤/٨ |
| «إذا أتاكم المصدق فلا يفارقكم إلا عن رضا...» | جرير بن عبد الله | ١٩٢/٨ |
| «إذا أتى أحدكم امرأته فى الدم فليتصدق» | ابن عباس | ٤٢٨/٢ |
| «إذا أتى أحدكم أهله ثم أراد أن يعود فليتوضأ» | أبو سعيد | ٣٤٥/١٤ |
| «إذا أتى أحدكم أهله فأراد أن يعود...» | عمر | ٣٤٦/١٤ |
| «إذا أتى أحدكم أهله فليستتر...» | عبد الله | ٣٤٩/١٤ |
| «إذا أتى أحدكم أهله من الليل...» | أبو سعيد | ١٢٦/٢ |
| «إذا أتى أحدكم البراز...» | طاوس | ٣٣٦/١ |
| «إذا أتى أحدكم الخلاء...» | أبو قتادة | ٣٤٠/١ |
| «إذا أتى أحدكم على راع...» | أبو سعيد الخدرى | ٥٧٧/١٩ |
| «إذا أتى أحدكم على ماشية...» | سمرة بن جندب | ٥٧٦/١٩ |
| «إذا أتى الرجل أخاه يعوده...» | على بن أبى طالب | ١٨٤/٧ |
| «إذا أتى الرجل الرجل فهما زانيان...» | أبو موسى | ٢٢١/١٧ |
| «إذا أتيت أهلك فأردت أن تعود فتوضأ...» | ابن عمر | ٣٤٦/١٤ |
| «إذا أتيت وكيلى...» | جابر بن عبد الله | ٥٧٧/١١ |
| «إذا أتيتم الصلاة فلا تأتوها تسعون وأتوها تمشون...» | أبو هريرة | ١٨٢/٤ |
| «إذا أتيتم الصلاة فلا تأتوها وأنتم تسعون» | أبو هريرة | ٤١٧/٤ |
| «إذا أتيتم على أعطان الإبل فلا تصلوا فيها...» | عبد الله بن مغفل | ١٨٤/٥ |
| «إذا أتيتهم فادعهم إلى أن يشهدوا...» | معاذ بن جبل | ٣٤٩/١٨ |
| «إذا اجتمع الداعيان فأجب أقربهما...» | رجل من أصحاب النبى ﷺ | ٥٠/١٥ |

| | | |
|---|---|---|
| «إذا أجمرتم الميت فأوتروا» | جابر | ٢٥٤/٧ |
| «إذا أحدث أحدكم فى صلاته....» | عائشة | ٢٨٦/٤، ٣٧٢/٦ |
| «إذا أحدث أحدكم وهو فى الصلاة...» | عائشة | ٢٨٥/٤ |
| «إذا اختلف البائع والمبتاع فالقول ما قال البائع» | ابن مسعود | ٢٢٦/١١ |
| «إذا اختلف البائعان فالقول ما قال البائع..» | ابن مسعود | ٢٢٦/١١ |
| «إذا اختلف البائعان وليس بينهما بينة...» | عبد الله بن مسعود | ٢٢٥/١١ |
| «إذا اختلف البيعان والبيع قائم بعينه...» | ابن مسعود | ٢٣٠/١١ |
| «إذا اختلف المتبايعان وليس بينهما شاهد...» | ابن مسعود | ٢٢٨/١١ |
| «إذا اختلفتم فى الطريق جُعل عرضه سبعة أذرع» | أبو هريرة | ٢٤٢/١٢ |
| «إذا اختلفتم فى الطريق فاجعلوه سبعة أذرع» | ابن عباس | ٥٣٩/١١ |
| «إذا أخصبت الأرض فانزلوا عن ظهركم» | أنس بن مالك | ٥٤١/١٠ |
| «إذا أدرك أحدكم أول سجدة من صلاة العصر...» | أبو هريرة | ٦٧/٣ |
| «إذا أدركتكم الصلاة وأنتم فى مراح الغنم...» | عبد الله بن مغفل | ١٨٦/٥ |
| «إذا أدى العبد حق الله وحق مواليه...» | أبو هريرة | ١١٩/١٦ |
| «إذا أديت الزكاة فقد قضيت ما عليك...» | أبو هريرة | ١٧/٨ |
| «إذا أديت زكاته فليس بكنز» | أم سلمة | ١٤/٨ |
| «إذا أديت زكاة مالك فقد...» | جابر بن عبد الله | ١٦/٨ |
| «إذا أذّن المؤذن خرج الشيطان...» | أبو هريرة | ٥٣١/٤ |
| «إذا أذن المؤذن هرب الشيطان...» | جابر بن عبد الله | ٢١١/٣ |
| «إذا أذنت فاجعل إصبعيك فى أذنيك...» | بلال | ١١٤ /٣ |
| «إذا أراد أحدكم أن يأتى الجمعة فليغتسل» | ابن عمر | ٣٧٥/٢ |
| «إذا أراد أحدكم أن يبول...» | أبو موسى الأشعرى | ٢٨٥/١ |
| «إذا أراد أحدكم أن يتطوع بعد الفريضة...» | أبو هريرة | ١٠٢/٤ |
| «إذا أراد أحدكم أن يذهب الخلاء...» | عبد الله بن الأرقم | ٥٥١/٥ |
| «إذا أراد أحدكم العود فليتوضأ...» | أبو سعيد | ١٢٦/٢، ٣٤٦/١٤ |
| «إذا أراد الله بالأمير خيرًا...» | عائشة | ٣٢٥/٢٠ |

| | | |
|---|---|---|
| «إذا أردت تغزو فاشتر فرسا...» | عقبة بن عامر | ٢٢٣/١٣ |
| «إذا أرسلت كلابك المعلمة...» | عدى بن حاتم | ١٧٥/١٩ |
| «إذا أرسلت كلبك فاذكر اسم الله...» | عدى بن حاتم | ١٧٥/١٩، ١٨١، ١٩٧ |
| «إذا أرسلت كلبك فسميت فأمسك عليك...» | عدى بن حاتم | ١٩٠/١٩ |
| «إذا أرسلت كلبك المعلم وذكرت اسم الله فكل» | عدى بن حاتم | ١٧١/١٩ |
| «إذا أرسلت كلبك وذكرت اسم الله فكل» | عدى بن حاتم، أبوثعلبة | ١٧٣/١٩، ١٧٤، ١٧٨ |
| «إذا أرويت أهلك من اللبن غبوقًا...» | سمرة بن جندب | ٥٦٨/١٩ |
| «إذا استأذن أحدكم جاره أن...» | أبو هريرة | ٥٣٧/١١ |
| «إذا استأذنت أحدكم امرأته إلى المسجد...» | ابن عمر | ١١٦/٦، ٤٣١/١٠ |
| «إذا استأذنت فلا تستقبل الباب» | هلال بن يساف | ٥٦٠/١٧ |
| «إذا استأذنكم نساؤكم إلى المسجد...» | ابن عمر | ١١٧/٦ |
| «إذا استجمر أحدكم...» | جابر، أبو هريرة | ٣١٧/١، ٣١٨ |
| «إذا استفتح أحدكم الصلاة فليرفع يديه...» | أبو هريرة | ٣٦٨/٣ |
| «إذا استلج الرجل فى أهله فهو أعظم إثمًا...» | أبو هريرة | ٧٤/٢٠ |
| «إذا استهل الصبى ورث وصلى عليه» | جابر | ٢٩٧/٧ |
| «إذا استهل الصبى ورث وورث وصلى عليه» | جابر | ٢٩٨/٧ |
| «إذا استهل المولود صلى عليه وورث وورث » | جابر | ٢٩٨/٧ |
| «إذا استهل المولود ورث» | أبو هريرة | ٥٨٤/١٢ |
| «إذا استوحشت الإنسية وتمنعت...» | جابر | ٢٠٥/١٩ |
| «إذا استؤذن على الرجل وهو يصلى فإذنه التسبيح» | أبو هريرة | ٢٦٢/٤ |
| «إذا استيقظ أحدكم فلا يدخل يده فى إنائه» | أبو هريرة | ٢٣٥/٢ |
| «إذا استيقظ أحدكم فلا يضع يده فى الوضوء» | أبو هريرة | ٣٥٦/١، ٢١٠/٢ |
| «إذا استيقظ أحدكم فليفرغ على يده ثلاث مرات...» | أبو هريرة | ١٤٤/١ |
| «إذا استيقظ أحدكم من منامه...» | أبو هريرة | ١٤٠/١، ١٤١، ١٥٣ |
| «إذا استيقظ أحدكم من منامه...» | عبد الله بن عمر | ١٤٢/١ |

| | | |
|---|---|---|
| «إذا استيقظ أحدكم من النوم فلا يدخل يده فى الإناء حتى يغسل يده...» | أبو هُريرة | ١٤٧/١ |
| «إذا استيقظ أحدكم من نومه... » | أبو هريرة | ١٣٨/١، ١٣٩، ١٤٢ |
| «إذا أسلفت فى شيء فلا تصرفه إلى غيره» | أبو سعيد | ٤١٧/١١ |
| «إذا أسند الأمر إلى غير أهله فانتظر الساعة» | أبو هريرة | ٣٤٧/٢٠ |
| «إذا اشتد الحر فأبردوا بالصلاة...» | أبو هريرة | ٢٢٣/٣ |
| «إذا اشتد الحر فأبردوا عن الصلاة» | أبو هريرة | ٢٢٤/٣ |
| «إذا اشتد عليكم شرابكم فاصنعوا به هكذا» | المطلب بن أبى وداعة | ٤٤٠/١٧ |
| «إذا اشتد عليكم فاقتلوه بالماء» | ابن عباس | ٤٤٤/١٧ |
| «إذا اشتريت بيعًا فلا تبعه حتى تقبضه» | حكيم بن حزام | ١٦٣/١١ |
| «إذا اشتريت يا عثمان فاكتل وإذا بعت فكِل» | عثمان بن عفان | ١٦٩/١١ |
| «إذا أشكل على أحدكم فى صلاته خرج منه شيء...» | أبو هريرة | ٢٨٤/٤ |
| «إذا أصاب بحده فكل...» | عدى بن حاتم | ١٧٣/١٩ |
| «إذا أصاب المكاتب حدًّا أو ميراثًا ورث بحساب من عتق منه...» | عبد الله بن عباس | ٤٦٧/٢١ |
| «إذا أصبح أحدكم ولم يوتر فليوتر» | أبو هريرة | ٢٧٦/٥ |
| «إذا أطعم الله نبيا طعمة...» | أبو الطفيل | ١٢٨/١٣، ١٣٣ |
| «إذا أطعمت المرأة من بيت زوجها غير مفسدة...» | عائشة | ٣٧٤/٨ |
| «إذا أعتق الرجل أمته ثم أمهرها...» | أبو موسى | ١٥٠/١٤ |
| «إذا أعتق الرجل أمته ثم تزوجها» | أبو موسى | ١٥٠/١٤ |
| «إذا أعتق الرجل شقصًا له من مملوك فهو حر» | أبو هريرة | ٣١٧/٢١ |
| «إذا أعجلت أو أقحطت فلا غسل» | أبو سعيد | ١٢/٢ |
| «إذا أعطيت شيئا من غير أن تسأل...» | عمر بن الخطاب | ٣٩٨/١٣ |
| «إذا اغتسلت المرأة من حيضها نقضت شعرها» | أنس | ٦٢/٢ |
| «إذا اغتلمت أشربتكم فاكسروها بالماء» | ابن عمر | ٤٤٥/١٧ |
| «إذا أفاد أحدكم امرأة أو خادما...» | عبد الله بن عمرو | ٢١٢/١٤ |

| | | |
|---|---|---|
| «إذا أفضى أحدكم بيده...» | بسرة بنت صفوان، محمد بن عبد الرحمن ابن ثوبان | ١/٣٩٠، ٣٩٥ |
| «إذا أفلس الرجل فوجد الرجل عنده سلعته فهو أحق بها» | أبو هريرة | ١١/٤٦٥ |
| «إذا أفلس الرجل فوجد الرجل عين متاعه فهو أحق به» | أبو هريرة | ١١/٤٦٦ |
| «إذا أفلس الرجل ووجد البائع سلعته...» | أبو هريرة | ١١/٤٦٧ |
| «إذا أقبل الليل من هـٰهنا...» | عمر بن الخطاب | ٨/٤٥٩ |
| «إذا أقبل الليل وأدبر النهار...» | عمر بن الخطاب | ٨/٥٢٩ |
| «إذا أقيمت الصلاة فامشوا وعليكم السكينة» | أبو هريرة | ٣/١٤٥، ١٤٦ |
| «إذا أقيمت الصلاة فلا تأتوها تسعَون...» | أبو هريرة | ٤/٤١٥، ٦/٣٨٥ |
| «إذا أقيمت الصلاة فلا تقوموا حتى ترونى...» | أبو قتادة | ٣/٣٤٩، ٣٥٠ |
| «إذا أقيمت الصلاة فلا صلاة إلا المكتوبة...» | أبو هريرة | ٥/٢٨٨، ٢٩٠، ٢٩١ |
| «إذا أكثبوكم فارموهم بالنبل...» | أبو أسيد | ١٨/٥٠٨ |
| «إذا أكره الاثنان على اليمين فاستحبا...» | أبو هريرة | ٢١/٢٥٣ |
| «إذا أكل أحدكم طعاما فلا يمسح...» | ابن عباس | ١٥/٥٧ |
| «إذا أكل أحدكم فليأكل بيمينه...» | عبد الله بن عمر | ١٥/٥٣، ٥٤ |
| «إذا أكل أحدكم من الطعام فلا يمسح...» | ابن عباس | ١٥/٥٧ |
| «إذا التقى الختانان وجب الغسل» | أبو هريرة | ٢/٧ |
| «إذا التقى المسلمان بسيفيهما...» | أبو بكرة | ١٧/٧٦ |
| «إذا ألقى الله فى قلب رجل خطبة امرأة...» | سهل بن أبى حثمة | ١٤/٢٠ |
| «إذا أم أحدكم للناس فليخفف الصلاة..» | أبو هريرة | ٦/٧١ |
| «إذا أمَّ أحدكم الناس فليخفف...» | أبو هريرة | ٦/٧١ |
| «إذا أم الرجل القوم فلا يختص بدعاء دونهم...» | أبو أمامة الباهلى | ٦/١٠٧ |
| «إذا أم الرجل القوم فلا يقم فى مكان أرفع من مقامهم» | حذيفة | ٦/٤٧ |

| | | |
|---|---|---|
| «إذا أمرتكم بأمر فأتوا منه ما استطعتم» | ابن عباس | ٥٧٧/٨ |
| «إذا أمسك الرجل الرجل وقتله الآخر...» | ابن عمر | ٢٤٠/١٦ |
| «إذا أممت القوم فأخفَّ بهم الصلاة» | عثمان بن أبى العاص | ٦٦/٦ |
| «إذا أمن الإمام فأمنوا» | أبو هريرة | ٤٣٦/٣ |
| «إذا أمن الإمام فأمنوا فإن الملائكة تؤمن» | أبو هريرة | ٤٤٢/٣ |
| «إذا أمن القارئ فأمنوا» | أبو هريرة | ٤٣٧/٣ |
| «إذا أنت بعت فقل: لا خلابة...» | منقذ بن عمرو | ٣٩/١١ |
| «إذا انتصف شعبان فلا تصوموا...» | أبو هريرة | ٤٣٤/٨ |
| «إذا انتعل أحدكم فليبدأ باليمنى...» | أبو هريرة | ١٣٧/٥ |
| «إذا أنتم صليتم على فقولوا: اللهم صلى على محمد» | عقبة بن عمرو | ٦٦٨/٣، ٦٦٩ |
| «إذا أنفقت المرأة من طعام بيتها غير مفسدة...» | عائشة | ٣٧٥/٨ |
| «إذا أنكح الرجل ابنه وهو كاره فلا نكاح له» | الحسن | ١٩٨/١٤ |
| «إذا أنكح المجيزان فالأول أحق» | سمرة | ١٩٢/١٤ |
| «إذا أنكح الوليان فالأول أحق...» | سمرة بن جندب، عقبة | ١٨٩/١٤، ١٩٠، ١٥/ |
| | ابن عامر | ٣٦٢ |
| «إذا أنكح الوليان فالأول أحق» | - | ٣٦٢/١٥ |
| «إذا أنكح الوليان فالأول أحق» | عقبة بن عامر | ١٨٩/١٤ |
| «إذا أنكح وليان فالنكاح للأول منهما...» | سمرة بن جندب | ١٨٤/١٤ |
| «إذا أنكح الوليان فهو للأول منهما...» | عقبة بن عامر | ١٨٤/١٤ |
| «إذا باتت المرأة مهاجرة لفراش زوجها...» | أبو هريرة | ١٠٦/١٥ |
| «إذا بال أحدكم...» | أبو قتادة | ٣٤٠/١ |
| «إذا بال أحدكم فلا يمسن ذكره...» | أبو قتادة الأنصارى | ٧٦/١٥ |
| «إذا بايعت الرجل بالذهب والفضة» | ابن عمر | ٧٤/١١ |
| «إذا بايعت فقل: لا خلابة» | ابن عمر | ٣٩/١١ |
| «إذا بلغ الماء أربعين قلة...» | جابر بن عبد الله | ٢٨٥/٢، ٢٨٦ |
| «إذا بلغ الماء قدر قلتين أو ثلاث...» | ابن عمر | ٢٨٤/٢ |

| | | |
|---|---|---|
| «إذا بويع لخليفتين فاقتلوا الآخر منهما» | أبو سعيد | ٥١٧/١٦ |
| «إذا تأنيت أصبت» | ابن عباس | ٣٠٠/٢٠ |
| «إذا تبايع الرجلان فكل واحد منهما بالخيار» | ابن عمر | ٢٤/١١ |
| «إذا تبايع الرجلان فهما بالخيار...» | ابن عمر | ٣٥/١١ |
| «إذا تبايع المتبايعان فكل واحد منهما بالخيار» | ابن عمر | ٢٣/١١ |
| «إذا تبايعتم بالعينة» | ابن عمر | ١٧٢/١١ |
| «إذا تبع أحدكم جنازة فلا يجلس حتى توضع بالأرض» | أبو هريرة | ٣٤٧/٧ |
| «إذا تبعتم جنازة فلا تجلسوا حتى توضع» | أبو سعيد | ٣٤٦/٧ |
| «إذا تثاوب أحدكم فى الصلاة فليكظم ما استطاع...» | أبو سعيد الخدرى | ٣٩٢/٤ |
| «إذا تثبت أصبت...» | ابن عباس | ٣٠٠/٢٠ |
| «إذا تجاحفت قريش على الملك» | - | ٣٢١/١٣ |
| «إذا تزوج البكر على الثيب أقام عندها...» | أنس | ١٤٠/١٥ |
| «إذا تشهد أحدكم فليستعذ بالله...» | أبو هريرة | ٨/٤ |
| «إذا تشهد أحدكم فليقل: باسم الله خير الأسماء» | عمر بن الخطاب | ٦٥٦/٣ |
| «إذا تشهد أحدكم فى الصلاة فليقل: اللهم صلِّ على محمد...» | عبد الله بن مسعود | ٦١٨/٤ |
| «إذا تطهر أحدكم فليذكر اسم الله...» | عبد الله بن مسعود | ١٣٦/١ |
| «إذا تطهر الرجل ثم مر إلى المسجد يرعى الصلاة...» | عقبة بن عامر الجهنى | ٥٢٣/٥ |
| «إذا تقاضى إليك رجلان فلا تقض للأول حتى تسمع كلام الآخر...» | على | ٤٠٩/٢٠ |
| «إذا التقى المسلمان فتصافحا...» | البراء بن عازب | ٦٧/١٤ |
| «إذا تواجه المسلمان بسيفيهما» | أبو بكرة | ٧٧/١٧ |
| «إذا توضأ أحدكم ثم أتى المسجد...» | كعب بن عجرة | ٣٩١/٦ |
| «إذا توضأ أحدكم ثم خرج للصلاة...» | كعب بن عجرة | ٣٩١/٦ |
| «إذا توضأ أحدكم فأحسن الوضوء...» | كعب بن عجرة | ٣٩٠/٦ |

| | | |
|---|---|---|
| «إذا توضأ أحدكم فأحسن الوضوء ثم خرج...» | رجل من الأنصار | ٥٤٢/٥ |
| «إذا توضأ أحدكم فليجعل فى أنفه ماء ثم لينتثر...» | أبو هريرة | ١٥١/١ |
| «إذا توضأ أحدكم فليستنشق بمنخريه ماء ثم لينتثر» | أبو هريرة | ١٥٠/١ |
| «إذا توضأ أحدكم ولبس خفيه فليصل» | أنس بن مالك | ٣٢٩/٢ |
| «إذا توضأ العبد...» | عبد الله الصنابحى | ٢٤٦/١ |
| «إذا توضأ العبد المسلم...» | أبو هريرة | ٢٤٤/١ |
| «إذا توضأت فسال من قرنك...» | ابن عباس | ٥١٣/٢ |
| «إذا توضأت فمضمض» | لقيط بن صبرة | ١٦٠/١ |
| «إذا توضأت وأنا جنب...» | عبد الله بن مالك الغافقى | ٢٦٧/١ |
| «إذا توفى أحدكم فوجد شيئا فليكفن فى ثوب حبرة» | جابر | ٢٤٩/٧ |
| «إذا توفيت المرأة فأرادوا أن يغسلوها...» | أم سليم | ٢٥٤/٧، ٢٨٨، ٢٨٩، ٢٩٠ |
| «إذا ثُوِّب بالصلاة فعليكم السكينة...» | أبو هريرة | ٤١٦/٤ |
| «إذا ثوّب بالصلاة فلا تأتوها وأنتم تسعون» | أبو هريرة | ٣٨٥/٦ |
| «إذا ثُوِّب بالصلاة فلا يسعين إليها أحدكم » | أبو هريرة | ٤١٨/٤ |
| «إذا جاء أحدكم إلى الجمعة فليغتسل» | عبد الله بن عمر، أبوهريرة | ٣٦٤/٢، ٣٦٨ |
| «إذا جاء أحدكم إلى الصلاة فليمش على هينته...» | أنس | ٣٨٧/٦ |
| «إذا جاء أحدكم إلى الصلاة فلينظر إلى نعليه...» | أبو سعيد الخدرى | ١٣٢/٥ |
| «إذا جاء أحدكم إلى المسجد فلينظر...» | بكر بن عبد الله المزنى، أبو سعيد الخدرى | ١٣٢/٥، ١٣٣ |

| | | |
|---|---|---|
| «إذا جاء أحدكم فجاء مع الرسول...» | أبو هريرة | ٥٦٦/١٧ |
| «إذا جاء أحدكم والإمام يخطب فليركع ركعتين وليتجوز فيهما» | جابر | ٢٨٨/٦ |
| «إذا جاء خادم أحدكم بطعامه فليجلسه معه..» | أبو هريرة | ١٠٣/١٦ |
| «إذا جاء رمضان فتحت أبواب الجنة...» | أبو هريرة | ٤٠٨/٨، ١٣٥/٩ |
| «إذا جاء يطلب ثمن الكلب فاملأ كفيه ترابًا» | ابن عباس | ٣٣٧/١١ |
| «إذا جاءكم كريم قوم فأكرموه» | جرير بن عبد الله | ٦٠١/١٦ |
| «إذا جاءكم من ترضون دينه وخلقه فأنكحوه» | أبو حاتم المزنى | ١٣/١٤ |
| «إذا جف الدم عنها فاجلدها الحد» | على | ٢٠٧/١٧ |
| «إذا جلس بين شعبها الأربع ثم جهدها» | أبو هريرة | ٦/٢ |
| «إذا جلس بين شعبها الأربع ومس الختان» | عائشة | ٨/٢ |
| «إذا جلس القاضى فى مكانه هبط عليه ملكان...» | ابن عباس | ٢٤٥/٢٠ |
| «إذا جلست المرأة فى الصلاة وضعت فخذها...» | عبد الله بن عمر | ١٨٦/٤ |
| «إذا جلستم بين الركعتين فقولوا: التحيات لله» | عبد الله بن مسعود | ٦٧٢/٣ |
| «إذا جئتم والإمام راكع فاركعوا» | عن عبد العزيز بن رفيع عن رجل | ٥٢٠/٣ |
| «إذا جئتم ونحن سجود فاسجدوا ولا تعدوها شيئا» | أبو هريرة | ٥١٩/٣ |
| «إذا حدث الرجل بحديث ثم التفت فهى أمانة» | جابر | ٢٢٣/٢١ |
| «إذا حضرت الصلاة فأذّنا ثم أقيما ثم ليؤمكما أكبركما» | مالك بن الحويرث | ٥٣٦/٥، ٨٠/٦ |
| «إذا حضرت الصلاة فلم تجدوا إلا مرابض الغنم...» | أبو هريرة | ١٨٥/٥ |
| «إذا حضرت الصلاة وأراد الرجل الخلاء...» | عبد الله بن الأرقم | ٥٥٠/٥، ٥٥١ |
| «إذا حضرت الصلاة والعشاء فابدءوا بالعشاء» | أنس بن مالك | ٥٥٢/٥ |
| «إذا حضرتم الميت أو المريض فقولوا خيرًا» | أم سلمة | ٤٧٤/٧ |




( السنن الكبير ٥/٢٢ )

| | | |
|---|---|---|
| «إذا حضرتم الميت فقولوا خيرًا فإن الملائكة يؤمنون» | أم سلمة | ١٩٤/٧ |
| «إذا حكم الحاكم فاجتهد فأصاب فله أجران...» | عمرو بن العاص، وأبوهريرة | ٣٥٠/٢٠، ٣٥١ |
| «إذا حلف أحدكم على يمين...» | عدى بن حاتم | ٧٢/٢٠ |
| «إذا حلف أحدكم بيمين ثم رأى خيرًا مما حلف...» | أبو هريرة | ١٣٤/٢٠ |
| «إذا حلف أحدكم على يمين فرأى غيرها خيرًا منها...» | عبد الرحمن بن سمرة، عدى بن حاتم | ١٣٣/٢٠، ١٣٥ |
| «إذا حلف الرجل فقال: إن شاء الله...» | ابن عمر | ٣٢٧/١٥ |
| «إذا حلفت على يمين فرأيت غيرها خيرًا منها...» | عبد الرحمن بن سمرة | ٨٥/٢٠ |
| «إذا حللت فآذنيني» | فاطمة بنت قيس | ١٧٥/١٤ |
| «إذا حملتم فأخروا فإن اليد معلقة...» | أبو هريرة | ١٢٩/١٢ |
| «إذا ختنت فلا تنهكى...» | أم عطية | ٥٠٧/١٧ |
| «إذا خرج ثلاثة فى سفر فليؤمروا أحدهم» | أبو سعيد الخدرى | ٥٤٥/١٠ |
| «إذا خرصتم فخذوا ودعوا الثلث...» | سهل بن أبى حثمة | ١٤٥/٨ |
| «إذا خطب أحدكم المرأة...» | جابر | ١٨/١٤ |
| «إذا خفضت فأشمى ولا تنهكى...» | أنس | ٥٠٨/١٧ |
| «إذا دبغ الإهاب فقد طهر» | عبد الله بن عباس | ٥٧/١ |
| «إذا دخل أحدكم المسجد فلا يجلس حتى يركع ركعتين» | أبو قتادة | ٤٩٣/٥، ٢٩٠/٦ |
| «إذا دخل أحدكم المسجد فليركع ركعتين قبل أن يجلس» | أبو قتادة | ٤٩٣/٥ |
| «إذا دخل أحدكم المسجد فليسلم على النبى ثم ليقل...» | أبو حميد أو أبو أسيد الساعدى، أبو هريرة | ١٦٥/٥، ١٦٦ |
| «إذا دخل أحدكم المسجد فليسلم وليقل...» | أبو حميد أو أبو أسيد الساعدى | ١٦٤/٥ |
| «إذا دخل أهل الجنة الجنة...» | أبو سعيد | ٢٦/٢١ |

| | | |
|---|---|---|
| «إذا دخل البصر فلا إذن» | أبو هريرة | ٥٦٠/١٧ |
| «إذا دخل الرجل بيته فذكر الله...» | جابر بن عبد الله | ٥٢/١٥ |
| «إذا دخل العشر فأراد أحدكم أن يضحى...» | أم سلمة | ٢٦٠/١٩، ٢٦٧ |
| «إذا دخل العشر وأراد أحدكم أن يضحى...» | أم سلمة | ٢٦٧/١٩ |
| «إذا دعا أحدكم أخاه فليجب...» | ابن عمر | ٥/١٥ |
| «إذا دعا الرجل امرأته إلى فراشه...» | أبو هريرة | ١٠٦/١٥ |
| «إذا دعى أحدكم إلى طعام فليجب...» | أبو هريرة | ٩/١٥ |
| «إذا دعى أحدكم إلى عرس أو نحوه فليجب» | ابن عمر | ٥/١٥ |
| «إذا دعى أحدكم إلى وليمة عرس فليجب» | ابن عمر | ٥٧١/١٤ |
| «إذا دعى أحدكم إلى الوليمة فليأتها» | ابن عمر | ٥٧٠/١٤ |
| «إذا دعى أحدكم إلى الوليمة فليجب» | ابن عمر | ٥٦٩/١٤، ٥٧١ |
| «إذا دعى أحدكم فليجب» | جابر | ١٢/١٥ |
| «إذا دعيتم إلى كراع فأجيبوا» | ابن عمر | ٦/١٥ |
| «إذا ذبح أحدكم فليجهز» | عبد الله بن عمر | ٣١٦/١٩ |
| «إذا رابك من شرابك ريب...» | أبو هريرة | ٤٤٠/١٧ |
| «إذا رأت ذلك المرأة فلتغسل» | أم سليم | ٢٣/٢ |
| «إذا راح أحدكم إلى الجمعة فليغتسل» | أبو هريرة | ٣٧٣/٢ |
| «إذا رأيت أثر سهمك فيه لم يأكل منه سبع فكل» | عدى بن حاتم | ١٩٢/١٩ |
| «إذا رأيت ذلك فامكثى ثلاثًا» | جابر | ٤٥٤/٢ |
| «إذا رأيت سهمك فيه لم تَر فيه أثرًا غيره...» | عدى بن حاتم | ١٩٢/١٩ |
| «إذا رأيت المذى فتوضأ» | على | ١٨/٢ |
| «إذا رأيتم آية فاسجدوا» | عبد الله بن عباس | ٦١/٧ ٦٢ |
| «إذا رأيتم أمتى لا تقول للظالم: أنت ظالم فقد تودع منهم» | عبد الله بن عمرو | ٤٦/١٢ |
| «إذا رأيتم الجنازة فقوموا حتى تخلفكم أو توضع» | عامر بن ربيعة | ٣٤٤/٧ |
| «إذا رأيتم الجنازة فقوموا فمن تبعها فلا يقعد» | أبو سعيد الخدرى | ٣٤٥/٧ |

| | | |
|---|---|---|
| «إذا رأيتم الجنازة فقوموا لها حتى تخلفكم أو توضع» | عامر بن ربيعة | ٣٤٤/٧ |
| «إذا رأيتم الرجل يعتاد المسجد فاشهدوا عليه...» | أبو سعيد الخدرى | ٥٣١/٥ |
| «إذا رأيتم الزانى والسارق وشارب الخمر...» | عمران بن حصين | ١٤٣/١٧ |
| «إذا رأيتم من يبيع أو يبتاع فى المسجد...» | أبو هريرة | ١٨٠/٥ |
| «إذا رأيتم الهلال فصوموا...» | عبد الله بن عمر، جابر ابن عبد الله، أبو هريرة، ابن عباس | ٤١٧/٨، ٤٢١، ٤٢٣، ٤٢٧ |
| «إذا رأيتموه فصوموا وإذا رأيتموه فأفطروا...» | أبو هريرة | ٥٦٠/٨ |
| «إذا رجعت إلى بنيك فمرهم فليحسنوا...» | سوادة بن الربيع | ١٢٥/١٦ |
| «إذا الرجل دعا زوجته لحاجته فلتجبه...» | طلق بن على | ١٠٧/١٥ |
| «إذا رفع الرجل رأسه من السجود» | عبد الله بن عمرو | ٦٤٩/٣ |
| «إذا رقد أحدكم عن الصلاة أو غفل عنها» | أنس بن مالك | ٢٠٦/٥ |
| «إذا ركع أحدكم فقال: سبحان ربى العظيم» | عبد الله بن مسعود | ٥١٠/٣، ٥٨٠ |
| «إذا رميت بالمعراض فخرق فكله...» | عدى بن حاتم | ١٧١/١٩ |
| «إذا رميت سهمك فاذكر اسم الله...» | عدى بن حاتم | ٢١٠/١٩ |
| «إذا رميت سهمك فغاب ثلاث ليال فأدركته فكل...» | أبو ثعلبة الخشنى | ١٩٣/١٩ |
| «إذا رميت فسميت فخرق فكل...» | عدى بن حاتم | ٢١٤/١٩ |
| «إذا رميتم وحلقتم فقد حلّ لكم الطيب...» | عائشة | ١٣٨/١٠ |
| «إذا زال النهار فقم فصل أربع ركعات...» | عبد الله بن عمرو | ٤٩٠/٥ |
| «إذا زالت الشمس فتحت أبواب السماء...» | أبو أيوب الأنصارى | ٣٠٨/٥ |
| «إذا زالت الشمس فصلوا» | خباب بن الأرت | ٢٢٩/٣ |
| «إذا زنت إماؤكم فأقيموا عليهن الحدود...» | على | ٢٥٢/١٧ |
| «إذا زنت أمة أحدكم فتبين زناها فليجلدها» | أبو هريرة | ٢٤٩/١٧، ٢٥٩ |
| «إذا زنت أمة أحدكم فليجدها ولا يعيرها...» | أبو هريرة | ٢٦٠/١٧ |
| «إذا زنت فاجلدوها ثم إذا زنت فاجلدوها...» | مالك بن عبد الله الأوسى | ٢٥٨/١٧ |

| | | |
|---|---|---|
| «إذا زوّج أحدكم خادمه عبده أو أجيره فلا ينظرن إلى دون السرة...» | عبد الله بن عمرو | ١٩٧/٤ |
| «إذا زوج أحدكم عبده أمته أو أجيره...» | عبد الله بن عمرو | ١٩٦/٤، ٤٩/١٤، ٥٠ |
| «إذا سافرتم فى الخصب فأعطوا الإبل حظها من الأرض» | أبو هريرة | ٥٤٠/١٠ |
| «إذا سافرتما فأذنا وأقيما وليؤمكما أكبركما» | مالك بن الحويرث | ١٥٨/٣، ١٥٩ |
| «إذا سأل أحدكم جاره أن يدعم جذوعه على حائطه فلا يمنعه» | ابن عباس | ٥٣٩/١١ |
| «إذا سجد أحدكم فلا يبرك كما يبرك البعير» | أبو هريرة | ٥٥٠/٣ |
| «إذا سجد أحدكم فلا يبرك كما يبرك الجمل» | أبو هريرة | ٥٥٠/٣، ٥٥١ |
| «إذا سجد أحدكم فلا يفترش يديه افتراش الكلب» | أبو هريرة | ٥٩٠/٣ |
| «إذا سجد أحدكم فليبدأ بركبتيه قبل يديه» | أبو هريرة | ٥٥١/٣ |
| «إذا سجد أحدكم فليضع يديه فإذا رفع فليرفعهما» | عبد الله بن عمر | ٥٥٧/٣ |
| «إذا سجد العبد سجد معه سبعة آراب» | العباس بن عبدالمطلب | ٥٥٤/٣، ٥٥٥ |
| «إذا سجدت فضع كفيك وارفع مرفقيك» | البراء | ٥٨٤/٣ |
| «إذا سجدتما فضُمّا بعض اللحم إلى الأرض...» | يزيد بن أبى حبيب | ١٨٧/٤ |
| «إذا سقط الذباب فى شراب أحدكم فليغمسه» | أبو هريرة | ٢٥٦/٢ |
| «إذا سقطت لقمة أحدكم...» | أنس بن مالك | ٥٨/١٥ |
| «إذا سقطت من أحدكم لقمة...» | جابر | ٥٨/١٥ |
| «إذا سكتت فهو رضاها» | أبو هريرة | ١٢٣/١٤ |
| «إذا سكر فاجلدوه ثم إن سكر فاجلدوه...» | أبو هريرة | ٤٧٤/١٧ |
| «إذا سلم أحدكم ثلاثا فلم يجب فليرجع» | أبو سعيد الخدرى | ٦٢/١٤ |
| «إذا سمع أحدكم النداء والإناء على يده...» | أبو هريرة | ٤٦٧/٨ |
| «إذا سمعت جيرانك يقولون: قد أحسنت...» | ابن مسعود | ٣٦٩/٢٠ |
| «إذا سمعت النداء فاخرج» | كعب بن عجرة | ٥٠٧/٥ |
| «إذا سمعتم الإقامة فامشوا...» | أبو هريرة | ٦١٢/٥ |

| | | |
|---|---|---|
| «إذا سمعتم بالطاعون بأرض فلا تدخلوها» | أسامة بن زيد | ١٦٩/٧ |
| «إذا سمعتم به بأرض فلا تقدموا عليه» | عبد الرحمن بن عوف | ١٦٨/٧ |
| «إذا سمعتم به فى أرض فلا تقدموا عليه...» | ابن عباس | ٤٣١/١٤، ٥٣٥/١٩ |
| «إذا سمعتم المؤذن» | عبد الله بن عمرو | ١٥٣/٣، ١٥٤ |
| «إذا سمعتم مؤذنا أو رأيتم مسجدا فلا تقتلوا أحدا» | عصام | ٣٥٤/١٨، ٦/١٩ |
| «إذا سمعتم النداء فقولوا مثل ما يقول المؤذن» | أبو سعيد الخدرى | ١٥٠ /٣ |
| «إذا سميتم على الذبيحة فذكاته ذكاة أمه» | أبو سعيد | ٤٩١/١٩ |
| «إذا سها أحدكم فلم يدرِ أزاد أو نقص فليسجد سجدتين...» | أبو هريرة | ٥٣٢/٤ |
| «إذا سها الرجل فلم يدرِ ثنتين أو ثلاثًا أو أربعًا...» | عبد الله بن عباس | ٥١٥/٤ |
| «إذا سئل الرجل عن أخيه فهو بالخيار...» | الحسن | ٣٦٩/٢٠ |
| «إذا شرب أحدكم فليمص مصا...» | ابن أبى حسين | ٧٨/١٥ |
| «إذا شرب الخمر فاجلدوه...» | أبو هريرة، قبيصة بن ذؤيب | ٤٧٥/١٧، ٤٧٦ |
| «إذا شرب الكلب فى إناء أحدكم...» | أبو هريرة | ٢٢٥/٢، ٢٦٦- ٢٦٧ |
| «إذا شربتم فاشربوا مصًّا...» | عطاء بن أبى رباح | ١٢٤/١ |
| «إذا شربوا الخمر فاجلدوهم...» | معاوية بن أبى سفيان | ٤٧٣/١٧ |
| «إذا شك أحدكم فى صلاته فشك فى الواحدة والثنتين فليجعلهما واحدة...» | عبد الله بن عباس | ٥١٤/٤ |
| «إذا شك أحدكم فى صلاته فلا يدرى أثلاثًا صلى أم أربعًا فليلقِ الشك...» | أبو سعيد الخدرى | ٥٢٨/٤ |
| «إذا شك أحدكم فى صلاته فلم يدرِ اثنتين صلى أو ثلاثًا فليلقِ الشك...» | أنس بن مالك | ٥١٧/٤ |
| «إذا شك أحدكم فى صلاته فلم يدرِ كم صلى ثلاثًا أم أربعًا...» | أبو سعيد الخدرى، عطاء بن يسار | ٥١٢/٤، ٥٢٨ |
| «إذا شك أحدكم فى صلاته؛ فشك فى الواحدة والثنتين فليجعلهما واحدة... » | عبد الله بن عباس | ٥٢٩/٤ |

| | | |
|---|---|---|
| «إذا شك أحدكم فى الصلاة فلا يدرى كم صلى ثلاثًا أو أربعًا فليطرح الشك» | عطاء بن يسار | ٥١٢/٤ |
| «إذا شككتم فى طريق فاجعلوا سبعة أذرع» | ابن عباس | ٢٤٣/١٢ |
| «إذا شهدت إحداكن العشاء الآخرة فلا تمسَّ طيبًا» | زينب الثقفية | ١٢٠/٦ |
| «إذا صام أحدكم فليفطر على التمر...» | سلمان بن عامر | ٥٣٢/٨ |
| «إذا صام أحدكم يومًا ونسى...» | أبو هريرة | ٥٠١/٨ |
| «إذا صلى أحدكم إلى سترة فليدن منها...» | محمد بن سهل عن أبيه أو عن محمد بن سهل | ٣٣٧/٤، ٣٣٨ |
| «إذا صلى أحدكم إلى شىء يستره من الناس...» | أبو هريرة | ٣٢٢/٤ |
| «إذا صلى أحدكم إلى غير السترة فإنه يقطع صلاته...» | عبد الله بن عباس | ٣٤٥/٤ |
| «إذا صلى أحدكم بأرض فلاة فلينصب عصًا» | أبو هريرة | ٣٣٢/٤ |
| «إذا صلى أحدكم بالناس فليخفف..» | أبو هريرة | ٧٠/٦ |
| «إذا صلى أحدكم الجمعة...» | أبو هريرة | ٤٢٠/٦ |
| «إذا صلى أحدكم ركعة من صلاة الصبح» | أبو هريرة | ٦٩/٣ |
| «إذا صلى أحدكم الركعتين قبل الصبح...» | أبو هريرة | ٤٧١/٥ |
| «إذا صلى أحدكم فخلع نعليه فلا يؤذِ بهما أحدًا...» | أبو هريرة | ١٣٦/٥ |
| «إذا صلى أحدكم فلا يدرى كم صلى ثلاثًا أم أربعًا فليركع ركعة...» | عبد الله بن عمر | ٥١٨/٤ |
| «إذا صلى أحدكم فلا يضع نعليه عن يمينه...» | أبو هريرة | ١٣٦/٥ |
| «إذا صلى أحدكم فلم يدرِ أزاد أم نقص فليسجد سجدتين...» | أبو هريرة | ٥٣٠/٤ |
| «إذا صلى أحدكم فليأتزر وليرتد» | عبد الله بن عمر | ٢٢٤/٤ |
| «إذا صلى أحدكم فليجعل بين يديه شيئا..» | أبو هريرة | ٣٣١/٤ |
| «إذا صلى أحدكم فليجعل تلقاء وجهه شيئا» | أبو هريرة | ٣٣٠/٤ |
| «إذا صلى أحدكم فليصلِّ إلى سترة...» | نافع بن جبير بن مطعم | ٣٣٨/٤ |
| «إذا صلّى أحدكم فليصلّ إلى سترة وليدنُ منها» | أبو هريرة | ٣٢١/٤ |

| | | |
|---|---|---|
| «إذا صلى أحدكم فليلبس ثوبيه...» | عبد الله بن عمر | ٢٢٥/٤ |
| «إذا صلى أحدكم فى ثوب فليشده على حقوه» | عبد الله بن عمر | ٢٢٥/٤ |
| «إذا صلى أحدكم للناس فليخفف...» | أبو هريرة | ٦٥/٦ |
| «إذا صليت الصبح فأقصر عن الصلاة حتى ترتفع الشمس» | أبو هريرة | ٥٤٦/٦ |
| «إذا صليت فلا تبصقن بين يديك ولا عن يمينك...» | طارق بن عبد الله المحاربى | ٤٠٢/٤ |
| «إذا صليتم بعد الجمعة فصلوا أربعًا...» | أبو هريرة | ٤٢٠/٦ |
| «إذا صليتم الجمعة فصلوا بعدها أربعًا» | أبو هريرة | ٤٢١/٦ |
| «إذا صليتم على فقولوا: اللهم صلِّ على محمد النبى الأمى...» | أبو مسعود الأنصارى | ٦١٨/٤ |
| «إذا صليتم على الميت فأخلصوا له الدعاء» | أبو هريرة | ٣٩٤/٧ |
| «إذا صليتم فأقيموا صفوفكم فإذا كبر فكبروا» | أبو موسى | ٥٤١/٣، ٦٥٢، ٦٥٣ |
| «إذا صليتم الفجر فإنه وقت إلى أن يطلع قرن الشمس» | عبد الله بن عمرو | ٤٤/٣ |
| «إذا صنع خادم أحدكم له طعاما فجاء به...» | أبو هريرة | ١٠٤/١٦ |
| «إذا ضاع لأحدكم متاع أو سرق له متاع...» | سمرة بن جندب | ٤٨٢/١١ |
| «إذا ضرب أحدكم فليجتنب الوجه» | أبو هريرة | ٥١٦/١٧ |
| «إذا ضيعت الأمانة فانتظر الساعة» | أبو هريرة | ٣٤٧/٢٠ |
| «إذا طفا السمك على الماء فلا تأكله...» | جابر | ٢٣٦/١٩ |
| «إذا طلع حاجب الشمس فأخروا الصلاة» | ابن عمر | ١٩٩/٥ |
| «إذا طهرت فاغسلى ثوبك ثم صلى فيه» | أبو هريرة | ٦٤/٥ |
| «إذا طهرت فطلق عند ذلك أو أمسك» | عبد الله بن عمر | ٢٣٢/١٥ |
| «إذا طهرت فليطلق أو ليمسك» | ابن عمر | ٢٢٥/١٥ |
| «إذا طهرت فليطلق أو يمسك» | ابن عمر | ٢١٢/١٥، ٤٩٠ |
| «إذا عرف يمينه من يساره فمروه بالصلاة» | رجل | ٥٨٦/٥ |
| «إذا عرفت سهمك فيه ولم تر فيه أثر غيره...» | عدى بن حاتم | ١٩٢/١٩ |
| «إذا عطس الرجل والإمام يخطب يوم الجمعة فشمته» | الحسن | ٣٧٠/٦ |

| | | |
|---|---|---|
| «إذا غاب عنك الصيد فصادفته» | أبو رزين | ١٨٨/١٩ |
| «إذا غابت الشمس من ههنا...» | عبد الله بن أبى أوفى | ٤٥٩/٨ |
| «إذا فرغ أحدكم من صلاته فليدع بأربع» | أبو هريرة | ٨/٤ |
| «إذا فرغتم فآذنونى» | ابن عمر | ١١٠/١٧ |
| «إذا فسا أحدكم فى الصلاة فلينصرف فليتوضأ وليعد صلاته» | على بن طلق | ٢٨٧/٤ |
| «إذا فعلت هذا - أو- قضيت هذا- فقد قضيت صلاتك» | عبد الله بن مسعود | ٥٧/٤ |
| «إذا قاء أحدكم أو قلس...» | ابن جريج عن أبيه | ٤١٤/١ |
| «إذا قاء أحدكم فى صلاته أو قلس...» | عائشة | ٤١٣/١، ٢٨٧/٤ |
| «إذا قال أحدكم: آمين...» | أبو هريرة | ٤٣٨/٣، ٤٣٩ |
| «إذا قال الإمام: الله أكبر فقولوا الله أكبر» | أبو سعيد الخدرى | ٣٣٧/٣ |
| «إذا قال الإمام: سمع الله لمن حمده...» | أبو هريرة | ٥٤١/٣ |
| «إذا قال الإمام: غير المغضوب عليهم ولا الضالين فقال من خلفه: آمين» | أبو هريرة | ٤٣٨/٣ |
| «إذا قال الرجل لصاحبه: أنصت والإمام يخطب فقد لغا» | أبو هريرة | ٣٥٦/٦ |
| «إذا قال الرجل للرجل: يا مخنث. فاجلدوه...» | ابن عباس | ٢٨٦/١٧ |
| «إذا قال القارئ: غير المغضوب عليهم ولا الضالين فقولوا: آمين» | أبو هريرة | ٤٣٨/٣ |
| «إذا قال لك جيرانك: قد أحسنت. فقد أحسنت...» | كلثوم الخزاعى | ٣٧٠/٢٠ |
| «إذا قال المؤذن الله أكبر الله أكبر» | عمر بن الخطاب | ١٥١/٣ |
| «إذا قام أحدكم إلى الصلاة فإن الرحمة تواجهه...» | أبو ذر | ٣٧٦/٤ |
| «إذا قام أحدكم للصلاة فلا يبصق أمامه..» | أبو هريرة | ٤٠٢/٤ |
| «إذا قام أحدكم من الليل فاستعجم القرآن...» | أبو هريرة | ٣٩١/٥ |
| «إذا قام أحدكم من الليل فلا يدخل يده فى الإناء حتى يفرغ...» | أبو هريرة | ٢٣٦/٢ |

| | | |
|---|---|---|
| «إذا قام أحدكم من الليل فلا يغمس يده فى الإناء» | أبو هريرة | ١٤٠/١ |
| «إذا قام أحدكم من الليل فليفتتح صلاته...» | أبو هريرة | ٣٥٩/٥ |
| «إذا قام أحدكم من مجلس كان فيه...» | أبو هريرة | ٤٠٢/٦ |
| «إذا قام أحدكم من النوم إلى الوضوء...» | - | ٣٥٦/١ |
| «إذا قام أحدكم من النوم فليفرغ على يديه الماء...» | أبو هريرة | ١٤٦/١ |
| «إذا قام الإمام فى الركعتين فإن ذكر قبل أن يستتم قائمًا فليجلس...» | المغيرة بن شعبة | ٥٤٠/٤ |
| «إذا قام الرجل من مجلسه ثم عاد إليه فهو أحق به» | أبو هريرة | ٢٣١/١٢ |
| «إذا قام لك رجل من مجلسه فلا تجلس فيه» | أبو بكرة | ٤٠٢/٦ |
| «إذا قامت الصلاة...» | أبو هريرة | ٢٨٨/٥ |
| «إذا قبض الله ابن العبد قال لملائكته: ما قال عبدى؟» | أبو موسى | ٤٨٨/٧ |
| «إذا قتله ولم يأكل منه شيئا فإنما أمسكه عليك» | عدى بن حاتم | ١٨٠/١٩ |
| «إذا قدم العشاء فابدءوا بالعشاء قبل أن تصلوا...» | أنس بن مالك | ٥٥٣/٥ |
| «إذا قدم مال البحرين أعطيتك هكذا...» | جابر | ١٣٢/١٣ |
| «إذا قرأ ابن آدم السجدة فسجد اعتزل الشيطان يبكى...» | أبو هريرة | ٤٥٨/٤ |
| «إذا قرأتم الحمد لله فاقرءوا بسم الله الرحمن الرحيم» | أبو هريرة | ٤١٤/٣ |
| «إذا قسمت الأرض وحدت فلا شفعة فيها» | أبو هريرة | ٧٥/١٢ |
| «إذا قضى أحدكم حجه فليعجل الرحلة إلى أهله...» | عائشة | ٥٥١/١٠ |
| «إذا قضى أحدكم الصلاة فى مسجده فليجعل لبيته نصيبًا...» | جابر بن عبد الله | ٩٨/٤ |
| «إذا قضى الإمام الصلاة وقعد فأحدث قبل أن يتكلم فقد تمت صلاته» | عبد الله بن عمرو | ٦١/٤ |

| | | |
|---|---|---|
| «إذا قعد الإمام فى آخر ركعة من صلاته» | عبد الله بن عمر | ٦٤٩/٣ |
| «إذا قعد بين شعبها الأربع ثم اجتهد...» | أبو هريرة | ٥/٢ |
| «إذا قعد بين شعبها الأربع ثم أجهد نفسه...» | أبو هريرة | ٦/٢ |
| «إذا قعد بين شعبها الأربع ثم جهدها...» | أبو هريرة | ٥/٢ |
| «إذا قعد بين شعبها الأربع وألزق...» | أبو هريرة | ٥/٢ |
| «إذا قلت لصاحبك أنصت والإمام يخطب يوم الجمعة فقد لغوت» | أبو هريرة | ٣٥٧/٦ |
| «إذا قلت لصاحبك أنصت يوم الجمعة فقد لغوت...» | أبو هريرة | ٣٥٦/٦، ٣٥٨ |
| «إذا قمت إلى الصلاة فتوضأ كما أمرك الله..» | رفاعة بن رافع | ٦٢٣/٤ |
| «إذا قمت فتوجهت إلى القبلة فكبِّر...» | رفاعة بن رافع | ٦٠٨/٤ |
| «إذا كاتبت إحداكن عبدها فليرها ما بقى عليه شىء» | الزهرى | ٤٧٤/٢١ |
| «إذا كان أحدكم ذا حاجة فليبدأ بنفسه » | جابر بن عبد الله | ٤٢٧/٢١ |
| «إذا كان أحدكم صائمًا فليفطر على التمر...» | سلمان بن عامر | ٥٣١/٨ |
| «إذا كان أحدكم على شك من...» | عبد الرحمن بن عوف | ٥٤٧/٤ |
| «إذا كان أحدكم على الطعام فلا يعجلن...» | ابن عمر | ٥٥٦/٥ |
| «إذا كان أحدكم فقيرا فليبدأ بنفسه...» | جابر بن عبد الله | ٤١٦/٢١ |
| «إذا كان أحدكم فى شك من النقصان...» | عبد الله بن عباس | ٥١٧/٤ |
| «إذا كان أحدكم فى الشمس...» | أبو هريرة | ٤١٢/٦ |
| «إذا كان أحدكم فى صلاته فلا يبزقن أمامه...» | أبو هريرة | ٣٩٩/٤ |
| «إذا كان أحدكم فى الصلاة فوجد حركة...» | أبو هريرة | ٢٨٤/٤ |
| «إذا كان أحدكم نائمًا...» | أبو هريرة | ٦/٢ |
| «إذا كان أحدكم يصلى فلا يبصق قِبَل وجهه...» | عبد الله بن عمر | ٤٠٤/٤ |
| «إذا كان أحدكم يصلى فلا يدع أحدًا يمر بين يديه...» | أبو سعيد الخدرى | ٣٢٠/٤ |
| «إذا كان أحدكم يصلى للناس فليخفف» | أبو هريرة | ٧٠/٦ |
| «إذا كان أول ليلة من رمضان...» | أبو هريرة | ١٣٥/٩ |

| | | |
|---|---|---|
| «إذا كان ثلاثة فى سفر فليؤمّروا أحدهم» | أبو هريرة | ٥٤٥/١٠ |
| «إذا كان الحر فأبردوا عن الصلاة...» | أبو هريرة | ٢٢٤/٣، ٢٢٥ |
| «إذا كان الدرع سابغًا يغطى ظهور قدميها» | أم سلمة | ٢١٥/٤ |
| «إذا كان دم الحيضة فإنه دم...» | فاطمة بنت أبى حبيش | ٤٤٥/٢ |
| «إذا كان عند القعود فليقل أول ما يتكلم به: التحيات الطيبات» | أبو موسى الأشعرى | ٦١٤/٤ |
| «إذا كان عند المكاتب ما يؤدى فاحتجبن منه...» | نبهان مكاتب أم سلمة | ٤٧٢/٢١ |
| «إذا كان لإحداكن مكاتب...» | أم سلمة | ٤٧٢/٢١ |
| «إذا كان لك كلاب مكلبة فكل...» | عبد الله بن عمرو | ١٧٩/١٩ |
| «إذا كان للرجل شرك فى غلام...» | عبد الله بن عمر | ٣٤٥/٢١ |
| «إذا كان الماء قدر قلتين لم يحمل الخبث...» | ابن عمر | ٢٨٢/٢ |
| «إذا كان الماء قلتين فإنه لا ينجس » | ابن عمر | ٢٨٣/٢ |
| «إذا كان الماء قلتين فلا ينجسه شىء» | ابن عمر | ٢٨٤/٢ |
| «إذا كان الماء قلتين لا يحمل الخبث» | ابن عمر | ٢٨٢/٢ |
| «إذا كان الماء قلتين لم يحمل الخبث » | ابن عمر | ٢٧٧/٢، ٢٧٩ |
| «إذا كان الماء قلتين لم يحمل خبثًا» | ابن عمر، ابن جريج | ٢٧٨/٢، ٢٨٨ |
| «إذا كان الماء قلتين لم يحمل نجسًا ولا بأسًا» | يحيى بن يعمر | ٢٨٩/٢ |
| «إذا كان الماء قلتين لم ينجسه شىء» | أبو أمامة الباهلى | ٢٧٦/٢ |
| «إذا كان منها ما يكون من الرجل فلتغتسل» | أنس بن مالك | ٢٢/٢ |
| «إذا كان واسعًا فخالف بين طرفيه..» | جابر بن عبد الله | ٢٣٥/٤ |
| «إذا كان يوم الجمعة اغتسل الرجل» | أبو هريرة | ٤٣١/٦ |
| «إذا كان يوم الجمعة كان على كل باب من أبواب المسجد ملائكة...» | أبو هريرة | ٢٣١/٢٠ |
| «إذا كان يوم الجمعة وقفت الملائكة على باب المسجد...» | أبو هريرة | ٣٨٠/٦ |
| «إذا كان يوم القيامة قيل: أين أبناء الستين» | عبد الله بن عباس | ١٥٠/٧ |
| «إذا كانت بالرجل الجراحة» | ابن عباس | ١٨٤/٢ |
| «إذا كانت الدابة مرهونة....» | أبو هريرة | ٤٤٤/١١ |

| | | |
|---|---|---|
| «إذا كانت الهبة لذى رحم محرم لم يرجع فيها» | سمرة | ٣٣٧/١٢ |
| «إذا كانوا ثلاثة فلا يتناجى اثنان دون الثالث...» | ابن عمر | ٣٩٩/٦ |
| «إذا كانوا ثلاثة فليؤمهم أحدهم...» | أبو سعيد الخدرى | ٧٦/٦ |
| «إذا كانوا ثلاثة فليؤمهم أقرؤهم لكتاب الله...» | عمرو بن أخطب | ٨٢/٦ |
| «إذا كانوا ثلاثة فى سفر فليؤمهم أحدهم..» | أبو سعيد | ٦٠٢/٥، ٧٧/٦ |
| «إذا كتبوكم...» | أبو أسيد | ٥٠٨/١٨ |
| «إذا كره الاثنان اليمين...» | أبو هريرة | ٢٥٣/٢١، ٢٥٤ |
| «إذا كفن أحدكم أخاه فليحسن كفنه» | جابر بن عبد الله | ٢٤٩/٧، ٢٥٠، ٣٦٩ |
| «إذا كفى أحدكم خادمه طعامه...» | أبو هريرة | ١٠٥/١٦ |
| «إذا كنت بين الأخشبين من منًى...» | عبد الله بن عمر | ١٤٧/١٠ |
| «إذا كنت عنى راضية قلت: لا ورب محمد...» | عائشة | ٥٤/٢٠ |
| «إذا كنت فى صلاة فشككت فى ثلاث أو أربع» | عبد الله بن مسعود | ٤/ ٣٦٩، ٥٧٣ |
| «إذا كنتم فى أعطان الإبل فلا تصلوا...» | عبد الله بن مغفل | ١٨٤/٥ |
| «إذا لبستم وإذا توضأتم فابدءوا بأيامنكم» | أبو هريرة | ٢٦١/١ |
| «إذا لقيت عدوك من المشركين...» | بريدة بن الحصيب | ٥٠/١٨، ٣٤٩، ١١/١٩ |
| «إذا لقيتم المشركين فى الطريق فلا تبدءوهم بالسلام...» | أبو هريرة | ٧١/١٩ |
| «إذا لقيتموهم فلا تبدءوهم بالسلام...» | أبو هريرة | ٧٢/١٩ |
| «إذا لقيته فسلم عليه وإذا دعاك فأجبه» | أبو هريرة | ٢٨٢/١١، ٣١٣/٢٠ |
| «إذا لم تصطبحوا أو لم تغتبقوا...» | أبو واقد الليثى | ٥٦٦/١٩ |
| «إذا لم تصطبحوا أو تغتبقوا أو تحتفئوا...» | أبو واقد الليثى | ٥٦٦/١٩ |
| «إذا لم نجد الماء» | حذيفة | ١٥٥/٢ |
| «إذا لم يجد المحرم نعلين لبس خفين» | ابن عباس | ٤٥١/٩ |
| «إذا لم يدرِ أحدكم ثلاثًا صلى أم أربعًا فليتمّ وليصل ركعة» | أبو سعيد | ٥١٣/٤ |

| | | |
|---|---|---|
| «إذا لم يكن للطالب بينة فعلى المطلوب اليمين» | زيد بن ثابت | ٢٤٦/٢١ |
| «إذا لم يؤد المرء حق الله تعالى فى الصدقة...» | أبو هريرة | ٥٨/٨ |
| «إذا ما أحدكم اشترى لقحة مصراة» | أبو هريرة | ١٧٨/١١ |
| «إذا مات الإنسان انقطع عمله إلا من ثلاثة أشياء...» | أبو هريرة | ٥٨/١٣ |
| «إذا ماتت المرأة مع الرجال ليس معهم امرأة غيرها...» | مكحول | ٢٣٤/٧ |
| «إذا مر أحدكم فى مسجدنا أو سوقنا بنبل...» | أبو موسى | ١٥٧/١٦ |
| «إذا مر بالنطفة ثنتان وأربعون ليلة...» | حذيفة بن أسيد | ٥١٣/١٥ |
| «إذا مر بين يدى أحدكم شىء وهو يصلى فليمنعه...» | أبو سعيد الخدرى | ٣٢٢/٤ |
| «إذا مررت ببلدة ليس فيها سلطان فلا تدخلها...» | أنس بن مالك | ٥٨٠/١٦ |
| «إذا مرض العبد أو سافر كتب له من الأجر...» | أبو موسى | ١٦٤/٧ |
| «إذا مسّ أحدكم...» | بسرة بنت صفوان | ٣٨٠/١- ٣٨٤ |
| «إذا مضمض أحدكم واستنثر فليفعل ذلك مرتين بالغتين أو ثلاثًا» | عبد الله بن عباس | ١٥٤/١ |
| «إذا مضى للنفساء سبع ثم رأت الطهر...» | معاذ بن جبل | ٤٧٢/٢ |
| «إذا مضى النصف من شعبان...» | أبو هريرة | ٤٣٤/٨ |
| «إذا ملك الرجل المرأة لم تجز عطيتها إلا بإذنه» | عبد الله بن عمرو | ٥١١/١١ |
| «إذا نابكم شىء فى الصلاة فليسبح الرجال ولتصفق النساء» | سهل بن سعد | ٨٦/٦ |
| «إذا نسى أحدكم صلاة فذكرها وهو فى صلاة مكتوبة فليبدأ بالتى هو فيها...» | عبد الله بن عباس | ١٨٤/٤ |
| «إذا نسى أحدكم فأكل أو شرب...» | أبو هريرة | ٥٠١/٨ |
| «إذا نظر الرجل إلى فرج المرأة حرمت عليه...» | أبو هانئ أو أم هانئ | ٢٨٤/١٤ |
| «إذا كان أحدكم فى صلاته فلا يبزقن أمامه...» | أبو هريرة | ٣٩٩/٤ |
| «إذا نعس أحدكم فى الصلاة فى المسجد يوم الجمعة...» | ابن عمر | ٤١٤/٦ |

| | | |
|---|---|---|
| «إذا كان أحدكم فى صلاته فلا يبزقن أمامه...» | أبو هريرة | ٣٩٩/٤ |
| «إذا نعس أحدكم وهو فى المسجد يوم الجمعة» | ابن عمر | ٤١٤/٦ |
| «إذا نعس أحدكم وهو يصلى فلينم...» | عائشة | ٣٩١/٥ |
| «إذا نعس أحدكم يوم الجمعة...» | سمرة بن جندب | ٤١٥/٦ |
| «إذا نكح الرجل المرأة ثم طلقها...» | عبد الله بن عمرو | ٢٥٣/١٤ |
| «إذا نكح العبد بغير إذن مولاه فنكاحه باطل» | ابن عمر | ١٤٦/١٤ |
| «إذا نودى بالصلاة أدبر الشيطان له ضراط...» | أبو هريرة | ٢١٠/٣، ٥١١/٤ |
| «إذا نودى بالصلاة فأتوها وأنتم تمشون...» | أبو هريرة | ٤١١/٤، ٤١٨ |
| «إذا هبطت بلاد قومه فاحذره...» | عمرو بن أمية الضمرى | ٣٨٢/٢٠ |
| «إذا هلك قيصر فلا قيصر بعده» | - | ٥٩٩/١٨ |
| «إذا هلك كسرى فلا كسرى بعده...» | أبو هريرة | ٥٨٢/١٨، ٥٩٩ |
| «إذا هم أحدكم بالأمر فليركع ركعتين..» | جابر | ٤٩٢/٥، ٥١٩/١٠ |
| «إذا هى طهرت فطلق عند ذلك أو أمسك» | عبد الله بن عمر | ٢٤٢/١٥ |
| «إذا وجد أحدكم الغائط فليبدأ به قبل الصلاة» | عبد الله بن الأرقم | ٥٥١/٥ |
| «إذا وجد أحدكم فى بطنه...» | أبو هريرة | ٣٥٤/١، ٤٦٢ |
| «إذا وجد أحدكم القملة فى المسجد فليصرّها حتى يُخرجها» | رجل من الأنصار | ٤٠٧/٤ |
| «إذا وجد أحدكم القملة وهو يصلى فلا يقتلها...» | رجل من الأنصار | ٤٠٧/٤ |
| «إذا وجد ذلك أحدكم...» | المقداد بن الأسود | ٣٤٩/١ |
| «إذا وجدت ذلك فاغسل ذكرك» | على | ٥١١/٢، ٧٠/٥ |
| «إذا وجدتم الرجل قد غل فأحرقوا متاعه...» | عمر بن الخطاب | ٣٤٠/١٨ |
| «إذا وضع أحدكم بين يديه مثل مؤخرة الرحل فلا يضره...» | موسى بن طلحة عن أبيه | ٣٢٦/٤ |
| «إذا وضع عشاء أحدكم وأقيمت الصلاة...» | ابن عمر | ٥٥٥/٥، ٥٥٦ |
| «إذا وضع العشاء وأقيمت الصلاة...» | أنس بن مالك، عائشة | ٥٥٤/٥ |
| «إذا وضع العشاء وحضرت الصلاة فابدءوا به» | أنس بن مالك | ٥٥٣/٥ |
| «إذا وضع المؤمن على سريره يقول: قدمونى قدمونى» | أبو هريرة | ٣٣١/٧ |

| | | |
|---|---|---|
| «إذا وضعت الجنازة فحملها الرجال على أعناقهم» | أبو سعيد الخدرى | ٣٣٢/٧ |
| «إذا وضعت فاجلدوها الحد...» | بصرة بن أبى بصرة الغفارى | ٢٤٢/١٤ |
| «إذا وضعتم موتاكم فى قبورهم» | عبد الله بن عمر | ٤٤١/٧ |
| «إذا وطئ أحدكم بنعليه فى الأذى...» | أبو هريرة | ١٣١/٥ |
| «إذا وعد الرجل أخاه ومن نيته أن يفى له...» | زيد بن أرقم | ٥٤/٢١ |
| «إذا وقع الذباب فى إناء أحدكم...» | أبو هريرة | ٢٥٦/٢ |
| «إذا وقع الذباب فى الطعام فامقلوه» | أبو سعيد الخدرى | ٢٥٧/٢ |
| «إذا وقع الرجل بأهله وهى حائض» | ابن عباس | ٤٢٧/٢ |
| «إذا وقعت الحدود فلا شفعة» | جابر بن عبد الله | ٧١/١٢ |
| «إذا وقعت الفأرة فى السمن...» | أبو هريرة | ٥٥٨/١٩ |
| «إذا ولدت فأتونى به» | مقاتل بن حيان | ٤٧٠/١٥ |
| «إذا ولغ الكلب فى إناء أحدكم...» | أبو هريرة | ٥٣/١، ٥٤، ٢٢٥/٢، ٢٢٨، ٢٤٤، ٢٦٧ |
| «إذا ولغ الكلب فى الإناء فاغسلوه» | عبد الله بن مغفل | ٢٣٠/٢، ٢٥٢ |
| «إذا ولغ الكلب فى الإناء فاغسلوه سبع مرات...» | أبو هريرة | ٢٢٩/٢ |
| «اذبح سبعًا من الغنم» | عبد الله بن عباس | ٢٤٤/١٠ |
| «اذبحها ثم لا توفى جذعة بعدك» | البراء بن عازب | ٦٠٨/٦ |
| «اذبحها ولا يصلح لغيرك» | البراء بن عازب | ٢٧٧/١٩ |
| «اذبحوا على اسمه وقولوا: باسم الله...» | عائشة | ٣٩٠/١٩ |
| «اذبحوا لله فى أى شهر كان...» | نبيشة | ٤١٦/١٩ |
| «اذبحوا لله فى أى شهر ما كان» | رجل من بنى ضمرة عن أبيه | ٤٢١/١٩ |
| «اذكروا اسم الله وكلوا» | عائشة | ١٨٢/١٩ |
| «اذكروا محاسن موتاكم وكفوا عن مساوئهم» | عبد الله بن عمر | ٥١٣/٧، ٥١٤ |
| «إذن أصوم» | عائشة | ٤١٣/٨، ٥٠/٩ |
| «إذن أفطر وإن كنت فرضت الصوم» | عائشة | ٥٠/٩ |

| | | |
|---|---|---|
| «إذن فكل» | أنس بن مالك | ٥٠٧/٨ |
| «إذن لا نرجمك حتى تضعى ما فى بطنك» | بريدة | ٧/١٢، ١٦٠/١٧، ٢٠٠، ٢٠٨ |
| «إذن لا نرجمها وندع ولدها صغيرًا» | بريدة | ٨/١٢، ١٦٠/١٧ |
| «أذنا لك؟» | أبو سعيد الخدرى | ٨٩/١٨ |
| «الأذنان من الرأس» | أبو أمامة | ٢٠٢/١ |
| «أذنت لك سيدتك؟» | الحارث بن عبد الله | ٧٨/١٨ |
| «اذهب إليها فاذكرها على» | أنس | ٥٢٣/١٣ |
| «أذهب الباس رب الناس» | عائشة | ١٨٧/٧ |
| «أذهب الباس رب الناس اشف أنت الشافى...» | عبد الله بن مسعود | ٥٤٦/١٩ |
| «اذهب به» | وائل بن حجر | ٢٥٤/١٦ |
| «اذهب به إلى أهلك» | أبو هريرة | ٤٨٢/٨ |
| «اذهب فأطعمه أهلك» | أبو هريرة | ٤٧٩/٨ |
| «اذهب فأطعمه أهلك» | سعيد بن المسيب | ٤٢٠/١٥ |
| «اذهب فاطلب ولو خاتما من حديد» | سهل بن سعد | ٤٩١/١٤ |
| «اذهب فاعتكف يوما» | عبد الله بن عمر | ٢٥٢/١٣ |
| «اذهب فاعتكفه وصمه» | عمر بن الخطاب | ١٧٨/٩ |
| «اذهب فاغتسل...» | على | ٣٩٤/٢، ٣٩٥، ٣٩٦ |
| «اذهب فاغسل هذا عنك» | عمار بن ياسر | ١٢٥/٢، ٤٠٢/٩ |
| «اذهب فاغسله وكفنه» | على | ٣٩٦/٢ |
| «اذهب فأفرغه عليك» | عمران بن حصين | ٥١/٢، ٦٦، ١٧١ |
| «اذهب فاقتله» | عبد الله بن أنيس | ١٣٠/١٨ |
| «اذهب فاقلع نخله» | سمرة بن جندب | ٢٥٣/١٢ |
| «اذهب فانظر إليها..» | أنس | ١٨/١٤ |
| «اذهب فتصدق بهذا» | أبو هريرة، سعيد بن المسيب | ٤٨٢/٨، ١٤٠/٢٠ |
| «اذهب فتوضأ» | أبو هريرة | ٢٤٤/٤ |
| «اذهب فزده آصعًا من طعام» | الزبيب | ٥١٤/٢٠ |
| «اذهب فقد زوجتكها...» | على | ٤٨٦/١٤ |

| | | |
|---|---|---|
| «اذهب فقد زوجتكها بما معك من القرآن» | سهل بن سعد | ٢١٠/١٤ |
| «اذهب فقد زوجتكها على ما معك من القرآن» | سهل بن سعد الساعدى | ٢٠١/١٤، ٤٩١ |
| «اذهب فقد ملكتكها بما معك من القرآن» | سهل بن سعد الساعدى | ٢٠١/١٤، ٢٠٢ |
| «اذهب فلا حاجة لنا فيها....» | ابن عباس | ٥٥٧/١١ |
| «اذهب فواره» | على بن أبى طالب | ٣٩٤/٢ |
| «اذهب فواره لا يبحث عنه سبع...» | عبد الله بن الزبير | ٥٥٣/١٣ |
| «اذهب فواره ولا تحدثن حدثا حتى تأتينى» | على بن أبى طالب | ٢٣٢/٧ |
| «اذهب كُلْها» | جابر بن سمرة | ٥٦٥/١٩ |
| «اذهب وأطعم هذا ستين مسكينا» | أبو هريرة | ٤١٣/١٥ |
| «اذهبا فابتغيا لنا الماء» | عمران بن حصين | ١٧٠/٢ |
| «اذهبوا بخميصتى هذه إلى أبى جهم...» | عائشة | ١٠٩/٥ |
| «اذهبوا بصاحبكم فاقطعوه» | عبد الله بن مسعود | ٥٣٣/١٧ |
| «اذهبوا بنا إلى بنى واقف نزور البصير» | جبير بن مطعم | ٦٠/٢١ |
| «اذهبوا به فارجموه» | أبو هريرة، نعيم الأسلمى، وائل بن حجر | ١٥٨/١٧، ١٧٧، **١٧٨**، ٢٠٤، ٣٧٩ |
| «اذهبوا به فاقطعوه ثم احسموه ثم ائتونى به» | أبو هريرة | ٣٣٩/١٧ ٣٥١ |
| «اذهبوا فارجموه» | أبو هريرة | ١٩٧/١٧ |
| «اذهبوا فأنتم الطلقاء» | - | ٣٨٥/١٨ |
| «اذهبوا فقاسموهم أنصاف الأموال...» | الزبيب | ٥١٣/٢٠ |
| «اذهبى فأرضعيه حتى تفطميه» | بريدة | ١٨٣/١٧ |
| «اذهبى فأطعمى هذا عيالك» | عمران بن حصين | ١٧٣/٢ |
| «اذهبى فجيئى بزوجك» | أبو العالية الرياحى | ٣٩٨/١٥ |
| «أرادوا أن يزحمونى فى الثنية فيطرحونى منها» | ابن إسحاق | ١٠٨/١٧ |
| «أرأف أمتى بأمتى أبو بكر وأشدهم فى دين الله عمر» | أنس | ٤٢٩/١٢ |
| «أرانى أتسوك فجاءنى رجلان...» | عبد الله بن عمر | ١٢٢/١ |

| | | |
|---|---|---|
| «أراه فلانا» | عائشة | ٢٤٧/١٤، ٥/١٦ |
| «أرأيت إذا منع الله الثمرة بم تستحل مال أخيك؟!» | أنس | ١١٦/١١ |
| «أرأيت إذا منع الله الثمرة فبم يأخذ أحدكم مال أخيه؟» | أنس بن مالك | ١١٤/١١، ١٣١، ١٣٢ |
| «أرأيت إن كان على أبيك دين» | عبد الله بن الزبير | ٢١٣/٩ |
| «أرأيت إن منع الله الثمرة فبم تستحل مال أخيك؟!» | أنس | ١١٦/١١ |
| «أرأيت لو أن أمك ماتت وعليها دين...» | ابن عباس | ٥٨٦/٨ |
| «أرأيت لو تمضمضت...» | عمر بن الخطاب | ٤٦٧/٨، ٦/٩ |
| «أرأيت لو كان على أختك دين أكنت تقضينه؟» | ابن عباس | ٥٨٣/٨ |
| «أرأيت لو كان عليه دين...» | صالح بن كيسان | ٥٩٤/٨ |
| «أرأيت لو كان عليها دين أكنت تقضينه؟» | ابن عباس | ٥٨١/٨ |
| «أرأيت لو كان عليها دين أكنت قاضيه؟» | عبد الله بن عباس | ٢٧٧/١٠ |
| «أرأيت محاقلكم ماذا تصنعون بها؟» | ظهير بن رافع | ١٦٢/١٢ |
| «أرأيتكم ليلتكم هذه» | عبد الله بن عمر | ٢٦٧/٣ |
| «أرأيتم لو أن أناسًا عمدوا...» | أبو هريرة | ٥٨٠/١٩ |
| «أرأيتم لو أن نهرًا بباب أحدكم...» | أبو هريرة | ١٥/٣، ٥٢٢/٥ |
| «أرأيتم لو وضعها فى الحرام...» | أبو ذر | ٣٦٠/٨ |
| «أرأيته لو جعلته فى غير حِلّه...» | أبو ذر | ٥٨٤/١١ |
| «أربع: العوراء البين عورها...» | البراء بن عازب | ٢٩٥/١٩ |
| «أربع فى أمتى من أمر الجاهلية لا يتركوهن» | أبو مالك الأشعرى | ٤٦٨/٧ |
| «أربع كلُّهن فواسق يقتلن فى الحل والحرم...» | عائشة | ٣٨٢/١٠ |
| «أربع لا تجزئ فى الأضاحى» | البراء | ٤٩٢/١٠ |
| «أربع لا تجوز؛ العوراء البين عورها...» | البراء بن عازب | ٢٩٤/١٩ |
| «أربع لا لعان بينهن وبين أزواجهن...» | عبد الله بن عمرو | ٤٢٩/١٥ |
| «أربع لا يجزين؛ العوراء البين عورها...» | البراء بن عازب | ٢٩٣/١٩ |
| «أربع من الجفاء يبول الرجل قائمًا...» | أبو هريرة | ٣٨٠/٤ |
| «أربع من كن فيه كان منافقا خالصا...» | عبد الله بن عمرو | ١٥٤/١٩، ٢٠١/٢٠ |

| | | |
|---|---|---|
| «أربع من النساء لا ملاعنة بينهم...» | عبد الله بن عمرو | ٤٣٠/١٥ |
| «أربعا... العرجاء البين ظلعها...» | البراء بن عازب | ٢٩٢/١٩ |
| «أربعة لا أؤمنهم فى حل ولا حرم...» | سعيد بن يربوع المخزومى | ١٠١/١٩ |
| «أربعة ليس بينهم لعان...» | عبد الله بن عمرو | ٤٣١/١٥ |
| «أربعة ليس بينهم ملاعنة...» | ابن عباس | ٤٣٤/١٥ |
| «أربعة من الدواب لا يقتلن...» | عبد الله بن عباس | ٤٣٥/١٩ |
| «أربعون حسنة أعلاها منحة العنز...» | عبد الله بن عمرو | ٣٤٦/٨ |
| «أربعون خصلة أعلاهن منيحة العنز...» | عبد الله بن عمرو | ٣٤٦/٨ |
| «أربعون دارا» | عائشة | ٤٨/١٣ |
| «أربعون سنة فأينما أدركتك الصلاة...» | أبو ذر | ١٣٨/٥ |
| «أربعين دارا جار» | الزهرى | ٤٩/١٣ |
| «أربيت إذا أردت ذلك فبع التمر بسلعة...» | أبو سعيد الخدرى | ٧٩/١١ |
| «أربيتما فرد الأرض على أهلها...» | رافع بن خديج | ١٦٩/١٢ |
| «ارتبطوا الخيل...» | أبو وهب الجشمى | ٢٢٦/١٣ |
| «ارتحلوا» | عمران بن حصين | ١٧٠/٢، ١٧٢ |
| «ارجع» | بريدة | ١٨٣/١٧ |
| «ارجع أبا وهب إلى أباطح مكة...» | ابن عباس | ٥٥/١٨ |
| «ارجع إلى ثوبك فخذه ولا تمشوا عراة» | المسور بن مخرمة | ١٩٣/٤ |
| «ارجع إلى مقامك فناد ثلاثًا» | حميد | ٨٣/٣ ٨٤ |
| «ارجع إليها فإن مثلك مثل عبد لا يصلى...» | الحارث بن عبد الله | ٧٨/١٨ |
| «ارجع إليها فمرها فلتلبس ثيابها ولتهرق دمًا» | أبو هريرة | ٢٢١/٢٠ |
| «ارجع إليهما فإن فيهما لمجاهدا» | عبد الله بن عمرو | ٨٧/١٨ |
| «ارجع فأحسن وضوءك» | أنس بن مالك، عمر بن الخطاب | ٢١٣/١، ٢٥٣، ٢٥٤ |
| «ارجع فاستغفر الله وتب إليه» | بريدة | ٧/١٢ |
| «ارجع فأضحكهما كما أبكيتهما» | عبد الله بن عمرو | ٨٩/١٨ |
| «ارجع فحج مع امرأتك» | عبد الله بن عمر | ٤٣٧/١٠ |
| «ارجع فسلم» | كلدة بن الحنبل | ٥٦٢/١٧ |

| | | |
|---|---|---|
| «ارجع فصل فإنك لم تصل» | أبو هريرة | ٣/٣٩١، ٣٩٢، ٦٠٩ |
| «ارجع فصل فإنك لم تصل» | يحيى الزرقى عن عمه | ٤/٦٠٤ |
| «ارجع فقل: السلام عليكم أأدخل؟» | كلدة بن الحنبل | ١٧/٥٦٣ |
| «ارجعوا...» | أبو هريرة | ١٧/٤٧٠ |
| «ارجعوا إلى أهاليكم فأقيموا فيهم وعلموهم ومروهم» | مالك بن الحويرث | ٦/٧٩ |
| «ارجعوا إلى أهليكم فأقيموا عندهم...» | مالك بن الحويرث | ٥/٤٩٨ |
| «ارجعوا إلى أهليكم فأقيموا فيهم وعلموهم ومروهم» | مالك بن الحويرث | ٣/٣٤٠ |
| «ارجعوا فكونوا فيهم وعلموهم وصلوا» | مالك بن الحويرث | ٣/٨٥ |
| «ارجعى» | بريدة | ١٧/١٨٣ |
| «ارجعى حتى تلدى» | بريدة | ١٧/١٨٣، ٢٠٨ |
| «ارحلوا لصاحبيكم اعملوا لصاحبيكم..» | أبو هريرة | ٨/٥٥٧ |
| «أرحم أمتى أبو بكر وأشدهم فى دين الله عمر...» | أنس بن مالك | ١٢/٤٢٨ |
| «أرحم أمتى بأمتى أبو بكر وأشدهم فى أمر الله عمر» | أنس بن مالك | ١٢/٤٢٩ |
| «أرخى عليك » | ابن عمر | ١٤/٤١٩ |
| «أردت الحج» | عائشة | ١٠/٤٢١ |
| «أردف أختك» | عبد الرحمن بن أبى بكر | ٩/٣٠٠ |
| «أرسل إلى ثوبين إلى الميسرة» | عائشة | ١١/٣٩٨ |
| «أرسلنى الله تبارك وتعالى» | عمرو بن عبسة | ٥/٢٠٢، ١٣/٣٥٢ |
| «أرسلنى بصلة الأرحام...» | عمرو بن عبسة | ٥/٢٠٢، ١٣/٣٥٢ |
| «أرسِلْه يا عمر اقرأها يا هشام» | عمر بن الخطاب | ٤/٦٣٠ |
| «الأرض كلها مسجد إلا الحمام والمقبرة» | أبو سعيد الخدرى | ٥/١٤٣، ١٤٤ |
| «الأرض كلها مسجد إلا المقبرة والحمام» | أبو سعيد | ٥/١٤٣ |
| «ارضخى ما استطعت...» | أسماء بنت أبى بكر | ٨/٣٥٥، ١١/٥٠٩ |
| «أرضعيه» | عائشة | ١٦/٢٧، ٢٨ |

| | | |
|---|---|---|
| «أرضها وأرض ابنتها» | أبو سلمة | ١١٤/١٤ |
| «أرضوا مصدقيكم» | جرير بن عبد الله | ١٩٣/٨ |
| «أرضوهم» | جرير بن عبد الله | ١١٢/٨ |
| «أرضيت من نفسك ومالك بنعلين؟» | عامر بن ربيعة | ١٨٠/١٤، ٤٩٩ |
| «أرضيتم؟» | عائشة | ٢٣٦/١٦ |
| «ارفع شيئا» | أبو هريرة | ٣٧٦/٥ |
| «ارفع من صوتك شيئا» | أبو قتادة | ٣٧٥/٥ |
| «ارفعه» | ابن عمر | ٤٦٢/١٩ |
| «ارفعوا» | عبد الرحمن بن أزهر | ٤٩٧/١٧ |
| «ارفعوا أيديكم» | جابر بن عبد الله | ٢٢٦/١٦ |
| «ارفعوا عن بطن عرنة...» | عبد الله بن عباس | ٦٦/١٠ |
| «ارفعوا عن بطن مُحسِّر...» | عبد الله بن عباس | ٦٦/١٠ |
| «ارفق يا أنجشة ويحك بالقوارير» | أنس | ٥٩/٢١ |
| «أرقد أو بعد» | ابن عباس | ٤٢٨/٥ |
| «اركب» | سهل ابن الحنظلية | ٤٨٩/١٨ |
| «اركب أيها الشيخ...» | أبو هريرة | ٢١٦/٢٠ |
| «اركبها» | أبو هريرة، أنس | ٤٧٠/١٠- ٤٧٢ |
| «اركبها بالمعروف إذا ألجئت إليها» | جابر بن عبد الله | ٤٧٢/١٠ |
| «اركبها بالمعروف حتى تجد ظهرًا» | جابر بن عبد الله | ٤٧٣/١٠ |
| «اركبوا هذه الدواب سالمة...» | معاذ بن أنس | ٥٣٨/١٠ |
| «أركعت ركعتين؟» | جابر | ٢٨٨/٦ |
| «ارم بها» | على | ١٠/٢٠ |
| «ارم فداك أبي وأمي» | سعد بن أبي وقاص، على | ٥٣٠/١٨، ٥٣١ |
| «ارمِ ولا حرج» | عبد الله بن عمرو | ١٥٢/١٠- ١٥٥ |
| «ارم ولا حرج» | عبد الله بن عباس | ١٥٧/١٠، ١٥٨ |
| «ارموا الجمرة بمثل حصى الخَذْف» | محمد بن إبراهيم التيمي عن رجل من قومه | ١٠٩/١٠ |

| | | |
|---|---|---|
| «ارموا واتقوا الوجه» | أبو بكرة | ١٨٥/١٧ |
| «ارموا واركبوا وأن ترموا أحب إلى...» | عقبة بن عامر الجهنى | ٨/٢٠ |
| «ارموا وأنا معكم جميعا» | سلمة بن الأكوع | ٢١/٢٠ |
| «ارموا وأنا معكم كلكم» | سلمة بن الأكوع | ٢٠/٢٠ |
| «ارموا يا بنى إسماعيل فإن أباكم كان راميًا...» | سلمة بن الأكوع | ٢٠/٢٠ |
| «أرن ما أنهر الدم وذكر اسم الله عليه...» | رافع بن خديج | ٢٠٨/١٩ |
| «أرواحهم فى جوف طير خضر» | عبد الله بن مسعود | ٥٣٥/١٨ |
| «أرواحهم كطير خضر...» | عبد الله بن مسعود | ٥٣٤/١٨ |
| «أرونى ابنى ما سميتموه؟» | على | ٢٨٢/١٢ |
| «أروهم منكم ما يكرهون» | ابن عباس | ٥٥٥/٩ |
| «أرى رؤياكم فى العشر الأواخر فاطلبوها» | عبد الله بن عمر | ١٥٠/٩ |
| «أرى رؤياكم قد تواطأت على هذا فاطلبوها» | عبد الله بن عمر | ١٥٠/٩ |
| «أريت ليلة القدر ثم أنسيتها» | عبد الله بن أنيس | ١٥٥/٩ |
| «أريت ليلة القدر ثم أيقظنى بعض أهلى» | أبو هريرة | ١٤٩/٩ |
| «أريت النار فلم أر كاليوم منظرا أفظع...» | عبد الله بن عباس | ١١٣/١٥ |
| «أريتك فى النوم ثلاث ليال...» | عائشة | ٢١/١٤ |
| «إزرة المؤمن إلى نصف الساقين...» | أبو سعيد الخدري | ٢٥٢/٤ |
| «أزوجتها غير عم ولدها؟» | ابن عباس | ١٢٦/١٤ |
| «أسابيت فلانا» | أبو ذر | ١٠١/١٦ |
| «أسأل الله العافية» | محمد بن على | ٦٠٠/٤ |
| «أسأل الله معافاته ومغفرته...» | أبى بن كعب | ٦٣٢/٤ |
| «إسباغ الوضوء على المكاره...» | أبو هريرة | ٥٢١/٥ |
| «أسبغ الوضوء وخلِّل الأصابع...» | لقيط بن صبرة | ١٥٤/١ |
| «أسبغ الوضوء وخلل بين الأصابع...» | لقيط بن صبرة | ٢٢٩/١، ١٤٥/١٥ |
| «أسبغوا الوضوء ويل للأعقاب من النار» | عبد الله بن عمرو | ٢٠٩/١ |
| «استأذنت ربى أن أزور قبرها فأذن لى» | أبو هريرة | ٤٩٥/٧ |
| «استأذنت ربى فى أن أستغفر لأمى...» | أبى هريرة | ٣٤١/١٤ |
| «استأذنت ربى فى أن أستغفر لها فلم يأذن لى» | أبو هريرة | ٥١٦/٧ |

| | | |
|---|---|---|
| «استتروا فى صلاتكم ولو بسهم» | عبد الملك عن أبيه عن جده | ٣٣٠/٤ |
| «الاستجمار تَوٌّ ورمى الجمار تَوٌّ» | جابر | ٥٨٣/٩ |
| «استحقوا صاحبكم» | سهل بن أبى حثمة، رافع بن خديج | ٤٤٠/١٦ |
| «استحيوا فإن الله لا يستحيى من الحق...» | خزيمة بن ثابت | ٣٦٣/١٤ |
| «استصبحوا به ولا تأكلوه» | أبو سعيد | ٥٦١/١٩ |
| «أستعيذ بالسميع العليم...» | أبو العالية الرياحى | ٣٩٩/١٥ |
| «استعينوا بالركب» | أبو هريرة | ٥٩٤/٣ |
| «استغث السلطان» | مخارق | ٥٤٩/١٧ |
| «استغفروا لأخيكم» | أبو هريرة | ٣٧٩/٧، ٤٢٥ |
| «استغفروا لماعز بن مالك» | بريدة | ٧/١٢، ١٦٠/١٧ |
| «استقبل هذا الشعب...» | سهل ابن الحنظلية | ٤٨٩/١٨ |
| «استقد» | أبو النضر | ٢٣٤/١٦ |
| «استقيموا ولن تحصوا...» | ثوبان | ٢٤٨/١، ٢٧٥/٣ |
| «استمتعوا بجلود الميتة إذا هى دبغت» | عائشة | ٥٦/١ |
| «استمتعوا من هذه النساء...» | سبرة | ٣٨٤/١٤ |
| «الاستنجاء بثلاثة أحجار...» | أنس بن مالك | ٣٣٨/١، ٣٣٩ |
| «استهما» | أبو هريرة | ٩٠/١٦ |
| «استهما على اليمين ما كان...» | أبو هريرة | ٥٣٢/١١، ٢٥٢/٢١ |
| «استهما عليه» | أبو هريرة | ٨٩/١٦ |
| «أستودع الله دينك وأمانتك وخواتيم عملك» | عبد الله بن عمر | ٥٢٤/١٠، ٥٢٥ |
| «أستودع الله دينكم وأماناتكم...» | عبد الله بن يزيد | ٣٨/١٥ |
| «استوصوا بأصحابى خيرا...» | ابن عمر | ٣٩/١٤ |
| «استووا اعدلوا صفوفكم» | أنس بن مالك | ٣٥٣/٣، ٣٥٤ |
| «أسجع الجاهلية وكهانتها؟» | ابن عباس | ٤٢٨/١٦ |
| «أسجع كسجع الجاهلية؟» | أبو المليح الهذلى عن أبيه | ٤٠٨/١٦ |

| | | |
|---|---|---|
| «أسرعوا بالجنازة فإن تك صالحة فخير تقدمونها إليه» | أبو هريرة | ٣٣١/٧ |
| «أسرعوا بنا إلى هذا الحادى» | عكرمة | ١٥٨/٢١ |
| «اسعوا فإن الله كتب عليكم السعى» | بنت أبى تِجْراة | ١٣/١٠ |
| «أسفروا بالفجر فإنه أعظم للأجر» | رافع بن خديج | ٢٧٦/٣ |
| «اسق ثم احبس الماء حتى يرجع الماء إلى الجدر» | - | ٢٤٠/١٢ |
| «اسق يا زبير ثم احبس الماء...» | عروة بن الزبير | ٢٣٩/١٢، ٣٠٩/٢٠ |
| «اسق يا زبير ثم أرسل إلى جارك» | عبد الله بن الزبير | ٢٣٨/١٢، ٣٠٨/٢٠ |
| «اسق يا زبير ثم أرسل الماء إلى جارك» | عروة بن الزبير | ٣٠٩/٢٠ |
| «اسقنا يا سهل» | سهل بن سعد | ٩٣/١ |
| «اسقنى» | عبد الله بن عباس | ١٦٩/١٠ |
| «اسقه العسل» | أبو سعيد الخدرى | ٥٢٥/١٩ |
| «اسقه عسلًا» | أبو سعيد | ٥٢٥/١٩ |
| «اسكبى لى وضوءا» | الرُّبيِّع بنت معوذ ابن عفراء | ١٩٦/١ |
| «اسكتى فوالله لا أقربها وهى على حرام» | قتادة | ٣٠٤/١٥ |
| «اسكن حراء فما عليك إلا نبى أو صديق أو شهيد» | عثمان بن عفان | ٢٨٧/١٢ |
| «اسكنوا فى الصلاة» | جابر بن سمرة | ٣٦٣/٤ |
| «اسكنى فى البيت الذى أتاك فيه نعى زوجك» | فريعة أخت أبى سعيد | ٥٥٣/١٥ |
| «الإسلام أن تشهد أن لا إله إلا الله...» | عمر | ٧١/٢١، ١٩٩/٩ |
| «الإسلام يزيد ولا ينقص» | معاذ بن جبل | ٤١١/١٢، ٥٧٥، ٥٧٦ |
| «أسلفوا فى الثمار فى كيل معلوم إلى أجل معلوم» | ابن عباس | ٣٨١/١١ |
| «اسلكوا هذا الطريق...» | أبو هريرة | ٣٨٤/١٨ |
| «أسلمت؟» | عياض بن حمار | ١٠٨/١٩ |
| «أسلمت على صالح ما سلف لك » | حكيم بن حزام | ٤٤١/٢١ |
| «أسلمت على ما سلف لك من خير» | حكيم بن حزام | ٤٠٠/١٨، ٤٤٠/٢١ |

| | | |
|---|---|---|
| «أسلمتما؟» | خبيب بن يساف | ١٢٧/١٨ |
| «اسم الله على كل مسلم» | أبو هريرة | ١٨٥/١٩ |
| «أسمع رؤياكم قد تواطأت» | ابن عمر | ١٥٩/٩ |
| «اسمع وأطع ولو لحبشى كأن رأسه زبيبة» | أنس | ٥٩٧/٥ |
| «اسمع يا عمر ما يقول» | جابر بن عبد الله | ٥٢٣/١١ |
| «أسمعت بلالا نادى ثلاثا» | عبد الله بن عمرو | ١٠٨/١٣، ٣٣٨/١٨ |
| «اسمعوا إلى ما يقول سيدكم...» | أبو هريرة | ٥٥٢/١٧، ٤٣٧/٢٠ |
| «اسمعوا وأطيعوا فإنما عليهم...» | وائل بن حجر | ٥٦٥/١٦ |
| «أسمعوا وأطيعوا وإن استعمل...» | أنس بن مالك | ٥٥٤/١٦ |
| «أسممت هذه الشاة؟» | جابر بن عبد الله | ٢٢٦/١٦ |
| «الأسنان والأصابع سواء» | ابن عباس | ٣٥٦/١٦ |
| «أسوأ الناس سرقة الذى يسرق من صلاته» | أبو قتادة | ٦٣٧/٤ |
| «أشاهد فلان؟» | أبى بن كعب | ٥٣٧/٥، ٢٧/٦ |
| «أشبهت خلقى وخلقى» | البراء، علىّ | ٩٥/١٦، ١٥١/٢١ |
| «اشتد غضب الله على من دمى وجه نبيه » | عبيد الله بن كعب بن مالك | ٢٩٨/٢ |
| «اشتر بدرهم فأسا...» | أنس بن مالك | ٤٢٨/١٣ |
| «اشتر لنا به شاة» | عروة بن أبى الجعد البارقى | ٩٩/١٢ |
| «اشترطى عند إحرامك: محلى حيث حبستنى...» | عبد الله بن عباس | ٤٢٤/١٠ |
| «اشتركوا فى الهدى» | جابر | ٥٧٠/١١ |
| «اشتروا له بعيرًا فأعطوه إياه» | أبو هريرة | ٥٧٨/١١ |
| «اشتروه فأعطوه إياه....» | أبو هريرة | ٢٩٧/١١ |
| «اشتروه وأعطوه» | أبو هريرة | ٤٨٤/١١ |
| «اشتريها فأعتقيها.....» | عائشة | ٤٩٩/٢١ |
| «اشتريها فإن الولاء لمن أعتق» | عائشة | ٣٨٤/٢١ |
| «اشتريها فإنما الولاء لمن أعتق» | عائشة | ٤٤٨/١٤، ٤٤٩، ٢١/ ٥٠١ |

| | | |
|---|---|---|
| «اشتريها فإنما الولاء لمن أعطى الثمن وولى النعمة» | عائشة | ٣٧٦/٢١ |
| «اشتريها وأعتقيها...» | عائشة | ٢٤٧/١١، ٤٣٨/١٤، ٥٠٣/٢١ |
| «اشتريها الولاء لمن أعتق » | عائشة | ٥٠٤/٢١ |
| «اشحذيها بحجر» | عائشة | ٢٧٠/١٩، ٣١٥ |
| «أشد الناس يوم القيامة عذابا الذين يشبهون...» | عائشة | ٢١/١٥ |
| «الإشراك بالله» | عبد الله بن عمر | ٨٢/٢٠ |
| «الإشراك بالله وعقوق الوالدين...» | أنس، أبو بكرة | ٣٥٨/٢٠، ٩/٢١ |
| «اشرب» | أبو هريرة | ١٧٦/٥ |
| «أشرب خمرا؟» | بريدة | ١٦٠/١٧ |
| «اشرب من ألبانها» | أبو ذر | ١٦٧/٢ |
| «أشربت خمرًا؟» | بريدة | ٧/١٢، ٣٢٤/١٥، ١٧/ ١٩٩ |
| «اشربوا فى الأسقية ولا تشربوا فى الجر...» | ابن عباس | ٤٣٧/١٧ |
| «اشربوا ما حل» | عبد الله بن عمرو | ٤٦٤/١٧ |
| «اشربوا واستقوا» | عمران بن حصين | ١٧١/٢، ٢٦٣ |
| «اشربوا ولا تسكروا» | أبو بردة | ٤٢٤/١٧ |
| «أشركنا فى صالح دعائك ولا تنسنا» | عبد الله بن عمر | ٥٢٥/١٠ |
| «أشعرت أن الله قد أفتانى فيما استفتيته فيه؟» | عائشة | ٤٨٣/١٦ |
| «اشفعوا فلتؤجروا...» | أبو موسى | ٥٩٧/١٦ |
| «أشكر الناس لله أشكرهم للناس» | الأشعث بن قيس | ٣٤٠/١٢ |
| «اشكموه» | طاوس | ٥٠٣/١٩ |
| «أشهد أن لا إله إلا الله...» | عبد الله بن مسعود | ٥٨/٤ |
| «أشهد فلان؟» | أبى بن كعب | ٥١٧/٥ |
| «اشهد معنا الصلاة» | بريدة بن الحصيب | ٥٢/٣ |
| «أشهدت الصلاة أمس واليوم» | أنس بن مالك | ٦٤/٣ |
| «اشهدوا أن دمها هدر» | ابن عباس | ٥٣٤/١٣، ٣٨٩/٢٠ |

| | | |
|---|---|---|
| «أشيروا على أترون أن نميل...» | ابن المبارك | ١١٥/١٩ |
| «أشيروا عليّ أترون أن نميل إلى ذرارى هؤلاء...» | المسور بن مخرمة، مروان بن الحكم | ٣١٦/٢٠ |
| «أصاب الله بك يا ابن الخطاب» | أبو رمثة | ١٠٣/٤ |
| «أصاب الفطرة وقد رددت ثلثه على ولده» | أبو قتادة | ١٩٥/٧ |
| «الأصابع سواء» | أبو موسى الأشعرى | ٣٦٢/١٦ |
| «الأصابع سواء والأسنان سواء...» | ابن عباس | ٣٥٦/١٦ |
| «أصابوا ونعم ما صنعوا» | أبو هريرة | ٣٢٧/٥ |
| «أصبتِ» | أنس | ٢٦١/٢ |
| «أصبت» | جارية بن ظفر | ٥٣٤/١١ |
| «أصبت» | حذيفة | ٥٣٣/١١ |
| «أصبت» | عروة | ٥٥١/٩ |
| «أصبت بعضًا وأخطأت بعضًا» | أبو هريرة، ابن عباس | ٩٢/٢٠، ٩٤ |
| «أصبت السنة وأجزأتك صلاتك» | أبو سعيد الخدرى | ٢٠٢/٢ |
| «أصبت وأحسنت اللهم وفقه» | عبد الله بن عمر | ٣٧٢/٢٠ |
| «أصبتم اقتسموا واضربوا لى معكم بسهم» | أبو سعيد | ١٣٧/١٢ |
| «أصبح من الناس شاكر ومنهم كافر» | عبد الله بن عباس | ١٠٩/٧ |
| «أصبح الناس فقدوا نبيهم...» | أبو قتادة | ٥٤٧/١٦ |
| «اصبر لهم يا معاذ» | جابر بن عبد الله | ٤٧٨/١١ |
| «اصبر يا أبا بصير واحتسب...» | مروان، المسور بن مخرمة | ١٤٣/١٩ |
| «الإصبع تجزئ من السواك» | أنس بن مالك | ١٢٦/١ |
| «إصبعاك سواك عند وضوئك» | أنس بن مالك | ١٢٦/١ |
| «أصدق؟» | عمران بن حصين | ٥٨٢/٤ |
| «أصدق بيت قالته العرب...» | أبو هريرة | ١٩١/٢١ |
| «أصدق عنهما من الخمس كذا وكذا» | عبد المطلب بن ربيعة ابن الحارث | ٤٤٤/١٣ |
| «اصطبر» | أسيد بن حضير | ٧٤/١٤ |
| «أصلح هذا اللحم» | ثوبان | ٣٥٢/١٩ |

| | | |
|---|---|---|
| «أصلحوا هذه الشاة...» | عبد الله بن بسر | ٧٥/١٥ |
| «أصلحيها» | أنس | ١٣٩/١٣، ٥٦٤/١٤، ١٨٩/١٨ |
| «أصلى الناس؟» | عائشة، عبيد الله بن عبد الله | ٣٧٠/١، ٥٤٠/١٦ |
| «أصليتَ؟» | جابر، أبو سعيد الخدرى | ٣٥١/٦، ٣٥٢ |
| «أصليت الركعتين؟» | جابر | ٢٨٨/٦ |
| «أصليت معنا؟» | ابن عمر | ٣٣٥/٦ |
| «أصليت يا فلان» | أبو سعيد | ٢٨٩/٦ |
| «اصنعوا لآل جعفر طعامًا...» | عبد الله بن جعفر | ٤٦٠/٧ |
| «أضاء له من النور ما بينه وبين البيت العتيق» | أبو سعيد الخدرى | ٤٥١/٦ |
| «إضاعة الوقت..» | سعد بن أبى وقاص | ١٦٤/٤ |
| «الأضحية إلى رأس المحرم» | - | ٣٧٢/١٩ |
| «الإضرار فى الوصية من الكبائر» | ابن عباس | ٣٣/١٣ |
| «اضرب به الحائط...» | القاسم بن مخيمرة | ٤٣٩/١٧ |
| «اضرب بها الحائط...» | أبو هريرة | ٤٣٨/١٧ |
| «اضربوه...» | أبو هريرة، عبد الرحمن ابن أزهر، عقبة بن الحارث | ٤٦٩/١٧، ٤٨٥، ٤٩٤، ٤٩٥ |
| «اضمنوا لى ستا من أنفسكم...» | عبادة بن الصامت | ٨٩/١٣ |
| «إطراق فحلها وإعارة دلوها ومنيحتها...» | جابر بن عبد الله | ٣٣٩/٨ |
| «اطرحها» | عبد الرحمن بن عويم ابن ساعدة | ٩/٢٠ |
| «اطرحوها وما حولها إن كان جامدًا» | عبد الله بن عمر | ٥٦٠/١٩ |
| «إطعام الطعام وطيب الكلام» | جابر بن عبد الله | ٥٦٤/١٠ |
| «أطعم أهلك من سمين حمرك...» | غالب بن أبجر | ٤٨١/١٩ |
| «أطعم ستة مساكين ثلاثة آصع من تمر» | كعب بن عجرة | ٤٦٧/٩ |

| | | |
|---|---|---|
| «أطعم ستين مسكينا» | أبو هريرة ، خولة، عائشة، محمد بن عبد الرحمن بن ثوبان وأبو سلمة | ٤٨٤/٨، ٤٨٦، ٤٩٤، ٤١١/١٥، ٤١٨، ٥٧/١٦ |
| «أطعم هذا ستين مسكينا» | سعيد بن المسيب | ٤٢٠/١٥ |
| «أطعم هذا عنك» | أبو هريرة | ٤٧٩/٨ |
| «أطعمه أهلك» | أبو هريرة | ٤٧٩/٨، ٤٨٥، ٤٨٧ |
| «أطعمه رقيقك...» | محيصة | ٤٩٨/١٩ |
| «أطعمه ستين مسكينا...» | سلمة بن صخر | ٤١٢/١٥ |
| «اطعموا الجائع وعودوا المريض وفكوا العانى» | أبو موسى الأشعرى | ١٧٩/٧، ٥٨٥/١٩ |
| «أطعموا الجائع وفكوا العانى...» | أبو موسى | ١٤١/١٩ |
| «أطعميه الأسارى» | رجل من الأنصار | ٢٣٧/١١ |
| «أعطه دية أبيه» | قرة بن دعموص النميرى | ٤٨١/١٦ |
| «اطلب حقك حتى تعجز...» | الزهرى | ٥٤٢/٢٠ |
| «اطلبوه فاقتلوه» | سلمة بن الأكوع | ١٤٧/١٣، ٤٨٣/١٨ |
| «اطلبوها ليلة سبع عشرة من رمضان» | ابن مسعود | ١٥٨/٩ |
| «أطلقوا ثمامة» | أبو هريرة | ٢٩/٢، ١٨٦/١٣، ١٨/ ٢٢١ |
| «أطلقوه قد عفوت عنك يا ثمام» | أبو هريرة | ٢٢٣/١٨ |
| «أطيعوا أمراءكم ما كان...» | المقدام | ٥٦٦/١٦ |
| «أطيعى أباك» | أبو سعيد الخدرى | ١٠٥/١٥ |
| «أظلكم شهر رمضان» | أبو هريرة | ١٣٦/٩ |
| «أظنكم سمعتم بقدوم أبى عبيدة...» | عمرو بن عوف | ٢٩/١٩ |
| «أظهروا النكاح واضربوا عليه بالغربال» | عائشة | ٩٩/١٥ |
| «اعبر» | ابن عباس | ٩٤/٢٠ |
| «اعبرها» | أبو هريرة | ٩٢/٢٠ |
| «اعتدلوا، سووا صفوفكم» | أنس بن مالك | ٣٥٤/٣، ١٠٩/٦ |
| «اعتدلوا فى السجود» | أنس | ٥٨٤/٣ |

| | | |
|---|---|---|
| «اعتدى» | أبو هريرة | ٢٧١/١٥ |
| «أعتق رقبة» | أبو هريرة | ٤٨٠/٨، ٤٨٦، ٤٩١، ٤٩٣، ٤٩٤، ٤١٩/١٥ |
| «أعتق رقبة» | خولة | ٤١٨/١٥ |
| «أعتق رقبة» | سلمة بن صخر الأنصارى | ٤١٤/١٥ |
| «أعتق رقبة» | عائشة | ٤٨٤/٨ |
| «أعتق رقبة» | محمد بن عبد الرحمن ابن ثوبان وأبو سلمة | ٤١١/١٥ |
| «أعتق عددهن نسمًا» | قيس بن عاصم | ٤٣٣/١٦ |
| «أعتق عن كل واحدة منهن نسمة» | عمر بن الخطاب | ٤٣٢/١٦ |
| «أعتقت غلامك» | جابر بن عبد الله | ٤٢٠/٢١ |
| «أعتقك ولدك» | عبيد الله بن أبى جعفر | ٥٣٢/٢١ |
| «أعتقها» | عبيد الله بن عبد الله بن عتبة | ١٤٨/٢٠ |
| «أعتقها» | عمر بن الحكم | ١٤٧/٢٠ |
| «أعتقها ثم أصدقها» | أبو موسى | ١٥٠/١٤ |
| «أعتقها فإنها مؤمنة» | أبو هريرة | ٤٠٦/١٥ |
| «أعتقها فإنها مؤمنة» | الشريد بن سويد الثقفى | ٤٠٨/١٥ |
| «أعتقها فإنها مؤمنة» | معاوية بن الحكم | ٤٠٥/١٥ |
| «أعتقها ولدها» | عبد الله بن عباس | ٥٣٠/٢١ |
| «أعتقها ولدها» | عكرمة | ٥٢٩/٢١ |
| «أعتقوا عنه يعتق الله بكل عضو منه عضوا...» | واثلة بن الأسقع | ٤٧٦/١٦ |
| «أعتقوها» | معاوية بن سويد | ١١٧/١٦ |
| «أعتقيها» | عتبة بن مسعود | ٤٠٦/١٥ |
| «أعتقيها فإن الولاء لمن أعطى الورق» | عائشة | ٥٠٥/٢١ |
| «أعتقيها فإنما الولاء لمن أعتق...» | عائشة | ٤٤٧/١٤ |
| «أعتقيها فإنها من ولد إسماعيل عليه السلام» | أبو هريرة | ٣٨٥/١٣ |

| | | |
|---|---|---|
| «اعتمرى فى رمضان» | ابن أم معقل الأسدية، هرم بن خنبش | ٢٦٧/٩ |
| «أعتموا بهذه الصلاة فإنكم قد فضلتم بها على سائر الأمم» | معاذ بن جبل | ٢٦١/٣ |
| «أعتى الناس على الله من قتل غير قاتله...» | أبو شريح الخزاعى | ١٦٨/١٦ |
| «أعجل ما أنهر الدم وذكر اسم الله...» | رافع بن خديج | ٢٠٨/١٩ |
| «أعد صلاتك لا صلاة لفرد خلف الصف» | على بن شيبان | ٣٦/٦ ٣٧ |
| «أعد نسكا» | البراء بن عازب | ٢٥٧/١٩ |
| «اعدلوا بين أولادكم اعدلوا بين أولادكم» | النعمان بن بشير | ٣٢٤/١٢ |
| «أعدى الناس على الله من قتل غير قاتله» | - | ١٦٧/١٦ |
| «اعرضوا على رقاكم لا بأس بالرقى...» | عوف بن مالك | ٥٤٣/١٩ |
| «اعرف عددها وكاءها ووعاءها...» | أبى بن كعب | ٣٦٨/١٢، ٣٨٤ |
| «اعرف عددها ووعاءها وعفاصها...» | عبد الله بن عمرو بن العاص | ٣٨٥/١٢ |
| «اعرف عددها ووعاءها ووكاءها...» | أبى بن كعب | ٣٨٣/١٢ |
| «اعرف عفاصها ووكاءها ثم عرفها سنة...» | زيد بن خالد الجهنى | ٣٥٠/١٢، ٣٥٩، ٣٦٩ |
| «اعرف عفاصها ووكاءها» | - | ٣٨٧/١٢ |
| «اعرف وكاءها وعفاصها ثم عرفها سنة...» | زيد بن خالد الجهنى | ٣٥١/١٢، ٣٦٠ |
| «اعرفوا أنسابكم تصلوا أرحامكم» | ابن عباس | ٤٦٨/٢٠ |
| «اعزل عنها إن شئت فإنه سيأتيها ما قدر لها» | جابر | ٤٦٣/١٤ |
| «أعط ابنتى سعد الثلثين...» | جابر بن عبد الله | ٤٤٦/١٢ |
| «أعط الأجير أجره قبل أن يجف عرقه» | أبو هريرة | ١٢٧/١٢ |
| «أعطه إياه؛ فإن خيار عباد الله أحسنهم قضاء» | أبو رافع | ٣٠٤/١١ |
| «أعطه إياه فإن خيار الناس أحسنهم قضاء» | أبو رافع | ٣٨٧/١١ |
| «أعطه إياها ولك عذق فى الجنة» | جابر بن عبد الله | ٥٢٤/١١ |
| «أعطه نخلتك» | جابر بن عبد الله | ٥٢٤/١١ |
| «أعطه يا فضل» | الفضل بن عباس | ٥٥٨/١١ |
| «أعطها إياه» | يعلى ابن منية | ٩٨/١٨ |
| «أعطها ثوبا» | سهل بن سعد | ٢٠٢/١٤ |

| | | |
|---|---|---|
| «أعطها درعك» | رجل من أصحاب رسول الله ﷺ | ٥٤٢/١٤ |
| «أعطها شيئا» | ابن عباس | ٥٤١/١٤ |
| «أعطها فإنها صادقة» | سعد بن الأطول | ٤٢٣/٢٠ |
| «أعطها فإنها محقة» | سعد بن الأطول | ٤٢٣/٢٠ |
| «أعطها ولو خاتما من حديد» | سهل بن سعد | ٢٠٢/١٤ |
| «أعطهما الثلثين وأعط أمهما الثمن...» | جابر بن عبد الله | ٤٨٩/١٢ |
| «أعطوا الأجير أجره قبل أن يجف عرقه» | أبو هريرة | ١٢٤/١٢ |
| «أعطوا ميراثه رجلًا من أهل قريته» | عائشة | ٥٣٦/١٢ |
| «أعطوه حيث بلغ السوط» | ابن عمر | ٢٠٦/١٢ |
| «أعطوه» | أبو هريرة | ٣٠٣/١١، ٣٨٨ |
| «أعطوهم نصف العقل لصلاتهم» | قيس بن أبى حازم | ٤٦٩/١٦ |
| «أعطيت خمسًا لم يعطهن أحد قبلى..» | جابر بن عبد الله | ١٥٢/٢، ٥٠٧/٤، ٥/ ١٣٨، ٩٩/١٣، ١٤/١٨ |
| «أعطيت خمسا لم يعطهن أحد قبلى...» | ابن عباس | ١٣٩/٥ |
| «أعطيت سائر ولدك مثل هذا؟» | النعمان بن بشير | ٣٢١/١٢ |
| «أعطيت ما لم يعط أحد» | على بن أبى طالب | ١٥٦/٢ |
| «اعف عنه» | وائل بن حجر | ٢٥٣/١٦ |
| «اعف عنه كل يوم سبعين مرة» | عبد الله بن عمر | ١١٣/١٦ |
| «أعف الناس قِتلة أهل الإيمان...» | ابن مسعود | ٢٦٩/١٦ |
| «أعفوا اللحى...» | عبد الله بن عمر | ٤٢٧/١ |
| «اعقلها ولا ترثها» | عدى الجذامى | ٤٥٣/١٢ |
| «اعلف به الناضح واجعله فى كرشه» | محيصة بن مسعود | ٤٩٩/١٩ |
| «اعلفه ناضحك ورقيقك» | محيصة | ٤٩٩/١٩ |
| «اعلم أبا مسعود» | أبو مسعود | ١١٠/١٦، ١١١ |
| «اعلم أنك لا تسجد لله سجدة إلا» | أبو أمامة | ١٢٥/٩ |
| «اعلموا أن الأرض لله ولرسوله...» | أبو هريرة | ٨٨/١٩ |
| «أعلنوا النكاح» | عبد الله بن الزبير | ٩٣/١٥ |
| «أعلنوا هذا النكاح واجعلوه فى المساجد» | عائشة | ١٠٠/١٥ |

| | | |
|---|---|---|
| «أعمار أمتى ما بين الستين إلى السبعين» | أبو هريرة | ١٥٠/٧ |
| «الأعمال بالنية وإنما لامرئ ما نوى..» | عمر بن الخطاب | ٥٢٠/٨ |
| «أعمقوا وأحسنوا وادفنوا الاثنين والثلاثة» | هشام بن عامر | ٢٨١/٧، ٣٧٥/٧ |
| «اعملوا بالقرآن أحلوا حلاله وحرموا حرامه...» | معقل بن يسار | ٦٠٤/١٩، ٦٠٥ |
| «اعمم؛ ففضل ما بين العموم والخصوص كما بين السماء والأرض» | على بن أبى طالب | ١٠٩/٦ |
| «أعندك شىء؟» | عائشة | ٤١٣/٨، ٥٠/٩ |
| «أعندكم شىء؟» | أم عطية الأنصارية | ٤٤٩/١٣ |
| «أعوذ بالسميع أو قال أعوذ بالله السميع العليم من الشيطان» | عائشة | ٤٠٩/٣ |
| «أعوذ بالله السميع العليم من الشيطان الرجيم» | أبو سعيد الخدرى | ٣٨٩/٣ |
| «أعوذ بالله من الخبث والخبائث» | أنس بن مالك | ٢٩٠/١ |
| «أعوذ بالله منك» | أبو الدرداء | ٣٠٩/٤ |
| «أعوذ برضاك من سخطك وبعفوك من عقوبتك» | عائشة | ٥٩٣/٣ |
| «أعيرته بأمه؟» | أبو ذر | ١٠٢/١٦ |
| «أعينوا أبا مؤمل» | يزيد بن أبى حبيب | ٤١٤/١٣ |
| «اغتسلوا منه وتوضئوا به» | أبو هريرة | ١١/١ |
| «اغتسلوا يوم الجمعة...» | ابن عباس | ٣٧٤/٢، ٤٢٨/٦ |
| «اغتسلى لكل صلاة» | عائشة | ٤٩٨/٢ |
| «اغتسلى واستذفرى بثوب وأحرمى» | محمد بن على بن الحسين | ٣١٦/٩ |
| «اغد يا أنيس على امرأة هذا...» | - | ١٩٩/١٧ |
| «اغرس واشترط لهم» | سلمان الفارسى | ٤٥٥/٢١ |
| «اغزوا باسم الله...» | بريدة | ٢٣٣/١٨ |
| «اغزوا باسم الله فقاتلوا عدو الله وعدوكم..» | خالد بن زيد | ٣٠٢/١٨ |
| «اغزوا باسم الله وفى سبيل الله...» | بريدة | ١٦٨/١٨ |
| «اغسل ذكرك وتوضأ» | عمر | ١١٤/٢ |
| «اغسل ذكرك وتوضأ ثم ارقد» | عبد الله بن عمر | ٣٤٨/١٤ |

| | | |
|---|---|---|
| «اغسلنها بماء وسدر...» | أم عطية الأنصارية | ٢٢/١، ٢١٠/٧، ٢٩٢ |
| «اغسلنها ثلاثًا أو خمسًا أو أكثر من ذلك» | أم عطية | ٢١٠/٧، ٢١١، ٢٨٧، ٢٩٢ |
| «اغسلنها وترًا ثلاثًا أو خمسًا أو أكثر من ذلك» | أم عطية | ٢٩٠/٧ |
| «اغسله بماء وسدر» | - | ١٩٦/١٢ |
| «اغسلها وكل فيها» | عبد الله بن عمرو | ١٩٤/١٩ |
| «اغسلوه بماء وسدر» | ابن عباس | ٢١٤/٧-٢١٦، ٢٥٢، ٩/ ٤٥٨- ٤٦٠، ٤٩٠، ٥١٣، ٥١٤ |
| «اغسلوه وكفنوه ولا تغطوا رأسه ولا تقربوه طيبًا» | عبد الله بن عباس | ٢٢١/٧ |
| «اغسلوه ولا تقربوه طيبا...» | عبد الله بن عباس | ٢٢٠/٧ |
| «اغسلوها بالماء ثم اطبخوا فيها...» | أبو ثعلبة الخشنى | ١٠٠/١ |
| «اغسلى عنك الدم وصلى » | عائشة | ٤٤٧/٢ |
| «اغسلى هذه وأجِفِّيها ثم أرسلى إلى» | عائشة | ٥٢/٥ |
| «اغسليه وصلى فيه» | خولة بنت نمار | ٦٤/٥ |
| «أغلاها ثمنًا وأنفسها عند أهلها» | أبو ذر | ٣٩/١٣، ٢٨٧/١٩، ٢١/ ٣٠٨ |
| «أغنوهم عن طواف هذا اليوم» | ابن عمر | ٣١٠/٨ |
| «أفٍّ أفٍّ» | عبد الله بن مسعود | ٢٧٨/٤ |
| «أفاتن أنت!!» | جابر بن عبد الله | ٦٧/٦ |
| «أفتان أنت؟» | حذيفة | ٨٩/٢١ |
| «أفتان أنت يا معاذ...» | جابر بن عبد الله | ٥٨٩/٥، ٦٩/٦ |
| «أفتان أنت؟ خفف على الناس» | جابر بن عبد الله | ٦٨/٦ |
| «أفتان يا معاذ أفتان أنت» | جابر بن عبد الله | ٥٥/٦ |
| «أفتبرئكم يهود بخمسين يمينا...» | سهل بن أبى حثمة | ٤٤١/١٦، ٥٤٨/٢٠ |
| «أفتحتسبون بالشر ولا تحتسبون بالخير؟» | أبو ذر | ٥٨٤/١١ |
| «افترقت اليهود على إحدى أو ثنتين وسبعين فرقة » | أبو هريرة | ٨٨/٢١ |

| | | |
|---|---|---|
| «أفتستحقون الدية بأيمان خمسين منكم؟» | أبو قلابة | ٤٦٢/١٦ |
| «أفتستطيع أن تصوم شهرين متتابعين؟» | أبو هريرة | ٤٨٢/٨ |
| «أفتستطيع أن تطعم ستين مسكينا» | أبو هريرة | ٤٨٢/٨ |
| «أفتستطيع صوم شهرين متتابعين؟» | أبو العالية الرياحى | ٣٩٩/١٥ |
| «أفتوقنين بالبعث بعد الموت؟» | عبيد الله بن عبد الله بن عتبة | ١٤٨/٢٠ |
| «أفرغت؟» | على | ٢٦١/١٧ |
| «أفضتما؟» | أم سلمة | ١٤٠/١٠ |
| «أفضل الأيام عند الله يوم النحر» | عبد الله بن قرط | ٤٧٥/١٠ |
| «أفضل أيامكم يوم الجمعة...» | أوس بن أوس | ٤٤٩/٦ |
| «أفضل الدعاء دعاء يوم عرفة...» | طلحة بن عبيد الله بن كريز | ٧٢/١٠ |
| «أفضل دينار ينفقه الرجل دينار ينفقه على عياله» | ثوبان | ٣٢٢/٨، ٥٤/١٦ |
| «أفضل الصدقة....» | حكيم بن حزام | ٣٣٠/٨ |
| «أفضل الصدقة على ذى الرحم الكاشح» | أم كلثوم بنت عقبة | ٤٣٤/١٣ |
| «أفضل الصدقة المنيحة....» | أبو هريرة | ٣٤٧/٨ |
| «أفضل الصلاة بعد المكتوبة» | أبو هريرة | ٩٤/٩ |
| «أفضل الصلاة طول القنوت» | جابر | ٣٦٧/٥ |
| «أفضل الصيام بعد شهر رمضان» | أبو هريرة | ٩٣/٩ |
| «أفطر الحاجم والمحجوم» | الحسن عن غير واحد من أصحاب النبى ﷺ أسامة بن زيد وثوبان ورافع بن خديج وشداد ابن أوس وأبو رافع وابن عباس وأبو موسى وشداد بن أوس | ١٦/٩- ١٩، ٢١- ٢٩ |
| «أفطر عندكم الصائمون...» | أنس بن مالك | ٥٣٥/٨ |
| «أفطر هذان» | أنس بن مالك | ٢٩/٩ |

| | | |
|---|---|---|
| «أفطر وصم مكانه» | أبو سعيد | ٥٨/٩ |
| «أفعل» | عائشة | ١٩٦/١٣ |
| «أفعل» | عتبان بن مالك | ٤٩٥/٥ |
| «افعل ولا حرج» | جابر بن عبد الله | ١٥٨/١٠ |
| «افعل ولا حرج» | عبد الله بن عمرو بن العاص | ١٤٧/١٠ |
| «افعلوا ما أمرتكم» | جابر بن عبد الله | ٢٩٤/٩ |
| «افعلى كما يفعل الحاج» | عائشة | ٥٧٠/٩ |
| «أفعمياوان أنتما...» | أم سلمة | ٤٢/١٤ |
| «أفقرناك ظهره إلى المدينة» | جابر بن عبد الله | ٢٤٤/١١ |
| «أفلا آذنتمونى به دلونى على قبره» | أبو هريرة | ٤١٧/٧ |
| «أفلا أخبركم بأمر تدركون من كان قبلكم...؟» | أبو هريرة | ٨٩/٤ |
| «أفلا أكون عبدًا شكورًا؟» | المغيرة بن شعبة | ٣٩٢/٥، ٤٦٩/١٣ |
| «أفلا أكون عبدًا شكورًا؟» | عائشة | ٣٣٢/٥ |
| «أفلا بكرا تلاعبها؟» | جابر | ٥/١٤ |
| «أفلا تركتموه؟» | أبو هريرة | ٢٠٤/١٧ |
| «أفلا تنتقلون عنها ذميمة» | عبد الله بن شداد | ٥٠٣/١٦ |
| «أفلا جعلته فوق الطعام حتى يراه الناس؟» | أبو هريرة | ١٨٦/١١ |
| «أفلا جعلتهن البيض ثلاث عشرة...» | عمار بن ياسر | ٤٤٧/١٩ |
| «أفلا جعلتهن البيض؟» | عمار بن ياسر | ٤٤٧/١٩ |
| «أفلا شققت عن قلبه...» | أسامة بن زيد | ١٤٣/١٦، ٨٣/١٧، ٩٨ |
| «أفلا قبل هذا؟...» | ابن عباس | ٣١٧/١٩ |
| «أفلا كسوتها بعض أهلك ؟» | ابن عمرو | ٤٣٩/٦، ٤٨٠/٩ |
| «أفلا كنتم آذنتمونى» | أبو هريرة | ٥٠٨/٧ |
| «أفلح إن صدق...» | طلحة بن عبيد الله | ١٤/٣، ٢٤١/٥ |
| «أفلح وأبيه إن صدق...» | طلحة بن عبيد الله | ٢٣٩/٥، ٤٠٦/٨، ٢٠/ ٦٣ |
| «أفلح الوجه» | عبد الله بن أنيس | ٣٦٧/٦، ٤٧١ |

| | | |
|---|---|---|
| «أفلحت الوجوه» | عبد الرحمن بن عبدالله ابن كعب بن مالك | ٣٦٥/٦ |
| «أفلحت يا قديم إن مت ولم تكن أميرا...» | المقدام | ٣٢٥/١٣ |
| «أفنكتها؟» | ابن عباس | ٢٠٠/١٧ |
| «أفي شك أنت يا ابن الخطاب...؟» | ابن عباس | ٤٦٤/١٣ |
| «أفيضمنه منكم أحد حتى أصلى عليه؟» | أنس | ٥٦٠/١١ |
| «أفيقسم منكم خمسون...» | سهل بن أبي حثمة | ٥٤٨/٢٠ |
| «أقاتل الناس حتى يشهدوا أن لا إله إلا الله...» | أبو هريرة | ١١٩/١٧ |
| «أقاتل الناس حتى يقولوا: لا إله إلا الله...» | أبو هريرة | ٤٠٧/١٥ |
| «أقامها الله وأدامها» | عن أبي أمامة أو عن بعض أصحاب النبي ﷺ | ١٥٧/٣، ١٥٨ |
| «اقبض من تحت يدك من صدقات هذيل...» | أبو المليح الهذلي عن أبيه | ٤٠٩/١٦ |
| «أقبل فبايع» | سلمة بن الأكوع | ٥٢٣/١٦ |
| «أقبل وأدبر واتق الدبر والحيضة» | ابن عباس | ٣٦٥/١٤ |
| «اقبلوا البشرى يا أهل اليمن» | عمران بن حصين | ٥/١٨ |
| «اقبلوا البشرى يا بني تميم» | عمران بن حصين | ٥/١٨ |
| «اقتدوا باللذين من بعدي...» | حذيفة | ٥٤٦/١٦ |
| «اقتص» | أبو ليلى | ٢٣٥/١٦ |
| «أقتلتموه؟» | عبد الرحمن بن عبدالله ابن كعب بن مالك | ٣٦٥/٦ |
| «أقتلته؟» | وائل بن حجر | ٢٥١/١٦ |
| «أقتلته بسلاحك في غرة الإسلام...» | الزبير | ٣٧٩/١٨ |
| «اقتلوا شيوخ المشركين...» | سمرة بن جندب | ٣٠٦/١٨ |
| «اقتلوا الفاعل والمفعول به...» | ابن عباس | ٢١٧/١٧، ٢٢٢ |
| «اقتلوا القاتل واصبروا الصابر» | إسماعيل بن أمية | ٢٤٠/١٦ |
| «اقتلوه» | الحارث بن حاطب، أنس بن مالك | ٢٧٠/١٠، ١٩٩/١٣، ٥٣٢، ١٢٨/١٧، ٣٤٣، ١٠١/١٩ |

| | | |
|---|---|---|
| «اقتلوه» | جابر بن عبد الله | ٣٤٢/١٧ |
| «اقتلوه واقتلوها...» | ابن عباس | ٢٢٣/١٧ |
| «اقتلوها...» | عبد الله | ٣٨٨/١٠ |
| «اقتلوهم وإن وجدتموهم متعلقين...» | سعد بن أبي وقاص | ١٢٢/١٧، ١٠١/١٩ |
| «اقتلوهم وإن وجدتموهم معلقين...» | سعد بن أبي وقاص | ١٢٩/١٧ |
| «أقد قضى» | عبد الله بن عمر | ٤٩١/٧، ٤٩٢ |
| «اقرأ» | عمر بن الخطاب | ٦٦٥/٣، ٦٣١/٤ |
| «اقرأ باسم ربك والليل إذا يغشى» | جابر بن عبد الله | ٦٨/٦ |
| «اقرأ بسبح اسم ربك الأعلى...» | جابر بن عبد الله | ٥٥/٦ |
| «اقرأ عليّ» | عبد الله بن مسعود | ١٦٧/٢١ |
| «اقرأ» | زيد بن ثابت | ٨١/١٨ |
| «أقرأني جبريل عليه السلام على حرف...» | عبد الله بن عباس | ٦٣٣/٤ |
| «اقرءوا القرآن فإنه يجئ يوم القيامة شفيعًا لأصحابه...» | أبو أمامة الباهلي | ٣٠/٥ |
| «اقرءوا القرآن في شهر» | عبد الله بن عمرو | ٣٠/٥ |
| «اقرءوها عند موتاكم» | معقل بن يسار | ١٩٣/٧ |
| «أقرب ما يكون العبد من ربه وهو ساجد» | أبو هريرة | ٥٧٨/٣ |
| «أقركم على ذلك ما شئنا» | عمر | ٨٤/١٩ |
| «أقركم فيها على ذلك ما شئنا» | ابن عمر | ١٠٤/١٢، ٢٦٠/١٣، ١٣٤/١٩ |
| «أقركم ما أقركم الله...» | سعيد بن المسيب | ١٤٢/٨، ١٣٤/١٩ |
| «أقروا الطير على مكاناتها» | أم كرز | ٤١٤/١٩، ٤١٥ |
| «أقروا الطير على مكناتها» | أم كرز | ٤١٥/١٩ |
| «أقرئها السلام ورحمة الله وأخبرها...» | ابن عباس | ٢٧٨/١٢ |
| «اقسمه بين الناس» | أنس بن مالك | ٧٢/١ |
| «اقسموا المال بين أهل الفرائض...» | ابن عباس | ٥٨٧/١٢ |
| «اقض دينك» | جابر بن عبد الله | ٤٢٢/٢١ |
| «اقض عنا الدين واغننا من الفقر» | أبو هريرة | ٣٨٨/١٣ |
| «اقض يومًا مكانه» | أبو هريرة | ٤٩١/٨ |

| | | |
|---|---|---|
| «اقضه عنها» | ابن عباس | ٥٨٨/٨، ٥٦/١٣، ٥٧ |
| «اقضوا الله فإن الله أحق بالوفاء» | ابن عباس | ٢٣٢/٩ |
| «اقضوه» | أبو هريرة | ٤٨٤/١١ |
| «اقضى الله الذى هو له...» | ابن عباس | ٤٣/١٣ |
| «اقضى دين أمك» | ابن عباس | ٥٨٦/٨ |
| «اقضيا مكانه يومًا آخر» | ابن شهاب | ٥٩/٩ |
| «اقضيا نسككما...» | يزيد بن نعيم | ٢٣٧/١٠ |
| «اقضيا يومًا آخر» | عائشة | ٦٠/٩ |
| «اقضيا يومًا مكانه» | عائشة | ٦١/٩ |
| «اقطعوا رجله...» | جابر بن عبد الله | ٣٤٢/١٧ |
| «اقطعوا فى ربع دينار...» | عائشة | ٢٩٤/١٧ |
| «اقطعوا يده...» | جابر بن عبد الله | ٣٤٢/١٧ |
| «اقطعوه» | جابر بن عبد الله | ٣٤٢/١٧ |
| «اقعد فاشرب» | أبو هريرة | ١٧٦/٥، ١٦/١٤ |
| «اقعد واستظل وتكلم وكفر» | عبد الله بن عباس | ٢٠٦/٢٠ |
| «اقعدى ناحية» | رافع بن سنان | ٩٠/١٦ |
| «أقم على‌ها الحد» | على | ٢٦١/١٧ |
| «أقم يا قبيصة حتى تأتينا الصدقة...» | قبيصة بن المخارق | ١٣/ ٤١٦، ٤٢١ |
| «أقول: اللهم باعد بينى وبين خطاياى كما باعدت بين المشرق والمغرب» | أبو هريرة | ١١٧/٤ |
| «أقول كما قال يوسف...» | أبو هريرة | ٣٨٥/١٨ |
| «أقيلوا ذوى الهيئات زلاتهم» | عائشة | ٥٤٠/١٧ |
| «أقيلوا ذوى الهيئات عثراتهم...» | عائشة | ٥٧٧/١٦، ٣٢٨/١٧، ٥٤٢ |
| «أقيموا الحد على ما ملكت أيمانكم» | على | ٢٠٧/١٧، ٢٦١ |
| «أقيموا الحدود فى الحضر والسفر...» | عبادة بن الصامت | ٣٤٤/١٨ |
| «أقيموا الصف فى الصلاة» | أبو هريرة | ١٩/٦ |
| «أقيموا الصفوف؛ فإنى أراكم خلف ظهرى» | أنس | ٢٠/٦ |

| | | |
|---|---|---|
| «أقيموا الصفوف وحاذوا بين المناكب وسدوا الخلل» | عبد الله بن عمر | ٢٤/٦ |
| «أقيموا صفوفكم...» | النعمان بن بشير | ٢٢٨/١، ٢٣/٦ |
| «أقيموا صفوفكم ثم ليؤمكم أحدكم» | أبو موسى الأشعرى | ٦٥٣/٣، ٦٥٤ |
| «أقيموا صفوفكم وتراصوا فإنى أراكم من وراء ظهرى» | أنس بن مالك | ٣٥١/٣ |
| «أكبر الكبائر الإشراك بالله...» | أنس | ١٤٥/١٦، ٣٥٩/٢٠، ٤٩/٢١ |
| «اكتب باسمك اللهم» | أنس، مروان بن الحكم، المسور بن مخرمة | ١٢٠/١٩، ١٤٣ |
| «اكتب بسم الله الرحمن الرحيم» | أنس، مروان بن الحكم، المسور بن مخرمة | ١٢٠/١٩، ١٤٣ |
| «اكتب: ﴿لا يستوى القاعدون من المؤمنين...﴾» | زيد بن ثابت | ٨٠/١٨، ٨١ |
| «اكتب له يا غلام بالدهناء» | قيلة بنت مخرمة | ٢٢٧/١٢ |
| «اكتب محمد بن عبد الله» | أنس | ١٤٣/١٩ |
| «اكتب: من محمد رسول الله» | على بن أبى طالب | ٤٤/١٧ |
| «اكتب: هذا ما صالح عليه محمد رسول الله» | أنس | ١٤٣/١٩ |
| «اكتب يا على: هذا ما اصطلح عليه محمد...» | ابن عباس | ٤٣/١٧ |
| «أكتبت هذا الكتاب؟» | على بن أبى طالب | ٤٨٢/١٨ |
| «اكتبه» | على بن أبى طالب | ٤٤/١٧ |
| «اكتبوا لى من لفظ الإسلام من الناس» | حذيفة | ٣٣٤/١٣ |
| «اكتم الخطبة ثم توضأ فأحسن وضوءك...» | أبو أيوب الأنصارى | ٢١١/١٤ |
| «أكثر جند الله» | سلمان | ٢٤١/١٩ |
| «أكثر جنود الله فى الأرض الجراد...» | أبو عثمان النهدى | ٢٤٠/١٩ |
| «أكثر جنود الله لا آكله ولا أحرمه» | سلمان | ٢٤٠/١٩ |

| | | |
|---|---|---|
| «أكثر دعائى ودعاء الأنبياء قبلى بعرفة: لا إله إلا الله...» | على بن أبى طالب | ٧٢/١٠ |
| «أكثر عذاب القبر فى البول» | أبو هريرة وابن عباس | ٧٦/٥ |
| «أكثرت عليكم فى السواك» | أنس بن مالك | ١٠٥/١ |
| «أكثركم جمعًا للقرآن أو أخذًا للقرآن» | عمرو بن سلمة | ٦٠٨/٥ |
| «أكثروا الصلاة على يوم الجمعة...» | أنس | ٤٥٠/٦ |
| «أكثروا الطيب لفاطمة...» | سعد بن عبيد الله | ٥٤٦/١٤ |
| «أكثروا على من الصلاة فى كل يوم جمعة...» | أبو أمامة | ٤٥٠/٦ |
| «الأكثرون أموالًا إلا من قال هكذا وهكذا...» | أبو ذر | ٥٤/٢٠ |
| «أكذب الناس الصباغون والصواغون» | أبو هريرة | ٢٣٠/٢١ |
| «أكره أن يتحدث الناس...» | ابن إسحاق | ١٠٩/١٧، ١١٢/١٨ |
| «أكره النوم قبلها والحديث بعدها» | أبو برزة | ٢٦٢/٣ |
| «أكل بنيك أعطيته هذا؟» | النعمان بن بشير | ٣٢٦/١٢ |
| «أكل بنيك نحلت؟» | النعمان بن بشير | ٣٢٩/١٢ |
| «أكل تمر خيبر هكذا» | أبو سعيد، أبو هريرة | ٧٦/١١، ٩١ |
| «أكل طعامكم الأبرار...» | أنس بن مالك | ٥٣٥/٨، ٨٧/١٥ |
| «أكل كل ذى ناب من السباع حرام» | أبو هريرة | ٤٢٧/١٩ |
| «أكل ولدك أعطيته؟» | النعمان بن بشير | ٣٢٠/١٢ |
| «أكل ولدك نحلت كما نحلته؟» | النعمان بن بشير | ٣٢٢/١٢ |
| «أكل ولدك نحلته مثل هذا؟» | النعمان بن بشير | ٣٢٠/١٢ |
| «اكلأ لنا الليل» | أبو هريرة | ١٧٢/٤ |
| «أكلما انطلقنا غزاة فى سبيل الله تخلف رجل...» | أبو سعيد | ٢٠٢/١٧ |
| «أكمل المؤمنين إيمانًا أحسنهم خلقًا» | أبو هريرة | ٢٩/٢١ |
| «أكنت تقضين شيئا» | أم هانئ | ٥٥/٩ |
| «أكنت تقضين عنك شيئا» | أم هانئ | ٥٣/٩ |
| «أكنت فرقت الستة أو السبعة؟» | عائشة | ٣١٢/١٣ |
| «أكنت قاضية عنها دينًا لو كان على أمك؟» | ابن عباس | ٥٨٤/٨ |
| «ألا آذنتمونى» | يزيد بن ثابت | ٤٢٠/٧ |

| | | |
|---|---|---|
| «إلا أتيت الذى هو خير وكفرت يمينى» | أبو موسى | ١٢٩/٢٠ |
| «ألا أحدثكم بأكبر الكبائر...» | أبو بكرة | ٤٦٥/٢٠ |
| «ألا أخبركم بأشد حرا منه يوم القيامة؟...» | سلمة بن الأكوع | ١٠٥/١٧ |
| «ألا أخبركم بأكبر الكبائر؟» | أبو بكرة | ٣٥٨/٢٠ |
| «ألا أخبركم بالتيس المستعار؟» | عقبة بن عامر | ٤٠٣/١٤ |
| «ألا أخبركم بأمر إن أخذتم به أدركتم من سبقكم...؟» | أبو هريرة | ٩٠/٤ |
| «ألا أخبركم بخياركم» | أبو هريرة | ١٥٣/٧ |
| «ألا أخبركم بخير الشهداء...؟» | زيد بن خالد | ٤٧٥/٢٠ |
| «ألا أخبركم بخير الناس وشر الناس؟...» | أبو سعيد | ٥٢٥/١٨ |
| «ألا أخبركم بشر هذه الأمة؟...» | أبو هريرة | ٣٧/٢١ |
| «ألا أخبركم بما يمحو الله به الخطايا... ؟» | أبو هريرة | ٢٤٩/١ |
| «ألا أخبركم عن النفر الثلاثة؟...» | أبو واقد الليثى | ٣٩٦/٦ |
| «ألا أخبركم عن هؤلاء النفر ؟» | أبو واقد الليثى | ٤٠٤/٦ |
| «ألا أخذتم إهابها فاستمتعتم به؟» | ميمونة | ٦٤/١ |
| «ألا أخذوا إهابها فدبغوه؟» | عبد الله بن عباس | ٤٤/١ |
| «ألا أدلك على كلمة من كنز الجنة؟» | أبو موسى الأشعرى | ٨٣/٤ |
| «ألا أدلكم على أكرم أخلاق الدنيا والآخرة؟» | على بن أبى طالب | ١٨٣/٢١، ١٨٤ |
| «ألا أدلكم على أهل الجنة؟...» | حارثة بن وهب | ٣٩/٢١ |
| «ألا أدلكم على شىء يكفر الله به الخطايا» | أبو سعيد الخدرى | ٣٣٧/٣ |
| «ألا أدلكم على ما يمحو الله به الخطايا...» | أبو هريرة | ٥٢١/٥ |
| «ألا أدلكما على ما هو خير لكما من خادم؟» | على بن أبى طالب | ١١٢/١٥ |
| «إلا الإذخر» | ابن عباس | ١٤٧/١٢ |
| «إلا الإذخر...» | أبو هريرة | ٣٣٥/١٠، ٢٤٥/١٦ |
| «ألا أرى هذا يعلم ما هاهنا...» | عائشة | ٥٦/١٤ |
| «ألا أزيدك» | عمرو بن حريث | ٢١٢/١٢ |
| «ألا أستحيى ممن تستحيى منه الملائكة؟!» | عائشة | ٢١١/٤ |
| «ألا أستحيى من رجل تستحيى منه الملائكة؟!» | عائشة | ٢٠٩/٤ |

| | | |
|---|---|---|
| «إلا استقبلته حجبة الجنة...» | أبو ذر | ٥٦٣/١٨ |
| «ألا أعلمك أعظم سورة فى القرآن؟» | أبو سعيد ابن المعلى | ٥٤٦/١٣ |
| «ألا إن الأكثرين هم الأقلون...» | أبو ذر | ٢٠/٢١ |
| «ألا إن الله ينهاكم أن تحلفوا بآبائكم» | ابن عمر | ٥٨/٢٠، ٥٩ |
| «ألا إن أولياء الله المصلون...» | عمير | ٢٦٥/٧، ١٠/٢١ |
| «ألا إن خياركم أبناء المشركين» | الأسود بن سريع | ٢٥٩/١٨ |
| «ألا إن دية الخطأ شبه العمد...» | عبد الله بن عمرو | ٢٢٢/١٦ |
| «إلا إن ربى أمرنى أن أعلمكم ما جهلتم...» | عياض بن حمار | ٦٧/١٨ |
| «ألا إن الصدقة لا تنبغى لمحمد ولا لآل محمد» | عبد المطلب بن ربيعة ابن الحارث | ٦٧٥/٣، ٦٧٦ |
| «ألا إن صيد وجٍّ وعضاهه حرام محرم» | الزبير بن العوام | ٣٥٢/١٠ |
| «ألا إن العبد نام ألا إن العبد نام» | عبد الله بن عمر | ٨٠/٣ |
| «ألا إن فى قتيل الخطأ شبه العمد...» | رجل من الصحابة | ٢٢٢/١٦ |
| «ألا إن فى قتيل العمد الخطأ بالسوط...» | عبد الله بن عمر | ٢٢٠/١٦ |
| «ألا إن القوة الرمى...» | عقبة بن عامر | ٥/٢٠ |
| «ألا إن كل ربًا فى الجاهلية موضوع...» | سليمان بن عمرو عن أبيه | ٤٣/١١ |
| «ألا إن كلكم يناجى ربه فلا يؤذين...» | أبو سعيد الخدرى | ٣٧٦/٥ |
| «ألا إن المزاة حرام...» | أنس بن مالك | ٤٥٣/١٧ |
| «ألا إن مسجدى حرام على كل حائض...» | أم سلمة | ٥٤٩/١٣ |
| «ألا إن الناس قد صلوا ورقدوا...» | أنس | ٥٣٠/٥ |
| «ألا إن هذا من غنائمكم...» | عبادة بن الصامت | ٣٤٣/١٨ |
| «ألا أنبئكم بأكبر الكبائر» | أبو بكرة | ٣٥٨/٢٠ |
| «ألا أنبئكم بخياركم من شراركم» | جابر بن عبد الله | ١٥٢/٧ |
| «ألا أنبئكم بليلة أفضل من ليلة القدر؟...» | ابن عمر | ٤٨٩/١٨ |
| «ألا أنبئكم ما العضه؟...» | ابن مسعود | ٢٢١/٢١ |
| «ألا إنكم معشر خزاعة قتلتم...» | أبو شريح الكعبى | ٢٦٠/١٦ |
| «ألا إنه سيخرج فى أمتى أقوام أشداء...» | أبو بكرة | ٦٨/١٧ |
| «ألا إنها لا تجنى نفس على أخرى» | ثعلبة بن زهدم | ٥٨٠/١٧ |

| | | |
|---|---|---|
| «ألا إنى برىء من كل مسلم مع مشرك» | قيس بن أبى حازم | ٤٦٩/١٦ |
| «ألا أى بلد؟ ألا أى يوم؟» | عبد الله بن عمر | ٣٤/١٢ |
| «ألا أى شهر تعلمونه أعظم حرمة؟» | عبد الله بن عمر | ٣٣/١٢ |
| «إلا بنى فلان» | أم عطية | ٤٦٥/٧ |
| «ألَّا تأخذ من راضع لبن...» | سويد بن غفلة | ٦٩/٨ |
| «ألا تبادروا الإمام بالركوع» | أبو هريرة | ٥٢٦/٣، ٥٢٧ |
| «ألا تبايع؟» | سلمة بن الأكوع | ٥٢٣/١٦ |
| «ألا تبايعون رسول الله...» | عوف بن مالك | ٣٨٩/٨ |
| «ألا تتقى الله فى هذه البهيمة...» | عبد الله بن جعفر | ١٢٢/١٦ |
| «ألا تخرجون مع راعينا فى إبله فتصيبون من أبوالها...؟» | أنس بن مالك | ٤٦١/١٦ |
| «ألا تركتموه فلعله يتوب...» | نعيم بن هزال | ٢٠٤/١٧ |
| «ألا تريحنى من ذى الخلصة؟» | جرير بن عبد الله | ٥٧٣/١٨ |
| «ألا تسبقينى بنفسك» | فاطمة | ٣٠٩/١٤ |
| «ألا تستحيون إن ملائكة الله على أقدامهم» | ثوبان | ٣٣٧/٧ |
| «ألا تسرع يا جابر؟» | جابر بن عبد الله | ٥/٦ |
| «ألا تصفون كما تصف الملائكة عند ربهم» | جابر بن سمرة | ٢٥/٦ |
| «ألا تصليان؟» | على بن أبى طالب | ٣٤١/٥ |
| «ألا تعجب من حب مغيث بريرة...» | ابن عباس | ٤٤٤/١٤ |
| «ألا تعجبون كيف يصرف الله عنى...» | أبو هريرة | ٢٨٤/١٧ |
| «ألا تعطى شيئا فى بيته إلا بإذنه» | ابن عباس | ١٠٩/١٥ |
| «ألا تعلميها رقية النملة كما علمتيها الكتابة» | الشفاء | ٥٤٣/١٩ |
| «ألا تمنع نفسه منه ولو على قتب...» | ابن عباس | ١٠٩/١٥ |
| «ألا خمرته ولو بعود تعرضه عليه؟» | المطلب بن أبى وداعة | ٤٤٠/١٧ |
| «إلا الدين كذلك أخبرنى جبريل عليه السلام» | أبو قتادة | ٣١١/١١، ٨٦/١٨ |
| «ألا رجل يأتينى بخبر القوم...؟» | حذيفة بن اليمان | ٤٨٧/١٨ |
| «ألا رجل يتصدق على هذا فيصلى معه ؟» | أبو سعيد الخدرى | ٤٣٠/٤، ٥٤٠/٥- ٥٤٣ |
| «ألا رجل يحرسنا الليلة أدعو الله له...» | أبو ريحانة | ٤٩٠/١٨ |
| «ألا رجل يكلؤنا الليلة» | سهل ابن الحنظلية | ٣٢٩/٣ |

| | | |
|---|---|---|
| «إلا سترد على» | أم كلثوم | ٤٠٣/١١ |
| «إلا سهيل ابن بيضاء» | عبد الله | ١٩٣/١٣ |
| «ألا شهرنا هذا ألا بلدنا هذا ألا يومنا هذا» | عبد الله بن عمر | ٣٤/١٢ |
| «إلا صلحًا حرم حلالًا أو أحل حرامًا» | أبو هريرة | ٥٢٥/١١ |
| «ألا صلوا فى الرحال» | ابن عمر | ٥٤٥/٥، ٥٤٦ |
| «ألا صلوا فى رحالكم » | ابن عمر | ٥٤٦/٥ |
| «ألا كان هذا قبل أن تأتينى به؟» | صفوان بن أمية | ٣٢٢/١٧ |
| «إلا كفرت يمينى وأتيت الذى هو خير» | أبو موسى | ١٢٩/٢٠ |
| «إلا كلب صيد أو زرع أو ماشية» | أبو سلمة | ٣٤٨/١١ |
| «إلا كلب صيد أو ماشية» | ابن عمر | ٣٤٤/١١ |
| «ألا كلكم راعٍ وكلكم مسئول عن رعيته...» | عبد الله بن عمر | ٥٧٢/١٦ |
| «ألا كلما نفرنا فى سبيل الله خلف أحدهم...» | جابر بن سمرة | ٢٠١/١٧ |
| «ألا لا تجوز شهادة خائن ولا خائنة...» | ابن عمر | ٤٦٣/٢٠ |
| «ألا لا ترجعوا بعدى كفارا...» | أبو بكرة | ١٤٤/١٦ |
| «ألا لا يبلغنى أحد منكم عند أحد من أصحابى...» | عبد الله بن مسعود | ٥٩٤/١٦ |
| «ألا لا يبيتن رجل عند امرأة...» | جابر | ٦٣/١٤ |
| «ألا لا يحل لامرأة أن تعطى من مال...» | أبو أمامة | ٣٧٩/٨ |
| «ألا لا يحل هذا المسجد لجنب...» | أم سلمة | ٥٤٨/١٣، ٥٤٩ |
| «ألا لا يصلين أحد الظهر إلا فى بنى قريظة» | ابن عمر | ٣٥٢/٢٠ |
| «ألا لا يفضين رجل إلى رجل» | أبو هريرة | ٣٥١/١٤ |
| «إلا من زرع» | عمرو بن أوس | ١٩٢/١٢ ١٩٤ |
| «ألا من ظلم معاهدا وانتقصه...» | صفوان بن سليم عن ثلاثين من الصحابة عن آبائهم | ٧٥/١٩ |
| «ألا من ولى يتيمًا له مال فليتجر له فيه...» | عبد الله بن عمرو | ٨٨/٨ |
| «ألا منحها أخاه» | ابن عباس | ١٧٣/١٢ |
| «ألا نزعتم إهابها فدبغتموه؟...» | ميمونة | ٤٤/١ |
| «ألا نزعتم جلدها فدبغتموه...؟» | عبد الله بن عباس | ٤٦/١ |

| | | |
|---|---|---|
| «ألا وإن كل شيء من أمر الجاهلية موضوع...» | جابر بن عبد الله | ٣٤٨/١٨، ٣٩٧ |
| «ألا وطيب الرجال ريح لا لون له...» | عمران بن حصين | ٤٤١/٦ |
| «ألا وقول الزور» | أبو بكرة | ٣٥٨/٢٠ |
| «ألا ولا تؤمن امرأة رجلًا» | جابر بن عبد الله | ٦٠٤/٥ |
| «الآن بردت عليه جلده» | جابر | ٥٥٦/١١، ٥٥٩ |
| «البسوا الثياب البيض فإنها أطيب وأطهر» | سمرة بن جندب | ٢٤٨/٧ |
| «البسوا من ثيابكم البياض» | ابن عباس | ٣٩٢/٩ |
| «البسوا من ثيابكم البيض...» | ابن عباس | ٤٣٨/٦ |
| «التقى آدم وموسى...» | أبو هريرة | ١٣٦/١ |
| «التمس غلاما من غلمانكم يخدمني...» | أنس بن مالك | ١٣٨/١٣ |
| «التمس لى غلاما من غلمانكم يخدمنى» | أنس بن مالك | ٤٠٦/١٨ |
| «التمس ولو خاتما من حديد» | سهل بن سعد | ٤٩٠/١٤، ٥٠٩ |
| «التمسوها فى أربع وعشرين» | ابن عباس | ١٥٣/٩ |
| «التمسوها فى السبع الأواخر» | أبو ذر، ابن عمر | ١٤٨/٩، ١٦٠ |
| «التمسوها فى العشر الأواخر» | ابن عباس | ١٥٣/٩ |
| «التمسوها فى العشر الأواخر والعشر الأول» | أبو ذر | ١٤٨/٩ |
| «التمسوها فى العشر الأواخر وترًا» | ابن عباس | ١٦٧/٩ |
| «التمسوها فى العشر الأواخر ولا تسألنى» | أبو ذر | ١٤٨/٩ |
| «الحَقْ» | أبو هريرة | ١٧٥/٥، ٥٦٦/١٧ |
| «الحق إلى أهل الصفة فادعهم لى » | أبو هريرة | ١٥/١٤ |
| «الحق أهل الصفة فادعهم لى» | أبو هريرة | ١٧٥/٥، ٥٦٦/١٧ |
| «الحق خالد بن الوليد...» | رباح بن الربيع | ٣٠٣/١٨ |
| «ألحقوا الفرائض بأهلها...» | طاوس، ابن عباس | ٥٠٦/١٢، ٥٢١، ٥٢٥، ٤٠٤/٢١ |
| «الحقى بأهلك» | سعيد بن زيد | ٥٥٥/١٤ |
| «الزم بيتك» | أبو ذر | ٨١/١٧ |
| «الزمه» | هرماس بن حبيب عن أبيه عن جده | ٤٨٧/١١ |
| «ألست أعلم أنه رجل كبير؟» | عائشة | ٢٧/١٦ |

| | | |
|---|---|---|
| «ألست تحبين ما أحب؟» | عائشة | ٣٥٦/١٣، ١٣١/١٥ |
| «ألست تحبين ما أحب؟» | | ١٣١/١٥ |
| «ألست المقبل وأنت الصائم؟» | عمر بن الخطاب | ٥١٢/٨ |
| «ألستم تصلون وتصومون وتجاهدون؟» | أبو ذر | ٥٨٤/١١ |
| «ألطعام؟» | أنس بن مالك | ٤٢/١٥ |
| «ألق عنك شعر الكفر...» | عثيم بن كليب عن أبيه عن جده | ٣٢/٢، ٥٠٦/١٧ |
| «ألق عنك شعر الكفر واختتن» | ابن جريج قال: وأخبرني آخر أن النبي قال لآخر معه | ٣٢/٢ |
| «ألقه على بلال فإنه أندى منك صوتًا» | عبد الله بن زيد | ١٢٣/٣ |
| «ألقوها وما حولها» | ميمونة | ٥٥٧/١٩، ٥٥٩ |
| «ألقوها وما حولها وكلوا ما بقي» | عبد الله بن عمر | ٥٥٩/١٩، ٥٦٠ |
| «ألك بينة؟» | وائل بن حجر | ٤٠٨/٢٠، ٤٢٦، ٢١/ ٢٤٨، ٢٥٤، ٢٧٠ |
| «ألك مال غيره؟» | جابر بن عبد الله | ٣٢١/٨، ٤١٦/٢١ |
| «ألك ولد سواه؟» | النعمان بن بشير | ٣٢٥/١٢ |
| «ألكم شاهدان يشهدان على قتل صاحبكم؟» | رافع بن خديج | ٤٨٢/١٦، ٤٣٩/٢٠ |
| «الله» | أنس | ٢٠٠/٩ |
| «الله أحق أن تستحيوا» | معاوية بن حيدة | ١١٧/١٥ |
| «الله أحق أن يستحيا من الناس» | معاوية بن حيدة | ١١٢/٢ |
| «الله أحق أن يستحيا منه من الناس» | معاوية بن حيدة | ١١٢/٢ ١١٣ |
| «الله أحق بالفتاء والوفاء...» | سنان بن سلمة | ٢٩٢/١٩ |
| «الله أعلم بإسلامك...» | عائشة | ١٩٥/١٣ |
| «الله أعلم بما كانوا عاملين...» | الأسود بن سريع | ٤٠٢/١٢، ٤٠٣ |
| «الله أعلم» | أبو نملة الأنصاري | ٣٢١/٣ |
| «الله أكبر» | أنس بن مالك | ٥٠٤/١٨ |
| «الله أكبر» | أبو حميد الساعدي | ٥٩٩/٣، ٦١٢، ٦١٣، ٦٤٤ |

| | | |
|---|---|---|
| «الله أكبر» | عائشة | ٢٠/٧ |
| «الله أكبر » | عبد الله بن عمر | ٦٨/٤ |
| «الله أكبر الله أكبر أشهد أن لا إله إلا الله » | أبو محذورة | ١٧٦/٣، ١٧٧ |
| «الله أكبر الله أكبر الله أكبر الله أكبر» | أبو محذورة | ١٠٦/٣ |
| «الله أكبر خربت خيبر...» | أنس بن مالك | ٢٠٦/٤، ١٨٨/١٨، ٢٦٤، ٢٦٥ |
| «الله أكبر كبيرا» | جبير بن مطعم | ٣٨٧/٣، ٣٨٨ |
| «الله المزوج وجبريل الشاهد» | زينب بنت جحش | ١٧٧/١٤ |
| «الله ورسوله مولى من لا مولى له...» | عمر | ٤٣٩/١٢ |
| «الله يعلم أن أحدكما كاذب...» | ابن عباس | ٤٢٨/١٥ |
| «الله يمنعنى منك» | جابر بن عبد الله | ٤٧٩/٦ |
| «اللهم اجعل رزق آل محمد قوتا» | أبو هريرة | ٦٧٨/٣، ٤٩٢/١٣ |
| «اللهم اجعل لى نورًا فى قلبى...» | ابن عباس | ٤٢٨/٥ |
| «اللهم اجعلنى من التوابين...» | عبد الله بن عمر، أنس | ٢٣٦/١ |
| «اللهم اجعله صبيًا هنيئا» | عائشة | ١٢٠/٧ |
| «اللهم اجعله منهم» | أبو هريرة | ٤١٦/٢٠ |
| «اللهم اجعلها حجة غير رياء» | بشر بن قدامة الضبابى | ٢٢٣/٩ |
| «اللهم احشرنى فى زمرة المساكين...» | أبو سعيد الخدرى | ٣٩١/١٣ |
| «اللهم أحينى مسكينا...» | عبادة بن الصامت، أنس | ٣٨٩/١٣ |
| «اللهم ارحم المحلقين» | عبد الله بن عمر | ٣١/١٠ |
| «اللهم أرسلها حتى يسد أبو لبابة ثعلب مربده بردائه» | سعيد بن المسيب | ٩٧/٧، ٩٨ |
| «اللهم اسق عبادك وبهائمك وانشر رحمتك» | عبد الله بن عمرو | ١٠٢/٧، ١٠٣ |
| «اللهم اسقنا اللهم اسقنا» | أبو لبابة بن عبد المنذر | ٩٨/٧ |
| «اللهم اسقنا اللهم اسقنا» | أنس بن مالك | ٩٦/٧ |
| «اللهم اسقنا غيثًا مغيثًا مريا توسع به لعبادك» | عبد الله بن جراد | ١٠٣/٧ |
| «اللهم اسقنا غيثًا مغيثًا مريا مريعًا...» | كعب بن مرة أو مرة بن كعب، جابر | ١٠٠/٧، ١٠٢ |

| | | |
|---|---|---|
| «اللهم أشبع بطنه» | أبو رافع بن عمرو | ٥٨٣/١٩ |
| «اللهم اشف سعدًا» | عن عائشة بنت سعد أن أباها | ١٨٦/٧ |
| «اللهم اشف سعدا...» | سعد بن أبى وقاص | ١٨٦/٧، ٦١/١٨ |
| «اللهم اشهد اللهم اشهد اللهم اشهد» | جعفر بن محمد عن أبيه | ٣١٩/٩ |
| «اللهم اشهد ليبلغ الشاهد الغائب...» | أبو بكرة | ١٤٤/١٦ |
| «اللهم أعز الإسلام بعمر...» | عائشة | ٣٥٧/١٣ |
| «اللهم أعوذ بمعافاتك من عقوبتك...» | عائشة | ٣٧٨/١ |
| «اللهم أغثنا اللهم أغثنا» | أنس بن مالك | ٩٩/٧ |
| «اللهم اغسل خطاياى بماء الثلج والبرد» | عائشة | ١٧/١ |
| «اللهم اغسل قلبى بماء الثلج والبرد» | عائشة | ١٧/١ |
| «اللهم اغفر لأولنا وآخرنا وحينا وميتنا» | أبو إبراهيم الأشهلى عن أبيه، أبو سلمة بن عبد الرحمن | ٣٩٦/٧ |
| «اللهم اغفر لحينا وميتنا وذكرنا وأنثانا» | عائشة | ٣٩٨/٧ |
| «اللهم اغفر لحينا وميتنا وشاهدنا وغائبنا» | أبو قتادة، أبو هريرة | ٣٩٧/٧، ٣٩٨ |
| «اللهم اغفر لحينا وميتنا وغائبنا وشاهدنا» | أبو إبراهيم الأشهلى عن أبيه | ٣٩٦/٧ |
| «اللهم اغفر للحاج» | أبو هريرة | ٥٥٩/١٠ |
| «اللهم اغفر للمحلقين » | المسور بن مخرمة ومروان بن الحكم | ٤٠٤/١٠ |
| «اللهم اغفر للمحلقين» | أبو هريرة | ١٣٠/١٠ |
| «اللهم اغفر له وارحمه واعف عنه وعافه» | عوف بن مالك | ٣٩٥/٧ |
| «اللهم اغفر له وارحمه وعافه واعف عنه » | عوف بن مالك | ٣٩٤/٧ |
| «اللهم اغفر لى ذنبى كله دقه وجله» | أبو هريرة | ٥٧٩/٣ |
| «اللهم اغفر لى ما قدمت وما أخرت...» | على بن أبى طالب | ٨٧/٤ |
| «اللهم افتح» | عبد الله بن مسعود | ٤٦٣/١٥ |
| «اللهم اقطع أثره» | يزيد بن نمران | ٣٤٦/٤ |

| | | |
|---|---|---|
| «اللهم أكثر ماله وولده وبارك له فيه» | أنس | ٤٩٦/٥، ٨/٦ |
| «اللهم العن بنى لحيان ورعلًا وذكوان...» | خفاف بن إيماء الغفارى | ١٣١/٤، ٢٥٥ |
| «اللهم العن فلانًا وفلانًا» | عبد الله بن عمر | ١٢٧/٤، ١٤٥ |
| «اللهم إن إبراهيم حرم مكة...» | أنس بن مالك | ٤٠٦/١٨ |
| «اللهم إن تغفر تغفر جما وأى عبد لك لا ألما» | ابن عباس | ٦/٢١ |
| «اللهم إنا نجعلك فى نحورهم...» | عبد الله بن قيس | ٥٣٢/١٠ |
| «اللهم إنا نسألك فى سفرنا هذا البر والتقوى» | عبد الله بن عمر | ٥٢٧/١٠ |
| «اللهم أنت تقضى بينهم» | سعيد بن المسيب | ٢٦٣/٢١ |
| «اللهم أنت ربها وأنت خلقتها وأنت هديتها إلى الإسلام» | أبو هريرة | ٤٠٠/٧ |
| «اللهم أنت السلام ومنك السلام...» | ثوبان ، عائشة | ٧٩/٤، ٨٠ |
| «اللهم أنت السلام ومنك السلام فحينا ربنا بالسلام» | مكحول | ٥٢٤/٩ |
| «اللهم أنت الصاحب فى السفر» | عبد الله بن سرجس، عبد الله بن عباس | ٥٢٠/١٠ |
| «اللهم أنج عياش بن أبي ربيعة...» | أبو هريرة | ٤٨/١٨ |
| «اللهم أنجِ الوليد بن الوليد...» | أبو هريرة | ١٢٣/٤، ٢٥٤ |
| «اللهم إنك تعلم أنى رسولك...» | ابن عباس | ٤٣/١٧ |
| «اللهم إنكم من أحب الناس إلى» | أنس | ١٠٢/١٥ |
| «اللهم إنهم حفاة فاحملهم» | عبد الله بن عمرو | ١٤١/١٣، ١٩٢/١٨ |
| «اللهم إنى أبرأ إليك مما صنع خالد» | عبد الله بن عمر | ٣٧٤/١٨ |
| «اللهم إنى اتخذت عندك عهدا لن تخلفه...» | أبو هريرة | ٥٣٦/١٣ |
| «اللهم إنى أجعلك فى نحورهم...» | أبو موسى | ٥٣٢/١٠، ٥٠١/١٨ |
| «اللهم إنى أحبه فأحبه» | البراء، أبو هريرة | ١٧٥/٢١ |
| «اللهم إنى أحبهما فأحبهما» | أسامة بن زيد | ١٧٦/٢١ |
| «اللهم إنى أحرم ما بين لابتيها» | أنس بن مالك | ٣٤١/١٠، ١٣٨/١٣ |
| «اللهم إنى أسألك خيرها وخير ما فيها وخير ما أرسلت به» | عائشة | ١١٧/٧ |

| | | |
|---|---|---|
| «اللهم إنى أشهدك أنى أول من أحيا سنة أماتوها» | البراء بن عازب | ١٦٢/١٧ |
| «اللهم إنى أعوذ برضاك من سخطك...» | على بن أبى طالب | ٤٦٢/٥ |
| «اللهم إنى أعوذ بك من ا لخبث والخبائث» | أنس بن مالك | ٢٨٩/١ |
| «اللهم إنى أعوذ بك من الشيطان الرجيم» | جبير بن مطعم، عبدالله ابن مسعود | ٣٨٨/٣، ٣٨٩ |
| «اللهم إنى أعوذ بك من عذاب القبر» | عائشة | ٧/٤ |
| «اللهم إنى أعوذ بك من فتنة النار...» | عائشة | ٣٩٠/١٣ |
| «اللهم إنى أعوذ بك من الفقر...» | أبو هريرة | ٣٨٨/١٣ |
| «اللهم إنى أعوذ بك من الكفر والفقر» | أبو بكرة | ٣٨٨/١٣ |
| «اللهم إنى أعوذ بك من المأثم والمغرم» | عائشة | ٣١٤/١١ |
| «اللهم إنى أعوذ بك من النار» | أبو ليلى | ٤٥٢/٤ |
| «اللهم إنى أعوذ بك من الهم والحزن...» | أنس بن مالك | ١٣٨/١٣، ٤٠٦/١٨ |
| «اللهم إنى أول من أحيا أمرا إذ أماتوه» | البراء بن عازب | ٢٦٧/١٧ |
| «اللهم اهدنا فيمن هديت...» | عبد الله بن عباس | ١٥١/٤ |
| «اللهم اهدنى فيمن هديت...» | عن حسن أو الحسَن | ١٤٩/٤، ٣٣٤/٥، ٤٥٦ |
| «اللهم اهدنى فيمن هديت...» | ابن عباس ومحمد بن على | ١٥١/٤ |
| «اللهم اهدها» | رافع بن سنان | ٩١/١٦ |
| «اللهم أيما مؤمن سببته أو جلدته...» | أبو هريرة | ٥٣٧/١٣ |
| «اللهم بارك لأمتى فى بكورها» | صخر الغامدى | ٤٩٧/١٨ |
| «اللهم بارك لنا فى صاعنا ومدنا...» | أبو هريرة | ٢٩٩/٨ |
| «اللهم بارك له فى صفقة يمينه» | عروة بن أبى الجعد البارقى | ٩٩/١٢ |
| «اللهم بارك لهم فيما رزقتهم واغفر لهم...» | عبد الله بن بسر | ٤٦/١٥، ٨٦ |
| «اللهم بسبع كسبع يوسف» | عبد الله بن مسعود | ٩٢/٧ |
| «اللهم بغض إليه النساء» | أبو أمامة | ٥٢٧/١٨ |
| «اللهم بك انتشرت» | أنس بن مالك | ٥٢١/١٠ |
| «اللهم بين» | ابن عباس | ٤٦٥/١٥، ٤٦٧، ٤٦٨ |

| | | |
|---|---|---|
| «اللهم تب عليه» | أبو أمية | ٣٥٢/١٧ |
| «اللهم ثبته واجعله هاديا مهديا» | جرير بن عبد الله | ٥٧٣/١٨ |
| «اللهم حبب إلينا المدينة كحبنا مكة أو أشد وصححها» | عائشة | ١٩٠/٧ |
| «اللهم حوالينا لا علينا» | أنس بن مالك | ١٠٤/٧، ١٠٥ |
| «اللهم حوالينا ولا علينا» | أنس | ٣٦٤/٦ |
| «اللهم رب جبريل وميكائيل وإسرافيل...» | عائشة | ٣٥٨/٥ |
| «اللهم رب السموات السبع وما أظللن...» | صهيب | ٥٢٩/١٠ |
| «اللهم ربنا لك الحمد ملء السموات وملء الأرض» | عبد الله بن عباس | ٥٣٤/٣ |
| «اللهم زد هذا البيت تشريفًا» | ابن جريج | ٥٢٤/٩ |
| «اللهم سقيا رحمة ولا سقيا عذاب ولا بلاء» | المطلب بن حنطب | ١٠٤/٧ |
| «اللهم سلط عليه كلبًا من كلابك» | - | ٣٩١/١٠ |
| «اللهم سيبا نافعًا» | عائشة | ١٢١/٧ |
| «اللهم صل على آل أبى أوفى» | عبد الله بن أبى أوفى | ٢٦٠/٨، ٣٧١/١٣ |
| «اللهم صل على آل فلان» | عبد الله بن أبى أوفى | ٢٦٠/٨ |
| «اللهم صل على محمد وآل محمد» | كعب بن عجرة | ٦٧٠/٣ |
| «اللهم صل عليهم» | عبد الله بن أبى أوفى | ٦٨٥/٣، ٢٦٠/٨، ١٣/ ٣٧١ |
| «اللهم صيبًا هنيئًا» | عائشة | ١٢٠/٧ |
| «اللهم على رءوس الجبال والإكام» | أنس بن مالك | ٦٥/٧ |
| «اللهم عليك بعمرو بن هشام...» | عبد الله بن مسعود | ٢٥/١٨ |
| «اللهم عليك بقريش...» | عبد الله بن مسعود | ٢٥/١٨ |
| «اللهم عن محمد وآل محمد» | - | ٣٣٨/١٩ |
| «اللهم عن محمد وأمة محمد» | - | ٣٣٨/١٩ |
| «اللهم فأيما عبد مؤمن سببته...» | أبو هريرة | ٥٣٦/١٣ |
| «اللهم لا تجعل منايانا فيها...» | ابن عمر | ٦٤/١٨ |
| «اللهم لا تحرمنا أجره ولا تضلنا بعدها» | أبو هريرة | ٣٩٧/٧ |
| «اللهم لا تغفر لمحلم بن جثامة...» | الزبير بن العوام | ٣٧٨/١٨ |

| | | |
|---|---|---|
| «اللهم لا تقتلنا بغضبك ولا تهلكنا بعذابك وعافنا قبل ذلك» | عبد الله بن عمر | ١٢١/٧ |
| «اللهم لا تكلهم إليّ فأضعف عنهم...» | عبد الله بن حوالة | ٥٥٥/١٨ |
| «اللهم لا خير إلا خير الآخرة...» | أنس | ١٣٤/١٨ |
| «اللهم لا عيش إلا عيش الآخرة...» | سهل بن سعد | ٤٩٩/١٣، ١٣٣/١٨ |
| «اللهم لقحا لا عقيمًا» | سلمة بن الأكوع | ١٣٠/٧ |
| «اللهم لك الحمد أنت نور السموات والأرض...» | ابن عباس | ٣٥٦/٥، ٣٥٧ |
| «اللهم لك الحمد ملء السموات وملء الأرض» | عبد الله بن أبي أوفى | ١٦/١ |
| «اللهم لك ركعت وبك آمنت ولك أسلمت» | على بن أبي طالب | ٥١٢/٣، ٥١٣ |
| «اللهم لك سجدت وبك آمنت ولك أسلمت» | على بن أبي طالب | ٥٧٧/٣ |
| «اللهم لك صمت وعلى رزقك أفطرت» | معاذ بن زهرة | ٥٣٤/٨ |
| «اللهم من كنت دعوت عليه فاجعله له كفارة...» | عائشة | ٢٩٧/١٨ |
| «اللهم من ولى من أمر أمتى شيئا...» | عائشة | ١٤٦/١٨، ٤٠٦/٢٠ |
| «اللهم منزل الكتاب ومجرى السحاب...» | عبد الله بن أبي أوفى | ٥٠٠/١٨ |
| «اللهم منك ولك عن محمد وأمته» | جابر | ٣٣٨/١٩ |
| «اللهم هالة» | عائشة | ١٥٨/١٥ |
| «اللهم هذا إقبال ليلك وإدبار نهارك» | أم سلمة | ١٥٥/٣، ١٥٦ |
| «اللهم هذا عن أمتى جميعا...» | على بن الحسين | ٢٤٩/١٩ |
| «اللهم هذا عن محمد وآل محمد» | أبو رافع، على بن الحسين | ٢٤٩/١٩، ٢٧٢ |
| «اللهم هذا قسمى فيما أملك...» | عائشة | ١٢٨/١٥ |
| «اللهم هل بلغت؟...» | أبو حميد الساعدى | ٢٦٦/٨ |
| «اللهم هل بلغت» | - | ٣٢١/١٣ |
| «اللهم هل بلغت» | عبد الله بن عباس | ٥٧٧/٣، ٥٧٨ |
| «اللهم هؤلاء أهلى» | سعد | ٥٤٣/١٣، ٥٤٤ |
| «اللهم وليديه فاغفر» | جابر | ١٣٥/١٦ |
| «ألم أخبر أنك تصوم النهار وتقوم الليل» | عبد الله بن عمرو | ٣٩٢/٥، ١٢١/٩ |

| | | |
|---|---|---|
| «ألم أر برمة على النار فيها لحم؟» | عائشة | ٤٧٦/٢١ |
| «ألم أر برمة لحم؟» | عائشة | ٣٤٧/١٢ |
| «ألم أقل لكم: اقتلوه؟ اقتلوه» | جابر بن عبد الله | ٣٤٢/١٧ |
| «ألم أنبأ.... أنك تبيع الطعام؟» | حكيم بن حزام | ١٥٩/١١ |
| «ألم أنه عن قتل النساء؟» | عكرمة | ٢٧٢/١٨ |
| «ألم أنه عن هذا؟» | ابن عباس | ٤٥٧/١٣ |
| «ألم أنهكم عن مثل هذا؟» | أبو النضر وغيره | ٢٣٣/١٦ |
| «ألم تر إلى ما صنع صاحبكم هلال بن أمية؟» | عمران بن الحصين | ١٧٩/١٦ |
| «ألم تروا إلى الإنسان إذا مات شخص بصره» | أبو هريرة | ١٩٧/٧ |
| «ألم تروا إلى ما قال ربكم» | أبو هريرة | ١٠٩/٧ |
| «ألم تروا أنها تنبت صفراء ملتوية؟» | أبو سعيد | ٢٦/٢١، ٢٧ |
| «ألم ترى إلى الركائب المناخات الأربع» | عبد الله الهوزنى | ١٠٧/١٩ |
| «ألم ترى إلى قومك حين بنوا الكعبة» | عائشة | ٥٧٨/٩ |
| «ألم ترى أن قومك حين بنوا الكعبة» | عائشة | ٥٣٩/٩ |
| «ألم ترى أن مجززًا المدلجى دخل على فرأى أسامة...؟» | عائشة | ٢٧٣/٢١ |
| «ألم ترى أن مجززًا نظر آنفًا إلى زيد...» | عائشة | ٢٨٢/٢١ |
| «ألم تسلم يا يزيد؟» | يزيد بن عامر | ٤٢٨/٤ |
| «ألم تسمعى ما قال مجزز المدلجى...؟» | عائشة | ٢٧٤/٢١ |
| «ألم تمر على الركائب...» | بلال | ٥٨٠/١١ |
| «ألم يبلغك ما صنعوا ببنى كعب؟» | موسى بن عقبة | ١٦٥/١٩ |
| «ألم إخوة؟» | جابر | ٣٢٣/١٢ |
| «إلى ابن أم مكتوم» | عبيد الله بن عبد الله | ٦٦/١٦ |
| «إلى أقربهما منك بابا» | عائشة | ٤٨/١٣، ٤٣٦، ٤٣٧ |
| «إلى الله عز وجل وإلى رسوله...» | عبد الله الديلمى عن أبيه | ٤٣٢/١٧ |
| «إلى الحارث بن عبد كلال ومن معه من معافر...» | عبد الله بن عمر | ١٦٨/٨ |
| «إلى المرفقين» | عمار | ١٤٧/٢ |

| | | |
|---|---|---|
| «أليس أرض ظهير؟» | رافع بن خديج | ١٨١/١٢ |
| «أليس بالبلد؟» | أبو بكرة | ١٤٤/١٦ |
| «أليس بعدها طريق هى أطيب منها» | امرأة من بنى عبد الأشهل | ١٤١/٥ |
| «أليس البلدة؟» | أبو بكرة | ٣٥/١٢ |
| «أليس بمسكر؟» | ديلم الجيشانى | ٤٠٥/١٧ |
| «أليس تريد منهم من البر ما تريد من هذا؟» | النعمان بن بشير | ٣٢٦/١٢ |
| «أليس ذا الحجة؟» | أبو بكرة | ٣٤/١٢ |
| «أليس شهادة المرأة مثل نصف شهادة الرجل» | أبو سعيد الخدرى | ٤٠٤/٢، ٥٢٢/٨ |
| «أليس فى الماء والقرَظ مايطهرها؟» | عبد الله بن عباس | ٥٦/١ |
| «أليس قد دبغتها؟» | سلمة بن المحبق | ٥٩/١ |
| «أليس قد صليت معنا؟» | أنس | ٥٣٨/١٧ |
| «أليس يسرك أن يكونوا...» | النعمان بن بشير | ٣٢٥/١٢ |
| «أليس يشهد أن لا إله إلا الله؟» | عبيد الله بن عدى بن الخيار وعبد الله بن عدى | ١٣٨/٧، ٩٩/١٧ |
| «أليس يصلى؟» | عبيد الله بن عدى وعبدالله بن عدى | ٩٩/١٧ |
| «أليس يوم النحر؟» | أبو بكرة | ٣٤/١٢، ١٤٤/١٦ |
| «أليست نفسًا» | سهل بن حنيف وقيس ابن سعد | ٣٤٨/٧ |
| «أمَّ قومك...» | عثمان بن أبى العاص | ٧١/٦، ٧٢ |
| «أم الولد حرة وإن كان سقطا » | عبد الله بن عباس | ٥٣١/٢١ |
| «أمّا إبراهيم فانظروا إلى صاحبكم...» | عبد الله بن عباس | ٢٦٧/١٠ |
| «أما أبو جهم فلا يضع عصاه...» | فاطمة بنت قيس | ١٧٢/١٤، ٣٠٨، ٦٣/١٦ |
| «أما أبو جهم فهو رجل شديد على النساء...» | أبو بكر ابن أبى الجهم | ٣٢٠/١٤ |
| «أما الإسلام فأقبل...» | مروان بن الحكم والمسور بن مخرمة | ٣٦٧/١٨، ١١٩/١٩ |
| «أما إن ابنك هذا لا يجنى عليك...» | أبو رمثة | ٥٧٩/١٧ |

| | | |
|---|---|---|
| «أما إن أحدكم إذا أراد أن يأتى أهله...» | ابن عباس | ٢١٥/١٤ |
| «أما إن البعير الشرود يرد» | أبو هريرة | ١٩٥/١١ |
| «أما إن ذلك لا يرد قضاء الله» | جابر بن عبد الله | ٤٦٤/١٤ |
| «أما إن صاحبكم قد حبس عن باب الجنة» | سمرة | ٥٦٢/١١ |
| «إما أن يدوا صاحبكم وإما أن يؤذنوا بحرب» | سهل بن أبى حثمة | ٤٣٥/١٦ |
| «إما أن يفدى وإما أن يقتل» | أبو هريرة | ٢٤٧/١٦ |
| «إما أن يودى وإما أن يقاد...» | أبو هريرة | ٢٤٥/١٦ |
| «أما أنا فأفرغ على رأسى ثلاثًا» | جابر | ٤٩/٢ |
| «أما أنا فأفيض على رأسى ثلاث أكف» | جبير بن مطعم | ٤٥/٢ |
| «أما أنا فأفيض على رأسى ثلاث مرات هكذا» | جبير بن مطعم | ٤٥/٢ |
| «أما أنا فأفيض على رأسى ثلاثًا» | جبير بن مطعم | ٤٨/٢ |
| «أما أنا فقد شفانى الله» | عائشة | ٤٨٤/١٦ |
| «أما أنا فلا آكل متكئا» | أبو جحيفة | ٥٠٠/١٣ |
| «أما أنا فلا أكذب...» | الفضل بن عباس | ٥٥٨/١١ |
| «أما أنت فقد غفر لك» | وائل بن حجر | ٣٧٩/١٧ |
| «أما أنت فقد وضع الله عنك الجهاد» | أشياخ من بنى سلمة | ٨٤/١٨ |
| «أما أنت يا ابن عباس فلا تشهد إلا على أمر...» | ابن عباس | ٤٦٦/٢٠ |
| «أما إنك إن عفوت عنه فإنه يبوء بإثمك...» | وائل بن حجر | ٢٦٧/١٦ |
| «أما إنك إن عفوت فإنه يبوء...» | وائل بن حجر | ٢٥٤/١٦ |
| «أما إنك إن قتلته كنت مثله» | وائل بن حجر | ٢٥٤/١٦ |
| «أما إنك لو لم تفعلى لكتبت عليك كذبة» | عبد الله بن عامر | ٥٥/٢١، ٥٦ |
| «أما إنكم سترون بعدى أثرة» | أنس بن مالك | ٢٠٥/١٢ |
| «أما إنكم سترون ربكم كما ترون هذا» | جرير بن عبد الله | ٢٩١/٣ |
| «أما إنه إن حلف على مال ليأكله ظلمًا...» | وائل بن حجر | ٢٤٨/٢١ |
| «أما إنه إن حلف على ماله ظلمًا...» | وائل بن حجر | ٤٠٨/٢٠، ٢٧٠/٢١ |
| «أما إنه إن كان يسعى على والديه...» | أنس | ٨٠/١٦ |
| «أما إنه قد كان عندى تمر ولكنه كان غبرًا» | عبد الله بن أبى سفيان<br>ابن الحارث بن<br>عبد المطلب | ٢٦٥/٢٠ |

| | | |
|---|---|---|
| «أما إنه لا يجنى عليك ولا تجنى عليه» | أبو رمثة | ١٧٠/١٦ |
| «أما إنه لم يمنعنى أن أرد عليك إلا أنى كنت أصلى» | جابر بن عبد الله | ٢٦٨/٤ |
| «أما إنه لو أعطيتها أخوالك كان أعظم لأجرك» | ميمونة بنت الحارث | ٥٠٨/١١ |
| «أما إنه لو ذكر اسم الله...» | عائشة | ٥٣/١٥ |
| «أما إنه ليس من صلاة أثقل على المنافقين من هاتين الصلاتين» | أبى بن كعب | ٢٧/٦ |
| «أما إنه من أهل النار» | أبو هريرة | ١٠٤/١٧ |
| «أما إنه من حلف على مال امرئ مسلم...» | عدى | ٢٤٩/٢١ |
| «أما إنى سألت الله عز وجل يعيننى...» | معاوية بن حيدة | ١١٦/١٥ |
| «أما إنى كنت أريد الصوم» | عائشة | ٤٨/٩ |
| «أما إنى لو أنوه باسمك إلا لخير» | سمرة | ٤٧٦/١١ |
| «أما بعد ألا أيها الناس فإنما أنا بشر» | زيد بن أرقم | ٦٧٣/٣، ٦٧٤ |
| «أما بعد أيها الناس إنما أنا بشر...» | زيد بن أرقم | ٤٤٢/١٣، ٣٣٣/٢٠ |
| «أما بعد فإن إخوانكم هؤلاء...» | مروان بن الحكم والمسور بن مخرمة | ٣٢٣/١٣ |
| «أما بعد فإن إخوتكم قد جاءوا تائبين...» | مروان والمسور بن مخرمة | ٢١٦/١٨ |
| «أما بعد فإن الله عز وجل أنزل فى كتابه...» | جرير بن عبد الله | ٣١٤/٨ |
| «أما بعد فإن الله عز وجل حرم مكة...» | أبو شريح الخزاعى | ٢٩٨/١٦، ٣٩٨/١٨ |
| «أما بعد فإن أهل الشرك والأوثان كانوا يدفعون من ههنا...» | المسور بن مخرمة | ١٠٠/١٠ |
| «أما بعد فإن خير الحديث كتاب الله...» | جابر بن عبد الله | ٣٢١/٦ |
| «أما بعد فإن الشمس والقمر لا يخسفان لموت أحد ولا لحياته» | عائشة | ١٢/٧ |
| «أما بعد فإنه لم يخف على شأنكم الليلة...» | عائشة | ٣٢٠/٥ |
| «أما بعد فإنى أنكحت أبا العاص» | المسور بن مخرمة | ١٦٠/١٥ |
| «أما بعد فما بال أقوام يشترطون شروطًا ليست فى كتاب الله...» | عائشة | ٢٤٧/١١ |

| | | |
|---|---|---|
| «أما بعد فما بال العامل نستعمله...» | أبو حميد الأنصارى | ٤٠١/١٣، ٤١١/٢٠ |
| «أما بعد فما بال ناس يشترطون شروطا..» | عائشة | ٥٢٨/١٤ |
| «أما بعد ما من شيء توعدونه لم أكن رأيته إلا قد رأيته» | أسماء بنت أبى بكر | ٤٩/٧ |
| «أما بعد يا عائشة فإنه قد بلغنى عنك كذا وكذا...» | عائشة | ٤٥٦/٢٠ |
| «أما تدرون ما لقى...» | عبد الرحمن ابن حسنة | ٣٠٩/١ |
| «أما ترضون أن يذهب الناس بالغنائم...» | أنس بن مالك | ٢٥١/١٣ |
| «أما ترضى أن تكون منى بمنزلة هارون...» | سعد بن أبى وقاص | ١٣٦/١٨ |
| «أما تريد أن يبوء بإثمك...» | وائل بن حجر | ٢٥١/١٦ |
| «أما تريدين الحج؟» | عروة بن الزبير | ٤٢٠/١٠ |
| «أما تستاك؟» | عبد الله بن عباس | ١٢٠/١ |
| «أما الجارية فأقضى بها لجعفر...» | على بن أبى طالب | ٩٧/١٦ |
| «أما حقى منها لك» | عبد الله بن عمرو | ٢٤٩/١٣ |
| «أما الزيادة فلا...» | ابن عباس، عطاء، أبو الزبير | ١٨٣/١٥، ١٨٥ |
| «أما الزيادة من مالك فلا ولكن الحديقة» | عطاء | ١٨٤/١٥ |
| «أما شعرت أن عم الرجل صنو الأب» | أبو هريرة | ٢٧٥/١٢ |
| «أما شعرت أنا لا نأكل الصدقة» | أبو هريرة | ٤٣٩/١٣ |
| «أما شعرت أنى أمرت الناس...» | جابر بن عبد الله | ٣٤٤/٩ |
| «أما صاحبكم هذا فقد غامر» | أبو الدرداء | ١٨٧/٢١ |
| «أما الطيب الذى بك فاغسله ثلاث مرات» | صفوان بن يعلى بن أمية | ٥٠٤/١٣ |
| «أما علمت أن آل محمد لا يأكلون الصدقة» | أبو هريرة | ٤٣٩/١٣ |
| «أما علمت يا عمر أن عم الرجل صنو أبيه؟» | على بن أبى طالب | ١٠٣/٨ |
| «أما علمت يا عمرو أن الإسلام...» | عمرو بن العاص | ٣٢٤/١٨ |
| «أما علمتم ما لقى صاحب بني إسرائيل...» | عبد الرحمن ابن حسنة | ٣١٩/١ |
| «أما فيكم رجل رشيد...؟» | سعد بن أبى وقاص | ٤٧١/١٣ |
| «أما كان فيكم رجل رشيد يقوم إلى هذا...» | سعد بن أبى وقاص | ١٣٠/١٧ |
| «أما لك ما يغنيك عنها؟» | جابر بن سمرة | ٥٦٥/١٩ |

| | | |
|---|---|---|
| «أما لو لم تفعل للفعتك النار» | أبو مسعود | ١١١/١٦ |
| «أما لئن حلف على مال ليأخذه ظلمًا...» | وائل بن حجر | ٤٢٦/٢٠ |
| «أما لئن حلف على مال ليأكله ظلمًا...» | وائل | ٥٣٤/٢٠ |
| «أما ما ذكرت أنكم بأرض قوم أهل كتاب...» | أبو ثعلبة الخشنى | ٦١٠/١٩ |
| «أما ما ذكرت من أنك بأرض قوم أهل كتاب...» | أبو ثعلبة الخشنى | ٩٨/١ |
| «أما ما صاد كلبك المكلب فكل...» | أبو ثعلبة الخشنى | ١٩٨/١٩ |
| «أما ما كان لى ولبنى عبد المطلب فهو لكم...» | عبد الله بن عمرو | ٢٤٨/١٣، ٢٥٠/١٨ |
| «أما مالك فقد قسم بين المسلمين» | رعية السحيمى | ٣٧٣/١٨ |
| «أما معاوية فرجل ترب...» | أبو بكر ابن أبى الجهم | ١٧٥/١٤، ٣٢٠ |
| «أما معاوية فصعلوك لا مال له...» | فاطمة | ٣١٩/١٤ |
| «أما الميراث فهو له وأما أنت فاحتجبى» | عبد الله بن الزبير | ١٩/١٢ |
| «أما نقصان العقل فشهادة امرأتين...» | ابن عمر | ٤٤٢/٢٠، ٤٤٨ |
| «أما هذا فقد صدق...» | كعب بن مالك | ١١٨/١٨ |
| «أمّا هم فقد سمعوا أن الملائكة لا تدخل بيتًا فيه صورة...» | عبد الله بن عباس | ٢٠٧/١٠ |
| «أما هو فقد جاءه اليقين...» | أم العلاء | ٣٥٧/٢١ |
| «أما هؤلاء فيمزقون...» | عمير بن إسحاق | ٥٩٠/١٨ |
| «أما والله إنى لأتقاكم لله وأخشاكم له» | عمر بن أبى سلمة | ٥١٨/٨ |
| «أما والله لولا أن الرسل لا تقتل...» | نعيم بن مسعود | ٩٩/١٩ |
| «أما والذى نفسى بيده لأقضين بينكم بكتاب الله» | أبو هريرة وزيد بن خالد | ١٥٣/١٧ |
| «أما والذى نفسى محمد بيده ما علمت...» | يزيد بن رومان | ٣١٥/١٨ |
| «أما يخاف أحدكم إذا رفع رأسه من السجود قبل الإمام...» | أبو هريرة | ٥٣١/٣ |
| «أما يخشى الله الذى يرفع رأسه والإمام ساجد...» | أبو هريرة | ٥٣١/٣ |
| «أما يخشى الذى يرفع رأسه قبل الإمام...» | أبو هريرة | ٥٣٠/٣ |
| «الإمام ضامن والمؤذن مؤتمن...» | أبو هريرة | ٩٩/٦ |
| «الإمام ضامن والمؤذن مؤتمن اللهم أرشد الأئمة واغفر للمؤذنين» | أبو هريرة | ٢٠٦/٣، ٢٠٧ |

| | | |
|---|---|---|
| «الإمام ضامن والمؤذن مؤتمن اللهم فأرشد الله الأئمة وغفر للمؤذنين» | أبو هريرة | ٢٠٥/٣ |
| «الإمام ضامن والمؤذن مؤتمن فأرشد الله الإمام وعفا عن المؤذن» | عائشة | ١٩٣/٣، ٢٠٧ |
| «الإمام ضامن والمؤذن مؤتمن فأرشد الله الأئمة وغفر للمؤذنين» | الحسن | ٢٠٩/٣ |
| «أمة ممن مسخ والله أعلم» | ثابت بن وديعة | ٤٦٠/١٩ |
| «أمتطوعة أم قضاء من رمضان» | أم هانئ | ٥٢/٩ |
| «امح رسول الله» | البراء | ٤٧٩/١٣ |
| «امحه» | البراء | ٥١٠/٩ |
| «أمر الدم بما شئت واذكر اسم الله» | عدى بن حاتم | ٦٢/١٥ |
| «أمرًا بين أمرين » | عمرو بن الحارث | ٥١٩/٦ |
| «الأمراء من قريش...» | أنس | ٥١٥/١٦، ٥١٦ |
| «امرأة المفقود امرأته حتى يأتيها البيان» | المغيرة بن شعبة | ٥٨٩/١٥ |
| «امرأتك تقول: أطعمنى وإلا فارقنى...» | أبو هريرة | ٦١/١٦ |
| «أمرت أن أسجد على سبعة أعظم» | عبد الله بن عباس | ٥٥٩/٣ |
| «أمرت أن أسجد على سبعة ولا أكف الشعر ولا الثياب» | عبد الله بن عباس | ٥٥٩/٣ |
| «أمرت أن أقاتل المشركين حتى يشهدوا...» | أنس بن مالك | ٦١٠/٥ |
| «أمرت أن أقاتل الناس حتى يشهدوا...» | أنس بن مالك، أبو بكر، عبد الله بن عمر، أبو هريرة | ٣٠١/٣، ٦٠٩/٥، ٧/ ١٣٧، ٣٦٨/١٣، ١٧/ ٣٦، ٣٧ |
| «أمرت أن أقاتل الناس حتى يقولوا...» | جابر بن عبدالله | ٦٠٩/٥ |
| «أمرت أن أقاتل الناس حتى يقولوا...» | أبو هريرة | ٧٨/٨، ١١١، ٣٦٦/١٣، ٣٦٨، ٣٦٩، ١٤٢/١٦، ٤٨٩، ٣٦/١٧، ٣٧، ١٠٠، ١٠١، ١٦٦/١٨، ٥/١٩، ٦ |
| «أمرت أن أقاتل الناس حتى يقولوا...» | رجل من بلقين | ٢٤٦/١٣ |

| | | |
|---|---|---|
| «أمرت أن أقاتل الناس حتى يقولوا...» | عمر بن الخطاب | ٣٣/١٧، ٣٤، ٦/١٩ |
| «أمرت أن أقاتل الناس حتى يقولوا: لا إله إلا الله...» | أبو هريرة، جابر بن عبد الله | ١٠٠/١٧، ١٠١ |
| «أمرت بالمساجد جُمًّا» | أنس | ١٥٨/٥ |
| «أمرت بخمسين صلاة كل يوم...» | مالك بن صعصعة | ١١/٣ |
| «أمرت بيوم الأضحى عيدا جعله الله لهذه الأمة» | عبد الله بن عمرو بن العاص | ٢٦٠/١٩ |
| «أمرر الدم بما شئت واذكر اسم الله» | عدى بن حاتم | ٣١٩/١٩ |
| «أمرنى جبريل عليه السلام برفع الصوت» | أبو هريرة | ٤٢٣/٩ |
| «امرؤ من قريش» | طاوس | ٣٠/١١ |
| «امسح على الجبائر» | على بن أبى طالب | ١٩٥/٢ |
| «أمسك أربعا وفارق سائرهن» | ابن شهاب، عبد الله بن عمر | ٣٢١/١٤، ٣٢٣ |
| «أمسك بعض مالك فهو خير لك» | كعب بن مالك | ١٨١/٢٠ |
| «أمسك بنصالها» | جابر بن عبد الله | ١٥٨/١٦ |
| «أمسك عليك» | عبد الرحمن ابن هشام | ١٨٧/٢ |
| «أمسك عليك بعض مالك...» | كعب بن مالك | ٣٣٣/٨، ١٢١/١٨ |
| «أمسك عليك زوجك واتق الله» | زينب بنت جحش | ١٧٧/١٤ |
| «أمسك عنها حتى تكفر» | ابن عباس | ٤٠٣/١٥ |
| «أمسك هذه عندك يا عبد الله بن أنيس» | عبد الله بن أنيس | ٤٧١/٦ |
| «أمسك يا غلام صدقت المسكينة...» | قيلة بنت مخرمة | ٢٢٧/١٢ |
| «أمسكوا أموالكم لا تعمروها...» | جابر بن عبد الله | ٣١٠/١٢ |
| «أمسكوا إن هذه الشاة مسمومة» | أبو هريرة | ٢٢٧/١٦ |
| «أمسكوا عليكم أموالكم ولا تعطوها أحدًا» | جابر بن عبد الله | ٣١٠/١٢ |
| «أمسكوا عليكم أموالكم ولا تفسدوها...» | أبو هريرة | ٣٠٩/١٢ |
| «أمعك ماء؟» | المغيرة بن شعبة | ١٨٥/١ |
| «أمعكم منه شيء؟» | عبد الله بن عمر | ٢٢٨/١٩ |
| «أمك» | معاوية بن حيدة، أبو هريرة | ٨٧/١٦، ٨٨ |

| | | |
|---|---|---|
| «أمك وأباك وأختك وأخاك ومولاك...» | جد كليب بن منفعة | ٣٢٧/٨ |
| «امكثى فى بيتك حتى يبلغ الكتاب أجله» | الفريعة بنت مالك بن سنان | ٥٥١/١٥، ٥٥٢، ٥٥٤ |
| «امكثى قدر ما كانت تحبسك حيضتك» | عائشة | ٤٥٣/٢، ٤٥٥، ٤٥٦، ٤٩٩ |
| «أملكناكها بما معك من القرآن» | سهل بن سعد | ٢٠٣/١٤ |
| «أمن ربية؟» | محارب بن دثار | ٢٠٩/١٥ |
| «أمن الناس إلا هؤلاء الأربعة...» | سعيد بن يربوع | ٣٨٩/١٨ |
| «أمناء المسلمين على صلاتهم وسحورهم المؤذنون» | أبو محذورة | ١٩٤/٣ |
| «أمنى جبريل عليه السلام عند البيت مرتين...» | عبد الله بن عباس | ٢٣/٣، ٢٨، ٣٤، ٤٧، ٥١، ٦١، ٢٤٨ |
| «أمهلوا حتى ندخل ليلا...» | جابر | ٥٤٧/١٤ |
| «أميطوا عنه الأذى» | سلمان بن عامر | ٣٨٧/١٩ |
| «أن أبلغهم عنى أربع خصال....» | عبد الله بن عمرو | ٢٥٣/١١ |
| «إن أردت أن يلين قلبك فأطعم المساكين» | أبو هريرة | ٤٥٩/٧ |
| «إن أردت أن يلين قلبك فامسح رأس اليتيم وأطعمه» | أبو الدرداء | ٤٥٩/٧ ٤٦٠ |
| «إن استطعت ألا يراها أحد فلا يراها» | معاوية بن حيدة | ١١٢/٢ |
| «إن استطعت ألا يراها أحد فلا يرينها» | معاوية بن حيدة | ٥٠/١٤ |
| «إن استطعت أن تكون خلف الإمام وإلا فعن يمينه» | أبو برزة | ٣١/٦ |
| «إن استعمل عليكم عبد حبشى...» | أم حصين الأحمسية | ٥٥٢/١٦ |
| «إن استكرهها فهى حرة وعليه لسيدتها مثلها» | سلمة بن المحبق | ٢٤٢/١٧ |
| «إن استكرهها فهى حرة ولها عليه مثلها...» | سلمة بن المحبق | ٢٤١/١٧ |
| «إن استكرهها فهى عتيقة وعليه مثلها...» | سلمة بن المحبق | ٢٤٣/١٧ |
| «إن أكل منه فلا تأكل...» | عدى بن حاتم | ١٧٦/١٩ |
| «أن امضى حتى تنزل نخلة...» | عروة بن الزبير | ١٩٧/١٨ |
| «إن بدا له أن يسلمها لهم فليسلمها» | - | ٣٢٦/١٣ |

| | | |
|---|---|---|
| «إن بعت من أخيك ثمرًا فأصابته جائحة» | جابر بن عبد الله | ١٣٧/١١ |
| «إن بيتم فليكن شعاركم: حم لا ينصرون» | من سمع رسول الله ﷺ | ٣٢٨/١٣ |
| «أن تبلغ عشرين ومائة...» | أبو بكر بن محمد بن عمرو بن حزم | ٤٦/٨ |
| «أن تجعل لله ندا وهو خلقك» | ابن مسعود | ١٣٧/١٦-١٣٩ |
| «أن تحاسب حسابًا يسيرًا ويدخلك الله الجنة برحمته» | أبو هريرة | ١٨٥/٢١ |
| «أن تدعو لله ندا وهو خلقك..» | عبد الله | ١٢٧/١٦ ١٢٨ |
| «أن تذبحها فتأكلها...» | عبد الله بن عمرو | ٢٨٥/١٨ |
| «أن تزانى حليلة جارك» | ابن مسعود | ١٢٨/١٦، ١٣٨ |
| «أن تزنى بحليلة جارك» | ابن مسعود | ١٣٨/١٦ |
| «أن تشاور ذا رأى ثم تطيعه» | خالد بن معدان | ٣٢٦/٢٠ |
| «أن تشهد أن لا إله إلا الله» | عمر بن الخطاب | ٢٧٦/٩ |
| «أن تطعمها إذا طعمت وتكسوها إذا اكتسيت» | معاوية بن حيدة | ١٥٠/١٥ |
| «إن تطعنوا فى إمارته...» | ابن عمر | ١٠٥/٦، ٥٥١/١٦ |
| «إن تطعنوا فى إمرته...» | ابن عمر | ١٠٧/٢٠ |
| «أن تعين قومك على الظلم» | واثلة بن الأسقع | ١٧٧/٢١ |
| «أن تفعل الخير خير لك» | بُهيْسة عن أبيها | ٢٢٦/١٢ |
| «أن تقتل ولدك أجل أن يأكل معك» | ابن مسعود | ١٣٧/١٦ |
| «أن تقتل ولدك خشية أن يأكل معك» | ابن مسعود | ١٣٨/١٦ |
| «أن تلد الأمة ربتها...» | عمر | ٧١/٢١ |
| «أن تهجر ما كره ربك» | عبد الله بن عمرو | ٢١٠/٢١ |
| «إن جاء رجل فلم يجد أحدًا فليختلج إليه رجلًا من الصف فليقم معه» | مقاتل بن حيان | ٣٦/٦ |
| «إن جاءت به أكحل أدعج...» | ابن عباس | ٤٢٨/١٥ |
| «إن جاءت به أحمر قصيرا أوحر...» | سهل بن سعد | ٤٤٣/١٥ |
| «إن جاءنى مال من البحرين لأعطينك...» | عمر مولى غفرة | ٢٩١/١٣ |

| | | |
|---|---|---|
| «أن حجى واشترطى أن محلى حيث تحبسنى» | عبد الله بن عباس | ٤٢٥/١٠ |
| «إن حضرت صلاة العصر ولم آتك فمر أبا بكر فليصل بالناس» | سهل بن سعد | ٨٦/٦ |
| «إن رأت فيه دمًا حتّته ثم قرصته بالماء» | أسماء بنت أبى بكر | ٥٩/٥ |
| «إن رأيتم أن تطلقوا لها أسيرها...» | عائشة | ١٩٥/١٣ |
| «إن زنت فاجلدوها...» | أبو هريرة وزيد بن خالد | ٢٥١/١٧، ٢٥٦ |
| «إن سرك أن تطوق طوقًا من نار» | عبادة بن الصامت | ١٤٠/١٢ |
| «إن سرك أن تفى بنذرك...» | أبو هريرة | ٢٥١/١٨ |
| «إن شربها فاقتلوه» | عبد الله بن عمر | ٤٧٤/١٧ |
| «إن شربوا الرابعة فاقتلوهم» | أبو هريرة | ٤٧٥/١٧ |
| «إن شكرك فهو خير له وشر لك...» | الحسن | ٥٢٨/١٢ |
| «إن شئت» | سلمة بن الأكوع | ٢٢/٢٠ |
| «إن شئت أن أسبع لك وأسبع...» | أم سلمة | ١٣٧/١٥ |
| «إن شئت أن تأخذ بالثمن الذى اشتراها به...» | تميم بن طرفة | ٣٦٣/١٨ |
| «إن شئت أن تمسك أداتك فأمسكها...» | الزهرى | ٤٠٩/١٣ |
| «إن شئت أنبأتك برأس الأمر وعموده» | معاذ بن جبل | ٦٩/١٨ |
| «إن شئت تصدقت به» | عمر | ٢٦٠/١٢ |
| «إن شئت تصدقت بها وحبست أصلها» | ابن عمر | ٢٥٧/١٢، ٢٦٧ |
| «إن شئت تقرين تحت هذا العبد...» | عائشة | ٤٤٠/١٤ |
| «إن شئت حبست أصلها وتصدقت بها» | ابن عمر | ٢٥٨/١٢، ٢٦٠ |
| «إن شئت زدتك وحاسبتك به...» | أبو بكر بن عبد الرحمن | ١٣٦/١٥ |
| «إن شئت غرمناها لك» | ناس من آل صفوان بن أمية | ٢٦/١٢ |
| «إن شئت فانسك نسيكة...» | كعب بن عجرة | ٣٠١/١٠ |
| «إن شئت فتوضأ...» | جابر بن سمرة | ٤٥٣/١ |
| «إن شئت فصم وإن شئت فأفطر» | عائشة | ٥٤٧/٨ |
| «إن شئت وإن شئت فدع» | جابر بن سمرة | ١٨٣/٥ |
| «إن شئتم أن تخرجوا إلى إبل الصدقة...» | أنس بن مالك | ٢٣٤/١٨ |
| «إن شئتم فاجعلوه» | جابر | ٢٩٢/٦ |

| | | |
|---|---|---|
| «إن شئتم فاكووه وإن شئتم فارضفوه» | ابن مسعود | ٥١٩/١٩ |
| «إن شئتم قتلتموهم...» | على بن أبى طالب | ١٩٣/١٣، ٢٣٠/١٨ |
| «إن شئتم وإن شئتم فارضفوه بالرضف» | عبد الله بن مسعود | ٥١٩/١٩ |
| «إن شئتما أعطيتكما...» | - | ٣٩٥/١٣ |
| «إن ضمنتم دينه صليت عليه» | أنس | ٥٦١/١١ |
| «إن عشت إن شاء الله صمت اليوم التاسع» | ابن أبى ذئب | ٨٢/٩ |
| «إن عطب فانحره» | ناجية الأسلمى | ٤٩٦/١٠ |
| «إن عطب منها شيء فخشيت عليها موتا فانحرها...» | ذؤيب أبو قبيصة | ٣٢٨/١٩ |
| «إن عادوا فعد» | محمد بن عمار بن ياسر | ١٤٠/١٧ |
| «إن علمتم منهم حرفة...» | يحيى بن أبى كثير | ٤٤٣/٢١ |
| «إن قتل زيدٌ فجعفر...» | ابن عمر | ٥٤٩/١٦ |
| «إن قتلت فى سبيل الله صابرا محتسبا...» | أبو قتادة | ٣١١/١١، ٨٦/١٨ |
| «إن قتله فهو مثله» | وائل بن حجر | ٢٥١/١٦ |
| «إن قربك فلا خيار لك» | عائشة | ٤٥١/١٤ |
| «إن قضى الله لك أن تزوج...» | سليمان | ٤٠/١٥ |
| «إن قويت فاجمعى بين الظهر والعصر بغسل...» | حمنة بنت جحش | ٥١١/٢ |
| «إن كاد فى شعره ليسلم» | الشريد | ١٥٣/٢١ |
| «إن كان أحدكم مادحًا أخاه...» | أبو بكرة | ٢٠٧/٢١ |
| «إن كان جامدًا أخذت وما حولها...» | أبو هريرة | ٥٥٨/١٩ |
| «إن كان الدم عبيطًا...» | ابن عباس | ٤٢٩/٢ |
| «إن كان الشؤم فى شيء ففى الفرس...» | ابن عمر | ٥٠١/١٦ |
| «إن كان عندك ماء بات...» | جابر بن عبد الله | ٧٩/١٥ |
| «إن كان فى أدويتكم...» | جابر | ٥١٤/١٩ |
| «إن كان فى شيء شفاء مما تداوون به فالحجامة» | أبو هريرة | ٥٠٦/١٩ |
| «إن كان فى شيء شفاء من الموت...» | أسماء بنت عميس | ٥٣٣/١٩ |
| «إن كان فى شيء من أدويتكم خير...» | جابر بن عبد الله | ٥١٤/١٩ |

| | | |
|---|---|---|
| «إن كان فيه ما تقول فقد اغتبته...» | أبو هريرة | ٢٢٤/٢١ |
| «إن كان قضاء من رمضان» | أم هانئ | ٥٧/٩ ٥٨ |
| «إن كان كذلك فلا...» | أسامة بن زيد | ٤٧/١٦ |
| «إن كان من فزع وإن وجدناه لبحرًا» | أنس | ٥٩/٢١ |
| «إن كان هذا شأنكم فلا تكروا المزارع» | زيد بن ثابت | ١٧٤/١٢ |
| «إن كان وسادك لعريضًا...» | عدى بن حاتم | ٤٥٦/٨ |
| «إن كان يسعى على أبويه شيخين كبيرين...» | ابن عمر | ٨١/١٦ |
| «إن كانت أحلتها له جلدت مائة...» | النعمان بن بشير | ٢٣٩/١٧ |
| «إن كانت طاوعته فهى له وعليه مثلها» | سلمة بن المحبق | ٢٤١/١٧ |
| «إن كدتم آنفًا تفعلون فعل فارس والروم...» | جابر | ٤١٩/٦ |
| «إن كنت تحب أن تُطوَّق بطوق من نار...» | عبادة بن الصامت | ١٤٠/١٢ |
| «إن كنت حججت فلبِّ عنه» | عطاء | ٢٣٥/٩ |
| «إن كنت صدقت عليها فهو بما استحللت» | ابن عمر | ٤٧٣/١٥ |
| «إن كنت غير تارك البيع فقل: ها وها ولا خلابة» | أنس | ٥١٦/١١ |
| «إن كنت فاعلًا فواحدة» | مُعَيقيب | ٣٧٦/٤ |
| «إن كنت نذرت فاضربى» | بريدة | ٢١٠/٢٠ |
| «أن لا تستمتعوا من الميتة بإهاب ولا عصب» | عبد الله بن عكيم | ٤٢/١، ٥٣ |
| «أن لا تستمتعوا من الميتة بشىء» | مشيخة من جهينة | ٧٣/١ |
| «أن لا تمسّ القرآن إلا على طهر» | عمرو بن حزم | ٢٦٣/١ |
| «أن لا تنتفعوا من الميتة بإهاب ولا عصب» | عبد الله بن عكيم | ٤٢/١ ، ٤٣ |
| «أن لا يشركن بالله شيئا» | أم عطية | ٤٦٤/٧ |
| «إن لقيتها نعجة تحمل شفرة...» | عمرو بن يثربى | ٥١/١٢ |
| «إن لم تجدى شيئا تعطيه إياه...» | أم بجيد | ٣١٩/٨ |
| «إن لم تجدينى فأتى أبا بكر» | جبير بن مطعم | ٥٤٥/١٦ |
| «إن لم يثمرها الله فبم يستحل أحدكم مال أخيه؟!» | أنس | ١١٥/١١ |
| «إن لم يجد أحدكم إلا عودًا» | الصماء | ١٣١/٩ |
| «إن مات فلا تدفنوه بها» | عبد الرحمن الأعرج | ٦٣/١٨ |

| | | |
|---|---|---|
| «إن مات ولم يدع وارثًا فلك ماله» | الحسن | ٥٢٨/١٢ |
| «أن مُرى غلامك النجار أن يعمل لى أعوادًا» | سهل بن سعد | ٤٤/٦ |
| «إن نزلتم بقوم فأمر لكم بما ينبغى للضيف...» | عقبة بن عامر | ٢٩٩/٢١ |
| «إن نزلتم بقوم فأمروا لكم بما ينبغى للضيف...» | عقبة بن عامر | ٥٠/١٩ |
| «إن نسانى الشيطان شيئا من صلاتى...» | أبو هريرة | ٣٥١/١٤ |
| «إن وجدتم غيرها فكلوا فيها واشربوا...» | أبو ثعلبة الخشنى | ٩٩/١ |
| «إن وجدتم فلانا فأحرقوه بالنار» | حمزة بن عمرو الأسلمى | ٢٤٣/١٨ |
| «إن وجدتم فلانا فاقتلوه...» | حمزة بن عمرو الأسلمى | ٢٤٣/١٨ |
| «إن وجدتم فلانا وفلانا...» | أبو هريرة | ٢٤٢/١٨ |
| «إن وجدته فى قرية مسكونة...» | عبد الله بن عمرو | ٢٥٤/٨ |
| «أن ورث امرأة أشيم الضبابى...» | الضحاك بن سفيان | ٤٨٠/١٦ |
| «إن وطئك فلا خيار لك...» | عائشة | ٤٥٢/١٤ |
| «أن يأكل ولا يحمل ويشرب ولا يحمل» | أبو هريرة | ٥٨٠/١٩ |
| «أن يبعثوا إلى القابلة منها برجل...» | جعفر بن محمد عن أبيه | ٣٨٥/١٩ |
| «أن يراه قد غمس يده فى القتال يقاتل حاسرا» | عاصم بن عمر بن قتادة | ٣٢٩/١٨ |
| «أن يسلم المسلمون من لسانه ويده» | عبد الله بن عمرو | ٢١٠/٢١ |
| «أن يطعمها إذا طعم...» | معاوية بن حيدة القشيرى | ١١٧/١٥ |
| «أن يعقر جوادك ويهراق دمك» | عبد الله بن عمرو | ٢١١/٢١ |
| «أن يكون له شبع يوم وليلة أو ليلة ويوم» | سهل ابن الحنظلية | ٤٢٧/١٣ |
| «أن يمنح أحدكم أخاه خير له...» | ابن عباس | ١٧٣/١٢ |
| «أنا أحق من أوفى بذمته» | عبد الرحمن بن البيلمانى | ١٨٢/١٦ |
| «أنا أحق من وفى بذمته» | عبد الرحمن بن البيلمانى | ١٨١/١٦- ١٨٣ |

| | | |
|---|---|---|
| «أنا أخوه وهو أخى...» | عائشة | ١٤/١٥٥ |
| «أنا أعلمكم به» | السائب | ١١/٥٧١ |
| «أنا أقضى بينكم» | على بن أبى طالب | ١٦/٤١٦، ٤١٧ |
| «أنا أكبر منك وأما الغيرة...» | أم سلمة | ١٥/١٣٨ |
| «أنا أكرم من وفى بذمته» | ابن عمر | ١٦/١٨١ |
| «أنا أنا...» | جابر | ١٧/٥٦٥ |
| «أنا أنبئك بخير رجل ربح» | رجل من أصحاب النبى ﷺ | ١٣/٢٣٠ |
| «أنا أول شفيع يوم القيامة» | أنس بن مالك | ١٨/١٣ |
| «أنا أولى بالمؤمنين من أنفسهم...» | جابر بن عبد الله، أبوهريرة | ١٢/٥٢٠، ١٣/٤٨٥، ٥١٤، ٢١/٣٩٥ |
| «أنا أولى بكل مؤمن من نفسه...» | جابر بن عبد الله | ٦/٣٢١، ١١/٥٥٢، ١٢/٤٤٠، ٥٣٥ |
| «أنا أولى الناس بالمؤمنين فى كتاب الله...» | أبو هريرة | ١٢/٣٩٦ |
| «أنا برىء من كل مسلم مع مشرك» | جرير بن عبد الله | ١٦/٤٧١ |
| «أنا برىء من كل مسلم مقيم بين أظهر المشركين» | جرير بن عبد الله | ١٦/٤٧٠، ١٨/٤٦٧ |
| «أنا بين خيرتين...» | ابن عمر | ١٧/١١٠، ١١١ |
| «أنا رسول الله الذى إذا أصابك ضر فدعوته...» | جابر بن سليم | ٢١/١٨٥ |
| «أنا رسول الله وأنا محمد...» | البراء | ١٦/٩٤ |
| «أنا زعيم بيت فى ربض الجنة لمن ترك المراء...» | أبو أمامة | ٢١/٢٢٩ |
| «أنا زعيم لمن آمن بى وأسلم...» | فضالة بن عبيد | ١١/٥٤٩، ٥٥٠ |
| «أنا سيد بنى آدم يوم القيامة...» | أبو هريرة | ١٨/١٣ |
| «إنا صائم» | عائشة | ٩/٤٧ |
| «أنا عبد؛ آكل كما يأكل العبد» | - | ١٥/٧٤ |
| «أنا عبد الله ورسوله» | جابر بن عبد الله | ١٤/٤٦٤ |
| «أنا نبى» | عمرو بن عبسة السلمى | ٥/٢٠٢ |

| | | |
|---|---|---|
| «أنا النبى لا كذب...» | البراء بن عازب | ٤٨٣/١٣، ٥٠٦/١٨، ٥٠٩ |
| «أنا وارأساه! ادعى لى أباك...» | عائشة | ٥٤٥/١٦ |
| «أنا وارث من لا وارث له؛ أفك عنيه...» | المقدام | ٤٤١/١٢ |
| «أنا والله محمد بن عبد الله...» | البراء | ٤٧٨/١٣ |
| «أنا وكافل اليتيم فى الجنة كهاتين» | سهل بن سعد | ٧٢/١٣ |
| «أنا وكافل اليتيم له أو لغيره...» | أم سعيد بنت مرة الفهرى عن أبيها | ٧٣/١٣ |
| «أنا وكافل اليتيم له ولغيره..» | صفوان بن سليم | ٧٣/١٣ |
| «إناء مكان إناء وطعام مكان طعام» | عائشة | ٥٠/١٢ |
| «انبذوه على غدائكم واشربوه على عشائكم..» | الديلمى | ٤٣٣/١٧ |
| «أنت أبصر» | أبو هريرة | ٥١/١٦، ٧٧ |
| «أنت أحق أن تعقل عن أختك» | أبو المليح الهذلى عن أبيه | ٤٠٩/١٦ |
| «أنت أحق به ما لم تنكحى» | عبد الله بن عمرو | ٩٢/١٦ |
| «أنت أخونا ومولانا» | البراء | ٩٥/١٦، ٩٦، ١٥١/٢١ |
| «أنت أشبههم بى خلقا وخلقا» | البراء | ٩٦/١٦ |
| «أنت أعلم» | أبو هريرة | ٥١/١٦ |
| «أنت أكبر ولده» | عبد الله بن الزبير | ٢١٣/٩ |
| «أنت إلى ثمنه أحوج...» | جابر بن عبد الله | ٤٢٣/٢١ |
| «أنت إمامهم فاقتد بأضعفهم» | عثمان بن أبى العاص | ٢٠٣/٣ |
| «أنت بذلك؟» | سلمة بن صخر | ٤٠٠/١٥ |
| «أنت جميلة» | ابن عمر | ٤٠١/١٩ |
| «أنت خلقتها أو خلقته» | أبو هريرة | ٤٠٠/٧ |
| «أنت ذاك؟» | سلمة بن صخر | ٤١٣/١٥ |
| «أنت ربنا وربهم ونحن عبيدك...» | عبد الله بن أبى أوفى | ٥٠٠/١٨ |
| «أنت رفيق» | أبو رمثة | ١٧٠/١٦ |
| «أنت سرق» | زيد بن أسلم | ٤٧٩/١١ |
| «أنت قتلته؟» | عبد الله بن مسعود | ٢١٠/١٨ |

| | | |
|---|---|---|
| «أنت مضار» | سمرة بن جندب | ٢٥٣/١٢ |
| «أنت من الأولين» | أنس بن مالك ، أم حرام بنت ملحان | ٥٤٤/١٨ |
| «أنت منى وأنا منك» | البراء، عليّ | ٩٥/١٦، ٩٦، ١٥١/٢١ |
| «أنت ومالك لأبيك» | عبد الله بن عمرو، قيس ابن أبى حازم، محمد ابن المنكدر | ٨٥/١٦، ٨٧ |
| «أنت ومالك لوالدك...» | عبد الله بن عمرو | ٨٤/١٦، ٨٥ |
| «انتبذوا كل واحد على حدته» | أبو قتادة | ٤٥٢/١٧ |
| «انتدب الله لمن خرج مجاهدا فى سبيله...» | أبو هريرة | ٥١٣/١٨ |
| «انتظر » | محمد بن طلحة بن يزيد | ٢٨٥/١٦ |
| «انتظرى فإذا طهرت فاخرجى» | عائشة | ٢١٨/٩ ، ٢٢١ |
| «انتفع بها واحفظ وعاءها وخرقتها....» | أبى بن كعب | ٣٧٢/١٢ |
| «انتفعوا به ولا تأكلوه» | عبد الله بن عمر | ٥٦٠/١٩ |
| «انتقلى إلى بيت ابن أم مكتوم» | فاطمة بنت قيس | ٥٤١/١٥ |
| «أنتم أولى بموسى منهم فصوموه» | ابن عباس | ٨٩/٩ |
| «أنتم أولى الناس بهذا الأمر...» | عطاء بن يسار | ٥١٦/١٦ |
| «أنتم خير أهل الأرض» | جابر بن عبد الله | ٤٦٧/١٠ |
| «أنتم الغر المحجلون يوم القيامة من إسباغ الوضوء...» | أبو هريرة | ٢٣٢/١ |
| «أنتم قتلتم هذا؟» | أبو قلابة | ٤٦٢/١٦ |
| «أنتم الذين قلتم كذا وكذا؟» | أنس | ٥٨٣/١٣ |
| «أنتم اليوم خير أم إذا غدت عليكم...» | عبد الله بن يزيد | ٣٨/١٥ |
| «أنتم اليوم خير من على الأرض» | جابر بن عبد الله | ٢٠٨/١٣ |
| «أنتن صواحبات يوسف...» | عبد الله بن عمر | ٥٤١/١٦ |
| «أنتن على ذلك» | ابن عباس | ٥٧٦/٦ |
| «انتهبوا» | معاذ بن جبل | ٩١/١٥ |
| «انثروه فى المسجد» | أنس بن مالك | ٣١١/١٣ |

| | | |
|---|---|---|
| «انحرها ثم اصبغ نعليها فى دمها» | عبد الله بن عباس | ٤٩٤/١٠ |
| «أنذرتكم النار» | النعمان بن بشير | ٣٢٢/٦ |
| «انزع الحبل» | ابن جريج | ٤٥٤/٩ |
| «انزع عنك جبتك» | يعلى بن أمية القرشى | ٤٧٠/٩ |
| «انزعوا بنى عبد المطلب» | جابر بن عبد الله | ٣١٩/٩ ، ١٦٩/١٠ |
| «انزعيه» | عائشة | ٢٣/١٥ |
| «انزل فاجدح لنا» | عبد الله بن أبى أوفى | ٤٥٩/٨ |
| «انزل ليلة ثلاث وعشرين» | عبد الله بن أنيس | ١٥٦/٩ |
| «انزل يا ابن الأكوع فخذ لنا من هناتك» | أبو الهيثم أن أباه حدثه | ٣١٧/٧ |
| «أنزلت على آية هى أحب إلى من الدنيا جميعًا» | أنس بن مالك | ٤١٠/١٠ |
| «أنزلت على الليلة آيات لم أر مثلهن المعوذتين» | عقبة بن عامر الجهنى | ٢٥/٥ |
| «انزلوا فصلوا المغرب بإقامة ذلك العبد الأسود» | حفص بن عاصم | ١٤٧/٣ |
| «انزلوا واقبروه وأنتم عبيد الله» | عبد الله بن الحارث بن جزء الزبيدى | ٤٠٣/١٩ |
| «أنسئ جابرًا بعض دينك...» | جابر بن عبد الله | ٣٢١/١١ |
| «أنشد بالله رجلا رأى للنبى حقا...» | ابن عباس | ٥٣٤/١٣ |
| «أنشدك الله الذى أنزل التوراة على موسى...» | البراء بن عازب | ٢٦٦/١٧ |
| «أنشدك عهدك ووعدك...» | ابن عباس | ١٥٨/١٨ |
| «انصر أخاك ظالمًا أو مظلومًا» | أنس | ٤٣/١٢، ٢٥٠/٢٠ |
| «انصرفا نفى لهم بعهدهم...» | حذيفة بن اليمان | ٤٧٥/١٨ |
| «أنطاك الله ذلك كله وأعطاك ما احتسبت أجمع» | أبى بن كعب | ٥٢٦/٥ |
| «أنطاك الله ما احتسبت أجمع» | أبى بن كعب | ٢١٣/٢٠ |
| «انطلق إلى صاحب الصدقة...» | سلمة بن صخر الأنصارى | ٤١٤/١٥ |
| «انطلق حتى تجد من شىء» | أنس بن مالك | ٤٢٧/١٣ |
| «انطلق فأرنيه» | عبد الله بن مسعود | ٢١٠/١٨ |
| «انطلق فإن الله عز وجل سيهدى قلبك...» | علىّ | ٢٤٠/٢٠ |

| | | |
|---|---|---|
| «انطلق فإن وجدت بعيرك قبل أن يقسم...» | عبد الله بن عباس | ٣٦٢/١٨ |
| «انطلق فقد زوجتكها بما تعلمها من القرآن» | سهل بن سعد | ٥١٠/١٤ |
| «انطلق فقد زوجتكها فعلمها من القرآن» | سهل بن سعد | ٥١٠/١٤ |
| «انطلقا فادعوا الناس إلى الإسلام...» | أبو موسى | ٤٠٣/١٧ |
| «انطلقن فقد بايعتكن» | عائشة | ٥٢٩/١٦ |
| «انطلقوا إلى يهود» | أبو هريرة | ٨٨/١٩ |
| «انطلقوا باسم الله...» | أنس بن مالك، على بن أبى طالب | ٣٠٠/١٨، ٣٠١ |
| «انطلقوا بنا إلى البصير الذى فى بنى واقف نعوده» | جابر | ٦٠/٢١ |
| «انطلقوا بنا إلى الشهيدة فنزورها» | أم ورقة بنت عبد الله بن الحارث | ١١٢/٦ |
| «انطلقوا به فاجلدوه مائة جلدة» | ابن عباس | ٢٠٦/١٧ |
| «انطلقوا حتى تأتوا روضة خاخ...» | على بن أبى طالب | ٤٨٠/١٨ |
| «انطلقوا فإنكم ستلقونها بروضة كذا وكذا» | على بن أبى طالب | ٤٨٢/١٨ |
| «انطلقوا فمن دخل دارك يا أبا سفيان...» | موسى بن عقبة | ٣٩١/١٨ |
| «انطلقوا نزور الشهيدة» | أم ورقة بنت عبد الله بن الحارث | ١١١/٦ |
| «انظر أن تريحنى منها...» | بلال | ٥٨١/١١ |
| «انظر أين هو» | سهل بن سعد | ١٧٧/٥ |
| «انظر علام اجتمع هؤلاء؟» | رباح بن ربيع | ٢٧٢/١٨ |
| «انظر كُبر خزاعة فادفعه إليه» | بريدة | ٥٣٧/١٢ |
| «أنظرت إليها؟» | أبو هريرة | ١٨/١٤ |
| «انظرن إخوانكن من الرضاعة...» | عائشة | ٢٠/١٦ |
| «انظروا خابزة تخبز لكم» | جابر بن عبد الله | ٤٦/١٥ |
| «انظروا إلى هذا جاء تلك الجمعة بهيئة بذة...» | أبو سعيد الخدرى | ٣٥٢/٦ |
| «انظروا إلى هذا المحرم وما يصنع» | أسماء بنت أبى بكر | ٥٠٥/٩ |
| «انظروا إلى هذا؛ دخل المسجد بهيئة بذة...» | أبو سعيد الخدرى | ٣٣٥/٨ |
| «انظروا ما إخوانكم؟» | عائشة | ٣١/١٦ |

| | | |
|---|---|---|
| «انظروا من تراضعون...» | عائشة | ٣١/١٦ |
| «انظروا هذه الأسقية إذا اغتلمت...» | ابن عمر | ٤٤٦/١٧ |
| «انظروا هذه الجوارح...» | عدى بن حاتم | ١٧٠/١٩ |
| «أنظروا هذين حتى يصطلحا» | أبو هريرة | ٧٣/٧ |
| «انظروا هل له وارث» | ابن عباس | ٥٣٣/١٢ |
| «انظروا هل من وارث» | بريدة | ٥٣٧/١٢ |
| «انظروها فإن جاءت به أبيض سبطا...» | أنس بن مالك | ٤٦٤/١٥ |
| «انظروها فإن جاءت به أحمر قصيرا...» | سهل بن سعد | ٤٤١/١٥ |
| «انظروها فإن جاءت به أسحم...» | سهل بن سعد | ٤٤٠/١٥ |
| «انظروها فإن جاءت به أكحل العينين...» | ابن عباس | ٤٢٣/١٥ |
| «انظرى غلامك النجار يعمل لى أعوادًا..» | سهل بن سعد | ٢٩١/٦ |
| «أنعت لك الكرسف فإنه يذهب الدم» | حمنة بنت جحش | ٤٧٣/٢ |
| «أنفست؟» | أم سلمة | ٤١٣/٢ |
| «أنفسها» | أبو ذر | ٥٨٣/١١ |
| «انفض يدك من غبارها...» | رافع بن خديج | ١٨١/١٢ |
| «أنفقه على أهلك» | أبو هريرة | ٥٠/١٦ |
| «أنفقه على خادمك» | أبو هريرة | ٥١/١٦، ٧٧ |
| «أنفقه على زوجتك» | أبو هريرة | ٧٧/١٦ |
| «أنفقه على نفسك» | أبو هريرة | ٥٠/١٦، ٧٦ |
| «أنفقه على ولدك» | أبو هريرة | ٥٠/١٦، ٧٦ |
| «أنفقى أو انضحى هكذا وهكذا وهكذا...» | أسماء بنت أبى بكر | ٣٥٥/٨ |
| «أنفقى عليهم فإن لك أجر ما أنفقت عليهم» | أم سلمة | ٣٢٥/٨ |
| «انقادى على...» | جابر بن عبد الله | ٢٨٦/١ |
| «انقضى رأسك وامتشطى» | عائشة | ٢٦٨/٩، ٢٨٦، ٤٤٣، ٣٤/١٠ |
| «أنكح هذا الغلام ابنتك» | عبد المطلب بن ربيعة ابن الحارث | ٤٤٤/١٣ |
| «أنكحوا الأيامى منكم» | عبد الرحمن البيلمانى | ٤٩٩/١٤ |
| «أنكحى» | أم سلمة | ٥٣٦/١٥ |

| | | |
|---|---|---|
| «انكحى أسامة» | فاطمة بنت قيس | ١٤/١٧٢، ٣٠٨، ٣١٩ |
| «أنكحى أسامة بن زيد» | فاطمة بنت قيس | ١٦/٦٣ |
| «أنهاكم عن قليل ما أسكر كثيره» | سعد بن أبى وقاص وابن عمر | ١٧/٤١٧، ٢١/١٠٩ |
| «أنهاكم عن كل مسكر» | أبو موسى | ١٧/٤٠٢ |
| «أنهاكم عن النقير والمقير...» | أبو هريرة | ١٧/٤٦٠ |
| «انههن» | عائشة | ٧/٤٥٤ |
| «إن آدم عليه السلام لما أهبطه الله إلى الأرض...» | عبد الله بن عمر | ١٩/٥٨٩، ٥٩٠ |
| «إن آدم لما مرض مرضه الذى مات فيه...» | أبى بن كعب | ٧/٢٥٢، ٢٥٣ |
| «إن أباك أراد أمرا فأدركه» | عدى بن حاتم | ١٥/٦٢ |
| «إن أباك ألب على العرب وفعل وفعل» | ابن عمر | ١٨/٤٥١ |
| «إن أبر البر صلة الولد أهل ود أبيه» | عبد الله بن عمر | ٨/٣٢٩ |
| «إن إبراهيم حرم مكة...» | رافع بن خديج | ١٠/٣٤٣ |
| «إن إبراهيم حرم مكة ودعا لها» | عبد الله بن زيد | ١٠/٣٣٩ |
| «إن إبراهيم خليل الرحمن لم يكذب قط إلا ثلاث كذبات...» | أبو هريرة | ٢١/٥٢ |
| «إن إبراهيم عليه السلام حرم مكة...» | جابر بن عبد الله | ١٠/٣٤٦ |
| «إن إبراهيم عليه السلام حرم مكة» | عباد بن تميم عن عمه | ١٠/٣٤٠ |
| «إن ابن أم مكتوم رجل أعمى» | عائشة | ٣/٧٨ ٧٩ |
| «إن ابن أم مكتوم ينادى بليل» | أنيسة | ٣/٧٧ |
| «إن ابن أم مكتوم يؤذن بليل» | زيد بن ثابت | ٣/٧٩ |
| «إن ابنى هذا سيد...» | أبو بكرة | ١٢/٢٨١، ٢٨٢، ١٣/ ٤٢، ١٧/٢٠ |
| «إن أبواب السماء تفتح حين تزول الشمس...» | أبو أيوب الأنصارى | ٥/٣٠٦ |
| «إن أبى وأباك فى النار» | أنس | ١٤/٣٤١ |
| «إن أبيتم فأعطوا الطريق حقه» | أبو سعيد الخدرى | ١٤/٣٥ |
| «إن أثقل الصلاة على المنافقين...» | أبو هريرة | ٥/٥٠٠ |
| «إن أحب أسمائكم إلى الله عز وجل عبد الله وعبد الرحمن» | ابن عمر | ١٩/٣٩٧ |

| | | |
|---|---|---|
| «إن أحب الضحايا إلى الله أغلاها وأسمنها» | أبو الأسود الأنصارى عن أبيه عن جده | ٢٨٧/١٩ |
| «إن أحب الناس إلى الله يوم القيامة وأقربهم منى مجلسًا إمام عادل...» | أبو سعيد الخدرى | ٢٤٧/٢٠ |
| «إن أحدكم إذا قام فى صلاته...» | أنس بن مالك | ٤٠٠/٤ |
| «إن أحدكم إذا قام يصلى جاءه الشيطان فلبس عليه...» | أبو هريرة | ٥١٠/٤، ٥٦٥ |
| «إن أحدكم يجمع خلقه فى بطن أمه...» | عبد الله بن مسعود | ٥١١/١٥، ٢٨٦/٢١ |
| «إن أحساب أهل الدنيا هذا المال» | بريدة | ١٧٣/١٤ |
| «إن أحسن ما غير به هذا الشيب...» | أبو ذر | ١٦٩/١٥ |
| «إن أحق الشروط أن يوفى...» | عقبة بن عامر | ٥٢٦/١٤، ٥٢٧ |
| «إن أحق ما أخذتم عليه أجرًا...» | ابن عباس | ٢٠٤/٣، ١٣٦/١٢، ١٤/ ٥١٣ |
| «إن أخًا لكم لا يقول الرفث» | أبو هريرة | ١٩٨/٢١ |
| «إن أخاك محبوس بدينه فاقض عنه» | سعد بن الأطول | ٤٢٣/٢٠ |
| «إن أخاكم قد مات فقوموا فصلوا عليه» | عمران بن حصين | ٤٢٦/٧ |
| «إن أخذتها فخذ بها قوسًا من النار» | أبى بن كعب | ١٤٢/١٢ |
| «إن إخوانكم جعلهم الله تحت أيديكم...» | أبو ذر | ١٠٢/١٦ |
| «إن أخوف ما أخاف على أمتى تأخيرهم الصلاة عن وقتها» | أنس بن مالك | ١٦٦/٤ |
| «إن أخياركم أحاسنكم أخلاقًا» | عبد الله بن عمرو | ٢٩/٢١ |
| «إن أربى الربا شتم الأعراض...» | محمد بن عبد الله بن عمرو بن عثمان | ٢٠٤/٢١ |
| «إن الأرض لا تنجس إنما ينجس ابن آدم» | الحسن البصرى | ١٧٣/٥ |
| «إن استلامهما يحطّ الخطايا» | عبد الله بن عمر | ٥٠/١٠ |
| «إن الإسلام لا يحرز لكم ما ليس لكم..» | عطاء بن أبى رباح | ٢٤/١٢ |
| «إن اسمى الذى سمانى به أهلى محمد ﷺ» | ثوبان مولى رسول الله | ٢٤/٢ |
| «إن أسوأ الناس سرقة الذى يسرق صلاته» | أبو هريرة | ٦٣٨/٤ |

| | | |
|---|---|---|
| «إن أشد الناس عتوا الرجل ضرب غير ضاربه» | عائشة | ١٦٩/١٦ |
| «إن أشد الناس عذابا يوم القيامة...» | جبير بن نفير، عائشة | ٢٩/١٥، ٥٨٥/١٦ |
| «إن أشد الناس عند الله عذابا...» | عبد الله بن مسعود | ٢٦/١٥ |
| «إن الأشعريين إذا أرملوا فى الغزو وقل طعام عيالهم...» | أبو موسى | ٣٩٠/٢٠، ٣٩١ |
| «إن أصبت فلانا أو فلانا فأحرقوه بالنار» | حمزة بن عمرو | ٢٤٢/١٨ |
| «إن أصحاب هذه الصور يوم القيامة...» | عائشة | ٢٠/١٥ |
| «إن أصحابكم أصيبوا...» | عائشة | ١٣٩/١٩ |
| «إن أصدق بيت قالته الشعراء...» | أبو هريرة | ١١٨/٢١ |
| «إن أطيب ما أكل الرجل من كسبه...» | عائشة | ٨١/١٦، ٨٣ |
| «إن أعتقتهما فابدئى بالرجل قبل المرأة» | عائشة | ٤٤٦/١٤ |
| «إن أعجل الخير ثوابًا صلة الرحم...» | مكحول | ٨٤/٢٠ |
| «إن أعدى الناس على الله» | على بن حسين | ١٦٨/١٦ |
| «إن أعطيتها إياه جلست لا إزار لك...» | سهل بن سعد | ٤٩٠/١٤، ٥٠٩ |
| «إن أعظم الأمانة عند الله يوم القيامة...» | أبو سعيد الخدرى | ٣٥٠/١٤ |
| «إن أعظم الأيام عند الله يوم النحر..» | عبد الله بن قرط | ٤٨٨/١٠، ٩٢/١٥ |
| «إن أعظم الذنوب عند الله...» | ابن عمر | ٥٠٧/١٤ |
| «إن أعظم الناس أجرًا فى الصلاة...» | أبو موسى | ٥٢٥/٥، ٢١٣/٢٠ |
| «إن أعظم الناس فرية لرجل هجا رجلًا...» | عائشة | ٢٠٤/٢١ |
| «إن أعظم النساء بركة أيسرهن صداقا» | عائشة | ٤٨٩/١٤ |
| «إن الأعمال تعرض يوم الاثنين والخميس» | أسامة بن زيد | ١٠١/٩ |
| «إن أفضل الحديث كتاب الله...» | جابر بن عبد الله | ٣٤١/٦ |
| «إن أفضل الصدقة ما ترك غنى» | أبو هريرة | ٦٢/١٦ |
| «إن أفضل الصلاة بعد المفروضة» | جندب بن سفيان | ٩٥/٩ |
| «إن أفضل الضحايا أغلاها وأنفسها» | أبو الأسد السلمى عن أبيه عن جده | ٢٧٢/١٩ |
| «إن الأقلف لا يترك فى الإسلام حتى يختتن» | على | ٥٠٦/١٧ |
| «إن ألبانها شفاء...» | مليكة بنت عمرو الجعفية | ٥٢٩/١٩ |

| | | |
|---|---|---|
| «إن الله اختار العرب فاختار منهم كنانة» | محمد بن على | ١٦٧/١٤ |
| «إن الله أدخل عليكم فى حجتكم...» | سبرة | ٣٨٤/١٤ |
| «إن الله إذا استودع شيئا حفظه...» | عبد الله بن عمر | ٥٦٩/١٨ |
| «إن الله اصطفى بنى كنانة...» | واثلة بن الأسقع | ١٦٧/١٤ |
| «إن الله اصطفى من قريش بنى هاشم» | واثلة بن الأسقع | ١٦٧/١٤ |
| «إن الله أعتقه حين ملكته» | عبد الله بن عباس | ٣٦١/٢١ |
| «إن الله أعطاكم ثلث أموالكم عند وفاتكم...» | أبو هريرة | ٢٧/١٣ |
| «إن الله أمدكم بصلاة هى خير لكم...» | خارجة بن حذافة | ٢٧٣/٥ |
| «إن الله أمدنى يوم بدر وحنين بملائكة يعتمون هذه العمة» | على | ١٠/٢٠ |
| «إن الله بدأ هذا الأمر نبوةورحمة...» | أبو عبيدة ابن الجراح ومعاذ بن جبل | ٥٦٧/١٦ |
| «إن الله تبارك وتعالى جعل الأهلة مواقيت» | ابن عمر | ٤٢٠/٨ |
| «إن الله تبارك وتعالى حرم عليكم الخمر والميسر» | ابن عباس | ١٣٤/٢١ |
| «إن الله تبارك وتعالى كتب الإحسان على كل شىء...» | شداد بن أوس | ٣١٥/١٩ |
| «إن الله تبارك وتعالى مع الدائن حتى يقضى دينه....» | عبد الله بن جعفر | ٣١٠/١١ |
| «إن الله تبارك وتعالى يعلم أن أحدكما كاذب..» | ابن عباس | ٤٢٥/١٥ |
| «إن الله تبارك وتعالى يغار...» | أبو هريرة | ١٤٩/٢١ |
| «إن الله تبارك وتعالى يقول: هى نارى أسلطها على عبدى المؤمن» | أبو هريرة | ١٨٧/٧، ١٨٨ |
| «إن الله تجاوز عن أمتى ما حدثت به أنفسها...» | أبو هريرة | ١٦٠/٢٠ |
| «إن الله تجاوز لى عن أمتى الخطأ والنسيان...» | ابن عباس | ٣١٣/١٥، ٢٢٧/١٧، ١٥٩/٢٠ |
| «إن الله تعالى تجاوز لأمتى عما حدثت...» | أبو هريرة | ١٢٨/١٥ |

| | | |
|---|---|---|
| «إن الله تعالى قِبَل أحدكم إذا صلى...» | عبد الله بن عمر | ٤٠٤/٤ |
| «إن الله تعالى مهد لك شهادة» | أم ورقة بنت عبد الله بن الحارث | ١١١/٦ |
| «إن الله تعالى يباهى بأهل عرفات» | أبو هريرة | ٤٧٤/٩ |
| «إن الله تعالى يحب ثلاثة ويبغض ثلاثة» | أبو ذر | ٥٢٤/١٨ |
| «إن الله تعالى يحب العطاس...» | أبو هريرة | ٣٩١/٤ |
| «إن الله تعالى يخرج قومًا من النار فيدخلهم الجنة» | جابر | ٢٥/٢١ |
| «إن الله جعل للزرع حرمه غلوة بسهم» | عكرمة | ٢٤٨/١٢ |
| «إن الله جعلنى عبدا كريما...» | عبد الله بن بسر | ٧٥/١٥ |
| «إن الله جل ثناؤه تجاوز لأمتى...» | أبو هريرة | ٤٠٦/١٤ |
| «إن الله جل ثناؤه حرم الخمر وثمنها...» | أبو هريرة | ٣٥٩/١١ |
| «إن الله جل ثناؤه حيى ستير» | يعلى | ١١٠/٢ |
| «إن الله جل ثناؤه سيهدى قلبك ويثبت لسانك...» | على | ٤١٨/٢٠ |
| «إن الله جل ثناؤه قد أعطى...» | أبو أمامة | ٧/١٣ |
| «إن الله جلّ ثناؤه يحدث من أمره ما يشاء» | عبد الله بن مسعود | ٥٧٤/٤ |
| «إن الله جل ثناؤه يلوم على العجز...» | عوف بن مالك | ٥٤٣/٢٠ |
| «إن الله حبس عن مكة الفيل...» | أبو هريرة | ٢٧٢/١٠، ٢٤٥/١٦ |
| «إن الله حرم ثلاثًا ونهى عن ثلاث» | المغيرة بن شعبة | ٥١٧/١١ |
| «إن الله حرم الخمر...» | أبو سعيد | ٣٥٤/١١ |
| «إن الله حرم على - أو: حرم- الخمر والميسر والكوبة» | ابن عباس | ١٣٤/٢١ |
| «إن الله حرم عليكم الخمر والميسر والكوبة» | ابن عباس | ١٠٧/٢١ |
| «إن الله حرم عليكم عقوق الأمهات» | المغيرة بن شعبة | ٥١٧/١١ |
| «إن الله حرم مكة ولم يحرمها الناس...» | أبو شريح الكعبى | ٢٤٤/١٦ |
| «إن الله حيى كريم...» | سلمان الفارسى | ١٥٥/٤ |
| «إن الله خلق الخلق...» | أبو هريرة | ٤٣١/١٣ |
| «إن الله خلق خلقه فى ظلمة...» | عبد الله بن عمرو | ١٠/١٨ |

| | | |
|---|---|---|
| «إن الله ذكى لكم صيد البحر» | حذيفة | ٢٢٦/١٩ |
| «إن الله سيثبت لسانك ويهدى قلبك» | علىّ | ٢٤٠/٢٠ |
| «إن الله صدقك وعذرك» | زيد بن أرقم | ١١٠/١٨ |
| «إن الله طيب لا يقبل إلا الطيب» | أبو هريرة | ٧١/٧ |
| «إن الله عز وجل أبى على لمن قتل مؤمنا...» | عقبة بن مالك الليثى | ١٥٢/١٦ |
| «إن الله عز وجل أبى على من قتل مؤمنا» | عقبة بن مالك | ٣٨٠/١٨ |
| «إن الله عز وجل أحل حلالًا وحرم حرامًا...» | سلمان | ٦١٥/١٩ |
| «إن الله عز وجل اصطفى بنى كنانة...» | واثلة بن الأسقع | ٣٣٨/١٣ |
| «إن الله عز وجل أنزل الداء والدواء...» | أبو الدرداء | ٥٩٢/١٩ |
| «إن الله عز وجل أوحى إلى يحيى بن زكريا فقام فحمد الله...» | الحارث الأشعرى | ٣٦٩/٤ |
| «إن الله عز وجل حرم على الأرض أن تأكل أجساد الأنبياء...» | أوس بن أوس | ٤٥٠/٦ |
| «إن الله عز وجل حرم مكة فلم تحلّ لأحد كان قبلى...» | عبد الله بن عباس | ٣٣٣/١٠ |
| «إن الله عز وجل خلق فى الجنة ريحًا بعد الريح بسبع سنين» | أبو ذر | ١٢٩/٧ |
| «إن الله عز وجل زادكم صلاة...» | أبو سعيد الخدرى | ٢٤٨/٥ |
| «إن الله عز وجل زوى لى الأرض...» | ثوبان | ٥٩٦/١٨ |
| «إن الله عز وجل سيمنع الدين بنصارى...» | عمر | ٢١/١٩ |
| «إن الله عز وجل قال: ﴿يا أيها النبى...﴾» | - | ٢٧٧/١٥ |
| «إن الله عز وجل قال: إن أحب عبادى إلى» | أبو هريرة | ٥٢٧/٨ |
| «إن الله عز وجل قال: من انتدب خارجا...» | أبو مالك الأشعرى | ٥٤٥/١٨ ٥٤٦ |
| «إن الله عز وجل قال: من عادى لى وليا» | أبو هريرة | ٧٢/٧ ، ١٢٦/٢١ |
| «إن الله عز وجل قد أذهب عنكم عبية الجاهلية» | أبو هريرة | ١٧٠/٢١ |
| «إن الله عز وجل قد أعطى كل ذى حق حقه» | أبو أمامة، أنس بن مالك | ٥٣٨/١٢، ٩/١٣ |
| «إن الله عز وجل قد أمدكم بصلاة هى خير لكم...» | خارجة بن حذافة العدوى | ٢٤٧/٥ |
| «إن الله عز وجل قد برأها من ذلك» | عبد الله بن عمرو | ٣٨/١٤ |

| | | |
|---|---|---|
| «إن الله عز وجل قد فضلنى على الأنبياء» | أبو أمامة | ١٧٩/٢ |
| «إن الله عز وجل لم يرض فيها بحكم نبى..» | زياد بن الحارث الصدائى | ٣٠٦/٨، ٣٧٤/١٣ |
| «إن الله عز وجل لم يفرض الزكاة إلا ليطيب بها ما بقى...» | عمر بن الخطاب | ١٥/٨ |
| «إن الله عز وجل لم ينزل داء إلا وضع له شفاء...» | عبد الله بن مسعود | ٥٢٩/١٩ |
| «إن الله عز وجل لو عذب أهل سماواته وأهل أرضه لعذبهم وهو غير ظالم لهم...» | زيد بن ثابت | ٧٤/٢١ |
| «إن الله عز وجل ليبيت القوم بالنعمة» | أبو هريرة | ١١٢/٧ |
| «إن الله عز وجل ليدخل الثلاثة بالسهم الواحد الجنة...» | عقبة بن عامر الجهنى | ٨/٢٠ |
| «إن الله عز وجل مع القاضى ما لم يجر...» | ابن أبى أوفى | ٢٤٦/٢٠ |
| «إن الله عز جل يحب أن تؤتى رخصه كما يكره أن تؤتى معاصيه» | ابن عمر | ١٤١/٦، ١٤٢ |
| «إن الله عز وجل يحب أن تؤتى رخصه كما يحب أن تؤتى عزائمه» | ابن عمر | ١٤١/٦ |
| «إن الله عز وجل يُحدث لنبيه من أمره...» | عبد الله بن مسعود | ٢٦٧/٤ |
| «إن الله عز وجل يخرج قومًا من النار بالشفاعة» | جابر | ٢٦/٢١ |
| «إن الله عز وجل يدخل بالسهم الواحد ثلاثة نفر الجنة...» | عقبة بن عامر | ٧/٢٠، ١٢٣/٢١ |
| «إن الله عز وجل يقول يوم القيامة: أين المتحابون...» | أبو هريرة | ١٧٢/٢١ |
| «إن الله غنى عن نذر أختك...» | ابن عباس | ٢١٨/٢٠ |
| «إن الله فرض على المسلمين حج البيت» | عكرمة | ١٩٧/٩ |
| «إن الله قال لى: أنفق أنفق عليك» | أبو هريرة | ٣٥٦/٨ |
| «إن الله قبض أرواحكم حين شاء وردها حين شاء» | أبو قتادة | ١٦٨/٤ |
| «إن الله قد أعطى كل ذى حق حقه» | أبو أمامة | ٤٣٥/١٢ |

| | | |
|---|---|---|
| «إن الله قد حرم على النار من قال: لا إله إلا الله...» | عتبان بن مالك | ٣٦٧/٢٠ |
| «إن الله قد مده لرؤيته...» | ابن عباس | ٤٢٢/٨ |
| «إن الله قسم لكل إنسان نصيبه من الميراث..» | عمرو بن خارجة | ٨/١٣ |
| «إن الله كتب على ابن آدم حظه من الزنى...» | أبو هريرة | ٣٢/١٤، ٧/٢١ |
| «إن الله كتب الإحسان على كل شيء...» | شداد بن أوس | ٢٦٨/١٦، ٢٣٢/١٨ |
| «إن الله كريم يحب الكرم...» | سهل بن سعد | ٢٨/٢١ |
| «إن الله كريم يحب معالي الأخلاق...» | طلحة بن كريز | ٢٧/٢١ |
| «إن الله لا يستحيي من الحق...» | خزيمة بن ثابت، عبدالله بن سعد | ٧١/٥، ٣٦١/١٤- ٣٦٣ |
| «إن الله لا يصنع بشقاء أختك شيئا...» | ابن عباس | ٢١٩/٢٠، ٢٢٠ |
| «إن الله لا يصنع بمشى أختك إلى البيت شيئا» | عقبة بن عامر الجهنى | ٢١٩/٢٠ |
| «إن الله لا يقبل صلاة حائض إلا بخمار» | عائشة | ٥٨٤/٥ |
| «إن الله لا يقبل صلاة من غير طهور...» | أبو المليح الهذلى عن أبيه | ١٣٠/١ |
| «إن الله لا يقدس أمة لا يأخذ الضعيف حقه من القوى وهو غير متعتع» | أبو سفيان بن الحارث ابن عبد المطلب | ٢٦٤/٢٠ |
| «إن الله لا ينزع العلم انتزاعًا ينتزعه من الناس...» | عبد الله بن عمرو | ٣٤٢/٢٠ |
| «إن الله لغنى عن مشى أختك» | ابن عباس | ٢١٧/٢٠ |
| «إن الله لغنى عن نذرها...» | ابن عباس | ٢١٨/٢٠ |
| «إن الله لم يأمرنا أن نكسو الحجارة والطين» | عائشة | ٣٧/١٥ |
| «إن الله لم يجعل شفاءكم فيما حرم عليكم» | أم سلمة | ٥٩١/١٩ |
| «إن الله لم يرض فيها بقسم ملك مقرب..» | زياد بن الحارث | ٣٧٣/١٣ |
| «إن الله لم ينزل داء إلا أنزل له شفاء» | أبو هريرة | ٥٢١/١٩ |
| «إن الله ليرفع العبد الدرجة...» | أبو هريرة | ٥٨٨/١٣ |
| «إن الله ليزيد الكافر عذابًا ببكاء أهله عليه» | عبد الله بن أبى مليكة | ٥٠٤/٧، ٥٠٥ |
| «إن الله ليسأل العبد يوم القيامة عن كل شيء...» | أبو سعيد الخدرى | ٢٥٣/٢٠ |

| | | |
|---|---|---|
| «إن الله ليلين قلوب رجال...» | عبد الله بن مسعود | ١٩٢/١٣ |
| «إن الله ليملى الظالم...» | أبو موسى | ٤٢/١٢ |
| «إن الله ليؤيد الدين بالرجل الفاجر» | أبو هريرة | ١٢٣/١٨ |
| «إن الله محسان كتب الإحسان على كل شيء...» | شداد بن أوس | ٣١٥/١٩ |
| «إن الله مع القاضى ما لم يجر...» | عبد الله بن أبى أوفى | ٣٩٨/٢٠ |
| «إن الله هو الحكم وإليه الحكم...» | هانئ أبو شريح | ٤٢٩/٢٠ |
| «إن الله هو الخالق القابض الباسط الرازق المسعّر» | أنس | ٤١٢/١١ |
| «إن الله هو السلام...» | عبد الله بن مسعود | ٦٤٦/٣، ٥/٤، ٦١٥ |
| «إن الله هو المسعر القابض الباسط الرازق» | أنس | ٤١١/١١ |
| «إن الله وتر يحب الوتر...» | عبد الله | ٢٤٤/٥ |
| «إن الله ورسوله حرم بيع الخمر...» | جابر بن عبد الله، عبدالله بن عمرو | ٣٥٨/١١، ٥٦٢/١٩ |
| «إن الله ورسوله يصدقانكم ويعذرانكم» | أبو هريرة | ٣٨٢/١٨ |
| «إن الله وضع عن المسافر شطر الصلاة...» | أنس بن مالك | ٥٠٧/٨ |
| «إن الله وضع عن المسافر الصوم وشطر الصلاة» | أنس بن مالك | ١٧٩/٦ |
| «إن الله وكل بالرحم ملكا....» | أنس بن مالك | ٥١٢/١٥ |
| «إن الله وملائكته يصلون على الصف الأول» | البراء بن عازب | ١٦٢/٢١ |
| «إن الله وملائكته يصلون على الذين يَصِلون الصفوف» | عائشة | ٢٤/٦، ٣٠، ٣١ |
| «إن الله وملائكته يصلون على الذين يلون الصف الأول» | البراء بن عازب | ٣٤٨/٣ ٣٤٩ |
| «إن الله وملائكته يصلون على ميامن الصفوف» | عائشة | ٣٠/٦ |
| «إن الله يبسط يده بالليل ليتوب مسيء النهار» | أبو موسى الأشعرى | ٤٨٩/١٦، ١٨/٢١ |
| «إن الله يبعثه يوم القيامة يلبى» | ابن عباس | ٤٥٨/٩ |
| «إن الله يبغض كل جعظرى جواظ...» | أبو هريرة | ٣٨/٢١ |
| «إن الله يحب إذا أنعم على عبد...» | عمران بن الحصين | ٥١٤/٦ |
| «إن الله يُحدث من أمره ما يشاء...» | عبد الله بن مسعود | ٣٠٠/٤ |

| | | |
|---|---|---|
| «إن الله يدخل بالحجة الواحدة ثلاثة نفر الجنة...» | جابر بن عبد الله | ٢٧٨/١٠ |
| «إن الله يرضى لكم ثلاثا ويكره لكم ثلاثا...» | أبو هريرة | ٥٨٢/١٦ |
| «إن الله يرفع بهذا الكتاب أقوامًا...» | عمر | ٦٠١/٥ |
| «إن الله يعذب الذين يعذبون الناس فى الدنيا» | هشام بن حكيم | ٧٧/١٩ |
| «إن الله يعلم أن أحدكما كاذب...» | ابن عباس، ابن عمر | ٤٢٣/١٥، ٤٤٩ |
| «إن الله يقول: أنا ثالث الشريكين...» | أبو هريرة | ٥٧٢/١١ |
| «إن الله ينهاكم أن تحلفوا بآبائكم» | ابن عمر، عمر | ٥٧/٢٠، ٥٨، ٦٠، ٦١ |
| «إن الألى قد بغوا علينا» | البراء بن عازب | ٤٨٢/١٣ |
| «إن أم شريك يدخل عليها إخوتها من المهاجرين..» | فاطمة بنت قيس | ٦٥/١٦ |
| «إن الإمام يكفى من وراءه...» | عمر بن الخطاب | ٥٦١/٤ |
| «إن أمة مسخت فالله أعلم» | ثابت بن وديعة | ٤٦٠/١٩ |
| «إن أمتى تأتى يوم القيامة غرًّا محجلين من آثار الوضوء...» | أبو هريرة | ١٧٤/١ |
| «إن أمثل ما تداويتم به...» | أنس بن مالك | ٥٠٥/١٩ |
| «أن امرأتين أكل أحد ابنيهما الذئب...» | أبو هريرة | ٢٩١/٢١ |
| «إن الأمير إذا ابتغى الريبة فى الناس أفسدهم» | جبير بن نفير وكثير بن مرة وعمرو بن الأسود والمقدام بن معد يكرب وأبو أمامة | ٥٤٠/١٧ |
| «إن أناسا من أمتى يشربون الخمر...» | عائشة | ٤١٣/١٧ |
| «إن أناسًا منكم أروا ليلة القدر» | ابن عمر | ١٦٠/٩ |
| «إن الإنسان إذا قام مع الإمام حتى ينصرف...» | أبو ذر | ٣٢٥/٥ |
| «إن الأنصار قوم فيهم غزل...» | عائشة | ٩٦/١٥ |
| «إن أهل الجاهلية يقولون إن الشمس والقمر لا ينخسفان إلا لموت عظيم» | النعمان بن بشير | ٣٥/٧ |
| «إن أول شىء خلق الله جل ثناؤه القلم...» | ابن عباس | ٧/١٨ |
| «إن أول ما خلق الله القلم...» | عبادة بن الصامت | ٧٤/٢١ |

| | | |
|---|---|---|
| «إن أول ما نبدأ به فى يومنا هذا أن نصلى...» | البراء بن عازب | ١٩/٢٦٠، ٢٧٦، ٣٠٠ |
| «إن أول ما يحاسب به العبد يوم القيامة صلاته» | تميم الدارى | ٤/٦٤٠ |
| «إن أول ما يحاسب الناس به يوم القيامة من أعمالهم الصلاة...» | أبو هريرة | ٤/٦٤٠ |
| «إن أول ما يهراق من دم الشهيد تغفر له...» | سهل بن حنيف | ١٨/٥٣٦ |
| «إن أول من جحد آدم عليه السلام...» | ابن عباس | ٢٠/٤٣٥ |
| «إن أول منسك يومكم هذا الصلاة» | البراء بن عازب | ٦/٥٨٣ |
| «إن أول نسكنا فى يومنا هذا...» | البراء بن عازب | ٦/٦٠٨ |
| «إن أولادكم هبة الله لكم...» | عائشة | ١٦/٨٢ |
| «إن بأرض الحبشة ملكا لا يظلم أحد عنده...» | أم سلمة | ١٨/٢٩ |
| «إن بالمدينة لرجالا....» | جابر | ١٨/٨٢ |
| «إن بالمغرب بابًا مفتوحًا للتوبة...» | صفوان بن عسال | ٢/٣٣٦ |
| «إن بعدكم قومًا يخونون ولا يؤتمنون...» | عمران بن حصين | ٢٠/٣٦٤ |
| «إن بلالًا ينادى بليل...» | عبد الله بن عمر | ٣/٧١ ، ٧٣، ١٩٥ |
| «إن بلالًا يؤذن بليل فكلوا واشربوا... » | أنيسة، عائشة، عبد الله ابن عمر | ٣/٧٢، ٧٦- ٧٨، ٢٠١، ٨/٤٦٩ |
| «إن بنى إسرائيل كان إذا بال أحدهم...» | أبو موسى الأشعرى | ١/٢٨٥ |
| «إن بنى المغيرة استأذنونى...» | المسور بن مخرمة | ١٥/١٥٩ |
| «إن بنى هشام بن المغيرة استأذنونى فى أن ينكحوا ابنتهم علىَّ بن أبى طالب...» | المسور بن مخرمة | ٢١/٣٥٨ |
| «إن البيت الذى فيه الصور لا تدخله الملائكة» | عائشة | ١٥/٢٠ |
| «إن بين الرجل وبين الشرك والكفر ترك الصلاة» | جابر بن عبد الله | ٧/١٣٤ |
| «إن بين يدى الساعة فتنا كقطع الليل المظلم...» | أبو موسى | ١٧/٨١ |
| «إن التجار هم الفجار» | عبد الرحمن بن شبل | ١١/١٥ |
| «إن تفرقكم فى هذه الشعاب...» | أبو ثعلبة الخشنى | ١٨/٤٩٨ |
| «إن تلك امرأة يغشاها أصحابى...» | فاطمة بنت قيس | ١٦/٦٣ |
| «إن ثلاثة فى بنى إسرائيل...» | أبو هريرة | ١٤/٤٣٥ |
| «إن جبريل أتانى فأخبرنى أن بهما خبثًا» | أبو سعيد الخدرى | ٥/٤٧ |

| | | |
|---|---|---|
| «إن جبريل أتانى فبشرنى أنه من مات من أمتى لا يشرك بالله شيئا دخل الجنة» | أبو ذر | ٢١/٢١ |
| «إن جبريل أمرنى أن أكبّر» | عبد الله بن عمر | ١٢٢/١ |
| «إن جبريل أمنى ليعلمكم أن ما بين هذين وقت» | عبد الله بن عمرو | ٣٦/٣، ٣٧ |
| «إن جبريل جاءنى فأخبرنى أن فيهما خبثًا» | أبو سعيد الخدرى | ٤٧/٥ |
| «إن جبريل عليه السلام أخبرنى أن بهما قذرًا» | أبو سعيد الخدرى | ١٣٢/٥ |
| «إن جبريل عليه السلام أخبرنى أن فيها أذًى» | أبو سعيد | ٤٦/٥ |
| «إن جبريل عليه السلام أخبرنى أن فيهما قذرًا» | أنس بن مالك | ٥١/٥ |
| «إن جبريل كان وعدنى أن يلقانى...» | ميمونة زوج النبى ﷺ | ٢٣١/٢، ١٣٠/٥ |
| «إن الجذع من الضأن يفى مما تفى منه الثنية» | مجاشع بن مسعود | ٢٨١/١٩ |
| «إن الجذع من الضأن يوفى...» | مجاشع بن مسعود | ٢٨١/١٩، ٢٨٢ |
| «إن الجمعة واجبة إلا على صبى...» | تميم الدارى | ٢٥٨/٦ |
| «إن الحصى يناشد الذى يخرجه من المسجد» | أبو هريرة | ١١٢/١٠ |
| «إن حقًّا على الله ألا يرفع شيئا من الدنيا إلا وضعه» | أنس بن مالك | ٢٠/٢٠، ٤٧ |
| «إن الحلال بيّن وإن الحرام بيّن...» | النعمان بن بشير | ٢٣٢/١١ |
| «إن الحمد لله نحمده ونستعينه من يهده الله فلا مضل له...» | عبد الله بن عباس | ٣٤٣/٦ |
| «إن الحمد لله نحمده ونستعينه ونستغفره» | ابن شهاب | ٣٤٥/٦ |
| «إن حمزة أخى من الرضاعة» | أم سلمة | ١١/١٦ |
| «إن الحياء والعفاف والعى...» | قرة | ٤٠/٢١ |
| «إن حيضتك ليست فى يدك» | عائشة | ٦٦/٥، ٧٤ |
| «إن الخازن الأمين الذى يعطى ما أمر به...» | أبو موسى الأشعرى | ٣٧٤/٨ |
| «إن خالد بن الوليد بالغميم فى خيل...» | أبو بكر | ١١٦/١٩ |
| «إن الخمر من العصير والزبيب والتمر...» | النعمان بن بشير | ٣٩٦/١٧ |
| «إن خياركم أحسنكم قضاء» | أبو هريرة | ٣٠٣/١١، ٣٨٨ |
| «إن خير عباد الله الذين يراعون الشمس والقمر والنجوم والأظلة» | ابن أبى أوفى | ٧٠/٣ |

| | | |
|---|---|---|
| «إن خيركم من علم القرآن وتعلمه» | عثمان | ٣٤١/٣ |
| «إن الدباغ يحل من الميتة كما يحل الخل من الخمر» | أم سلمة | ٤٤١/١١ |
| «إن دباغه قد ذهب بخبثه» | عبد الله بن عباس | ٤٨/١ |
| «إن دباغها قد طهر...» | عبد الله بن عباس | ٣٣٤/١ |
| «إن دم الحيضة أسود يعرف...» | عروة | ٤٤٥/٢ |
| «إن دماءكم وأموالكم حرام عليكم» | جابر بن عبد الله | ٤٢/١١ |
| «إن دماءكم وأموالكم عليكم حرام...» | جابر بن عبد الله | ٣١٨/٩ |
| «إن الدنيا حلوة خضرة...» | أبو سعيد الخدرى | ١٤٥/٧ |
| «إن الدنيا خضرة حلوة...» | أبو سعيد الخدرى | ٤١/١٤ |
| «إن الدنيا عرض حاضر...» | شداد بن أوس | ٣٤٨/٦ |
| «إن الدنيا كلها متاع...» | عبد الله بن عمرو | ٦/١٤ |
| «إن الدين النصيحة» | أبو هريرة | ٥٨٢/١٦ |
| «إن ذلك لا يحل لى» | أم حبيبة بنت أبى سفيان | ٢٦٠/١٤ |
| «إن ذلك ليس بيدك» | عائشة | ٨٣/٢ |
| «إن الذين يصنعون هذه الصور يعذبون...» | ابن عمر | ٢٦/١٥ |
| «إن الذين يقطعون السدر يصبهم الله...» | عروة | ١٩١/١٢، ١٩٢ |
| «إن الذين يقطعون السدر يصبون فى النار...» | عائشة | ١٩٢/١٢ |
| «إن الربا فى النسيئة» | أسامة بن زيد | ٦٢/١١ |
| «إن ربى حرم على الخمر...» | عبد الله بن عمرو | ١٣٦/٢١ |
| «إن الرجل إذا غرم حدث فكذب ووعد فأخلف» | عائشة | ٣١٤/١١ |
| «إن الرجل تكون له الغنيمة...» | حارثة بن النعمان | ٤٤٦/٦ |
| «إن الرجل ليتكلم بالكلمة من الخير ما يعلم...» | بلال بن الحارث المزنى | ٥٨٩/١٦ |
| «إن الرجل ليُصلى الصلاة ماله منها إلا عشرها...» | عمار بن ياسر | ٣٦٥/٤ |
| «إن الرجل ليعمل أو المرأة بطاعة الله ستين...» | أبو هريرة | ٣٣/١٣ |

| | | |
|---|---|---|
| «إن رجلا أو إن فلانا يخطب فلانة» | ابن عباس وأبو هريرة | ١٣٥/١٤ |
| «أن رجلًا حلف بالله الذى...» | ابن الزبير | ٨٨/٢٠ |
| «أن رجلًا من بنى إسرائيل سأل رجلًا...» | أبو هريرة | ٥٦٣/١١ |
| «إن رجلًا من بنى إسرائيل كان يسلف الناس...» | أبو هريرة | ٣٨٥/٢٠ |
| «إن الرحم معلقة بالعرش...» | عبد الله بن عمرو | ٤٣٣/١٣ |
| «إن الرقى والتمائم والتولة شرك» | عبد الله بن مسعود | ٥٤٦/١٩ |
| «إن الركن والمقام من ياقوت الجنة» | عبد الله بن عمرو | ٥٣٢/٩ |
| «إن الروح إذا قبض تبعه البصر» | أم سلمة | ١٩٦/٧ |
| «إن روح القدس لا يزال يؤيدك ما نافحت...» | عائشة | ١٩٤/٢١ |
| «إن ريح الجنة يوجد من مسيرة مائة عام...» | أبو بكرة | ٤٧٨/١٦ |
| «إن زاهرًا باديتنا ونحن حاضروه» | أنس | ٢٩٥/١٢ |
| «إن زكاة الفطر على كل عبد وحر من المسلمين...» | ابن عمر | ٢٧٩/٨ |
| «إن الزمان قد استدار...» | أبو بكرة | ٢٣٣/١٠ |
| «إن السدس الآخر طعمة» | عمران بن حصين | ٥٣٩/١٢ |
| «إن سياحة أمتى الجهاد فى سبيل الله» | أبو أمامة | ٥٢٧/١٨، ٥٢٨ |
| «إن شر الرعاء الحطمة» | عائذ بن عمرو | ٥٧٤/١٦ |
| «إن الشمس تطلع ومعها قرن الشيطان...» | عبد الله الصنابحى | ٢٠١/٥ |
| «إن الشمس لا تنكسف لموت أحد ولا لحياته» | سيرين | ٤٣/٧ |
| «إن الشمس والقمر آيتان من آيات الله..» | أبو بكرة | ٣٢/٧، ٤٦، ٤٧ |
| «إن الشمس والقمر آيتان من آيات الله...» | أبو مسعود | ٤٥/٧ |
| «إن الشمس والقمر آيتان من آيات الله لا تنخسفان لموت أحد» | جابر بن عبد الله | ٢٣/٧ |
| «إن الشمس والقمر آيتان من آيات الله لا ينخسفان لموت أحد» | عبد الله بن عباس | ٨/٧ |
| «إن الشمس والقمر آيتان من آيات الله لا ينكسفان لموت أحد» | أبو مسعود الأنصارى | ٥/٧ |
| «إن الشمس والقمر آيتان من آيات الله لا ينكسفان لموت أحد» | المغيرة بن شعبة | ٥٦/٧، ٥٧ |

| | | |
|---|---|---|
| «إن الشمس والقمر لا يخسفان لموت أحد» | عائشة | ٤٨/٧ |
| «إن الشمس والقمر لا ينخسفان لموت أحد ولا لحياته» | عبد الله بن عمر | ٤٦/٧ |
| «إن الشمس والقمر لا ينكسفان لموت أحد» | أبو مسعود الأنصارى | ٥/٧، ٦ |
| «إن الشمس والقمر من آيات الله» | عائشة | ٥٣/٧ |
| «إن الشهر تسع وعشرون» | ابن عباس | ٤٦٥/١٣ |
| «إن الشهر يكون تسعا وعشرين» | أنس بن مالك | ٣٨٧/١٥ |
| «إن الشيطان إذا سمع النداء بالصلاة أحال...» | أبو هريرة | ٢١١/٣ |
| «إن الشيطان يأتى أحدكم فينقر عند عجازه...» | أبو هريرة | ٢٨٤/٤ |
| «إن الشيطان يبلغ من ابن آدم» | صفية | ١٩٥/٩ |
| «إن الشيطان يبلغ من الإنسان» | صفية | ١٩٠/٩ |
| «إن الشيطان يخاف منك يا عمر» | بريدة | ٢١٠/٢٠ |
| «إن الشيطان يُهمُّ بالواحد....» | سعيد بن المسيب | ٥٤٤/١٠ |
| «إن صاحبكم تغسله الملائكة...» | عبد الله بن الزبير | ٣١٤/٧، ٣١٥ |
| «إن صاحبكم تغسله الملائكة يعنى حنظلة» | عاصم بن عمر بن قتادة | ٣١٥/٧ |
| «إن صاحبكم قد غل فى سبيل الله» | زيد بن خالد الجهنى | ٣٣٤/١٨ |
| «إن الصائم إذا أكل عنده...» | عمارة بنت كعب | ١٤٢/٩ |
| «إن الصدق يهدى إلى البر...» | عبد الله | ٢٠٩/٢١ |
| «إن صدقة الفطر حق واجب على كل مسلم...» | ابن عباس | ٣٠٢/٨ |
| «إن الصدقة لا تحل لغنى...» | عبد الله بن عمرو | ٣٩٣/١٣ |
| «إن الصدقة لا تحل لغنى ولا لذى مرة سوى...» | أبو هريرة | ٣٩٤/١٣ |
| «إن الصدقة لا تحل لنا...» | أبو رافع | ٤٤٦/١٣ |
| «إن الصدقة لا تنبغى لآل محمد...» | عبد المطلب بن ربيعة ابن الحارث | ٤٤٤/١٣ |
| «إن صدقتك على المسكين صدقة...» | سلمان بن عامر الضبى | ٣٠٧/٨، ٤٣٤/١٣ |
| «إن الصعيد الطيب...» | أبو ذر | ١٥٣/٢ |
| «إن صلاة الأوابين حين ترمض الفصال» | زيد بن أرقم | ٤٨٣/٥ |

| | | |
|---|---|---|
| «إن الصلاة والصيام والذكر تضاعف...» | معاذ بن أنس | ٥٦٨/١٨ |
| «إن صلاتنا هذه لا يصلح فيها شيء من كلام الناس...» | معاوية بن الحكم السلمى | ٢٦٩/٤، ٢٧٢ |
| «إن صليت الضحى ركعتين لم تكتب..» | أبو ذر | ٤٨١/٥ |
| «إن الصيام وضع عن المسافر...» | أنس بن مالك | ٥٠٨/٨ |
| «إن طلاق أم سليم لحوب» | أنس بن مالك | ٢١١/١٥ |
| «إن الطواف بالبيت مثل الصلاة» | ابن عباس | ٥٧٢/٩ |
| «إن طول صلاة الرجل وقصر خطبته مئنة من فقهه...» | عمار | ٣٢٥/٦ |
| «إن طيب الرجال ما وجد ريحه...» | أبو هريرة | ٣٥١/١٤ |
| «إن عاشوراء يوم من أيام الله» | ابن عمر | ٨٨ /٩ |
| «إن العبد إذا سبقت له من الله عز وجل منزلة» | إبراهيم السلمى عن أبيه عن جده | ١٦٣/٧ |
| «إن العبد إذا صلى...» | أنس | ٢٦٢/٢ |
| «إن العبد إذا قام يصلى أتاه ملك... » | على بن أبى طالب | ١١٧/١ |
| «إن العبد إذا قام يصلى أتى بذنوبه...» | عبد الله بن عمر | ٣٧٣/٥ |
| «إن العبد إذا كان على طريقة حسنة من العبادة ثم مرض» | عبد الله بن عمرو | ١٦٣/٧، ١٦٤ |
| «إن العبد إذا نصح لسيده وأحسن...» | ابن عمر | ١١٨/١٦ |
| «إن العبد إذا وضع فى قبره وتولى عنه أصحابه» | أنس بن مالك | ٥٣١/٧ |
| «إن عبد الله إن عبد الله » | مجاهد | ٣٥٧/١٠ |
| «إن العبد ليتكلم بالكلمة...» | أبو هريرة | ٥٨٧/١٦ |
| «إن العبد ليتكلم بالكلمة من رضوان...» | بلال بن الحارث المزنى | ٥٨٨/١٦ |
| «إن العبد لَيُصلى فما يكتب له إلا عشر صلاته والتسع...» | أبو هريرة | ٣٦٦/٤ |
| «إن عبدًا أصاب ذنبًا فقال: يا رب إنى أذنبت ذنبًا فاغفره لى...» | أبو هريرة | ١٦/٢١ |
| «إن العرافة حق...» | - | ٣٢٦/١٣ |

| | | |
|---|---|---|
| «إن عفريتًا من الجن تفلّت على البارحة ليقطع على الصلاة...» | أبو هريرة | ١٧٧/٤ |
| «إن عقل أهل الكتابين نصف عقل المسلمين» | عبد الله بن عمرو | ٣٩٠/١٦ |
| «إن العقل ميراث بين ورثة القتيل على قرابتهم» | عبد الله بن عمرو | ٢٦٢/١٦ |
| «إن على كل إنسان منكم دينارًا...» | عمر بن عبد العزيز | ٣٧/١٩ |
| «إن على كل أهل بيت فى كل عام أضحاة...» | مخنف بن سليم | ٢٥٠/١٩ |
| «إن عليك من الحق أن تعدل بين ولدك..» | النعمان بن بشير | ٣٢٢/١٢ |
| «إن عمار بيوت الله هم أهل الله عز وجل» | أنس بن مالك | ٥٣٢/٥ |
| «إن العمامة حاجزة بين الكفر والإيمان» | على | ١٠/٢٠ |
| «إن العمرة الحج الأصغر» | أبو بكر بن محمد بن عمرو بن حزم عن أبيه عن جده | ٢٨٢/٩ |
| «إن عند كل أذانين ركعتين ما خلا المغرب» | بريدة | ٢٦٣/٥ |
| «إن الغادر ينصب له لواء يوم القيامة...» | ابن عمر، نافع | ٥٦٨/١٦، ١٥٤/١٩، ١٥٥ |
| «إن الغنم من دواب الجنة فامسحوا رغامها...» | أبو هريرة | ١٨٨/٥ |
| «إن الغيرة من الإيمان...» | زيد بن أسلم | ١٤٩/٢١ |
| «إن فصل بين صيامنا وصيام أهل الكتاب...» | عمرو بن العاص | ٥٢٤/٨ |
| «إن فلانا قد تجهز ثم مرض...» | أنس | ٩٥/١٨ |
| «إن فلانا يخطب فلانة» | المهاجر بن عكرمة | ١٣٦/١٤ |
| «إن فلانا يذكر فلانة» | جبير بن حية | ١٣٦/١٤ |
| «إن فلانا يريد فلانة» | المهاجر بن عكرمة | ١٣٦/١٤ |
| «إن فى الجمعة ساعة...» | ابن عمر ، أبو هريرة | ٨/١٨، ٥١٣/١٩ |
| «إن فى الجنة بابًا يقال له الريان» | سهل بن سعد | ١٤٠/٩ |
| «إن فى الجنة غرفة يرى ظاهرها من باطنها» | أبو مالك الأشعرى | ١٢٥/٩ |
| «إن فى الجنة مائة درجة....» | أبو هريرة | ٥٢/١٨، ٥١٩ |
| «إن فى داركم كلبًا» | أبو هريرة | ٢٤٧/٢، ٢٥٣، ٢٥٤ |
| «إن فى الصلاة شغلًا» | عبد الله بن مسعود | ٢٦٦/٤ |
| «إن فى المعاريض لمندوحة عن الكذب» | عمران بن حصين | ٥٧/٢١ |

| | | |
|---|---|---|
| «إن فى هذا المال حقًّا سوى الزكاة...» | فاطمة بنت قيس | ١٨/٨ |
| «إن فيك خصلتين يحبهما الله ورسوله...» | أبو سعيد الخدرى | ٣٠١/٢٠، ٣٧/٢١ |
| «إن فيك خلتين يحبهما الله...» | زارع | ٧٥/١٤ |
| «إن فيك صدقة كثيرة...» | أبو ذر | ٥٨٤/١١ |
| «إن فيك لخلتين يحبهما الله...» | ابن عباس | ٣٠٠/٢٠ |
| «إن القبر أول منازل الآخرة» | عثمان بن عفان | ٤٤٤/٧ |
| «إن قومك قصرت بهم النفقة» | عائشة | ٥٧٩/٩ |
| «إن كذبًا على ليس ككذب على أحد» | المغيرة بن شعبة | ٥٠٠/٧، ٥٠١ |
| «إن كل طائفة تفدى عانيها بالمعروف...» | عمرو بن عوف | ٤٠٢/١٦ |
| «إن الذى حرم شربها حرم بيعها » | ابن عباس | ٣٥٥/١١ |
| «إن الذى يأكل أو يشرب فى آنية الذهب والفضة» | أم سلمة | ٢٢٢/٨ |
| «إن الذى يأكل ويشرب فى آنية الذهب والفضة...» | أم سلمة | ٧٨/١ |
| «إن الذى يجرّ ثوبه من الخيلاء فى الصلاة ليس من الله فى حلٍّ ولا حرام» | عبد الله بن مسعود | ٢٤٥/٤ |
| «إن الذى يجرُّ ثوبه من الخيلاء لا ينظر الله إليه يوم القيامة» | عبد الله بن عمر | ٢١٥/٤ |
| «إن الذى يشرب فى آنية الفضة...» | أم سلمة | ٢٢٢/٨ |
| «إن اللعانين لا يكونون يوم القيامة شفعاء ولا شهداء» | أبو الدرداء | ٣٣/٢١ |
| «إن لك رقابهن وما عليهن...» | عبد الله الهوزنى | ١٠٧/١٩ |
| «إن لك عذرًا أو أرى لك عذرًا» | المغيرة بن شعبة | ٥٦٧/٥ |
| «إن لك على أهلك كرامة...» | أم سلمة | ١٣٩/١٥ |
| «إن لكل أمة أمينا...» | أنس | ٣٥٩/١٣ |
| «إن لكل أمة مجوسًا...» | حذيفة | ٦٩/٢١ |
| «إن لكل شىء خطأ إلا السيف» | النعمان بن بشير | ٢١٣/١٦ |
| «إن لكل شىء شرفا...» | عبد الله بن عباس | ٣٩/١٥ |
| «إن لكل نبى حوارى...» | جابر | ٣٤٨/١٣ |

| | | |
|---|---|---|
| «إن لكل نبى حواريا وحوارى الزبير» | جابر بن عبد الله | ٤٨٦/١٨ |
| «إن لكل نبى دعوة قد دعا بها فى أمته...» | أنس | ٢٤/٢١ |
| «إن لكل نبى دعوة مستجابة...» | أبو هريرة | ١٣٦/١٦، ٢٣/٢١ |
| «إن لكم فى كل جمعة حجة وعمرة...» | سهل بن سعد | ٤٢٦/٦ |
| «إن للزوج من المرأة لشعبة ليست لشىء» | حمنة بنت جحش | ٤٨١/٧ |
| «إن للصلاة أولا وآخرا» | أبو هريرة | ٥٨/٣ |
| «إن للطاعم الشاكر من الأجر مثل ما للصائم الصابر» | أبو هريرة | ١٤٥/٩ |
| «إن لله تسعًا وتسعين اسمًا...» | أبو هريرة | ٥٥/٢٠، ٥٦ |
| «إن لله ما أخذ وله ما أعطى...» | أسامة بن زيد | ٤٧٧/٧ |
| «إن للوضوء شيطانًا يقال له: الولهان» | أبى بن كعب | ١٠٦/٢ |
| «إن لنا طلبة...» | أنس بن مالك | ٣٢٨/١٨ |
| «إن له دسمًا...» | عبد الله بن عباس | ٤٥٨/١، ٤٥٩ |
| «إن له فى الجنة من يتم رضاعه وهو صديق» | البراء بن عازب | ٣٠٠/٧ |
| «إن لهذه الإبل أوابد كأوابد الوحش...» | رافع بن خديج | ٢٠٢/١٩، ٢٠٣، ٢٠٨، ٢٠٩ |
| «إن لهم عليك من الحق...» | النعمان بن بشير | ٣٢٦/١٢ |
| «إن ما بين منبرى وبيتى روضة من رياض الجنة...» | أبو هريرة | ٥٠٨/١٠ |
| «إن الماء طاهر إلا إن تغير ريحه» | أبو أمامة | ٢٧٦/٢ |
| «إن الماء طهور لا ينجسه شىء» | أبو سعيد الخدرى | ٢٦٩/٢ |
| «إن الماء قليل فلا يسبقنى إليه أحد» | أبو الطفيل | ١١٣/١٨ |
| «إن الماء لا يجنب» | ابن عباس | ٨٢/٢، ٢٩٥ |
| «إن الماء لا ينجس» | ابن عباس | ٨٢/٢ |
| «إن الماء لا ينجسه شىء» | أبو سعيد الخدرى، ابن عباس | ٢٧٠/٢- ٢٧٢، ٢٩٥ |
| «إن المتبايعين بالخيار فى بيعهما...» | ابن عمر | ٢٣/١١ |
| «إن المتشبع بما لم يعط كلابس ثوبى زور» | أسماء بنت أبى بكر | ١٥٧/١٥ |
| «إن المدينة حرم آمن...» | أنس بن مالك | ٣٤١/١٠ |

| | | |
|---|---|---|
| «إن المرء إذا قام فى صلاته فإنما يناجى ربه...» | أنس بن مالك | ٤٠٠/٤ |
| «إن المرأة تقبل فى صورة شيطان» | جابر | ٣٦/١٤ |
| «إن المرأة خلقت من ضلع...» | أبو هريرة | ١١٥/١٥ |
| «إن مريم ابنة عمران سألت ربها أن يطعمها...» | أبو أمامة الباهلى | ٢٤٣/١٩ |
| «إن المسألة حرمت إلا فى ثلاث..» | قبيصة بن المخارق | ٥٥٤/١١، ٤١٥/١٣ |
| «إن المسلم إذا أنفق نفقة على أهله...» | أبو مسعود الأنصارى | ٣٢٢/٨ |
| «إن المسلم لا يرث الكافر...» | أسامة بن زيد | ٥٧١/١٢ |
| «إن المصلى مناجٍ ربه...» | البياضى | ٣٧٧/٥ |
| «إن معاذًا قد سن لكم سنة كذلك فافعلوا» | معاذ | ٦١٣/٥، ٦١٤ |
| «إن المفلس من أمتى يأتى يوم القيامة...» | أبو هريرة | ٤٠/١٢ |
| «إن مكة حرمها الله ولم يحرمها الناس...» | أبو شريح العدوى | ٥٣٣/١٣، ١٠٢/١٩ |
| «إن الملائكة تصلى على أحدكم ما دام فى مصلاه...» | أبو هريرة | ٨٨/٤ |
| «إن الملائكة تلعن أحدكم إذا أشار بحديدة...» | أبو هريرة | ١٥٦/١٦ |
| «إن الملائكة كانت تمشى فلم أكن لأركب وهم يمشون» | ثوبان | ٣٣٧/٧ |
| «إن الملائكة لا تحضر جنازة كافر بخير» | عمار بن ياسر | ١٢٥/٢، ٤٠٢/٩ |
| «إن الملائكة لا تدخل بيتا فيه صورة» | أبو طلحة | ٣٤/١٥ |
| «إن الملائكة لا تدخل بيتا فيه كلب ولا تماثيل» | أبو طلحة | ٣٧/١٥ |
| «إن مما أدرك الناس من كلام النبوة إذا لم تستحى فاصنع ما شئت» | أبو مسعود | ٣٠/٢١، ٣١ |
| «إن من إجلال الله عز وجل إكرام ذى الشيبة...» | أبو موسى الأشعرى | ٥٨٣/١٦ |
| «إن من أسلم من المسلمين فله ما للمسلمين...» | ابن عباس | ٣٨/١٩ |
| «إن من أشد الناس عذابا يوم القيامة الذين يشبهون...» | عائشة | ٢٢/١٥ |
| «إن من أشراط الساعة أن يتدافع أهل المسجد لا يجدون إمامًا يصلى بهم» | سلامة بنت الحر | ١٠٧/٦ |

| | | |
|---|---|---|
| «أن من اعتبط مؤمنا قتلا عن بينة فإنه قود...» | عمرو بن حزم | ١٦٤/١٦ |
| «إن من أفضل أيامكم يوم الجمعة» | أوس بن أوس | ٤٥٠/٦ |
| «إن من التمر خمرا وإن من الزبيب خمرا...» | النعمان بن بشير | ٣٩٦/١٧ |
| «إن من شر الناس ذا الوجهين...» | أبو هريرة | ٥٨٦/١٦، ٤٦/٢١ |
| «إن من الشعر حكمة...» | ابن عباس | ٢٠٣/٢١ |
| «إن من الشعر حكمة» | عبد الرحمن بن الأسود، أبى بن كعب | ٢١/ ١٨٩ ، ١٩٠ |
| «إن من الشعر لحكمة» | أبى بن كعب | ٥٠٦/٩ |
| «إن من ضئضئ هذا قوما يقرءون القرآن...» | أبو سعيد الخدرى | ٢٥٧/١٣، ٤٠٧، ٩/١٧ |
| «إن من الظلم مطل الغنى» | أبو هريرة | ٥٤٥/١١، ٥٤٦، ٤٨٣ |
| «إن من عباد الله من لو أقسم على الله لأبره» | أنس | ١٦٢/١٦، ٢٧٨، ٢٧٩ |
| «إن من الغيرة ما يحب الله...» | جابر بن عتيك | ١٦١/١٥، ٥١٠/١٨ |
| «إن من الفطرة...» | ابن عمر | ٤٣٤/٦ |
| «إن من لا يرحم لا يرحم» | أبو هريرة | ٧٠/١٤ |
| «إن من المثلة أن ينذر أن يخرم أنفه...» | عمران بن حصين | ٢٢٢/٢٠ |
| «إن منكم رجالا نكلهم إلى إيمانهم...» | فرات بن حيان | ١٠٣/١٧ |
| «إن منكم منفرين فأيكم أمَّ الناس فليخفف» | أبو مسعود الأنصارى | ٦٤/٦ |
| «إن منهم رجالا نكلهم إلى إيمانهم...» | الفرات بن حيان | ٤٨٤/١٨ |
| «إن الموت فزع فإذا رأيتم جنازة فقوموا لها» | جابر بن عبد الله | ٣٤٧/٧ |
| «إن المؤذنين أطول الناس أعناقًا يوم القيامة» | معاوية بن أبى سفيان | ٢١٢/٣ |
| «إن المؤمن إذا أذنب ذنبًا كانت نكتة سوداء فى قلبه...» | أبو هريرة | ١٦/٢١ |
| «إن المؤمن إذا كان فى صلاته فإنما يناجى ربه...» | أنس بن مالك | ٤٠١/٤ |
| «إن المؤمن لا يلدغ من جحر مرتين...» | سعيد بن المسيب | ٢٢٠/١٨ |
| «إن المؤمن لا ينجس» | حذيفة | ٨٥/٢ |
| «إن المؤمن للمؤمن كالبنيان يشد بعضه بعضًا» | أبو موسى | ٤٤/١٢ |
| «إن المؤمن يجاهد بسيفه ولسانه...» | كعب بن مالك | ١٩٦/٢١، ١٩٧ |
| «إن الميت ليعذب ببعض بكاء أهله عليه» | عبد الله بن أبى مليكة | ٥٠٤/٧ |

| | | |
|---|---|---|
| «إن الميت ليعذب ببكاء أهله» | عبد الله بن أبى مليكة | ٥٠٤/٧ |
| «إن الميت ليعذب ببكاء الحى» | عبد الله بن عمر | ٥٠١/٧ |
| «إن الميت يبعث فى ثيابه التى يموت فيها» | أبو سعيد الخدرى | ١٩٥/٧ |
| «إن الميت يعذب بالنياحة عليه فى قبره» | عمر بن الخطاب | ٤٩٨/٧ |
| «إن الميت يعذب ببكاء أهله عليه» | عمر بن الخطاب | ٤٩٩/٧ |
| «إن الميت يعذب ببكاء الحى» | عمر بن الخطاب، أبو هريرة | ٤٩٩/٧، ٥٠٠، ١٥٠/٢٠ |
| «إن الميتة ليست بأحل من النهبة» | رجل من الأنصار | ٢٠٧/١٨ |
| «إن الناس إذا رأوا الظالم ثم لم يأخذوا على يديه...» | أبو بكر الصديق | ٢٥٦/٢٠ |
| «إن الناس قد صلّوا وناموا...» | أنس بن مالك | ٥٥/٣، ٩٦/٤ |
| «إن ناسا من أمتى يشربون الخمر...» | - | ٤١٦/١٧ |
| «إن ناسًا من الجاهلية كانوا يقولون إذا كسف واحد منهما...» | النعمان بن بشير | ٣٤/٧ |
| «إن ناسًا يزعمون أن الشمس والقمر لا ينكسفان إلا لموت عظيم» | النعمان بن بشير | ٣٤/٧ |
| «إن النبى لا يورث» | حذيفة | ١٣١/١٣ |
| «إن نبيا من الأنبياء أعجبه كثرة قومه...» | صهيب | ٥٠١/١٨ |
| «إن النذر لا يقرب من ابن آدم شيئا...» | أبو هريرة | ٢١١/٢٠، ٢١٢ |
| «إن النذر نذران...» | ابن عباس | ١٩٤/٢٠ |
| «إن نملة قرصت نبيًا من الأنبياء» | أبو هريرة | ٣٩٨/١٠ |
| «إن النهبة ليست بأحل من الميتة» | رجل من الأنصار | ٢٠٧/١٨ |
| «إن هاتين الصلاتين تُحَوَّلان عن وقتهما فى هذا المكان...» | عبد الله بن مسعود | ٨٦/١٠ |
| «إن هاتين الصلاتين من أثقل...» | أبى بن كعب | ٥١٧/٥، ٥٣٧ |
| «إن الهجرة شأنها شديد...» | أبو سعيد الخدرى | ٥١/١٨ |
| «إن هذا اخترط سيفى وأنا نائم...» | جابر بن عبد الله | ١٨٥/١٣ |
| «إن هذا الأمر فى قريش لا يعاديهم فيه أحد...» | معاوية | ٥٠٧/١٦ |

| | | |
|---|---|---|
| «إن هذا أمر كتبه الله عز وجل على بنات آدم...» | عائشة | ٤٠٥/٢، ٥٧١/٩ |
| «إن هذا أمر كتبه الله على بنات حواء» | عائشة | ٤٣/١٠ |
| «إن هذا البلد حرام حرمه الله لم يحل فيه القتل...» | ابن عباس | ٣٨٩/١٢ |
| «إن هذا الدين متين فأوغل فيه برفق...» | جابر بن عبد الله، عبدالله بن عمرو | ٣٩٨/٥، ٣٩٩ |
| «إن هذا الدين يسر...» | أبو هريرة | ٣٩٧/٥ |
| «إن هذا السفر جهد وثقل...» | ثوبان مولى رسول الله ﷺ | ٤٤١/٥ |
| «إن هذا السيف ليس لى ولا لك» | سعد | ١٠١/١٣ |
| «إن هذا شيء كتبه الله على بنات آدم...» | عائشة | ٣٠٣/٩ |
| «إن هذا الطاعون رجز وبقية عذاب عذب به قوم» | سعد بن مالك وخزيمة ابن ثابت وأسامة بن زيد | ١٧٠/٧ |
| «إن هذا قد تبعنا فتأذن له؟» | عقبة بن عمرو | ١٤/١٥ |
| «إن هذا القرآن نزل بحزن...» | سعد بن مالك | ١٦٨/٢١ |
| «إن هذا ليس بالحيضة ولكنها عرق» | عائشة | ٤٩٤/٢ |
| «إن هذا من إخوان الكهان» | أبو هريرة | ٤٠٤/١٦، ٤٢٤ |
| «إن هذا يعنى الطاعون أو السقم رجز...» | أسامة بن زيد | ٤٢٩/١٤ |
| «إن هذا يوم كان يصومه...» | ابن عمر | ٩٢/٩ |
| «إن هذا اليوم يوم عاشوراء» | معاوية بن أبى سفيان | ٩٠/٩ |
| «إن هذه الآيات التى يرسل الله لا تكون لموت أحد» | أبو موسى | ٥٢/٧، ٥٣ |
| «إن هذه السحابة لتستهل بنصر بنى كعب» | مروان بن الحكم والمسور بن مخرمة | ١٦٣/١٩ |
| «إن هذه الصدقة إنما هى أوساخ الناس...» | عبد المطلب بن ربيعة ابن الحارث | ٤٤٥/١٣ |

| | | |
|---|---|---|
| «إن هذه الصلاة عرضت على من كان قبلكم فضيعوها» | أبو بصرة الغفارى | ٢٥٤/٣، ١٩٦/٥ |
| «إن هذه الصلاة لا يصلح فيها شيء من كلام الناس هذا...» | معاوية بن الحكم السلمى | ٥٨٥/٤ |
| «إن هذه القبور مملوءة ظلمة على أهلها» | ثابت | ٤١٨/٧ |
| «إن هذه لرؤيا حق إن شاء الله تعالى» | عبد الله بن زيد بن عبدربه | ١٦٩/٣، ١٧٠ |
| «إن هذه ليست بالحيضة ولكن هذا عرق...» | عائشة | ٤٤٩/٢ |
| «إن هذه المساجد لا تصلح لشيء من هذا البول...» | أنس بن مالك | ٧٧/٥ |
| «إن هذه المساجد لم تتخذ لهذا الخلاء..» | أنس بن مالك | ٧٧/٥ |
| «إن هذه المساجد لم تتخذ لهذا القذر...» | أنس بن مالك | ٢٩٦/٢٠ |
| «إن هذه من ثياب الكفار فلا تلبسها» | عبد الله بن عمرو | ٤٧٩/٩ |
| «إن هذين حرام على ذكور أمتى» | على | ١١٦/٥ |
| «إن هؤلاء الليثيين أتونى يريدون القود...» | عائشة | ٢٣٥/١٦ |
| «إن هؤلاء نزلوا على حكمك» | أبو سعيد الخدرى | ٥٠٢/١١، ٢١١/١٨ |
| «إن الوتر حق فمن شاء أوتر بخمس...» | أبو أيوب الأنصارى | ٤١٤/٥ |
| «إن الولاء لمن أعتق» | عبد الله بن عباس | ٤٤٢/١٤ |
| «إن الولد مبخلة مجبنة محزنة» | يعلى ابن منية | ٦٦/٢١ |
| «إن اليدين تسجدان كما يسجد الوجه» | عبد الله بن عمر | ٥٥٣/٣ |
| «إن اليهود إذا سلم عليكم أحدهم...» | ابن عمر | ٧٠/١٩ |
| «إن اليهود تعق عن الغلام ولا تعق عن الجارية...» | أبو هريرة | ٣٨٤/١٩ |
| «إن اليهود والنصارى لا يصبغون فخالفوهم» | أبو هريرة | ١٦٦/١٥ |
| «أن يوم الثلاثاء يوم الدم وفيه ساعة لا يرقأ» | أبو بكرة | ٥١٢/١٩ |
| «إنا أمة أمية لا نكتب ولا نحسب...» | عبد الله بن عمر | ٥٦٨/٨، ٤٧٨/١٣ |
| «إنا أهل بيت نهينا عن الصدقة...» | ميمون بن مهران مولى النبى ﷺ | ٤٤٧/١٣ |
| «إنا حاملوك على ولد الناقة» | أنس | ٢٢٦/٢١ |

| | | |
|---|---|---|
| «إنا قافلون غدا إن شاء الله» | عبد الله | ١٤٧/١٨ |
| «إنا قد أخذنا من العباس زكاة العام عام الأول» | على بن أبى طالب | ١٠٢/٨ |
| «إنا قد بايعناك فارجع» | الشريد | ٤٣٣/١٤ |
| «إنا قد فقدنا من أدراعك أدرعا» | أناس من آل عبد الله بن صفوان | ٤٠٨/١٣ |
| «إنا كذلك يشدد علينا البلاء ويضاعف لنا الأجر» | أبو سعيد الخدرى | ١٥٧/٧ |
| «إنا كنا قد تعجلنا صدقة مال العباس...» | الحسن بن مسلم | ١٠٢/٨ |
| «إنا كنا نهيناكم عن لحومها أن تأكلوها فوق ثلاث...» | نبيشة | ٣٥٦/١٩ |
| «إنا لا تحل لنا الصدقة» | أبو هريرة | ٤٣٩/١٣ |
| «إنّا لا نأكله؛ إنا حرم» | عبد الله بن عباس | ٣٢٨/١٠ |
| «إنا لا نبيع شيئا من الصدقات حتى نقبضه» | علقمة بن ناجية | ٢٤١/٨ |
| «إنا لا ندرى من أذن منكم فى ذلك...» | مروان بن الحكم والمسور بن مخرمة | ٣٢٣/١٣ |
| «إنا لا ندرى من أذن منكم ممن لم يأذن...» | مروان والمسور بن مخرمة | ٢١٧/١٨ |
| «إنا لا نطعمهم مما لا نأكل» | عائشة | ٤٦١/١٩ |
| «إنا لا نقبل زبد المشركين» | عياض بن حمار | ١٠٨/١٩ |
| «إنا لا نورث» | حذيفة، أبو هريرة | ١٣١/١٣ |
| «إنا لا نورث، ما تركناه صدقة» | مالك بن أوس | ٥٣٠/١٣ |
| «إنا لم نجئ لقتال أحد...» | مروان بن الحكم، المسور بن مخرمة | ١١٧/١٩، ١١٨ |
| «إنا لم نرده عليك؛ إلا أنا حرم» | الصعب بن جثّامة | ٣٢٠/١٠ |
| «إنا لم نقض الكتاب بعد» | مروان بن الحكم، المسور بن مخرمة | ١٢١/١٩ |
| «إنا معاشر الأنبياء أمرنا أن نعجل إفطارنا » | ابن عباس | ٥٣٠/٨ |
| «إنا معاشر الأنبياء أمرنا بثلاث...» | عبد الله بن عمر | ٣٧٢/٣ |
| «إنا نأكل الهدية ولا نأكل الصدقة» | سلمان الفارسى | ٢٠٩/١١، ٣٤٩/١٢ |

| | | |
|---|---|---|
| «إنا نكل ناسا إلى إيمانهم...» | فرات بن حيان | ١٠٣/١٧ |
| «إنا والله لا نولى هذا العمل أحدًا سأله...» | أبو موسى | ٢٨٨/٢٠ |
| «إنك أخى فى دين الله وكتابه وهى لى حلال» | عروة | ٢٥٦/١٤ |
| «إنك إذا فعلت ذلك هجمت...» | عبد الله بن عمرو | ١٢١ /٩ |
| «إنك أرسلت إلى خمسة منا...» | جابر بن عبد الله | ١٤/١٥ |
| «إنك امرؤ فيك جاهلية» | أبو ذر | ١٠١/١٦ |
| «إنك إن اتبعت عورات الناس...» | معاوية | ٥٤٠/١٧ |
| «إنك إن أعطيتها إزارك...» | سهل بن سعد | ١٩٩/١٤ |
| «إنك تأتى قوما أهل كتاب...» | ابن عباس | ٣٧٩/١٣ |
| «إنك تصوم الدهر وتقوم الليل؟» | عبد الله بن عمرو | ١٢١ /٩ |
| «إنك تقدم على قوم أهل كتاب....» | ابن عباس | ٦٨/٨ |
| «إنك تقدم على قوم من أهل الكتاب...» | ابن عباس | ٣٦٣/١٣ |
| «إنك سألتنى هذا السيف...» | سعد | ١٠١/١٣ |
| «إنك ستأتى قوما أهل كتاب...» | ابن عباس | ٥١/٨، ٣٧٥/١٣ |
| «إنك ستجده يصيد البقر» | يزيد بن رومان وعبد بن أبى بكر | ١٨/١٩ |
| «إنك ستضرب ضربة هاهنا...» | على | ٢٦٤/١٦ |
| «إنك سلّمت آنفًا وأنا أصلى...» | جابر بن عبد الله | ٢٩٤/٤ |
| «إنك لا تستطيع ذلك يومك هذا...» | عمرو بن عبسة السلمى | ٢٠٢/٥ |
| «إنك لست منهم» | عبد الله بن عمر | ٢٥٠ /٤ |
| «إنك لعلك أن تبقى حتى ينتفع بك قوم...» | سعد بن أبى وقاص | ٢٥/١٣ |
| «إنك لن تخلف بعدى...» | سعد بن أبى وقاص | ٢٥/١٣، ٦٠/١٨ |
| «إنك لن تخلف فتعمل عملا تبتغى به وجه الله...» | سعد بن أبى وقاص | ٢٣/١٣ |
| «إنك لن تخلف فتعمل عملا صالحا إلا...» | سعد بن أبى وقاص | ٢٢/١٣ |
| «إنك لن تدع شيئا اتقاء الله إلا أبدلك الله به ما هو خير منه» | رجل من الأعراب | ٢٣٥/١١ |
| «إنك لن تنفق نفقة إلا أجرت فيها...» | سعد بن أبى وقاص | ٢٥/١٣ |
| «إنك والله لا تأمنون عندى إلا بعهد...» | رجل من الصحابة | ١٥٩/١٩ |

| | | |
|---|---|---|
| «إنكم إن أقمتم الصلاة...» | يزيد بن عبد الله بن الشخير | ١٣٥/١٣ |
| «إنكم تدعون يوم القيامة بأسمائكم...» | أبو الدرداء | ٣٩٨/١٩ |
| «إنكم تفتنون فى قبوركم كفتنة المسيح» | عائشة | ١٤/٧ |
| «إنكم تلقون عدوكم غدا...» | البراء بن عازب | ٣٢٨/١٣ |
| «إنكم تنتظرون صلاة ما ينتظرها أهل دين غيركم» | عبد الله بن عمر | ٢٥٨/٣ |
| «إنكم توفون سبعين أمة...» | معاوية القشيرى | ١٥/١٨ |
| «إنكم ستجدون بعدى أثرة...» | أنس بن مالك | ٢٥٠/١٣ |
| «إنكم ستحرصون على الإمارة...» | أبو هريرة | ١٠٦/٦، ٢٧١/٢٠ |
| «إنكم سترون بعدى أثرة فاصبروا...» | أسيد بن حضير، أنس | ٥٦٦/١٦، ٣٨٩/٢٠ |
| «إنكم سترون ربكم كما ترون هذا القمر...» | جرير بن عبد الله | ٩/٣ |
| «إنكم ستفتحون أرضا يذكر فيها القيراط...» | أبو ذر | ٧٩/١٩ |
| «إنكم ستلقون بعدى أثرة شديدة...» | أنس بن مالك | ٤٠٦/١٣ |
| «إنكم شكوتم جدب دياركم واستئخار المطر عن إبان زمانه» | عائشة | ٨١/٧ |
| «إنكم قد دنوتم من عدوكم...» | أبو سعيد الخدرى | ٥٤٣/٨ |
| «إنكم لا تستطيعون» | أبو هريرة | ٥١٦/١٨ |
| «إنكم لا تستطيعونه» | أبو هريرة | ٥١٦/١٨ |
| «إنكم لاقون اليهود غدا...» | ابن عمر | ٦٩/١٩ |
| «إنكم لعلكم تقاتلون قوما وتظهرون عليهم...» | رجل من جهينة | ٧٤/١٩ |
| «إنكم لن تزالوا فى صلاةٍ ما انتظرتموها» | أبو سعيد | ٢٦٠/٣، ٢٦١ |
| «إنكم لن تزالوا فى الصلاة ما انتظرتموها» | أبو سعيد | ٥٦/٣ |
| «إنكم مصبحو عدوكم...» | أبو سعيد الخدرى | ٥٤٣/٨ |
| «إنكم مصيبون ومنصورون ومفتوح لكم..» | ابن مسعود | ٢٤٩/٦، ٢٦٧/٢٠ |
| «إنكما ستجدان بمكان كذا وكذا امرأة... » | عمران بن حصين | ٩٤/١ |
| «إنكما لستما بأقوى على المشى منى» | عبد الله بن مسعود | ٥٤٨/١٠ |
| «إنكن تكثرن الشكاة وتكفرن العشير» | جابر بن عبد الله | ٥٨٤/٦ |

| | | |
|---|---|---|
| «إنكن لأنتن صواحب يوسف...» | عائشة | ٥٧٨/٥ |
| «إنما الآيات تخويفًا يخوف الله بها عباده» | قبيصة الهلالى | ٣٦/٧ |
| «إنما أتألفهم» | أبو سعيد | ٢٥٧/١٣، ٩/١٧ |
| «إنما أخاف عليكم بعدى ما يفتح عليكم من زهرة الدنيا وزينتها» | أبو سعيد | ٢٩٩/٦ |
| «إنما الأعمال بالنيات...» | عمر بن الخطاب | ١٢٧/١، ٤١٣/٩، ١٥/ ٢٦٥ |
| «إنما الأعمال بالنيات» | - | ٧٢/٤، ٥١٩/٨ |
| «إنما الأعمال بالنية...» | عمر بن الخطاب | ٣٧٧/٢، ٣٣٢/٣، ٨/ ١٠٦، ٢٢٩/١٣ |
| «إنما أقضى بينكما فيما لم ينزل على فيه شيء..» | أم سلمة | ٥٢٩/١١ |
| «إنما الإمام جنة يقاتل به...» | أبو هريرة | ١٣١/١٩ |
| «إنما الإمام ليؤتم به فلا تختلفوا عليه...» | أبو هريرة | ٣٤٤/٣، ٥٦٢/٤، ٥/ ٥٧٣ |
| «إنما أمرت بالوضوء إذا قمت إلى الصلاة» | ابن عباس | ١٣١/١، ٤٩٣/٢ |
| «إنما أنا بشر أقضى فيما لم ينزل على فيه شيء برأيى...» | أم سلمة | ٢٦٨/٢١ |
| «إنما أنا بشر أنسى كما تنسون...» | عبد الله بن مسعود | ٥١٠/٤، ٥٣٩ |
| «إنما أنا بشر مثلكم...» | عبد الله بن مسعود | ٤/ ٥٣٨ |
| «إنما أنا بشر وإنكم تختصمون إلى...» | أم سلمة | ٤٢٥/٢٠ ، ٤٤٣ |
| «إنما أنا بشر وإنه يأتينى الخصم...» | أم سلمة | ٢٠/ ٤٢٥ ، ٤٤٤ |
| «إنما أنا بشر وإني اشترطت...» | جابر بن عبد الله | ٥٣٧/١٣ |
| «إنما أنا بشر وإنى كنت جنبًا» | أبو بكرة، أبو هريرة | ٣٥/٥، ٣٦ ، ٦١٥ |
| «إنما أنا لكم مثل الوالد» | أبو هريرة | ٢٧٦/١، ٢٧٧، ٣١٢، ٣٤١ |
| «إنما أنت من بنات آدم يصيبك ما أصابهم» | عائشة | ٤٤/١٠ |
| «إنما بعثت بها إليك لتبيعها...» | عمر بن الخطاب | ٥٢٥/٦ |
| «إنما بعثت لأتمم مكارم الأخلاق» | أبو هريرة | ٢٨/٢١ |

| | | |
|---|---|---|
| «إنما بعثت مبلغا ولم أبعث متعنتا» | عائشة | ٤٦٥/١٣ |
| «إنما بقاؤكم فيما سلف قبلكم...» | عبد الله بن عمر | ١١٨/١٢ |
| «إنما بنو المطلب وبنو هاشم شيء واحد» | جبير بن مطعم | ٢٦١/١٣، ٤٤٣ |
| «إنما بنو هاشم والمطلب شيء واحد» | سعيد بن المسيب | ٦٧٦/٣، ٦٧٧ |
| «إنما بنو هاشم وبنو المطلب شيء واحد» | جبير بن مطعم | ٢٦٣/١٣، ٢٦٤، ٢٦٧ |
| «إنما تشد الرحال إلى ثلاثة مساجد...» | أبو سعيد الخدرى | ١٩٥/٥ |
| «إنما جُعل الإمام ليؤتم به...» | أنس بن مالك، عائشة، أبو موسى الأشعرى، أبو هريرة | ٥٢٧/٣، ١٣/٤، ١٤، ٣٠٢، ٤٣٣، ٤٣٤ |
| «إنما جعل الإمام ليؤتم به فإذا ركع فاركعوا» | عائشة | ٥٧٢/٥ |
| «إنما جعل الإمام ليؤتم به فإذا صلى قائمًا» | أبو هريرة | ٥٧٢/٥ |
| «إنما جعل الإمام ليؤتم به فإذا كبر فكبروا» | أنس بن مالك، أبوهريرة | ٥٧١/٥، ٦١١ |
| «إنما جعل الإمام ليؤتم به فلا تختلفوا عليه» | أنس بن مالك | ٥٤٢/٣ |
| «إنما جُعل الطواف بالبيت والسعى بين الصفا والمروة...» | عائشة | ١٦٥/١٠ |
| «إنما الجمعة على من سمع النداء» | عبد الله بن عمرو | ٢٣٣/٦ |
| «إنما حبب إلى من دنياكم النساء والطيب...» | أنس | ٥٨٦/١٣ |
| «إنما الخير خير الآخرة» | ابن عباس | ٤٣٤/٩ |
| «إنما خيرنى الله فقال: استغفر لهم أولا تستغفر لهم» | عبد الله بن عمر | ٢٤٧/٧ |
| «إنما الدين النصيحة...» | تميم الدارى | ٥٨٣/١٦، ٩٣/٢١ |
| «إنما ذلك شيء يجده أحدكم فى نفسه...» | عمر بن الحكم | ٤٠٤/١٥ |
| «إنما ذلك عرق...» | عائشة | ٤٥٦/٢، ٤٩٥ |
| «إنما ذلك عرق فانظرى» | عائشة، فاطمة بنت أبى حبيش | ٤٥٨/٢، ٤٨٩ |
| «إنما ذلك عرق ولكن دعى...» | عائشة | ٤٤٤/٢ |
| «إنما ذلك عرق وليس بالحيضة» | عائشة | ٤٣٥/٢، ٤٤٣، ٤٤٧، ٤٥٢، ٤٥٣ |

| | | |
|---|---|---|
| «إنما الربا فى النسيئة» | أسامة بن زيد | ١٩٧/١٢، ٦١/١١ |
| «إنما السكنى والنفقة على من كانت له الرجعة» | الشعبى | ٦٩، ٦٨/١٦ |
| «إنما السكنى والنفقة لمن كانت عليها رجعة» | - | ٧١/١٦ |
| «إنما السكنى والنفقة لمن كانت عليها رجعة» | الشعبى | ٦٩/١٦ |
| «إنما الشمس والقمر آيتان من آيات الله» | عبد الله بن عباس | ٤٨، ٤٧/٧ |
| «إنما الشهر تسع وعشرون فلا تصوموا حتى تروه...» | ابن عمر | ٤١٦/٨ |
| «إنما الصدقة فى الحنطة والشعير والتمر والزبيب» | الشعبى | ١٦٥/٨ |
| «إنما الطلاق لمن أخذ بالساق» | ابن عباس | ٣٥٨/١٥ |
| «إنما العشور على اليهود والنصارى...» | حرب بن عبيد الله عن جده أبى أمه، عن أبيه | ٥٥/١٩ |
| «إنما العشور على اليهود والنصارى» | رجل من بكر بن وائل عن خاله | ٥٦/١٩ |
| «إنما العين وكاء السّه...» | على بن أبى طالب | ٣٥٧/١ |
| «إنما الغسل من الماء الدافق» | على | ١٨/٢ |
| «إنما قمت للملك» | أنس بن مالك | ٣٤٩/٧ |
| «إنما كان يجزئك» | عمار | ١٥٧/٢ |
| «إنما كان يكفيك أن تقول هكذا...» | عمار | ١٤٥/٢ |
| «إنما كان يكفيك من ذلك التيمم بالصعيد» | عمار | ١٧٤/٢ |
| «إنما كان يكفيك هذا» | عمار بن ياسر | ١٦٣/٢ |
| «إنما كان يكفيك هكذا» | عمار بن ياسر | ١٤٨، ١٤٣، ١٤٢/٢ |
| «إنما مثل جليس الصالح وجليس السوء كحامل المسك ونافخ الكير...» | أبو موسى | ٤٠٢/١١ |
| «إنما مثل صاحب القرآن كمثل الإبل المعقلة» | عبد الله بن عمر | ٢٧/٥ |
| «إنما مثل المؤمن حين يصيبه الوعك...» | عبد الرحمن بن أزهر | ١٦٣/٧ |
| «إنما مثل هذا مثل الذى يصلى وهو مكتوف» | عبد الله بن عباس | ٥٧٤/٣ |
| «إنما مثلكم ومثل أهل الكتابين قبلكم» | ابن عمر | ١١٧/١٢ |

| | | |
|---|---|---|
| «إنما الناس كإبل مائة...» | ابن عمر | ٦٤/١٨ |
| «إنما النذر ما ابتغى به وجه الله» | عبد الله بن عمرو | ١٧٩/٢٠ |
| «إنما نصر الله عز وجل هذه الأمة بضعيفها» | سعد بن أبي وقاص | ٦٩/٧ |
| «إنما نهيتكم عن نهبة العساكر...» | معاذ بن جبل | ٩٢/١٥ |
| «إنما نهيتكم من أجل الدافة» | عائشة | ٤٨٧/١٠، ٣٥٨/١٩ |
| «إنما هاشم والمطلب شيء واحد» | جبير بن مطعم | ٢٦٢/١٣ |
| «إنما هذا من إخوان الكهان» | ابن المسيب، أبو هريرة | ٤٠٠/١٦، ٤٢١، ٤٢٣ |
| «إنما هذه ركضة من ركضات الشيطان» | حمنة بنت جحش | ٤٧٣/٢ |
| «إنما هذه لباس من لا خلاق له» | عمر | ٥٤٠/٦ |
| «إنما هلك بنو إسرائيل حين اتخذ هذه نساؤهم» | معاوية بن أبي سفيان | ١٢١/٥ |
| «إنما هلك الذين قبلكم...» | عائشة | ٥٣٥/١٧ |
| «إنما هلك الذين من قبلكم...» | عائشة | ٣٢٧/١٧ |
| «إنما هلكت بنو إسرائيل» | معاوية | ٩١/٩ |
| «إنما هو بمنزلة البصاق أو المخاط» | ابن عباس | ٩٣/٥ |
| «إنما هو عرق وليست بالحيضة» | عائشة | ٢٧/٢ |
| «إنما هو من صيد البحر» | أبو هريرة | ٣٧٤/١٠ |
| «إنما هو منك» | طلق بن على | ٣٩٨/١ |
| «إنما هى أربعة أشهر وعشرا...» | أم سلمة | ٥٦٣/١٥ |
| «إنما هى توبة نبى...» | أبو سعيد الخدرى | ٤٧٧/٤ |
| «إنما هى طُعمة أطعمكموها الله» | أبو قتادة | ٣٠٨/١٠ |
| «إنما هى عرق» | عائشة | ٤٧٢/٢ |
| «إنما هى عروق» | عائشة | ٤٧٢/٢ |
| «إنما هى لذكر الله والصلاة وقراءة القرآن» | أنس بن مالك | ٢٩٦/٢٠ |
| «إنما هى لك أو لأخيك أو للذئب» | زيد بن خالد الجهنى | ٣٧٠/١٢ |
| «إنما هى هذه ثم ظهور الحصر» | أبو هريرة | ٤٤٠/١٠ |
| «إنما الوتر بالليل» | الأغر المزنى | ٢٧٨/٥ |
| «إنما الوضوء على من نام مضطجعا...» | عبد الله بن عباس | ٣٦٤/١ |
| «إنما الولاء لمن أعتق» | - | ٣٧٧/٢١، ٣٨٠ |

| | | |
|---|---|---|
| «إنما يجب الوضوء على من وضع جنبه...» | عبد الله بن عباس | ٣٦٤/١ |
| «إنما يجزئك من ذلك الوضوء» | سهل بن حنيف | ٦٩/٥ |
| «إنما يريد الله ليذهب عنكم الرجس أهل البيت» | عائشة | ٦٧٥/٣ |
| «إنما يريد الله ليذهب عنكم الرجس أهل البيت» | واثلة بن الأسقع | ٦٨٣/٣ |
| «إنما يزرع ثلاثة؛ رجل له أرض...» | رافع بن خديج | ١٦٨/١٢ |
| «إنما يسافر إلى ثلاثة مساجد» | أبو هريرة | ٥٠٠/١٠ |
| «إنما يعمل ذلك الذين لا يعلمون» | على | ٤٠/٢٠ |
| «إنما يغسل بول الأنثى وينضح بول الذكر» | لبابة بنت الحارث | ٨٢/٥ |
| «إنما يغسل بول الجارية وينضح بول الغلام» | المخارق بن سليم الشيبانى (قابوس عن أبيه) | ٨٣/٥ |
| «إنما يفعل ذلك الذين لا يعلمون» | على | ٣٨/٢٠، ٣٩ |
| «إنما يكفى أحدكم أن يحفن على رأسه ثلاث حفنات» | جابر | ٤٨/٢، ٤٩ |
| «إنما يكفيك هكذا» | عمار | ١٨٩/٢ |
| «إنما يلبس الحرير فى الدنيا...» | معاوية | ٥٢٤/٦ |
| «إنما يلبس الحرير من لا خلاق له فى الآخرة» | عمر بن الخطاب | ١١٠/٥ |
| «إنما يلبس هذه من لا خلاق له فى الآخرة» | عمر بن الخطاب | ١٠٤/٥، ٤٢٧/٦، ٥٢٤، ٤٢١/١٨ |
| «إنما يملك الطلاق من أخذ بالساق» | عكرمة | ٣٢٦/١٥ |
| «إنما اليمين على نية المستحلف» | أبو هريرة | ١٧١/٢٠ |
| «إنما ينصر الله هذه الأمة بضعفائهم...» | مصعب بن سعد | ٢٢٧/١٣ |
| «إنه أذى» | أبو هريرة | ٤٢٩/١٤ |
| «إنه أراد قتل صاحبه» | أبو بكرة | ٧٧/١٧ |
| «إنه أعظم للبركة» | أسماء بنت أبى بكر | ٦٥/١٥ |
| «إنه إن كان كما تقولين...» | عكرمة | ٤٦٠/١٤ |
| «إنه بلغنى أن ابن نبيح الهذلى...» | عبد الله بن أنيس | ٤٧٠/٦ |
| «إنه خلق كل إنسان من بنى آدم...» | عائشة | ٣٥٩/٨ |

| | | |
|---|---|---|
| «إنه سيدخل عليكم من هذا الباب...» | جرير بن عبد الله | ٣٦٧/٦، ٣٦٨ |
| «إنه سيكون أمراء يؤخرون الصلاة عن مواقيتها» | أبو ذر | ٤٢٥/٤ |
| «إنه سيكون بعدى أمراء....» | كعب بن عجرة | ٥٩٠/١٦ |
| «إنه سيكون فى أمتى أقوام يكذبون بالقدر» | عبد الله بن عمر | ٧٧/٢١ |
| «إنه سيكون فى هذه الأمة قوم...» | عبد الله بن مغفل | ١٠٥/٢ |
| «إنه سيكون من ذلك ما شاء الله...» | عائشة | ٥٩٩/١٨ |
| «إنه سيلى أمركم قوم يطفئون السنة...» | عبد الله بن مسعود | ١٠١/٦ |
| «إنه عمرو...» | ابن إسحاق | ٤٣١/١٨ |
| «إنه عمك فليلج عليك» | عائشة | ٨/١٦ |
| «إنه قد اجتمع عيدكم هذا والجمعة» | أبو هريرة | ٦٢٣/٦ |
| «إنه قد أذن لكن أن تخرجن لحوائجكن» | عائشة | ٣١/١٤ |
| «إنه قد شهد بدرا...» | على بن أبى طالب | ٤٨١/١٨ |
| «إنه قد شهد بدرًا» | حذيفة | ٨٩/٢١ |
| «إنه قد صدق...» | على بن أبى طالب | ٤٨١/١٨ |
| «إنه كان حريصا على قتل صاحبه» | أبو بكرة | ٧٦/١٧ |
| «إنه كان ينفخ على إبراهيم عليه السلام...» | أم شريك | ٤٣٢/١٩ |
| «إنه لا بأس بالوضوء على الخفين» | سعد بن أبى وقاص | ٣٠٠/٢ |
| «إنه لا تجوز شهادة خصم ولا ظنين...» | طلحة بن عبد الله بن عوف | ٦٤/٢١ |
| «إنه لا يأتى الخير بالشر...» | أبو سعيد | ٢٩٤/٦ |
| «إنه لا يدخل الجنة إلا مؤمن...» | كعب بن مالك | ٩٩/٨ |
| «إنه لا يرد شيئا إنما يستخرج به من الشحيح» | ابن عمر | ٢١١/٢٠ |
| «إنه لا يعذب بالنار إلا ربها» | حمزة بن عمرو | ٢٤٢/١٨ |
| «إنه لا يقتطع رجل مالًا بيمينه إلا لقى الله...» | أشعث بن قيس | ٥٤١/٢٠ |
| «إنه لا ينبغى أن تكون لنبى خائنة الأعين» | سعد بن أبي وقاص | ٤٧١/١٣ |
| «إنه لا ينبغى لنبى أن تكون له خائنة الأعين» | سعد بن أبى وقاص | ١٣٠/١٧ |
| «إنه لبحر» | أنس | ٥٦٠/١٨ |
| «إنه لضعيف عن الجلد» | سهل بن سعد | ٢١١/١٧ |

| | | |
|---|---|---|
| «إنه لم يبق من مبشرات النبوة إلا الرؤيا الصالحة» | عبد الله بن عباس | ٥١٥/٣ |
| «إنه لم يمت» | جابر بن سمرة | ٣٢٥/٧، ٣٢٦ |
| «إنه لم يمنعنى أن أرد عليك» | ابن عباس | ١٣٣/٢ |
| «إنه لم يمنعنى أن أرد عليك» | ابن عمر | ١٦١/٢ |
| «إنه لم يمنعنى أن أرد عليك إلا أني كرهت أن أذكر الله إلا على الطهارة...» | المهاجر بن قنفذ | ٢٧٤/١ |
| «إنه لم يمنعنى أن أردَّ عليك إلا أنى كنت أصلى» | جابر بن عبد الله | ٢٩٥/٤ |
| «إنه لو كان مسلما فأعتقتم...» | عبد الله بن عمرو | ٥٩/١٣ |
| «إنه لو حدث فى الصلاة شيء أنبأتكم به..» | عبد الله بن مسعود | ٥٢٣/٤ |
| «إنه لوقتها لولا أن أشق على أمتى» | عائشة | ٦٠/٣، ٢٥٩ |
| «إنه ليس أحد منهم شاهد...» | أم سلمة | ١٥٩/١٤ |
| «إنه ليس بحيضة ولكنه عرق...» | عائشة | ٤٩٨/٢ |
| «إنه ليس بك على أهلك هوان...» | أم سلمة | ١٣٧/١٥ |
| «إنه ليس بنا ردٌّ عليك...» | الصعب بن جثّامة | ٣٢٢/١٠، ٣٢٣، ١٨/ ٢٦٢ |
| «إنه ليس شيء من الحلال أبغض إلى الله...» | محارب بن دثار | ٢٠٩/١٥ |
| «إنه ليس على أبيك كرب بعد اليوم» | أنس بن مالك | ٢٦٩/٧ |
| «إنه ليس عليك بأس إنما هو أبوك وغلامك» | أنس | ٥٣/١٤ |
| «إنه ليس فى النوم تفريط...» | أبو قتادة | ١٦٨/٤ |
| «إنه ليس لنبى أن يومض» | أبو حمزة | ٢٣٤/٢٠ |
| «إنه ليس لى أو لنبى أن يدخل بيتا مزوقا» | سفينة أبو عبد الرحمن | ٢٣/١٥ |
| «إنه ليغان على قلبى...» | الأغر المزنى | ٥١١/١٣ |
| «إنه ما تُقُبِّل منها يرفع....» | أبو سعيد الخدرى | ١١٤/١٠ |
| «إنه مسخت أمة من بنى إسرائيل...» | عبد الرحمن ابن حسنة | ٤٦٠/١٩ |
| «إنه من علم الرمى ثم تركه فليس منا» | عقبة بن عامر | ٦/٢٠ |
| «إنه من قدر الله» | أبو أبى خزامة | ٥٤٣/١٩ |
| «إنه من نور الإسلام» | عبد الله بن عمرو | ١٧٣/١٥ |
| «إنه من يستغن أغناه الله...» | أبو سعيد الخدرى | ٤٢٥/١٣ |

| | | |
|---|---|---|
| «إنه وجد فيكم قتيل بين أبياتكم فدوه» | عبد الرحمن بن بجيد | ٤٤٤/١٦ |
| «إنه يشب الوجه فلا تجعليه إلا بالليل...» | أم سلمة | ٥٧٥/١٥ |
| «إنه ينتنه» | عروة | ٨٢/١٥ |
| «إنها ابنة أبي بكر» | عائشة | ١٣٢/١٥ |
| «إنها ابنة أخي من الرضاعة» | البراء | ٩٧/١٦ |
| «إنها ابنة أخي من الرضاعة» | علي | ١٠/١٦ |
| «إنها أيام أكل وشرب ولا يدخل الجنة إلا مؤمن» | بشر بن سحيم | ١١٧/٩ |
| «إنها حرام من يومكم هذا إلى يوم القيامة...» | سبرة | ٣٨٣/١٤ |
| «إنها حرم آمن» | سهل بن حنيف | ٣٤٥/١٠ |
| «إنها ستفتح لكم أرض الأعاجم...» | عبد الله بن عمرو | ١٦٣/١٥ |
| «إنها ستكون أثرة وأمور تنكرونها» | عبد الله بن مسعود | ٥٦٠/١٦ |
| «إنها ستكون عليكم أئمة تعرفون منهم...» | أم سلمة | ٥٦٢/١٦ |
| «إنها ستكون فتن ثم تكون فتنة...» | أبو بكرة | ٧٩/١٧ |
| «إنها ستكون فتنة...» | أبو هريرة | ٧٨/١٧ |
| «إنها ستكون هنات وهنات...» | عرفجة | ٥/١٧ |
| «إنها صلاة اليهود» | عبد الله بن عمر | ٦٤١/٣ |
| «إنها لا تتمُّ صلاة أحدكم حتى يسبغ الوضوء كما أمر الله» | رفاعة بن رافع | ١٣٦/١ |
| «إنها لا تحصنك» | كعب بن مالك | ١٦٧/١٧ |
| «إنها لا تحل لي...» | علي | ٥٧٦/١٣ |
| «إنها لا تحل لي؛ إنها ابنة أخي من الرضاعة» | ابن عباس | ٩/١٦ |
| «إنها لا تصلح لي؛ إنها ابنة أخي من الرضاعة» | ابن عباس | ١٠/١٦ |
| «إنها لا هجرة» | عبد الرحمن بن صفوان | ٩٧/٢٠ |
| «إنها لرؤيا حق إن شاء الله تعالى» | عبد الله بن زيد | ١٠٠/٣، ١٠١، ١٩٦، ١٩٧ |
| «إنها ليست بالحيضة إنما هو عرق...» | عائشة | ٢٨/٢، ٤٤٨ |
| «إنها ليست بحيضة ولكنها ركضة » | عائشة | ٤٩٧/٢ |

| | | |
|---|---|---|
| «إنها ليست بدواء ولكنها داء» | وائل بن حجر | ٥٨٩/١٩ |
| «إنها ليست بنجس إنها من الطوافين» | عائشة، أبو قتادة | ٢٣٧/٢، ٢٤١ |
| «إنها ليست بنجس هى كبعض أهل البيت» | عائشة | ٢٤١/٢ |
| «إنها ليست بنجسة إنما هى من الطوافين» | أبو قتادة | ٢٣٩/٢ |
| «إنها موجبة» | عبد الله بن عباس | ٤٦١/١٥ |
| «إنها مؤمنة فأعتقها» | معاوية بن الحكم | ١٤٨/٢٠ |
| «إنهم لم يفارقونا فى جاهلية ولا إسلام» | جبير بن مطعم | ٢٦٣/١٣، ٣٤٠ |
| «إنهم لم يفارقونى فى جاهلية ولا إسلام» | - | ٣٤١/١٣ |
| «إنهم ليبكون عليه وإنه ليعذب» | عائشة | ١٥١/٢٠ |
| «إنهم ليبكون عليها وإنها لتعذب فى قبرها» | عائشة | ٥٠٢/٧، ٥٠٣، ٥٠٦ |
| «إنهم ليبكونه وإنه ليعذب» | عائشة | ٥٠٢/٧ |
| «إنهم يوفّرون سبالهم...» | عبد الله بن عمر | ٤٣١/١ |
| «إنهما آيتان من آيات الله...» | عائشة | ٣١٤/٤، ٥٩/٧ |
| «إنهما ليعذبان...» | عبد الله بن عباس | ٣١٨/١، ٧٥/٥ |
| «إنهما يوما عيد للمشركين» | كريب (مولى ابن عباس) | ١٣٣/٩ |
| «إنى اتخذت خاتمًا من فضة...» | أنس | ٣٨٠/٢٠ |
| «إنى آتيكم الليلة» | أم سلمة | ١٣٨/١٥ |
| «إنى أحرج عليكم حق الضعيفين اليتيم والمرأة» | أبو هريرة | ٣٩٨/٢٠ |
| «إنى أحرم ما بين لابتى المدينة...» | سعد بن أبي وقاص | ٣٤٣/١٠ |
| «إنى أخاف أن تناموا عن الصلاة» | أبو قتادة | ١٣٥/٣ |
| «أنى أخاف على عقلها» | عبد الله بن عباس | ٣٠٩/٧ |
| «إنى أختار لك الشام...» | عبد الله بن حوالة | ٥٩١/١٨ |
| «إنى أدخلتهما طاهرتين» | جرير بن عبد الله | ٣٢٦/١ |
| «إنى أدخلتهما وهما طاهرتان» | المغيرة | ٣٣٤/٢ |
| «إنى إذا حلفت فرأيت أن غير ذلك أفضل...» | أبو موسى | ١٣٠/٢٠ |
| «إنى إذا خمسته لم أوف لهم بالذى عاهدتهم...» | موسى بن عقبة | ١٤٦/١٩ |
| «إنى أراك تحب الغنم والبادية» | أبو سعيد الخدرى | ١١٦/٣، ١٩٧ |

| | | |
|---|---|---|
| «إنى أراكم تقرءون وراء إمامكم» | عبادة بن الصامت | ٣٢/٤ |
| «إنى أرى ما لا ترون...» | أبو ذر | ٥٠٩/١٣ |
| «إنى استأذنت ربى فى استغفارى لأمى» | بريدة | ٥١٦/٧، ٥١٧ |
| «إنى أشتهى تمر عجوة» | أبو سعيد | ٧٨/١١ |
| «إنى أشهدك أن سريتى هذه...» | ابن عباس | ٣٠٢/١٥ |
| «إنى أظل فيطعمنى ربي ويسقينى» | عبد الرحمن بن أبى ليلى عن رجل من أصحاب النبى ﷺ | ١٢/٩ |
| «إنى أظل يطعمنى ربى ويسقينى» | أنس | ٦٨/٩ |
| «إنى اعتكفت العشر الأول» | أبو سعيد | ١٧٢/٩ |
| «إنى أعطى الرجل وأدع الرجل...» | عمرو بن تغلب | ٤٠٦/١٣ |
| «إنى أمرت بالعفو...» | ابن عباس | ٣٧/١٨ |
| «إنى إنما فعلت ذلك لأتألفهم...» | أبو سعيد الخدرى | ٤٠٧/١٣ |
| «إنى برىء ممن حلق وسلق وخرق» | أبو موسى | ٤٧٢/٧ |
| «أنى ترى ذلك؟» | أبو هريرة | ٤٧٧/١٥ |
| «إنى جعلت للفرس سهمين...» | المقداد بن الأسود | ٢١٢/١٣ |
| «إنى حرمت الظلم على نفسى...»[قدسى] | أبو ذر الغفارى | ٣٩/١٢ |
| «إنى حرمت ما بين لابتى المدينة...» | أبو سعيد الخدرى | ٣٤٤/١٠ |
| «إنى خاطب العشية على الناس...» | عائشة | ٢٣٥/١٦ |
| «إنى خاطب على الناس ومخبرهم برضاكم...» | عائشة | ٢٣٦/١٦ |
| «إنى خرجت إليكم وأنا أريد أن أخبركم...» | عبادة بن الصامت | ١٦١/٩ |
| «إنى خشيت أن يكون عذابًا سلط على أمتى» | عائشة | ١١٩/٧ |
| «إنى خفت أن تكتب عليكم صلاة الليل» | عائشة | ٥٠/٦ |
| «إنى خيرت فاخترت...» | عمر | ١١١/١٧ |
| «إنى دخلت الكعبة ووَددت أنّى لم أكن فعلته....» | عائشة | ٢١٠/١٠ |
| «إنى ذاكر لك أمرا لا عليك ألا تستعجلى..» | عائشة | ٢٧٧/١٥ |
| «إنى رأيت أنى فى درع حصينة...» | ابن عباس | ٤٧٥/١٣ |
| «إنى رأيت الجنة – أو أريت الجنة –...» | عبد الله بن عباس | ٣١١/٤ |

| | | |
|---|---|---|
| «إني رأيت قرن الكبش...» | امرأة من بنى سُليم | ٥/ ١٥٦ |
| «إني رسول الله ولست أعصيه وهو ناصرى» | ابن المبارك | ١٢١/١٩ |
| «إني سألت ربى الشفاعة لأمتي...» | أبو ذر | ٣٨٣/٥ |
| «إني سألت ربى وشفعت لأمتى...» | سعد بن أبي وقاص | ٥٩٨/٤ |
| «إني سميت بنى هؤلاء بتسمية هارون بنيه...» | على | ٢٨٢/١٢، ٥٤٣/١٣ |
| «إني صائم» | عائشة | ٤١٢/٨ |
| «إني صائم فمن شاء...» | معاوية | ٩١/٩ |
| «إني عائذ بالله من ذلك » | عائشة | ١٤/٧ |
| «إني عرضت على الجنة والنار» | جابر بن عبد الله | ١٧/٧ |
| «إني فرطكم وأنا شهيد عليكم» | عقبة بن عامر | ٣١٢/٧ |
| «إني قد أدخلتهما طاهرتين» | المغيرة بن شعبة | ٣٣٤/٢ |
| «إني قد أمرت أن أقرأ على إخوانكم» | عبد الله بن مسعود | ٢٨/١ |
| «إني قد أمرتك على أهل الله عز وجل بتقوى الله عز وجل...» | يعلى بن أمية | ١٦٠/١١ |
| «إني قد أهديت إلى النجاشى أواق من مسك وحلة» | أم كلثوم | ٤٠٣/١١ |
| «إني قد بعثتك إلى أهل الله وأهل مكة...» | ابن عباس | ١٦١/١١ |
| «إني قد خلفت فيكم ما لن تضلوا بعدهما...» | أبو هريرة | ٣٣٣/٢٠، ٣٣٤ |
| «إني قد سقت الهدى وقرنت» | البراء بن عازب | ٣٣٤/٩ |
| «إني قد شهدت على هؤلاء فزملوهم» | ابن أبى صعير | ٣٠٦/٧، ٣٠٧ |
| «إني قلدت هديى ولبدت رأسى» | حفصة | ٣٣٠/٩ |
| «إني قمت» | فضالة بن عبيد | ٤٧٤/٨ |
| «إني كنت أجاور هذه العشر» | أبو سعيد الخدرى | ١٨٤/٩ |
| «إني كنت أريد الصوم» | عائشة | ٤٩/٩ |
| «إني كنت أمرتكم أن تحرقوا فلانا وفلانا...» | أبو هريرة | ٢٤٢/١٨ |
| «إني كنت أنظر إلى علمها فى الصلاة» | عائشة | ٣٧٠/٤ |
| «إني كنت جنبًا فنسيت أن أغتسل» | أبو هريرة | ٣٦/٥ |
| «إني كنت ركعت ركعتى الفجر» | بلال | ٢٥٣/٥ |
| «إني كنت نهيتكم أن تنتبذوا فى الدباء...» | جابر | ٤٦٥/١٧ |

| | | |
|---|---|---|
| «إنى كنت نهيتكم عن زيارة القبور وأكل لحوم الأضاحى فوق ثلاث» | عبد الله بن مسعود | ٥١٨/٧ |
| «إنى كنت نهيتكم عن نبيذ الأوعية...» | عبد الله بن مسعود | ٤٦٧/١٧ |
| «إنى لا أخيس بالعهد...» | أبو رافع | ٤٧٥/١٨ |
| «إنى لا أدرى لعله من القرون الأولى التى مسخت» | جابر | ٤٥٧/١٩ |
| «إنى لا أدرى من أذن منكم ممن لم يأذن...» | مروان بن الحكم والمسور بن مخرمة | ٣٢٤/١٣ |
| «إنى لا أرى طلحة إلا قد حدث به الموت» | حصين بن وحوح | ٢٠٤/٧ |
| «إنى لا أستطيع أن أدور بينكن» | عائشة | ١٢٩/١٥ |
| «إنى لا أصافح النساء...» | أميمة بنت رقيقة | ٥٢٩/١٦ |
| «إنى لا أقول إلا حقًّا» | أبو هريرة | ٢٢٨/٢١ |
| «إنى لأجد طعم لحم شاة ذبحت بغير إذن صاحبها» | رجل من مزينة | ٥٣/١٢ |
| «إنى لأحتسب على الله...» | أبو قتادة | ٧٩/٩ |
| «إنى لأدخل بيتى فأجد التمرة ملقاة...» | أبو هريرة | ٣٧٩/١٢ |
| «إنى لأدخل الصلاة أريد إطالتها...» | أنس | ٢٣/٥ |
| «إنى لأدخل فى الصلاة وأنا أريد أن أطيلها...» | أنس بن مالك | ٢٢/٥ |
| «إنى لأراكم تقرءون خلف إمامكم إذا جهر» | عبادة بن الصامت | ٣٣/٤ |
| «إنى لأرجو أن يرفعك الله...» | عمرو القارى | ٦٢/١٨ |
| «إنى لأعطى رجالا حديث عهدهم بكفر...» | أنس بن مالك | ٤٠٦/١٣ |
| «إنى لأعلم آخر أهل الجنة دخولًا الجنة...» | أبو ذر | ٢٣/٢١ |
| «إنى لأعلم إذا كنت عنى راضية...» | عائشة | ٥٤/٢٠ |
| «إنى لأعلم أرضًا يقال لها: عمان» | ابن عمر | ٢٣١/٩ |
| «إنى لأفعل ذلك أنا وهذه...» | عائشة | ٩/٢ |
| «إنى لأقوم إلى الصلاة وأنا أريد أن أطول فيها...» | أبو قتادة | ٧٣/٦ |
| «إنى لأقوم فى الصلاة وأنا أريد أطيلها...» | أنس | ٧٣/٦ |
| «إنى لأنقلب إلى أهلى فأجد التمرة...» | أبو هريرة | ٢٣٣/١١، ٤٤٠/١٣ |

| | | |
|---|---|---|
| «إني لبدت رأسي وقلدت هديي...» | حفصة | ٣٢٩/٩، ٣٣١، ١٣٢/١٠ |
| «إني لست أنا حملتكم ولكن الله حملكم...» | أبو موسى | ١٢٧/٢٠ |
| «إني لست في ذاكم مثلكم» | أبو هريرة | ٦٦/٩ |
| «إني لست كهيئتكم» | ابن عمر | ٦٥/٩، ٦٨، ٥٣٩/١٣ |
| «إني لست كهيئتكم» | عائشة | ٦٨/٩ |
| «إني لست مثلكم إني أطعم وأسقى» | ابن عمر | ٦٦/٩ |
| «إني لقيت جبريل عليه السلام فبشرني...» | عبد الرحمن بن عوف | ٥٩٩/٤ |
| «أني لك هذا؟» | أبو سعيد | ٦٤/١١ |
| «إني لم أبعث بها إليك لتلبسها...» | معاوية | ٥٢٤/٦ |
| «إني لم أبعث لقطيعة رحم» | حصين بن وحوح | ٩١/١٨ |
| «إني لم أحملكم ولكن الله حملكم...» | أبو موسى | ٧٠/٢٠ |
| «إني لم أكسكها لتلبسها » | عمر بن الخطاب، | ١٠٥/٥، ٤٢٧/٦، /١٨ |
| | عبد الله بن عمر | ٤٢١ |
| «إني لم أمسك عنه منذ اليوم إلا لتوفى بنذرك» | أنس بن مالك | ٢٣٤/٢٠ |
| «إني لم أنه عن البكاء إنما نهيت عن النوح» | عبد الرحمن بن عوف | ٤٩١/٧ |
| «إني لم أومر أن أنقب عن قلوب الناس...» | أبو سعيد الخدرى | ١٠٠/١٧ |
| «إني لما دخلت النخل لقيت جبريل عليه السلام...» | عبد الرحمن بن عوف | ٣٣٤/١٩ |
| «إني لو استقبلت من أمرى...» | جابر بن عبد الله | ٣٠٥/٩، ٣١٧، ٢٧/١٠ |
| «إني ما ماكستك لآخذ جملك...» | جابر بن عبد الله | ٢٤٢/١١ |
| «إني نهيت عن زبد المشركين» | عياض بن حمار | ١٠٨/١٩ |
| «إني نهيت عن قتل المصلين» | أبو هريرة | ١٩٥/١٧ |
| «إني والله إن شاء الله لا أحلف على يمين فأرى...» | أبو موسى | ٧٠/٢٠ |
| «إني والله لا أحلف على يمين فأرى غيرها...» | أبو موسى | ٧١/٢٠، ١٣٠ |
| «إني والله لا يمسك الناس على بشيء...» | عبيد بن عمير الليثى | ٥٧٧/١٣ |
| «إني والله ما آمن يهود على كتابى» | زيد بن ثابت | ٣٧٤/٢٠ |
| «إني والله ما نسيتها...» | أبو موسى | ٦٩/٢٠ |

| | | |
|---|---|---|
| «إنى وجهت وجهى للذى فطر السماوات والأرض...» | جابر | ٣٣٨/١٩ |
| «إنى ومعاذ حول هاتين...» | جابر بن عبد الله | ٦٩/٦ |
| «إنى وهبت لخالتى غلامًا...» | عمر بن الخطاب | ١٤٨/١٢ |
| «اهتف بالأنصار...» | أبو هريرة | ٣٨١/١٨ |
| «اهجهم وجبريل معك» | البراء بن عازب | ١٩٢/٢١ |
| «اهجوا قريشا فإنه أشد عليها من رشق النبل» | عائشة | ١٩٤/٢١ |
| «أهدية أم صدقة» | معاوية بن حيدة | ٤٥٠/١٣ |
| «أهدية أو صدقة؟» | معاوية بن حيدة | ٤٧٠/١٣ |
| «أهدية هو أم صدقة؟» | أبو هريرة | ٣٤٨/١٢، ٤٥٠/١٣ |
| «أهديتم الفتاة؟» | عائشة | ٩٦/١٥ |
| «أهرقه» | جابر | ٤٤٠/١١ |
| «أهرقها» | أنس | ٤٣٩/١١ |
| «أهريقوا على من سبع قِرَب لم تُحلل... » | عائشة | ٩١/١ |
| «أهريقوا ما فيها واكسروا قدورها» | سلمة بن الأكوع | ٦٧/١٢ |
| «أهل الجنة ثلاثة...» | عياض بن حمار | ٢٤٢/٢٠، ٢٤٣ |
| «أهل النار كل جواظ عتل مستكبر» | حارثة بن وهب | ٣٩/٢١ |
| «أهلوا يا آل محمد بعمرة فى حج» | أبو عمران | ٢٩٣/٩ |
| «أهلى بالحج واشترطى أن محلى حيث تحبسنى فأدركته» | عبد الله بن عباس | ٤٢٣/١٠ |
| «أهلى واشترطى أن محلى حيث حبستنى» | عبد الله بن عباس | ٤٢٣/١٠ |
| «أههنا من آل فلان أحد؟» | سمرة | ٤٧٦/١١ |
| «أو اذبح شاة» | كعب بن عجرة | ٢٩٦/٨، ٤٦٥/٩ |
| «أو أربعًا وعشرين ليلة» | حمنة بنت جحش | ٤٧٤/٢ |
| «أو أملك لك أن نزع الله من قلبك الرحمة» | عائشة | ٧١/١٤ |
| «أو تحبين ذلك؟» | أم حبيبة | ١١/١٦ |
| «أو تحت قدمه اليسرى» | طارق بن عبد الله | ٤٠٢/٤ |
| «أو خير من ذلك؛ أؤدى عنك كتابتك...» | عائشة | ٢٤٩/١٨ |
| «أو ذاك» | سلمة بن الأكوع | ٤٧٤/١٩ |

| | | |
|---|---|---|
| «أوسِعوه تَمْلَئوه» | أبو قتادة | ١٥٩/٥ |
| «أو غير ذلك؟» | ربيع بن كعب | ٢٩٩/٥ |
| «أو فعلت؟» | ميمونة بنت الحارث | ٥٠٨/١١ |
| «أو ليس بعمك؟» | عائشة | ٨/١٦ |
| «أو ما قال الله: ﴿من قبل أن يتماسا﴾» | ابن عباس | ٤٠٣/١٥ |
| «أو يأكل ذلك أحد؟!» | عبد الرحمن بن معقل | ٤٤٠/١٩ |
| «أوتحبين ذلك؟» | أم حبيبة بنت أبى سفيان | ٢٥٩/١٤ |
| «أوتر بخمس فإن لم تستطع فبثلاث...» | أبو أيوب | ٤١٤/٥ |
| «أوتروا قبل أن تصبحوا» | أبو سعيد | ٢٧٤/٥ |
| «أوتروا قبل الفجر» | ابن عمر | ٢٧٦/٥ |
| «أوتروا يا أصحاب القرآن إن الله تعالى وتر...» | أبو عبيدة | ٢٤٥/٥ |
| «أوتروا يا أهل القرآن...» | عبد الله بن مسعود، على | ٢٤٤/٥ |
| «أوتيت الكتاب وما يعدله...» | المقدام بن معديكرب | ٤٨٠/١٩ |
| «أوجب أحدهما» | ناسج الحضرمى | ٨١/٢٠ |
| «أوجب طلحة» | الزبير | ١٥٨/١٨ |
| «أوحشى؟» | وحشى | ٣٢٢/١٨ |
| «أوسع من قبل الرأس...» | عاصم بن كليب عن أبيه عن رجل من الأنصار | ٢٨٢/٧ |
| «أوسع من قبل رجليه...» | رجل من الأنصار | ٢٣٦/١١، ٢٣٧ |
| «أوصانى جبريل عليه السلام بالجار...» | عائشة | ٤٨/١٣ |
| «أوصى بك كل مسلم» | عبد الله بن عمرو | ١٩٦/١٦ |
| «أوصى الخليفة من بعدى بتقوى الله...» | أبو أمامة | ٥٧٥/١٦ |
| «أوصيك بتقوى الله...» | أبو هريرة | ٥٢٥/١٠ |
| «أوصيكم بالأنصار فإنهم كرشى وعيبتى» | أنس | ٣٦٠/١٣ |
| «أوصيكم بتقوى الله والسمع والطاعة...» | العرباض بن سارية | ٣٣٤/٢٠ |
| «أوف بنذرك» | ابن عباس | ٢٣٠/٢٠ |

| | | |
|---|---|---|
| «أوف بنذرك» | ابن عمر | ١٨١/٩ |
| «أوف بنذرك» | عمر | ٢٠٩/٢٠ |
| «أوف بنذرك؛ فإنه لا وفاء لنذر فى معصية الله...» | ثابت بن الضحاك | ٢٢٩/٢٠ |
| «أوفعل ذلك؟» | زياد بن الحارث | ٢٧٣/٢٠ |
| «أوفى بنذرك» | عبد الله بن عمرو | ٢١٠/٢٠ |
| «أوَكلُّكم يجد ثوبين؟!» | أبو هريرة | ٢٢٧/٤ |
| «أوَكلُّكم يجد ثوبين؟» | طلق بن على | ٢٤١/٤ |
| «أول ما نسخ من القرآن...» | عبد الله بن عباس | ٣٢٦/٣ |
| «أول ما نهانى عنه ربى عز وجل وعهد إلىّ بعد عبادة الأوثان...» | أم سلمة | ٤٠/٢١ |
| «أول ما يقضى بين الناس فى الدماء» | ابن مسعود | ١٥٠/١٦ |
| «أول الناس يقضى فيه يوم القيامة ثلاثة...» | أبو هريرة | ٥٥٣/١٨ |
| «أول الوقت رضوان الله وأوسط الوقت رحمة الله...» | أبو محذورة | ٢٢٠/٣ |
| «أولا تحبون أن تبيتوا فى خراف...» | أبو هريرة | ٥١٨/١٨ |
| «أولا يجد أحدكم ثلاثة أحجار...؟» | سهل بن سعد | ٣٤٤/١ |
| «أولست قد ابتعته منك؟» | عمارة بن خزيمة عن عمه | ٥٥١/١٣ |
| «أوَلكلُّكم ثوبان؟!» | أبو هريرة | ٢٢٨/٤ |
| «أولم ترى إلى هيئتها...» | أسماء بنت عميس | ٢٤/١٤ |
| «أولم ولو بشاة» | أنس | ٤٩٣/١٤، ٤٩٤، ٥٦٠، ٥٦١ |
| «أوليس بحسبكم أن تكونوا من الخيار؟» | أبو حميد | ٣٦٢/١٣ |
| «أوليس قد ابتعت منك؟» | عمارة بن خزيمة عن عمه | ٤٣٣/٢٠ |
| «أوليس قد جعل الله لكم ما تصدقون؟...» | أبو ذر | ٣٦٠/٨ |
| «أولئك إذا كان فيهم الرجل الصالح بنوا على قبره مسجدًا...» | عائشة | ٥٣٣/٧ |

| | | |
|---|---|---|
| «أولئك خيار الناس الموفون المطيبون» | عائشة | ٣٨٥/١١ |
| «أولئك العصاة» | جابر بن عبد الله | ٥٤٢/٨، ٥٥٧ |
| «أولئك قوم عجلت لهم طيباتهم فى الحياة الدنيا» | عمر بن الخطاب | ٤٩١/١٣ |
| «أولئك الذين نهانى الله عنهم» | عبيد الله بن عدى | ٩٩/١٧ |
| «أولئك الذين نهيت عنهم» | عبد الله بن عدى | ٩٩/١٧ |
| «أوما علمت أنهم قد قدموا؟!» | أبو هريرة | ١٣٣/٤ |
| «أوما علمت ما عاهدت عليه ربى؟» | عائشة | ٥٣٨/١٣ |
| «أومخرجى هم؟» | عائشة | ١٩/١٨ |
| «أومخرجى هم» | محمد بن النعمان بن بشير الأنصارى | ٥٠٧/١٣ |
| «أوهما أعملتاك» | كدير الضبى | ٣٥٢/٨ |
| «أى أُبَيِّئ لا ترموا حتى تطلع الشمس» | عبد الله بن عباس | ١٢٤/١٠ |
| «أى البقاع شر؟» | ابن عمر | ٥٢٩/٥، ٥٠٥/١٣ |
| «أى بلد تعلمونه أعظم حرمة؟» | عبد الله بن عمر | ٣٣/١٢ |
| «أى بنية أكرمى مثواه ولا يقربنك...» | يزيد بن رومان | ٣١٥/١٨ |
| «أى بنية أكرمى مثواه...» | عائشة | ٣٣٢/١٤ |
| «أى ثنية هذه» | ابن عباس | ٤٢٤/٩ |
| «أى خديجة ما لى؟» | عائشة | ١٩/١٨ |
| «أى ذلك شئت يا حمزة» | حمزة بن عمرو | ٥٤٠/٨ |
| «أى رباح ترّب وجهك» | أم سلمة | ٢٧٩/٤ |
| «أى الزيانب؟» | زينب امرأة عبد الله بن مسعود | ٣٢٤/٨ |
| «أى الصلاتين؟» | ابن أم مكتوم | ٥٠٩/٥ |
| «أى الناس أحب إليك؟» | عمرو بن العاص | ١٧٤/٢١ |
| «أى هذه أذات بعل أنت؟» | عمة حصين بن محصن | ١٠٥/١٥ |
| «أى هؤلاء أكثر أخذًا للقرآن» | جابر | ٣٧٤/٧ |
| «إى والذى نفسى بيده إن ذلك لكذلك...» | عبادة | ٢٦٥/٨ |

| | | |
|---|---|---|
| «إى والذى نفسى بيده إنه لفتح» | مجمع بن جارية | ٢٠٧/١٣ |
| «أى يوم أعظم حرمة؟» | عمرو بن الأحوص | ١٧١/١٦ |
| «أى يوم هذا؟» | أبو بكرة | ٥٧٨/٦، ١٤٩/١٠ |
| «أى يوم هذا؟» | عبد الله بن عمر | ١٤٨/١٠ |
| «أيا سعد ألم تسمع ما قال أبو حباب...» | أسامة بن زيد | ٣٥/١٨ |
| «إياك وكرائم أموالهم» | - | ٢٦٢/٨ |
| «إياكم والجلوس بالطرقات» | أبو سعيد الخدرى | ٣٤/١٤، ٢٦٦/٢٠ |
| «إياكم والدخول على النساء» | عقبة بن عامر | ٣٧/١٤ |
| «إياكم والشح فإنه أهلك من كان قبلكم...» | عبد الله بن عمرو | ٣٥٧/٨ |
| «إياكم والظلم؛ فإن الظلم ظلمات يوم القيامة...» | عبد الله بن عمرو | ٢١٠/٢١ |
| «إياكم والظن...» | أبو هريرة | ١٢/١٢، ١٣، ٣١٧/١٤، ٥٣٩/١٧، ١٦٩/٢١ |
| «إياكم والقسامة» | أبو سعيد الخدرى | ٣١٠/١٣ |
| «إياكم والقسامة» | عطاء بن يسار | ٣١٠/١٣ |
| «إياكم والوصال» | أبو هريرة | ٦٦/٩ |
| «إياكم وكثرة الحلف فى البيع....» | أبو قتادة | ١٢/١١ |
| «إياكم ومحقرات الأعمال...» | ابن مسعود | ١٥/٢١ |
| «أيام التشريق أيام أكل...» | أبو مليح | ٦١٠/٦، ٦٢٠ |
| «أيام التشريق أيام أكل وشرب» | نبيشة | ١١٥/٩ |
| «أيام التشريق كلها ذبح» | جبير بن مطعم أبو سعيد أبو هريرة | ٤٨٣/١٠، ٣٦٧/١٩، ٣٦٨ |
| «أيام منى أيام نحر» | - | ٣٧٢/١٩ |
| «إياى أن تتخذوا ظهور دوابكم منابر» | أبو هريرة | ٥٣٧/١٠، ٥٣٨ |
| «ائت حرثك أنى شئت...» | معاوية القشيرى | ٥٢/١٦ |
| «أيتما امرأة سألت زوجها طلاقا...» | ثوبان | ١٩١/١٥ |
| «ائتموا بالإمام إن صلى قاعدًا فصلوا قعودًا» | جابر | ٥٧٤/٥ |
| «ائتنا بمفتاح» | عبد الله بن عمر | ٥٠١/٤ |
| «ائتنى بحجر» | عبد الله بن مسعود | ٣١٦/١، ٣٢٩ |

| | | |
|---|---|---|
| «ائتنى بخبر القوم ولا تذعرهم على» | حذيفة | ٤٨٧/١٨ |
| «ائتنى بشىء أستنجى به...» | عبد الله بن مسعود | ٣٣٠/١ |
| «ائتنى بشىء ليس عليه وسم» | جنادة بن جراد | ٤٥٧/١٣ |
| «ائتنى غدًا أحبوك وأثيبك وأعطيك» | عبد الله بن عمرو | ٤٩٠/٥ |
| «ائتونى أكتب لكم كتابا لا تضلوا بعده أبدا» | ابن عباس | ٨٤/١٩ |
| «ائتونى بأعلم رجلين منكم» | جابر بن عبد الله | ٢١٢/١٧ |
| «ائتونى بطيب أنفس من بقى...» | - | ٤٤٤/١٨ |
| «ائتونى به مجلودا» | ابن عباس | ٢٠٦/١٧ |
| «ائتونى بهؤلاء الفتيان...» | أبو محذورة | ١٠٩/٣ |
| «ائتوه فصلوا فيه...» | ميمونة مولاة رسول الله | ١٦٤/٥ |
| «أيحب أحدكم أن تؤتى مشربته التى فيها طعامه...» | ابن عمر | ٥٧١/١٩ |
| «أيحب أحدكم أن يأتيه رجل وهو يصلى فيبزق أو يتنخع فى وجهه؟...» | أبو هريرة | ٣٩٩/٤ |
| «أيحلف منكم خمسون؟» | سهل بن أبى حثمة | ٥٤٨/٢٠ |
| «أيدع يده فى فيك فتقضمها كقضم الفحل؟!» | صفوان | ٥٥٠/١٧ |
| «الأيدى ثلاثة...» | عبد الله بن مسعود، مالك بن نضلة | ٣٩٥/٨ |
| «ائذن لعشرة» | أنس بن مالك | ٤٣/١٥ |
| «ائذن من حولك» | أنس بن مالك | ١٣٨/١٣ |
| «ائذنوا له فبئس رجل العشير» | عائشة | ٢١٧/٢١ |
| «ائذنى له؛ فإنه عمك تربت يمينك» | عائشة | ٧/١٦ |
| «أيسرك أن توكل إليها؟ انبذها عنك» | عمران بن حصين | ٥٤٩/١٩ |
| «أيسرك أن يسورك الله بهما...» | عبد الله بن عمرو | ٢٠٢/٨ |
| «أيسرك أن يقول الناس:...» | ثوبان | ٢٠٦/٨ |
| «أيسرهن مؤنة» | عائشة | ٤٨٩/١٤ |
| «أيشتكى به جنة؟» | سعيد بن المسيب | ٢٠٤/١٧ |

| | | |
|---|---|---|
| «أيشتكى؟ أبه جنة؟» | - | ١٩٨/١٧، ١٩٩ |
| «أيضرب أحدكم امرأته كما يضرب العبد...؟» | عبد الله بن زمعة | ١٥٠/١٥ |
| «أيعجز أحدكم إذا صلى فأراد أن يتطوع أن يتقدم أو يتأخر» | أبو هريرة | ١٠٢/٤ |
| «أيكم خاف ألا يقوم من آخر الليل فليوتر» | جابر | ٤٤٦/٥ |
| «أيكم خلف الخارج فى أهله وماله بخير...» | أبو سعيد | ١٣٧/١٨، ١٦٣ |
| «أيُّكم دخل؟» | شيخ من الأنصار | ٤١٣/٤ |
| «أيُّكم القارئ؟» | عمران بن حصين | ٢٧/٤ |
| «أيكم الذى ركع دون الصف» | أبو بكرة | ٣٨/٦ |
| «أيكم الذى سمعت صوته ارتفع» | أبو محذورة | ١٩٧/٣ |
| «أيكم الذى سمعت صوته قد ارتفع» | أبو محذورة | ١٠٧/٣ |
| «أيكم مال وارثه أحب إليه من ماله» | عبد الله بن مسعود | ١٤٤/٧ |
| «أيكم يحب أن هذا له بدرهم...؟» | جابر بن عبد الله | ٤٠٦/١ |
| «أيُّكم يحب أن يُعرض الله عنه؟!» | جابر بن عبد الله | ٤٠٦/٤ |
| «أيكم يذكر حين طلع القمر...» | أبو هريرة | ١٦٤/٩ |
| «أيكم يذكر ليلة الصهباوات» | عبد الله بن مسعود | ١٦٤/٩ |
| «أيكما قتله؟» | عبد الرحمن بن عوف | ١٤٢/١٣ |
| «الأيم أحق بنفسها من وليها...» | ابن عباس | ١١٢/١٤، ١٢٠، ١٣١ |
| «الأيم أحق بنفسها والبكر تستأمر» | عائشة | ١٢٢/١٤ |
| «أيما امرأة أدخلت على قوم من ليس منهم...» | أبو هريرة | ٤٥٥/١٥ |
| «أيما امرأة استعطرت...» | أبو موسى الأشعرى | ٤٤١/٦ |
| «أيما امرأة أصابت بخورًا فلا تشهد معنا العشاء الآخرة» | أبو هريرة | ١٢١/٦ |
| «أيما امرأة تقلدت بقلادة من ذهب...» | أسماء بنت يزيد | ٢٠٥/٨ |
| «أيما امرأة زوجها وليان فهى للأول...» | عقبة بن عامر | ١٨٩/١٤ |
| «أيما امرأة زوجها وليان فهى للأول...» | سمرة بن جندب | ١٩١/١٤ |
| «أيما امرأة زوجها وليان فهى للأول» | سمرة أو عقبة | ٩٠/١٤ |
| «أيما امرأة نكحت بغير إذن مواليها...» | عائشة | ١٨٢/١٤ |

| | | |
|---|---|---|
| «أيما امرأة نكحت بغير إذن مولاها...» | - | ٤٣٧ ،٨٣/١٤ |
| «أيما امرأة نكحت بغير إذن وليها...» | عائشة | ١٤٠ ،٨٣/١٤ |
| «أيما امرأة نكحت على صداق أو حباء...» | عبد الله بن عمرو | ٥٢٥/١٤ |
| «أيما امرئ أبر نخلًا ثم باع أصلها...» | ابن عمر | ١٠٨/١١ |
| «أيما امرئ أفلس ثم وجد رجل سلعته...» | أبو هريرة | ٤٦٢/١١ |
| «أيما امرئ باع نخلًا قد أبرت فثمرتها...» | ابن عمر | ١٠٩/١١ |
| «أيما امرئ مسلم أعتق امرأ مسلمًا...» | أبو هريرة | ٣٠٣/٢١ |
| «أيُّما إهاب دُبغ فقد طهر» | عبد الله بن عباس | ٤٧/١ |
| «أيما دار أو أرض قسمت...» | ثور بن يزيد | ٣٩٥/١٨ |
| «أيما رجل ابتاع من رجل بيعة...» | عبد الله بن عمرو | ٣٢/١١ |
| «أيما رجل أدرك سلعته بعينها عند رجل قد أفلس فهو أحق بها من غيره» | أبو هريرة | ٤٦٤/١١ |
| «أيما رجل أعمر عمرى فهو له ولعقبه...» | جابر بن عبد الله | ٣٠٤/١٢ |
| «أيما رجل أعمر عمرى له ولعقبه...» | جابر بن عبد الله | ٣٠٥ ،٣٠٣/١٢ |
| «أيما رجل أفلس فأدرك الرجل ماله بعينه فهو أحق به» | أبو هريرة | ٤٦١/١١ |
| «أيما رجل باع سلعة فأدرك سلعته بعينها..» | أبو هريرة | ٤٧٠/١١ |
| «أيما رجل باع عبدًا فماله للبائع....» | ابن عمر | ٢٠٣/١١ |
| «أيما رجل باع متاعًا فأفلس الذى ابتاعه» | أبو بكر بن عبد الرحمن ابن الحارث | ٤٦٨/١١ |
| «أيما رجل باع مملوكًا له مال فماله لربه الأول» | ابن عمر | ٢٠٤/١١ |
| «أيما رجل باع من رجلين بيعا فهو للأول...» | سمرة بن جندب | ١٩٠/١٤ |
| «أيما رجل باع نخلًا قد أبرت فثمرتها لربها الأول....» | ابن عمر | ٢٠٤ ،٢٠٣/١١ |
| «أيما رجل طلق امرأته ثلاثا...» | سويد بن غفلة | ٢٤٩/١٥ |
| «أيما رجل قال لأخيه: كافر. فقد باء بها أحدهما» | ابن عمر | ٨٩/٢١ |
| «أيما رجل قذف مملوكه وهو برىء...» | أبو هريرة | ٢٧٧/١٧ |
| «أيما رجل كاتب غلامه على مائة أوقية...» | عبد الله بن عمرو | ٤٦٢/٢١ |

| | | |
|---|---|---|
| «أيما رجل كان له نصيب فى عبد فأعتق نصيبه...» | ابن عمر | ٣٢٣/٢١ |
| «أيما رجل كانت له جارية أدبها فأحسن تأديبها...» | أبو موسى | ١١٥/١٦ |
| «أيما رجل كانت له جارية فأدبها...» | أبو موسى | ١٤٩/١٤ |
| «أيُّما رجل مسّ فرجه...» | عبد الله بن عمرو | ٣٩١/١ |
| «أيما رجل مسلم أعتق رجلًا مسلمًا كان فكاكه من النار...» | كعب بن مرة أو مرة بن كعب | ٣٠٥/٢١ |
| «أيما رجل نكح امرأة فدخل بها...» | عبد الله بن عمرو | ٢٥٣/١٤ |
| «أيما رجل ولدت منه أمته فهى معتقة عن دبر منه » | عبد الله بن عباس | ٥٢٨/٢١ |
| «أيما صبى حج ثم بلغ الحنث...» | ابن عباس | ٢٠١/٩، ٢٧٤/١٠ |
| «أيما عبد أبق فقد برئت منه الذمة» | جرير | ١٢٧/١٧ |
| «أيما عبد تزوج بغير إذن مواليه فهو عاهر» | جابر بن عبد الله | ١٤٦/١٤ |
| «أيما عبد كان بين اثنين وأعتق أحدهما نصيبه...» | ابن عمر | ٣١٥/٢١ |
| «أيما عبد كان فيه شرك وأعتق رجل نصيبه...» | عبد الله بن عمر | ٣٤٥/٢١ |
| «أيما قرية أتيتموها...» | أبو هريرة | ١٨٢/١٣، ١٨٣ |
| «أيما قرية افتتحها الله ورسوله...» | أبو هريرة | ٤٥٥/١٨ |
| «أيما مسلم شهد له أربعة بخير أدخله الله الجنة» | عمر بن الخطاب | ٥١٢/٧، ٣٦٦/٢٠ |
| «أيما مسلم ضاف قومًا...» | المقدام | ٢٩٩/٢١ |
| «أيما مسلم كسا ثوبًا على عرى...» | أبو سعيد الخدرى | ٣٥٠/٨ |
| «أيما مكاتب كوتب على ألف أوقية...» | عبد الله بن عمرو | ٤٦١/٢١ |
| «أيما مملوك تزوج بغير إذن سيده فهو عاهر» | جابر بن عبد الله | ١٤٥/١٤ |
| «أيما مملوك كان بين شركاء...» | ابن عمر | ٣١٢/٢١ |
| «الإيمان أن تؤمن بالله وملائكته...» | عمر | ٧١/٢١ |
| «إيمان بالله وجهاد فى سبيل الله » | أبو ذر | ٥٨٣/١١ |
| «إيمان بالله وجهاد فى سبيله» | أبو ذر | ٣٩/١٣، ٢٨٧/١٩، ٢١/ ٣٠٨ |
| «إيمان بالله ورسوله» | أبو هريرة | ٥١٣/١٨ |

| | | |
|---|---|---|
| «الإيمان بالله» | أبو هريرة | ٥٦٣/١٠ |
| «إيمان لا شك فيه وجهاد...» | عبد الله بن حُبشى | ٣٧٠/٥، ٣٣١/٨، ١٨/ ٥٣٨ |
| «الأئمة ضمناء والمؤذنون أمناء» | أبو هريرة | ٢٠٥/٣ |
| «الأئمة من قريش إذا ما حكموا فعدلوا...» | أنس | ٥١٥/١٦ |
| «الأئمة من قريش ولى عليكم حق عظيم..» | أنس | ٥١٤/١٦ |
| «الأئمة من قريش...» | أنس | ٨١/٦ |
| «الأئمة من قريش» | على | ٥١٣/١٦ |
| «الأيمن فالأيمن» | أنس بن مالك | ٨٣/١٥ |
| «أين ابن عملكِ» | سهل بن سعد | ١٧٧/٥ |
| «أين الله؟» | أبو هريرة | ٤٠٦/١٥ |
| «أين الله؟» | عمر بن الحكم | ٤٠٤/١٥، ١٤٧/٢٠ |
| «أين أنا غدا؟ » | عائشة | ٥٧١/١٣، ١٢٩/١٥ |
| «أين أنتم عن بلال؟» | زيد بن أسلم | ١٧٩/١٤ |
| «أين البول الذى كان فى هذا القدح؟» | أميمة | ٥٥٣/١٣ |
| «أين تحب أن أصلي؟» | عتبان بن مالك | ٥٤٩/٥، ٥٩٦ |
| «أين تحب أن أصلى فى بيتك؟» | عتبان بن مالك | ٤٩٤/٥ |
| «أين تحب أن أصلى فى منزلك؟» | عتبان بن مالك | ٩/٦ |
| «أين تحب أن أصلى لك من بيتك؟» | عتبان بن مالك | ٤٩٥/٥ |
| «أين تحب أن أصلى من بيتك؟» | عتبان بن مالك | ٣٦٧/٢٠ |
| «أين درعك الحُطَمِيَّة؟» | ابن عباس | ٢٩٥/٢١ |
| «أين درعك الحُطَمِيَّة...» | على | ٤٨٥/١٤ |
| «أين الرجل آنفا؟...» | أبو هريرة | ٤٨٧/٨ |
| «أين السائل؟» | أبو سعيد | ٢٩٩/٦ |
| «أين السائل؟» | أبو هريرة | ٤٩٢/٨ |
| «أين السائل آنفًا؟...» | أبو هريرة | ٤٨٥/٨ |
| «أين السائل عن الساعة؟» | أبو هريرة | ٣٤٧/٢٠ |
| «أين السائل عن الصلاة؟» | جابر بن عبد الله | ٣٦/٣ |
| «أين السائل عن العمرة...» | يعلى بن أمية | ٤٦٨/٩، ٤٧٠ |

| | | |
|---|---|---|
| «أين السائل عن الوقت...» | أبو موسى الأشعرى | ٣/٣٠- ٣١ |
| «أين السائل عن وقت الصلاة...» | أبو أيوب | ٣/٤٢، ٥١ |
| «أين الصبى؟» | سهل بن سعد | ١٩/٤٠١ |
| «أين على بن أبى طالب» | سهل بن سعد | ١٨/٣٤٩ |
| «أين فلان وفلان؟ قوما فانزلا...» | أبو هريرة | ١٧/٢٠٣ |
| «أين فلانة» | أبو هريرة | ٥/١٦٢، ٧/٣٦٩ |
| «أين كنت يا أبا هريرة؟ » | أبو هريرة | ٢/٨٥ |
| «أين الذى سألنى عن العمرة آنفا؟» | صفوان بن يعلى بن أمية | ١٣/٥٠٤ |
| «أين ما أعطيتنى من العهد والميثاق...» | سعيد بن المسيب | ١٨/٢٢٠ |
| «أين المتألى على الله؟ لا يفعل المعروف» | عائشة | ١١/١٣٤ |
| «أين المتكلم فى الصلاة» | رفاعة بن رافع | ٣/٥٣٧ |
| «أين المحترق؟» | عائشة | ٨/٤٨٣ |
| «أينفعك إن حدثتك؟» | ثوبان | ٢/٢٥ |
| «أينفعك شىء إن حدثتك ؟» | ثوبان | ٢/٢٤ |
| «أينقص إذا ييس؟» | سعد بن مالك | ١١/١٠٠ |
| «أينقص الرطب إذا ييس؟» | سعد بن أبى وقاص | ١١/٩٨ |
| «أينقص الرطب إذا ييس؟» | عبد الله بن أبى سلمة | ١١/١٠٢ |
| «أيها المصلى وحده ألا وصلت إلى الصف؟» | وابصة | ٦/٣٥ |
| «أيها الملبى عن نبيشة» | ابن عباس | ٩/٢٣٨ |
| «أيها الناس إذا كان هذا اليوم فاغتسلوا...» | ابن عباس | ٢/٣٦٩، ٦/٢٧٤، ٢٧٥ |
| «أيها الناس إن أحدكم لن يموت حتى يستكمل رزقه...» | جابر بن عبد الله | ١١/١١ |
| «أيها الناس إن الله عز وجل يقول: مروا بالمعروف...» | عائشة | ٢٠/٢٦٤ |
| «أيها الناس إن الله كتب عليكم السعى فاسعوا» | تمثلك | ١٠/١٤ |
| «أيها الناس إن الشمس والقمر لا ينكسفان لموت أحد ولا لحياته» | عبد الله بن مسعود | ٧/٥٦ |
| «أيها الناس إن منكم منفرين من صلى بالناس فليخفف» | أبو مسعود الأنصارى | ٦/٦٤ |

| | | |
|---|---|---|
| «أيها الناس إنكم لن تطيقوا...» | الحكم بن حزن | ٣٢٠/٩ |
| «أيها الناس إنما الأعمال بالنية» | عمر بن الخطاب | ١٢٧/١، ١٦٠/٢ |
| «أيها الناس إنما الدنيا عرض حاضر...» | شداد بن أوس | ٣٤٧/٦ |
| «أيها الناس إنما هلك الذين من قبلكم...» | عائشة | ٢٩٠/١٧ |
| «أيها الناس إنه لم يكن نبى قبلى إلا كان حقا عليه أن يدل أمته...» | عبد الله بن عمرو | ٧/١٧ |
| «أيها الناس إنه ليس بى تحريم ما أحل الله...» | أبو سعيد الخدرى | ٥٦٦/٥ |
| «أيها الناس إنه ما كان من حلف...» | عبد الله بن عمرو | ٢٤٤/١٣، ١٧٧/١٦ |
| «أيها الناس إنى إمامكم فلا تسبقونى بالركوع ولا بالسجود» | أنس بن مالك | ٥٢٦/٣ |
| «أيها الناس إنى قد بدنت فلا تسبقونى بالركوع والسجود» | أبو هريرة | ٥٣٠/٣ |
| «أيها الناس إنى قد تركت فيكم ما إن اعتصمتم به...» | ابن عباس | ٣٣٣/٢٠ |
| «أيها الناس إنى كنت أذنت لكم...» | سبرة | ٣٨٣/١٤ |
| «أيها الناس إنى لم أعلم بهذا حتى سمعتموه...» | أم سلمة | ٢١٤/١٨ |
| «أيها الناس إياكم وشرك السرائر» | جابر بن عبد الله | ٣٩٦/٤ |
| «أيها الناس تصدقوا» | أبو سعيد الخدرى | ٤٠٣/٢، ٥٢١/٨ |
| «أيها الناس قد آن لكم أن تنتهوا...» | زيد بن أسلم | ٥١٤/١٧ |
| «أيها الناس قد فرض عليكم الحج فحجوا» | أبو هريرة | ٢٠٢/٩ |
| «أيها الناس لا تقتلوا أنفسكم عند جمرة العقبة» | أم جندب | ١١١/١٠ |
| «أيها الناس لا صلاة لامرئ لا يقيم صلبه فى الركوع والسجود» | على بن شيبان | ٣٦/٦ |
| «أيها الناس من كانت عنده وديعة...» | ابن عمر | ٥٢/١٢ |
| «أيها الناس هل سمعتم ما سمعت؟» | يزيد بن رومان | ٢١٤/١٨، ٣١٥ |
| «أيها الناس والله مالى من فيئكم...» | عبد الله بن عمرو | ٢٤٨/١٣ |
| «أيهم أكثر أخذًا للقرآن» | جابر بن عبد الله | ٣٧٤/٧ |
| «أيهما أفضل؟» | عمير مولى آبى اللحم | ٥٨٣/١٩ |

| | | |
|---|---|---|
| «أيهما أكثر أخذًا للقرآن؟» | جابر | ٣٠٤/٧ |
| «أيهما علا صاحبه قتله» | عكرمة | ١٥٢/١٣ |
| «أيهما كان أكثر أخذًا للقرآن؟» | جابر | ٣٠٣/٧ |
| «أيؤذيك هوام رأسك» | كعب بن عجرة | ٤٩٢/١٠ |
| «أيؤذيك هوامك» | كعب بن عجرة | ٢٤٨/٩، ٣٠٦/١٠ ، ٤٠١ |


## (الباء)


| | | |
|---|---|---|
| «بات عنك ليلة ولا آمن أن تكون هامة...» | عامر | ١٨٧/١٩ |
| «بادر الصبح بركعة» | عبد الله بن عمر | ٤١١/٥ |
| «بادروا الصبح بالوتر» | ابن عمر | ٢٧٥/٥ |
| «بارك الله لك أولم ولو بشاة» | أنس | ٢١٣/١٤، ٤٩٢ |
| «بارك الله لك فيها» | ضباعة بنت الزبير | ٢٥٦/٨ |
| «بارك الله لك وبارك عليك...» | أبو هريرة، الحسن | ٢١٣/١٤، ٢١٤ |
| «باسم الله» | أم سلمة | ٥٢٣/١٠ |
| «باسم الله التحيات لله الصلوات لله» | عائشة | ٦٥٧/٣ |
| «باسم الله اللهم تقبل من محمد...» | عائشة | ٢٧٠/١٩، ٣٣٧ |
| «باسم الله والله أكبر» | أنس | ٣٣٣/١٩ |
| «باسم الله والله أكبر اللهم عنى وعمن لم يضح...» | جابر بن عبد الله | ٢٦٣/١٩ |
| «باسم الله والله أكبر اللهم منك ولك...» | أبو هريرة | ٣٣٩/١٩ |
| «باسم الله والله أكبر اللهم هذا عن محمد...» | عبد الله بن حرام | ٢٧١/١٩ |
| «باسم الله والله أكبر هذا عنى وعمن لم يضح من أمتى» | جابر | ٣٣٧/١٩ |
| «باسم الله وبالله التحيات لله» | جابر بن عبد الله | ٦٥٤/٣، ٦٥٥ |
| «باسم الله وعلى سنة رسول الله» | عبد الله بن عمر | ٤٤١/٧ |
| «بأغلى القيمة ويعتق» | ابن عمر | ٣١٥/٢١ |
| «بأقربهما منك بابا» | عائشة | ٤٣٦/١٣ |
| «بالثناء الحسن والثناء السيىء....» | أبو زهير الثقفى | ٣٦٥/٢٠ |

| | | |
|---|---|---|
| «بالحزم أخذت» | أبو قتادة | ٤٤٨/٥ |
| «بالعافية والرحمة» | المغيرة بن شعبة | ٢٩٧/٧ |
| «بالمعروف غير متأثل مالا...» | الحسن العرنى | ٧٨/١٣ |
| «بأى شىء تفتتح القرآن إذا افتتحت الصلاة؟» | بريدة | ١٦٤/٢٠ |
| «بأيدى إخوانكم» | عبد الله بن عمر | ٢٤/٦ |
| «البائعان بالخيار ما لم يتفرقا...» | حكيم بن حزام | ٢٦/١١ |
| «بايعونى على ألا تشركوا بالله شيئا...» | عبادة بن الصامت | ١٤٠/١٦، ٥٢٢/١٧ |
| «البحر هو جهنم» | يعلى | ٢٢٩/٩ |
| «بحسب امرئ من الشر أن يحقر أخاه...» | أبو هريرة | ٣٥/١٢ |
| «بحصى الخَذْف» | عبد الرحمن بن معاذ التيمى | ١١٠/١٠، ١٤٥ |
| «بخ ذلك مال رائح» | أنس بن مالك | ٢٧٩/١٢، ٤٦/١٣ |
| «بخير» | أنس | ١٣٤/١٥ |
| «البر حسن الخلق...» | النواس بن سمعان | ٣٠/٢١ |
| «برتك رحم وجزيت خيرًا» | أبو اليمان الهوزنى | ٢٣٢/٧ |
| «بركة الطعام الوضوء قبله وبعده» | سلمان | ٥١/١٥ |
| «البركة فى المماسحة» | محمد بن سعد | ٤٣٣/١١ |
| «البركة فى نواصى الخيل» | أنس | ٢٢١/١٣ |
| «البزاق فى المسجد خطيئة وكفارتها دفنها» | أنس بن مالك | ٣٩٧/٤ |
| «بسم الله الرحمن الرحيم» | على بن أبى طالب | ٤٤/١٧ |
| «بسم الله الرحمن الرحيم إنا أعطيناك الكوثر» | أنس بن مالك | ٤٠٧/٣، ٤٠٨ |
| «بسم الله الرحمن الرحيم من محمد عبد الله ورسوله إلى هرقل عظيم الروم...» | ابن عباس | ٥٨٨/١٨، ٣٨٨/٢٠ |
| «بسم الله الرحمن الرحيم من محمد النبى....» | عمرو بن حزم، يزيد بن عبد الله بن الشخير | ٣١/٨، ١٣٥/١٣ |
| «بسم الله الرحمن الرحيم هذا كتاب من محمد...» | يزيد بن عبد الله | ٤٣/١٨ |
| «بسم الله الرحمن الرحيم هذا ما اشترى العداء ابن خالد بن هوذة» | العداء بن خالد بن هوذة | ٢١٣/١١ |

| | | |
|---|---|---|
| «بسم الله الرحمن الرحيم هذا ما أعطى محمد رسول الله بلال بن الحارث...» | عمرو بن عوف | ٢١١/١٢ |
| «بشر المشائين فى الظلم إلى المساجد...» | سهل بن سعد | ٥٢٤/٥ |
| «بشر المشائين فى الظلم إلى المساجد...» | بريدة الأسلمى | ٥٢٥/٥ |
| «بشر المشائين فى ظلم الليل إلى المساجد...» | أنس بن مالك | ٥٢٤/٥ |
| «بشرا ويسرا وعلما ولا تنفرا» | أبو موسى | ٤١٠/١٧ |
| «بع وقل: لا خلابة» | ابن عمر | ٣٨/١١ |
| «بعثت أنا والساعة كهاتين» | جابر بن عبد الله | ٣٢١/٦، ٣٤١ |
| «بعثت لأتمم صالح الأخلاق» | ابن عجلان | ٢٩/٢١ |
| «بعنى عذقك الذى فى حائط فلان» | جابر بن عبد الله | ٢٥٣/١٢ |
| «بعنيه بوقية» | جابر بن عبد الله | ٢٤٢/١١ |
| «بعنيه» | ابن عمر | ١٧٢/١١، ٣٠٠/١٢ |
| «بعنيه» | جابر | ٨٠/١١، ٢٤٥، ١٥٣/١٩ |
| «بعهما جميعا أو أمسكهما جميعا» | على بن أبى طالب | ٤٠٩/١٨ |
| «البغايا اللاتى ينكحن أنفسهن بغير بينة» | ابن عباس | ١٤٣/١٤ |
| «بغل أو بغلة ينزى الحمار على الفرس...» | على | ٤٠/٢٠ |
| «بفضل رحمته إياهم» | أنس بن مالك | ٤٨٥/٧ |
| «البقرة عن سبعة والبدنة عن سبعة» | جابر بن عبد الله | ٤٦٤/١٠ ، ٣٦٥/١٩ |
| «بقيت أنا وأنت» | أبو هريرة | ١٧٦/٥، ١٦/١٤ |
| «بكتوه» | عبد الرحمن بن أزهر | ٤٩٤/١٧ |
| «بكروا بالصلاة فى اليوم الغيم» | بريدة الأسلمى | ٢٤٣/٣ |
| «بكفرهن» | عبد الله بن عباس | ١١٣/١٥ |
| «بكل حسنة مائة ألف حسنة» | ابن عباس | ٢١٤/٢٠ |
| «بكل شعرة حسنة» | زيد بن أرقم | ٢٥٤/١٩ |
| «بكل شعرة من الصوف حسنة» | زيد بن أرقم | ٢٥٤/١٩ |
| «بكل قطرة حسنة» | زيد بن أرقم | ٢٥٣/١٩ |
| «بكل يوم صدقة ما لم يحلَّ الدين» | بريدة | ٣٢٠/١١ |
| «بِكَمْ؟» | طارق بن عبد الله المحاربى | ٣٨٥/١١ |

| | | |
|---|---|---|
| «بل أبايعه على الجهاد...» | يعلى بن منية، وعبد الرحمن بن صفوان | ١٨/٥٤، ٥٥، ٢٠/٩٧ |
| «بل ابتعته منك» | عمارة بن خزيمة عن عمه | ٢٠/٤٣٣ |
| «بل ابنك يقتله إن شاء الله» | جابر بن عبد الله | ١٨/٤٢٧ |
| «بل ادع الله » | أبو هريرة | ١١/٤١١ |
| «بل أقره» | عوف بن مالك | ١٩/٦٠٨ |
| «بل أكون عبدا نبيا» | ابن عباس | ١٣/٥٠١ |
| «بل الله جبلك عليها» | زارع | ١٤/٧٥ |
| «بل الله يرفع ويخفض» | أبو هريرة | ١١/٤١١ |
| «بل أنا يا عائشة وارأساه» | عائشة | ٧/٢٢٧ |
| «بل أنت سهل» | حزن | ١٩/٤٠٢ |
| «بل أنتم العكارون وأنا فئتكم» | ابن عمر | ١٨/٢٥٥ |
| «بل أنتم العكارون» | ابن عمر | ١٨/٢٥٦ |
| «بل ائتمروا بالمعروف وتناهوا عن المنكر...» | أبو ثعلبة الخشنى | ٢٠/٢٥٨ |
| «بل باب التوبة والرحمة» | ابن عباس | ١٨/٢٨ |
| «بل شربت عسلا عند زينب ولن أعود له» | عائشة | ١٥/٣٠٤ |
| «بل عارية» | ناس من آل صفوان بن أمية | ١٢/٢٦ |
| «بل عارية مضمونة» | محمد بن علىّ بن الحسين | ١٢/٢٧ |
| «بل عارية مضمونة حتى نؤديها عليك» | جابر بن عبد الله | ١٢/٢٥ |
| «بل للأبد» | - | ٩/٣٠٦ |
| «بل للأبد» | جابر بن عبد الله | ٩/٣٤٣ |
| «بل للأبد دخلت العمرة فى الحج» | طاوس | ٩/٣١٤ |
| «بل للمسلمين عامة» | عمران بن حصين | ١٩/٣٢٧ |
| «بل مضى ثنتان وعشرون» | أبو هريرة | ٩/١٥٧ |
| «بل هو حسن» | على | ١٢/٢٨٢ |
| «بل هو حسين» | على | ١٢/٢٨٢ |

| | | |
|---|---|---|
| «بل هو مُحَسِّن» | على | ٢٨٢/١٢ |
| «بل هو نُسِّئَ» | عبد الله | ٢٨/٥ |
| «بل هى لآل محمد والناس عامة» | على | ٣٢٦/١٩ |
| «بل هى للمسلمين عامة» | عبد الله بن عباس | ٣٧٤/١ |
| «بل هى لنا خاصة» | بلال بن الحارث | ٤١٨/٩ |
| «بل والذى نفسى بيده إن الشملة التى أصابها» | أبو هريرة | ٤٤٩/١٨ |
| «بلغ فلانًا ما قال رسول الله...» | وائل بن حجر | ٢٦١/٨ |
| «بلغ الكتاب أجله فاخطبها إلى نفسها» | أم كلثوم بنت عقبة | ٥١٠/١٥ |
| «بلغنى أن أقوامًا يقولون كذا وكذا» | جابر | ٥٦٩/١١ |
| «بلغنى أن أمة من بنى إسرائيل مسخت دواب» | أبو سعيد | ٤٥٨/١٩ |
| «بلى» | المسور بن مخرمة ومروان بن الحكم | ١٢١/١٩ |
| «بلى» | أبو وائل | ١٢٨/١٩ |
| «بلى». ردًا على من سأله عن قراءة آية: ألم تقرئينها كذا وكذا؟ | أبى بن كعب | ٦٣٣/٤ |
| «بلى اكتنى بابنك عبد الله» | عائشة | ٤١٤/١٩ |
| «بلى إن شئت» | أم سلمة | ٤٤/١٤ |
| «بلى ائتنى بها» | معاوية بن الحكم | ١٤٧/٢٠ |
| «بلى سنعينه بعرق» | خويلة بنت ثعلبة | ٤٠٩/١٥ |
| «بلى فأخبرتك أنك تأتيه العام» | المسور بن مخرمة ومروان بن الحكم | ١٢١/١٩ |
| «بلى فافعل» | المسور بن مخرمة ومروان بن الحكم | ١٢١/١٩ |
| «بلى ولكن الأمور تحدث...» | سلمة بن سلامة بن وقش | ٤٤٩/١ |
| «بلى ولكنهم يحلفون فيأثمون» | عبد الرحمن بن شبل | ١٥/١١ |
| «بم أهللت » | أنس بن مالك | ٣٣٥/٩ |
| «بم أهللت» | أبو موسى | ٤٢٠/٩ |
| «بم أهللت» | جابر بن عبد الله | ٣٤٣/٩ |

| | | |
|---|---|---|
| «بم أهللت» | طاوس | ٣١٤/٩ |
| «بم أهللت يا عبد الله بن قيس» | أبو موسى | ٣٤٧/٩ |
| «بم أهللت يا على» | جابر | ٢٤٠/٩، ٤١٩ |
| «بم تأكل ماله؟» | عمر | ٣٩٥/١١ |
| «بم تستحل ماله؟» | ابن عمر | ٣٩٥/١١ |
| «بم تشهد؟» | عمارة بن خزيمة عن عمه | ٥٥١/١٣، ٤٣٣/٢٠ |
| «بم ساررته ؟» | ابن عباس | ٣٥٥/١١ |
| «بم يستحل أحدكم مال أخيه...» | جابر بن عبد الله | ١٣٨/١١ |
| «بماذا تستمشين؟» | أسماء بنت عميس | ٥٣٣/١٩ |
| «بمن تظنون ؟» | أنس بن مالك | ٤٦٢/١٦ |
| «بنى الإسلام على خمس...» | ابن عمر | ٥/٣، ٥/٨، ٣٩٩ |
| «بها نظرة فاسترقوا لها» | أم سلمة | ٥٣٨/١٩ |
| «بهذه ورماح القنا يمكن الله لكم فى البلاد...» | عويم بن ساعدة | ٩/٢٠ |
| «بؤسا لك يا ابن سمية...» | أبو سعيد | ٧٤/١٧ |
| «بول الغلام ينضح وبول الجارية يغسل» | أبو الأسود، وأم سلمة | ٨٥/٥ |
| «البيت قبلة لأهل المسجد» | عبد الله بن عباس | ٣١٩/٣ |
| «بئس الخطيب أنت...» | عدى بن حاتم | ٢٥٩/١، ٣٤٨/٦ |
| «بئس مطية الرجل» | أبو مسعود | ٢٢٥/٢١ |
| «بئسما جزيتيها إن نجاك الله عليها أن تنحريها...» | عمران بن حصين | ٣٥٨/١٨ |
| «بئسما جزيتيها...» | عبد الله بن عمرو | ٢٠٤/٢٠ |
| «بئسما لأحدهم أن يقول: نسيت آية كيت وكيت» | عبد الله | ٢٨/٥ |
| «بيع المحفلات خلابة....» | عبد الله (بن مسعود) | ١٧٦/١١ |
| «البيعان بالخيار حتى يتفرقا...» | ابن عمر | ٣٦/١١ |
| «البيعان بالخيار ما لم يتفرقا...» | ابن عمر وحكيم بن حزام | ٢٥/١١، ٢٧ |
| «البيعان بالخيار ما لم يتفرقا...» | أبو برزة الأسلمى | ٢٨/١١ |

| | | |
|---|---|---|
| «البيعان بالخيار ما لم يتفرقا...» | سمرة | ٣٢/١١ |
| «البيعان وليس بينهما بينة...» | ابن مسعود | ٢٢٨/١١، ٢٢٩ |
| «بيعوا الذهب بالذهب...» | عبادة بن الصامت | ٦٨/١١ |
| «بين اثنين» | عبد الله بن ثعلبة | ٢٩١/٨ |
| «بين الرجل وبين الشرك والكفر ترك الصلاة» | جابر بن عبد الله | ١٣٥/٧ |
| «بين العبد وبين الكفر ترك الصلاة» | جابر بن عبد الله | ١٣٥/٧ |
| «بين الفريضتين عشرون درهمًا...» | أنس بن مالك | ٣٥/٨ |
| «بين كل أذانين صلاة... » | عبد الله بن مغفل | ٣٤٥/٣، ٢٦٢/٥- ٢٦٥ |
| «بين هذين...» | زيد بن أسلم | ٥١٤/١٧ |
| «بينا أنا نائم إذ أتانى رجلان...» | أبو أمامة الباهلى | ٤٦٠/٨ |
| «بينا أنا نائم إذ رأيت قدحا...» | عبد الله بن عمر | ٥٠٠/١٣ |
| «بينا أنا نائم رأيتنى على قليب...» | أبو هريرة | ٥٤٧/١٦ |
| «بينا كلب يطيف بركية قد كاد يقتله العطش...» | أبو هريرة | ١٢٥/١٦ |
| «البينة أو حد فى ظهرك» | ابن عباس | ٤٢٣/١٥ |
| «البينة على المدعى» | - | ٣٨٧/١٢ |
| «البينة على المدعى واليمين على المدعى عليه» | - | ٣٥٨/١٧، ٢٤٤/٢١ |
| «البينة على من ادعى واليمين على من أنكر...» | عبد الله بن عمرو | ٤٤٧/١٦ |
| «البينة وإلا حد فى ظهرك» | ابن عباس | ٤٢٣/١٥ |
| «بينما امرأتان معهما ابناهما جاء الذئب...» | أبو هريرة | ٢٩١/٢١ |
| «بينما أنا أصلى إذا اعترضنى شيطان...» | أبو هريرة | ٣١٠/٤ |
| «بينما أنا نائم إذ أتيت بخزائن الأرض» | أبو هريرة | ٣٠/١٧ |
| «بينما أيوب يغتسل عريانًا » | أبو هريرة | ١١١/٢ |
| «بينما ثلاثة رهط يتمشون أخذهم المطر...» | عبد الله بن عمر | ١١٤/١٢ |
| «بينما رجل بفلاة إذ سمع رعدًا فى سحاب.» | أبو هريرة | ١٨٠/٨ |
| «بينما رجل فى طريق أصابه عطش» | أبو هريرة | ١٢٤/١٦ |
| «بينما رجل يمشى بطريق اشتد عليه العطش» | أبو هريرة | ٣٥٠/٨ |
| «بيننا وبين المنافقين شهود العشاء والصبح» | عبد الرحمن بن حرملة | ٥١٠/٥ |

## (التاء)


| | | |
|---|---|---|
| «تاب الله عليك» | أبو هريرة | ٣٣٩/١٧، ٣٥١ |
| «تأتون بالبينة على من قتل؟» | سهل بن أبى حثمة | ٤٤٣/١٦ |
| «تأتينى كتب لا أحب أن يقرأها أحد...» | زيد بن ثابت | ٤٣٢/١٢ |
| «التاجر الصدوق الأمين المسلم مع الشهداء يوم القيامة» | ابن عمر | ١٥/١١ |
| «تأخذ إحداكن ماءها وسدرتها فتطهر...» فى الغسل من المحيض | عائشة | ٥٥/٢ |
| «تأخذ فوق يديه» | أنس | ٤٣/١٢ |
| «تأخذون الدية...» | الزبير بن العوام | ٣٧٨/١٨ |
| «تأخذين ماءك فتطهرين أحسن الطهور» فى الإجابة على السؤال عن غسل الجنابة | عائشة | ٥٦/٢ |
| «تأكل التمر وبك رمد؟» | صهيب | ٥٢٤/١٩ |
| «تألى ألا يفعل خيرًا» | عمرة بنت عبد الرحمن | ١٣٣/١١ |
| «التأنى من الله والعجلة من الشيطان» | أنس بن مالك | ٢٩٩/٢٠ |
| «التائب من الذنب كمن لا ذنب له» | ابن مسعود وابن عباس | ٤٥٨/٢٠، ٤٥٩ |
| «تائبون إن شاء الله» | عبد الله بن عمر | ٥٥٢/١٠ |
| «تب إلى الله عز وجل» | أبو أمية | ٣٥٢/١٧ |
| «تب إلى الله عز وجل» | أبو هريرة | ٣٣٩/١٧ |
| «تب إلى الله» | أبو هريرة | ٣٥١/١٧ |
| «تباءس وتمسكن» | - | ٣٩١/١٣ |
| «تبايعونى على السمع والطاعة فى...» | جابر | ٥٢٢/١٦ |
| «تبايعونى على السمع والطاعة...» | جابر بن عبد الله | ٣١/١٨ |
| «تبلغ الحلية من المؤمن حيث يبلغ الوضوء» | أبو هريرة | ١٧٣/١ |
| «تبلغ عليه إلى أهلك» | جابر بن عبد الله | ٢٤٥/١١ |
| «تبيعها أو تصيب بها حاجتك» | عمر | ٥٤٠/٦ |
| «تبيعونها أو تهبونها» | عبد الله بن شداد | ٥٠٣/١٦ |
| «تبيعونى الجمل؟» | طارق بن عبد الله | ٣٨٥/١١ |

| | | |
|---|---|---|
| «تتوضأ يا بسرة...» | بسرة بنت صفوان | ٣٩٢/١ |
| «التثاؤب من الشيطان فإذا تثاوَب أحدكم فليكظم ما استطاع» | أبو هريرة | ٣٩٢/٤ |
| «تجافوا لذوى الهيئات» | - | ٤٨٣/١٨ |
| «تجاوز الله عن أمتى الخطأ والنسيان...» | ابن عباس | ١٥٩/٢٠ |
| «تجاوز الله لأمتى ما حدثت به أنفسها...» | أبو هريرة | ٤٠٦/١٤، ٢٩٢/١٥ |
| «تجاوزنا لكم عن صدقة الخيل والرقيق» | - | ٢١٥/١٣ |
| «تجب الجمعة على كل مسلم إلا امرأة أو صبى أو مملوك» | رجل من بنى وائل | ٢٣٢/٦ |
| «تجد شر الناس يوم القيامة ذا الوجهين...» | أبو هريرة | ٢١٩/٢١ |
| «تجد من شرار الناس ذو الوجهين» | أبو هريرة | ٢١٩/٢١ |
| «تجزئ الأصابع مجزأ السواك» | أنس بن مالك | ١٢٥/١ |
| «تجزئ من السواك الأصابع» | أنس بن مالك | ١٢٤/١، ١٢٥ |
| «تجزيك آية الصيف» | البراء بن عازب | ٤٧١/١٢ |
| «تجهز فإنك موسر...» | عروة بن الزبير | ١١٤/١٨ |
| «تُجُوِّز لأمتى عما وسوست به أنفسها...» | أبو هريرة | ٥٥٤/٤ |
| «تحت كل شعرة جنابة » | أبو هريرة | ٤١/٢، ٥٢ |
| «تحته ثم تقرصه بالماء ثم تنضحه ثم تصلى فيه» | أسماء | ٤٤/٥، ٥٨ |
| «تحدثن عند إحداكن ما بدا لكن...» | مجاهد | ٥٦٠/١٥ |
| «تحرز المرأة ثلاث مواريث...» | واثلة بن الأسقع | ٥٢٩/١٢ |
| «تحرم - يعنى الصلاة - إذا انتصف النهار...» | أبو هريرة | ٢٣٣/٥ |
| «تحروا ليلة القدر فى السبع الأواخر» | ابن عمر | ١٦٠/٩ |
| «تحروا ليلة القدر فى العشر» | عائشة | ١٤٩/٩ |
| «تحروا ليلة القدر فى الوتر من العشر» | عائشة | ١٥١/٩ |
| «تحروها فى العشر الأواخر فإن ضعف» | ابن عمر | ١٦١/٩ |
| «تحريك الإصبع فى الصلاة مذعرة للشيطان» | عبد الله بن عمر | ٦٣٠/٣ |
| «تحل الصدقة للغنى إذا كان فى سبيل الله» | أبو سعيد الخدرى | ٤١٩/١٣ |

| | | |
|---|---|---|
| «تحلفون خمسين فتستحقون قاتلكم؟» | رافع بن خديج، سهل ابن أبي حثمة، سويد ابن النعمان | ٤٤١/١٦ |
| «تحلفون خمسين يمينا وتستحقون دم قاتلكم» | سهل بن أبي حثمة | ٤٣٧/١٦ |
| «تحلفون وتستحقون دم صاحبكم؟» | سهل بن أبي حثمة | ٤٣٦/١٦، ٤٥٤، ٢٠/ ٥٤٦ |
| «تحلى هذا يا بنية» | عائشة | ٢٠٧/٨ |
| «تحليلها التسليم» | - | ٧٢/٤ |
| «تحمار أو تصفار ويؤكل منها» | جابر بن عبد الله | ١١٨/١١ |
| «تحوز المرأة ثلاث مواريث...» | واثلة بن الأسقع الليثي | ٥٩١/١٢ |
| «تحولوا عن مكانكم الذى أصابتكم فيه الغفلة» | أبو هريرة | ١٧٣/٤ |
| «التحيات لله الصلوات الطيبات» | جابر بن عبد الله | ٦٥٥/٣ |
| «التحيات لله الصلوات الطيبات» | عبد الله بن عمر | ٦٤٨/٣ |
| «التحيات لله والصلوات والطيبات» | عائشة | ٦٦٣/٣، ٦٦٤ |
| «التحيات لله والصلوات والطيبات» | عبد الله بن مسعود | ٦٤٧/٣ |
| «التحيات المباركات الصلوات الطيبات لله» | عبد الله بن عباس | ٦٥١/٣، ٦٥٢، ٦١٣/٤ |
| «تخرج بسيفك إلى الحرة...» | محمد بن مسلمة | ٨٢/١٧ |
| «تخلف يا مغير وامضوا أيها الناس» | المغيرة | ٣٣٤/٢ |
| «تخيروا لنطفكم...» | عائشة | ١٦٣/١٤ |
| «تداووا فإن الله عز وجل لم يضع داء إلا...» | أسامة بن شريك | ٥٢٢/١٩ |
| «تداووا من ذات الجنب بالزيت والقسط البحرى» | زيد بن الأرقم | ٥٣١/١٩ |
| «تدخلون على قُلحًا! استاكوا» | عبد الله بن عباس | ١٠٩/١ |
| «تدرين على ما حسدونا» | عائشة | ٤٤١/٣ |
| «تدع الصلاة أيام أقرائها» | عائشة | ٤٨٨/٢- ٤٨٩ |
| «تدع الصلاة عدد الليالى والأيام...» | أم سلمة | ٤٩٥/١٥ |
| «تدع الناس من الشر...» | أبو ذر | ٢٨٧/١٩، ٣٠٨/٢١ |
| «تدع الناس من شرك..» | أبو ذر | ٥٨٣/١١، ٣٩/١٣ |

| | | |
|---|---|---|
| «تراصوا فى الصف لا يتخللكم أولاد الحذف» | البراء بن عازب | ٢٣/٦ |
| «تربت يمينك فبم يشبهها ولدها» | أم سلمة | ٢٠/٢ |
| «تردين عليه حديقته ويطلقك» | أبو سعيد | ١٨٦/١٥ |
| «تردين عليه حديقته؟» | ابن عباس | ١٨٢/١٥ |
| «ترفع الأيدى فى الصلاة» | ابن عباس | ٥٢٢/٩ |
| «ترون إلى أوباش قريش وأتباعهم» | أبو هريرة | ٣٨١/١٨ |
| «ترون هذا لو مات هذا مات على غير ملة محمد» | أبو عبد الله الأشعرى | ٥١٨/٣ |
| «تريدين أن ترجعى إلى رفاعة؟...» | عائشة | ٢٤٠/١٥ |
| «تزوجت يا جابر؟» | جابر | ٨/١٤ |
| «تزوجوا فإنى مكاثر بكم الأمم...» | أبو أمامة | ٥٨٧/١٣ |
| «تزوجوا الولود الودود...» | أنس | ١١/١٤ |
| «تزوجوا الولود الودود...» | معقل بن يسار | ١٠/١٤ |
| «تسألنى ابن أم عبدٍ كيف تصنع» | عبد الله بن مسعود | ٩١/٦ |
| «التسبيح فى الصلاة للرجال والتصفيق للنساء» | أبو هريرة | ٢٦٠/٤ |
| «التسبيح للرجال والتصفيق للنساء» | أبو هريرة | ٢٦١/٤، ٢٦٢ |
| «التسبيح للرجال والتصفيق للنسوان» | أبو هريرة | ٣٠٦/٤ |
| «التسبيح للقوم والتصفيق للنساء فى الصلاة» | أبو هريرة | ٢٦١/٤ |
| «تستأمر النساء فى أبضاعهن» | عائشة | ١٢٢/١٤ |
| «تستأمر اليتيمة فى نفسها...» | أبو هريرة وأبو موسى | ١٢٧/١٤ |
| «تستأمر اليتيمة فى نفسها...» | أبو هريرة | ١٣٢/١٤ |
| «تستأمر اليتيمة فى نفسها» | أبو موسى | ١٣٣/١٤ |
| «تستعين المسلمين» | مخارق | ٥٤٨/١٧ |
| «تسحروا فإن فى السحور بركة» | أنس بن مالك | ٥٢٣/٨، ٥٢٤ |
| «تسلبى ثلاثا ثم اصنعى ما شئت» | أسماء بنت عميس | ٥٦٧/١٥ |
| «تسمع حى على الصلاة حى على الفلاح؟ فحى هلا» | ابن أم مكتوم | ٥٠٨/٥ |
| «تسمع النداء؟» | كعب بن عجرة | ٥٠٧/٥ |
| «تسمع وتطيع للأمير...» | حذيفة بن اليمان | ٥٦١/١٦ |

| | | |
|---|---|---|
| «تسمعون ويسمع منكم...» | ابن عباس | ٢٣٥/٢١ |
| «تسموا باسمي ولا تكتنوا بكنيتي» | أبو هريرة، أنس، جابر | ٤٠٤/١٩، ٤٠٧، ٤٠٨ |
| «تسمون قاتلكم ثم تحلفون عليه خمسين يمينا؟» | سهل بن أبي حثمة | ٤٥٥/١٦ |
| «تشترط ماذا؟» | عمرو بن العاص | ٣٢٤/١٨ |
| «تشد الرحال إلى ثلاثة مساجد» | أبو هريرة | ٥٠٠/١٠ |
| «تشهد أن لا إله إلا الله...» | ابن الخصاصية | ٦٩/١٨ |
| «تصبر» | أبو ذر | ٨٠/١٧ |
| «تصدق» | عائشة | ٤٨٤/٨ |
| «تصدق بأصله لا يباع ولا يوهب...» | ابن عمر | ٢٦١/١٢ |
| «تصدق بثمره واحبس أصله...» | ابن عمر | ٢٦١/١٢ |
| «تصدق بهذا» | أبو هريرة | ٤٧٨/٨ |
| «تصدق بهذا» | سليمان بن يسار | ٤١٥/١٥ |
| «تصدق بهذا» | عائشة | ٤٨٣/٨ |
| «تصدق بهذا على ستين مسكينا» | محمد بن عبد الرحمن ابن ثوبان وأبو سلمة | ٤١١/١٥ |
| «تصدق تصدق» | عائشة | ٤٨٨/٨ |
| «تصدق رجل من ديناره من درهمه...» | جرير بن عبد الله | ٣١٢/٨ |
| «تصدق كل رجل منكم بعشر ماله....» | على بن أبي طالب | ٣٣٦/٨ |
| «تصدقن» | ابن عباس | ٥٧٦/٦ |
| «تصدقن فإن أكثركن حطب جهنم» | جابر بن عبد الله | ٥٧١/٦ ، ٥٨٤ |
| «تصدقن يا معشر النساء ولو من حليكن» | زينب امرأة عبد الله بن مسعود | ٣٢٤/٨ |
| «تصدقوا » | أبو سعيد الخدرى | ٥٧٤/٦، ٣٣٥/٨ |
| «تصدقوا عليه» | أبو سعيد الخدرى | ١٣٤/١١، ٤٧٦ |
| «تصلى الصبح أربعا؟» | عبد الله بن مالك ابن حبينة | ٢٨٧/٥ |
| «تصلى الصبح أربعًا؟» | مالك ابن بحينة | ٢٨٥/٥ |
| «تصومين غدًا» | جويرية | ٥٢ /٩ |

| | | |
|---|---|---|
| «تضمن الله لمن خرج فى سبيله...» | أبو هريرة | ١٣٥/١٨ |
| «تطالعت عليكم الدنيا» | عبد الله بن يزيد | ٣٨/١٥ |
| «تطاوعا ويسرا ولا تعسرا...» | أبو موسى الأشعرى | ٥٥١/١٦ |
| «تطلق الأمة تطليقتين وتعتد حيضتين» | عائشة | ٥٢٦/١٥ |
| «تطلق الأمة تطليقتين وقرؤها حيضتان» | عائشة | ٣٥٥/١٥ |
| «تطهرى بها» جواب على السؤال عن كيفية التطهر بفرصة المسك | عائشة | ٦٤/٢ |
| «تعاد الصلاة فى مقدار الدرهم من الدم» | أبو هريرة | ٥٣/٥ |
| «تعاد الصلاة من قدر الدرهم من الدم» | أبو هريرة | ٥٢/٥ |
| «تعافوا الحدود فيما بينكم...» | عبد الله بن عمرو | ٥٣٢/١٧ |
| «تعال» | كعب بن مالك | ١١٧/١٨ |
| «تعال فاستقد» | أبو سعيد الخدرى | ٢١٧/١٦، ٢٣٣ |
| «تعال كل» | صهيب | ٥٢٤/١٩ |
| «تعال يا ابن مسعود» | ابن عباس | ٣١٨/٦ |
| «تعال يا أبى» | أبو هريرة | ٦١٠/٤ |
| «تعال يا عبد الله بن مسعود» | جابر، وابن جريج أو عطاء بن أبى رباح | ٣١٩/٦، ٣٥٥ |
| «تعاله أتعفو؟» | وائل بن حجر | ٢٥٤/١٦ |
| «تعالى أسابقك» | عائشة | ٢٣/٢٠ |
| «تعبد الله لا تشرك به شيئا...» | أبو هريرة | ١٦/٨ |
| «تعتق فى عتقك وترق فى رقك» | إسماعيل بن أمية عن أبيه عن جده | ٣١٠/٢١ |
| «تعرفها حولًا فإن جاء صاحبها...» | زيد بن خالد الجهنى | ٣٥٠/١٢ |
| «تعس عبد الدينار والدرهم...» | أبو هريرة | ٢١٦/٢١ |
| «تعس عبد الدينار وعبد الدرهم...» | أبو هريرة | ٥٢٢/١٨، ٢١٧/٢١ |
| «تعطى من حرمك وتعفو عمن ظلمك...» | أبو هريرة | ١٨٥/٢١ |
| «تعفف» | أبو ذر | ٨٠/١٧ |
| «تعفو عنه» | وائل بن حجر | ٢٥٤/١٦ |
| «تعفو عنه كل يوم سبعين مرة» | عبد الله بن عمر | ١١٣/١٦ |

| | | |
|---|---|---|
| «تعلم كتاب اليهود فإنى لا آمنهم على كتابنا» | زيد بن ثابت | ٤٣٣/١٢ |
| «تعلموا الفرائض وعلموه الناس...» | أبو هريرة | ٤٢٤/١٢ |
| «تعلموا القرآن فإذا علمتموه فلا تغلوا فيه ولا تجفوا عنه» | عبد الرحمن بن شبل | ٣٤٠/٣ |
| «تعلموا القرآن وعلموه الناس...» | عبد الله بن مسعود | ٤٢٣/١٢ |
| «تعلمين والله أنا ما رزأنا من مائك شيئا» | عمران بن حصين | ١٧١/٢ |
| «تعين صانعا أو تصنع لأخرق» | أبو ذر | ٢٨٧/١٩، ٣٠٨/٢١ |
| «تعين ضعيفا أو تصنع لأخرق» | أبو ذر | ٣٩/١٣ |
| «تغتسل للظهر والعصر غسلًا واحدًا» | أسماء بنت عميس أو أسماء بنت أبى بكر | ٥٠٦/٢ |
| «تفتح أبواب السماء فى كل اثنين وخميس» | أبو هريرة | ٧٣/٧ |
| «تفتح أبواب السماء ويستجاب الدعاء فى أربعة مواطن» | أبو أمامة | ١١٥/٧ |
| «تفترق أمتى فرقتين...» | أبو سعيد | ٦٧/١٧ |
| «تفضل صلاة الجميع صلاة أحدكم وحده» | أبو هريرة | ٨/٣ |
| «تفضل صلاة الجميع على صلاة الرجل وحده...» | أبو هريرة | ٥١٤/٥ |
| «تقاتلون بين يدى الساعة قوما نعالهم الشعر» | عمرو بن تغلب | ٥٨٠/١٨ |
| «تقاتلون اليهود حتى يختبئ أحدهم...» | ابن عمر | ٥٧٧/١٨ |
| «تقاس الجراحات ثم يستأنى بها سنة...» | جابر | ٢٨٦/١٦ |
| «تقتل ولدك مخافة أن يطعم معك» | عبد الله | ١٢٨/١٦ |
| «تقتلك الفئة الباغية» | أم سلمة | ٧٣/١٧ |
| «تقتله الفئة الباغية» | عمرو بن حزم وعمرو ابن العاص | ٧٤/١٧ |
| «تقدموا» | عائشة | ٢٣/٢٠ |
| «تقدموا فأتموا بى» | أبو سعيد الخدرى | ٢٩/٦ |
| «تقطع يد السارق فى ربع دينار فصاعدا» | عائشة | ٢٩٢/١٧، ٢٩٣ |
| «تقطع اليد فى ربع دينار فصاعدا» | عائشة | ٢٩١/١٧ |
| «تقعد أيام أقرائها ثم تغتسل عند» | فاطمة بنت قيس | ٥٠٩/٢ |

| | | |
|---|---|---|
| «تقعد أيام أقرائها ثم تغتسل فى كل» | جابر | ٥٠٩/٢ |
| «تقعد أيام أقرائها» | فاطمة بنت قيس | ٤٦٥/٢ |
| «تقعد ملائكة على أبواب المسجد يوم الجمعة يكتبون مجيء الناس...» | عبد الله بن عمرو | ٣٨١/٦ |
| «تقلد هذا السيف» | عمير مولى آبى اللحم | ٢٣٣/١٣ |
| «تقول العدل وتعطى الفضل» | كدير الضبى | ٣٥٢/٨ |
| «تقول: الله أكبر الله أكبر الله أكبر الله أكبر...» | أبو محذورة | ١٠٩/٣، ١١٠ |
| «تقولها فى القنوت فى الوتر» | الحسن بن على | ٣٣٥/٥ |
| «تقووا لعدوكم» | أبو بكر بن عبد الرحمن عن بعض أصحاب النبى | ٩/٩ |
| «تقووا لعدوكم» | بعض أصحاب رسول الله | ٥٤٤/٨ |
| «التكبير فى الفطر سبع فى الأولى...» | عبد الله بن عمرو | ٥٥٦/٦ |
| «تكثرن اللعن وتكفرن العشير...» | ابن عمر | ٤٤١/٢٠ |
| «تكثرن اللعن وتكفرن العشير» | أبو سعيد الخدرى، ابن عمر | ٤٠٣/٢، ٤٠٤، ٥٢١/٨، ٤٤١/٢٠ |
| «تكفل الله لمن جاهد فى سبيله...» | أبو هريرة | ٥١٤/١٨ |
| «تكفيك آية الصيف» | البراء | ٤٧١/١٢ |
| «تكلم» | أبو هريرة وزيد بن خالد | ١٥٣/١٧ |
| «تكنى بابنك عبد الله بن الزبير» | عائشة | ٤١٣/١٩ |
| «تكون إبل للشياطين وبيوت للشياطين» | أبو هريرة | ٥٣٩/١٠ |
| «التلبينة تجم فؤاد المريض وتذهب بعض الحزن» | عائشة | ٥٣٠/١٩ |
| «التلبينة مجمة لفؤاد المريض تذهب ببعض الحزن» | عائشة | ٤٦١/٧ |
| «تلحق بمن أنت منه» | أبو ذر | ٨٠/١٧ |
| «تلزم جماعة المسلمين وإمامهم» | حذيفة بن اليمان | ٥٥٧/١٦، ٧٨/١٧ |
| «تلقت الملائكة روح رجل ممن كان قبلكم» | حذيفة | ٣١٦/١١ |

| | | |
|---|---|---|
| «تلك امرأة يغشاها أصحابى...» | فاطمة بنت قيس | ٣٠٨/١٤، ٥٤٥/١٥ |
| «تلك شاة لحم» | البراء | ٦٠٧/٦، ٢٧٦/١٩، ٣٠٢ |
| «تلك الصلاة التى صلاها» | ابن عباس | ٥٦٠/٥ |
| «تلك صلاة المنافق يجلس يرقب الشمس» | أنس بن مالك | ٢٤٢/٣ |
| «تلك صلاة المنافقين تلك صلاة المنافقين» | أنس بن مالك | ٢٤٢/٣ |
| «تلك طعنة الشيطان كل بنى آدم» | أبو هريرة | ٥٨٤/١٢ |
| «تلك غنيمة للمسلمين غدا» | سهل بن الحنظلية | ٤٨٨/١٨ |
| «تلك الكلمة من الحق يخطفها الجنى...» | عائشة | ٤٩٥/١٦ |
| «تلك اللوطية الصغرى» | عبد الله بن عمرو | ٣٦٤/١٤ |
| «تمتع بها» | مولى لبنى هاشم | ٢٣٢/١٤ |
| «التمر بالتمر والحنطة بالحنطة...» | أبو هريرة | ٦٧/١١ |
| «تمرة طيبة وماء طهور» | عبد الله بن مسعود | ٣٠/١ |
| «تمزق ملكه» | الشافعى | ٥٨٤/١٨ |
| «تمشى وتركب» | عقبة بن عامر | ٢١٧/٢٠ |
| «تمنعه من الظلم» | أنس | ٤٣/١٢، ٢٥٠/٢٠ |
| «تنادى: يا صاحب الإبل ثلاثًا فإن أجابك...» | مخول البهزى | ٥٧٩/١٩ |
| «تناشده الله» | مخارق | ٥٤٨/١٧ |
| «تنام عيناى ولا ينام قلبى» | عائشة | ٣٦٦/١ |
| «تنحَّ حتى أريك» | أبو سعيد الخدرى | ٦٠/١ |
| «تنظر عدد الليالى والأيام» | أم سلمة | ٤٦٥/٢ |
| «تنكح النساء لأربع...» | أبو هريرة | ٥/١٤ |
| «تهادوا تحابوا» | أبو هريرة | ٢٩٦/١٢ |
| «تؤخذ صدقات أهل البادية على مياههم..» | عائشة | ٩٩/٨ |
| «تؤخذ صدقات المسلمين عند مياههم...» | عبد الله بن مسعود | ٩٩/٨ |
| «التؤدة فى كل شىء خير إلا فى عمل الآخرة» | سعد بن أبى وقاص | ٣٨/٢١ |
| «تؤدى زكاة هذا؟» | مرة الثقفى | ٢٢١/٨ |
| «توسطوا الإمام وسدوا الخلل» | محمد بن كعب | ٣٢/٦ |
| «توشكوا أن تعرفوا أهل الجنة من أهل النار» | أبو زهير الثقفى | ٣٦٥/٢٠ |
| «توضأ واغسل ذكرك ثم نم» | عمر | ١١٤/٢، ٣٤٨/١٤ |

| | | |
|---|---|---|
| «توضأ وانضح فرجك» | على بن أبى طالب | ٣٥٠/١ |
| «توضأ وضوءا حسنًا...» | معاذ بن جبل | ٣٧٤/١ |
| «توضأ يا أبا جبير» | جبير بن نفير | ١٤٤/١ |
| «توضئوا باسم الله» | أنس بن مالك | ١٣٢/١ |
| «توضئوا مما مسّت النار» | عائشة، معاذ بن جبل، أبو هريرة | ٤١٢/١، ٤٤٤، ٤٤٥ |
| «توضئى لكل صلاة» | عائشة | ٤٩٨/٢ |
| «توله ناقتك» | رجل من بنى ضمرة عن أبيه | ٤٢١/١٩ |
| «التولى يوم الزحف» | أبو هريرة | ٢٥٢/١٨ |
| «تؤمن بالله ورسوله؟» | عائشة | ١٢٥/١٨ |
| «التيمم ضربة للوجه» | جابر بن عبد الله | ١٣٧/٢ |


## (الثاء)


| | | |
|---|---|---|
| «ثامنونى بحائطكم هذا» | أنس بن مالك | ١٥٥/٥ |
| «ثبت ملكه» | الشافعي | ٥٨٤/١٨، ٥٩٩ |
| «ثكلتك أمك أبا ذر» | أبو ذر | ١٧٥/٢ |
| «ثلاث جدهن جد وهزلهن جد...» | أبو هريرة | ٢٦٣/١٥ |
| «ثلاث دعوات لا ترد؛ دعوة الوالد ودعوة الصائم ودعوة المسافر» | أنس بن مالك | ٧٠/٧ |
| «ثلاث كلهن سحت» | أبو هريرة | ٣٣٨/١١ |
| «ثلاث كيات» | سلمة بن الأكوع | ٥٥٨/١١ |
| «ثلاث لا يفطرن الصائم» | أبو سعيد | ٤٧٤/٨، ١٤/٩ |
| «ثلاث من أصل الأيمان...» | أنس بن مالك | ٥١١/١٨ |
| «ثلاث من فعلهن فقد طعم طعم الإيمان..» | عبد الله بن معاوية | ٥٠/٨، ٩٥ |
| «ثلاث من كن فيه فهو منافق...» | أبو هريرة | ٨٨/١٣ |
| «ثلاث هن على فرائض وهن لكم تطوع..» | ابن عباس | ٢٤٦/٥، ٢٦١/١٩ |
| «ثلاثة آصع من تمر » | كعب بن عجرة | ٢٤٧/١٠ |
| «ثلاثة أيام ولياليهن» | خزيمة بن ثابت | ٣٢٤/٢ |

| | | |
|---|---|---|
| «ثلاثة حق على الله عونهم..... » | أبو هريرة | ٤٤٣/٢١ |
| «ثلاثة على فريضة...» | عائشة | ٤٦٨/١٣ |
| «ثلاثة كلهم حق على الله عونه...» | أبو هريرة | ٥٨٧/١٣ |
| «ثلاثة كلهم ضامن على الله عز وجل...» | أبو أمامة | ٥٤٦/١٨ |
| «ثلاثة لا تجاوز صلاتهم آذانهم...» | قتادة | ١٠٤/٦ |
| «ثلاثة لا تجاوز صلاتهم رءوسهم...» | الحسن | ١٠٤/٦ |
| «ثلاثة لا ترد دعوتهم...» | أبو هريرة | ٧١/٧، ٥٧٩/١٦، ٢٠/ ٢٤٤ |
| «ثلاثة لا تقبل لهم صلاة ولا تصعد لهم حسنة» | جابر بن عبد الله | ٩٧/٣ |
| «ثلاثة لا تقربهم الملائكة بخير» | عمار بن ياسر | ٤٠٣/٩ |
| «ثلاثة لا يدخلون الجنة...» | ابن عمر | ١٥٠/٢١ |
| «ثلاثة لا يقبل الله منهم صلاة...» | عبد الله بن عمرو | ١٠٣/٦ |
| «ثلاثة لا يكلمهم الله ولا يزكيهم ولهم عذاب أليم...» | أبو هريرة | ٢١٩/١١ |
| «ثلاثة لا يكلمهم الله يوم القيامة...» | أبو ذر | ٣٧١/٨ |
| «ثلاثة لا يكلمهم الله يوم القيامة ولا يزكيهم ولا ينظر إليهم...» | أبو هريرة | ٥٣٠/٢٠ |
| «ثلاثة لا يكلمهم الله يوم القيامة ولا يزكيهم ولهم عذاب أليم...» | أبو هريرة | ٥٢٩/٢٠ |
| «ثلاثة لا يكلمهم الله يوم القيامة ولا ينظر إليهم...» | أبو هريرة | ٢٣٤/١٢ |
| «ثلاثة لا يكلمهم الله يوم القيامة...» | أبو هريرة | ٥٧٤/١٦ |
| «ثلاثة لا ينظر الله إليهم يوم القيامة...» | أبو ذر، ابن عمر، أبو هريرة | ١٣/١١، ٥٧١/١٦، ١٧/ ٣٩٢ |
| «ثلاثة من فعلهن ثقة بالله واحتسابًا...» | جابر بن عبد الله | ٤٤٩/٢١ |
| «ثلاثة من كن فيه حاسبه الله حسابًا يسيرًا...» | أبو هريرة | ١٨٥/٢١ |
| «ثلاثة يدعون الله فلا يستجاب لهم...» | أبو موسى | ٤٣٤/٢٠ |
| «ثلاثة يؤتون أجرهم مرتين...» | أبو موسى | ١٤٩/١٤ |
| «ثلاثمائة وثلاثة عشر» | أبو ذر | ١١/١٨ |

| | | |
|---|---|---|
| «الثلث كبير...» | سعد بن أبي وقاص | ٢٢/١٣ |
| «الثلث والثلث كثير...» | سعد بن أبي وقاص، ابن عباس | ٢٢/١٣، ٢٤، ٢٦، ٢٨، ٥٣، ٥٩/١٨، ٦٠ |
| «ثم أباك ثم الأقرب فالأقرب» | معاوية بن حيدة | ٣٢٧/٨، ٨٨/١٦ |
| «ثم أبوك» | أبو هريرة | ٨٧/١٦ |
| «ثم احبس الماء حتى يرجع إلى الجدر» | عروة بن الزبير | ٢٤٠/١٢ |
| «ثم ارفع حتى تعتدل قائمًا» | أبو هريرة | ٥٤٣/٣، ٦١٨ |
| «ثم اركع حتى تطمئن راكعًا» | أبو هريرة | ٥١٦/٣ |
| «ثم اسجد حتى تطمئن ساجدًا» | أبو هريرة | ٥٩٥/٣، ٦١٧ |
| «ثم التفت إلى فقال: يا محمد...» | عبد الله بن عباس | ٢٨ /٣ |
| «ثم أمك» | معاوية بن حيدة، أبوهريرة | ٣٢٦/٨، ٨٧/١٦ ، ٨٨ |
| «ثم أن تزني بحليلة جارك» | ابن مسعود | ١٣٩/١٦ |
| «ثم أن تقتل ولدك أجل أن يطعم معك» | ابن مسعود | ١٣٩/١٦ |
| «ثم إن زنت فبيعوها ولو بضفير» | أبو هريرة وزيد بن خالد | ٢٥٦/١٧ |
| «ثم إن شرب فاقتلوه» | قبيصة بن ذؤيب | ٤٧٥/١٧ |
| «ثم بنو ساعدة» | أبو أسيد الأنصاري | ٣٦١/١٣ |
| «ثم جاء الوحي بعد وتتابع» | جابر بن عبد الله | ٥٠٨/١٣ |
| «ثم الجهاد في سبيل الله» | أبو هريرة | ٥١٣/١٨ |
| «ثم حج مبرور» | أبو هريرة | ٥١٣/١٨ |
| «ثم حجّي واصنعي ما يصنع الحاج...» | جابر بن عبد الله | ٦/١٠ |
| «ثم حمي الوحي بعد وتتابع...» | جابر بن عبد الله | ٢٠/١٨ |
| «ثم رفعت إلى سدرة المنتهى» | مالك بن صعصعة | ٢٩١/٢ |
| «ثم صلى بي الغد الظهر حين كان ظل كل شيء مثله...» | عبد الله بن عباس | ٢٨/٣ |
| «ثم عقوق الوالدين» | عبد الله بن عمر | ٨٢/٢٠ |
| «ثم فتح بيت المقدس» | عوف بن مالك | ١٣٢ /١٩ |
| «ثم فتر الوحي عني...» | جابر بن عبد الله | ٥٠٧/١٣، ٢١/١٨ |

| | | |
|---|---|---|
| «ثم فى كل ما زادت مائة شاة شاة...» | - | ٦٦/٨ |
| «ثم قم فاستقبل القبلة» | يحيى الزرقى عن عمه | ٦٠٥/٤ |
| «ثم كالذى يهدى الدجاجة ثم كالذى يهدى البيضة» | أبو هريرة | ٢٣١/٢٠ |
| «ثم كذلك فى كل ركعة وسجدة» | أبو هريرة | ٤٥٧/٣ |
| «ثم ليتخير أحدكم من الدعاء أعجبه...» | عبد الله بن مسعود | ٦/٤ |
| «ثم ماذا؟» | محارب بن دثار | ٢٠٩/١٥ |
| «ثم المسجد الأقصى» | أبو ذر | ١٣٨/٥ |
| «ثم هى لكم منى» | طاوس | ٢٠٤/١٢ |
| «ثم يأذن له فى دخول الجنة...» | أبو هريرة | ١٠٠/٢٠ |
| «ثم يجلس فيقول: فعلت بصاحبتى كذا...» | أبو هريرة | ٣٥١/١٤ |
| «ثم يخلف بعدهم خلف تسبق شهادة أحدهم...» | عبد الله | ٤٧٧/٢٠ |
| «ثم يسلم على أخيه من على يمينه وشماله» | جابر بن سمرة | ٦٧/٤ |
| «ثم يعتق» | ابن عمر | ٣١٦/٢١ |
| «ثم يغسل قدميه إلى الكعبين كما أمره الله» | عمرو بن عبسة | ٢١٧/١ |
| «ثم اليمين الغموس» | عبد الله بن عمر | ٨٢/٢٠ |
| «ثمانية منهم تكفيهم الدبيلة....» | حذيفة | ١٠٧/١٧ |
| «ثمن الكلب خبيث...» | عبد الله بن عباس | ٥٤/١ |
| «ثنتان فى الناس وهما بهم كفر النياحة والطعن فى النسب» | أبو هريرة | ٤٦٨/٧ |
| «ثنتان لا تردان- أو قلما تردان - الدعاء عند النداء» | سهل بن سعد | ١١٤/٧، ١١٥ |
| «ثنتان هى فى الناس كفر...» | أبو هريرة | ٢١٨/٢١ |
| «الثيب أحق بنفسها من وليها» | ابن عباس | ١١٣/١٤ |
| «الثيب أحق بنفسها» | ابن عباس | ١٢١/١٤ |
| «الثيب تعرب عن نفسها...» | عدى الكندى | ١٣٥/١٤ |


## (الجيم)


| | | |
|---|---|---|
| «جاء الحق وزهق الباطل...» | أبو هريرة | ٣٨٢/١٨ |

| | | |
|---|---|---|
| «جاءكم أبو طلحة غرة الإسلام بين عينيه» | أنس | ٤٧٨/٧ |
| «جاءنى رجلان فجلس أحدهما عند رأسى» | عائشة | ٤٨٣/١٦ |
| «جاءه مصدق الله ومصدق رسوله...» | وائل بن حجر | ٢٦١/٨ |
| «الجار أحق بسقبه» | الشريد بن سويد | ٨٠/١٢، ٨١ |
| «الجار أحق بسقبه» | أبو رافع | ٨١/١٢، ٨٢ |
| «الجار أحق بشفعة أخيه...» | جابر بن عبد الله | ٨٣/١٢ |
| «الجالب مرزوق والمحتكر ملعون» | عمر بن الخطاب | ٤١٥/١١، ٤١٦ |
| «جامعوهن فى البيوت واصنعوا...» | أنس بن مالك | ٤١٨/٢ |
| «جاهدوا...» | أنس | ٧٠/١٨ |
| «الجاهر بالقرآن كالجاهر بالصدقة...» | عقبة بن عامر الجهنى | ٣٨٠/٥ |
| «جائزته يوم وليلة» | - | ٤٨/١٩ |
| «الجذع من الضأن يجزى من الأضاحى» | رجل من جهينة | ٢٧٩/١٩ |
| «الجذعة تجزى مما تجزى منه الثنية» | رجل من أصحاب النبى ﷺ | ٢٨٢/١٩ |
| «الجراد من صيد البحر» | أبو هريرة | ٣٧٤/١٠ |
| «جرح العجماء جبار والبئر جبار...» | أبو هريرة | ٢٥٤/٨ |
| «جرح العجماء جبار والبئر جبار...» | أبو هريرة | ٥٧٣/١٧ |
| «الجرس مزامير الشيطان....» | أبو هريرة | ٥٣٣/١٠ |
| «جزاك الله خيرًا يا على...» | أبو سعيد الخدرى | ٥٥٣/١١ |
| «جزاك الله يا عائشة عنى خيرا...» | عائشة | ٥١٥/١٥ |
| «جزوا الشوارب...» | أبو هريرة | ٤٢٨/١ |
| «جعل الله الحق على لسان عمر وقلبه» | عمر بن عبد العزيز | ١١٠/١٣ |
| «جعلت لى الأرض طيبة طهورًا...» | جابر بن عبد الله | ١٤٦/٥ |
| «جعلت لى تربتها طهورًا» | حذيفة | ٢٠٠/٢ |
| «جلد مائة وتغريب عام» | زيد بن خالد | ٢٣١/١٧ |
| «جمرة بين كتفيك تقلدتها...» | عبادة بن الصامت | ١٤١/١٢ |
| «جمرة عظيمة» | مرة الثقفى | ٢٢١/٨ |
| «جمع بين الصلاتين من غير عذر من الكبائر» | ابن عباس | ٢٢١/٦ |
| «الجمعة حق واجب على كل مسلم...» | طارق بن شهاب | ٢٣١/٦ |

| | | |
|---|---|---|
| «الجمعة على من سمع النداء» | عبد الله بن عمرو | ٢٣٣/٦ |
| «الجمعة واجبة إلا على امرأة...» | تميم الدارى | ٢٥٨/٦ |
| «الجمعة واجبة إلا على ما ملكت أيمانكم أو ذى علة» | ابن عمر | ٢٦٠/٦ |
| «الجمعة واجبة على كل حالم إلا على أربعة...» | مولى لآل الزبير | ٢٥٩/٦ |
| «الجمعة واجبة على كل قرية...» | أم عبد الله الدوسية | ٢٤٧/٦، ٢٤٨ |
| «الجمعة واجبة على كل مسلم إلا على مملوك أو امرأة أو صبى أو مريض» | طارق بن شهاب | ٢٥٨/٦ |
| «جنبوا مساجدكم صبيانكم ومجانينكم...» | أبو الدرداء، واثلة، أبوأمامة | ٢٩٨/٢٠ |
| «الجنة أقرب إلى أحدكم من شراك نعله والنار مثل ذلك» | عبد الله ابن مسعود | ١٤١/٧ |
| «الجنة تحت ظلال السيوف» | أبو موسى | ١٥٣/١٨ |
| «الجهاد فى سبيل الله...» | أبو سعيد | ٥١٩/١٨ |
| «جهاد الكبير والضعيف والمرأة الحج والعمرة» | أبو هريرة | ٢٧٨/٩، ٧٩/١٨ |
| «الجهاد واجب عليكم مع كل أمير...» | أبو هريرة | ٨٢/٦، ٦٢/١٧، ١٨/ ٥١١ |
| «جهاد كن الحج» | عائشة | ٢٠٥/٩، ٧٢/١٨ |
| «جهد المقل وابدأ بمن تعول» | أبو هريرة | ٣٣١/٨ |
| «جهد من مقل» | عبد الله بن حبشى | ٣٣١/٨، ٥٣٩ |
| «جوف الليل الآخر» | عمرو بن عبسة | ٢٠٤/٥، ٣٥٥ |


## (الحاء)


| | | |
|---|---|---|
| «الحاج والعمار وفد الله» | أبو هريرة | ٥٦٣/١٠ |
| «حاجتك؟» | عبد الله بن السعدى | ٥٩/١٨ |
| «حاجتك من خير حوائجهم...» | عبد الله بن السعدى | ٥٩/١٨ |
| «حار» | أسماء بنت عميس | ٥٣٣/١٩ |

| | | |
|---|---|---|
| «حافظ على الصلوات الخمس» | فضالة | ٢٩٥/٣ |
| «حب الأنصار إيمان...» | أبو هريرة | ٥٠٧/١٤ |
| «حب الأنصار التمر» | أنس | ٣٩٦/١٩ |
| «حبِّس الأصل وسبِّل الثمرة» | ابن عمر | ٢٦٩/١٢ |
| «حبِّس أصلها وسبِّل ثمرتها» | مالك بن أنس | ٢٧٣/١٢ |
| «حبسهم العذر» | أنس بن مالك | ٨٣/١٨ |
| «حتى الآن يا أبيّ» | أبى بن كعب | ٤٨٧/١١ |
| «حتى تبرأ» | عبد الله بن عمرو، ابن عباس | ٢٨٧/١٦ |
| «حتى تبرأ» | جابر | ٢٨٤/١٦ |
| «حتى تحمر» | أنس بن مالك | ١١٤/١١ |
| «حتى تقاتلوا الترك...» | أبو هريرة | ٥٧٨/١٨ |
| «حتى توافونى بالصفا» | أبو هريرة | ٣٨١/١٨ |
| «حتى توضع بالأرض» | أبو هريرة | ٣٤٦/٧ |
| «حتى لا يبغى أحد على أحد» | عياض بن حمار | ١٨٠/٢١ |
| «حتى يأذن أو يترك» | ابن عمر | ٣١٦/١٤ |
| «حتى يبلغ الغلام وتحيض الجارية» | عبادة بن الصامت | ٤١٨/١٨ |
| «حتى يقضوا أكلهم» | عمارة بنت كعب | ١٤٢/٩ |
| «حُتِّيه ثم اقرصيه بالماء...» | أسماء بنت أبى بكر | ٣٩/١، ٤٠٦، ٢٣٦/٢، ٥٩/٥ |
| «الحج جهاد والعمرة تطوع» | أبو صالح الحنفى | ٢٧٣/٩ |
| «حج حجة الإسلام ثم حج لنذرك بعد» | ابن عباس | ٢٣٨/٩ |
| «الحج عرفات....» | عبد الرحمن بن يعمر | ٦٩/١٠ |
| «الحج عرفة» | عبد الرحمن بن يعمر | ٢٥٥/١٠ |
| «حج عن أبيك واعتمر» | أبو رزين العقيلى | ٢١٢/٩ |
| «حج عن نفسك ثم احجج عن شبرمة» | ابن عباس | ٢٣٨/٩ |
| «الحج والعمرة فريضتان واجبتان» | جابر | ٢٧٨/٩ |
| «الحج يوم عرفة...» | عبد الرحمن بن يعمر | ١٨٥/١٠، ٢٥٥ |
| «حججت عن نفسك» | ابن عباس | ٢٣٦/٩ |

| | | |
|---|---|---|
| «الحجر الأسود من حجارة الجنة» | أنس بن مالك | ٥٣٣/٩ |
| «حجران للصفحتين...» | سهل بن سعد | ٣٤٥/١ |
| «حجة لمن لم يحج خير من عشر غزوات» | عبد الله بن عمرو بن العاص | ٢٣٠/٩ |
| «حجوا قبل ألا تحجوا» | أبو هريرة | ٢٤٧/٩ |
| «حجى عن أبيك» | على | ٣٤/١٤ |
| «حجى عنه» | الفضل بن عباس | ٢٠٩/٩ |
| «حجى عنها» | بريدة | ٥٨٦/٨ |
| «حجى واشترطى...» | ضباعة بنت الزبير، عائشة | ٤٢١/١٠، ٤٢٦، ١٤/ ١٧٨ |
| «حجى واشترطى أن محلى حيث حبستنى» | ضباعة بنت الزبير، عروة بن الزبير | ٤٢٠/١٠، ٤٢٢، ٤٢٥، ٤٢٦ |
| «حد الساحر ضربة بالسيف» | جندب | ٤٨٧/١٦ |
| «حدثنى جبريل أن لا ميراث لهما» | الحارث بن عبد | ٤٣٧/١٢ |
| «الحدود كفارة...» | البخارى | ٥٢٤/١٧ |
| «حذف السلام سنّة» | أبو هريرة | ٧٢/٤ |
| «حر وعبد» | عمرو بن عبسة السلمى | ٢٠٢/٥، ٣٥٢/١٣ |
| «حرام شف ما لم يضمن» | عبد الله بن عمرو | ٢٦٧/١١ |
| «حرام لا يعضد شجرها...» | أبو هريرة | ٣٣٤/١٠ |
| «الحرب خدعة» | جابر، كعب بن مالك | ٤٧١/١٣، ٤٧٣، ١٨/ ٤٩٣ |
| «حرر رقبة» | سعيد بن المسيب | ٤٢٠/١٥ |
| «حرم أو هدم المتعة النكاح والطلاق...» | أبو هريرة | ٣٩٨/١٤ |
| «حرمت التجارة فى الخمر» | عائشة | ٣٥٤/١١ |
| «حرمت النار على عين دمعت من خشية الله» | أبو ريحانة | ٤٩٠/١٨ |
| «حرمت النار على عين غضت عن محارم الله» | أبو ريحانة | ٤٩٠/١٨ |
| «حرمة نساء المجاهدين على القاعدين...» | بريدة | ٥٧١/١٨ |
| «الحرير والذهب حرام على ذكور أمتى...» | عقبة بن عامر، أبو موسى الأشعرى | ٥٢٥/٦، ٢٠٧/٨ |

| | | |
|---|---|---|
| «حريم البئر أربعون ذراعًا من جوانبها كلها» | أبو هريرة | ٢٤٥/١٢ |
| «حريم البئر العادية خمسون ذراعًا...» | سعيد بن المسيب | ٢٤٧/١٢ |
| «حسابكما على الله أحدكما كاذب...» | ابن عمر | ٢٢٩/١٥، ٤٥٠، ٤٥٨، ٤٧٣ |
| «الحسب المال والكرم التقوى» | سمرة | ١٧٣/١٤ |
| «حسبكن الحج» | عائشة | ٢٠٥/٩، ٧٢/١٨ |
| «حسن- لهذا اللهو مرتين- ارمو فإنه كان لكم أب يرمى...» | سلمة بن الأكوع | ٢١/٢٠ |
| «حشت خاتمها مسكًا والمسك أطيب الطيب» | أبو سعيد الخدرى | ٢٥٦/٧ |
| «حق الزوج على زوجته...» | أبو سعيد الخدرى | ١٠٥/١٥ |
| «حق الضيافة ثلاثة أيام... » | أبو سعيد | ٤٩/١٩ |
| «حق على كل مسلم أن يغتسل فى كل سبعة أيام...» | أبو هريرة | ٢٧٣/٦ |
| «حق على كل مسلم فى كل سبعة أيام...» | أبو هريرة | ٣٧٦/٢ |
| «حق الغريم وبرئ منها الميت» | جابر | ٥٥٥/١١، ٥٥٦، ٥٥٩ |
| «حق المسلم على المسلم خمس» | أبو هريرة | ٢٠٢/٧ |
| «حق المسلم على المسلم ست» | أبو هريرة | ٢٨٢/١١، ٣١٣/٢٠ |
| «حق وليس هو أن تذبحه غراة من غراة...» | زيد بن أسلم عن رجل عن أبيه أو عمه | ٤١٨/١٩ |
| «حقا؟» | أبو رمثة | ٥٧٩/١٧ |
| «حقت محبتى للمتحابين فى...» | عبادة بن الصامت | ١٧٣/٢١ |
| «حكمت بحكم الله» | أبو سعيد الخدرى | ٢١٢/١٨ |
| «حكمت بحكم الملك» | أبو سعيد الخدرى | ٢١٢/١٨ |
| «حكيه بضلع واغسليه بماء وسدر» | أم قيس بنت محصن | ٦١/٥ |
| «حلال» | خزيمة بن ثابت | ٣٥٩/١٤ |
| «الحلال بين والحرام بين...» | النعمان بن بشير | ٩ ٨/١١ |
| «حلال بيّن وحرام بيّن وشبهات بين ذلك» | النعمان بن بشير | ٢٣٣/١١ |
| «الحلال ما أحل الله فى القرآن...» | سلمان | ٤٤٢/١٩ |

| | | |
|---|---|---|
| «الحلال ما أحل الله فى كتابه والحرام ما حرم الله...» | سلمان الفارسى | ٦١٦/١٩ |
| «حلبها على الماء وإعارة دلوها....» | عبيد بن عمير | ٣٤٠/٨ |
| «الحلف حنث أو ندم» | ابن عمر | ٦٧/٢٠ |
| «الحلف منفقة للسلعة ممحقة للربح...» | أبو هريرة | ١١/١١ |
| «الحل كله» | ابن عباس | ٢٦٢/٩ |
| «الحل كله» | جابر | ٢٦٩/٩ |
| «حل ما ردت عليك قوسك» | عقبة بن عامر، حذيفة ابن اليمان | ٢٠٠/١٩ |
| «حلوه ليصلى أحدكم نشاطه فإذا أفتر فليقعد...» | أنس بن مالك | ٣٩٦/٥ |
| «﴿الحمد لله﴾ أم القرآن» | أبو هريرة | ٦١٢/٤ |
| «الحمد لله أو: إن الحمد لله نستعينه ونستغفره...» | عبد الله بن مسعود | ٢٠٥/١٤ |
| «الحمد لله حمدا كثيرا طيبا...» | أبو أمامة | ٨٦/١٥ |
| «الحمد لله رب العالمين سبع آيات» | أبو هريرة | ٤١٣/٣ |
| «﴿الحمد لله رب العالمين﴾ سبع آيات بـ﴿بسم الله الرحمن الرحيم﴾». | أبو هريرة | ٦١٢/٤ |
| «الحمد لله كثيرا طيبا...» | أبو أمامة | ٨٥/١٥ |
| «الحمد لله الذى أنقذه بى من النار» | أنس | ١٩١/٧، ٤١٣/١٢ |
| «الحمد لله الذى كفانا وأروانا...» | أبو أمامة | ٨٦/١٥ |
| «الحمد لله الذى نجى فاطمة من النار...» | ثوبان | ٢٠٦/٨ |
| «الحمد لله الذى وفق رسول رسول الله لما يرضى رسول الله » | أصحاب معاذ من أهل حمص ومعاذ بن جبل | ٣٣٥/٢٠ |
| «الحمد لله نحمده ونستعينه نستغفره..» | نبيط بن شريط | ٣٤٧/٦ |
| «الحمد لله نحمده ونستعينه نعوذ بالله من شرور أنفسنا...» | عبد الله بن مسعود | ٣٤٥/٦ |
| «الحمد لله نحمده ونستعينه ونستغفره...» | عبد الله | ٣٤٤/٦ |
| «الحمد لله نستعينه ونستغفره...» | ابن مسعود | ٢٠٧/١٤ |

| | | |
|---|---|---|
| «الحمد لله وسبحان الله ولا إله إلا الله...» | عبد الله بن أبى أوفى | ٦٢٤/٤ |
| «الحمو الموت» | عقبة بن عامر | ٣٨/١٤ |
| «الحمى من فيح جهنم» | ابن عمر | ١٨٦/٢ |
| «حوسب رجل ممن كان قبلكم» | أبو مسعود | ٣١٧/١١ |
| «حيثما كنتم فأحسنوا عبادة الله...» | أبو هريرة | ٥٧/١٨ |
| «حين تحمر» | أنس | ١٣١/١١ |
| «حين يخرج أحدكم من بيته إلى مسجده...» | أبو هريرة | ٥٢٠/٥ |
| «حى على الفلاح حى على الفلاح فإن كان صلاة الصبح» | أبو محذورة | ١٨٤/٣ |
| «الحية فاسقة والعقرب فاسقة والفأرة فاسقة....» | عائشة | ٤٣١/١٩ |
| «الحية والعقرب والفويسقة ويرمى الغراب...» | أبو سعيد الخدرى | ٤٣١/١٩، ٤٣٢ |


## (الخاء)


| | | |
|---|---|---|
| «الخال وارث» | أبو هريرة | ٤٤١/١٢، ٤٤٢ |
| «الخال وارث من لا وارث له» | المقدام | ٤٤١/١٢ |
| «خالفوا المشركين...» | عبد الله بن عمر | ٤٢٧/١ |
| «خالفوا اليهود فإنهم لا يصلون فى خفافهم ولا نعالهم» | شداد بن أوس | ١٣٥/٥ |
| «الخالة بمنزلة الأم» | البراء | ٩٥/١٦، ٩٦ |
| «خبأت لك هذا يا أبا مسور...» | ابن أبى مليكة | ٥٢٠/٦ |
| «خبيثة من الخبائث» | أبو هريرة | ٤٦٣/١٩ |
| «الختان سنة للرجال مكرمة للنساء» | أسامة، أبو أيوب، ابن عباس | ٥١٠/١٧، ٥١١ |
| «خذ» | أنس بن مالك | ٣٣/١٠ |
| «خذ بيدى يا فضل» | الفضل بن عباس | ٥٥٧/١١ |
| «خذ الحب من الحب...» | معاذ بن جبل | ١٠٧/٨ |
| «خذ الدية» | وائل بن حجر | ٢٥٤/١٦ |
| «خذ الدية بارك الله لك فيها» | جارية بن ظفر | ٢٨٢/١٦ |

| | | |
|---|---|---|
| «خذ فأعطهم» | أبو هريرة | ١٧٦/٥، ١٦/١٤ |
| «خذ فى قلاص الصدقة» | عبد الله بن عمرو | ٨٣/١١ |
| «خذ ما أسفلت» | عبد الله بن أبى ربيعة | ٣١١/١١ |
| «خذ ما أعطيتها ولا تزدد» | عكرمة | ١٨٣/١٥ |
| «خذ منها» | حبيبة بنت سهل | ١٧٩/١٥ |
| «خذ هذا خذ فأطعمه ستين مسكينًا» | أبو هريرة | ١٣٩/٢٠ |
| «خذ هذا الدم فادفنه...» | سفينة | ٥٥٤/١٣ |
| «خذ هذا فأطعمه ستين مسكينا» | أبو هريرة | ٤٩٣/٨ |
| «خذ هذا فاقسمه» | عكرمة | ٤١٧/١٥ |
| «خذ هذا فتصدق به» | سعيد بن المسيب، | ٤٨٩/٨، ٤٩٤، ٤٩٥، |
| | أبوهريرة | ٥٧/١٦ |
| «خذ هذا فتصدق به كفارة لما صنعت» | أبو هريرة | ٤٩٢/٨ |
| «خذه» | أبو سعيد الخدرى | ٣٥٢/٦ |
| «خذه» | عمير مولى آبى اللحم | ٥٨٣/١٩ |
| «خذه أنت وأهل بيتك» | خولة | ٤١٨/١٥ |
| «خذه باسم الله وبركته» | عطاء الخراسانى | ٣٣٢/١٣ |
| «خذه فأطعمه أهلك» | أبو هريرة | ٤٨٠/٨ |
| «خذه فتصدق به» | أبو هريرة | ٤٨٦/٨، ٤١٩/١٥، ١٦/ |
| | | ٥٧، ١٣٧/٢٠ |
| «خذه فتموله أو تصدق به...» | عبد الله بن السعدى، | ٣٤٤/١٢، ٣٤٥، ١٣/ |
| | عمر بن الخطاب | ٣٠٥ |
| «خذه واستغفر الله وأطعمه أهلك» | أبو هريرة | ٤٨٦/٨، ٤٢٠/١٥، ٢٠/ |
| | | ١٣٧ |
| «خذه وما جاءك من هذا المال....» | عمر بن الخطاب | ٣٩٦/٨ |
| «خذها فأطعمه عنك» | أبو هريرة | ٤٨٠/٨ |
| «خذها فإنما هى لك أو لأخيك أو للذئب» | زيد بن خالد الجهنى | ٣٦٠/١٢، ٣٦١ |
| «خذوا خذوا قد جعل الله لهن سبيلا...» | الحسن | ١٤٧/١٧ |
| «خذوا ساحل البحر حتى تلقونى» | أبو قتادة | ٣١٥/١٠ |
| «خذوا الشيطان (أمسكوا الشيطان)...» | أبو سعيد | ٢١٤/٢١ |

| | | |
|---|---|---|
| «خذوا عنى قد جعل الله لهن سبيلا...» | عبادة بن الصامت | ١٤٦/١٧، ١٨٥ |
| «خذوا عنى مناسككم» | جابر بن عبد الله | ١٠٢/١٠ |
| «خذوا ما بال عليه من التراب...» | عبد الله بن معقل | ١٢٧/٥ |
| «خذوا ما تعرفون ودعوا ما تنكرون» | سهل بن سعد | ٥٩١/١٦ |
| «خذوا ما وجدتم وليس لكم إلا ذلك» | أبو سعيد | ١١/ ١٣٥، ٤٧٦ |
| «خذوه فأتونى به» | رافع بن عمرو الغفارى، وأبو جبير | ٥٨٢/١٩، ٥٨٣ |
| «خذوها وما حولها من السمن فاطرحوه» | ميمونة بنت الحارث | ٥٥٦/١٩ |
| «خذوها وما حولها وكلوا سمنكم» | ميمونة بنت الحارث | ٥٥٦/١٩ |
| «خذى بالمعروف ما يكفيك ويكفى بنيك» | عائشة | ٤٢٣/٢٠ |
| «خذى ثوبك» | سعيد بن زيد | ٥٥٥/١٤ |
| «خذى فرصة من مسك» | عائشة | ٦٤/٢ |
| «خذى ما يكفيك وبنيك بالمعروف» | عائشة | ٤١٩/٢٠ |
| «خذى ما يكفيك وولدك بالمعروف» | عائشة | ٥٠/١٦، ٧٦، ٢٩٦/٢١، ٢٩٧ |
| «خذيها واشترطى لهم الولاء...» | عائشة | ٣٧٥/٢١، ٤٩٨ |
| «الخراج بالضمان» | عائشة | ١٨٩/١١، ١٩٢ |
| «خربت خيبر...» | أنس بن مالك | ٢٠٨/٤، ٥٠٤/١٨ |
| «خرجت من نكاح غير سفاح» | جعفر بن محمد عن أبيه | ٣٤٠/١٤ |
| «خروج الإمام يوم الجمعة للصلاة...» | أبو هريرة | ٢٨٦/٦ |
| «خطوتان إحداهما أحب الخطا إلى الله عز وجل...» | معاذ بن جبل | ٣٨٧/٤ |
| «خُفف على داود القرآن فكان يأمر...» | أبو هريرة | ١٤٦/١٢ |
| «خلق الله آدم من أديم الأرض كلها...» | أبو موسى | ٩/١٨ |
| «خلق الله آدم من قبضة قبضها» | أبو موسى | ٩/١٨ |
| «خلق الله التربة يوم السبت...» | أبو هريرة | ٧/١٨ |
| «خلق حسن» | أسامة بن شريك | ٥٢٢/١٩ |
| «خلقت الملائكة من نور...» | عائشة | ١٠/١٨ |

| | | |
|---|---|---|
| «خلقى عقرى ما أراها إلا حابستكم» | عائشة | ٣١٢/٩ |
| «خلل أصابعك وأسبغ...» | لقيط بن صبرة | ٦/٩ |
| «خلوا بينهم وبين ما يبتغون...» | جابر بن عتيك | ١٩٣/٨ |
| «خلوا سبيلهم حتى يبلغوا...» | أبى بن كعب | ٣٥١/١٨ |
| «خلوا عنه؛ فليس لكم عليه سبيل» | جابر بن عبد الله | ٤٧٨/١١ |
| «خلُّوا عنها وعروها فإنها ملعونة» | عمران بن حصين | ٥٣٦/١٠ |
| «خلوف فم الصائم أطيب» | أبو هريرة | ٤٧/٩ |
| «خمِّرْ عليك أما علمت أن الفخذ عورة؟!» | جرهد | ٢٠١/٤ |
| «الخمر ما خامر العقل» | عمر بن الخطاب | ٣٩٥/١٧ |
| «الخمر من هاتين الشجرتين؛ النخلة والعنبة» | أبو هريرة | ٣٩٧/١٧ |
| «خمروا وجوه موتاكم ولا تشبهوا بيهود» | عبد الله بن عباس | ٢٢٢/٧ |
| «خمس تجب للمسلم على أخيه...» | أبو هريرة | ٣٦٩/٦ |
| «خمس تجب للمسلم على أخيه...» | الزهرى | ٧/١٥ |
| «خمس صلوات افترضهن الله...» | عبادة بن الصامت | ١٦٥/٤، ١٣٦/٧ |
| «خمس صلوات فرضهن الله على العباد من أتى بهن...» | عبادة بن الصامت | ٢٤٢/٥ |
| «خمس صلوات فى اليوم والليلة...» | طلحة بن عبيد الله | ١٤/٣، ٢٤٠/٥ |
| «خمس صلوات كتبهن الله عز وجل على عباده...» | عبادة بن الصامت | ١٤/٣ |
| «خمس صلوات كتبهن الله على العباد» | عبادة بن الصامت | ٣١٤/٣، ٢٤٢/٥، ٢١/ ١٢٢ |
| «خمس فواسق يقتلن فى الحرم...» | عائشة | ٤٣٠/١٩ |
| «خمس فواسق يقتلن فى الحل والحرم...» | عائشة | ٣٨٣/١٠، ٤٣٠/١٩، ٤٣١ |
| «خمس قتلهن حلال فى الحرم؛ الحية والعقرب» | أبو هريرة | ٣٨٦/١٠ |
| «خمس من الدواب كلها فاسق يقتلن فى الحرم؛ الغراب...» | عائشة | ٣٨٢/١٠، ٣٨٣ |

| | | |
|---|---|---|
| «خمس من الدواب كلهن فواسق لا جناح على من قتلهن؛ العقرب...» | حفصة | ٣٨٥/١٠ |
| «خمس من الدواب لا جناح على من قتلهن فى الحل والحرم؛ الغراب...» | عبد الله بن عمر | ٣٨٥/١٠ |
| «خمس من الدواب لا جناح فى قتلهن...» | ابن عمر | ٤٣٠/١٩ |
| «خمس من الدواب ليس على المحرم فى قتلهن جناح؛ الغراب» | عبد الله بن عمر | ٣٨٤/١٠، ٤٢٩/١٩ |
| «خمس يقتلن فى الحل والحرم؛ الحية» | عائشة | ٣٨٣/١٠ |
| «خمسة أذرع» | عائشة | ٥٨٠/٩ |
| «خوف أو مرض» | ابن عباس | ٥٦٠/٥، ٢٦٢/٦ |
| «خيار أئمتكم الذين تحبونهم ويحبونكم...» | عوف بن مالك | ٥٦٤/١٦ |
| «الخيار ثلاثة أيام» | ابن عمر | ٤٠/١١ |
| «خياركم ألينكم مناكب فى الصلاة» | ابن عباس | ٢٥/٦ |
| «خياركم محاسنكم قضاء» | أبو هريرة | ٣٠٣/١١ |
| «خياركم من شراركم» | أبو زهير الثقفى | ٣٦٥/٢٠ |
| «خير الأصحاب أربعة...» | ابن عباس | ٥١٢/١٨ |
| «خير أمتى القرن الذى بعثت فيه..» | عمران بن حصين | ٤٧٨/٢٠ |
| «خير خصال الصائم السواك» | عائشة | ٤١/٩ |
| «خير الخيل الأدهم الأقرح...» | أبو قتادة | ٢٢٢/١٣ |
| «خير الدواء السعوط واللدود والحجامة...» | الشعبى | ٥٣٢/١٩ |
| «خير دور الأنصار بنو النجار...» | أبو أسيد الأنصارى | ٣٦١/١٣ |
| «خير الطلاق أيسره» | عقبة بن عامر | ٤٧٧/١٤ |
| «خير الصدقة ما كان عن ظهر غنى...» | حكيم بن حزام، أبوهريرة | ٣٣٠/٨، ٥١/١٦ |
| «خير الصدقة ما كان منها عن ظهر غنى» | أبو هريرة | ٦١/١٦ |
| «خير صفوف الرجال الأول وخير صفوف النساء الصف الآخر» | أبو سعيد الخدرى | ١٨٥/٤ |
| «خير صفوف الرجال أولها وخير صفوف النساء آخرها» | أنس | ٢٦/٦ |

| | | |
|---|---|---|
| «خير صفوف الرجال أولها وشرها آخرها» | أبو هريرة | ٥/٦٠٣، ٦/١٤ |
| «خير صلاة المرء فى بيته إلا المكتوبة» | زيد بن ثابت | ٤/٩٩ |
| «خير الضحايا الكبش الأقرن...» | عبادة بن الصامت، أبو أمامة | ١٩/٢٩٠ |
| «خير الكفن الحلة وخير الأضحية الكبش الأقرن» | عبادة بن الصامت | ٧/٢٤٩ |
| «خير ما تحتجمون فيه...» | ابن عباس | ١٩/٥١٠ |
| «خير ما تداويتم به الحجامة...» | أنس | ١٩/٤٩٩، ٥٠٠ |
| «خير ما تداويتم به السعوط...» | ابن عباس | ١٩/٥٣٣ |
| «خير مال المرء مهرة مأمورة...» | سويد بن هبيرة | ٢٠/١٦٧ |
| «خير مساجد النساء قعر بيوتهن» | أم سلمة | ٦/١١٤ |
| «الخير معقود بنواصى الخيل...» | عروة بن أبى الجعد | ١٨/١٧٧ |
| «الخير معقود بنواصى الخيل إلى يوم القيامة» | عروة البارقى | ١٢/٩٧، ٩٨، ١٣/٢١٩ |
| «الخير معقود فى نواصى الخيل إلى يوم القيامة» | أبو هريرة، عروة البارقى | ١٣/٢٢١، ٢٠/١٤ |
| «خير من أن تكفأ إناءك» | رجل من بنى ضمرة عن أبيه | ١٩/٤٢١ |
| «خير الناس قرنى ثم الذين يلونهم...» | عبد الله بن مسعود، عمران بن حصين | ٢٠/٤٧٧، ٣٦٣ |
| «خير نساء ركبن الإبل...» | أبو هريرة | ١٥/١١١ |
| «خير نسائكم الودود الولود...» | أبو أذينة الصدفى | ١٤/١١ |
| «خير نسائها مريم بنت عمران...» | على | ١٣/٣٤٦ |
| «خير يوم طلعت عليه الشمس يوم الجمعة...» | أبو هريرة | ٦/٤٥٧ |
| «خير يوم طلعت فيه الشمس...» | أبو هريرة | ٦/٤٥٥، ٤٥٨ |
| «خيرا» | ابن عباس | ١٥/٣٩٣ |
| «خيركم خيركم لأهله وأنا خيركم لأهلى» | عائشة | ١٦/٥٥ |
| «خيركم قرنى ثم الذين يلونهم...» | عمران بن حصين | ٢٠/٢٠٢، ٣٦٤ |
| «الخيل ثلاثة...» | ابن مسعود | ٢٠/٣٣، ٣٤ |
| «الخيل ثلاثة: هى لرجل وزر...» | أبو هريرة | ٨/١٣١ |

| | | |
|---|---|---|
| «الخيل ثلاثة؛ لرجل أجر ولرجل ستر وعلى رجل وزر...» | أبو هريرة | ١٥/٢٠ |
| «الخيل فى نواصيها الخير إلى يوم القيامة...» | أبو هريرة | ٨/٨ |
| «الخيل فى نواصيها الخير إلى يوم القيامة» | ابن عمر | ٢١٩/١٣ |
| «الخيل معقود فى نواصيها الخير إلى يوم القيامة» | عروة البارقى وجرير | ٢٢٠/١٣ |
| «الخيل معقود فى نواصيها الخير...» | عروة البارقى | ٥١٠/١٨ |


## (الدال)


| | | |
|---|---|---|
| «الدابة جرحها جبار والرجل جبار...» | أبو هريرة | ٥٧٥/١٧ |
| «الدار حرم فمن دخل علىك حرمك فاقتله» | عبادة بن الصامت | ٥٦٧/١٧ |
| «داووا مرضاكم بالصدقة وحصنوا أموالكم بالزكاة» | عبد الله بن مسعود | ١٨٩/٧ |
| «دب إليكم داء الأمم قبلكم...» | الزبير بن العوام | ١٧٢/٢١ |
| «دباغ الأديم ذكاته» | سلمة بن المحبق | ٥٩/١ |
| «دباغه طهوره» | ابن عباس | ١٠٠/٥ |
| «دباغه طهوره» | عبد الله بن عباس | ٦٨/١ |
| «دباغها طهورها» | سلمة بن المحبق | ٤٩/١، ٥٨ |
| «دباغها طهورها» | عبد الله بن عباس | ٥٠/١ |
| «دخلت امرأة النار من جرا هرة...» | أبو هريرة | ١٢٣/١٦ |
| «دخلت العمرة فى الحج إلى يوم القيامة لا صرورة» | - | ٢٣١/١٠ |
| «دخلت العمرة فى الحج إلى يوم القيامة» | سراقة بن مالك | ٢٨٣/٩ |
| «دخلت العمرة فى الحج» | جابر و ابن عباس | ٢٦٠/٩، ٣١٧ |
| «الدرهم بالدرهم» | أبو سعيد | ٦١/١١ |
| «دع داعى اللبن» | ضرار بن الأزور | ١٢٦/١٦ |
| «دع ما يريبك إلى ما لا يريبك....» | الحسن بن على | ٢٣٤/١١ |
| «دعاكم أخوكم وتكلف لكم» | أبو سعيد | ٥٨/٩ |
| «دعنا منك فقد أوذى موسى بأكثر من هذا فصبر» | عبد الله بن مسعود | ٥٩٤/١٦ |

| | | |
|---|---|---|
| «دعه فإنه لا يوافقك إنك ناقِه» | أم مبشر الأنصارية | ٥٢٣/١٩ |
| «دعه لا يتحدث الناس...» | جابر بن عبد الله | ١١١/١٨ |
| «دعه؛ فإن له أصحابا...» | أبو سعيد | ١٤/١٧ |
| «دعْه» | المغيرة بن شعبة | ٨٨/٦ |
| «دعها حتى يلقاها ربها» | زيد بن خالد الجهنى | ٣٦٠/١٢ |
| «دعها عنك فإن من القرف التلف» | فروة بن مسيك | ٥٣٥/١٩ |
| «دعها لا خير لك فيها» | ميمونة بنت كردم | ٢٠٤/١٤ |
| «دعهم يا عمر» | أبو هريرة | ٢١/٢٠ |
| «دعهما فإنى أدخلتهما طاهرتين» | المغيرة بن شعبة | ٣٣٣/٢ |
| «دعهما يا أبا بكر فإنها أيام عيد» | عائشة | ٤٣/١٤، ١٤٤/٢١ |
| «دعهن يا عمر فإن العين دامعة والنفس مصابة» | أبو هريرة | ٤٩٥/٧، ٤٩٦ |
| «دعوا الحبشة ما ودعوكم...» | رجل من أصحاب النبى ﷺ | ٥٨٠/١٨ |
| «دعوا الناس يرزق الله بعضهم من بعض» | جابر | ٢٨٣/١١ |
| «دعوتك فلم تجبنى...» | أبو سعيد ابن المعلّى | ٥٩٣/٤ |
| «دعوه» | أبو أمامة | ٥٢٧/١٨ |
| «دعوه» | أنس بن مالك | ١٢٥/٥ |
| «دعوه فإن الذى أصابه سيجىء» | عمير بن سلمة | ١٩٦/١٩ |
| «دعوه فإن لصاحب الحق مقالًا...» | عائشة، أبو هريرة | ٢٩٧/١١، ٣٨٤، ٤٨٤ |
| «دعوه فإنه يوشك أن يأتى صاحبه» | البهزى | ٣٠١/١٢، ٤٤٩/١٩ |
| «دعوه وأهريقوا على بوله سجلًا...» | أبو هريرة | ١٢٦/٥ |
| «دعوها ذميمة» | أنس | ٥٠٢/١٦ |
| «دعوها فإنها منتنة» | جابر بن عبد الله | ١١٠/١٨ |
| «دعوهما بأبى وأمى من أحبنى فليحب هذين» | زر بن حبيش | ٣٠٨/٤ |
| «دعى عمرتك وانقضى شعرك» | عائشة | ٢٩٢/٩ |
| «دعى هذا وقولى الذى كنت تقولين» | الربيع بنت معوذ | ٩٤/١٥ |
| «دلستم على» | ابن عمر | ٤١٨/١٤ |
| «دلونى على قبرها» | أبو هريرة | ٤١٧/٧ |
| «دم عفراء أحب إلى الله من دم سوداوين» | أبو هريرة | ٢٩١/١٩ |

| | | |
|---|---|---|
| «دونك صاحبك» | وائل بن حجر | ٢٥١/١٦ |
| «دونكم يا بنى أرفدة» | عائشة | ١٢٤/٢١ |
| «الدَّين» | عقبة بن عامر الجهنى | ٣١٤/١١ |
| «دين الله أحق بالقضاء» | ابن عباس | ٥٨١/٨ |
| «الدين قبل الوصية...» | على بن أبى طالب | ٢٠/١٣ |
| «الدَّين مقضى والعارية مؤداة...» | أبو أمامة | ٢٤/١٢ |
| «دينار أعطيته مسكينا ودينار أعطيته فى رقبة» | أبو هريرة | ٥٤/١٦ |
| «الدينار بالدينار» | أبو سعيد | ٥٧/١١ |
| «الدينار بالدينار لا فضل بينهما...» | أبو هريرة | ٥٦/١١ |
| «الدينار بالدينار والدرهم بالدرهم وزن بوزن» | أبو سعيد | ٥٧/١١ |
| «دية ذمى دية مسلم» | ابن عمر | ٣٩٢/١٦ |
| «الدية على العصبة...» | أسامة بن عمير | ٤٠٨/١٦ |
| «دية المجوسى ثمانمائة درهم» | عقبة بن عامر | ٣٨٩/١٦ |
| «دية المرأة على النصف من دية الرجل» | معاذ بن جبل | ٣٧١/١٦ |


## (الذال)


| | | |
|---|---|---|
| «ذا لب» | عبد الله بن عبدالرحمن ابن أبى حسين | ٣٢٦/٢٠ |
| «ذاك أبعد لك» | جابر بن عبد الله | ٣١٢/١٢ |
| «ذاك إذنها إذا سكتت» | عائشة | ١٣٣/١٤ |
| «ذاك تفريق بين كل متلاعنين» | سهل بن سعد | ٤٤٣/١٥ |
| «ذاك جبريل أتاكم يعلمكم دينكم» | عمر بن الخطاب | ١٩٩/٩ |
| «ذاك جبريل عليه السلام أتاكم يعلمكم دينكم» | عمر | ٧٢/٢١ |
| «ذاك جبريل أتانى فأخبرنى...» | أبو ذر | ٢٠/٢١ |
| «ذاك جبريل عرض لى فى جانب الحرة...» | أبو ذر | ٢٢/٢١ |
| «ذاك جبريل عليه السلام هو الذى شغلنى» | ابن عباس | ٥١٣/١٣ |
| «ذاك رجل بال الشيطان فى أذنيه» | عبد الله | ٣٨٩/٥ |
| «ذاك صوم داود» | أبو قتادة | ١٢٣/٩ |
| «ذاك صوم الدهر» | أبو قتادة | ١٢٣/٩ |

| | | |
|---|---|---|
| «ذاك فعل أهل الكتابين» | عبادة بن الصامت | ٦٢٩/٦ |
| «ذاك لهم ما شاء الله» | أنس | ٣٨٩/٢٠ |
| «ذاك لو كان وأنا حى فأستغفر لك وأدعو لك» | عائشة | ١٧٥/٧ |
| «ذاك يوم ولدت فيه» | أبو قتادة | ١٢٣/٩ |
| «ذبيحة المسلم حلال...» | الصلت | ١٨٦/١٩ |
| «ذرونى فالذى أنا فيه خير...» | ابن عباسَ | ٨٤/١٩ |
| «ذرونى ما تركتكم...» | أبو هريرة | ٩٤/٣، ٥٧٧/٨، ٩/ ٢٠٢، ٧٧/١٤، ٧٨ |
| «ذروه حتى يأتى صاحبه» | رجل من بهز | ٣١٢/١٠ |
| «ذكاة الجنين ذكاة أمه» | جابر، أبو سعيد | ٤٩٠/١٩، ٤٩٢ |
| «ذكاته ذكاة أمه...» | ابن عمر | ٤٩٣/١٩ |
| «ذكاتها دباغها» | سلمة بن المحبق | ٥٨/١ |
| «ذكرتُ وأنا فى الصلاة تبرًا عندنا...» | عقبة بن الحارث | ٥٥٥/٤ |
| «ذكرك أخاك بما يكره» | أبو هريرة | ٢٢٤/٢١ |
| «ذكره بالله...» | قهيد الغفارى | ٥٤٩/١٧ |
| «ذكى أو غير ذكى» | عبد الله بن عمرو | ١٧٩/١٩، ١٩٤ |
| «ذلك أريد أسلموا تسلموا» | أبو هريرة | ٨٨/١٩ |
| «ذلك إليك أرأيت لو كان...» | محمد بن المنكدر | ٥٩٤/٨ |
| «ذلك الربا تلك المزابنة» | سهل بن أبى حثمة | ١٤٩/١١ |
| «ذلك الربا ردوه ثم بيعوا تمرنا...» | أبو سعيد | ١٠٣/١١ |
| «ذلك رجل نجاه الله بوفائه» | رجال من قوم محمد ابن كعب القرظى وعثمان بن يهوذا | ١٦٢/١٩ |
| «ذلك شىء تجدونه فى أنفسكم» | معاوية بن الحكم | ٤٩٣/١٦ |
| «ذلك شىء يجدونه فى صدورهم...» | معاوية بن الحكم | ٢٧١/٤، ٤٩٤/١٦ |
| «ذلك صوم أخى داود» | أبو قتادة | ٧٩/٩ |
| «ذلك عرق...» | عائشة | ٣٥١/١، ٤٨٤/٢ |
| «ذلك كفل الشيطان» | أبو رافع | ٥٧٥/٣ |
| «ذلك الذى عليك فإن تطوعت بخير...» | أبى بن كعب | ٥٤/٨ |

| | | |
|---|---|---|
| «ذلك للنصارى» | أنس | ٩٩/٣ |
| «ذلك له سهم جمع» | أبو أيوب الأنصارى | ٤٢٤/٤ |
| «ذلك مال رائح» | أنس بن مالك | ٢٧٨/١٢ |
| «ذلك يوم ولدت فيه» | أبو قتادة | ٧٩/٩ |
| «ذمة المسلمين واحدة...» | على بن أبى طالب | ٨٩/١٧، ٣٠٩/١٨ |
| «الذهب بالذهب تبره وعينه» | عبادة بن الصامت | ٥١/١١ |
| «الذهب بالذهب تبرها وعينها...» | عبادة | ٩٠/١١ |
| «الذهب بالذهب والفضة بالفضة...» | أبو سعيد، عبادة بن الصامت | ٥٣/١١، ٥٦، ٧٣ |
| «الذهب بالذهب وزنًا بوزن» | فضالة بن عبيد الأنصارى | ٩٤/١١ |
| «الذهب بالذهب وزنًا بوزن...» | عبادة بن الصامت | ٥٣/١١، ٩٠ |
| «الذهب بالذهب وزنًا بوزن مثلًا بمثل...» | أبو هريرة | ٩٢/١١، ٩٣ |
| «الذهب بالورق ربًا...» | عمر بن الخطاب | ٧٠/١١، ٧١ |
| «ذهب حقك» | عطاء | ٤٥٢/١١ |
| «ذهب الظمأ وابتلت العروق...» | ابن عمر | ٥٣٤/٨ |
| «الذهب الكفة بالكفة...» | عبادة بن الصامت | ٥٤/١١ |
| «ذهب المفطرون بالأجر» | أنس بن مالك | ٥٤٧/٨ |
| «الذهب والفضة الذى خلقه الله فى الأرض» | أبو هريرة | ٢٤٨/٨ |
| «الذهب والورق بالورق إلا هاء وهاء...» | عمر | ٤٧/١١ |
| «ذو سلطان مقسط» | عياض بن حمار | ٢٤٣/٢٠ |
| «ذوائبهم كانت معلقة بالثريا يتذبذبون» | أبو هريرة | ٢٧٦/٢٠ |
| «ذيبوها» | عبد الله الديلمى عن أبيه | ٤٣٢/١٧ |
| «ذيل المرأة شبر» | أم سلمة | ٢١٦/٤ |


## (الراء)


| | | |
|---|---|---|
| «راجع امرأتك أم ركانة وإخوته» | ابن عباس | ٢٥٨/١٥ |
| «الراحمون يرحمهم الرحمن...» | عبد الله بن عمرو | ١٤٢/١٨ |

| | | |
|---|---|---|
| «رأس العقل بعد الإيمان بالله التودد إلى الناس...» | سعيد بن المسيب | ٣١٩/٢٠ |
| «رأسه أسفله» | معقل بن يسار | ٤١٥/١١ |
| «الراعى يرمى بالليل ويرعى بالنهار» | عبد الله بن عباس | ١٨٢/١٠ |
| «الراكب خلف الجنازة والماشى قريبًا منها» | المغيرة بن شعبة | ٢٩٧/٧ |
| «الراكب يسير خلف الجنازة...» | المغيرة بن شعبة | ٢٩٦/٧ |
| «الراكب يسير خلف الجنازة والماشى يمشى خلفها وأمامها» | المغيرة بن شعبة | ٣٤٢/٧ |
| «رأى عيسى ابن مريم عليهما السلام رجلًا يسرق...» | أبو هريرة | ٤٦٧/٢٠ |
| «رأيت شابا وشابة فلم آمن الشيطان عليهما» | على | ٣٤/١٤ |
| «رأيت عمرًا الخزاعى يجر قصبه فى النار...» | أبو هريرة | ٢٧٤/١٢ |
| «رأيت فى مقامى هذا كل شىء وعدتم» | عائشة | ٥٨/٧ |
| «رأيت الليلة رجلين أتيانى فأخذا بيدي...» | سمرة بن جندب | ٤٥/١١ |
| «رأيت الناس اجتمعوا فقام أبو بكر...» | عبد الله بن عمر | ٥٤٨/١٦ |
| «رأيت هذه الليلة ثم أنسيتها» | أبو سعيد الخدرى | ١٨٤/٩ |
| «رب اغفر لى رب اغفر لى» | حذيفة | ٦٠٨/٣ |
| «رب اغفر لى وارحمنى واجبرنى وارفعنى وارزقنى واهدنى» | عبد الله بن عباس | ٦٠٨/٣ |
| «رب الدابة أحق بصدرها» | معاذ بن جبل | ٥٤٧/١٠ |
| «رب عذق مذلل لابن الدحداحة فى الجنة» | جابر بن عبد الله | ٥٢٤/١١ |
| «رب عذق مذلل لابن الدحداحة فى الجنة» | سعيد بن المسيب | ٢٥٤/١٢ |
| «رُبَّ قائم حظه من قيامه السهر» | أبو هريرة | ٣٥/٩ |
| «ربِّ قِنى عذابك يوم تبعث عبادك» | البراء | ٧٧/٤ |
| «رب الملائكة والروح» | أبى بن كعب | ٤٥٨/٥ |
| «رباط يوم فى سبيل الله خير من ألف يوم...» | عثمان بن عفان | ١٣٣/١٨ |
| «رباط يوم فى سبيل الله خير من الدنيا...» | سهل بن سعد | ١٣٢/١٨ |
| «ربع المكاتبة » | على بن أبى طالب | ٤٧٧/٢١ |
| «ربنا لك الحمد» | أبو سعيد الخدرى | ٥٣٥/٣ |
| «رجل آتاه الله علمًا وآتاه مالًا...» | أبو كبشة الأنمارى | ٣٦٣/٨ |

| | | |
|---|---|---|
| «الرجل أحق بصدر دابته...» | أنس، قيس بن سعد | ٥/٥٤١، ٦/٩٥ |
| «الرجل أحق بعين ماله إذا وجده...» | سمرة بن جندب | ١١/٤٨١ |
| «رجل أو امرأة» | ابن عمر | ١٦/٤٣ |
| «الرجل جبار» | أبو هريرة | ١٧/٥٧٤ |
| «رجل كان له درهمان...» | أبو هريرة | ٨/٣٣٦ |
| «الرجل يحلف على اليمين ثم يستثنى...» | أبو هريرة | ٢٠/١٢٠ |
| «الرجل يكون على الفئام من الناس» | عطاء بن يسار | ١٣/٣١٠ |
| «الرجلين الراكبين المقضيين» | سلمة بن الأكوع | ١٧/١٠٦ |
| «رحم الله المحلقين» | عبد الله بن عمر | ١٠/٣١، ١٢٩ |
| «رحم الله امرأ صلى قبل العصر أربعًا» | ابن عمر | ٥/٢٦٠ |
| «رحم الله حارس الحرس» | قيس بن الحارث | ١٨/٤٩١ |
| «رحم الله رجلًا غسلته امرأته وكفن فى أخلاقه» | عائشة | ٢٣١ |
| «رحم الله رجلًا قام من الليل فصلى...» | أبو هريرة | ٥/٣٤٣ |
| «رحم الله عبدًا سمحًا إذا باع سمحًا إذا اشترى سمحًا إذا اقتضى» | جابر بن عبد الله | ١١/٣٢١ |
| «رحم الله من تصدق عليه» | جابر بن عبد الله | ١١/٤٧٨ |
| «الرحم شجنة من الرحمن» | أبو هريرة | ١٣/٤٣٠ |
| «الرحم شجنة من الرحمن» | عائشة | ١٣/٤٢٩ |
| «الرحم شجنة من الله...» | عائشة | ١٣/٤٢٩ |
| «الرحم معلقة بالعرش» | - | ١٣/٤٣٠ |
| «رحمك الله إن كنت لأواها تاليًا للقرآن» | عبد الله بن عباس | ٧/٤٤٠ |
| «رحمه الله لقد أذكرنى كذا وكذا آية...» | عائشة | ٥/٣٧٨ |
| «رد إليه الثمن الذى اشتراها به أو خل بينه...» | تميم بن طرفة | ١٨/٣٦٤ |
| «رد على هذا زربية أمه التى أخذت منها» | الزبيب | ٢٠/٥١٤ |
| «رده» | على بن أبى طالب | ١٨/٤١٥ |
| «ردوا الخياط والمخيط» | عبد الله بن عمرو | ١٨/٣٣٧ |
| «ردوا السائل ولو بظلف محرق» | حواء جدة محمد بن بجيد | ٨/٣١٩ |

| | | |
|---|---|---|
| «ردوا على ردائى...» | عبد الله بن عمرو | ٤٠٣/١٣، ٣٣٧/١٨ |
| «ردوا هذا فى وعائه...» | أنس | ١٤٧/٥ |
| «ردُّوا هذه الخميصة إلى أبى جهم...» | عائشة | ٥٥٦/٤ |
| «ردوه» | ابن عمر | ٤٤٦/١٧ |
| «ردوه ردوه....» | أبو سعيد | ٧٨/١١ |
| «ردوها على» | أم سلمة | ٣٥٦/١٤ |
| «رسول الرجل إلى الرجل إذنه» | أبو هريرة | ٥٦٥/١٧ |
| «رشوه رشًّا فإنه يغسل من بول الجارية» | أبو السمح | ٨٤/٥ |
| «رصوا صفوفكم وقاربوا بينها...» | أنس بن مالك | ٢١/٦ |
| «رضى الله عنك رضى الله عنك» | حاطب بن أبى بلتعة | ١٥١/١٣ |
| «رفع القلم عن ثلاث...» | عائشة، ابن عباس | ٣١/٩، ٤٤٣/٢١ |
| «رفع القلم عن ثلاثة...» | أبو هريرة، على بن أبى طالب، عائشة | ٥٨٤/٥، ٢٠١/٩، ١١/ ٤٩٩، ٥٠٠، ١٠/١٢، ٤١٣، ٣٢٠/١٥، ١٦/ ٢١٢، ٣١٩/١٧، ٢٣٠ |
| «الركاز الذهب الذى ينبت فى الأرض» | أبو هريرة | ٢٤٧/٨ |
| «ركعة من آخر الليل » | ابن عمر | ٤١٠/٥ |
| «ركعتا الفجر خير من الدنيا وما فيها» | عائشة | ٢٥١/٥، ٢٥٢ |
| «الركعتان بعد السواك أحب إلى...» | عائشة | ١١٦/١ |
| «ركعتين بعد الصلاة» | رجل من أصحاب النبى ﷺ | ٢٣٠/١٣ |
| «الركن والمقام ياقوتتان» | عبد الله بن عمرو | ٥٣١/٩ |
| «الرهن بما فيه» | أبو هريرة عطاء | ٤٥١/١١، ٤٥٣ |
| «الرهن محلوب ومركوب» | أبو هريرة | ٤٤٤/١١ |
| «الرهن مركوب ومحلوب» | أبو هريرة | ٤٤٤/١١ |
| «الرهن ممن رهنه...» | سعيد بن المسيب | ٤٤٨/١١ |
| «رواح الجمعة على كل محتلم...» | حفصة | ٢٦٨/٦ |
| «رويدًا رويدًا...» | أبو قتادة | ١٧٠/٤ |
| «رويدك يا أنجشة لا تكسر القوارير» | أنس | ١٥٤/٢١ |

| | | |
|---|---|---|
| «الريح من روح الله عز وجل...» | أبو هريرة | ١١٨/٧ |

## (الزاى)

| | | |
|---|---|---|
| «الزاد والراحلة» | الحسن، عائشة، ابن عمر | ٢٠٧/٩، ٢١٧، ٤٧٤، ٤٣٢/١٠ |
| «زاد وراحلة» | ابن عمر | ٢١٥/٩ |
| «زادك الله حرصًا ولا تعد» | أبو بكرة | ٥٢٢/٣، ٣٨/٦ |
| «الزبير ابن عمتى وحوارى من أهلى» | جابر | ٣٤٨/١٣ |
| «زرع غيرك» | عبد الله بن عباس | ٤٠٨/١٨ |
| «زكاة الفطر على الحاضر والبادى» | عبد الله بن عمرو | ٣٠٤/٨ |
| «زكاة الفطر فرض على كل مسلم...» | ابن عمر | ٢٧٩/٨ |
| «زملونى زملونى» | محمد بن النعمان بن بشير الأنصارى | ٥٠٧/١٣ |
| «زملونى زملونى» | عائشة | ١٩/١٨ |
| «زملوهم بدمائهم فإنى عليهم شهيد» | جابر بن عبد الله | ٣٠٧/٧ |
| «زِنْ وأرجح» | سويد بن قيس | ٤٢٤/١١ |
| «زنها» | أنس بن مالك | ٢٥٥/٨ |
| «زِنى شعر الحسين وتصدقى بوزنه فضة...» | على | ٣٩١/١٩ |
| «زنيت؟» | أبو هريرة | ٢٠٢/١٧ |
| «زوجت المقداد وزيدا ليكون أشرفكم...» | الشعبى | ١٧٨/١٤ |
| «زوجتكها بما معك من القرآن» | سهل بن سعد | ٢٠٣/١٤ |
| «زوجك وابن عمك اتقى الله...» | خويلة بنت ثعلبة | ٤٠٩/١٥ |
| «زوجها ابنها» | سلمة بن أبى سلمة | ١٦٠/١٤ |
| «زيادة كبد النون» | ثوبان | ٢٤/٢ |
| «زينوا القرآن بأصواتكم» | البراء بن عازب | ٤٣٣/٣، ١٦١/٢١ |

## (السين)

| | | |
|---|---|---|
| «سآمرك بأمرين أيهما فعلت...» | حمنة بنت جحش | ٤٧٣/٢ |
| «سأصوم يومًا مكانه» | - | ٤٩/٩ |

| | | |
|---|---|---|
| «الساعى على الأرملة والمسكين...» | صفوان بن سليم، أبو هريرة | ٧٣/١٣، ٧٤ |
| «سأغدو عليك» | جابر بن عبد الله | ٥٢٣/١١ |
| «سافروا تصحوا وتغنموا» | ابن عمر، ابن عباس | ٧٦/١٤ |
| «سأفعل إن شاء الله» | عتبان بن مالك | ٣٦٧/٢٠ |
| «ساقى القوم آخرهم...» | عبد الله بن أبى أوفى | ٨٤/١٥، ٨٥ |
| «سألت جبريل عليه السلام: أى الأجلين...» | ابن عباس | ١١٣/١٢ |
| «سباب المسلم فسوق...» | ابن مسعود | ١٤٦/١٦، ٩٢/٢١ |
| «سبحان الله تطهرى بها» | عائشة | ٦٤/٢ |
| «سبحان الله هذا من الشيطان» | أسماء بنت عميس أو أسماء بنت أبى بكر | ٥٠٦/٢ |
| «سبحان الله وبحمده» | السعدى عن أبيه أو عمه | ٥٠٩/٣ |
| «سبحان الله والحمد لله ولا إله إلا الله...» | عبد الله بن أبى أوفى | ٦٢٤/٤ |
| «سبحان ذى الجبروت والملكوت والكبرياء والعظمة» | عوف بن مالك | ٤٥١/٤ |
| «سبحان رب العالمين سبحان رب العالمين» | ربيعة بن كعب | ٢٩٩/٥ |
| «سبحان ربى الأعلى» | عبد الله بن عباس | ٤٥٢/٤ |
| «سبحان ربى العظيم» | حذيفة | ٥٧٥/٣، ٤٤٩/٤، ٤٥٠ |
| «سبحان ربى العظيم سبحان ربى العظيم» | حذيفة | ٥٠٨/٣ |
| «سبحان ربى العظيم وبحمده» | عقبة بن عامر | ٥٠٩/٣ |
| «سبحان ربى وبحمده سبحان ربى وبحمده» | ربيعة بن كعب | ٢٩٩/٥ |
| «سبحان الله بئسما جزتها...» | عمران بن حصين | ٣٥٧/١٨، ٢٠٤/٢٠ |
| «سبحان الله القصاص كتاب الله» | أنس | ٢٧٨/١٦ |
| «سبحان الله لا يعلم ما فى غد أحد إلا الله...» | عمرة بنت عبد الرحمن | ٩٥/١٥ |
| «سبحان الله ماذا أنزل من التشديد» | محمد بن جحش | ٣١٢/١١ |
| «سبحان الله! وما ذلكم؟» | قتيلة بنت صيفى | ٣٥٠/٦ |
| «سبحان الملك القدوس» | ابن عبد الرحمن بن أبزى عن أبيه | ٤٦١/٥ |

| | | |
|---|---|---|
| «سبحان الملك القدوس» | أبى بن كعب | ٥/٤٥٧- ٤٥٩، ٤٦٢ |
| «سبحانك اللهم ربنا وبحمدك» | عائشة | ٣/٥٧٦ |
| «سبحانك اللهم وبحمدك وتبارك اسمك» | جابر بن عبد الله ، أبو سعيد ، عائشة | ٣/٣٨٣- ٣٨٦ |
| «سبحانك ربنا وبحمدك اللهم اغفر لى» | عائشة | ٣/٥١١ |
| «سبحانك وبحمدك اللهم اغفر لى» | عائشة | ٣/٥١١ |
| «سبحوا ثلاث تسبيحات ركوعًا» | محمد بن على بن الحسين | ٣/٥١٠ |
| «سبعة يظلهم الله فى ظله...» | أبو سعيد، أبو هريرة | ٨/٣٦٧، ١٦/٥٧٨، ٢٠/ ٢٤٢ |
| «سبعة يظلهم الله يوم القيامة فى ظله...» | أبو هريرة | ٥/٥٣٠ |
| «سبق درهم مائة ألف» | أبو هريرة | ٨/٣٣٦ |
| «سبقك بها عكاشة» | أبو هريرة | ٢٠/٤١٦ |
| «سبوح قدوس رب الملائكة والروح» | عائشة | ٣/٥١٢، ٥٧٦ |
| «السبيل الزاد والراحلة» | ابن عمر | ٩/٢٠٧ |
| «ستفتح عليكم الأمصار...» | أبو أيوب | ١٨/٩٣ |
| «ستفتح لكم أرضون ويكفيكم الله المؤنة...» | عقبة بن عامر الجهنى | ٢٠/٦ |
| «ستكون هنات وهنات....» | عرفجة | ١٧/٥ |
| «سجد وجهى للذى خلقه...» | عائشة | ٤/٤٩٦ |
| «سجدتان للسهو تجزيان من كل زيادة ونقصان» | عائشة | ٤/٥٤٩ |
| «سجدها داود عليه السلام توبةً...» | عمر بن ذر عن أبيه | ٤/٤٧٨ |
| «سجع كسجع الأعراب» | المغيرة بن شعبة | ١٦/٤٠١، ٤٢٧ |
| «سدوا هذه الأبواب إلا باب أبى بكر» | عائشة | ٥/١٦٨ |
| «سعد بن مالك بن وهيب...» | سعيد بن المسيب | ١٣/٣٥١ |
| «سعيك لحجتك وعمرتك» | عائشة | ١٠/٢٥٤ |
| «السفر قطعة من العذاب» | أبو هريرة | ١٠/٥٥٠ |
| «سقتنى حفصة شربة عسل» | عائشة | ١٥/٣٠٦ |
| «سقى الماء» | سعد بن عبادة | ٨/٣٤٩ |

| | | |
|---|---|---|
| «السكينة أيها الناس...» | جابر بن عبد الله، عبد الله بن عباس | ٣١٩/٩، ٧٨/١٠ |
| «السَّكينة السَّكينة» | جابر بن عبد الله | ٧٧/١٠ |
| «سلْ تُعطه» | عبد الله بن مسعود | ٧/٤ |
| «سل ربك» | ابن عمر | ٥٢٩/٥ |
| «سل هذه» | عمر بن أبي سلمة | ٥١٨/٨ |
| «السلام على أهل الديار من المؤمنين والمسلمين» | عائشة | ٥٢٦/٧ |
| «سلام على من اتبع الهدى...» | ابن عباس | ٣٨٧/٢٠ |
| «سلام عليكم» | محمد بن عمر | ٢٧٤/٧ |
| «السلام على همدان السلام على همدان» | البراء | ٥٩٥/٤ |
| «سلام عليكم أهل البيت كيف أنتن؟» | أنس | ١٣٤/١٥ |
| «السلام عليكم أهل الديار من المؤمنين والمسلمين» | بريدة | ٥٢٧/٧ |
| «السلام عليكم دار قوم مؤمنين...» | عائشة، أبو هريرة | ٢٥٠/١، ٥٢٤/٧، ٥٢٥، ٥١٦/١٠ |
| «السلام عليكم ورحمة الله...» | أنس، البراء بن عازب، سعد بن وقاص، عبد الله بن مسعود | ٦٣/٤-٦٦، ٨٧/١٥ |
| «سلوا الله عز وجل ببطون أكفِّكم ولا تسألوه بظهورها» | عبد الله بن عباس | ١٥٨/٤ |
| «سم ابنك عبد الرحمن» | جابر بن عبد الله | ٤٠٥/١٩ |
| «سم على بركة» | جنادة بن جراد | ٤٥٨/١٣ |
| «سمع الله لمن حمده» | أبو حميد الساعدى | ٤٨٢/٣ |
| «سمع الله لمن حمده» | أبو هريرة | ٤٦٩/٣، ٦١٨، ٥٣٨، ٥٣٢، ١٣٣/٤، ١٣٢، ١٢٥، ١٢٤، ٤٨/١٨ |
| «سمع الله لمن حمده» | البراء بن عازب، رفاعة ابن رافع، عائشة | ٥٢٨/٣، ٥٣٦، ٥٩/٧ |

| | | |
|---|---|---|
| «سمع الله لمن حمده» | عبد الله بن عباس | ٤/١٣١، ٥٣٤ |
| «سمع الله لمن حمده» | عبد الله بن عمر | ٣/٣٦٤، ٥٠١، ٤٧٦، ٤٧٥، ٦/٥٦٥ |
| «سمع الله لمن حمده» | وائل بن حجر | ٣/٣٧٠، ٤٨٠ |
| «سمع الله لمن حمده اللهم ربنا لك الحمد» | ابن أبى أوفى، حذيفة، أبو حميد الساعدى | ٣/٥٣٣، ٥٣٤، ٥٣٨، ٥٥٥ |
| «سمع الله لمن حمده اللهم ربنا ولك الحمد» | أبو سعيد الخدرى | ٣/٥٣٥ |
| «سمع الله لمن حمده ربنا لك الحمد ملء السموات والأرض» | على بن أبى طالب | ٣/٥٣٣ |
| «سمع الله لمن حمده ربنا لك الحمد...» | عبد الله بن عمر، أبو هريرة | ٣/٤٧٤، ٤/١٢٢، ١٢٣، ١٤٤ |
| «سمع الله لمن حمده ربنا ولك الحمد» | عائشة، ابن عمر | ٣/٥٣٣، ٧/٤٠، ٩، ١٠ |
| «السمع والطاعة على المرء المسلم...» | عبد الله بن عمر | ٦/١٠٠، ١٦/٥٥٥ |
| «سمعت أنين عمى العباس فى وثاقه» | ابن عباس | ١٨/٢٩٥ |
| «سموا بأسماء الأنبياء...» | أبو وهب الجشمى | ١٩/٣٩٨ |
| «سموا باسمى ولا تكتنوا بكنيتى» | أبو هريرة، جابر بن عبد الله | ١٩/٤٠٤-٤٠٧ |
| «سموا عليها اسم الله وكلوها» | عروة | ١٩/١٨٣ |
| «سميتهم بأسماء ولد هارون؛ شبر وشبير ومشبر» | على | ١٢/٢٨٢ |
| «السنا والسنوت فيهما دواء من كل داء» | أبو أيوب الأنصارى | ١٩/٥٣٤ |
| «سنة أبيكم إبراهيم عليه السلام» | زيد بن أرقم | ١٩/٢٥٣، ٢٥٤ |
| «سنوا بهم سنة أهل الكتاب» | عبد الرحمن بن عوف | ١٤/٢٩٥، ١٩/٢٦ |
| «السنور سبع» | أبو هريرة | ٢/٢٤٧، ٢٥٤ |
| «السواك مطهرة للفم مرضاة للرب» | عائشة | ١/١٠١- ١٠٣ |
| «سووا بين أولادكم فى العطية...» | ابن عباس | ١٢/٣٢٤ |
| «سووا صفوفكم» | أنس | ٦/٢٠ |
| «سيأتيك بالأخبار من لم تزود» | عائشة | ٢١/١٩٩ |
| «سيأتيكم ركب مبغضون...» | جابر بن عتيك | ٨/١١٢ |

| | | |
|---|---|---|
| «سيد السلعة أحق أن يستام» | ابن أبى الحسين | ٤٣٣/١١ |
| «السير ما دون الخبب...» | عبد الله بن مسعود | ٣٣٣/٧، ٣٤٢، ٣٤٣ |
| «سيصالحكم الروم صلحا...» | جبير بن نفير | ١٣٢/١٩، ١٣٣ |
| «سيكون بعدى أمراء يؤخرون الصلاة عن مواقيتها ويحدثون البدعة» | عبد الله بن مسعود | ٩١/٦ |
| «سيكون بعدى خلفاء يعملون بما يعلمون...» | أبو هريرة | ٥٦٢/١٦ |
| «سيكون عليكم أئمة تعرفون منهم وتنكرون» | أم سلمة | ١٣٨/٧ |
| «سيكون فى أمتى اختلاف وفرقة...» | أبو سعيد | ١٥/١٧ |


## (الشين)


| | | |
|---|---|---|
| «شاتان مكافأتان» | عائشة | ٣٨٣/١٩ |
| «شاتك شاة لحم» | البراء بن عازب | ٥٥١/٦ |
| «شاركت القوم إذن» | أبو ذر | ٨١/١٧ |
| «الشاة كلها لكم إلا الكتف» | عائشة | ٢١٩/١٩ |
| «شاهد الزور لا تزول قدماه حتى توجب له النار» | ابن عمر | ٣٦٠/٢٠ |
| «الشاهد يوم عرفة ويوم الجمعة...» | أبو هريرة | ٢٢٣/٦ |
| «شاهداك أو يمينه» | عبد الله بن مسعود | ٢٦٩/٢١ |
| «شاوروا النساء فى أنفسهن...» | عدى الكندى | ١٣٥/١٤ |
| «الشتاء ربيع المؤمن» | أبو سعيد | ١١٣/٩ |
| «شدى عليك إزارك ثم ادخلى» | عائشة | ٤١٤/٢، ٣٤٣/١٤ |
| «شر الطعام طعام الوليمة...» | أبو هريرة | ٥٧٢/١٤، ٥٧٤ |
| «شر الكسب مهر البغى...» | رافع بن خديج | ٤٩٨/١٩ |
| «شر ما فى الرجل شح هالع وجبن خالع» | أبو هريرة | ٥٦١/١٨ |
| «شراك من نار...» | أبو هريرة | ٣٣٢/١٨ |
| «شراكان من نار...» | أبو هريرة | ٣٣٢/١٨ |
| «الشرك بالله والسحر وقتل النفس» | أبو هريرة | ٧٥/١٣، ١٤٦/١٦، ١٧/ ٢٧٦ |
| «الشرك بالله وقتل النفس وعقوق الوالدين...» | أنس بن مالك | ٣٥٩/٢٠ |

| | | |
|---|---|---|
| «الشرود يرد» | أبو هريرة | ١٩٥/١١ |
| «الشريك شفيع فى كل شىء» | ابن أبى مليكة | ٩٠/١٢ |
| «الشريك شفيع والشفعة فى كل شىء» | ابن عباس | ٨٩/١٢ |
| «الشعث التفل» | ابن عمر | ٢١٥/٩، ٤٧٤ |
| «الشعر كلام حسنه كحسن الكلام وقبيحه كقبيحه» | عروة | ٥٠٧/٩ |
| «شغلتنى أعلام هذه الخميصة...» | عائشة | ٣٦٩/٤ |
| «شغلتنى هذه الأعلام...» | عائشة | ٥٥٥/٤ |
| «شغلونا عن صلاة الوسطى؛ صلاة العصر» | عبد الله بن مسعود، على بن أبى طالب | ٢٨١/٣، ٢٨٢، ١٨٠/٤ |
| «شغلونا عن صلاة الوسطى العصر» | على بن أبى طالب | ٢٨١/٣، ٢٨٢ |
| «الشفاء فى ثلاثة؛ فى شرطة محجم...» | ابن عباس | ٥١٥/١٩ |
| «شفاعتى لأهل الكبائر من أمتى» | أنس بن مالك | ١٣٧/١٦، ٢٤/٢١ |
| «الشفعة فى العبيد وفى كل شىء» | ابن عباس | ٩١/١٢ |
| «الشفعة فى كل شرك ربعة أو حائط...» | جابر | ٨٨/١٢ |
| «الشفعة فى كل شرك فى أرض أو ربع...» | جابر | ٨٨/١٢ |
| «الشفعة فيما لم يقسم...» | أبو سلمة، سعيد، جابر ابن عبد الله، أبو هريرة | ٧٢/١٢، ٧٣، ٧٨، ٨٣ |
| «الشفعة لا ترث ولا تورث» | ابن عمر | ٨٥/١٢ |
| «الشفق الحمرة فإذا غاب الشفق وجبت الصلاة» | عبد الله بن عمرو | ٤٨/٣ |
| «شققها خمرًا بين نسائك» | معاوية | ٥٢٤/٦ |
| «شقيه بشقتين» | عائشة | ٥٠٢/١١ |
| «شمى عوارضها وانظرى إلى عرقوبيها» | أنس | ٢٥/١٤ |
| «شهادة أن لا إله إلا الله» | ابن عباس | ٢٢/١٩ |
| «شهادة القوم، المؤمنون شهداء الله فى الأرض» | أنس | ٩٣/٢١ |
| «شهادة القوم والمؤمنون شهداء الله فى الأرض» | أنس | ٣٦٤/٢٠ |

| | | |
|---|---|---|
| «شهدت غلاما حلف الطيبين» | عبد الرحمن بن عوف | ٣٤٣/١٣ |
| «شهدت مع عمومتى...» | عبد الرحمن بن عوف | ٣٤٣/١٣ |
| «شهر الله الذى تدعونه المحرم» | أبو هريرة | ٣٥٣/٥ |
| «الشهر تسع وعشرون لا تصوموا حتى تروه...» | ابن عمر | ٤١٧/٨ |
| «الشهر تسع وعشرون ليلة لا تصوموا حتى تروه...» | ابن عمر | ٤١٩/٨ |
| «الشهر هكذا وهكذا وهكذا» | عبد الله بن عمر | ٤٢٠/٨ |
| «شهرا عيد لا ينقصان...» | أبو بكرة | ٥٧٠/٨ |
| «الشهيد لا يجد ألم القتل...» | أبو هريرة | ٥٣٨/١٨ |
| «الشىء يكون بين الناس فينتقص منه» | أبو سعيد الخدرى | ٣١٠/١٣ |
| «الشياع حرام» | أبو سعيد | ٣٥٢/١٤ |
| «الشيخ يملك إربه والشاب يفسد صومه» | عائشة | ٥١٠/٨ |
| «شيطان يتبع شيطانة» | أبو هريرة | ٢٥/٢٠، ١٠٦/٢١ |


## (الصاد)


| | | |
|---|---|---|
| «صاع من بر أو قمح عن كل اثنين....» | أبو صعير | ٢٩٠/٨ |
| «صاعًا من تمر» | أبو هريرة | ١٧٧/١١ |
| «الصائم بالخيار ما بينه وبين نصف النهار» | .أنس بن مالك | ٥٦/٩ |
| «الصائم فى التطوع بالخيار» | أبو ذر | ٥٧/٩ |
| «الصائم المتطوع أمير نفسه» | أم هانئ | ٥٣/٩ |
| «الصائم المتطوع أمين أو أمير» | أم هانئ | ٥٤/٩ |
| «صبحتكم مستكم » | جابر بن عبد الله | ٣٢٢/٦ |
| «الصبر عند أول صدمة» | أنس | ٢٩١/٢٠ |
| «الصبر عند الصدمة الأولى» | أنس بن مالك | ٤٧٧/٧ |
| «صُبُّوا على من سبع قِرَبٍ لم تُحلل... » | عائشة | ٩١/١، ٩٢ |
| «صبوا عليه دلوًا من ماء» | أنس بن مالك | ١٢٤/٥ |
| «صبوا عليه سجلًا من ماء...» | أبو هريرة | ١٢٦/٥ |
| «صبوا عليه الماء» | ابن عباس | ٤٣٧/١٧ |
| «الصبى إذا بلغ خمس عشرة أقيمت عليه الحدود» | أنس | ٤٩٩/١١ |

| | | |
|---|---|---|
| «الصبى على شفعته حتى يدرك » | جابر | ٨٦/١٢ |
| «صدق» | | ٦٦/١٦ |
| «صدق» | أنس، أبو سلمة بن عبد الرحمن | ٢٠٠/٩، ٦٦/١٦ |
| «صدق أبى» | أبو ذر | ٣٥٩/٦ |
| «صدق أفلح فأذنى له» | عائشة | ٨/١٦ |
| «صدق الله وكذب بطن أخيك اسقه عسلًا» | أبو سعيد | ٥٢٥/١٩ |
| «صدق عمر» | أنس | ١٤٦/١٣ |
| «صدق فأعطه إياه» | أبو قتادة | ١٤٤/١٣ |
| «صدق لا نفقة لك...» | أبو بكر ابن أبى الجهم | ٦٧/١٦ |
| «صدق الله:﴿إنما أموالكم وأولادكم فتنة﴾...» | بريدة | ٣٥٤/٦، ٢٨١/١٢ |
| «صدقت صدقت ماذا قلت حين فرضت الحج» | جابر بن عبد الله | ٣١٧/٩ |
| «صدقت المسلم أخو المسلم» | سويد بن حنظلة | ١٧٠/٢٠ |
| «صدقتم» | ابن عمر | ٣٨٨/١٧ |
| «صدقة الله عليكم فاقبلوها» | عمر بن الخطاب | ١٢٣/٦ |
| «صدقة تصدق الله عز وجل بها عليكم فاقبلوا صدقته» | عمر بن الخطاب | ١٢٤/٦ |
| «صدقة تصدق الله بها عليكم فاقبلوها» | عمر بن الخطاب | ١٤٣/٦ |
| «الصدقة على المسكين صدقة...» | سلمان بن عامر الضبى | ٣٠٧/٨ |
| «صدقة فى رمضان» | أنس بن مالك | ١٤٣/٩ |
| «صدقت» | عبد الله بن أنيس، أنس | ٤٧١/٦، ١٤٣/١٩ |
| «صديد أهل النار...» | ابن عباس | ٣٩٣/١٧ |
| «الصعيد الطيب وضوء المسلم...» | أبو ذر | ٢٢/١، ٢٦، ٦٧/٢، ٦٦، ١٧٥ |
| «الصعيد الطيب وضوء» | أبو ذر | ١٥٣/٢ |
| «صغارهم دعاميص الجنة» | أبو هريرة | ٤٨٦/٧ |
| «صغير أو كبير غنى أو فقير» | أبو صعير | ٢٨١/٨، ٢٨٢ |

| | | |
|---|---|---|
| «الصفوف الأول» | البراء بن عازب | ٢٨/٦ |
| «صلِّ بالأرض إن استطعت» | جابر بن عبد الله | ٤٤٢/٤ |
| «صل ركعتين» | جابر | ٢٨٧/٦ |
| «صلِّ صلاة الصبح ثم أقصر...» | عمرو بن عبسة السلمى | ٢٠٣/٥ |
| «صلِّ الصلاة لميقاتها فإن أدركت فصل معهم...» | أبو ذر | ٤٢٢/٤ |
| «صل الصلاة لميقاتها واجعل صلاتك معهم سبحة» | عبد الله بن مسعود | ٩٢/٦ |
| «صل الصلاة لوقتها فإن أدركتها معهم فصلّ» | أبو ذر | ٩١/٦ |
| «صلِّ على الأرض إن استطعت...» | جابر بن عبد الله | ٤٤١/٤ |
| «صل فى القوس واطرح القرن» | سلمة بن الأكوع | ٤٦٨/٦ |
| «صل فيها قائمًا إلا أن تخاف الغرق» | ابن عمر | ١٨١/٦ |
| «صل قائمًا فإن لم تستطع فصل جالسًا...» | عمران بن حصين | ١٨٠/٦ |
| «صلِّ قائمًا فإن لم تستطع فقاعدًا...» | عمران بن حصين | ٤٣٦/٤ |
| «صل معنا» | جابر بن عبد الله | ٤٤/٣ |
| «صل معنا هذين» | بريدة بن الحصيب | ٤٢/٣ |
| «صل ههنا» | جابر بن عبد الله | ٢٢٧/٢٠ |
| «الصلاة أمامك» | أسامة بن زيد | ٢٥٢/١، ٨٠/١٠، ٨١، ٨٨ |
| «صلاة الأوابين إذا رمضت الفصال» | زيد بن أرقم | ٤٨٣/٥ |
| «صلاة بسواك خير من سبعين صلاة بغير سواك» | عائشة | ١١٦/١ |
| «صلاة الجماعة أفضل من صلاة أحدكم وحده...» | أبو هريرة | ٥١٢/٥، ٥١٤ |
| «صلاة الجماعة أفضل من صلاة الفذ بسبع وعشرين درجة» | ابن عمر | ٥١١/٥ |
| «صلاة الجماعة تعدل خمسًا وعشرين من صلاة الفذ» | أبو هريرة | ٥١٥/٥ |
| «صلاة الجماعة تفضل صلاة الفذ بسبع وعشرين درجة» | ابن عمر | ٥١٢/٥ |

| | | |
|---|---|---|
| «صلاة الجماعة تفضل على صلاة الفذ...» | أبو سعيد | ٥/٥١٥ |
| «الصلاة خير من النوم» | أبو محذورة | ٣/١٨٥ |
| «صلاة الرجل فى الجميع تزيد على صلاته وحده خمسًا وعشرين صلاة» | أبو هريرة | ٤/٤٢٩ |
| «صلاة الرجل قاعدا نصف الصلاة» | عبد الله بن عمرو | ١٣/٥٤١ |
| «صلاة رجلين يؤم أحدهما صاحبه أزكى...» | قُباث بن أشْيَم | ٥/٥١٨ |
| «صلاة الصبح ركعتان» | قيس بن عمرو | ٥/٢٩٢ |
| «الصلاة الصلاة» | على | ١٦/١١٤ |
| «الصلاة فى أول وقتها» | عبد الله بن مسعود | ٣/٢١٦ |
| «الصلاة فى جوف الليل» | أبو هريرة | ٥/٣٥٣ |
| «صلاة فى مسجد قباء كعمرة» | أسيد بن ظهير | ١٠/٥١٥ |
| «صلاة فى مسجدى هذا أفضل من ألف صلاة...» | عبد الله بن عمر | ١٠/٥٠٦ |
| «صلاة فى مسجدى هذا تعدل ألف صلاة» | عبد الله بن عمر | ١٠/٥٠٧ |
| «صلاة فى مسجدى هذا خير من ألف صلاة...» | عبد الله بن الزبير، أبو هريرة | ١٠/٥٠٦، ٥٠٧، ٢٠/ ٢٢٨ |
| «صلاة فيه أفضل من ألف صلاة فيما سواه...» | ميمونة | ٢٠/٢٢٧، ٢٢٨ |
| «صلاة القاعد على النصف من صلاة القائم» | عبد الله بن عمرو | ٥/٣١٥ |
| «الصلاة لوقتها» | عبد الله بن مسعود | ٤/١٦٤ |
| «صلاة الليل مثنى فإذا كان من آخر الليل...» | عبد الله بن عمر | ٥/٤١١ |
| «صلاة الليل مثنى مثنى...» | عبد الله بن عمر | ٥/٣٠١، ٤٠٨، ٤١٢ |
| «صلاة الليل والنهار مثنى مثنى» | ابن عمر | ٥/٣٠٣ |
| «الصلاة مثنى مثنى تشهد فى كل ركعتين ثم تضرع...» | الفضل بن العباس | ٥/٣٠٤ |
| «الصلاة مثنى مثنى وتشهد فى كل ركعتين وتباءس...» | المطلب | ٥/٣٠٥ |
| «صلاة المرأة فى بيتها أفضل من صلاتها فى حجرتها» | عبد الله بن مسعود | ٦/١١٤ |
| «صلاة الوسطى صلاة العصر» | سمرة، أبو هريرة | ٣/٢٨٢، ٢٨٣ |

| | | |
|---|---|---|
| «صلاتكن فى بيوتكن خير من صلاتكن فى دوركن...» | أم حميد الساعدى | ١١٨/٦ |
| «صلت الملائكة على آدم فكبرت عليه أربعًا» | أبى بن كعب | ٣٨٢/٧ |
| «الصلح جائز بين المسلمين...» | عمرو بن عوف، أبو هريرة | ٥٢١/١١، ٥٢٥، ٥٢٦ |
| «صلِّه- أو: صلِّ ركعتين» | جابر بن عبد الله | ٣٠٠/١٢ |
| «صلها من الليل والنهار» | عبد الله بن عمرو | ٤٩١/٥ |
| «صلوا خلف كل بر وفاجر...» | أبو هريرة | ٣٢٥/٧ |
| «صلوا على أخ لكم مات بغير بلادكم» | جابر بن عبد الله | ٤٢٦/٧ |
| «صلوا على صاحبكم» | أبو هريرة | ٤٨٥/١٣، ٥١٤ |
| «صلوا على صاحبكم» | جابر بن عبد الله، أبو سعيد الخدرى | ٥٥٢/١١، ٥٥٣ |
| «صلوا على صاحبكم» | سلمة بن الأكوع | ٥٥١/١١، ٥٥٢، ٥٥٩ |
| «صلوا على صاحبكم» | زيد بن خالد الجهنى، على بن أبى طالب | ٥٥٤/١١، ٣٣٤/١٨ |
| «صلوا فى مرابض الغنم ولا تصلوا فى أعطان الإبل...» | عبد الله بن مغفل | ١٨٦/٥ |
| «صلوا فى مراح الغنم...» | أبو هريرة | ١٨٧/٥ |
| «صلوا فى مُراحات الغنم...» | سبرة | ١٨٤/٥ |
| «صلوا فيها فإنها بركة» | البراء بن عازب | ١٨٥/٥ |
| «صلوا قبل المغرب ركعتين لمن شاء» | عبد الله المزنى | ٢٦٢/٥ |
| «صلُّوا كما رأيتمونى أصلى» | مالك بن الحويرث | ٥٤٥/٤، ٥٤٦ |
| «صلّوا ما أدركتم ثم اقضوا ما فاتكم» | - | ١٨٢/٤ |
| «صلوا ورقدوا وأنتم تنتظرونها» | جابر بن عبد الله | ٥٧/٣ |
| «الصلوات الخمس إلا أن تطوع شيئا» | طلحة بن عبيد الله | ٢٣٩/٥، ٤٠٦/٨ |
| «الصلوات الخمس والجمعة إلى الجمعة كفارات لما بينهن» | أبو هريرة | ٢٤٠/٥، ٢٤١ |
| «الصلوات الخمس والجمعة إلى الجمعة مكفرات...» | أبو هريرة | ١٣/٢١ |

| | | |
|---|---|---|
| «الصلوات الخمس والجمعة إلى الجمعة ورمضان إلى رمضان مكفرات...» | أبو هريرة | ١٣/٢١ |
| «صلى الله عليك وعلى زوجك» | جابر بن عبد الله | ٦٨٦/٣ |
| «صلى بى العصر حين كان ظل كل شيء مثله...» | عبد الله بن عباس | ٢٩/٣ |
| «صليت؟» | جابر | ٢٨٧/٦ |
| «صليت يا فلان؟» | جابر | ٣٦٣/٦ |
| «صم أربعة أيام ولك أجر ما بقى » | عبد الله بن عمرو | ١١٠/٩ |
| «صم أفضل الصيام عند الله صوم داود» | عبد الله بن عمرو | ١١١/٩ |
| «صم إن شئت وأفطر إن شئت» | عائشة | ٥٤٨/٨ |
| «صم ثلاثة أيام...» | كعب بن عجرة | ٢٤٩/٩، ٤٦٤، ٤٦٧، ٢٤٥/١٠، ٥٨/١٦ |
| «صم ثلاثة أيام» | مجيبة عن أبيها أو عمها | ٩٦/٩ |
| «صم ثلاثة أيام ولك أجر ما بقى » | عبد الله بن عمرو | ١١٠/٩ |
| «صم شهرين متتابعين» | أبو هريرة، خولة، سعيد ابن المسيب، سلمة بن صخر، محمد بن عبد الرحمن ابن ثوبان، أبو سلمة | ٤٨٠/٨، ٤٩٤، ١٥/ ٤١١، ٤١٤، ٤١٨، ٤٢٠ |
| «صم عنها» | ابن عباس | ٦٢/١٣ |
| «صم من الحرم واترك» | مجيبة عن أبيها أو عمها | ٩٦/٩ |
| «صم من كل شهر يومين» | مجيبة عن أبيها أو عمها | ٩٦/٩ |
| «صم يومًا ولك أجر ما بقى » | عبد الله بن عمرو | ١١٠/٩ |
| «صم يومين ولك أجر ما بقى » | عبد الله بن عمرو | ١١٠/٩ |
| «صمتِ أمس» | جويرية | ٥١/٩، ١٣٠ |
| «صمت من سرر شعبان شيئا» | عمران بن حصين | ٤٣٨/٨ |
| «صمت من سرر هذا الشهر شيئا؟» | عمران بن حصين | ٤٣٧/٨، ٤٣٨ |
| «صمتم يومكم هذا؟» | عم عبد الرحمن بن مسلمة | ٤٧٦/٨ |
| «الصموت» | أبو هريرة | ١٣١/١٤ |

| | | |
|---|---|---|
| «صنفان من أهل النار لم أرهما قط...» | أبو هريرة | ٢١٩/٤ |
| «الصوم جنة ما لم تخرقه» | أبو عبيدة ابن الجراح | ٣٥/٩ |
| «صوم شعبان تعظيمًا لرمضان» | أنس بن مالك | ١٤٣/٩ |
| «صوم شهر الصبر وثلاثة أيام من كل شهر...» | يزيد بن عبد الله بن الشخير | ١٣٥/١٣ |
| «صوم شهر الصبر وصوم ثلاثة أيام» | أبو هريرة | ١٠٣/٩ |
| «صوم عرفة كفارة سنتين» | أبو قتادة | ٧٠/٩ |
| «الصوم فى الشتاء الغنيمة الباردة» | عامر بن مسعود | ١١٣/٩ |
| «صوم ماذا؟» | عمار بن ياسر | ٤٤٧/١٩ |
| «صوم يوم عرفة كفارة سنة» | أبو قتادة | ٦٩/٩ |
| «صوموا رمضان لرؤيته وأفطروا لرؤيته..» | ابن عباس | ٤٢٨/٨ |
| «صوموا الشهر وسره» | معاوية | ٤٣٩/٨ |
| «صوموا قبله يومًا وبعده يومًا» | - | ٨٤/٩ |
| «صوموا لرؤيته» | أبو هريرة | ٥٧٣/٨ |
| «صوموا لرؤيته...» | ابن عباس، أبو بكرة، أبو هريرة | ٤٢٠/٨- ٤٢٣ ، ٤٢٨، ٥٦١ |
| «صوموا يوم تصومون...» | أبو هريرة | ٥٧٣/٨ |
| «صوموا يوم عاشوراء وخالفوا اليهود» | ابن عباس | ٨٤/٩ |
| «صومى عن أختك» | ابن عباس | ٥٨٤/٨ |
| «صومى عن أمك» | بريدة الأسلمى | ٢٤٥/٨ |
| «صومى عنها» | ابن عباس | ٥٨٥/٨ |
| «صومى عنها» | بريدة | ٥٨٦/٨ |
| «الصيام جنة...» | أبو هريرة | ٣٢/٩ |
| «صيام رمضان إلا أن تطوع شيئا» | طلحة بن عبيد الله | ٢٣٩/٥ |
| «صيام شهر بعشرة أشهر وستة أيام بعده» | ثوبان | ١٠٠/٩ |
| «صيام شهر رمضان إلا أن تطوع شيئا» | طلحة بن عبيد الله | ٤٠٦/٨ |
| «صيد البر لكم حلال ما لم تصيدوه أو يصاد لكم» | جابر بن عبد الله | ٣١٩/١٠ |

## (الضاد)


| | | |
|---|---|---|
| «الضاحك فى الصلاة والملتفت والمتفقع أصابعه بمنزلة واحدة» | معاذ بن جبل | ٣٩١/٤ |
| «ضالة الإبل المكتومة غرامتها ومثلها معها» | أبو هريرة | ٣٦٦/١٢ |
| «ضالة المسلم- أو: المؤمن- حرق النار» | عبد الله بن الشخير | ٣٦٥/١٢ |
| «ضالة المؤمن حرق النار» | الجارود | ٣٦٣/١٢ |
| «ضأن جرد سود بأرض اليمن» | البراء بن عازب | ٢٣/٦ |
| «الضبُع صيد فكُلْها...» | جابر بن عبد الله | ٢٩٢/١٠ |
| «الضبع صيد وجزاؤها كبش مسن وتؤكل» | جابر | ٤٤٠/١٩ |
| «ضح به» | زيد بن خالد الجهنى، عقبة بن عامر الجهنى | ٢٧٩/١٩، ٢٨٠ |
| «ضح بها أنت» | عقبة بن عامر | ٢٧٨/١٩ |
| «ضح بها أنت ولا رخصة لأحد...» | عقبة بن عامر | ٢٧٨/١٩ |
| «ضح بها ولا تصلح لغيرك» | البراء بن عازب | ٢٧٦/١٩ |
| «ضح بها» | البراء بن عازب، أبو سعيد الخدرى | ٢٧٧/١٩، ٣٤٤، ٣٤٥ |
| «الضحايا إلى آخر الشهر لمن أراد...» | أبو سلمة وسليمان بن يسار | ٣٧١/١٩ |
| «الضحايا إلى هلال المحرم لمن أراد...» | أبو سلمة وسليمان بن يسار | ٣٧١/١٩ |
| «ضحوا بالجذع من الضأن...» | أم بلال بنت هلال | ٢٨٢/١٩ |
| «ضع أنفك ليسجد معك» | عبد الله بن عباس | ٥٦٤/٣ |
| «ضعه من حيث أخذته» | سعد | ١٠٠/١٣ |
| «ضعوا برمتكم» | جابر بن عبد الله | ٤٦/١٥ |
| «ضعوا عنها فإنها ملعونة» | عمران بن حصين | ٥٣٦/١٠ |
| «ضعوا فيه السكين واذكروا اسم الله وكلوا» | ابن عباس | ٥٩٣/١٩ |
| «ضعوا لى ماء فى المخضب» | عبيد الله بن عبد الله | ٥٤٠/١٦ |
| «ضعوا ماء فى المخضب» | عبيد الله بن عبد الله | ٥٤٠/١٦ |

| | | |
|---|---|---|
| «ضعوا هذه الآيات فى موضع كذا كذا» | عثمان | ٣/٤٠٥، ٤٠٦ |
| «ضعوا وتعجلوا» | ابن عباس | ١١/٤٠٨ |
| «ضعوها مما يلى رأسه واجعلوا على رجليه من الإذخر» | خباب بن الأرت | ٧/٢٤٣ |
| «ضمى إليك ثيابك...» | ابن عمر، كعب | ١٤/٥٥٥ |
| «الضيافة ثلاثة أيام...» | أبو هريرة | ١٩/٤٩ |


## (الطاء)


| | | |
|---|---|---|
| «طاعة الله وطاعة رسوله خير لك» | فاطمة بنت قيس | ١٤/١٧٦ |
| «الطاعم الشاكر كالصائم الصابر» | أبو هريرة | ٩/١٤٤ |
| «الطاعم الشاكر مثل الصائم الصابر» | أبو هريرة | ٩/١٤٤ |
| «الطرق تطهر بعضها بعضًا» | أبو هريرة | ٥/٥٧ |
| «طعام أول يوم حق والثانى مثله» | ابن مسعود | ١٤/٥٦٨ |
| «الطعام بالطعام مثلًا بمثل» | معمر بن عبد الله | ١١/٦٩، ٧٥ |
| «الطعام الرطب تأكلنه وتهدينه» | سعد | ٨/٣٧٦ |
| «طعام مأكول لك أو لأخيك أو للذئب...» | عبد الله بن عمرو | ٨/٢٥٠، ١٢/٣٦٢ |
| «طعام يوم حق وطعام يومين سنة...» | ابن مسعود | ١٤/٥٦٨ |
| «طلاق الأمة ثنتان وعدتها حيضتان» | عبد الله بن عمر | ١٥/٣٥٤ |
| «طلاق العبد اثنتان...» | عائشة | ١٥/٣٥٥ |
| «طلاق التى لم يدخل بها واحدة» | الحسن | ١٥/٣١١ |
| «طلب كسب الحلال فريضة بعد الفريضة» | عبد الله بن مسعود | ١٢/١٤٩ |
| «طلق أيتهما شئت» | ابن الديلمى عن أبيه | ١٤/٣٣٠ |
| «طلقها» | ابن عباس | ١٤/٢٣١، ١٥/٢٥٨ |
| «طلقها» | ابن عمر | ١٥/٢٠٨ |
| «طلقها» | جابر بن عبد الله | ١٤/٢٣٣ |
| «طلقها» | لقيط بن صبرة | ١٥/١٤٥ |
| «طلقها» | مولى لبنى هاشم | ١٤/٢٣٢ |
| «طهور إناء أحدكم إذا ولغ الكلب فيه...» | أبو هريرة | ٢/٢٢٧، ٢٢٨، ٢٤٣ |
| «طهور الإناء إذا ولغ الكلب فيه أن يغسل...» | أبو هريرة | ٢/٢٤٢ |

| | | |
|---|---|---|
| «الطهور شطر الإيمان...» | أبو مالك الأشعرى | ١٢٩/١ |
| «طهور كل أديم دباغه» | عائشة | ٥٨/١ |
| «الطواف بالبيت صلاة...» | ابن عباس | ٥٦٦/٩، ٥٧٢، ٥٧٣ |
| «طوافك بالبيت وبين الصفا والمروة يكفيك لحجك وعمرتك» | - | ٤٢/١٠، ٢٥٤ |
| «طوبى لمن تواضع من غير منقصة» | ركب المصرى | ٣٣٨/٨ |
| «طوبى لمن حسنت سريرته....» | ركب المصرى | ٣٣٨/٨ |
| «طوبى لمن ذل فى نفسه وطاب كسبه» | ركب المصرى | ٣٣٨/٨ |
| «طوفى من وراء الناس وأنت راكبة» | أم سلمة | ٥٤٣/٩، ٢٦/١٠ |
| «طول القيام» | عبد الله بن حُبشى | ٣٧٠/٥، ٣٣١/٨، ١٨/ ٥٣٩ |
| «الطير يوم القيامة ترفع مناقيرها...» | ابن عمر | ٣٦٠/٢٠ |
| «الطيرة شرك وما منا إلا...» | عبد الله بن مسعود | ٤٩٨/١٦ |


## (الظاء)


| | | |
|---|---|---|
| «الظلم ظلمات يوم القيامة» | ابن عمر | ٣٧/١٢، ٣٩٧/٢٠ |
| «الظهر يركب بنفقته إذا كان مرهونًا...» | أبو هريرة | ٤٤٣/١١ |


## (العين)


| | | |
|---|---|---|
| «عادى الأرض لله ولرسوله...» | طاوس | ٢٠٤/١٢ |
| «عارية مؤداة» | ابن عباس | ٢٤/١٢ |
| «العامل على الصدقة بالحق كالغازى...» | رافع بن خديج | ٤٠٢/١٣ |
| «العائد فى هبته كالعائد فى قيئه...» | ابن عباس | ٣٣٣/١٢ |
| «العائد فى هبته كالكلب يعود فى قيئه» | ابن عباس | ٣٣٣/١٢، ٣٣٤ |
| «عائد المريض فى خرافة الجنة حتى يرجع» | ثوبان | ١٨٣/٧ |
| «عائد المريض فى مخرفة الجنة» | ثوبان | ١٨١/٧ |
| «عائشة» | عمرو بن العاص | ٣٥٥/١٣، ١٢٩/١٥ |
| «عباد الله لتسون صفوفكم أو ليخالفن الله بين وجوهكم» | النعمان بن بشير | ٣٥٢/٣ |
| «عباد الله وضع الله الحرج..» | أسامة بن شريك | ٥٢٢/١٩، ٢١٩/٢١ |

| | | |
|---|---|---|
| «العباد عباد الله والبلاد بلاد الله...» | عائشة | ٢٠٢/١٢ |
| «العبد لا يعطى من الغنيمة شيئا...» | ابن عباس | ٩١/١٧ |
| «عتبة بن أبى وقاص هشم وجهى...» | حاطب بن أبى بلتعة | ١٥٠/١٣ |
| «العج والثج» | أبو بكر، ابن عمر | ٢١٥/٩، ٤٢٤، ٤٢٥، ٤٧٥ |
| «عجب ربنا عز وجل من رجل غزا فى سبيل الله» | عبد الله بن مسعود | ١٥٧/١٨ |
| «عجب ربنا من رجلين...» | عبد الله بن مسعود | ٥٣٧/١٨ |
| «عجبت للعبد إذا قال: لا إله إلا أنت» | على بن أبى طالب | ٥٢٨/١٠ |
| «عجبت للمؤمن إن أصابه خير حمد الله وشكر» | سعد بن أبى وقاص | ١٦٧/٧، ١٦٨ |
| «العجفاء التى لا تنقى» | البراء بن عازب | ٢٩٥/١٩ |
| «عجل الأضحى...» | أبو الحويرث | ٥٤٥/٦ |
| «عجل هذا» | فضالة بن عبيد | ٦٧١/٣ |
| «عجلوا الخروج إلى مكة...» | ابن عباس | ٢٤٤/٩ |
| «العجماء جبار والبئر جبار والمعدن جبار» | هزيل بن شرحبيل | ٥٧٦/١٧ |
| «العجماء جرحها جبار...» | أبو هريرة | ٢٥٣/٨، ٤١٤/١٦، ٤١٥، ٥٧٣/١٧، ٥٧٨ |
| «عدلت شهادة الزور بالشرك بالله» | خريم بن فاتك | ٣٦٠/٢٠ |
| «عذاب يبعثه الله على من يشاء فجعله رحمة للمؤمنين» | عائشة | ١٧٠/٧ |
| «عذبت امرأة فى هرة...» | عبد الله بن عمر | ٣٩٩/١٠، ١٢٣/١٦ |
| «عذت بعظيم الحقى بأهلك» | عائشة | ٢٦٩/١٥ |
| «العرب أكفاء بعضها بعضا...» | ابن عمر | ١٧٠/١٤ |
| «العرب بعضها أكفاء لبعض...» | عبد الله بن عمر | ١٦٩/١٤ |
| «العرب للعرب أكفاء...» | عائشة | ١٧٠/١٤ |
| «عربوا العربى وهجنوا الهجين» | مكحول | ٢١٦/١٣ |
| «عرش كعرش موسى» | سالم بن عطية | ١٥٨/٥ |
| «عرض على الأنبياء بأممها وأتباعها من أممها» | عبد الله بن مسعود | ٢٦٦/٣ |
| «عرض على أول ثلاثة يدخلون الجنة...» | أبو هريرة | ١٠/٨ |

| | | |
|---|---|---|
| «عرض على قوم من أمتى يركبون ظهر هذا...» | أم حرام بنت ملحان | ٥٤٤/١٨ |
| «عرضت على أجور أمتى...» | أنس بن مالك | ١٦٢/٥ |
| «عُرضت على أعمال أمتى حسنها وسيئها...» | أبو ذر | ٣٩٨/٤ |
| «عرفات موقف وارفعوا عن عرنة...» | جبير بن مطعم | ٣٦٧/١٩ |
| «عرفت إن بادأت بها قومى» | على بن أبى طالب | ٢٢/١٨ |
| «عرفه سنة فإن جاء باغيه فادفعه إليه...» | عبد الله بن عمرو | ٢٤٩/٨ |
| «عرفة كلها موقف وارتفعوا من عُرَنة...» | محمد بن المنكدر | ٦٥/١٠ |
| «عرفة يوم يُعرِّف الإمام...» | عائشة | ٢٦٣/١٠ |
| «عرفها حولًا» | أبى بن كعب | ٣٥٣/١٢، ٣٦٨، ٣٧٢، ٣٧٤ |
| «عرفها حولًا آخر» | أبى بن كعب | ٣٥٣/١٢ |
| «عرفها سنة ثم اعرف عفاصها ووكاءها...» | زيد بن خالد الجهنى | ٣٧٠/١٢، ٣٨٦ |
| «عرفها سنة ثم اعرف وكاءها وعفاصها...» | زيد بن خالد الجهنى | ٣٦٠/١٢، ٣٧٠ |
| «عرفها سنة فإن جاء صاحبها وإلا فاستنفقها» | زيد بن خالد | ٣٥١/١٢ |
| «عرفها سنة فإن لم تعترف فاعرف عفاصها» | زيد بن خالد الجهنى | ٣٥٢/١٢ |
| «عرفها عاما واحدا» | أبى بن كعب | ٣٧٤/١٤ |
| «عرفها عامين أو ثلاثة» | أبى بن كعب | ٣٨٣/١٢ |
| «عرق أهل النار...» | جابر بن عبد الله | ٤٠٤/١٧ |
| «العسل فى كل عشرة أزقاق زق» | ابن عمر | ١٥٣/٨ |
| «عسى أن تجىء به أسود جعدا» | عبد الله بن مسعود | ٥٥٣/١٧ |
| «عشر من الإبل» | أسامة بن عمير | ٤٠٨/١٦ |
| «عشر من الفطرة...» | عمار بن ياسر، عائشة | ١١٠/١، ١٦٣، ١٦٤، ٢/ ٣٨١ |
| «عشرون حقة وعشرون جذعة...» | ابن مسعود | ٣١١/١٦ |
| «عصابتان من أمتى أحرزهما الله من النار...» | ثوبان | ٥٨٢/١٨ |
| «عُصَية عصت الله ورسوله» | أنس بن مالك | ٢٥٤/٤ |
| «عفوت عن الخيل والرقيق» | على بن أبى طالب | ١٢٦/٨، ١٨٦ |
| «عفوت لكم عن صدقة الجبهة والكسعة والنخة» | أبو هريرة | ١٢٧/٨ |

| | | |
|---|---|---|
| «عفوت لكم عن صدقة الخيل والرقيق...» | على بن أبى طالب | ١٢٥/٨ |
| «عَقْرَى حَلْقَى» | عائشة | ٢٢٣/١٠ |
| «عقل الكافر نصف عقل المؤمن» | عبد الله بن عمرو | ٣٨٩/١٦ |
| «العقيقة تذبح لسبع ولأربع عشرة...» | بريدة | ٣٨٩/١٩ |
| «علام أوقدتم هذه النيران؟» | سلمة بن الأكوع | ٦٦/١٢ |
| «علام تدغرن أولادكن بهذا العلاق؟» | أم قيس بنت محصن | ٤٨/١٦، ٥٣١/١٩ |
| «علام توقد هذه النيران؟» | سلمة بن الأكوع | ٤٧٤/١٩ |
| «علام يقتل أحدكم أخاه...» | أبو أمامة بن سهل بن حنيف | ٥٥٣/١٩ |
| «العلم ثلاثة وما سوى ذلك فهو فضل...» | عبد الله بن عمرو | ٤٢٣/١٢ |
| «علمها بلالًا» | معاذ بن جبل | ١٠٣/٣ |
| «علموا الصبى الصلاة ابن سبع سنين» | سبرة بن معبد | ٥٨٥/٥ |
| «علموا صبيانكم الصلاة فى سبع سنين...» | عبد الله بن عمرو | ٢٠٥/٤ |
| «على ابن السبيل فإن ذلك خير» | نبيشة | ٤١٦/١٩ |
| «على الإسلام والجهاد والخير» | مجاشع بن مسعود | ٥٤/١٨ |
| «على الألفة والطير المأمون...» | معاذ بن جبل | ٩١/١٥ |
| «على أن تخلوا بيننا وبين البيت فنطوف به» | مروان بن الحكم، المسور بن مخرمة | ١٢٠/١٩ |
| «على أن تعبدوا الله ولا تشركوا به شيئا...» | عوف بن مالك | ٣٨٩/٨ |
| «على بالرجل» | بريدة | ٥٣٧/١٢ |
| «على بذنوب من زمزم» | أبو مسعود الأنصارى | ٤٤٢/١٧ |
| «على بركة الله» | امرأة من بنى غفار | ٦١/٥ |
| «على به» | أبو هريرة | ٤٩٢/٨ |
| «علىّ بهما» | يزيد بن الأسود | ٤٢٦/٤ |
| «على رسلك...» | سهل بن سعد | ٣٥٠/١٨ |
| «على رسلك فإنى أرجو أن يؤذن لى» | عائشة | ٣٢/١٨ |
| «على رسلكما إنما هى صفية» | على بن الحسين | ١٩٠/٩، ١٩٥ |
| «على الفطرة» | أنس بن مالك، عبد الله ابن مسعود | ١٣٩/٣، ١٤٠ |

| | | |
|---|---|---|
| «على كل أهل بيت من المسلمين أضحية وعتيرة» | عجوز من آل الأشعث | ٢٥٠/١٩ |
| «على كل بطن عقوله» | جابر | ٤٠٧/١٦ |
| «على كل حالم أو حالمة دينارًا...» | الحكم | ٣٧/١٩ |
| «على كل محتلم رواح الجمعة...» | حفصة | ٢٣١/٦ |
| «على كل مسلم حق أن يغتسل فى كل سبعة» | أبو هريرة | ٣٧٥/٢ |
| «على كل مسلم» | عمرو بن شعيب | ٣٠٣/٨ |
| «على كل مسلم صدقة» | أبو موسى الأشعرى | ٣٥٩/٨، ٢٦٧/٢٠ |
| «على كم؟» | أنس | ٤٩٢/١٤ ، ٤٩٣ |
| «على كم تزوجتها؟» | أبو هريرة | ٤٨٨/١٤ |
| «على المقتتلين أن ينحجزوا الأول...» | عائشة | ٢٦٤/١٦ |
| «على اليد ما أخذت حتى تؤديه» | سمرة | ٢٧/١٢، ٤٧، ٦٠، ١٧/ ٣٥٤ |
| «عليك بالأرض» | أبو هريرة | ١٦٥/٢ |
| «عليك بالتراب» | أبو هريرة | ١٦٤/٢ ، ١٦٦ |
| «عليك بالتلبين البغيض النافع...» | عائشة | ٥٣٠/١٩ |
| «عليك بالسابعة» | ابن عباس | ١٦٦/٩ |
| «عليك بالصبر» | أبو ذر | ٣٣٢/١٧ |
| «عليك بالصعيد فإنه يكفيك» | عمران بن حصين | ١٧٠/٢ |
| «عليك بالصيام فإنه لا مثل له» | أبو أمامة | ١٢٥/٩ |
| «عليك بالطاعة فى منشطك...» | أبو هريرة | ٥٥٤/١٦ |
| «عليك بأول سوم...» | الزهرى | ٤٣٣/١١ |
| «عليك وأبيك السلام» | - | ٣٢٦/١٣ |
| «عليكم بالأبكار...» | عبد الرحمن بن عويم | ٩/١٤ |
| «عليكم بالإثمد فإنه يجلو البصر...» | ابن عباس | ٧/٩، ٥٣٣/١٩ |
| «عليكم بالأسود البهيم ذى النقطتين فإنه شيطان» | جابر بن عبد الله | ٣٥٠/١١ |
| «عليكم بالبياض فليلبسه أحياؤكم...» | سمرة بن جندب | ٢٤٨/٧ |
| «عليكم بالجهاد فى سبيل الله...» | عبادة بن الصامت | ٧٠/١٨ |

| | | |
|---|---|---|
| «عليكم بالدلجة؛ فإن الأرض تطوى بالليل» | أنس بن مالك | ٥٤١/١٠ |
| «عليكم بالشفاءين العسل والقرآن» | عبد الله بن مسعود | ٥٢٥/١٩ |
| «عليكم بالصدق فإن الصدق يهدى إلى البر...» | ابن مسعود | ٤٤/٢١ |
| «عليكم بالصعيد» | أبو هريرة | ٤١٠/٢ |
| «عليكم بالقصد فى المشى بجنائزكم» | أبو موسى | ٣٣٥/٧ |
| «عليكم بحصى الخَذْف الذى تُرمى به الجمرة» | الفضل بن عباس | ١٠٨/١٠ |
| «عليكم بقيام الليل فإنه دأب الصالحين...» | أبو أمامة الباهلى | ٣٤٥/٥ |
| «عليكم بقيام الليل فإنه دأب الصالحين...» | بلال بن رباح | ٣٤٦/٥ |
| «عليكم بكل أشقر أغر» | أبو وهب الجشمى | ٢٢٤/١٣ |
| «عليكم بكل كميت أغر محجل...» | أبو وهب الجشمى | ٢٢٤/١٣ |
| «عليكم بهذا وأمثالها ورماح القنا...» | على | ١٠/٢٠ |
| «عليكم بهذه الحبة السوداء فإن فيها شفاء...» | أبو هريرة | ٥٢٦/١٩، ٥٢٧ |
| «عليكم السكينة...» | العباس بن عبدالمطلب | ١٠٣/١٠ |
| «عليكم هديًا قاصدًا عليكم هديًا قاصدًا» | بريدة | ٣٩٨/٥ |
| «عليه دين؟» | أنس | ٥٦١/١١ |
| «عليه دين؟» | جابر | ٥٥٥/١١، ٥٥٩ |
| «عمدًا صنعته» | بريدة | ٣٠٥/٢ |
| «عمدًا صنعته يا عمر» | بريدة | ٤٦٧/١ |
| «عمدًا فعلته يا عمر» | بريدة | ٣٥٥/١، ٣٠٥/٢ |
| «عمر» | عمرو بن العاص | ١٣٠/١٥ |
| «عمر بن الخطاب» | عمرو بن العاص | ٣٥٥/١٣ |
| «عمران بيت المقدس» | سعيد بن أبى هريرة | ١٣٢/١٩ |
| «العمرة إلى العمرة» | أبو هريرة | ٢٥٧/٩، ٥٦٠/١٠ |
| «العمرى جائزة» | أبو هريرة | ٣١٣/١٢، ٣١٤ |
| «العمرى جائزة» | جابر | ٣٠٩/١٢، ٣١٣ |
| «العمرى جائزة» | سمرة | ٣١٥/١٢ |
| «العمرى جائزة لمن أعمرها والرقبى....» | جابر بن عبد الله | ٣١٧/١٢ |
| «العمرى لمن وهبت له» | جابر بن عبد الله | ٣٠٨/١٢ |
| «عمل الرجل بيده وكل بيع مبرور» | أبو بردة، سعيد بن عمير | ٧٦/١١ |

| | | |
|---|---|---|
| «عمل هذا يسيرا وأجر كثيرا» | البراء | ٥٤٩/١٨ |
| «عن الغلام شاتان مثلان...» | أم كرز الخزاعية | ٣٨١/١٩ |
| «عن الغلام شاتان مكافأتان...» | أم كرز الخزاعية، عائشة | ٣٨١/١٩- ٣٨٤، ٣٨٦ |
| «عن الغلام شاتان وعن الجارية شاة...» | أم كرز | ٤١٤/١٩ |
| «عن الغلام عقيقته فأهريقوا عنه دما...» | سلمان بن عامر الضبى | ٣٧٤/١٩ |
| «عن كل اثنين» | أبو صعير | ٢٩٠/٨ |
| «عن كل رأس» | ثعلبة بن عبد الله أو عبدالله بن ثعلبة | ٢٩٠/٨ |
| «عن كل رأس أو كل إنسان» | عبد الله بن ثعلبة | ٢٩١/٨ |
| «عن نفسك فلبٍّ» | ابن عباس | ٢٣٦/٩ |
| «عند امرأة ثيب» | جابر | ٦٣/١٤ |
| «عند موضع سجودك يا أنس» | أنس بن مالك | ٣٧٤/٤ |
| «عندك شيء؟» | على | ١٠/١٦ |
| «عهد إلى خمسين صلاة على أمتى كل يوم وليلة» | أنس بن مالك | ١٢/٣ |
| «العهد قريب والمال أكثر من ذلك» | ابن عمر | ٤٥٠/١٨ |
| «العهد الذى بيننا وبينهم الصلاة فمن تركها فقد كفر» | بريدة بن الحصيب | ١٣٥/٧، ١٣٦ |
| «عهدة الرقيق أربع ليال» | عقبة بن عامر | ١٩٨/١١ |
| «عهدة الرقيق أربعة أيام» | سمرة أو عقبة | ١٩٨/١١ |
| «عهدة الرقيق ثلاث ليال» | عقبة بن عامر | ١٩٧/١١ |
| «عودوا مرضاكم واتبعوا الجنائز تذكركم الآخرة» | أبو سعيد الخدرى | ١٨٠/٧، ١٨١ |
| «العيافة والطرق والطيرة من الجبت» | قبيصة | ٤٩٧/١٦ |
| «العين حق...» | ابن عباس | ٥٥٢/١٩ |
| «العين وكاء السّه» | معاوية | ٣٥٨/١ |


## (الغين)


| | | |
|---|---|---|
| «غارت أمكم» | أنس بن مالك | ٤٩/١٢ |

| | | |
|---|---|---|
| «الغبيراء؟» | أم حبيبة | ٤٠٦/١٧ |
| «غدا ولكنها على قدر نصبك» | أم المؤمنين | ٢٢١/٩ |
| «غربها» | ابن عباس | ٢٣٢/١٤ |
| «الغرة العبد والأمة» | الحجاج الأسلمى | ٤٣/١٦ |
| «غزا نبى من الأنبياء...» | أبو هريرة | ٩٧/١٣ |
| «الغزو غزوان....» | معاذ بن جبل | ٥٥٢/١٨ |
| «الغسل من خمسة من الجنابة والحجامة وغسل يوم الجمعة...» | عائشة | ٣٨١/٢ |
| «غسل يوم الجمعة على كل محتلم...» | أبو سعيد الخدرى | ٤٢٩/٦ |
| «الغسل يوم الجمعة واجب...» | أبو سعيد الخدرى | ٤٢٩/٦ |
| «غسل يوم الجمعة واجب على كل محتلم» | أبو سعيد الخدرى | ٣٦٥/٢، ٢٧٢/٦ |
| «الغسل يوم الجمعة واجب على كل محتلم» | أبو سعيد الخدرى | ٣٧٤/٢، ٢٧٢/٦ |
| «غض البصر وكف الأذى...» | أبو سعيد الخدرى | ٣٥/١٤، ٢٦٦/٢٠، ٢٦٧ |
| «غطِّها فإنها عورة» | جرهد | ٢٠٢/٤ |
| «غطوا الإناء وأوكوا السقاء وأغلقوا الأبواب» | جابر بن عبد الله | ٢٦٨/٢ |
| «غطوا رأسه واجعلوا على رجليه من الإذخر» | خباب | ٢٩٤/٧، ٢٩٥ |
| «غفار غفر الله لها وأسلم سالمها الله...» | خفاف بن إيماء | ١٤٦/٤ |
| «غفر الله لرجل كان قبلكم كان سهلًا إذا باع» | جابر بن عبد الله | ٣٢٢/١١ |
| «غفر الله لك» | جرير بن حازم | ٧٢/٨ |
| «غفر الله لك يا أبا بكر» | أبو بكر الصديق | ١٥٨/٧ |
| «غفر لك ربك» | سلمة بن الأكوع | ٥٠٥/١٨ |
| «غفرانك» | عائشة | ٢٩٤/١ |
| «غفرانك ربنا وإليك المصير» | عائشة | ٢٩٥/١ |
| «الغلام مرتهن بعقيقته يماط عنه الأذى...» | سلمان بن عامر | ٣٨٩/١٩ |
| «غلبنا عليك يا أبا الربيع» | جابر بن عبد الله | ٤٩٢/٧ |
| «الغلة بالضمان» | عائشة | ١٩٢/١١ |
| «الغناء ينبت النفاق فى القلب...» | عبد الله بن مسعود | ١٤٢/٢١ |
| «غنى أو فقير» | أبو صغير | ٢٩٠/٨ |
| «الغنى والفقير» | أبو صغير | ٢٨٢/٨ |

| | | |
|---|---|---|
| «غير شاتمه ولا متشدد عليه...» | أبى بن كعب | ٤٨٨/١١ |
| «غير متأثل مالًا....» | رجل | ٣٢٩/١١ |
| «غير مشقوق عليه» | أبو هريرة | ٣٤٤/٢١ |
| «غير المغضوب عليهم ولا الضالين» | وائل بن حجر | ٤٤٣/٣، ٤٤٤، ٤٤٦ |
| «غَيِّرْ هذا أحسن من هذا» | ابن عمر | ١٦١/٥ |
| «غيروا الشيب ولا تشبهوا باليهود...» | أبو هريرة | ١٧٢/١٥ |
| «غيروا هذا بشيء واجتنبوا السواد» | جابر بن عبد الله | ١٧١/١٥ |


## (الفاء)


| | | |
|---|---|---|
| «فابدءوا قبل التسليم فقولوا: التحيات والطيبات...» | سمرة بن جندب | ٧٤/٤ |
| «فأبوها» | عمرو بن العاص | ٣٥٥/١٣ |
| «فاتخذى ثوبًا» | حمنة بنت جحش | ٤٧٣/٢ |
| «فاتقوا الله فى النساء...» | جابر | ٢٠٣/١٤، ١١٦/١٥ |
| «فاتقوا الله واعدلوا بين أولادكم» | النعمان بن بشير | ٣٢١/١٢ |
| «فأتموا بقية يومكم فاقضوه» | عم عبد الرحمن بن مسلمة | ٤٧٦/٨ |
| «فأجب» | أبو هريرة | ٥٠٦/٥، ٥٣٣ |
| «فاجتنبوه...» | ديلم الحميرى | ٤٠٤/١٧ |
| «فأجزه لى» | المسور بن مخرمة، مروان بن الحكم | ١٢١/١٩ |
| «فاجعل هذه عنك» | ابن عباس | ٢٣٤/٩ |
| «فاجلس» | سعيد بن المسيب | ٤٩٠/٨ |
| «فأجيء فى الرابعة فأحمد بتلك المحامد...» | أنس | ٤٠٢/٢٠ |
| «فأحبه فإن له فى الخمس أكثر من ذلك» | بريدة | ٢٦٧/١٣ |
| «فأحبى هذه» | عائشة | ١٣١/١٥ |
| «فاحجج عنه» | عبد الله بن الزبير | ٢١٣/٩ |
| «فأحرمى فيه» | مكحول | ٤٧٦/٩ |
| «فاحلق» | كعب بن عجرة | ٢٤٨/٩ |

| | | |
|---|---|---|
| «فاحلق رأسك» | كعب بن عجرة | ٢٤٨/٩ |
| «فاحلق رأسك وأطعم» | كعب بن عجرة | ٢٩٦/٨، ٤٦٥/٩ |
| «فأخذنى فغطنى...» | عائشة | ١٨/١٨ |
| «فأدرك رجل متاعه بعينه فهو أحق به من الغرماء» | أبو هريرة | ٤٦٦/١١ |
| «فأدوا زكاة الأموال» | على بن أبى طالب | ١٢٦/٨ |
| «فإذا أتممت صلاتك على نحو هذا فقد تمت صلاتك...» | يحيى بن خلاد عن عمٍّ له | ٦٠٧/٤ |
| «فإذا حللت فآذنينى» | فاطمة بنت قيس | ٣١٩/١٤ |
| «فإذا أردتم أن تنطلقوا إلى منى فأهلوا» | جابر | ٢٩٣/٩، ٢٩٤، ٣٨٥ |
| «فإذا استيقظت فصلِّ» | أبو سعيد | ١٣٤/٩ |
| «فإذا اشتد فأهريقوه» | ابن عباس | ٤٣٧/١٧ |
| «فإذا أفطرت فصم يومًا أو يومين» | عمران بن حصين | ٤٣٨/٨ |
| «فإذا أفطرت فصم يومين مكانه» | عمران بن حصين | ٤٣٧/٨ |
| «فإذا أفطرت فصم يومين» | عمران بن حصين | ٤٣٨/٨ |
| «فإذا أنت قد طهرت» | أم سلمة | ٤٩/٢ |
| «فإذا أنت قمت فى صلاتك فكبر الله» | رفاعة بن رافع | ٦٣٥/٣ |
| «فإذا بلغت مائتين وعشرا ففيها» | محمد بن عبد الرحمن | ٣٩/٨ |
| «فإذا جفت من دمائها فأقم على‌ها الحد» | على | ٢٦١/١٧ |
| «فإذا خلفتهن وحضرت» | رجل من الأنصار | ٤٦١/٢ |
| «فإذا ذهب أحدكم...» | أبو هريرة | ٢٧٧/١ |
| «فإذا ذهب قدرها فاغسلى» | عائشة | ٤٤٢/٢- ٤٤٣ |
| «فإذا رأيتم ذلك فادعوا الله وصلوا» | عائشة | ٥٣/٧، ٥٤ |
| «فإذا زادت واحدة ففيها حقتان...» | على بن أبى طالب | ٤٥/٨، ٨٤ |
| «فإذا سلَّم سجد سجدتى السهو» | عبد الله بن مسعود | ٥٢٤/٤ |
| «فإذا فرغت من الخمس فلتجعل الكافور فى مسامع الميت» | أم سليم أم أنس بن مالك | ٢٩٠/٧ |
| «فإذا فعلت هذا فقد تمت صلاتك...» | أبو هريرة | ٦٠٤/٤ |
| «فإذا قدمت فالكيس الكيس» | جابر | ٥٤٧/١٤ |

| | | |
|---|---|---|
| «فإذا قرأ فأنصتوا» | أبو موسى الأشعرى | ١٢/٤ |
| «فإذا قمتم إلى الصلاة تلتفتوا» | الحارث الأشعرى | ٣٦٩/٤ |
| «فإذا كان رمضان فاعتمرى» | ابن عباس | ٢٦٦/٩ |
| «فإذا كان العام المقبل» | ابن عباس | ٨٠/٩، ٨١ |
| «فإذا كانت شاة ومائتين ففيها....» | - | ٦٦/٨ |
| «فإذا كبر الإمام فكبروا...» | أبو موسى الأشعرى | ١٢/٤ |
| «فإذا نصبتم وجوهكم فلا تلتفتوا» | الحارث الأشعرى | ٣٦٩/٤ |
| «فإذا وجدت الماء فأمسسه جلدك» | أبو ذر | ٦٦/٢ |
| «فإذا وجدت الماء فأمسه جلدك» | الشافعى | ٩٨/٢ |
| «فإذا وضعت حملها فأتنى بها» | عمران بن حصين | ٣٢٣/٧، ١٧١/١٧ |
| «فاذبح لنا مكانها شاة» | لقيط بن صبرة | ١٤٥/١٥ |
| «فاذكريهما لى» | عائشة | ١٥٥/١٤ |
| «فأذن» | أبو هريرة | ١٧٦/٥ |
| «فاذهب إلى صاحب صدقة بنى زريق...» | سلمة بن صخر | ٤٠٠/١٥، ٤١٤ |
| «فاذهب به» | وائل بن حجر | ٢٦٧/١٦ |
| «فاذهب بها يا عبد الرحمن فأعمرها من التنعيم» | جابر | ٢٥٨/٩، ٢٧٠ |
| «فاذهب فاغسله ولا تحدثن شيئا» | على | ٣٩٥/٢ |
| «فاذهب فالتمس أزديًا حولًا» | بريدة | ٥٣٧/١٢ |
| «فاذهب فانظر إليها...» | أبو هريرة | ١٨/١٤ |
| «فاذهب فطف بالبيت واسع» | أبو موسى | ٣٤٧/٩ |
| «فاذهب فقد ملكتكها بما معك من القرآن» | سهل بن سعد | ٢٠١/١٤ |
| «فاذهبى إلى ذى قرابتك فليفتح لك» | عائشة | ٢٠٨/١٠ |
| «فارجع إلى والديك فأحسن صحبتهما» | عبد الله بن عمرو | ٨٨/١٨ |
| «فارجع فاستأذنهما...» | أبو سعيد الخدرى | ٨٩/١٨ |
| «فارجع فلن أستعين بمشرك» | عائشة | ١٢٥/١٨ |
| «فارجعه» | النعمان بن بشير | ٣٢٠/١٢، ٣٢٩ |
| «فأردت أن يفشو فيهم» | سلمة بن الأكوع | ٣٥٦/١٩ |
| «فارده» | النعمان بن بشير | ٣٢٠/١٢، ٣٢٩ |

| | | |
|---|---|---|
| «فأرسل إلى منه...» | ابن عمر | ٤٤٥/١٧ |
| «فأرسلتم من يغني؟» | عائشة | ٩٦/١٥ |
| «فارضفوه بالرضف» | ابن مسعود | ٥١٩/١٩ |
| «فارق واحدة وأمسك أربعا» | نوفل بن معاوية | ٣٢٩/١٤ |
| «فارقها» | جابر | ٢٣٣/١٤ |
| «فأرنيه» | البراء | ٤٧٩/١٣ |
| «الفأرة والعقرب والغراب...» جواب على سؤال (ما يقتل المحرم من الدواب) | عبد الله بن عمر | ٣٨٤/١٠ |
| «فاستأذن عليها» | عطاء بن يسار | ٦٠/١٤ |
| «فاستتروا» | ابن عباس | ١٦٤/١٥ |
| «فاستمتع بها إذن» | ابن عباس | ٢٣٢/١٤ |
| «فاستمتع بها» | جابر بن عبد الله | ٢٣٣/١٤ |
| «فأشد ما تجدون من الحر فمن حرها» | أبو هريرة | ٢٢٤/٣ |
| «فاشرب» | أبو هريرة | ١٧٦/٥ |
| «فأشهد على هذا غيرى» | النعمان بن بشير | ٣٢٥/١٢، ٣٢٦ |
| «فأصلحى من نفسك وخذى» | امرأة من بنى غفار | ٦١/٥ |
| «فاضربوهن» | إياس بن عبد الله بن أبى ذباب | ١٤٧/١٥ |
| «فأطعم الجائع واسق الظمآن» | البراء | ٣٠٧/٢١ |
| «فأطعم ستين مسكينا ثلاثين صاعا» | خولة | ٤١٨/١٥ |
| «فأطعم ستين مسكينا» | أبو هريرة | ٤٨٠/٨، ٤٨١، ٤٩١، ٤٩٣، ٤١٩/١٥، ٢٠/ ١٣٧، ١٣٩ |
| «فأطعم ستين مسكينا» | سلمة بن صخر الأنصارى، عكرمة | ٤١٤/١٥، ٤١٧ |
| «فأطعم الطعام وأفش السلام» | كدير الضبى | ٤٧٤/٢٠ |
| «فاطمة بضعة منى من آذاها فقد آذانى» | المسور بن مخرمة | ٦٥/٢١ |
| «فاطمة مضغة منى...» | المسور بن مخرمة | ٥٤٥/١٣ |
| «فاعتزل تلك الفرق كلها ولو أن تعض...» | حذيفة بن اليمان | ٥٥٧/١٦، ٧٨/١٧ |

| | | |
|---|---|---|
| «فاعتزلها حتى تكفر عنك» | عكرمة | ٤٠٢/١٥ |
| «فأعتق رقبة» | أبو هريرة، سلمة بن صخر البياضى | ٤٩٦/٨، ٤٠٠/١٥، ٢٠/ ١٣٧ |
| «فأعتقها» | عبيد الله بن عبد الله بن عتبة بن مسعود، عمر ابن الحكم | ٤٠٤/١٥، ٤٠٧ |
| «فاعتمرى من التنعيم» | عائشة | ٣١٢/٩ |
| «فاعرضها علىّ» | جابر بن عبد الله | ٥٤٢/١٩ |
| «فأعطها إياها» | على | ٤٨٦/١٤ |
| «فاعل ماذا؟» | أم حبيبة بنت سفيان | ٥٧٦/١٣ |
| «فأعمرها من التنعيم» | عبد الرحمن بن أبى بكر | ٣٠٠/٩ |
| «فاعمل من وراء البحار...» | أبو سعيد الخدرى | ٥١/١٨ |
| «فأعنى على نفسك بكثرة السجود » | ربيعة بن كعب | ٢٩٩/٥، ٣٠٠ |
| «فاغتسلى عند طهرك وتوضئى» | عروة | ٤٨٥/٢ |
| «فاغدوا للقتال» | عبد الله | ١٤٧/١٨ |
| «فاغسلى عنك الدم» | عائشة | ٤٨٤/٢ |
| «فأفطرى» | جويرية | ٥٢/٩، ١٣٠ |
| «فأفعل ماذا؟» | أم حبيبة | ١١/١٦ |
| «فاقبضهن إليك ثم اقض دينك» | بلال | ٥٨٠/١١ |
| «فاقتل أباك» | حصين بن وحوح | ٩١/١٨ |
| «فاقرأه فى خمس عشرة» | عبد الله بن عمرو | ٣١/٥ |
| «فاقرأه فى سبع ولا تزد على ذلك» | عبد الله بن عمرو | ٣١/٥ |
| «فاقرأه فى عشرة » | عبد الله بن عمرو | ٣١/٥ |
| «فاقرأه فى عشرين ليلة» | عبد الله بن عمرو | ٣١/٥ |
| «فاقضوا الله فهو أحق بالوفاء» | ابن عباس | ٥٣/١٣ |
| «فاقطعوا متونها بالماء» | ابن عمر | ٤٤٥/١٧ |
| «فاقطعوه» | الحارث بن حاطب | ٣٤٣/١٧ |
| «فأقم أنت» | عبد الله بن زيد | ١٢٢/٣ |

| | | |
|---|---|---|
| «فاكره ما كره الله...» | أبو أمامة | ٥٢٧/١٨ |
| «فأكمل لآدم ألف سنة...» | ابن عباس | ٤٣٥/٢٠ |
| «فالتمس ولو خاتما من حديد» | سهل بن سعد | ١٩٩/١٤ |
| «فالزمها فإن الجنة عند رجليها» | معاوية بن جاهمة | ٩٠/١٨ |
| «فالله أحق أن يستحيا من الناس» | بهز بن حكيم عن أبيه عن جده | ٥٠/١٤ |
| «فالله أرحم حج عن أبيك» | سودة بنت زمعة | ٢١٣/٩ |
| «فإما لا فلا تبايعوا حتى يبدو صلاح الثمر» | زيد بن ثابت | ١٢١/١١ |
| «فأمسكها إذن» | ابن عباس | ٢٣١/١٤ |
| «فإن اعترفت فأدها وإلا فاعرف...» | زيد بن خالد الجهنى | ٣٧١/١٢ |
| «فإن أكل فلا تأكل» | عدى بن حاتم | ١٧٦/١٩ |
| «فإن تلقاه متلقى فصاحب السلعة فيها بالخيار» | أبو هريرة | ٢٨٧/١١ |
| «فإن تلقاه متلقى مشترى فاشتراه» | أبو هريرة | ٢٨٨/١١ |
| «فإن جاء باغيها فعرف عفاصها...» | زيد بن خالد الجهنى | ٣٨٥/١٢ |
| «فإن جاء بشاهد أحلف مع شاهده» | عمرو بن شعيب | ٥١٥/٢٠ |
| «فإن خشى شرته...» | أبو هريرة | ٤٣٦/١٧ |
| «فإن خشيت أن يبهرك شعاع السيف...» | أبو ذر | ٨١/١٧ |
| «فإن خفتم نشوزهن فاهجروهن فى المضاجع» | أبو حرة الرقاشى عن عمه | ١٤٥/١٥ |
| «فإن خالط كلبك كلابًا فقتلن ولم يأكلن...» | عدى بن حاتم | ١٩٩/١٩ |
| «فإن رميت بسهم فى جنبك...» | رجل من بلقين | ٢٤٧/١٣ |
| «فإن عاد فى الثالثة أو الرابعة فاقتلوه...» | معاوية | ٤٧٥/١٧ |
| «فإن غم عليكم فأتموا ثلاثين» | عبد الله بن عمر | ٤٢٠/٨ |
| «فإن كان مفطرا فليطعم...» | ابن عمر | ٩/١٥ |
| «فإن كانوا أكثر من ذلك فليصلوا قيامًا وركبانًا» | ابن عمر | ٤٦٩/٦ |
| «فإن كثروا فليصلوا ركبانًا أو قيامًا على أقدامهم» | ابن عمر | ٤٦٩/٦ |
| «فإن لم تجد فى سنة رسول الله؟» | أصحاب معاذ من أهل حمص ومعاذ بن جبل | ٣٣٥/٢٠ |

| | | |
|---|---|---|
| «فإن لم تجده فى كتاب الله؟» | أصحاب معاذ من أهل حمص ومعاذ بن جبل | ٣٣٥/٢٠ |
| «فإن لم يتركوه فاقتلوهم» | ديلم الحميرى | ٤٠٥/١٧ |
| «فإن لم يكن عنده فقد جاز ما صنع» | ابن عمر | ٣٢٢/٢١ |
| «فأنا أتحمل بها عنك» | ابن عباس | ٥٥٧/١١ |
| «فأنت أبو شريح» | هانئ أبو شريح | ٤٢٩/٢٠ |
| «فأنت شهيد» | أبو هريرة | ٤٩٨/٦، ٥٤٨/١٧ |
| «فأنتما لا تبصرانه؟» | أم سلمة | ٤١/١٤ |
| «فانشد الله» | أبو هريرة | ٥٤٩/١٧، ٥٥٠ |
| «فانطلق» | عائشة | ١٢٥/١٨ |
| «فانطلق بنا فأرناه» | عبد الله بن مسعود | ٣٠٧/١٨ |
| «فانطلق فانظر أول خزاعى تلقاه فادفعه إليه» | بريدة | ٥٣٧/١٢ |
| «فانطلق فطف بالبيت» | أبو موسى | ٢٤٠/٩ |
| «فانطلق فواره» | على | ٣٩٣/٢ |
| «فانظر بعيرًا من إبلك وسقاء....» | كدير الضبى | ٣٥٣/٨، ٤٧٤/٢٠ |
| «فانفرى» | عائشة | ٣١٢/٩ |
| «فإن أحدكم إذا كان يعمد إلى الصلاة فهو فى صلاة» | أبو هريرة | ٣٨٦/٦ |
| «فإن الله حرم عليكم دماءكم وأموالكم...» | عبد الله بن عمر | ٣٣/١٢ |
| «فإن الله عز وجل غنى عن تعذيب هذا نفسه» | أنس | ٢١٥/٢٠ |
| «فإن الله قد غفر لك ذنبك» | أنس | ٥٣٨/١٧ |
| «فإن الله لعن الخمر وعاصرها ومعتصرها...» | ابن عمر | ٣٨٨/١٧ |
| «فإن أموالكم وأعراضكم ودماءكم حرام» | أبو بكرة | ٣٥/١٢ |
| «فإن حكم الله فيهم أن لا يتبع مدبرهم...» | ابن عمر | ٥٣/١٧ |
| «فإن دماءكم وأموالكم حرام عليكم» | نبيط بن شريط | ٣٤٧/٦ |
| «فإن دماءكم وأموالكم وأعراضكم حرام...» | عمرو بن الأحوص | ١٧١/١٦ |
| «فإن دماءكم وأموالكم وأعراضكم...» | أبو بكرة | ١٤٤/١٦ |
| «فإن ذلك لا يحل لى» | أم حبيبة بنت أبى سفيان | ٢٦١/١٤ |

| | | |
|---|---|---|
| «فإن ذلك يرد ما فى نفسه» | جابر | ٣٧/١٤ |
| «فإن فيه أشفية» | أم قيس بنت محصن | ٥٣١/١٩ |
| «فإن لك رقابهن وما عليهن» | بلال | ٥٨٠/١١ |
| «فإن هذا أمر كتبه الله على بنات» | جابر | ٢٥٨/٩، ٢٧٠ |
| «فإنا لا نستعين بالمشركين على المشركين» | خبيب بن يساف | ١٢٧/١٨ |
| «فإنك آتيه ومتطوف به» | ابن المبارك | ١٢١/١٩ |
| «فإنك لو كنت أعظم أهل الأرض ذنبًا غفر لك بذلك» | رجل كانت له صحبة ويرون عبد الله بن عمرو | ٤٩١/٥ |
| «فإنك من أهله» | أنس بن مالك | ٣٢٩/١٨ |
| «فإنك من أهلها» | أنس بن مالك | ١٤٩/١٨ |
| «فإنكم ترونه كذلك» | أبو هريرة | ١٠٠/٢٠ |
| «فإنكم سترون بعدى أثرة فاصبروا...» | أنس | ٢١٠/١٢ |
| «فإنما تملك واحدة فارجعها إن شئت» | ابن عباس | ٢٥٩/١٥ |
| «فإنه أعمى تضعين ثيابك عنده» | أم سلمة | ٥٣٦/١٥ |
| «فإنه أنشط للعود» | أبو سعيد | ٣٤٥/١٤ |
| «فإنه حرام» | ديلم الجيشانى | ٤٠٥/١٧ |
| «فإنه كان معك من يرد عنك...» | أبو هريرة | ١٨٨/٢١ |
| «فإنه لا بد من المتاع» | جابر بن عبد الله | ٥٥٨/١٤ |
| «فإنه ليست من نفس مخلوقة إلا الله خالقها» | أبو سعيد الخدرى | ٤٦٤/١٤ |
| «فإنه من يشاد هذا الدين يغلبه» | بريدة | ٣٩٨/٥ |
| «فإنه من يشرب فيها فى الدنيا لا يشرب فيها فى الآخرة» | البراء بن عازب | ٧٩/١ |
| «فإنها ألهتنى فى صلاتى» | عائشة | ٥٥٦/٤ |
| «فإنها على حرام لا تخبرى بذلك أحدا» | الضحاك | ٣٠٣/١٥ |
| «فإنها عمرة متقبلة» | عبد الرحمن بن أبى بكر | ٣٠٠/٩ |
| «فإنها لا تحل» | أم حبيبة | ١١/١٦ |
| «فإنها لا ترمى لموت أحد ولا لحياته» | رجال من أصحاب النبى ﷺ | ٤٩٥/١٦ |

| | | |
|---|---|---|
| «فإنهم يأتون يوم القيامة غرًّا...» | أبو هريرة | ٢٥١/١ |
| «فأنى أتاها ذلك؟» | أبو هريرة | ٤٧٨/١٥، ٢٨٤/١٧ |
| «فإنى إذن صائم» | عائشة | ٤١٣/٨ |
| «فإنى أسر إليك أمرا...» | عروة بن الزبير | ١١٤/١٧ |
| «فإنى أعطى رجالا حديثى عهد بكفر» | أنس بن مالك | ٢٥٠/١٣ |
| «فإنى امرؤ مقبوض وإن العلم سيقبض...» | عبد الله | ٤٢٤/١٢ |
| «فإنى سأعينه بعرق من تمر» | خويلة بنت مالك | ٤١٦/١٥ |
| «فإنى صائم» | عائشة | ٤١٢/٨ |
| «فإنى على الحوض» | أنس بن مالك | ٢٥٠/١٣ |
| «فإنى لا أشهد» | النعمان بن بشير | ٣٢٦/١٢ |
| «فإنى لا أشهد على هذا...» | النعمان بن بشير | ٣٢٦/١٢ |
| «فإنى مسر إليك سرا...» | حذيفة بن اليمان | ١١٣/١٧ |
| «فإنى نذير لكم بين يدى عذاب...» | ابن عباس | ٢٢/١٨ |
| «فأهد ثم امكث» | جابر | ٢٤٠ /٩ |
| «فأهد وامكث حراما» | جابر بن عبد الله | ٣٤٣/٩، ٤١٩ |
| «فأوف لله ما نذرت له» | ميمونة بنت كردم | ٢٣٠/٢٠ |
| «فأى بلد أحرم؟» | نبيط بن شريط | ٣٤٧/٦ |
| «فأى شهر أحرم؟» | نبيط بن شريط | ٣٤٧/٦ |
| «فأين؟» | عائشة | ٣١٩/١٨ |
| «فأين أنت منه؟ فإنما هو جنتك ونارك» | عمة حصين بن محصن | ١٠٥/١٥ |
| «فأين أنتم عن أسامة» | فاطمة بنت قيس | ٦٥/١٦ |
| «فأين الدباغ؟» | أبو ليلى | ٦٩/١ |
| «فأين الدباغ؟» | أنس بن مالك | ٧٠/١ |
| «فأين درعك الحطمية؟» | ابن عباس | ٥٤١/١٤ |
| «فأين المال الذى دفنت أنت وأم الفضل...» | عائشة | ١٩٦/١٣ |
| «فأين منزله» | ابن عمر | ٣٧٠/٢٠ |
| «فأين هى ممن يعلمها كتاب ربها وسنة نبيها؟» | زينب بنت جحش | ١٧٦/١٤ |
| «فبابنتك؟» | أبو أمامة | ٥٢٧/١٨ |

| | | |
|---|---|---|
| «فبارك الله لك أولم ولو بشاة» | أنس | ٥٦١/١٤ |
| «فبعنيه بعذق فى الجنة» | جابر بن عبد الله | ٢٥٣/١٢ |
| «فتأخذ الدية؟» | وائل بن حجر | ٢٤٧/١٦، ٢٥٤ |
| «فتبارك الله أحسن الخالقين» | عائشة | ٤٩٦/٤ |
| «فتبتغى الأجر من الله؟» | عبد الله بن عمرو | ٨٨/١٨ |
| «فتبرئكم يهود بأيمان خمسين منهم؟» | سهل بن أبى حثمة ورافع بن خديج | ٤٤٠/١٦ |
| «فتبرئكم يهود بخمسين يمينًا؟» | سهل بن أبى حثمة | ٤٣٧/١٦، ٤٥٠، ٢٠/ ٥٤٧، ٥٤٨ |
| «فتبرئكم اليهود بخمسين يمينا؟» | سهل بن أبى حثمة ورافع بن خديج | ٤٣٨/١٦ |
| «فتبرئكم يهود بخمسين؟» | رافع بن خديج، سهل ابن أبى حثمة، سويد ابن النعمان | ٤٣٩/١٦، ٤٤١ |
| «فتجد ما تطعم ستين مسكينًا؟» | أبو هريرة | ٤٧٩/٨ |
| «فتح بيت المقدس» | عوف بن مالك | ١٣٢/١٩ |
| «فتحتسبهم» | أبو هريرة | ٤٨٣/٧ |
| «فتحلف يهود؟» | سهل بن أبى حثمة | ٤٣٦/١٦، ٥٤٦/٢٠ |
| «فتر الوحى عنى...» | جابر بن عبد الله | ٢٠/١٨ |
| «فتستطيع أن تطعم ستين مسكينا؟» | أبو العالية الرياحى | ٣٩٩/١٥ |
| «فتصدق أطعم ستين مسكينا» | سلمة بن صخر | ٤٠٠/١٥ |
| «فتصدق على ستين مسكينا» | سعيد بن المسيب | ٤٢٠/١٥ |
| «فتصلين الخمس وتقرين بما جئت به...؟» | عتبة بن مسعود | ٤٠٦/١٥ |
| «فتصومين غدًا» | جويرية | ١٣٠/٩ |
| «فتطعم الطعام وتفشى السلام» | كدير الضبى | ٣٥٢/٨ |
| «فتعلمها» | زيد بن ثابت | ٤٣٢/١٢ |
| «فتعين الصانع وتصنع لأخرق» | أبو ذر | ٥٨٣/١١ |
| «فتقتله؟» | وائل بن حجر | ٢٤٧/١٦، ٢٥٤ |
| «فتكون لكما نافلة والتى فى رواحلكما فريضة» | عبد الله بن عمرو | ٤٢٨/٤ |

| | | |
|---|---|---|
| «فتيمم بالصعيد فإذا فرغت» | عمران بن حصين | ١٧٤/٢ |
| «فجاءنى فى المغرب فصلى بى ساعة» | أبو هريرة | ٣٧/٣ |
| «الفجر فجران فأما الفجر الذى يكون كذنب السرحان» | جابر بن عبد الله | ٦٢/٣ |
| «الفجر فجران فجر يحرم فيه الطعام وتحل فيه الصلاة» | عبد الله بن عباس | ٢٧٦/٣، ٢٧٧ |
| «الفجر فجران فجر يحل فيه الطعام ويحرم فيه الصلاة» | عبد الله بن عباس | ٦٣/٣ |
| «الفجر فجران؛ فأما الأول فإنه...» | ابن عباس | ٤٥٨/٨ |
| «الفجر فجران» | محمد بن عبد الرحمن | ٦٣/٣ |
| «فحجى عن أمك» | بريدة الأسلمى | ٢٤٥/٨ |
| «فحق الله أحق» | ابن عباس | ٥٨٣/٨ |
| «فحملك على هذا حب الله ورسوله؟» | ابن عباس | ١٢١/١٢ |
| «فخذوا زرعكم وردوا عليه النفقة» | رافع بن خديج | ١٨١/١٢ |
| «فخذوا له عثكالا فيه مائة شمراخ...» | سعيد بن سعد بن عبادة | ٢١٠/١٧ |
| «فدفعها إليه إلى أجل مسمى» | أبو هريرة | ٥٦٣/١١ |
| «فدين الله أحق أن يقضى» | ابن عباس | ٥٨٢/٨ |
| «فذلك مثل الصلوات الخمس...» | أبو هريرة | ١٥/٣، ٥٢٢/٥ |
| «فذلك من نقصان دينها» | أبو سعيد الخدرى | ٤٠٤/٢ |
| «فذلك من نقصان عقلها...» | أبو سعيد الخدرى | ٤٠٤/٢، ٥٢٢/٨ |
| «فرأيت غيرها خيرًا منها فكفر عن يمينك...» | عبد الرحمن بن سمرة | ١٣٣/٢٠ |
| «فرحوا إذن» | أبو بكر | ١١٦/١٩ |
| «فردى عليه حديقته» | ابن عباس | ١٨٢/١٥ |
| «فرس له جناحان؟» | عائشة | ١٢٨/٢١ |
| «الفرعة حق وأن تغذوه حتى يكون ابن لبون زخزبا...» | رجل من بنى ضمرة عن أبيه | ٤٢١/١٩ |
| «فرعوا إن شئتم» | الشافعى | ٤٢١/١٩ |
| «فَرَقًا من زبيب» | عبد الرحمن بن أبى ليلى | ٢٤٧/١٠ |

| | | |
|---|---|---|
| «فروحوا إذن» | المسور بن مخرمة | ٣١٦/٢٠ |
| | مروان بن الحكم | |
| «فزوروها فإن فى زيارتها تذكرة» | بريدة | ٥١٧/٧ |
| «فزوروها ولتزدكم زيارتها خيرًا» | بريدة | ٥١٧/٧ |
| «فسهمكم فيها» | أبو هريرة | ١٨٣/١٣ |
| «فشأنك إذن» | جابر بن عبد الله | ٢٢٧/٢٠ |
| «فصارعه» (... ولو صارعته لصرعته) | سمرة بن جندب | ٧٦/١٨، ٢٤/٢٠ |
| «فصل بين الحلال والحرام الصوت...» | محمد بن حاطب | ٩٨/١٥ |
| «فصل ركعتين» | أبو سعيد | ٢٨٩/٦، ٣٥٢ |
| «فصلوا حتى يفرج عنكم» | عائشة | ٥٨/٧ |
| «فصم شهرين متتابعين» | أبو هريرة، سلمة بن | ٤٨٦/٨، ٤٩٣، ١٥/ |
| | صخر البياضى | ٤٠٠، ٤١٩، ١٣٧/٢٠ |
| «فصم شهرين» | أبو هريرة | ٤٩١/٨ |
| «فصم صوم داود» | عبد الله بن عمرو | ٩/ ١٢١ |
| «فصم صيام نبى الله داود» | عبد الله بن عمرو | ٩/ ١٢٢ |
| «فصم من كل جمعة ثلاثة أيام» | عبد الله بن عمرو | ٩/ ١٢٢ |
| «فصوموه أنتم» | أبو موسى | ٨٩/٩ |
| «فصومى عنها» | ابن عباس | ٥٨٤/٨ |
| «فضل شيء؟» | بلال | ٥٨٠/١١ |
| «فضل صلاة الرجل فى جماعة على صلاته فى بيته...» | أبو هريرة | ٥١٩/٥ |
| «فضل صلاة الرجل فى الجماعة على صلاته وحده...» | أبو هريرة | ٥١٣/٥ |
| «فضل الصلاة التى يُستاك لها...» | عائشة | ١١٥/١ |
| «فضلت بأربع» | أبو أمامة | ١٥٣/٢ |
| «فضلت بأربع؛ جعلت لى الأرض...» | أبو أمامة | ١٤٠/٥ |
| «فُضِّلت سورة ألحج» على القرآن بسجدتين» | خالد بن معدان | ٤٧٣/٤ |
| «فُضلت على الأنبياء بست؛ أعطيت...» | أبو هريرة | ١٣٩/٥، ١٦/١٨ |
| «فضلت على الناس بثلاث جعلت صفوفنا» | حذيفة | ١٥٤/٢ |

| | | |
|---|---|---|
| «فضلنا على الناس بثلاث » | حذيفة | ٢/١٥٥، ١٨٠، ١٨١ |
| «الفطرة خمس...» | أبو هريرة | ١/٤٢٦، ٤٣٤ |
| «الفطرة خمس؛ الاختتان والاستحداد...» | أبو هريرة | ١٧/٥٠٥ |
| «الفطرة الفطرة» | أنس بن مالك | ٣/١٤٠ |
| «فطركم يوم تفطرون...» | أبو هريرة | ١٠/٢٦٣ |
| «فطركم يوم تفطرون...» | عطاء | ١٠/٢٦٤ |
| «فعد به على أهلك» | عائشة | ٨/٤٨٤ |
| «فعل ذلك قومك ليدخلوا» | عائشة | ٩/٥٧٩ |
| «فعل القوى فعلت» | أبو قتادة | ٥/٤٤٨ |
| «فعلت كذا وكذا؟» | ابن عباس | ١٧/٢٠٠ |
| «فعلت كذا وكذا؟» | ابن عمر | ٢٠/٨٩ |
| «فعلها؟» | ابن عباس | ١٧/٤٧٧ |
| «فعليه عتقه كله إن كان له مال يبلغ ثمنه...» | أبو بكر وعثمان | ٢١/٣٣٠ |
| «ففيهما فجاهد» | عبد الله بن عمرو | ١٨/٨٧ |
| «فقاتل فإن قتلت ففى الجنة...» | أبو هريرة | ١٧/٥٥٠ |
| «فقاتله...» | أبو هريرة | ١٧/٥٤٨ |
| «فقاتله فإن قتلك كنت فى شهداء الآخرة» | مخارق | ١٧/٥٤٩ |
| «فقال الله تعالى: تجوزوا عنه» | حذيفة | ١١/٣١٦ |
| «فقال: يا محمد إنما بعثتك لأبتليك وأبتلى بك» | عياض بن حمار | ١٨/٦٧ |
| «فقد أدركها كلها» | أبو هريرة | ٦/٣١٠ |
| «فقد زوجتكها بما عندك من القرآن» | سهل بن سعد | ١٤/٢٠٣ |
| «فقد زوجتكها بما معك من القرآن» | سهل بن سعد | ١٣/٥٢٦ |
| «فقد زوجناكها» | سهل بن سعد | ١٤/٢٠٣ |
| «فقراء المهاجرين» | ثوبان | ٢/٢٤ |
| «فقم فعلمها عشرين آية وهى امرأتك» | أبو هريرة | ١٤/٥١٠ |
| «فقوموا» | جابر بن عبد الله | ٧/٣٤٧ |
| «فقيل له: خير أصحابك بين أن نسلط عليهم» | صهيب | ١٨/٥٠١ |
| «فقيل لى فقلت» | أبى بن كعب | ٥/٢٤ |

| | | |
|---|---|---|
| «فكأنكم تنحتون الذهب والفضة...» | أبو هريرة | ٤٨٨/١٤ |
| «فكف لسانك إلا من خير» | البراء | ٣٠٧/٢١ |
| «فكفر عن يمينك وأت الذى هو خير» | عبد الرحمن بن سمرة | ١٣٢/٢٠ |
| «فكل وأطعم أهل بيتك واقض يومًا مكانه» | أبو هريرة | ٤٩٣/٨ |
| «فكله وصم يومًا مكان ما أصبت» | سعيد بن المسيب | ٤٩٥/٨ |
| «فكلهم أعطيت مثل ما أعطيته؟» | جابر | ٣٢٣/١٢ |
| «فكلوها» | جابر بن سمرة | ٥٦٥/١٩ |
| «فكوا العانى وأجيبوا الداعى وعودوا المريض» | أبو موسى | ١٧٩/٧، ١٨٠ |
| «فكونا بفم الشعب» | جابر بن عبد الله | ٤٩٢/١٨ |
| «فكيف إذا سعى عليكم من يتعدى عليكم...» | أم سلمة | ١٩٤/٨ |
| «فكيف قلت؟» | الفريعة بنت مالك | ٥٥١/١٥ |
| «فلا إذن» | النعمان بن بشير | ٣٢٥/١٢ |
| «فلا بأس ولينصر الرجل أخاه ظالمًا أو مظلومًا» | جابر | ٤٠٧/٢٠ |
| «فلا تأتوا كاهنا» | معاوية بن الحكم | ٤٩٣/١٦ |
| «فلا تأتوهم» | معاوية بن الحكم | ٤٩٤/١٦ |
| «فلا تأكل؛ فإنما حبس على نفسه...» | عدى بن حاتم | ١٧٣/١٩ |
| «فلا تحرج من شىء ضارعت فيه نصرانية» | عدى بن حاتم | ٦٢/١٥ |
| «فلا ترم نخلهم وكل مما فى أصولها» | أبو رافع بن عمرو | ٥٨٣/١٩ |
| «فلا تشهدنى إذًا فإنى لا أشهد على جور» | النعمان بن بشير | ٣٢٢/١٢ |
| «فلا تشهدني- أو قال: لا أشهد على جور» | النعمان بن بشير | ٣٢٢/١٢ |
| «فلا تصيبوا منهم فوق ذلك...» | رجل من جهينة | ٧٤/١٩ |
| «فلا تعطه مالك» | أبو هريرة | ٤٩٨/٦، ٥٤٨/١٧ |
| «فلا تفعل فإن كل ما آتاك الله حل...» | مالك بن نضلة | ٦٠٨/١٩ |
| «فلا تفعل فإنك إذا فعلت ذلك...» | عبد الله بن عمرو | ٣٩٢/٥ |
| «فلا تفعل نم وقم» | عبد الله بن عمرو | ١٢١/٩ |
| «فلا تفعله ولا يفعله أحد منكم...» | عسعس بن سلامة | ٢٥٠/٢٠ |
| «فلا تفعلوا، ازرعوها أو أمسكوها» | ظهير بن رافع | ١٦٢/١٢ |
| «فلا تفعلوا إلا بأمّ القرآن» | عبادة بن الصامت | ٣٣/٤ |
| «فلا تفعلوا، فإنى فئة كل مسلم» | ابن عمر | ٢٥٦/١٨ |

| | | |
|---|---|---|
| «فلا تفعلوا، فإنى لو كنت آمرا أحدا...» | قيس | ١٠٤/١٥ |
| «فلا تقربها حتى تفعل ما أمر الله» | ابن عباس | ٤٠١/١٥ |
| «فلا حاجة لى فيه...» | ذو الجوشن | ٣٥٦/١٨ |
| «فلا عليكم ألا تفعلوا ذاكم...» | أبو سعيد | ٤٦٧/١٤ |
| «فلا يحلّ لامرئ يؤمن بالله واليوم الآخر أن يسفك بها دمًا...» | أبو شريح الخزاعى | ٣٣٤/١٠ |
| «فلا يحل لك أن تأخذ من ثمنه شيئًا» | جابر بن عبد الله | ١٣٧/١١ |
| «فلا يخرجن من المسجد» | أبو هريرة | ٤٦٣/١ |
| «فلا يصلح» | سعد بن أبى وقاص | ١٠٢/١١ |
| «فلا يضرك» | أم هانئ | ٥٣/٩ |
| «فلا يضرك إن كان تطوعًا» | أم هانئ | ٥٥/٩ |
| «فلا يضرك تكونى فى حجة» | عائشة | ٢٩٦/٩ |
| «فلا ينظرن إلى ما دون السرة...» | عبد الله بن عمرو | ٤٩/١٤ |
| «فلا يُنفَّر صيدها...» | أبو هريرة | ٣٣٥/١٠ |
| «فلان؟» | الحارث بن عبد الله | ٧٨/١٨ |
| «فلبِّ عن نفسك ثم لبِّ عن فلان» | ابن عباس | ٢٣٦/٩ |
| «فلتترك الصلاة قدر ذلك» | أم سلمة | ٤٦٢/٢ |
| «فلتر نعمة الله وكرامته عليك» | مالك بن نضلة | ٦٠٨/١٩ |
| «فلتقعد بقدر ذلك من الأيام» | عائشة | ٤٨٤/٢ |
| «فلتقعد وتقدر ذلك» | عائشة | ٤٥٩/٢ |
| «فلتنظر قدر ما كنت تحيض» | عائشة | ٤٥٩/٢ |
| «فلذلك سعى الناس بينهما» | عبد الله بن عباس | ١٧/١٠ |
| «فلست آكلها ولا أنهى عنها» | أبو سعيد | ٤٥٩/١٩ |
| «فلعل ابنك نزعه عرق» | أبو هريرة | ٤٣٢/١٤، ٢٨٣/١٧ |
| «فلعل هذا نزعه عرق» | أبو هريرة | ٤٧٧/١٥ |
| «فلعلك؟» | جابر بن سمرة | ٢٠١/١٧ |
| «فلعلك تأخذ موساك فتقطع...» | مالك بن نضلة | ٦٠٨/١٩ |
| «فلعلك نفست» | عائشة | ٢٠٣/٩ |
| «فلعلكم تفترقون عن طعامكم » | وحشى بن حرب | ٥٤٩/١٠ |

| | | |
|---|---|---|
| «فلك يمينه» | وائل بن حجر | ٢٠/٤٠٨، ٤٢٦، ٢١/ ٢٤٨، ٢٥٤ |
| «فلم ابتعثنى الله إذًا؟ إن الله لا يقدس أمة» | يحيى بن جعدة | ١٢/٢١٢ |
| «فلولا أخذتم مسكها؟» | عبد الله بن عباس | ١/٥٢ |
| «فليأت الذى هو خير» | الشافعي | ٢٠/٨٤ |
| «فليأخذ بناصيتها وليدع بالبركة...» | عبد الله بن عمرو | ١٤/٢١٢ |
| «فليأخذ سيفه ثم ليعمد به إلى صخرة...» | أبو بكرة | ١٧/٧٩ |
| «فليس هذه بمعرفة» | ابن عمر | ٢٠/٣٧٠ |
| «فليس يصلح هذا وإنى لا أشهد على جور» | جابر | ١٢/٣٢٣ |
| «فليستخدموها فإذا استغنوا عنها...» | معاوية بن سويد | ١٦/١١٧ |
| «فليسجد سجدتين قبل أن يسلم ثم يسلم» | أبو هريرة | ٤/٥٣١ |
| «فليصم شهرين» | خويلة بنت ثعلبة | ١٥/٤٠٩ |
| «فليضع يده على فيه» | أبو سعيد الخدرى | ٤/ ٣٩٣ |
| «فليطعم ستين مسكينا» | خويلة بنت ثعلبة | ١٥/٤٠٩، ٤١٦ |
| «فليعد أضحيته ومن لا يكن فليذبح على اسم الله» | جندب بن سفيان | ١٩/٣٠٥ |
| «فليكفر عن يمينه وليأت الذى هو خير» | - | ٨/١٠٠ |
| «فليكفر يمينه وليأت الذى هو خير» | عدى بن حاتم | ٢٠/١٣٥ |
| «فليمسك عن الشر فإنه له صدقة» | أبو موسى الأشعرى | ٨/٣٥٩ |
| «فليهد بدنة وليركب» | عمران بن حصين | ٢٠/٢٢٢ |
| «فما أردت إلى ذلك؟» | جابر بن عبد الله | ١٦/٢٢٦ |
| «فما ألوانها؟» | أبو هريرة | ١٥/٤٧٧، ٤٧٨ |
| «فما أوتى منه أخذ وما نهى عنه انتهى» | عدى بن عميرة | ١٣/٤٠٠ |
| «فما حملك على ذلك؟» | على بن أبى طالب | ١٨/٤٨٢ |
| «فما دينك؟» | عتبة بن مسعود | ١٥/٤٠٦ |
| «فما عندك من القرآن» | سهل بن سعد | ١٤/٢٠٢ |
| «فما غيرك وقد كنت حسن الهيئة» | أبو مجيبة الباهلي أو أخوه | ٩/ ٩٦ |
| «فما فعلت الدرع التى كنت سلحتكها؟» | على | ١٤/٤٨٦ |

| | | |
|---|---|---|
| «فما منعك أن تأتى به...» | ابن عمرو | ٥٠٣/١٧ |
| «فما منعك أن تجئ به» | عبد الله بن عمرو | ١٠٨/١٣ |
| «فما منعك أن تفتح عليّ؟» | ابن عمر | ٣٣٥/٦ |
| «فما منعك أن يجيء بها...» | عبد الله بن عمرو | ٣٣٨/١٨ |
| «فما نلتما من أخيكما آنفا شر من هذا...» | أبو هريرة | ٢٠٣/١٧ |
| «فما هذا الذى أرى فى وسطهن؟» | عائشة | ١٢٨/٢١ |
| «فما يمنعكم أن ترجموها؟» | جابر | ٢١٢/١٧ |
| «فما ينفعكم أن أصلى على رجل روحه مرتهن فى قبره...» | أنس | ٥٦٠/١١ |
| «فما ينفعكم أن أصلى على رجل مرتهن فى قبره» | أنس | ٥٦٠/١١ |
| «فمات منهم فى ثلاثة أيام سبعون ألفا» | صهيب | ٥٠١/١٨ |
| «فماذا ترى يا ابن الخطاب؟» | عمر بن الخطاب | ٢٢٩/١٨، ٣١٧/٢٠ |
| «فمر برأس التمثال الذى فى باب البيت...» | أبو هريرة | ٣٢/١٥ |
| «فمرها فإن يك فيها خير فمستقبل...» | لقيط بن صبرة | ١٤٥/١٥ |
| «فمن أراد أن يهل بعمرة فليهل» | ابن عمر | ٣٠٥/٩ |
| «فمن أطعم منكم اليوم مسكينًا؟» | أبو هريرة | ٣٦٤/٨ |
| «فمن أعدى الأول؟» | أبو هريرة | ٤٢٥/١٤- ٤٢٧ |
| «فمن أكبرهم» | هانئ أبو شريح | ٤٢٩/٢٠ |
| «فمن أنا؟» | أبو هريرة | ٤٠٦/١٥ |
| «فمن أنا؟» | الشريد بن سويد الثقفى | ٤٠٨/١٥ |
| «فمن أنا؟» | عتبة بن مسعود | ٤٠٦/١٥ |
| «فمن أنا؟» | معاوية بن الحكم | ١٤٨/٢٠ |
| «فمن أنكر بلسانه فقد برئ» | أم سلمة | ٥٦٣/١٦ |
| «فمن أنكر فقد برئ...» | أم سلمة | ٥٦٣/١٦ |
| «فمن أين يكون الشبه؟...» | أم سليم | ٢٣/٢ |
| «فمن تبع منكم اليوم جنازة؟» | أبو هريرة | ٣٦٤/٨ |
| «فمن ترك مالًا فلمواليه» | أبو هريرة | ٣٩٥/٢١ |
| «فمن تلقاها فصاحب السلعة بالخيار...» | - | ٢٨٦/١١ |

| | | |
|---|---|---|
| «فمن دخله فليستتر» | طاوس | ١٦٤/١٥ |
| «فمن عاد منكم اليوم مريضًا؟» | أبو هريرة | ٣٦٤/٨ |
| «فمن وفى منكم فأجره على الله...» | عبادة بن الصامت | ٥٢٢/١٧ |
| «فمن يطع الله إذا عصيته...؟» | أبو سعيد الخدرى | ٢٥٧/١٣ |
| «فمن يواريه؟...» | على | ٣٩٣/٢ |
| «فنحن أحق وأولى بموسى منكم» | ابن عباس | ٧٨/٩ |
| «فنعم إذن» | الصنابحى الأحمسى | ١٠٩/٨ |
| «فهبه لى ولك كذا وكذا» | سمرة بن جندب | ٢٥٣/١٢ |
| «فهبه لى» | جابر بن عبد الله | ٢٥٣/١٢ |
| «فهذا يومهم الذى افترض عليهم» | أبو هريرة | ٢٢٦/٦ |
| «فهذه عنك وحج عن شبرمة» | ابن عباس | ٢٣٧/٩ |
| «فهل تجد إطعام ستين مسكينًا؟» | أبو هريرة | ٤٨٥/٨ |
| «فهل تجد طعام ستين مسكينًا؟» | أبو هريرة | ٤٨٧/٨ |
| «فهل تجد ما تطعم ستين مسكينًا؟» | أبو هريرة | ٤٧٨/٨ |
| «فهل تجد ما تعتق رقبة؟» | أبو هريرة | ٤٧٨/٨ |
| «فهل تحلبها....» | أبو سعيد الخدرى | ٥١/١٨ |
| «فهل ترك من شىء؟» | سلمة بن الأكوع | ٥٥١/١١، ٥٥٨ |
| «فهل تستطيع إطعام ستين مسكينا» | أبو هريرة | ٤٩٢/٨ |
| «فهل تستطيع أن تصوم شهرين متتابعين؟» | أبو هريرة | ٤٧٨/٨، ٤٧٩، ٤٨٥، ٤٨٧ |
| «فهل تستطيع أن تهدى بدنة؟» | سعيد بن المسيب | ٤٩٥/٨ |
| «فهل تستطيع صيام شهرين؟» | أبو هريرة | ٤٨١/٨ |
| «فهل تستطيع صيام شهرين متتابعين» | أبو هريرة | ٤٩٢/٨ |
| «فهل تقرأ من القرآن شيئا؟» | ابن مسعود | ٥١١/١٤ |
| «فهل تمارون فى الشمس...؟» | أبو هريرة | ١٠٠/٢٠ |
| «فهل تمنح منها؟» | أبو سعيد الخدرى | ٥١/١٨ |
| «فهل ذكرت أمه؟» | أبو ذر | ١٠١/١٦ |
| «فهل فيها من أورق؟» | أبو هريرة | ٢٨٤/١٧ |
| «فهل كان فيها عيد من أعيادهم؟» | ثابت بن الضحاك | ٢٢٩/٢٠ |

| | | |
|---|---|---|
| «فهل لك إبل؟» | كدير الضبى | ٣٥٢/٨ |
| «فهل لك أن تأخذ بعض مالك...» | عائشة | ١٨٩/١٥ |
| «فهل لك من إبل؟» | أبو هريرة | ٢٨٣/١٧ |
| «فهل لك من إبل؟» | كدير الضبى | ٤٧٤/٢٠ |
| «فهل من والديك أحد حي؟» | عبد الله بن عمرو | ٨٨/١٨ |
| «فهلا تقدمت فقاتلت حتى تقتل؟» | الشافعي | ٣٣٠/١٨ |
| «فهلا جارية تلاعبها وتلاعبك؟» | جابر | ٧/١٤، ٨، ٥٤٧ |
| «فهلا خرجت عليه....» | أم معقل | ٤٤/١٣ |
| «فهلّا ذكّرتنيها إذن» | المسور بن يزيد الأسدى | ٣٣٥/٦ |
| «فهلا قبل أن تأتى به؟» | طاوس | ٣٢٦/١٧ |
| «فهلا قبل أن تأتينا به أبا وهب؟» | عطاء بن أبى رباح | ٣٢٢/١٧ |
| «فهلا قبل أن تأتينى به؟» | صفوان بن عبد الله | ٣٢١/١٧ |
| «فهلا قبل أن تأتينى به؟» | مجاهد | ٣٢٦/١٧ |
| «فهلا قعدت فى بيت أبيك وأمك...» | أبو حميد الأنصارى | ٤٠١/١٣، ٤١٠/٢٠ |
| «فهم وأموالهم لكم إذا احتجتم إليهم» | عائشة | ٨٣/١٦ |
| «فهو عتيق» | ابن عمر | ٣٢٠/٢١ |
| «فهو على ما أردت» | ركانة | ٢٦٨/١٥، ١٠٦/٢٠ |
| «فهو فى النار» | أبو هريرة | ٤٩٨/٦ |
| «فوا ببيعة الأول فالأول...» | ابو هريرة | ٥١٧/١٦ |
| «فوالله لمناديل سعد فى الجنة أحسن مما ترون» | أنس بن مالك | ٥٢١/٦ |
| «فوالله لو لم تكن ربيبتى فى حجرى...» | أم حبيبة | ٥٧٦/١٣، ٣٦١/١٤، ١١/١٦ |
| «فوالله ما تنقلبون به خير مما ينقلبون به» | أنس بن مالك | ٢٥٠/١٣ |
| «فوق هذا...» | زيد بن أسلم | ٥١٤/١٧ |
| «فو الذي نفسي بيده إني لأرجو أن تكونوا نصف أهل الجنة...» | عبد الله بن مسعود | ٢٥٠/٦ |
| «فوالذى نفسى بيده لقد تابت توبة» | بريدة | ٣٢٣/٧ |

| | | |
|---|---|---|
| «فى الإبل صدقتها وفى الغنم صدقتها...» | أبو ذر | ٢٢٨/٨، ٢٢٩ |
| «فى الإبل فرع وفى الغنم فرع...» | عبد الله المزنى | ٣٨٧/١٩ |
| «فى أربع وعشرين من الإبل فما دونها الغنم...» | أنس بن مالك | ٢١/٨ |
| «فى أربعين من البقر مسنة...» | أنس بن مالك | ٦٤/٨ |
| «فى الأصابع عشر عشر» | أبو موسى الأشعرى | ٣٦١/١٦ |
| «فى أصحابى اثنا عشر منافقا...» | حذيفة | ١٠٦/١٧ |
| «فى الأنف إذا أوعب جدعه الدية كاملة» | حرملة بن يحيى | ٣٣٨/١٦ |
| «فى الأنف الدية إذا استوعى جدعه....» | عمر | ٣٤٤/١٦ |
| «فى أول ضربة سبعين حسنة» | أبو هريرة | ٣٢٠/٤ |
| «فى أى شىء كان هذا؟» | ابن عمر | ٤٦٢/١٩ |
| «فى البقر فى كل ثلاثين تبيع أو تبيعة جذع» | عبد الله بن عباس | ٦٣/٨ |
| «فى بيض النعامة يصيبها المحرم قيمتها» | أبو الزناد | ٣٧٥/١٠ |
| «فى الجنة» (إن قتلت فأين أنا؟) | جابر بن عبد الله | ٣٢٧/١٨ |
| «فى الجنة» | جابر بن عبد الله | ١٤٩/١٨ |
| «فى خمس ذود شاة وفى عشر شاتان...» | عبد الله بن عمر | ٣٠/٨ |
| «فى خمس من الإبل شاة...» | عبد الله بن عمر | ٢٨/٨ |
| «فى الخيل السائمة فى كل فرس دينار» | جابر بن عبد الله | ١٣٢/٨ |
| «فى الدِّين والذى نفسى بيده لو أن رجلًا قتل فى سبيل الله....» | محمد بن جحش | ٣١٢/١١ |
| «فى الركاز الخمس» | أبو هريرة | ٢٤٧/٨، ٢٤٨ |
| «فى السن خمس» | الشافعي | ٣٥٧/١٦، ٣٨٤ |
| «فى الشجرة التى لم يؤكل منها» | عائشة | ٩/١٤ |
| «فى شعب من هذه الشعاب» | أبو هريرة | ٥٢١/١٨ |
| «فى الصلب مائة من الإبل» | الزهرى | ٣٧١/١٦ |
| «فى الضبُع كبش...» | جابر بن عبد الله | ٢٩٤/١٠ |
| «فى العبد شفعة وفى كل شىء» | ابن عباس | ٩١/١٢ |
| «فى الغلام عقيقته فأهريقوا عنه دما...» | سلمان بن عامر الضبى | ٣٧٣/١٩ |
| «فى الغنم أضحيتها» | الحارث بن عمرو | ٤١٨/١٩ |
| «فى قلبك من الجاهلية شىء؟» | ابن عباس | ٢٣٠/٢٠ |

| | | |
|---|---|---|
| «فى كل إبل سائمة من كل أربعين ابنة لبون» | معاوية بن حيدة | ١١٨/٨ |
| «فى كل أربعين من الإبل سائمة ابنة لبون..» | معاوية بن حيدة | ٨١/٨ |
| «فى كل بيض صيام يوم أو إطعام مسكين» | أبو هريرة | ٣٧٥/١٠ |
| «فى كل ثلاثين بقرة تبيع...» | جابر بن عبد الله | ٦٤/٨ |
| «فى كل ذات كبد رطبة أجر» | أبو هريرة | ١٢٤/١٦ |
| «فى كل سائمة فرع تغذوه ماشيتك» | نبيشة | ٤١٦/١٩ |
| «فى كل سن خمس من الإبل...» | عمرو بن حزم | ٣٦٧/١٦ |
| «فى كيل معلوم ووزن معلوم إلى أجل معلوم» | - | ٣٩٦/١١ |
| «فى كيل معلوم ووزن معلوم إلى أجل معلوم» | ابن عباس | ٣٨١/١١ |
| «فى اللسان الدية إذا منع الكلام...» | عبد الله بن عمرو بن العاص | ٣٥٢/١٦ |
| «فى مجلس واحد؟» | ابن عباس | ٢٥٩/١٥ |
| «فى المساجد الثلاثة» | أبو وائل | ١٧٦/٩ |
| «فى المسجد» | أبو سعيد الخدرى | ٩٨/٤ |
| «فى المواضح خمس خمس....» | عبد الله بن عمرو | ٣٢٨/١٦، ٣٦٢ |
| «فى المواضح خمس» | عبد الله بن عمرو | ٣٢٧/١٦ |
| «فى النار» | أنس | ٣٤١/١٤ |
| «فى النفس مائة من الإبل» | أبو بكر | ٣٠٣/١٦ |
| «فى هؤلاء لأطلقتهم له» | الزهرى | ١٨٧/١٣ |
| «فيأمر بالمعروف» | أبو موسى الأشعرى | ٣٥٩/٨ |
| «فيحلفون بالله لكم خمسين يمينا ما قتلوه؟» | سهل بن أبى حثمة | ٤٥٥/١٦ |
| «فيحلفون لكم» | سهل بن أبى حثمة | ٤٤٣/١٦ |
| «فيصالحونكم على صلح» | رجل من جهينة | ٧٤/١٩ |
| «فيصوم شهرين متتابعين» | خويلة بنت مالك | ٤١٥/١٥ |
| «فيعمل بيده فينفع نفسه ويتصدق» | أبو موسى الأشعرى | ٣٥٩/٨ |
| «فيعين ذا الحاجة الملهوف» | أبو موسى الأشعرى | ٣٥٩/٨ |
| «فيقال له: يا فلان هذا فلان بن فلان خانك..» | بريدة | ٥٧١/١٨ |
| «فيقسم منكم خمسون أنهم قتلوه؟» | سهل بن أبى حثمة | ٤٤١/١٦ |
| «فيكلمنى» | الحارث بن هشام | ٥١٢/١٣ |

| | | |
|---|---|---|
| «فيما استطعتم» | ابن عمر | ٨٤/٦ |
| «فيما استطعتن وأطقتن» | أميمة بنت رقيقة | ٥٢٩/١٦ |
| «فيما دون خمس وعشرين من الإبل...» | أنس بن مالك | ٢٤/٨ |
| «فيما سقت الأنهار والغيم العشور...» | جابر بن عبد الله | ١٦٩/٨ |
| «فيما سقت السماء العشر...» | أبو هريرة | ١٧٠/٨ |
| «فيما سقت السماء والأنهار والعيون...» | عبد الله بن عمر | ١٦٧/٨ |
| «فيما سقت السماء والبعل والسيل العشر...» | معاذ بن جبل | ١٦٣/٨ |
| «فيما سقت السماء والعيون العشر» | - | ١٧٣/٨ |
| «فيما سقت السماء والعيون والبعل العشر...» | بسر بن سعيد | ١٦٩/٨ |
| «فيه والركاز الخمس» | عبد الله بن عمرو | ٣٦١/١٢ |
| «فيه الوضوء» | على بن أبى طالب | ٣٤٩/١ |
| «فيه ولدت وفيه أنزل على القرآن» | أبو قتادة | ١٠٠/٩ |
| «فيها ساعة لا يوافقها عبد مسلم...» | أبو هريرة | ٤٥٢/٦ |


## (القاف)


| | | |
|---|---|---|
| «قاتل الله صاحب هذه الناقة...» | الصنابحى الأحمسى | ١٠٩/٨ |
| «قاتل الله اليهود اتخذوا قبور أنبيائهم مساجد» | أبو هريرة | ٥٣٢/٧ |
| «قاتل الله يهود إن الله لما حرم عليهم...» | عبد الله بن عمرو | ٥٦٢/١٩ |
| «قاتل الله اليهود إن الله لما حرم عليهم...» | جابر بن عبد الله | ٥٦٢/١٩ |
| «قاتل الله اليهود إن الله لما حرم عليهم شحومها جملوها....» | جابر | ٣٥٨/١١ |
| «قاتل الله اليهود؛ حرمت عليهم الشحوم...» | عمر بن الخطاب | ٣٨٦/١٧ |
| «قاتل الله اليهود والنصارى اتخذوا قبور» | عمر بن عبد العزيز | ١٧٧/١٢، ٨٦/١٩ |
| «القاتل لا يرث» | أبو هريرة | ٤٥٧/١٢ |
| «القاتل والمقتول فى النار» | وائل بن حجر | ٢٥٢/١٦ |
| «قاتِلْه» | أبو هريرة | ٤٩٨/٦ |
| «قاتلهم الله أما والله لقد علموا أنهما لم يستقسما بها قطُّ» | عبد الله بن عباس | ٢٠٦/١٠ |
| «قاربوا بين أولادكم» | النعمان بن بشير | ٣٢٦/١٢ |

| | | |
|---|---|---|
| «قاربوا وسددوا وأبشروا» | أبو هريرة | ١٥٨/٧ |
| «قاطع السدر يصوب الله رأسه فى النار» | معاوية بن حيدة | ١٩٥/١٢ |
| «قال الله تبارك وتعالى إذا ابتليت عبدى المؤمن» | أبو هريرة | ١٦٤/٧ |
| «قال الله عز وجل إذا ابتليت عبدى بحبيبتيه» | أنس بن مالك | ١٦٦/٧ |
| «قال الله عز وجل: أنا الله وأنا الرحمن....» | عبد الرحمن بن عوف | ٤٣١/١٣ |
| «قال الله عز وجل: أنا الرحمن....» | عبد الرحمن بن عوف | ٤٣٠/١٣ |
| «قال الله عز وجل: إن عبدًا أصححت جسمه» | أبو هريرة | ٥٦٦/١٠ |
| «قال الله عز وجل: ثلاثة أنا خصمهم...» | أبو هريرة | ١٢٦/١٢ |
| «قال الله عز وجل: قسمت الصلاة بينى وبين عبدى نصفين» | أبو هريرة | ٤٠/٤ |
| «قال الله عز وجل: يسب ابن آدم الدهر وأنا الدهر» | أبو هريرة | ١٣٢/٧ |
| «قال الله عز وجل: يؤذينى ابن آدم يسب الدهر وأنا الدهر» | أبو هريرة | ١٣٢/٧ |
| «قال الله: كل عمل ابن آدم له» | - | ٣٤/٩ |
| «قال: إياى أحق أن تخشى» | أبو سعيد الخدرى | ٢٥٤/٢٠ |
| «قال ربكم عز وجل: ثلاثة أنا خصمهم يوم القيامة» | أبو هريرة | ٣٦١/١١ |
| «قال رجل: لأتصدقن الليلة بصدقة...» | أبو هريرة | ٣٧٣/٨، ٤٥١/١٣ |
| «قال سليمان بن داود عليهما السلام: لأطوفن الليلة على سبعين امرأة...» | أبو هريرة | ١٠٧/٢٠ |
| «قال لى جبريل عليه السلام: رغم أنف» | أبو هريرة | ١٣٧/٩ |
| «قبر من هذا؟» | أنس | ٤١٦/٧ |
| «قبر من هذا» | بريدة | ٤٢٢/٧ |
| «قبضت؟» | عائشة | ٣٨٤/١١ |
| «قتل أخاك فهو فى النار...» | سعيد بن جبير | ٢٥٣/١٦ |
| «قتل الخطأ شبه العمد بالسوط والعصا...» | عبد الله بن عمرو | ٢٢١/١٦ |
| «القتل فى سبيل الله يكفر كل شىء...» | عبد الله بن عمرو | ٨٦/١٨ |

| | | |
|---|---|---|
| «قتلوه قتلهم الله» | ابن عباس | ١٩١/٢ |
| «قتلوه قتلهم الله ألا سألوه» | جابر | ١٩٢/٢، ١٩٣ |
| «القتلى ثلاثة...» | عتبة بن عبد | ٥٣٦/١٨، ٥٣٧ |
| «قد أجبتك» | أنس بن مالك | ١٧٠/٥، ٣٨٠/١٣ |
| «قد اجتمع فى يومكم هذا عيدان...» | أبو هريرة | ٦٢٤/٦ |
| «قد أجرنا من أجرت » | أم هانئ | ٣١٢/١٨، ٣١٣ |
| «قد أجزأت صلاتكم» | جابر بن عبد الله | ٣٢٠/٣ |
| «قد أحسنت اذهبى فأطعمى بها عنه...» | خويلة بنت مالك بن ثعلبة | ٤١٦/١٥ |
| «قد أحسنت مريه فليتصدق» | خويلة بنت ثعلبة | ٤٠٩/١٥ |
| «قد أحسنتم» | جابر بن عبد الله | ٣٢٤/٣ |
| «قد أحسنوا» | ثعلبة بن أبى مالك | ٣٢٦/٥ |
| «قد أخبرتك أنا سيأتيها ما قدر لها» | جابر | ٤٦٣/١٤ |
| «قد أخذت حقك» | ابن عباس | ٢٨٧/١٦ |
| «قد أخذته» | طارق بن عبد الله | ٣٨٦/١١ |
| «قد أخذتها ردها عليه» | الحسن | ٩٠/٢٠ |
| «قد أراد القوم الصلح حيث بعثوا هذا الرجل» | عروة بن الزبير | ١٢٥/١٩ |
| «قد أريت دار هجرتكم...» | عائشة | ٣٢/١٨ |
| «قد أصابوا» | ثعلبة بن أبى مالك | ٣٢٦/٥ |
| «قد أصبتم ذكرًا وخيرًا...» | ذكوان أبو صالح | ٦٢٤/٦ |
| «قد أصبتم. أو: أحسنتم» | المغيرة بن شعبة | ٨٨/٦ |
| «قد أعذر الله عز وجل إلى عبد آخر أجله حتى بلغ سبعين أو ستين سنة» | أبو هريرة | ١٤٨/٧ |
| «قد أفلح من أسلم...» | عبد الله بن عمرو | ٣٨٦/٨ |
| «قد أقطعتها لبنى رفاعة» | سبرة بن عبد العزيز بن الربيع الجهنى عن أبيه عن جده | ٢٢٤/١٢ |
| «قد أنزل الله القرآن فيك وفى صاحبتك» | - | ٤٥٨/١٥ |
| «قد أنزل الله القرآن فيك وفى صاحبتك» | سهل بن سعد | ٤٤٤/١٥، ٤٥٩ |

| | | |
|---|---|---|
| «قد أنزل الله فيك وفى صاحبتك...» | سهل بن سعد | ٤٣٨/١٥ |
| «قد أنكحتكها بما معك من القرآن» | سهل بن سعد | ٢٠٠/١٤ |
| «قد أنكحتكها على أن تقرئها وتعلمها...» | ابن مسعود | ٥١١/١٤ |
| «قد أنكحتكها على ما معك من القرآن» | سهل بن سعد | ٢٠٠/١٤ |
| «قد أوجبت فلا عليك ألا تعمل بعدها» | سهل بن الحنظلية | ٤٨٩/١٨ |
| «قد بايعتكن» | عائشة | ٥٢٩/١٦ |
| «قد حللت من حجك وعمرتك» | جابر بن عبد الله | ٢٥٨/٩، ٢٧٠ |
| «قد خير أصحابكم فإن اختاروكم فهم منكم...» | سعيد بن جبير | ١٧/١٩ |
| «قد رأيت الذى صنعتم فلم يمنعنى من الخروج» | عائشة | ٣١٩/٥ |
| «قد رأيت هذه الليلة ثم أنسيتها» | أبو سعيد | ٥٦١/٣ |
| «قد رددت ثلثه على ولده» | أبو قتادة | ٤٩/١٣ |
| «قد زوجتكها» | سهل بن سعد | ٢٠٠/١٤ |
| «قد زوجتكها بما معك من القرآن» | سهل بن سعد | ١٩٩/١٤، ٥٠٩ |
| «قد زوجتكها على ما معك من القرآن» | سهل بن سعد | ٤٩٠/١٤ |
| «قد سمع المنادى فلم يمنعه من اتباعه...» | ابن عباس | ٥٦٠/٥ |
| «قد سنّ لكم معاذ فهكذا فافعلوا» | معاذ بن جبل | ٤١٣/٤ |
| «قد سن لكم معاذ هكذا فافعلوا» | معاذ | ٦١٣/٥ |
| «قد عتق العبد يقوم عليه فى ماله قيمة عدل...» | أبو هريرة | ٣٣٥/٢١ |
| «قد عرفت الذى رأيت من صنيعكم فصلوا...» | زيد بن ثابت | ٣٢٣/٥ |
| «قد عرفتك فما حاجتك؟» | أبو هريرة | ١٧/١٤ |
| «قد علمت بمكانكم عمدًا فعلت ذلك» | أنس | ٥١/٦ |
| «قد علمت راجعها» | ابن عباس | ٢٥٨/١٥ |
| «قد علمتم أنى أتقاكم لله» | جابر بن عبد الله | ٣٤٣/٩ |
| «قد غفر لك بإخلاصك» | الحسن | ٩٠/٢٠ |
| «قد فعلت ولكن غفر لك بإخلاص قول لا إله إلا الله» | ابن عباس | ٨٧/٢٠ |
| «قد قال على ما تسمع» | رجل من الأنصار | ٣٧٧/١٠ |

| | | |
|---|---|---|
| «قد قد» | ابن عباس | ٤٣٥/٩ |
| «قد قضى الله فيك وفى امرأتك» | سهل بن سعد | ٤٤٣/١٥، ٤٤٦ |
| «قد قُضى فيك وفى امرأتك» | سهل بن سعد | ٥٨٧/١٢، ٤٣٧/١٥، ٤٥٨ |
| «قد كان نبى من الأنبياء يخط...» | معاوية بن الحكم | ٤٩٤/١٦ |
| «قد كانت إحداكن ترمى بالبعرة...» | أم سلمة، وأم حبيبة | ٥٣١/١٥ |
| «قد كانت إحداكن تمكث فى شر أحلاسها...» | أم سلمة | ٥٦٨/١٥ |
| «قد كتب لك بالذى أمرت لك به» | سهل بن الحنظلية | ٤٢٧/١٣ |
| «قد كنت أصبحت صائمًا» | عائشة | ٤٨/٩ |
| «قد كنت وعدتنى أن تلقانى البارحة» | ميمونة | ٢٣١/٢، ١٣٠/٥ |
| «قد مضت الهجرة لأهلها» | مجاشع بن مسعود | ٥٣/١٨ |
| «قد ملكتكها بما عندك من القرآن» | سهل بن سعد | ٥٢٦/١٣ |
| «قد نزل فيكما القرآن» | سهل بن سعد الساعدى | ٤٤٠/١٥ |
| «قد نهيتك فعصيتنى فأبعدك الله...» | عبد الله بن عمرو | ٢٨٧/١٦ |
| «قد هجرت الشرك...» | أبو سعيد الخدرى | ٨٩/١٨ |
| «قد وجب أجرك ورجعت إليك فى الميراث» | بريدة الأسلمى | ٢٤٤/٨، ٢٤٥ |
| «قد يفعل ذلك الرجل» | محارب بن دثار | ٢٠٩/١٥ |
| «القدرية مجوس هذه الأمة» | - | ٨٧/٢١ |
| «القدرية مجوس هذه الأمة...» | ابن عمر | ٦٩/٢١ |
| «قدم الحارث بن سويد إلى باب المسجد...» | - | ٢٥٩/١٦ |
| «قدم الوضيع قبل الشريف...» | عبد الله بن عبد العزيز العمرى | ٣٩٨/٢٠، ٣٩٩ |
| «قدمت عليكم ولكم يومان تلعبون فيهما فى الجاهلية...» | أنس | ٥٣٣/٦ |
| «قدمه يا عويم فاضرب عنقه» | الواقدى | ٢٦٠/١٦ |
| «قده بيدك» | طاوس | ٥٧٧/٩ |
| «قرب اللحم من فيك...» | صفوان بن أمية | ٦٣/١٥ |
| «قربوها» | جابر بن عبد الله | ٥٦٤/٥ |

| | | |
|---|---|---|
| «قرض الشيء خير من صدقته» | أنس | ٣٠٧/١١ |
| «قرني ثم الذين يلونهم ثم اللذين يلونهم...» | عبد الله بن مسعود | ١٠٩/٢٠ |
| «قريبًا من سبعة أذرع» | عائشة | ٥٨٠/٩ |
| «قسم قسمته لك» | شداد بن الهاد | ٣١٦/٧ |
| «القصاص» | البخاري | ٢٠٥/١٦ |
| «القصاص» | سواد بن عمرو | ٢٣٤/١٦ |
| «القصاص القصاص» | أنس | ٢٧٨/١٦ |
| «قضاء الله عز وجل خير» | موسى بن عقبة | ٣٩٣/١٨ |
| «القضاء كما قضى على» | على بن أبى طالب | ٤١٦/١٦، ٤١٧ |
| «القضاة ثلاثة» | أبو العالية | ٣٦٦/١ |
| «القضاة ثلاثة؛ اثنان فى النار وواحد فى الجنة...» | بريدة | ٣٤٣/٢٠ |
| «القضاة ثلاثة؛ قاضيان فى النار وقاض فى الجنة...» | بريدة | ٣٤٣/٢٠ |
| «قضى الله فيك وفى امرأتك» | سهل بن سعد | ٤٣٥/١٥ |
| «قطع الله يدك» | عائشة | ٢٩٦/١٨ |
| «قطع صلاتنا قطع الله أثره» | يزيد بن نمران | ٣٤٦/٤ |
| «القطع فى ربع دينار» | عائشة | ٢٩٩/١٧ |
| «القطع فى ربع دينار فصاعدا» | عائشة | ٢٩١/١٧، ٢٩٢، ٣١٢ |
| «قفلة كغزوة» | عبد الله بن عمرو | ٩٧/١٨ |
| «قفوه عند الخامسة فإنها موجبة» | ابن عباس | ٤٢٨/١٥ |
| «قفوها عند الخامسة فإنها موجبة» | ابن عباس | ٤٢٨/١٥ |
| «قل» | أبو هريرة وزيد بن خالد وشبل | ١٥٧/١٧، ١٧٩، ١٨٦، ١٩٥ |
| «قل الله أكبر الله أكبر الله أكبر الله أكبر» | أبو محذورة | ١٧٤/٣ |
| «قل: اللهم إنى ظلمت نفسى» | أبو بكر الصديق | ٩/٤ |
| «قل: التحيات لله والصلوات الطيبات » | عبد الله بن مسعود | ٥٧/٤ |
| «قل: سبحان الله والحمد لله ولا إله إلا الله» | عبد الله بن أبى أوفى | ٦٢٥/٤ |
| «قل العدل وأعط الفضل» | كدير الضبى | ٤٧٤/٢٠ |

| | | |
|---|---|---|
| «قل كما يقولون فإذا انتهيت فسل تعط» | عبد الله بن عمرو | ١٥٦/٣ |
| «قل لخالد: لا تقتلن امرأة ولا عسيفا» | رباح بن ربيع | ٢٧٢/١٨ |
| «قل لها: إنى ابتعتك هذا الجزور» | عائشة | ٣٨٤/١١ |
| «قل لهم فليرجعوا...» | أبو حميد الساعدى | ١٢٧/١٨ |
| «قلب الشيخ شاب على حب اثنين؛ على جمع المال وطول الحياة» | أبو هريرة | ١٤٣/٧ |
| «قلت اللهم أيما مؤمن سببته أو لعنته...» | عائشة | ٥٣٨/١٣ |
| «قلتم: أما الرجل فأدركته رغبة فى قريته» | أبو هريرة | ٣٨٢/١٨ |
| «قلوب لاهية وأيد عاملة وألسنة لاغية» | يحيى بن أبى كثير | ١١٧/٢١ |
| «قم أبا تراب قم أبا تراب» | سهل بن سعد | ١٧٧/٥ |
| «قم إليه اللهم أعنه عليه» | جابر بن عبد الله | ٤٢٧/١٨ |
| «قم فأذن أنه لا يدخل الجنة إلا مؤمن...» | رجل من الصحابة | ٣٦٨/١٩ |
| «قم فاركع» | جابر | ٣٥١/٦، ٣٦٣ |
| «قم فاركعهما» | جابر | ٢٨٨/٦ |
| «قم فاقضه» | كعب بن مالك | ٥٢٢/١١ |
| «قم فأوتر» | الأغر المزنى | ٢٧٨/٥ |
| «قم فصل» | جابر بن عبد الله | ٢٩٩/١١ |
| «قم فصل ركعتين وتجوز فيهما» | جابر | ٢٨٨/٦ |
| «قم يا حمزة قم يا عبيدة قم يا على» | علىّ | ٥٢٧/٦ |
| «قم يا حمزة قم يا على قم يا عبيدة» | عروة بن الزبير | ٤٢٦/١٨ |
| «قم يا زبير» | عكرمة | ١٥٢/١٣ |
| «قم يا على قم يا حمزة قم يا عبيدة بن الحارث» | على بن أبى طالب | ٤٢٦/١٨ |
| «قم يا نومان» | حذيفة | ٤٨٨/١٨ |
| «قوائم منبرى رواتب فى الجنة» | أم سلمة | ٥١٢/١٠ |
| «قولوا: اللهم صلى على محمد عبدك ورسولك» | أبو سعيد | ٦٧١/٣ |
| «قولوا اللهم صلى على محمد وأزواجه وذريته» | أبو حميد الساعدى | ٦٨٠/٣ |
| «قولوا اللهم صلى على محمد وعلى آل محمد...» | أبو مسعود | ٦٦٧/٣، ٦٦٨ |

| | | |
|---|---|---|
| «قولوا: اللهم صلى على محمد وعلى آل محمد» | كعب بن عجرة | ٦٦٩/٣، ٦٧٠، ٦٧٣ |
| «قولى لفاطمة تمسك عن الصلاة» | عائشة | ٥٠٨/٢ |
| «قولى لفاطمة تمسك فى كل شهر» | فاطمة بنت قيس | ٥٠٨/٢ |
| «قولى لها فلتدع الصلاة» | عائشة | ٥٠٧/٢ |
| «قولي: اللهم إنى أهل بالحج» | ضباعة بنت الزبير | ٤٢٧/١٠ |
| «قوم يستنون بغير سنتى...» | حذيفة | ٧٧/١٧ |
| «قوم يهدون بغير هدبى...» | حذيفة بن اليمان | ٥٥٧/١٦ |
| «قوما فاحلفا بالله» | مقاتل بن حيان | ٤٧٠/١٥ |
| «قوما يخرجون على فرقة من الناس...» | أبو سعيد | ١٠/١٧ |
| «قوموا أصلِّى بكم» | أنس | ٨/٦ |
| «قوموا إلى جنة عرضها السموات والأرض» | أنس بن مالك | ١٤٨/١٨، ٣٢٩ |
| «قوموا إلى سيدكم» | أبو سعيد الخدرى | ٥٠٢/١١، ٢١١/١٨، ٣١٩ |
| «قوموا فانحروا ثم احلقوا» | المسور بن مخرمة ومروان بن الحكم | ٤٠٣/١٠، ١٢٢/١٩ |
| «قوموا فقد صنع جابر سورا» | جابر بن عبد الله | ٤٥/١٥ |
| «قوموا فلأصلى لكم» | أنس | ٤٩٥/٥، ١٠/٦ |
| «قومى فأتزرى ثم عودى» | أم سلمة | ٤١٤/٢ |
| «قيراطان كل يوم» | أبو هريرة | ٣٤٨/١١ |
| «قيل لى فقلت» | أبى بن كعب | ٢٣/٥ |
| «قيمته لا وكس فيها ولا شطط» | ابن عمر | ٣١٥/٢١ |


## (الكاف)


| | | |
|---|---|---|
| «كاتب يا سلمان» | سلمان الفارسى | ٤٥٦/٢١ |
| «كالقائم لا يفتر وكالصائم لا يفطر» | أبو هريرة | ٧٤/١٣ |
| «كان الله ولم يكن شىء غيره...» | عمران بن حصين | ٦/١٨ |
| «كان الله عز وجل ولم يكن شىء قبله...» | عمران بن حصين | ٥/١٨ |
| «كان أهل الجاهلية يقولون: إنما الطيرة...» | عائشة | ٥٠١/١٦ |

| | | |
|---|---|---|
| «كان رجل يداين الناس...» | أبو هريرة | ٣١٧/١١ |
| «كان مسترضعًا فى بنى سعد» | محمد بن على بن الحسين | ٣١٨/٩ |
| «كان ممن كان قبلكم رجل خرج به خراج...» | جندب بن عبد الله | ١٥٩/١٦ |
| «كان ممن كان قبلكم رجل قتل...» | أبو سعيد | ١٣٥/١٦ |
| «كان موضع البيت فى زمن آدم شبرًا أو أكثر...» | أنس بن مالك | ٢٦٧/١٠ |
| «كان النبى ﷺ يقبل الهدية ويثيب عليها» | عائشة | ٣٣٤/١٢ |
| «كان هذا فرعون هذه الأمة» | عبد الله بن مسعود | ٢١٠/١٨ |
| «كان يكفيك من ذلك التيمم» | عمار | ١٦٣/٢ |
| «كانت بنو إسرائيل تسوسهم الأنبياء...» | أبو هريرة | ٥١٧/١٦ |
| «كانت بنو إسرائيل يغتسلون عراة» | أبو هريرة | ١١١/٢ |
| «كانت تبين منك وتكون معصية» | عبد الله بن عمر | ٢٣٢/١٥ |
| «كأنك تريدين الحج؟» | عائشة | ١٧٧/١٤ |
| «كأنما وتر أهله وماله» | عبد الله بن عمر | ٢٤٤/٣ |
| «كأنى أنظر إلى أسود أفحج يقلعها حجرًا حجرًا» | ابن عباس | ٢٤٧/٩ |
| «كأنى أنظر إلى موسى عليه السلام هابطًا...» | ابن عباس | ٤٢٣/٩ |
| «كأنى أنظر إلى يونس بن متى على ناقة...» | ابن عباس | ٤٢٤/٩ |
| «كأنى بك قد لبست سوارى كسرى» | - | ٣١٥/١٣ |
| «كأولاد الحذف» | البراء بن عازب | ٢٣/٦ |
| «الكبائر الإشراك بالله وقذف المحصنة» | عبد الله بن عمر | ٢٦٦/٧ |
| «الكبائر تسع أعظمهن إشراك بالله...» | عمير بن قتادة | ١٠/٢١ |
| «كبر» | سهل بن أبى حثمة، رافع بن خديج | ٤٣٨/١٦ |
| «الكُبَر» | سهل بن أبى حثمة، رافع بن خديج | ٥٨٢/١١ |
| «الكبر الكبر» | سهل بن أبى حثمة، رافع بن خديج | ٤٣٩/١٦ |

| | | |
|---|---|---|
| «كبر كبر» | سهل بن أبى حثمة | ١٦/٤٣٥، ٤٣٨ |
| «الكبر الكبر» | سهل بن أبى حثمة | ١٦/٤٤١، ٤٤٣، ٤٥٥، ٢٠/٥٤٨ |
| «كبرت خيانة أن تحدث أخاك حديثًا هو لك به مصدق...» | سفيان بن أسيد | ٢١/٥٨ |
| «كتب على ابن آدم نصيبه من الزنى...» | أبو هريرة | ١٤/٣٣ |
| «كتب على النحر ولم يكتب عليكم...» | ابن عباس | ١٩/٢٦٢ |
| «كُتبت له أربع حجج...» | أنس بن مالك | ١٠/٢٧٩ |
| «كخ كخ» | أبو هريرة | ١٣/٤٣٨ |
| «كدتم أن تفعلوا فعل فارس والروم...» | جابر | ٥/٥٧٤ |
| «كذا وكذا» | أم سلمة | ٨/١٩٤ |
| «كذب سعد...» | عروة بن الزبير | ١٨/٣٨٨ |
| «كذب أبو السنابل...» | عبد الله بن عتبة | ١٥/٥٣٥، ٢١/٩٥ |
| «كذبت يهود...» | أبو سعيد، أبو هريرة | ١٤/٤٦٨ |
| «كذبوا مات جاهدا مجاهدا...» | سلمة بن الأكوع | ١٦/٤١٣ |
| «كذلك إذا هو وضعها فى الحلال...» | أبو ذر | ٨/٣٦٠ |
| «كذلك الصلوات الخمس يذهبن الخطايا» | أبو هريرة | ٥/٥٢٢ |
| «كذلك يفعل عباد الله المؤمنون...» | عبد الله بن أبى سفيان ابن الحارث | ٢٠/٢٦٥ |
| «كرم المرء دينه...» | أبو هريرة | ١٤/١٧٤، ٢١/٤٢ |
| «كسب الحجام خبيث...» | رافع بن خديج | ١١/٣٣٦، ١٩/٤٩٧ |
| «كسب مبرور» | أبو بردة ابن نيار | ١١/٧ |
| «كسر عظم الميت ككسره حيًا» | عائشة | ٧/٤٥١، ٤٥٢ |
| «كسروا القدور وأهريقوا ما فيها» | سلمة بن الأكوع | ١٩/٤٧٤ |
| «كسرى بن هرمز» | عدى بن حاتم | ١٨/٥٨٤ |
| «الكسير التى لا تنقى» | البراء بن عازب | ١٩/٢٩٥ |
| «كف عنها حتى تكفر» | عكرمة | ١٥/٤٠٢ |
| «كفارة النذر كفارة اليمين» | الحسن | ٢٠/١٩٢ |
| «كفارة النذر كفارة اليمين» | عقبة بن عامر | ٢٠/١١٠، ١٧٨ |

| | | |
|---|---|---|
| «كفارة واحدة» | سلمة بن صخر | ٤٠١/١٥ |
| «كفارة يمين» | زيد بن ثابت | ٦٧/٢٠ |
| «كفاك الحيةَ ضربةٌ بالسوط أصبتها أم أخطأتها» | أبو هريرة | ٣١٩/٤ |
| «كفر الله عنك كذبك بصدقك بلا إله إلا الله» | أنس | ٨٩/٢٠ |
| «كفنوه في ثوبيه واغسلوه بماء وسدر» | عبد الله بن عباس | ٢١٥/٧ |
| «كفى بالصلاة شغلًا» | عبد الله بن مسعود | ٥٧٣/٤ |
| «كفى بالمرء إثما أن يضيع من يقوت» | عبد الله بن عمرو | ٥٢/١٦، ٨٥/١٨ |
| «كفى بالمؤمن إثما أن يحبس عمن يملك قوته» | خيثمة بن عبد الرحمن | ١٠٠/١٦ |
| «كل» | محمد بن صفوان | ٤٤٥/١٩ |
| «كل أحد أحق بماله من والده وولده...» | حبان بن أبي جبلة | ٨٦/١٦، ٤٥١/٢١ |
| «كل أكل أو لم يأكل» | رجل من هذيل | ١٧٩/١٩ |
| «كل أمتي معافى إلا المجاهرين...» | أبو هريرة | ٥٢٧/١٧ |
| «كل أمر ذي بال لا يبدأ فيه بالحمد لله أقطع» | أبو هريرة | ٣٢٧/٦ |
| «كل امرئ في ظل صدقته...» | عقبة بن عامر | ٣١٩/٨ |
| «كل أنت وعيالك» | أبو هريرة | ٤٩٣/٨ |
| «كل إنسان تلده أمه على الفطرة...» | الأسود بن سريع | ٤٠٣/١٢ |
| «كل أيام التشريق ذبح» | جبير بن مطعم | ٣٦٨/١٩ |
| «كل باسم الله وتوكلا عليه» | جابر بن عبد الله | ٤٣٥/١٤ |
| «كل بني آدم يطعن الشيطان في جنبه...» | أبو هريرة | ٥٨٤/١٢ |
| «كل بنيك نحلت مثل الذي نحلت النعمان؟» | النعمان بن بشير | ٣٢٥/١٢ |
| «كل بيعين لا بيع بينهما حتى يتفرقا إلا بيع الخيار» | ابن عمر | ٢٥/١١ |
| «كل بيمينك» | سلمة بن الأكوع | ٥٥/١٥ |
| «كل تقي» | أنس بن مالك | ٦٨٥/٣ |
| «كل خطبة ليس فيها شهادة فهي كاليد الجذماء» | أبو هريرة | ٣٢٨/٦ |
| «كل خطبة ليس فيها شهادة كاليد الجذماء» | أبو هريرة | ٣٢٨/٦ |
| «كل ذلك لم يكن» | أبو هريرة | ٥٢١/٤، ٥٨٠ |

| | | |
|---|---|---|
| «كل ذلك لم يكن إن ابنى ارتحلنى...» | شداد بن الهاد | ٣٠٨/٤ |
| «كل ذنب عسى الله أن يغفره...» | أبو الدرداء | ١٥٠/١٦ |
| «كل ذى مال أحق بماله» | عمر بن المنكدر | ٣٢٨/١٢ |
| «كل ذى ناب من السباع فأكله حرام» | أبو هريرة | ٤٢٧/١٩ |
| «كل سبب ونسب منقطع يوم القيامة...» | عمر | ٥٤٤/١٣، ٥٤٥، ١٤/ ١١١ |
| «كل سلامى من الناس عليه صدقة...» | أبو هريرة | ٣٥٨/٨ |
| «كل شراب أسكر فهو حرام» | عائشة | ٢٧/١، ٤٠١/١٧، ٤٠٧ |
| «كل شىء بقدر حتى العجز والكيس...» | ابن عمر | ٧٧/٢١ |
| «كل شىء خطأ إلا السيف.» | النعمان بن بشير | ٢١٣/١٦ |
| «كل شىء سوى الحديدة خطأ...» | النعمان بن بشير | ٢١٤/١٦ |
| «كل شىء ليس من ذكر الله فهو سهو...» | جابر بن عبد الله أو جابر بن عمير | ١٣/٢٠ |
| «كل شىء يتكلم به ابن آدم فإنه مكتوب عليه...» | أبو الدرداء | ٤٥٩/٢٠ |
| «كل صلاة لا يقرأ فيها بأم الكتاب فهى خداج» | أبو هريرة | ٣٩٤/٣ |
| «كل صلاة لم يقرأ فيها بفاتحة الكتاب فهى خداج» | أبو هريرة | ٤٠/٤ |
| «كل عرفات موقف...» | جبير بن مطعم | ٣٣٦/١٩ |
| «كل عرفة موقف...» | جابر بن عبد الله | ٩٠/١٠، ٤٨٤ |
| «كل عمل ابن آدم له إلا الصوم...» | - | ٤٦/٩، ١٤٠ |
| «كل عمل ابن آدم له إلا الصيام...» | أبو هريرة | ٣٣/٩ |
| «كل عمل ابن آدم هو له إلا الصيام» | أبو هريرة | ١٣٨/٩ |
| «كل عمل ابن آدم يضاعف...» | أبو هريرة | ٤٤/٩، ١٤٠ |
| «كل غلام رهينة بعقيقته...» | سمرة بن جندب | ٣٧٥/١٩، ٣٨٨ |
| «كل فإنى أناجى من لا تناجى» | جابر بن عبد الله | ٥٠٣/١٣، ٥٦٤ |
| «كل فجاج مكة طريق ومنحر» | جابر بن عبد الله | ٢٤٨/١٠ |
| «كل قسم قسم فى الجاهلية فهو على ما قسم عليه» | ابن عباس | ٣٩٦/١٨ |

| | | |
|---|---|---|
| «كل كلم يكلمه المسلم فى سبيل الله...» | أبو هريرة | ٥٤٠/١٨ |
| «كل ما هو آتٍ قريب لا بعد لما هو آت...» | ابن شهاب | ٣٤٥/٦ |
| «كل ما أدى زكاته فليس بكنز...» | ابن عمر | ١٣/٨ |
| «كل ما أسكر عن الصلاة فهو حرام» | أبو موسى | ٤١٠/١٧ |
| «كل ما أفرى الأوداج ما لم يكن قرض ناب أو حز ظفر» | أبو أمامة الباهلى | ٣٠٩/١٩ |
| «كل ما رد عليك قوسك وذكرت اسم الله...» | أبو ثعلبة الخشنى | ٦١١/١٩ |
| «كل ما ردت عليك قوسك» | أبو ثعلبة | ١٩٤/١٩ |
| «كل ما ردت عليك قوسك» | عبد الله بن عمرو | ١٩٤/١٩ |
| «كل ما ردت عليك يدك» | أبو ثعلبة | ١٧٨/١٩ |
| «كل مال النبى صدقة» | أبو البخترى | ١٢٣/١٣ |
| «كل مال يتيمك غير مسرف» | عبد الله بن عمرو | ٧٦/١٣ |
| «كل مخمر خمر وكل مسكر حرام...» | ابن عباس | ٣٩٣/١٧ |
| «كل مسكر حرام...» | عائشة | ٤٠٨/١٧، ٤٢٠ |
| «كل مسكر حرام...» | جابر بن عبد الله | ٤٠٤/١٧ |
| «كل مسكر حرام» | ابن عباس | ١٠٧/٢١ |
| «كل مسكر حرام» | أبو موسى | ٤٠٢/١٧ |
| «كل مسكر حرام» | طاوس | ٤٠٤/١٧ |
| «كل مسكر حرام» | عبد الله بن عمرو | ١٣٥/٢١ |
| «كل مسكر حرام» | عطاء بن أبى رباح | ٤٤٤/١٧ |
| «كل مسكر خمر وكل خمر حرام» | ابن عمر | ٤٠٩ /١٧ |
| «كل مسكر خمر وكل مسكر حرام...» | ابن عمر | ٣٩٢/١٧، ٤٠٨، ٤٠٩، ٤٥٠ |
| «كل مسكر خمر وكل مسكر حرام» | سعد بن أبى وقاص، ابن عمر | ١٠٩/٢١ |
| «كل مسكر خمر وما أسكر كثيره فقليله حرام» | ابن عمر | ٤١٨/١٧ |
| «كل معروف صدقة...» | جابر | ٢٠٦/٢١ |
| «كل معروف صدقة» | حذيفة بن اليمان | ٣٦١/٨ |
| «كل من هذا فإنه أنفع لك» | أم مبشر الأنصارية | ٥٢٣/١٩ |

| | | |
|---|---|---|
| «كل منّى منحر» | جبير بن مطعم | ٤٨٢/١٠ |
| «كل مولود يولد على الفطرة...» | أبو هريرة | ٤٠٠/١٢، ٤٠٥ |
| «كل مولود يولد على الفطرة...» | الأسود بن سريع | ٤٠٤/١٢ |
| «كل مولود يولد على الفطرة» | - | ٤٠٥/١٢ |
| «كل نسمة تولد على الفطرة...» | الأسود بن سريع | ٢٥٩/١٨ |
| «كل ولا تحمل واشرب ولا تحمل» | أبو هريرة | ٥٨٠/١٩ |
| «كلا إنى رأيته فى النار فى عباءة غلها» | عمر بن الخطاب | ٣٣٣/١٨ |
| «كلا إنى عبد الله...» | أبو هريرة | ٣٨٢/١٨ |
| «كلا بل أنت نسيت بهذا أمرنى ربى...» | المغيرة بن شعبة | ٣٠٥/٢ |
| «كلا ما أثنيتم به عليهم ودعوتم الله لهم» | أنس | ٣٤١/١٢ |
| «كلا والذى نفسى بيده...» | أبو هريرة | ٣٣٢/١٨ |
| «كلاب النار...» | أبو أمامة | ٦٩/١٧ |
| «كلا كما قتله» | عبد الرحمن بن عوف | ١٤٢/١٣ |
| «الكلب الأسود شيطان» | أبو ذر | ٣٤٢/٤ |
| «كلكم راع وكلكم مسئول...» | ابن عمر | ١٠٣/١٥ |
| «كلكم راع ومسئول عن رعيته» | عبد الله بن عمر | ٨٧/١٣ |
| «كلكم قد أصاب» | أبو هريرة | ٣٧٦/٥ |
| «كلما نفرنا غازين خلف أحدهم ينب...» | جابر بن سمرة | ١٥٢/١٧ |
| «كلمة حق تقال لإمام جائر» | أبو أمامة | ٢٥٤/٢٠ |
| «الكلمة الطيبة صدقة...» | أبو هريرة | ٣٨٧/٦ |
| «كلّه» | أبو هريرة | ٤٨٩/٨ |
| «كله أنت وأهل بيتك وصم يومًا مكانه...» | أبو هريرة | ٤٩٥/٨ |
| «كله أنت وأهلك» | سليمان بن يسار | ٤١٥/١٥ |
| «كله أنت وأهلك» | عكرمة | ٤١٧/١٥ |
| «كلها» | جابر بن عبد الله | ٤٤٦/١٩ |
| «كلوا» | أنس | ٤٨/١٢ |
| «كلوا» | سلمان الفارسى | ٢٠٩/١١، ٣٤٩/١٢ |
| «كلوا» | عبد الله بن أبى قتادة | ٤٤٩/١٩ |
| «كلوا باسم الله» | على بن أبى طالب | ٣٧٦/١٢ |

| | | |
|---|---|---|
| «كلوا؛ رزقا أخرجه الله...» | جابر | ٢٢١/١٩ |
| «كلوا فإنه ليس بحرام ولا بأس به...» | ابن عمر | ٤٥٢/١٩ |
| «كلوا فإني عائف» | أبو هريرة | ٤٥٧/١٩ |
| «كلوا من جوانبها...» | ابن عباس | ٥٦/١٥ |
| «كلوا وأطعموا واحبسوا وادخروا» | أبو سعيد الخدرى | ٣٥٦/١٩ |
| «كلوا واعلفوا ولا تحتملوا» | عبد الله بن عمرو | ٢٠٥/١٨ |
| «كلوا وتزودوا» | جابر | ٣٥٠/١٩ |
| «كلوا وتصدقوا وادخروا» | عائشة | ٣٥٩/١٩ |
| «كلوه» | أبو قتادة | ٢٧٣/١٠ |
| «كلوه إن شئتم...» | أبو سعيد | ٤٩٠/١٩، ٤٩١ |
| «كلوه من أكله فلا يقرب هذا المسجد...» | أبو سعيد الخدرى | ٥٦٦/٥ |
| «كلى» | عمارة بنت كعب | ١٤٢/٩ |
| «كم أمهرتها؟» | أبو حدرد الأسلمى | ٤٨٨/١٤ |
| «كم سقت إليها؟» | أنس | ٥٦٠/١٤ |
| «كم طلقك» | أبو بكر ابن أبى الجهم | ٦٧/١٦ |
| «كم مضى من الشهر» | أبو هريرة وابن عمر | ١٥٧/٩، ١٥٨ |
| «كم من عذق مدلى لابن الدحداح فى الجنة» | جابر بن سمرة | ٣٣٦/٧ |
| «الكمأة من المن وماؤها شفاء للعين» | سعيد بن زيد بن عمرو | ٥٢٧/١٩ |
| «كمل دينه هذا النكاح لا السفاح...» | على بن أبى طالب | ١٠٠/١٥ |
| «كن أنت تجيء به يوم القيامة» | عبد الله بن عمرو | ١٠٨/١٣، ٣٣٨/١٨ |
| «كن أنت الذى توافى به يوم القيامة...» | عبد الله بن عمرو | ٥٠٣/١٧ |
| «كن بها حتى تأتينا بخبر...» | عروة بن الزبير | ١٩٧/١٨ |
| «كن فى الدنيا كأنك غريب أو عابر سبيل» | عبد الله بن عمر | ١٤٥/٧ |
| «كنت أصليهما بعد الظهر فجاءنى مال...» | أم سلمة | ٢٩٦/٥ |
| «كنت إمامًا فلو سجدت سجدتُ معك» | عطاء بن يسار | ٤٩٣/٤ |
| «كنت نهيتكم أن تأكلوا لحوم الأضاحى...» | بريدة | ٣٥٣/١٩ |
| «كنت نهيتكم عن الأشربة فى ظروف الأدم..» | بريدة | ٤٦٥/١٧ |
| «كنت نهيتكم عن زيارة القبور...» | بريدة | ٤٦٦/١٧ |
| «كونوا على مشاعركم هذه...» | ابن مِربَع الأنصارى | ٦٧/١٠ |

| | | |
|---|---|---|
| «الكيس من دان نفسه وعمل لما بعد الموت» | شداد بن أوس | ١٤٧/٧ |
| «كيف؟» | جابر | ٤٥٤/٢ |
| «كيف أنت إذا أصاب الناس موت...؟» | أبو ذر | ٣٣٢/١٧ |
| «كيف أنت إذا بقيت فى قوم يؤخرون الصلاة عن وقتها» | أبو ذر | ١٠٢/٦ |
| «كيف أنت إذا كانت عليك أمراء يؤخرون الصلاة عن وقتها» | أبو ذر | ٩١/٦ |
| «كيف أنت له؟» | عمة حصين بن محصن | ١٠٥/١٥ |
| «كيف أنت يا عبد الله أتعرفه؟» | ابن عمر | ٣٧٠/٢٠ |
| «كيف أنتم إذا بقيتم فى حثالة من الناس...» | سهل بن سعد | ٥٩٠/١٦ |
| «كيف أهللت» | أبو موسى | ٢٤١/٩ |
| «كيف بقرابتى منه؟» | عائشة | ١٩٣/٢١ |
| «كيف بك إذا أخرجت من خيبر...» | عمر | ٨٣/١٩ |
| «كيف بك إذا رقصت بك راحلتك...» | ابن عمر | ٤٠١/١٨ |
| «كيف بكم إذا أتت عليكم أمراء يصلون الصلاة بغير وقتها» | عبد الله بن مسعود | ٩٢/٦ |
| «كيف بها وقد زعمت أنها قد أرضعتكما؟» | عقبة بن الحارث | ٤٠/١٦ |
| «كيف تبيع» | أبو هريرة | ١٨٦/١١ |
| «كيف تجد قلبك؟» | محمد بن عمار بن ياسر | ١٤٠/١٧ |
| «كيف تجدان أمر هذين فى التوراة» | جابر بن عبد الله | ٢١٢/١٧ |
| «كيف تصنع يا أبا ذر إذا كثر الموت...؟» | أبو ذر | ٨٠/١٧ |
| «كيف تصنع يا ابن أخى إذا صليت» | جابر بن عبد الله | ٦٩/٦ |
| «كيف تعملون بمن زنى منكم؟» | ابن عمر | ٢٦٥/١٧ |
| «كيف تقدس أمة لا تأخذ لضعيفها...» | بريدة | ٤٥/١٢ |
| «كيف تقضى إذا عرض لك قضاء؟» | أصحاب معاذ من أهل حمص ومعاذ بن جبل | ٣٣٥/٢٠ |
| «كيف ذلك؟» | أبو هريرة | ٨٩/٤ |

| | | |
|---|---|---|
| «كيف رأيت نسكنا هذا؟» | أبو هريرة | ٢٨٤/١٩ |
| «كيف زناب؟ أين زناب؟» | أم سلمة | ١٣٨/١٥ |
| «كيف صنعت» | البراء بن عازب | ٣٣٤/٩ |
| «كيف صنعت أبا محمد» | عروة | ٥٥١/٩ |
| «كيف طلقتها؟» | ابن عباس | ٢٥٩/١٥ |
| «كيف قتلته؟» | وائل بن حجر | ٢٥١/١٦ |
| «كيف قلت؟» | أبو قتادة | ٨٦/١٨ |
| «كيف قلت؟ فى أى الخربتين؟» | خزيمة بن ثابت | ٣٥٩/١٤ |
| «كيف قلت؟» | أبو قتادة | ٣١١/١١ |
| «كيف وجدتم عَمرًا» | أبو قيس مولى عمرو بن العاص | ١٨٨/٢ |
| «كيف وقد زعمت أن قد أرضعتكما؟» | عقبة بن الحارث | ٤٠/١٦ |
| «كيف وقد قيل؟» | عقبة بن الحارث | ٣٩/١٦ |
| «كيلوا طعامكم يبارك لكم فيه» | أبو أيوب الأنصارى | ٤٢٢/١١ |
| «كيلوا طعامكم يبارك لكم» | المقدام بن معد يكرب | ٤٢١/١١ |


## (اللام)


| | | |
|---|---|---|
| «لا» (أينحنى بعضنا لبعض؟) | أنس | ٦٩/١٤ |
| «لا» (هل يصنع الخمر خلًّا) | أنس | ٤٣٩/١١ |
| «لا» (ألا نقتلها؟) | أنس بن مالك | ٦١٢/١٩ |
| «لا» (أمن العصبية أن يعين الرجل قومه على الحق؟) | أنس بن مالك | ١٧٧/٢١ |
| «لا» (أفأصلى فى مبارك الإبل؟) | جابر بن سمرة | ١٨٣/٥ |
| «لا»(جواب على المشرك الذى قال له: تخافنى؟) | جابر بن عبد الله | ٤٧٨/٦ |
| «لا» (أقيم يا رسول الله؟) | زياد بن الحارث | ٧٤/٣ |
| «لا» (فأتصدق بثلثى مالي؟) | سعد بن أبى وقاص | ٢٢/١٣ |
| «لا» (فأوصى بمالى كله؟) | سعد بن أبى وقاص | ٢٤/١٣ |
| «لا» (أوصى بمالى كله) | سعد بن مالك | ٥٩/١٨، ٥٣/١٦ |

| | | |
|---|---|---|
| «لا» (أطلقت يا رسول الله نساءك؟) | عبد الله بن عباس | ٤٦٣/١٣ |
| «لا» (ألا نستخصى؟) | عبد الله بن مسعود | ٣٧٥/١٤ |
| «لا» (هل زِيدَ فى الصلاة؟) | عبد الله بن مسعود | ٥٣٧/٤ |
| «لا» (فأوصى بمالى كله أو أتصدق به؟) | عمرو القارى | ٦٢/١٨ |
| «لا» (لعلك تريد ابن الأصفر؟) | موسى بن عقبة | ١٦٥/١٩ |
| «لا» (هل تحرم الرضعة الواحدة؟) | أم الفضل | ١٩/١٦ |
| «لا آكل متكئا» | أبو جحيفة | ٧٤/١٥ |
| «لا آكله ولا أحرمه ولا آمر به...» | ابن عباس | ٤٥٥/١٩ |
| «لا آكله ولا أنهى عنه» | عبد الرحمن بن معقل | ٤٤٠/١٩ |
| «لا آكلها ولا أحرمها» | عبد الرحمن بن معقل | ٤٤٠/١٩ |
| «لا أبايعك حتى تغيرى كفيك...» | عائشة | ٢٤/١٤ |
| «لا أجد لك رخصة» | ابن أم مكتوم | ٥٠٩/٥ |
| «لا أجده» | أبو هريرة | ٥١٥/١٨ |
| «لا أجر له» | أبو هريرة | ٥٥٤/١٨ |
| «لا أحب العقوق» | رجل من بنى ضمرة عن أبيه | ٣٨٠/١٩، ٤١٨ |
| «لا إخالك سرقت» | أبو أمية | ٣٥١/١٧ |
| «لا إخاله سرق» | أبو هريرة | ٣٥١/١٧ |
| «لا أخرج من المسجد حتى أخبرك بآية...» | بريدة | ١٦٣/٢٠ |
| «لا أدرى» | ابن عمر | ٥٢٩/٥، ٥٠٥/١٣ |
| «لا أركب الأرجوان» | عمران بن حصين | ٤٤٠/٦، ٥١٢ |
| «لا أرى هذا الخبيث يفطن لهذا...» | موسى بن عبد الرحمن ابن عياش | ١٩٣/١٧ |
| «لا أرى ينزل على شىء لا شىء لهما» | عطاء بن يسار | ٤٣٦/١٢ |
| «لا استطعت» | سلمة بن الأكوع | ٥٥/١٥ |
| «لا أستطيع ذاك» | زيد بن ثابت | ١٥٠/١٧ |
| «لا أستعمل على عملنا من أراده...» | أبو موسى | ٩٦/١٧ |
| «لا إسعاد فى الإسلام» | أنس | ٤٦٦/٧ |
| «لا أشترى ما ليس عندى ثمنه» | ابن عباس | ٣١٥/١١ |

| | | |
|---|---|---|
| «لا أعافى رجلا قتل بعد أخذه الدية» | الحسن | ٢٤٩/١٦ |
| «لا اعتكاف إلا بصيام» | عائشة | ١٧٩/٩ |
| «لا اعتكاف إلا فى المسجد الحرام» | أبو وائل | ١٧٦/٩ |
| «لا أعده كاذبًا الرجل يصلح بين الناس...» | أم كلثوم بنت عقبة | ٥٢/٢١ |
| «لا أعرفن يا بنى عبد مناف ما منعتم طائفًا يطوف بهذا البيت...» | جبير بن مطعم | ٥١/١٠ |
| «لا أعفى من قتل بعد أخذ الدية» | جابر بن عبد الله | ٢٤٩/١٦ |
| «لا أقول إلا حقًا» | أبو هريرة | ٢٢٨/٢١ |
| «لا إلا أن تطوع...» | طلحة بن عبيد الله | ١٤/٣، ٣١٤، ٢٤٠/٥ |
| «لا إلا أن تطوع» | - | ٤٨٤/٤ |
| «لا إلا أن الشيطان أراد أن يمر بين يدى...» | جابر بن سمرة | ١٨٩/٥ |
| «لا إلا فى آخرهن» | أبو أيوب الأنصارى | ٣٠٦/٥ |
| «لا إلا ما كان ظهره حاضرا...» | أنس بن مالك | ٢٢٨/١٨ |
| «لا ألبسه أبدًا» | ابن عمر | ٢٠٩/٨ |
| «لا ألفين أحدكم متكئا على أريكته...» | أبو رافع | ٥٧٨/١٣ |
| «لا ألفين أحدكم يوم القيامة على رقبته بعير..» | أبو هريرة | ٣٣٥/١٨ |
| «لا إله إلا الله» ثلاث مرات | زينب بنت جحش | ٢٦٣/٢٠ |
| «لا إله إلا الله وحده صدق وعده...» | رجل من أصحاب النبى ﷺ | ٣٠٢/١٦ |
| «لا إله إلا الله وحده صدق وعده...» | عبد الله بن عمرو | ٢٨٩/١٦، ٢٩١ |
| «لا إله إلا الله وحده لا شريك له» | جعفر بن محمد عن أبيه | ٣١٦/٩ |
| «لا إله إلا الله وحده لا شريك له» | عبد الله بن عمر | ٥٥١/١٠ |
| «لا إله إلا الله وحده لا شريك له...» | جابر بن عبد الله | ٦١٨/٦ |
| «لا إله إلا الله وحده لا شريك له..» | المغيرة بن شعبة | ٨٦/٤ |
| «لا إله إلا الله وحده لا شريك له..» | عبد الله بن الزبير | ٨٥/٤ |
| «لا إله إلا الله وحده لا شريك له له الملك وله الحمد» | جابر بن عبد الله | ٥٩١/٩، ٥٩٢ |
| «لا إله إلا الله ويل للعرب من شر قد اقترب...» | زينب بنت جحش | ٢٦٢/٢٠، ٢٦٣ |

| | | |
|---|---|---|
| «لا إله إلا أنت سبحانك ظلمت نفسى وعملت سوءا فاغفر لى» | على بن أبى طالب | ٣٨٢/٣ |
| «لا أنت أحق بصدر دابتك منى...» | أبو بريدة | ٥٤٧/١٠ |
| «لا انحرها إياها» | عبد الله بن عمر | ٤٩٠/١٠ |
| «لا إن ذلك عرق...» | عائشة | ٤٤٣/٢ |
| «لا إنما أنا أشفع» | ابن عباس | ٤٤٤/١٤ |
| «لا إنما الخراج على النصارى واليهود» | حرب بن عبيد الله | ٥٦/١٩ |
| «لا إنما ذاك عرق وليست بالحيضة» | عائشة | ٤٤١/٢ |
| «لا إنما ذلك عرق وليس بالحيض» | عائشة | ٤٨٦/٢، ٤٥/٥ |
| «لا إنما ذلك عرق وليست بالحيضة» | عائشة | ٤٨٦/٢ |
| «لا إنما العشر على النصارى واليهود» | رجل من بنى تغلب | ٥٦/١٩ |
| «لا إنما يكفيك أن تحثى عليه ثلاث حثيات» | أم سلمة | ٤٩/٢ |
| «لا إنما يكفيك أن تفرغى عليك ثلاث حفنات ثم» | أم سلمة | ٥٨/٢ |
| «لا إنه قد تاب إلى الله» | وائل بن حجر | ٣٧٩/١٧ |
| «لا إنه قد لعن الموصلات» | عائشة | ١١٤/١٥ |
| «لا أولئك عتقاء الله عز وجل» | عبد الله بن المكدم | ١٥١/١٩ |
| «لا أولئك عتقاء الله» | عبد الله بن المكدم | ٤١٢/٢١ |
| «لا إيمان لمن لا أمانة له...» | أنس بن مالك | ٥٥/٨، ٨٩/١٣، ١٩/ ١٥٧ |
| «لا بأس أن تأخذها بسعر يومها...» | ابن عمر | ٧٤/١١ |
| «لا بأس أن يقلب الرجل الجارية إذا أراد أن يشتريها....» | ابن عباس | ١٩٩/٤، ٢١٦/١١ |
| «لا بأس بالأضحية المقطوعة الذنب» | أبو سعيد الخدرى | ٣٤٤/١٩ |
| «لا بأس ببول ما أكل لحمه» | البراء | ٢٥٥/٢ |
| «لا بأس ببيع خدمة المدبر إذا احتاج» | جابر بن عبد الله | ٤٢٤/٢١ |
| «لا بأس بذلك» | أبو رزين | ٤١٩/١٩ |
| «لا بأس بمسك الميتة إذا دبغ» | أم سلمة | ٦٧/١ |
| «لا بأس به» | ابن عمر | ٤٥٢/١٩ |

| | | |
|---|---|---|
| «لا بأس بها» | ثابت بن الضحاك | ١٧٠/١٢ |
| «لا بأس بها فكلوها» | معاذ بن سعد أو سعد ابن معاذ | ٣٢٤/١٩ |
| «لا بأس طهور إن شاء الله تعالى» | عبد الله بن عباس | ١٩٠/٧ |
| «لا بل أسلم ثم قاتل» | البراء | ٥٤٩/١٨ |
| «لا بل أنتم اليوم خير...» | طلحة النصرى | ١٧٤/٥ |
| «لا بل حجَّة» | عبد الله بن عباس | ٢٧٣/١٠ |
| «لا بل عارية مضمونة» | صفوان بن أمية | ٢٥/١٢ ٢٦ |
| «لا بل فى شهر رمضان» | أبو ذر | ١٤٧/٩ |
| «لا بل لأبد أبد» | جابر بن عبد الله | ٣١٧/٩ |
| «لا بل للأبد» | جابر بن عبد الله | ٢٠٣/٩، ٢٠٤، ٢٤٠، ٥٦٩/١١ |
| «لا بل للمسلمين عامة» | على بن أبى طالب | ٥٥٤/١١ |
| «لا بل من عند الله تبارك وتعالى» | كعب بن مالك | ١٢١/١٨ |
| «لا بل هى إلى يوم القيامة» | أبو ذر | ١٤٨/٩ |
| «لا بالمعروف» | عائشة | ٢٩٨/٢١ |
| «لا تأت أهلك طروقًا» | جابر بن عبد الله | ٢٩٩/١١ |
| «لا تأتوا الصلاة وأنتم تسعون...» | أبو هريرة | ٤١٧/٤ |
| «لا تأتوا الكهان» | عمر بن الحكم | ٤٠٤/١٥ |
| «لا تأثم ولا يأثم» | ميمونة بنت كردم | ٢٠٤/١٤ |
| «لا تأخذ من حزرات أنفس الناس شيئا» | عروة بن الزبير | ٧٣/٨ |
| «لا تأخذا فى الصدقة إلا من هذه الأصناف الأربعة...» | أبو بردة وأبو موسى ومعاذ بن جبل | ١٤٩/٨ |
| «لا تأكل فإنما سميت على كلبك...» | عدى بن حاتم | ١٧٣/١٩ |
| «لا تأكله فإنك إنما سميت على كلبك...» | عدى بن حاتم | ١٩٨/١٩ |
| «لا تأكلوا الشريطة فإنها ذبيحة الشيطان» | أبو هريرة | ٣٠٨/١٩ |
| «لا تأكلوا منه إلا ثلاثة أيام» | عائشة | ٣٥٧/١٩ |
| «لا تأكلوه» | أنس بن مالك | ٢١٢/٢ |

| | | |
|---|---|---|
| «لا تباشر المرأة المرأة....» | عبد الله | ٣٩٢/١١ |
| «لا تباع حتى تفصل» | سعد بن أبى وقاص | ٩٦/١١ |
| «لا تباغضوا ولا تحاسدوا...» | أنس بن مالك | ١٧٠/٢١ |
| «لا تبايعوا الثمرة بالتمر...» | عبد الله بن عمر | ١٠٣/١١ |
| «لا تبايعوا الثمرة حتى يبدو صلاحها...» | ابن عمر | ١١٣/١١ |
| «لا تبايعوا الذهب بالذهب...» | أبو سعيد الخدرى | ٥٨/١١ |
| «لا تبتاعوا الثمر حتى يبدو صلاحه...» | أبو هريرة | ١١١/١١ |
| «لا تبتاعوا المغنيات ولا تشتروهن...» | أبو أمامة | ٣٦٢/١١ |
| «لا تبدأ بفيك يا أبا جبير؛ فإن الكافر يبدأ بفيه» | جبير بن نفير | ١٤٤/١ |
| «لا تبرز فخذك ولا تنظر إلى فخذ حى ولا ميت» | على بن أبى طالب | ٢٠٧/٧ |
| «لا تبع ما ليس عندك» | حكيم بن حزام | ١٨/١١ ، ١٧٣ ، ٢٥٣ |
| «لا تبكى - أو ما يبكيك» | جابر بن عبد الله | ٢٦٠/٧ |
| «لا تبيعوا الثمر حتى يبدو صلاحه...» | عبد الله بن عمر | ١٠٢/١١، ١١٣، ١٤٥ |
| «لا تبيعوا الدينار بالدينارين...» | عثمان بن عفان | ٥٥/١١ |
| «لا تبيعوا الذهب بالذهب إلا مثلًا بمثل» | أبو سعيد الخدرى | ٤٨/١١، ١٩٧/١٢ |
| «لا تبيعوا الذهب بالذهب إلا وزنًا بوزن» | سعد بن أبى وقاص | ٩٧/١١ |
| «لا تبيعوا الذهب بالذهب ولا الفضة بالفضة...» | عبادة بن الصامت | ٥٣/١١ |
| «لا تبيعوا الذهب بالذهب ولا الورق بالورق» | عبادة بن الصامت | ٤٩/١١، |
| «لا تبيعوا الذهب بالذهب ولا الورق بالورق» | أبو سعيد الخدرى | ٤٧٠/٢٠ |
| «لا تبيعوا المغنيات ولا تشتروهن» | أبو أمامة | ٣٦٣/١١ |
| «لا تتبعن الجنازة بصوت ولا نار» | أبو هريرة | ٢٢٣/٧، ٢٢٤ |
| «لا تتحروا بصلاتكم طلوع الشمس...» | عبد الله بن عمر | ١٩٨/٥ |
| «لا تتخذوا شيئا فيه الروح غرضا» | ابن عباس | ٢٣٨/١٨ |
| «لا تتمنوا لقاء العدو...» | عبد الله بن أبى أوفى | ٢٥٣/١٨ |
| «لا تتنفس فى الإناء ولا تنفخ فيه» | ابن عباس | ٧٦/١٥ |
| «لا تجالسوا أهل القدر ولا تفاتحوهم» | عمر | ٧٢/٢١ |
| «لا تجزئ صلاة رجل لا يقيم فيها صلبه فى الركوع والسجود» | أبو مسعود | ٥١٧/٣ |

| | | |
|---|---|---|
| «لا تجزئ صلاة لا يقيم الرجل صلبه فى الركوع والسجود» | أبو مسعود | ٥١٦/٣، ٥١٧ |
| «لا تجزئ صلاة لا يقيم الرجل فيها صلبه» | جابر بن عبد الله | ٥١٧/٣، ٥٩٥، ٥٩٦ |
| «لا تجزئ صلاة لا يقيم الرجل فيها صلبه» | أبو مسعود | ٥٩٥/٣ |
| «لا تجزئ صلاة لرجل لا يقيم صلبه أو قال ظهره» | أبو مسعود | ٥٩٦/٣ |
| «لا تجلسوا على القبور ولا تصلوا إليها» | أبو مرثد الغنوى | ١٤٥/٥ ، ٥٢٩/٧ |
| «لا تجنى أم على ولد...» | طارق بن عبد الله | ٣٨٦/١١ |
| «لا تجنى نفس على أخرى» | رجل من بنى ثعلبة بن يربوع | ١٧١/١٦ |
| «لا تجوز شهادة بدوى على صاحب قرية» | أبو هريرة | ٢٣٣/٢١ |
| «لا تجوز شهادة خائن ولا خائنة...» | عائشة، عبد الله بن عمرو | ٤٦٢/٢٠، ٤٦١، ٢١/ ٦٢، ٦٦ |
| «لا تجوز شهادة ذى الجنة والظنة» | أبو هريرة | ٦٣/٢١ |
| «لا تجوز شهادة ذى الخلة...» | أبو هريرة | ٦٣/٢١ |
| «لا تجوز شهادة ذى الظنة والجنة والحنة» | الأعرج | ٦٣/٢١ |
| «لا تجوز وصية لوارث...» | ابن عباس | ٦/١٣ ، ٣٧ |
| «لا تحاسدوا ولا تباغضوا ولا تناجشوا...» | أبو هريرة | ٣٥/١٢ ، ٢٧٦/١٧ |
| «لا تحاسدوا ولا تقاطعوا ولا تدابروا...» | أنس بن مالك | ١٤٦/١٥ |
| «لا تحتجبى فإنه يحرم من الرضاعة...» | عائشة | ٩/١٦ |
| «لا تحد المرأة على ميت فوق ثلاثة إلا على زوجها» | أم عطية | ٦٥/٢ |
| «لا تحدوا النظر إليهم» | ابن عباس | ٤٣٤/١٤ |
| «لا تحرم الإملاجة والإملاجتان» | عائشة، أم الفضل | ١٧/١٦ ، ١٨ |
| «لا تحرم الفيقة» | المغيرة بن شعبة | ٢٢/١٦ |
| «لا تحرم المصة أو المصتان...» | أم الفضل | ١٨/١٦ |
| «لا تحرم المصة من الرضاعة ولا المصتان» | عبد الله بن الزبير | ١٥/١٦ |
| «لا تحرم المصة والمصتان» | عبد الله بن الزبير | ١٦/١٦ |
| «لا تحرم المصة ولا المصتان» | عائشة | ١٧/١٦ |

| | | |
|---|---|---|
| «لا تحرم من الرضاعة المصة ولا المصتان» | أبو هريرة | ٢١/١٦ |
| «لا تحسبن أنا من أجلك ذبحناها...» | لقيط بن صبرة | ١٤٥/١٥ |
| «لا تُحشَروا ولا تُعشَروا ولا تُجَبُّوا...» | عثمان بن أبى العاص | ١٧٢/٥ |
| «لا تحل الصدقة لغنى إلا...» | عطاء بن يسار، أبو سعيد الخدرى | ٣٩٧/١٣، ٤١٧-٤٢٠ |
| «لا تحل الصدقة لغنى ولا لذى مرة سوى» | عبد الله بن عمرو | ٣٩٢/١٣، ٤٥٢ |
| «لا تحل لك حتى تذوق العسيلة» | عبد الرحمن بن الزبير | ٣٦٩/١٥ |
| «لا تحل للأول حتى يذوق الآخر عسيلتها...» | عائشة | ٣٦٧/١٥ |
| «لا تحل للأول حتى يذوق عسيلتها الآخر» | ابن عمر | ٣٧٠/١٥ |
| «لا تحل له حتى يذوق عسيلتها وتذوق...» | أنس بن مالك | ٣٧٢/١٥ |
| «لا تحلفوا بآبائكم» | ابن عمر | ٦٤/٢٠ ، ٥٤٢ |
| «لا تحلفوا بآبائكم ولا بأمهاتكم» | أبو هريرة | ٦٢/٢٠ |
| «لا تحلفوا بآبائكم ولا بالطواغيت» | عبد الرحمن بن سمرة | ٦١/٢٠ |
| «لا تحلف بأبيك...» | ابن عمر | ٦٣/٢٠ |
| «لا تحلين لزوجك الأول حتى يذوق الآخر..» | عائشة | ٣٦٧/١٥ |
| «لا تحملوهم ما لا يطيقون...» | عبد الله بن عمرو | ١٩٦/١٦ |
| «لا تختصوا ليلة الجمعة بقيام» | أبو هريرة | ١٣٠/٩ |
| «لا تختلفوا فتختلف قلوبكم» | أبو مسعود الأنصارى، البراء بن عازب | ١٢/٦، ٢٨ |
| «لا تخرصوا العرايا» | أبو بكر بن محمد بن عمرو بن حزم | ١٤٤/٨ |
| «لا تخمس مالا أخذ غصبا» | الزهرى | ٣٦٨/١٨ |
| «لا تخيفوا الأنفس بعد أمنها» | عقبة بن عامر الجهنى | ٣١٢/١١ |
| «لا تخيفوا أنفسكم» | عقبة بن عامر الجهنى | ٣١٣/١١ |
| «لا تدخل الملائكة بيتًا فيه صورة» | على، أبو طلحة | ١١٩/٢، ٣٥/١٥ |
| «لا تدخل الملائكة بيتا فيه كلب...» | أبو طلحة | ٢٥٣/٢، ٢٤/١٥، ٣٧ |
| «لا تدخلوا على هؤلاء القوم...» | ابن عمر | ١٩١/٥، ١٩٢ |
| «لا تدخلوا مساكن الذين ظلموا أنفسهم...» | ابن عمر | ١٩٢/٥ |
| «لا تدعوهما وإن طردتكم الخيل» | أبو هريرة | ٢٥٤/٥ |

| | | |
|---|---|---|
| «لا تديموا النظر إلى المجاذيم» | ابن عباس | ٤٣٤/١٤ |
| «لا تديموا النظر إليهم» | ابن عباس | ٤٣٤/١٤ |
| «لا تذبحوا إلا مسنة...» | جابر بن عبد الله | ٤٥٠/١٠، ٢٧٥/١٩، ٣١٠ |
| «لا تذعرهم علي» | حذيفة | ٤٨٧/١٨ |
| «لا تذكروني عند ثلاث؛ عند تسمية الطعام...» | زيد العمى | ٣٣٥/١٩ |
| «لا ترايا ناراهما» | جرير بن عبد الله | ٤٧٠/١٦، ٤٦٧/١٨ |
| «لا ترايا ناراهما» | قيس بن أبي حازم | ٤٦٩/١٦ |
| «لا ترث ملة ملة...» | أبو هريرة | ٤٨٨/٢٠ |
| «لا ترجعوا بعدى ضلالا...» | أبو بكرة | ٧٥/١٧ |
| «لا ترجعوا بعدى كفارًا يضرب بعضكم رقاب بعض» | أبو بكرة | ١٥٠/١٠ |
| «لا ترسلوا مواشيكم وصبيانكم إذا غابت الشمس» | جابر بن عبد الله | ٥٤٢/١٠ |
| «لا تركبوا الخزَّ ولا النِّمار» | معاوية | ٦٢/١ |
| «لا ترم وكل مما يقع أشبعك الله ورواك» | رافع بن عمرو | ٥٨٢/١٩ |
| «لا ترموا الجمرة حتى تطلع الشمس» | عبد الله بن عباس | ١٢٤/١٠ |
| «لا تزال أمتى بخير - أو على الفطرة - ما لم يؤخروا المغرب» | أبو أيوب | ٣٩/٣، ٤٠ |
| «لا تزال أمتى على الفطرة ما صلوا المغرب قبل طلوع النجوم» | السائب بن يزيد | ٢٥٣/٣ |
| «لا تزال أمتى على الفطرة ما لم يؤخروا المغرب حتى تشتبك النجوم» | العباس بن عبد المطلب | ٢٥٣/٣ |
| «لا تزال طائفة من أمتى يقاتلون على الحق...» | جابر بن عبد الله | ١٣٥/١٨، ٥٩٥ |
| «لا تزال نفس المؤمن معلقة بدينه حتى يقضى عنه» | أبو هريرة | ٤٦١/٧ |
| «لا تزرموه» | أنس بن مالك | ٧٧/٥، ١٢٥ |
| «لا تزوج المرأة المرأة...» | أبو هريرة | ٩٧/١٤، ٩٩ |
| «لا تسافر امرأة بريدًا إلا مع ذى محرم» | أبو هريرة | ١٣٩/٦ |

| | | |
|---|---|---|
| «لا تسافر امرأة ثلاثًا إلا معها ذو محرم» | ابن عمر | ١٣٥/٦ |
| «لا تسافر امرأة ثلاثة أيام فصاعدا...» | أبو سعيد | ١٣٥/٦، ٦٣/١٤ |
| «لا تسافر امرأة سفرًا يكون ثلاثة أيام فصاعدًا إلا ومعها أبوها...» | أبو سعيد الخدرى | ٤٣٨/١٠ |
| «لا تسافر المرأة ثلاثًا إلا ومعها ذو محرم» | عبد الله بن عمر | ٤٣٧/١٠ |
| «لا تسافر المرأة فوق ثلاثة أيام إلا مع ذى محرم...» | أبو سعيد الخدرى | ٢٢٦/٢٠ |
| «لا تساكنوا المشركين ولا تجامعوهم...» | سمرة بن جندب | ٤٦٧/١٨ |
| «لا تسأل بوجه الله إلا الجنة» | جابر بن عبد الله | ٣٩٧/٨ |
| «لا تسأل الرجل فيم ضرب امرأته؟...» | عمر بن الخطاب | ١٤٩/١٥ |
| «لا تسأل الناس شيئا» | ثوبان | ٣٩٠/٨ |
| «لا تسألنى امرأة منهن إلا أخبرتها...» | جابر | ٤٦٦/١٣ |
| «لا تسألوا أهل الكتاب عن شىء فإنهم لن يهدوكم وقد ضلوا» | جابر بن عبد الله | ٣٢٢/٣ |
| «لا تسبقنى بآمين» | بلال | ٣٥٦/٣، ٤٤٠، ٤٤١ |
| «لا تسبقونى بالركوع والسجود» | معاوية | ٥٢٩/٣ |
| «لا تسبن أحدًا» | جابر بن سليم | ١٨٥/٢١ |
| «لا تسبوا أصحابى...» | أبو سعيد | ٩١/٢١ |
| «لا تسبوا الأموات فإنهم قد أفضوا إلى ما قدموا» | عائشة | ٥١٣/٧ |
| «لا تسبوا الدهر فإن الله هو الدهر» | أبو هريرة | ١٣٠/٧، ١٣١ |
| «لا تستبطئوا الرزق...» | جابر بن عبد الله | ١٠/١١ |
| «لا تستضيئوا بنار المشركين...» | أنس بن مالك | ٣٧٥/٢٠ |
| «لا تستقبلوا السوق» | ابن عباس | ١٧٥/١١ |
| «لا تستنجوا بهما...» | عبد الله بن مسعود | ٣٣١/١ |
| «لا تسلفوا فى النخل حتى يبدو صلاحه» | ابن عمر | ٣٩٥/١١ |
| «لا تشتره وإن أعطاك بدرهم واحد...» | عمر بن الخطاب | ٢٤٣/٨ |
| «لا تشتره ولا تعد فى صدقتك» | عمر بن الخطاب | ٢٤٢/٨، ٢٤٣ |
| «لا تشتروا السمك فى الماء فإنه غرر» | ابن مسعود | ٢٥٥/١١ |

| | | |
|---|---|---|
| «لا تشتروا الصدقات حتى توسم وتعقل» | مكحول | ٢٤٢/٨ |
| «لا تشد الرحال إلا إلى ثلاثة مساجد...» | أبو هريرة | ٢٢٥/٢٠ |
| «لا تشربوا فى الدباء ولا النقير ولا المزفت...» | أحد وفد عبد القيس | ٤٣٥/١٧ |
| «لا تشربوا فى نقير ولا مقير ولا دباء...» | أبو هريرة | ٤٣٦/١٧ |
| «لا تشرك بالله وإن عذبت وإن حرقت...» | أم أيمن | ١٤٨/١٥ |
| «لا تشركن بالله شيئا» | أم عطية | ٤٦٤/٧ |
| «لا تشركوا بالله شيئا ولا تقتلوا...» | صفوان بن عسال | ٥٩٣/١٦ |
| «لا تصافحوهم ولا تبدءوهم بالسلام...» | على | ٤٠٥/٢٠ |
| «لا تصحب الملائكة رفقة فيها جرس أو كلب» | أبو هريرة | ٥٣٣/١٠ |
| «لا تصحب الملائكة الرفقة التى فيها جرس» | أم حبيبة | ٥٣٤/١٠ |
| «لا تصدقوا أهل الكتاب ولا تكذبوهم...» | أبو هريرة | ٤٨٧/٢٠ |
| «لا تصروا الإبل والغنم» | أبو هريرة | ١٧٧/١١، ١٨٨ |
| «لا تصلح الصدقة لغنى...» | أبو هريرة | ٣٩٤/١٣ |
| «لا تصلوا إلا إلى سترة ولا تدع أحدًا يمر بين يديك...» | عبد الله بن عمر | ٣٢٣/٤ |
| «لا تصلوا بعد العصر إلا أن تصلوا والشمس مرتفعة» | على | ٢١٥/٥ |
| «لا تصلوا بعد العصر إلا أن تصلوا والشمس نقية» | على | ٢١٤/٥ |
| «لا تصلّوا خلف النائم ولا المتحدث» | عبد الله بن عباس | ٣٥٨/٤ |
| «لا تصلوا صلاة فى يوم مرتين» | عبد الله بن عمر | ٤٣٢/٤ |
| «لا تصلوا فى أعطان الإبل فإنها جن من جن خلقت» | عبد الله بن مغفل | ١٨٦/٥ |
| «لا تصلوا فيها فإنها من الشياطين» | البراء بن عازب | ١٨٥/٥ |
| «لا تصم يوم الجمعة إلا فى أيام كنت تصومها...» | بشير ابن الخصاصية | ٢٠٦/٢٠، ٢٠٧ |
| «لا تصوم امرأة إلا بإذن زوجها» | أبو سعيد | ١٣٤/٩ |
| «لا تصوم المرأة وبعلها شاهد إلا بإذنه...» | أبو هريرة | ٣٧٦/٨، ١٠٨/١٥ |
| «لا تصوموا حتى تروا الهلال..» | طلق، ابن عمر | ٤١٦/٨، ٤٣٠ |
| «لا تصوموا يوم السبت» | الصماء | ١٣١/٩ |

| | | |
|---|---|---|
| «لا تضاروا فى الحفر» | أبو قلابة | ٢٤٨/١٢ |
| «لا تضربوا إماء الله» | إياس بن أبى ذباب | ١٤٧/١٥، ١٥١ |
| «لا تطرقوا النساء» | ابن عمر | ٥٧٣/١٨ |
| «لا تطعموه» | أم حبيبة | ٤٠٦/١٧ |
| «لا تطعموهم مما لا تأكلون» | عائشة | ٤٦١/١٩ |
| «لا تعجل فإن أبا بكر أعلم بأنسابها...» | عائشة | ١٩٤/٢١ |
| «لا تعد فى صدقتك» | عمر بن الخطاب | ٢٤٤/٨ |
| «لا تعذبوا بعذاب الله» | ابن عباس | ١٢٠/١٧، ٢٤١/١٨ |
| «لا تعضية على أهل الميراث...» | أبو بكر بن محمد بن عمرو بن حزم | ٣٩٥/٢٠ |
| «لا تعضية فى ميراث إلا ما حمل القسم» | أبو بكر بن محمد بن عمرو بن حزم | ٣٩٦/٢٠ |
| «لا تعطى من بيته إلا بإذنه...» | ابن عمر | ٣٧٩/٨ |
| «لا تعقى عنه بشىء ولكن احلقى شعر رأسه» | أبو رافع | ٣٩٣/١٩ |
| «لا تعلم شماله ما تنفق يمينه» | أبو هريرة | ٥٧٨/١٦ |
| «لا تعلّموا قريشًا وتعلموا منها...» | ابن أبى خيثمة | ٨١/٦ |
| «لا تعمروا ولا ترقبوا فمن أعمر شيئا....» | جابر بن عبد الله | ٣١٧/١٢ |
| «لا تغالوا فى الكفن فإنه يسلب سلبًا سريعًا» | على بن أبى طالب | ٢٥٠/٧ |
| «لا تغتسلوا فى الصحراء إلا أن تجدوا متوارى» | الزهرى | ١١٣/٢ |
| «لا تغزى بعدها إلى يوم القيامة» | الحارث بن مالك | ١٠٤/١٩ |
| «لا تغضب» | رجل من أصحاب النبى ﷺ، أبو هريرة أو أبو سعيد | ٣٠٤/٢٠- ٣٠٦ |
| «لا تفعل إذا رأيت المذى» | على | ٢٥/٢ |
| «لا تفعل بع الجمع بالدراهم...» | أبو هريرة | ٩١/١١ |
| «لا تفعل فإن مقام أحدكم فى سبيل الله...» | أبو هريرة | ٥٢٦/١٨ |
| «لا تفعل يا عمر؛ فإنه يحب الله ورسوله» | رافع بن سنان | ٣٤٢/١٨ |
| «لا تفعلا ذلك إذا اشتريتما طعامًا فاستوفياه» | حكيم بن حزام وعثمان بن عفان | ١٧٠/١١ |

| | | |
|---|---|---|
| «لا تفعلوا إذا أتيتم إلى الصلاة فعليكم بالسكينة» | أبو قتادة | ٣٨٦/٦ |
| «لا تفعلوا أرأيت لو مررت بقبرى...» | قيس | ١٠٤/١٥ |
| «لا تفعلوا ولكن مثلًا بمثل» | أبو سعيد ، أبو هريرة | ٧٧/١١ |
| «لا تفعلى يا حميراء؛ فإنه يورث البرص» | عائشة | ٢٠/١ |
| «لا تقاطعوا ولا تدابروا...» | أبو هريرة | ١٦٩/٢١ |
| «لا تقام الحدود فى المساجد...» | ابن عباس | ٢٠٤/١٦ |
| «لا تقبل صلاة أحدكم إذا أحدث...» | أبو هريرة | ٤٦١/١، ١٩٩/٢ |
| «لا تقبل صلاة حائض إلا بخمار» | الحسن، عائشة | ٢١٦/٤، ٢١٧، ٥٠١/١١ |
| «لا تقبل صلاة رجل فى جلده من الخلوق شىء» | أبو موسى | ٤٠٢/٩ |
| «لا تقبل صلاة لا يصيب الأنف من الأرض ما يصيب الجبين» | عكرمة | ٥٦٣/٣ |
| «لا تقبل صلاة من أحدث...» | أبو هريرة | ٣٥٣/١ |
| «لا تقتسم ورثتى دينارا...» | أبو هريرة | ١٣٠/١٣ |
| «لا تقتل نفس ظلما إلا كان على ابن آدم...» | ابن مسعود | ١٢٩/١٦ |
| «لا تقتله فإن قتلته فإنه بمنزلتك...» | المقداد بن الأسود (مقداد بن عمرو) | ١٤٢/١٦، ٩٧/١٧ |
| «لا تقتلوا أولادكم سرا...» | أسماء بنت يزيد | ٤٦/١٦ |
| «لا تقتلوا الذرية» | الأسود بن سريع | ٢٥٩/١٨ |
| «لا تقتلوا هذا العوذ...» | عبد الرحمن بن معاوية أبو الحويرث المرادى | ٤٣٧/١٩ |
| «لا تقتلوا وليدا» | بريدة | ٢٥٨/١٨ |
| «لا تقدموا رمضان» | - | ٤٠٨/٨ |
| «لا تقدموا الشهر بصيام يوم ولا يومين...» | ابن عباس | ٤٢٨/٨ |
| «لا تقدموا الشهر باليوم واليومين...» | أبو هريرة | ٤٢٦/٨ |
| «لا تقدموا الشهر حتى تروا الهلال...» | حذيفة | ٤٢٩/٨ |
| «لا تقدموا قبل رمضان بيوم أو يومين...» | أبو هريرة | ٤٢٥/٨ |
| «لا تقدموا هذا الشهر...» | عمر بن الخطاب | ٤٢٧/٨ |
| «لا تقرأ الحائض ولا الجنب شيئا من القرآن» | ابن عمر | ٤٠٧/٢ |

| | | |
|---|---|---|
| «لا تقربه» | محيصة بن مسعود | ٤٩٩/١٩ |
| «لا تقسم» | أبو هريرة ، ابن عباس | ٩٢/٢٠، ٩٤ |
| «لا تقصوا نواصى الخيل...» | عتبة بن عبد السلمى | ٢٢٦/١٣، ٢٢٧ |
| «لا تقطع الأيدى فى السفر» | بسر بن أبى أرطاة | ٣٤٥/١٨ |
| «لا تقطع فى ثمر معلق...» | عبد الله بن عمرو | ٣١٥/١٧ |
| «لا تقطع يد السارق إلا فى ثمن المجن فما فوقه» | عائشة | ٢٩٩/١٧ |
| «لا تقطع يد السارق إلا فى ربع دينار فصاعدا» | عائشة | ٢٩٣/١٧ |
| «لا تقطعوا اللحم بالسكين...» | عائشة | ٦٣/١٥ |
| «لا تقل: عليك السلام...» | جابر بن سليم | ١٨٥/٢١ |
| «لا تقل له ذلك ألا تراه وقد قال: لا إله إلا الله؟» | عتبان بن مالك | ٣٦٧/٢٠ |
| «لا تقم رجلًا من مجلسه ثم تجلس فيه...» | أبو بكرة | ٤٠٢/٦ |
| «لا تقولوا: رمضان...» | أبو هريرة | ٤٠٧/٨ |
| «لا تقولوا: ما شاء الله وشاء فلان...» | حذيفة | ٣٤٩/٦ |
| «لا تقولوا هكذا فإن الله هو السلام» | عبد الله بن مسعود | ٦٤٦/٣، ٦٤٧ |
| «لا تقولوا هكذا ولا تعينوا الشيطان عليه...» | أبو هريرة | ٤٦٩/١٧ |
| «لا تقولوا هكذا ولكن قولوا: اللهم اغفر...» | أبو هريرة | ٤٧٠/١٧ |
| «لا تقوم الساعة حتى تطلع الشمس من مغربها...» | أبو هريرة | ٥٩٦/١٨ |
| «لا تقوم الساعة حتى تقاتلوا خوز وكرمان...» | أبو هريرة | ٥٧٩/١٨ |
| «لا تقوم الساعة حتى تقاتلون أقواما...» | أبو هريرة | ٥٧٨/١٨ |
| «لا تقوم الساعة حتى تقتتل فئتان عظيمتان» | أبو هريرة | ٢٠/١٧ |
| «لا تقوم الساعة حتى يتباهى الناس بالمساجد» | أنس | ١٥٧/٥ |
| «لا تكتحل بالنهار وأنت صائم» | معبد بن هوذة | ٩/٩ |
| «لا تكتحل قد كانت إحداكن تمكث...» | أم سلمة | ٥٣٠/١٥ |
| «لا تكرهن أحدا من أصحابك على المسير معك» | جندب بن عبد الله | ٣٩/١٨ |
| «لا تكرهوا مرضاكم على الطعام والشراب...» | عقبة بن عامر | ٥٣٦/١٩ |
| «لا تكروا المزارع» | زيد بن ثابت | ١٧٤/١٢ |
| «لا تكشف فخذيك ولا تنظر إلى فخذ حى أو ميت» | على بن أبى طالب | ٢٠٣/٤ |

| | | |
|---|---|---|
| «لا تكن مثل فلان كان يقوم الليل فترك قيام الليل» | عبد الله بن عمرو بن العاص | ٣٨٤/٥ |
| «لا تلبسوا الحرير ولا الديباج...» | حذيفة بن اليمان | ٨٠/١ |
| «لا تلبسوا القمص ولا السراويلات» | ابن عمر | ٤٣٨/٩ |
| «لا تلبسوا القميص ولا العمائم ولا السراويلات» | ابن عمر | ٤٤٧/٩ |
| «لا تلحفوا فى المسألة....» | معاوية | ٣٨٨/٨ |
| «لا تلعنه فوالله ما علمت إنه يحب الله ورسوله» | عمر بن الخطاب | ٤٧١/١٧ |
| «لا تلقوا الجلب....» | أبو هريرة | ٢٨٦/١١ |
| «لا تلقوا الركبان» | أبو هريرة | ٢٨٥/١١ |
| «لا تمسح على عارضيك بمكة...» | - | ٢١٩/١٨ |
| «لا تمسح وأنت تصلى...» | مُعَيقيب | ٣٧٧/٤ |
| «لا تمنعه نفسها وإن كانت على ظهر قتب» | ابن عمر | ١٠٩/١٥ |
| «لا تمنعوا إماء الله مساجد الله» | ابن عمر، أبو هريرة | ١١٨/٦، ١٢٢، ٤٣١/١٠ |
| «لا تمنعوا فضل الماء لتمنعوا به الكلأ» | أبو هريرة | ٢٣٣/١٢ |
| «لا تمنعوا النساء المساجد بالليل» | ابن عمر | ١١٧/٦ |
| «لا تمنعوا نساءكم المسجد وبيوتهن خير لهن» | ابن عمر | ١١٣/٦ |
| «لا تمنوا لقاء العدو...» | أبو هريرة، عبد الله بن عمرو | ٤٩٩/١٨، ٥٠٣ |
| «لا تناجشوا» | أبو هريرة | ٢٦٨/١١، ٢٧٢، ٢٧٨ |
| «لا تنبذوا الرطب والزهو جميعا...» | أبو قتادة | ٤٥٢/١٧ |
| «لا تنتبذوا التمر والزبيب جميعا...» | امرأة | ٤٥٤/١٧ |
| «لا تنتبذوا فى الدباء والمزفت» | أبو هريرة | ٤٥٩/١٧ |
| «لا تنتبذوا فى الدباء ولا المزفت...» | عائشة، أنس | ٤٣٩/١٧، ٤٥٨ |
| «لا تنتفوا الشيب فإنه ما من مسلم يشيب..» | عبد الله بن عمرو | ١٧٣/١٥ |
| «لا تنتقب المرأة المحرمة ولا تلبس القفازين» | نافع عن عبد الله | ٤٣٩/٩ |
| «لا تنجسوا موتاكم فإن المسلم ليس بنجس حيًا ولا ميتًا» | عبد الله بن عباس | ٣٩٩/٢، ٢٣٣/٧ |

| | | |
|---|---|---|
| «لا تنزع الرحمة إلا من شقى» | أبو هريرة | ٥٧٥/١٦ |
| «لا تنزعوا الشيب...» | عبد الله بن عمرو | ١٧٤/١٥ |
| «لا تنسنا يا أخى من دعائك» | عمر بن الخطاب | ٥٢٦/١٠ |
| «لا تنقشوا عليه» | أنس بن مالك | ٣٨٠/٢٠ |
| «لا تنقشوا فى خواتيمكم عربيًا» | أنس بن مالك | ٣٧٥/٢٠ |
| «لا تنقطع الهجرة حتى تنقطع التوبة...» | معاوية | ٥٨/١٨ |
| «لا تنكح الأيم حتى تستأمر...» | أبو هريرة | ١٣٢/١٤ |
| «لا تنكح الثيب حتى تستأمر...» | أبو هريرة | ١٢٣/١٤ ، ١٣١ |
| «لا تنكح المرأة إلا بإذن وليها...» | عائشة | ١٠٨/١٤ |
| «لا تنكح المرأة بغير إذن وليها...» | عائشة | ٨٢/١٤ ، ١٣٨ |
| «لا تنكح المرأة على عمتها...» | أبو هريرة، جابر بن عبدالله | ٢٧٢/١٤، ٤٧٣ |
| «لا تنكح المرأة المرأة» | أبو هريرة | ٩٨/١٤ |
| «لا تنكح المرأة وخالتها...» | أبو هريرة | ٢٧٠/١٤ |
| «لا تنكحوا النساء إلا الأكفاء...» | جابر بن عبد الله | ١٦٤/١٤ |
| «لا تنكحوا النساء لحسنهن» | عبد الله بن عمرو | ٧/١٤ |
| «لا تنكحوا اليتامى حتى تستأمروهن...» | نافع | ١٢٨/١٤ |
| «لا تنهكي؛ فإن ذلك أحظى للمرأة...» | أم عطية | ٥٠٧/١٧ |
| «لا تواصلوا فأيكم أراد أن يواصل» | أبو سعيد | ٦٨/٩ |
| «لا توتروا بثلاث تشبهوا بالمغرب...» | أبو هريرة | ٤٣٥/٥ |
| «لا توتروا بثلاث تشبهوه بصلاة المغرب...» | أبو هريرة | ٤٣٤/٥ |
| «لا تؤذن حتى ترى الفجر» | شداد مولى عياض | ٨٣/٣ |
| «لا تؤذوا مسلمًا بشتم كافر» | سعيد بن زيد | ٥١٣/٧ |
| «لا تؤذينى فى عائشة» | - | ٣٥٦/١٣ |
| «لا توصل صلاة بصلاة» | معاوية | ١٠٤/٤، ١٠٥ |
| «لا توطأ حامل حتى تضع....» | أبو سعيد الخدرى | ٢١٧/١١، ٦٠٢/١٥، ٤٠٢/١٨ |
| «لا توله والدة عن ولدها» | أبو بكر الصديق | ٩٤/١٦ |
| «لا الثلث والثلث كثير...» | سعد بن أبى وقاص | ٢٣/١٣ |

| | | |
|---|---|---|
| «لا جلب ولا جنب...» | عبد الله بن عمرو، عمران بن حصين | ٣٤/٢٠، ٩٨/٨ |
| «لا جنب ولا جلب ولا شغار فى الإسلام» | عمران بن حصين | ٣٤/٢٠ |
| «لا حاجة لى فيه» | عائشة، ذو الجوشن | ٣٠٦/١٥، ٣٥٥/١٨ |
| «لا حبس بعد سورة النساء» | ابن عباس | ٢٧٠/١٢ |
| «لا حبس عن فرائض الله» | ابن عباس | ٢٧١/١٢ |
| «لا حتى تضع جنبك» | حذيفة بن اليمان | ٣٦٤/١ |
| «لا حتى تمضى أربعة أشهر وعشر» | أم سلمة | ٥٦٨/١٥ |
| «لا حتى يختتن» | أبو برزة | ٥٠٩/١٧ |
| «لا حتى يذوق عسيلتك وتذوقى عسيلته» | عائشة | ٣٦٥/١٥، ٣٦٦ |
| «لا حتى يذوق عسيلتها كما ذاق الأول» | عائشة | ٢٣٠/١٥، ٢٤١، ٣٦٨ |
| «لا حتى يميز بينه وبينها» | سعد بن أبى وقاص | ٩٥/١١ |
| «لا حرج» | عبد الله بن عباس، جابر بن عبد الله | ١٥٥/١٠، ١٥٦، ١٥٨، ١٧٩ |
| «لا حرج عليك أن تطعمهم بالمعروف» | عائشة | ٥٥٢/١٣ |
| «لا حرج لا حرج» | أسامة بن شريك | ١٦٧/١٠ |
| «لا حرج لا حرج» | عبد الله بن عباس | ١٥٧/١٠ |
| «لا حسد إلا فى اثنتين...» | أبو هريرة | ٣٦٢/٨ |
| «لا حسد إلا فى اثنتين...» | عبد الله بن مسعود | ٢٤٤/٢٠ |
| «لا حسد إلا فى اثنتين...» | عبد الله بن عمر | ٣٦٢/٨ |
| «لا حظ فيها لغنى....» | - | ٢٩٧/١٣ |
| «لا حلف فى الإسلام» | عاصم | ٦٠٠/١٢ |
| «لا حلف فى الإسلام وأيما حلف...» | جبير بن مطعم | ٦٠١/١٢ |
| «لا حمى إلا فى ثلاث؛ ثلة البئر ومربط الفرس وحلقة القوم» | بلال العبسى | ٢٣٠/١٢، ٢٣١، ٢٤٩ |
| «لا حمى إلا لله ورسوله» | - | ٢١٨/١٢ |
| «لا حمى إلا لله ولرسوله» | الصعب بن جثامة | ٢١٤/١٢، ٢١٥، ١٨/ ٢٦٢ |
| «لا حمى إلا لله ولرسوله» | عبد الله بن عباس | ٥٣١/١٣ |

| | | |
|---|---|---|
| «لا خير فى الإمارة لرجل مؤمن» | زياد بن الحارث | ٢٧٣/٢٠ |
| «لا خير فى جسده ولا فى ثمنه» | ابن عباس | ٤٣٤/١٨ |
| «لا رضاع إلا ما شد العظم...» | ابن لعبد الله بن مسعود | ٣٢/١٦ |
| «لا رضاع بعد فصال ولا يتم بعد احتلام...» | جابر | ٢٠١/١٥ |
| «لا رقية إلا من عين أو حمة» | عمران بن حصين | ٥٣٩/١٩ |
| «لا زكاة فى مال حتى يحول عليه الحول» | عائشة | ٤٩/٨ |
| «لا سبق إلا فى حافر أو خف» | أبو هريرة | ١٨/٢٠ |
| «لا سبق إلا فى خف أو حافر أو نصل» | أبو هريرة | ١٨ ١٧/٢٠ |
| «لا سبق إلا فى خف أو نصل أو حافر» | أبو هريرة | ١٧/٢٠ |
| «لا سبق إلا فى نصل أو حافر أو خف» | أبو هريرة | ١٨ ١٧/٢٠ |
| «لا سمر بعد الصلاة إلا لمصل أو مسافر» | عبد الله بن مسعود | ٢٦٣/٣ ، ٢٦٤ |
| «لا سهو فى وثبة الصلاة إلا قيام عن جلوس...» | عبد الله بن عمر | ٥٤٤/٤ |
| «لا شاركت القوم إذا...» | أبو ذر | ٨٠/١٧ |
| «لا شغار فى الإسلام» | أنس | ٣٧٣/١٤ |
| «لا شفعة إلا فى دار أو عقار» | أبو هريرة | ٨٨/١٢ |
| «لا شفعة لصبى ولا لغائب» | ابن عمر | ٨٥/١٢ |
| «لا شفعة لغائب ولا صغير...» | ابن عمر | ٨٤/١٢ |
| «لا شفعة للنصرانى» | أنس | ٨٦/١٢ |
| «لا صاعى تمر بصاع...» | أبو سعيد | ٩١/١١ |
| «لا صام ولا أفطر» | أبو قتادة | ٧٩/٩، ١٢٣ |
| «لا صداق دون عشرة دراهم» | جابر بن عبد الله | ٥٠٣/١٤ |
| «لا صدقة على الرجل فى فرسه وفى عبده...» | أبو هريرة | ٢٧١/٨ |
| «لا صدقة على المسلم فى عبده ولا فرسه» | أبو هريرة | ١٢٣/٨ |
| «لا صدقة فى حب ولا تمر دون خمسة أوسق» | أبو سعيد الخدرى | ١٦٠/٨ |
| «لا صدقة فى الرقة حتى تبلغ مائتى درهم » | جابر بن عبد الله | ١٨٥/٨ |
| «لا صدقة فى الزرع ولا فى الكرم....» | جابر بن عبد الله وأبو سعيد الخدرى | ١٦١/٨ |
| «لا صدقة فى الكسعة والجبهة والنخة» | عبد الرحمن بن سمرة | ١٢٧/٨ |
| «لا صدقة ولا جهاد....» | ابن الخصاصية | ٦٩/١٨ |

| | | |
|---|---|---|
| «لا صرورة فى الإسلام» | عكرمة | ٢٣١/١٠ |
| «لا صرورة فى الإسلام» | ابن عباس | ٢٣٠/١٠ |
| «لا صلاة إلا بتشهد» | عبد الله بن مسعود | ٦١٦/٤ |
| «لا صلاة إلا بقراءة» | أبو هريرة | ١١٠/٤ |
| «لا صلاة إلا بقراءة فاتحة الكتاب» | أبو هريرة | ٤٤٩/٣، ٦١٠/٤ |
| «لا صلاة إلا بقرآن بفاتحة الكتاب فما زاد» | أبو هريرة | ٣٩٢/٣ |
| «لا صلاة بحضرة الطعام ولا وهو يدافعه الأخبثان» | عائشة | ٥٥٥/٥ |
| «لا صلاة بعد الصبح حتى تشرق الشمس...» | ابن عباس | ١٩٣/٥ |
| «لا صلاة بعد طلوع الفجر إلا ركعتى الفجر» | عبد الله بن عمرو بن العاص | ٢٣٦/٥، ٢٣٧ |
| «لا صلاة بعد العصر» | جندب (أبو ذر) | ٣٦٦/١ |
| «لا صلاة بعد العصر إلا بمكة» | أبو ذر | ٢٢٣/٥ |
| «لا صلاة بعد العصر حتى تغرب الشمس» | جندب (أبو ذر) | ٢٢٢/٥، ٢٢٣ |
| «لا صلاة بعد الفجر إلا ركعتين» | ابن عمر | ٢٣٥/٥ |
| «لا صلاة بعد الفجر حتى تطلع الشمس...» | أبو هريرة | ٢٢٤/٥ |
| «لا صلاة بعد النداء إلا سجدتين» | سعيد بن المسيب | ٢٣٧/٥ |
| «لا صلاة بغير طهور ولا تقبل صدقة من غلول» | عبد الله بن عمر | ٢٨٦/٤ |
| «لا صلاة لجار المسجد إلا فى المسجد» | أبو هريرة | ٥٠٦/٥ |
| «لا صلاة لمن لا وضوء له...» | أبو سعيد الخدرى | ١٣٢/١ |
| «لا صلاة لمن لا وضوء له...» | أبو هريرة | ١٢٨/١، ١٣٤ |
| «لا صلاة لمن لا وضوء له..» | سعيد بن زيد | ١٣٣/١ |
| «لا صلاة لمن لا وضوء له...» | سهل الساعدى | ٦١٩/٤ |
| «لا صلاة لمن لا يمس أنفه الأرض» | عبد الله بن عباس | ٥٦٢/٣ |
| «لا صلاة لمن لم يقرأ بأم القرآن» | عبادة بن الصامت | ٤٥٤/٣، ٣٢/٤، ٦٠٨، ٦٠٩ |
| «لا صلاة لمن لم يقرأ بفاتحة الكتاب» | عبادة بن الصامت | ٣٩٣/٣، ٣٩٤، ٣٢/٤ |
| «لا صلاة مكتوبة فى يوم مرتين» | عبد الله بن عمر | ٤٣٢/٤ |
| «لا ضرر ولا ضرار» | أبو سعيد الخدرى | ٥٤٢/١١ |

| | | |
|---|---|---|
| «لا ضرر ولا ضرار» | يحيى المازنى | ١٢/٢٥٠، ٢٠/٣٩٥ |
| «لا ضمان على مؤتمن» | عبد الله بن عمرو | ١٣/٩٣ |
| «لا ضير أو لا ضرر» | عمران بن حصين | ٢/١٧٠، ٣/١٣٦، ١٣٧ |
| «لا طلاق إلا بعد نكاح...» | عبد الله بن عمرو | ١٥/١٩٧ |
| «لا طلاق إلا بعد نكاح...» | على | ١٦/٣٣ |
| «لا طلاق إلا بعد نكاح...» | معاذ بن جبل | ١٥/٢٠٢ |
| «لا طلاق إلا من بعد نكاح» | على بن أبى طالب | ١٥/٢٠٢ |
| «لا طلاق فيما لا يملك...» | عبد الله بن عمرو | ١٥/١٩٦ |
| «لا طلاق قبل ملك...» | طاوس | ١٦/٢٨٢ |
| «لا طلاق قبل نكاح» | عبد الله بن عمرو بن العاص | ١٥/١٩٦ |
| «لا طلاق قبل نكاح ولا عتق قبل ملك...» | جابر | ١٥/١٩٩، ٢٠١ |
| «لا طلاق لما لا تملك ولا عتق لما لا تملك» | جابر بن عبد الله | ١٥/٢٠٠ |
| «لا طلاق لمن لم يملك ولا عتاق لمن لم يملك» | جابر بن عبد الله | ١٥/١٩٩ |
| «لا طلاق لمن لم ينكح ولا عتاق لمن لم يملك» | جابر بن عبد الله | ١٥/٢٠٠ |
| «لا طلاق ولا عتاق فى إغلاق» | عائشة | ١٥/٣١٥، ٢٠/١٦٠ |
| «لا طيرة وخيرها الفأل» | أبو هريرة | ١٦/٤٩٨ |
| «لا عتق ، الرقبة أن تنفرد بها...» | البراء | ٢١/٣٠٧ |
| «لا عتيرة» | رجل من بنى ضمرة عن أبيه | ١٩/٤٢١ |
| «لا عدوى» | أبو هريرة | ١٤/١٧١، ٤٢٤، ٤٢٦-٤٣٠ |
| «لا عدوى ولا طيرة...» | أنس بن مالك | ١٦/٤٩٩ |
| «لا عدوى ولا طيرة» | عبد الله بن عمر | ١٤/٤٢٤ |
| «لا عقر فى الإسلام» | أنس | ٧/٤٤٦، ١٩/٤٢٣ |
| «لا عليكم ألا تعزلوا....» | أبو سعيد الخدرى، أبوصرمة | ٢١/٥٣٣ |

| | | |
|---|---|---|
| «لا عليكم ألا تفعلوا...» | أبو سعيد | ١٤/٤٦٦، ١٨/١٨٤، ٢١٦، ٤٠٥ |
| «لا عليكما صومًا يومًا آخر مكانه» | عائشة | ٩/٦٤ |
| «لا عهدة فوق أربع» | عقبة بن عامر | ١١/١٩٨ |
| «لا غِرار فى صلاة ولا تسليم» | أبو هريرة | ٤/٣٠١ |
| «لا غسل عليه» | عائشة | ٢/٢٢ |
| «لا فأدوها عن الصغير والكبير...» | أبو سعيد الخدرى | ٨/٣٠٥ |
| «لا فإن كنت لابد سائلًا فاسأل الصالحين» | الفراسى | ٨/٣٩١ |
| «لا فرعة ولا عتيرة» | أبو هريرة، رجل من بنى ضمرة عن أبيه | ١٩/٤٢٠، ٤٢١ |
| «لا قدست أمة - أو:- كيف قدست أمة- لا يؤخذ لضعيفها من شديدها...» | بريدة | ٢٠/٢٦٥، ٢٦٦ |
| «لا قطع فى ثمر معلق...» | عمرو بن شعيب | ١٧/٣١٥ |
| «لا قطع فى ثمر معلق ولا فى حريسة جبل...» | ابن أبى حسين المكى | ١٧/٣٢٥ |
| «لا قطع فى ثمر ولا كثر» | رافع بن خديج | ١٧/٣١٤، ٣١٥، ٣٢٤، ٣٢٥ |
| «لا قود إلا بالسيف» | أبو هريرة | ١٦/٢٧٥ |
| «لا قود إلا بالسيف» | الحسن | ١٦/٢٧٤ |
| «لا قود إلا بحديدة» | النعمان بن بشير | ١٦/٢٧٤ |
| «لا قود فى المأمومة ولا الجائفة...» | العباس بن عبدالمطلب | ١٦/٢٨١ |
| «لا كانت تبين منك فتكون معصية» | عبد الله بن عمر | ١٥/٢٤٣ |
| «لا كفالة فى حد» | عبد الله بن عمرو | ١١/٥٦٦ |
| «لا كلوا وأطعموا وادخروا...» | سلمة بن الأكوع | ١٩/٣٥٦ |
| «لا لعله أن يكون يصلى» | أبو سعيد الخدرى | ١٧/١٠٠ |
| «لا ما أقاموا فيكم الصلاة...» | عوف بن مالك | ١٦/٥٦٤ |
| «لا ما دعوتم الله لهم وأثنيتم عليهم» | أنس | ١٢/٣٤١ |
| «لا ما صلوا» | أم سلمة | ١٦/٥٦٣ |
| «لا مال لك إن كنت صدقت فهو بما استحللت...» | ابن عمر | ١٥/٤٥٨ |

| | | |
|---|---|---|
| «لا مال لك؛ إن كنت صدقت عليها...» | ابن عمر | ٤٥٠/١٥ |
| «لا مالك إلا الله» | أبو هريرة | ٤٠٠/١٩ |
| «لا مساعاة فى الإسلام....» | ابن عباس | ٥٩٣/١٢ |
| «لا منّى مناخ من سبق» | عائشة | ١٤٦/١٠ |
| «لا نذر فى غضب...» | عمران بن حصين | ١٨٨/٢٠، ١٨٩ |
| «لا نذر فى معصية...» | عائشة | ١٨٥/٢٠- ١٨٧ |
| «لا نذر فى معصية...» | عمران بن حصين | ١٤٦/٢٠، ١٥٨، ١٨٤، ١٨٩-١٩١ |
| «لا نذر ولا يمين فيما لا يملك ابن آدم...» | عبد الله بن عمرو | ٧٧/٢٠ |
| «لا نفقة لك» | عبيد الله بن عبد الله بن عتبة | ٦٦/١٦، ٦٧ |
| «لا نفقة لك فانتقلى واذهبى إلى ابن أم مكتوم» | أبو سلمة | ٦٣/١٦ |
| «لا نفقة لك ولا سكنى» | فاطمة بنت قيس | ٦٤/١٦ |
| «لا نفقة لها» | جابر | ٥٤٠/١٥ |
| «لا نقل إلا بعد الخمس» | أبو الجويرية | ١٧١/١٣ |
| «لا نكاح إلا بإذن ولى مرشد...» | ابن عباس | ١٣٨/١٤ |
| «لا نكاح إلا بشاهدى عدل وولى مرشد» | ابن عباس | ١٤٤/١٤ |
| «لا نكاح إلا بولى...» | عائشة | ٨٦/١٤، ٨٧ |
| «لا نكاح إلا بولى» | - | ٢٥/٩، ٨٤/١٤، ٨٥ |
| «لا نكاح إلا بولى» | ابن عباس | ٨٧/١٤ ، ٩٧ |
| «لا نكاح إلا بولى» | أبو بردة | ٩٣/١٤ |
| «لا نكاح إلا بولى» | أبو موسى | ٨٨/١٤، ٨٩، ٩٠، ٩٢، ٩٤- ٩٦ |
| «لا نكاح إلا بولى وخاطب...» | أبو هريرة | ١٤٣/١٤، ١٩٧ |
| «لا نكاح إلا بولى وشاهدى عدل...» | ابن عباس | ١٣٩/١٤ |
| «لا نكاح إلا بولى وشاهدى عدل» | الحسن بن أبى الحسن | ١٤١/١٤ |
| «لا نكاح إلا بولى وشاهدى عدل» | عائشة | ١٤٠/١٤، ١٤١، ٢٠/ ٤٤٠ |
| «لا نكاح له فانكحى من شئت» | نافع بن جبير بن مطعم | ١٢٥/١٤ |

| | | |
|---|---|---|
| «لا نورث» | عائشة | ١٢٢/١٣ |
| «لا نورث ما تركنا صدقة...» | أبو بكر الصديق | ٤٢٤/٢٠ |
| «لا نورث ما تركنا صدقة» | أبو هريرة | ١٣٠/١٣ |
| «لا نورث ما تركنا صدقة» | عائشة | ١٢٤/١٣- ١٢٦، ١٢٩، ٥٤٧ |
| «لا نورث ما تركنا صدقة» | مالك بن أوس | ١١٧/١٣- ١٢١ |
| «لا نورث وإن ما تركنا صدقة» | مالك بن أوس بن الحدثان | ١١٦/١٣ |
| «لا هام ولا عدوى ولا طيرة...» | سعد بن أبي وقاص | ٥٠٠/١٦ |
| «لا هجرة ولكن جهاد ونية...» | عبد الله بن عباس | ٣٣٢/١٠، ٥٣/١٨ |
| «لا هو حرام» | جابر بن عبد الله | ٣٥٨/١١، ٥٦٢/١٩ |
| «لا هي حرام» | عبد الله بن عمرو | ٥٦٢/١٩ |
| «لا والله لا أحملكم وما عندى ما أحملكم عليه» | أبو موسى | ٦٩/٢٠ |
| «لا والله لا أفعل» | أبو موسى | ١٣٠/٢٠ |
| «لا والله لا تذرون درهمًا» | أنس بن مالك | ٤١٠/١٢، ١٩٥/١٣ |
| «لا وأن تعتمر خير لك» | جابر | ٢٧٤/٩، ٢٧٥ |
| «لا وتران في ليلة» | طلق بن على | ٤٤٩/٥ |
| «لا وجدتَ إنما بنيت المساجد لما بنيت له» | بُرَيْدة | ١٧٩/٥ |
| «لا وجدت إنما بنيت هذه المساجد لما بنيت له» | بريدة | ٣٨٢/١٢، ٢٩٦/٢٠ |
| «لا وصية لوارث» | - | ٧/١٣ |
| «لا وصية لوارث» | مجاهد | ٦/١٣ |
| «لا وصية لوارث إلا أن يجيز الورثة» | عمرو بن خارجة | ٨/١٣ |
| «لا وصية لوارث ولا إقرار بدين» | جعفر بن محمد عن أبيه | ١٤/١٢ |
| «لا وضوء إلا من صوت...» | أبو هريرة | ٣٥٤/١، ١٧٦/٢ |
| «لا وضوء لمن لم يذكر اسم الله عليه» | أبو هريرة | ١٢٨/١ |
| «لا وفاء لنذر في معصية الله...» | عمران بن حصين | ٢٣٢/٢٠ |

| | | |
|---|---|---|
| «لا ولا الدرهم بالدرهمين » | أبو سعيد | ٩١/١١ |
| «لا ولا السهم تستخرجه من جنبك...» | رجل من بلقين | ٢٠٣/١٣، ٢٤٦، ١٨/ ٢٠٩ |
| «لا والذى نفس أبى القاسم بيده» | أبو سعيد الخدرى | ٥٣/٢٠ |
| «لا ولكن اجمعوها فإذا أخذوها...» | بشير بن الخصاصية | ٨١/٨ |
| «لا ولكن احلقى شعره وتصدقى بوزنه من الورق...» | أبو رافع | ٣٩٣/١٩ |
| «لا ولكن اذهبا فاستهما وتواخيا...» | أم سلمة | ٥٢٩/١١ |
| «لا ولكن اسمه المنذر» | سهل بن سعد | ٤٠١/١٩ |
| «لا ولكن أفضل الجهاد حج مبرور» | عائشة | ٧٣/١٨ |
| «لا ولكن قلم أظفارك وقص شاربك...» | عبد الله بن عمرو بن العاص | ٢٦١/١٩ |
| «لا ولكن لا يقربنك» | كعب بن مالك | ١٢٠/١٨ |
| «لا ولكن هل معك من القرآن شيء؟» | سهل بن سعد | ٢١٠/١٤ |
| «لا ولكنه لم يكن بأرض قومى...» | ابن عباس، خالد بن الوليد | ٤٥٣/١٩ |
| «لا ولكنى أعافه» | ابن عباس | ٤٥٥/١٩ |
| «لا ولكنى كرهته لريحه» | جابر بن سمرة | ٥٦٥/٥ |
| «لا ولئن كنت سائلًا لابد فسل الصالحين» | الفراسى | ٣٩١/٨ |
| «لا ومقلب القلوب» | ابن عمر | ٥٥/٢٠ |
| «لا يا يهودى ولكنى أبيعك تمرًا معلومًا» | عبد الله بن سلام | ٣٩٥/١١ |
| «لا يأتى رجل مولاه فيسأله من فضل....» | معاوية بن حيدة | ٣٢٧/٨ |
| «لا يأتى عليك إلا قليل حتى تخرج المرأة من الحيرة إلى مكة بغير خفير...» | عدى بن حاتم | ٤٣٣/١٠ |
| «لا يأتينا إلا أنصارى» | أبو هريرة | ٣٨١/١٨ |
| «لا يأخذ أحدكم متاع أخيه...» | يزيد بن سعيد | ٣٧/١٢ |
| «لا يأخذ أحدكم متاع صاحبه...» | يزيد بن سعيد | ٦٢/١٢ |
| «لا يأخذ من المختلعة أكثر مما أعطاها» | عطاء | ١٨٤/١٥ |
| «لا يأوى الضالة إلا ضال» | المنذر بن جرير عن أبيه | ٣٦٢/١٢ |

| | | |
|---|---|---|
| «لا يباع رطب بيابس» | عبد الله بن أبى سلمة | ١٠٢/١١ |
| «لا يباع فضل الماء ليباع به الكلأ» | أبو هريرة | ٣٦٧/١١ |
| «لا يبال فى الماء الدائم» | أبو هريرة | ٢١٠/٢، ٢٢٣ |
| «لا يبال فى الماء الراكد...» | أبو هريرة | ٢٩٧/١ |
| «لا يبع بعضكم على بعض» | ابن عمر | ٢٧١/١١ |
| «لا يبع حاضر لباد» | ابن عباس | ٢٧٩/١١ |
| «لا يبقى على ظهر الأرض بيت مدر ولا وبر...» | المقداد بن الأسود | ٥٩٧/١٨ |
| «لا يبقى للولد من بر الوالد إلا أربع» | أبو أسيد الساعدى | ٤٦٣/٧ |
| «لا يبقين فى رقبة بعير قلادة من وتر» | عبد الله بن أبى بكر | ٥٣٤/١٠ |
| «لا يبلغ العبد أن يكون من المتقين حتى يدع ما لا بأس به....» | عطية السعدى | ٢٣٤/١١ |
| «لا يبلغنى أحد عن أحد من أصحابى...» | عبد الله بن مسعود | ٥٩٤/١٦ |
| «لا يبولن أحدكم فى الجحر...» | عبد الله بن سرجس | ٣٠٢/١ |
| «لا يبولن أحدكم فى الماء الدائم...» | أبو هريرة | ٢٢١/٢-٢٢٣، ٢٦٧ |
| «لا يبولن أحدكم فى مُستحمِّه...» | عبد الله بن مغفل | ٢٩٩/١ |
| «لا يبيع بعضكم على بيع بعض» | أبو هريرة | ٢٧٣/١١ |
| «لا يبيع حاضر لباد» | ابن عباس ، ابن عمر | ٢٧٩/١١، ٢٨١ |
| «لا يبيع حاضر لباد دعوا الناس يرزق بعضهم من بعض» | جابر | ٢٨١/١١ |
| «لا يبيع حاضر لباد وإن كان أخاه أو أباه» | أنس | ٢٨٠/١١ |
| «لا يبيعن أحدكم على بيع أخيه....» | ابن عمر | ٢٧٢/١١، ٣١٧/١٤ |
| «لا يتحدث أهل مكة أنك لعبت...» | - | ١٨٩/١٣ |
| «لا يتحرى أحدكم فيصلى عند طلوع الشمس...» | ابن عمر | ١٩٨/٥ |
| «لا يتخلجن فى نفسك شىء...» | هلب (والد قبيصة) | ٦١/١٥ |
| «لا يتصدق أحد بتمرة من كسب طيب...» | أبو هريرة | ٣٦٩/٨ |
| «لا يتفلن أحدكم بين يديه ولا عن يمينه ولكن عن يساره...» | أنس بن مالك | ٤٠١/٤ |

| | | |
|---|---|---|
| «لا يتقدمن أحدكم رمضان بصوم يوم...» | أبو هريرة | ٤٢٥/٨ |
| «لا يتلقى الركبان للبيع...» | أبو هريرة | ٢٧٩/١١ |
| «لا يتم بعد احتلام ولا صمات يوم إلى الليل» | على بن أبى طالب | ٥٠٠/١١ |
| «لا يتم ركوعها ولا سجودها» | النعمان بن مرة | ١٤٤/١٧ |
| «لا يتمنى أحدكم الموت ولا يدعو به من قبل أن يأتيه» | أبو هريرة | ١٧٣/٧ |
| «لا يتمنين أحدكم الموت من ضر أصابه» | أنس بن مالك | ١٧٣/٧ |
| «لا يتنخم أحدكم فى القبلة ولا عن يمينه...» | أبو هريرة وأبو سعيد الخدرى | ٤٠٣/٤ |
| «لا يتوارث أهل ملتين شتى...» | أبو هريرة | ٤٨٨/٢٠ |
| «لا يتوارث أهل ملتين شتى» | عبد الله بن عمرو | ٤٥١/١٢ |
| «لا يتوارث أهل ملتين المرأة ترث من دية زوجها» | عبد الله بن عمرو | ٤٦٠/١٢ |
| «لا يجب الوضوء على من نام جالسا» | عبد الله بن عباس | ٣٦٥/١ |
| «لا يجتمع دينان فى جزيرة العرب» | ابن شهاب | ٨٦/١٩ |
| «لا يجتمع على المسلم خراج وعشر» | عبد الله بن مسعود | ١٧٤/٨ |
| «لا يجتمع غبار فى سبيل الله ودخان جهنم» | أبو هريرة | ٥٢٨/١٨ |
| «لا يجتمع فى جزيرة العرب دينان..» | أبو هريرة | ١٠٧/١٢ |
| «لا يجتمع قبلتان فى جزيرة العرب» | ابن عباس | ٨٧/١٩ |
| «لا يجتمع كافر وقاتله فى النار أبدا» | أبو هريرة | ٥٤١/١٨ |
| «لا يجتمعان أبدا» | سهل بن سعد | ٤٤٥/١٥، ٤٧٥ |
| «لا يجتمعان فى النار اجتماعا يضر أحدهما» | أبو هريرة | ٥٤٠/١٨ |
| «لا يجد أحدكم حلاوة الإيمان حتى يحب المرء...» | أنس بن مالك | ١٧١/٢١ |
| «لا يجزى ولد والده إلا أن يجده مملوكًا فيشتريه فيعتقه» | أبو هريرة | ٣٥٩/٢١ |
| «لا يجلد أحد فوق عشرة أسواط إلا فى حد...» | أبو بردة الأنصارى | ٥١٩/١٧ |
| «لا يجلد فوق عشر جلدات إلا فى حد...» | أبو بردة | ٥٢٠/١٧، ٤٢١/٢٠ |
| «لا يجمع بين متفرق ولا يفرق بين مجتمع..» | سويد بن غفلة | ٨٤/٨ |
| «لا يجمع بين المرأة وعمتها...» | أبو هريرة | ٢٧٠/١٤ ، ٢٧١ |

| | | |
|---|---|---|
| «لا يجوز شرطان فى بيع واحد...» | عبد الله بن عمرو | ٤٦٣/٢١ |
| «لا يجوز لامرأة أمر فى مالها إذا ملك زوجها عصمتها» | عبد الله بن عمرو | ٥١١/١١ |
| «لا يجوز لامرأة عطية إلا بإذن زوجها» | عبد الله بن عمرو | ٥١٢/١١ |
| «لا يجوز للمرأة عطية فى مالها إذا ملك زوجها عصمتها» | عبد الله بن عمرو | ٥١١/١١ |
| «لا يجوز نكاح إلا بولى وشاهدى عدل» | عمران بن حصين | ١٤٢/١٤ |
| «لا يحب الله العقوق» | عبد الله بن عمرو | ٣٨٠/١٩ |
| «لا يحتكر إلا خاطئ» | معمر بن أبى معمر | ٤١٤/١١ |
| «لا يحج بعد العام مشرك» | أبو هريرة | ٥٧٤/٩ |
| «لا يحرم الحرام الحلال» | ابن عمر، عائشة | ٢٨٢/١٤ |
| «لا يحرم من الرضاع إلا ما كان فى الحولين» | ابن عباس | ٣٨/١٦ |
| «لا يحصن أهل الشرك بالله شيئا» | ابن عمر | ١٦٦/١٧ |
| «لا يحقرن أحدكم نفسه أن يرى أمرًا لله عليه فيه مقال...» | أبو سعيد الخدرى | ٢٥٣/٢٠، ٢٥٤ |
| «لا يحكمن حكم بين اثنين وهو غضبان» | أبو بكرة | ٣٠٣/٢٠ |
| «لا يحل بيع المغنيات ولا شراؤهن...» | أبو أمامة | ٣٦٣/١١ |
| «لا يحل ثمن الكلب....» | أبو هريرة | ٣٣٧/١١ |
| «لا يحل دم امرئ مسلم إلا بإحدى ثلاث...» | ابن مسعود | ١٦٢/١٦، ١٥٦/١٧ |
| «لا يحل دم امرئ مسلم إلا بإحدى ثلاث...» | عثمان بن عفان | ١٤١/١٦، ٩٣/١٧ |
| «لا يحل دم امرئ مسلم إلا بثلاثة...» | - | ٧١/١٧ |
| «لا يحل دم امرئ يشهد أن لا إله إلا الله...» | عبد الله بن مسعود | ٣٧٥/١٧ |
| «لا يحل دم رجل مسلم» | عبد الله بن مسعود | ٩٤/١٧ |
| «لا يحل دم رجل يشهد أن لا إله إلا الله...» | ابن مسعود | ١٤١/١٦، ١٢١/١٧ |
| «لا يحل سلف وبيع...» | عبد الله بن عمرو | ١٧/١١ |
| «لا يحل قتل امرئ مسلم» | عائشة | ٣٧٢/١٧ |
| «لا يحل لأحد أن يحل صرار ناقة إلا بإذن...» | أبو سعيد الخدرى | ٥٧٧/١٩ |
| «لا يحل لأحد يهب لأحد هبة ثم...» | طاوس | ٣٢٩/١٢ |
| «لا يحل لامرأة تؤمن بالله واليوم الآخر...» | معاذ بن جبل | ١١٠/١٥ |

| | | |
|---|---|---|
| «لا يحل لامرأة تؤمن بالله واليوم الآخر أن تحد...» | أم حبيبة | ٥٦٢/١٥، ٥٦٤ |
| «لا يحل لامرأة تؤمن بالله واليوم الآخر أن تحد...» | أم عطية | ٥٦٩/١٥، ٥٧٠، ٥٧١ |
| «لا يحل لامرأة تؤمن بالله واليوم الآخر أن تحد...» | حفصة أو عائشة أو كلتاهما | ٥٦٥/١٥ |
| «لا يحل لامرأة تؤمن بالله واليوم الآخر أن تحد...» | حفصة بنت عمر | ٥٦٦/١٥ |
| «لا يحل لامرأة تؤمن بالله واليوم الآخر أن تحد...» | زينب بنت جحش | ٥٦٣/١٥ |
| «لا يحل لامرأة تؤمن بالله واليوم الآخر أن تسافر مسيرة يوم...» | أبو هريرة | ٤٤٠/١٠ |
| «لا يحل لامرأة تؤمن بالله واليوم الآخر تحد...» | عائشة | ٥٦٧/١٥ |
| «لا يحل لامرأة تؤمن بالله واليوم الآخر تسافر مسيرة يوم...» | أبو هريرة | ١٣٧/٦، ٤٣٨/١٠ |
| «لا يحل لامرأة مسلمة تسافر مسيرة ليلة إلا ومعها رجل ذو حرمة...» | أبو هريرة | ١٣٩/٦، ٤٣٩/١٠ |
| «لا يحل لامرأة مسلمة تؤمن بالله...» | أم حبيبة | ٥٦٥/١٥ |
| «لا يحل لامرئ أن يأخذ عصا أخيه...» | أبو حميد الساعدى | ٦١/١٢، ٥٧٢/١٩ |
| «لا يحل لامرئ من مال أخيه إلا...» | ابن عباس | ٥١/١٢ |
| «لا يحل لامرئ يؤمن بالله واليوم الآخر...» | أبو رويفع | ٤٠٣/١٨ |
| «لا يحل لامرئ يؤمن بالله واليوم الآخر...» | رويفع بن ثابت | ٦٠٣/١٥ |
| «لا يحل لرجل - أو لامرئ- أن يصلى وهو حاقن حتى يتخفف...» | أبو هريرة | ١٠٨/٦ |
| «لا يحل لرجل يعطى عطية أو يهب هبة...» | ابن عباس وابن عمر | ٣٣٠/١٢ |
| «لا يحل لرجل يعطى عطية ثم يرجع فيها..» | ابن عمر وابن عباس | ٣٣٢/١٢ |
| «لا يحل لرجل يؤمن بالله واليوم الآخر...» | عبد الله بن أبى بكر | ٥٢١/٤٧ |
| «لا يحل لمسلم أن يروع مسلمًا» | أصحاب محمد ﷺ | ٢٣٠/٢١ |
| «لا يحل لمسلم أن يهجر أخاه فوق ثلاثة...» | أبو أيوب الأنصارى | ١٦٦/٢٠ |
| «لا يحل لمسلم أن يهجر أخاه فوق ثلاثة أيام» | ابن عمر | ١٤٦/١٥ |
| «لا يحل لمؤمن أن يهجر مؤمنًا فوق ثلاثة ...» | أبو هريرة | ١٦٦/٢٠ |
| «لا يحل لواهب أن يرجع فيما وهب...» | طاوس | ٣٣٢/١٢ |
| «لا يحل مال امرئ مسلم إلا بطيب نفس...» | عم أبي حُرة الرقاشى | ٦٢/١٢ |

| | | |
|---|---|---|
| «لا يحل مال امرئ...» | عم أبي حرة الرقاشي | ٥٤/١٧ |
| «لا يحل مال رجل مسلم...» | رجل بالبحرين | ٥٣/١٧ |
| «لا يحل نكاح إلا بولي وصداق...» | الحسن بن أبي الحسن | ١٤١/١٤ |
| «لا يحلبن أحد ماشية أحد إلا بإذنه...» | ابن عمر | ٥٧١/١٩ |
| «لا يحلبن أحد ماشية غيره إلا بإذنه...» | ابن عمر | ٣٦/١٢ |
| «لا يحلف أحد على يمين آثمة عند منبري...» | جابر بن عبد الله | ٥٢٥/٢٠ |
| «لا يحلف رجل على يمين آثمة عند هذا المنبر...» | جابر بن عبد الله | ٤٣٧/١٥ |
| «لا يخبط شوكها...» | أبو هريرة | ٣٣٥/١٠ |
| «لا يخبط ولا يعضد حمى رسول الله ﷺ» | جابر بن عبد الله | ٣٥٣/١٠ |
| «لا يختلى خلاها ولا يعضد عضاهها...» | ابن عباس | ٣٩٠/١٢ |
| «لا يختلى خلاها» | علي بن أبي طالب | ٣٥٦/١٠ |
| «لا يختلى شوكها ولا يعضد شجرها...» | أبو هريرة | ٣٨٩/١٢ |
| «لا يخرج أحد من المسجد بعد النداء إلا...» | سعيد بن المسيب | ٥٠٤/٥ |
| «لا يخرج الرجلان يضربان...» | أبو سعيد | ٣٠٤/١ |
| «لا يخطب أحدكم على خطبة أخيه» | - | ٢٧٤/١١ |
| «لا يخطب أحدكم على خطبة أخيه» | أبو هريرة ، ابن عمر | ٣١٥/١٤، ٣١٦ |
| «لا يخطب الرجل على خطبة أخيه ولا يسوم...» | أبو هريرة | ٢٧٦/١١ |
| «لا يخلون رجل بامرأة..» | عبد الله بن عباس | ١٤٠/٦، ٤٣٦/١٠، ٣٧/١٤ |
| «لا يدخل الجنة قاطع» | جبير بن مطعم | ٤٣٢/١٣ |
| «لا يدخل الجنة قتات» | حذيفة | ٥٩٢/١٦، ٢٢٢/٢١ |
| «لا يدخل الجنة منان ولا عاق ولا مدمن» | أبو سعيد | ٣٩٢/١٧ |
| «لا يدخل الجنة ولد زنية» | عبد الله بن عمرو | ١٥٠/٢٠ |
| «لا يدخل صاحب مكس الجنة» | عقبة بن عامر | ٤٠١/١٣ |
| «لا يدخلن رجل بعد يومي هذا على مغيبة...» | عبد الله بن عمرو | ٣٨/١٤ |
| «لا يدخلن المدينة» | موسى بن عبد الرحمن | ١٩٣/١٧ |
| «لا يدخلن هؤلاء عليكم» | أم سلمة | ١٩٢/١٧ |
| «لا يذبحن أحد قبل أن يصلي» | البراء بن عازب | ٣٠٢/١٩ |
| «لا يذهب الليل والنهار حتى تعبد اللات...» | عائشة | ٥٩٨/١٨ |
| «لا يرث أهل ملة ملة...» | أبو هريرة | ٤٨٩/٢٠ |

| | | |
|---|---|---|
| «لا يرث الصبى إذا لم يستهل...» | سعيد بن المسيب | ٥٨٥/١٢ |
| «لا يرث قاتل عمد ولا خطأ شيئا من الدية» | سعيد بن المسيب | ٤٥٤/١٢ |
| «لا يرث قاتل من دية من قتل» | سعيد بن المسيب | ٤٥٤/١٢، ٤٧٩/١٦ |
| «لا يرث الكافر المسلم ولا المسلم الكافر» | أسامة بن زيد | ٤٤٨/١٢ |
| «لا يرث المسلم الكافر ولا الكافر المسلم» | - | ٥٧٥/١٢ |
| «لا يرث المسلم الكافر ولا الكافر المسلم» | أسامة بن زيد | ٤٤٨/١٢، ٤٤٩ |
| «لا يرث المسلم الكافر ولا الكافر المسلم ولا يتوارثون...» | عبد الله بن عمرو | ٤٥٢/١٢ |
| «لا يرث المسلم النصرانى إلا أن يكون عبده أو أمته» | جابر بن عبد الله | ٤٥٠/١٢ |
| «لا يرجع الرجل فى هبته إلا الوالد...» | عبد الله بن عمرو | ٣٣١/١٢ |
| «لا يرجع فى هبته إلا الوالد...» | عبد الله بن عمرو | ٣٣٠/١٢ |
| «لا يرحم الله من لا يرحم الناس» | جرير بن عبد الله | ١٤١/١٨ |
| «لا يرد الدعاء بين الأذان والإقامة» | أنس بن مالك | ١٥٦/٣ |
| «لا يركب البحر إلا حاج أو معتمر أو غازى» | ابن عمر | ٣٧٥/١١، ٣٧٦ |
| «لا يركب البحر» | - | ٢٢٨/٩ |
| «لا يركبن رجل بحرًا إلا غازيًا» | ابن عمر | ٢٢٨/٩، ٣٧٥/١١ |
| «لا يزال أحدكم فى صلاة ما دامت الصلاة» | أبو هريرة | ٥٢٩/٥ |
| «لا يزال الله جل ثناؤه مقبلًا على العبد...» | أبو ذر | ٣٦٨/٤ |
| «لا يزال البلاء بالمؤمن والمؤمنة» | أبو هريرة | ١٦٢/٧ |
| «لا يزال الدين ظاهرًا ما عجل الناس الفطر...» | أبو هريرة | ٥٢٧/٨ |
| «لا يزال طائفة من أمتى ظاهرين على الحق...» | ثوبان | ١٤٠/١٩ |
| «لا يزال قوم يتأخرون عن الصف الأول» | عائشة | ٢٩/٦ |
| «لا يزال المرء فى فسحة من دينه...» | ابن عمر | ١٤٩/١٦ |
| «لا يزال المؤمن صالحا ما لم يصب دما» | عبادة بن الصامت | ١٥١/١٦ |
| «لا يزال المؤمن معنقا صالحا ما لم يصب دما..» | عبادة بن الصامت | ١٥٢/١٦ |
| «لا يزال الناس بخير ما عجلوا الفطر» | سهل بن سعد | ٥٢٦/٨ |
| «لا يزال هذا الأمر فى قريش ما بقى من الناس اثنان» | عبد الله بن عمر | ٨٠/٦، ٨١ |

| | | |
|---|---|---|
| «لا يزال هذا الأمر فى قريش ما كان فى الناس...» | ابن عمر | ٥٠٦/١٦ |
| «لا يزال يستجاب للعبد ما لم يدع بإثم أو قطيعة رحم» | أبو هريرة | ٩٤/٧ |
| «لا يزنى الزانى حين يزنى وهو مؤمن...» | أبو هريرة | ١٠/٢١ |
| «لا يزوج النساء إلا الأولياء...» | جابر | ١٦٥/١٤ |
| «لا يسألونى خطة يعظمون فيها حرمات الله...» | مروان بن الحكم والمسور بن مخرمة | ١٢٠/١٩ |
| «لا يساوم الرجل على سوم أخيه...» | أبو هريرة | ١٢٢/١٢ |
| «لا يستام الرجل على سوم أخيه» | أبو هريرة | ٢٧٧/١١ |
| «لا يستنجى أحدكم بدون ثلاثة أحجار» | سلمان | ٣١٤/١، ٣٤١ |
| «لا يسم المسلم على سوم المسلم» | أبو هريرة | ٢٧٥/١١ |
| «لا يسوم أحدكم على سوم أخيه» | - | ٢٧٤/١١ |
| «لا يسومن أحدكم على سوم أخيه...» | أبو هريرة | ٢٧٦/١١ |
| «لا يشرب أحدكم من فى السقاء» | أبو هريرة | ٨١/١٥ |
| «لا يشربن أحدكم قائما...» | أبو هريرة | ٧٠/١٥ |
| «لا يشكر الله من لا يشكر الناس» | أبو هريرة | ٣٤٠/١٢ |
| «لا يشير أحدكم إلى أخيه بالسلاح...» | أبو هريرة | ١٥٦/١٦ |
| «لا يصاد بها صيد ولا ينكأ بها عدو...» | عبد الله بن مغفل | ٢١٢/١٩ |
| «لا يصادفها عبد مسلم وهو يصلى...» | أبو هريرة | ٤٥٦/٦ |
| «لا يصلى أحدكم وهو بحضرة الطعام...» | عائشة | ٥٥٠/٥ |
| «لا يصلى أحدكم وهو يجد شيئا من الخبث» | أبو هريرة | ٥٥٢/٥ |
| «لا يصلى الإمام على نشز مما عليه أصحابه» | سلمان | ٤٦/٦ |
| «لا يصلى الإمام فى الموضع الذى صلى فيه حتى يتحول» | المغيرة بن شعبة | ١٠٢/٤ |
| «لا يصلى الرجل فى الثوب الواحد» | أبو هريرة | ١٩٠/٤ |
| «لا يصلين أحدكم بحضرة الطعام...» | عائشة | ٥٤٩/٥ |
| «لا يصلين أحدكم فى الثوب الواحد ليس على عاتقه منه شىء» | أبو هريرة | ١٨٩/٤ |

| | | |
|---|---|---|
| «لا يصلين أحدكم فى الثوب الواحد ليس على عاتقيه منه شىء» | أبو هريرة | ٢٣٢/٤ |
| «لا يصوم أحدكم يوم الجمعة إلا أن يصوم قبله» | أبو هريرة | ١٢٩/٩ |
| «لا يصومن أحدكم يوم السبت إلا فيما افترض عليه» | الصماء بنت بسر | ١٣١/٩ |
| «لا يضر» | خولة بنت نمار | ٦٤/٥ |
| «لا يضرب فوق عشرة أسواط...» | ابن أبى بردة | ٥٢١/١٧ |
| «لا يعضد شجرها...» | أبو هريرة | ٢٦٧/٧، ٣٣٥/١٠ |
| «لا يعلم ما فى غد إلا الله سبحانه» | عمرة بنت عبد الرحمن | ٩٦/١٥ |
| «لا يغتسل أحدكم فى الماء الدائم...» | أبو هريرة | ٢١٩/٢ |
| «لا يغتسل رجل يوم الجمعة ثم يمس من دهنه...» | سلمان | ٤٣٠/٦ |
| «لا يغتسلن أحدكم إلا وقربه إنسان لا ينظر...» | الزهرى | ١١٣/٢ |
| «لا يغرس مسلم غرسًا فأكل منه...» | أنس | ١٠٤/١٢، ١٨٥ |
| «لا يغرس مسلم غرسًا ولا يزرع زرعًا...» | جابر | ١٨٦/١٢ |
| «لا يغرم السارق إذا أقيم عليه الحد» | عبد الرحمن بن عوف | ٣٥٥/١٧ |
| «لا يغرم صاحب السرقة» | عبد الرحمن بن عوف | ٣٥٥/١٧ |
| «لا يغرنكم من سحوركم أذان بلال» | سمرة بن جندب | ٧٣/٣، ٤٥٧/٨ |
| «لا يغلبنكم الأعراب على اسم صلاة المغرب» | عبد الله المزنى | ٤٥/٣ |
| «لا يغلبنكم الأعراب على اسم صلاتكم» | عبد الله بن عمر | ٤٦/٣ |
| «لا يغلبنكم الأعراب على اسم صلاتكم» | عبد الله بن المغفل | ٤٥/٣، ٤٦ |
| «لا يغلبنكم الأعراب من اسم صلاتكم» | عبد الرحمن بن عوف | ٤٦/٣، ٤٧ |
| «لا يغلق الرهن» | معاوية بن عبد الله | ٤٥٨/١١ |
| «لا يغلق الرهن...» | سعيد بن المسيب | ٤٤٦/١١، ٤٤٨، ٤٥٠، ٤٥٨، ٤٥٩ |
| «لا يغلق الرهن...» | أبو هريرة | ٤٤٨/١١، ٤٤٩ |
| «لا يفترقن اثنان إلا عن تراض» | أبو هريرة | ٣١/١١ |
| «لا يفتن يهودى عن يهوديته» | معاذ | ١٩/١٩ |

| | | |
|---|---|---|
| «لا يفرق بين مجتمع ولا يجمع بين متفرق...» | عبد الله بن عمر | ٨٤/٨ |
| «لا يفرق بين مجتمع ولا يجمع بين متفرق...» | سعد بن أبي وقاص | ٨٥/٨ |
| «لا يفرق بين والدة وولدها...» | ضميرة | ٤١١/١٨ |
| «لا يفرك مؤمن مؤمنة...» | أبو هريرة | ١١٨/١٥ |
| «لا يفسد حلال بحرام...» | عائشة | ٢٨٣/١٤ |
| «لا يفضين رجل إلى رجل...» | أبو هريرة | ٦٥/١٤ |
| «لا يفطر من قاء...» | رجل من الصحابة | ٤٧٤/٨، ١٥/٩ |
| «لا يفطر من قاء» | أبو سعيد | ١٤/٩ |
| «لا يقاد الأب من ابنه» | عبد الله بن عمرو | ٢٠٣/١٦ |
| «لا يقاد مملوك من مالكه...» | ابن عباس | ١٩٥/١٦ |
| «لا يقاد والد بولد» | عبد الله بن عمرو | ٣٠٠/١٦ |
| «لا يقبل الله صدقة من غلول...» | عبد الله بن عمر | ١٣٠/١ |
| «لا يقبل الله صلاة إلا بطهور...» | ابن عمر | ٣٧٠/٨ |
| «لا يقبل الله صلاة بغير طهور» | أسامة بن عمير | ١٩٩/٢ |
| «لا يقبل منه صرف ولا عدل» | أبو هريرة | ٣٣٩/١٠ |
| «لا يقتسم ورثتي دينارا...» | أبو هريرة | ٥٤٨/١٣ |
| «لا يقتل حر بعبد» | ابن عباس | ١٩١/١٦ |
| «لا يقتل مؤمن بكافر...» | معقل بن يسار | ١٨٠/١٦ |
| «لا يقتل مؤمن بكافر» | عبد الواحد بن زياد | ١٨٤/١٦ |
| «لا يقتل مؤمن بكافر» | عطاء وطاوس ومجاهد والحسن | ١٧٧/١٦ |
| «لا يقدمن أحد منكم إلى شيء...» | أنس بن مالك | ٣٢٨/١٨ |
| «لا يقرأ الجنب ولا الحائض...» | عبد الله بن عمر | ٢٦٩/١ |
| «لا يقرأنّ أحد منكم إذا جهرت بالقراءة إلا بأمّ القرآن» | عبادة بن الصامت | ٣٦/٤ |
| «لا يقضى حكم بين اثنين وهو غضبان» | أبو بكرة | ٣٠٣/٢٠ |
| «لا يقضى القاضي إلا وهو شبعان ريان» | أبو سعيد الخدرى | ٣٠٦/٢٠ |
| «لا يقضى القاضي بين اثنين وهو غضبان» | أبو بكرة | ٣٠٤/٢٠ |
| «لا يقطع السارق فيما دون ثمن المجن» | عائشة | ٢٩٩/١٧ |

| | | |
|---|---|---|
| «لا يقطع الصلاة إلا الحدث» | على | ١٧٦/٢ |
| «لا يقطع الصلاة شيء...» | أبو سعيد الخدرى | ١٧٦/٢، ٣٥٦/٤ |
| «لا يقطع الصلاة الكشر ولكن يقطعها القرقرة» | جابر بن عبد الله | ٢٧٧/٤ |
| «لا يقطع فى ثمر ولا كثر» | رافع بن خديج | ٣١٤/١٧ |
| «لا يقطع فى دون ربع دينار» | عائشة | ٢٩٤/١٧ |
| «لا يقطع الوادى - أو: الأبطح- إلا شدًّا» | أم ولد لشيبة | ١٥/١٠ |
| «لا يقل أحدكم: اسق ربك...» | أبو هريرة | ١٢٠/١٦ |
| «لا يقلب كعباتها أحد ينتظر ما تأتى به » | أبو موسى | ١١٣/٢١ |
| «لا يقم أحدكم يعنى أخاه من مجلسه...» | ابن عمر | ٣٩٨/٦ |
| «لا يقولن أحدكم: إنى صرورة» | عبد الله بن عباس | ٢٣١/١٠ |
| «لا يقولن أحدكم زرعت ولكن ليقل حرثت» | أبو هريرة | ١٨٦/١٢ |
| «لا يقيم الرجلُ الرجلَ من مجلسه ثم يجلس » | ابن عمر | ٣٩٩/٦، ٢٢٩/١٢ |
| «لا يقيمن أحدكم أخاه يوم الجمعة...» | جابر | ٤٠٠/٦ |
| «لا يكلم أحد فى سبيل الله والله أعلم...» | أبو هريرة | ٥٤٠/١٨ |
| «لا يكون قبلتان فى بلد واحد» | ابن عباس | ٨٧/١٩ |
| «لا يلبس الحرير فى الدنيا إلا من لا خلاق له » | أبو أمامة | ٥٠٠/٦ |
| «لا يلبس خفين إلا لمن لا يجد النعلين...» | عبد الله بن عمر | ٣٤٠/٢ |
| «لا يلبس السراويل ولا القميص ولا العمامة » | ابن عمر | ٤٤٨/٩ |
| «لا يلبس القميص ولا العمامة ولا البرنس » | ابن عمر | ٤٤٩/٩ |
| «لا يلبس المحرم القميص ولا العمامة » | ابن عمر | ٤٤٦/٩ |
| «لا يلج النار من صلى قبل طلوع الشمس وقبل غروبها» | عمارة بن رويبة | ٢٩٤/٣ |
| «لا يلدغ المؤمن من جحر مرتين» | أبو هريرة | ١٨٨/١٣ |
| «لا يلدغ مؤمن من جحر مرتين» | أبو هريرة | ٣٨٣/٢٠ |
| «لا يمس رجل امرأة حبلى حتى تضع حملها» | عامر | ٢١٧/١١ |
| «لا يمسكن الناس...» | طاوس | ٥٧٧/١٣ |
| «لا يمشين أحدكم فى نعل واحدة...» | أبو هريرة | ١٣٧/٥ |
| «لا يمنع أحدكم جاره أن يغرز خشبة فى جداره» | أبو هريرة | ٥٣٦/١، ٢٥٠/١٢ |

| | | |
|---|---|---|
| «لا يمنع فضل الماء ليمنع به الكلأ» | أبو هريرة | ٢٣٣/١٢ |
| «لا يمنع فضل الماء ولا نقع البئر» | عائشة | ٢٣٦/١٢ |
| «لا يمنع نقع بئر» | عمرة بنت عبد الرحمن | ٢٣٤/١٢ |
| «لا يمنع نقع البئر وهو الرهو» | عائشة | ٢٣٥/١٢ |
| «لا يمنعك ذلك اشتريها وأعتقيها » | عمرة بنت عبد الرحمن | ٤٩٩/٢١ |
| «لا يمنعكِ ذلك إنما الولاء لمن أعتق» | عائشة | ٣٧٤/٢١ |
| «لا يمنعك ذلك فإن الولاء لمن أعتق» | عبد الله بن عمر | ٥٢٧/١٢ |
| «لا يمنعك ذلك فإنما الولاء لمن أعتق» | أبو هريرة | ٥٠٣/٢١ |
| «لا يمنعك ذلك فإنما الولاء لمن أعتق» | عائشة | ٢٤٦/١١ |
| «لا يمنعك ذلك فإنما الولاء لمن أعتق» | عبد الله بن عمر | ٣٨٢/٢١، ٥٠٢ |
| «لا يمنعك ذلك منها...» | عائشة | ٥٢٨/١٤ |
| «لا يمنعن أحدًا منكم أذان بلال...» | عبد الله بن مسعود | ٣/ ٧٥، ٤٦٨/٨ |
| «لا يمنعن أحدكم جاره أن يضع خشبته ...» | ابن عباس | ٥٤٠/١١ |
| «لا يمنعن أحدكم جاره أن يضع خشبة» | أبو هريرة | ٥٣٦/١١، ٥٣٧ |
| «لا يمنعن أحدكم جاره موضع خشبة أن يجعلها فى جداره» | أبو هريرة | ٥٣٨/١١ |
| «لا يمنعن أحدكم مخافة الناس أن يتكلم بحق» | أبو سعيد الخدرى | ٢٥٢/٢٠ |
| «لا يموت لأحد ثلاثة من الولد فتمسه النار إلا تحلة القسم» | أبو هريرة | ١٦٩/٢٠ |
| «لا يموت لأحد من المسلمين ثلاثة من الولد فتمسه النار» | أبو هريرة | ٤٨٢/٧ |
| «لا يموت لأحد من المسلمين من الولد...» | أبو هريرة | ٥٨٨/١٣ |
| «لا يموت لإحداكن ثلاثة من الولد» | أبو هريرة | ٤٨٤/٧ |
| «لا يموتن أحد منكم إلا وهو يحسن الظن بالله» | جابر بن عبد الله | ١٧٤/٧ |
| «لا يموتن أحدكم إلا وهو حسن الظن بالله » | جابر بن عبد الله | ١٧٤/٧ |
| «لا يمين عليك ولا نذر فى معصية الرب...» | عمر | ١٧٣/٢٠ |
| «لا يمين ولا نذر فيما يسخط الرب» | عمر | ٧٦/٢٠ |

| | | |
|---|---|---|
| «لا ينبغي أن تكونوا أعوان الشيطان...» | عبد الله بن مسعود | ٥٣٣/١٧ |
| «لا ينبغي لأحد أن يعذب بعذاب الله» | ابن عباس | ٩٥/١٧ |
| «لا ينبغي لأحد أن يعطى عطية فيرجع فيها» | ابن عباس وابن عمر | ٣٣٠/١٢ |
| «لا ينبغي لامرأة أن تشترط طلاق أختها...» | أبو هريرة | ٥٣٠/١٤ |
| «لا ينبغي لباس هذا للمتقين» | عقبة بن عامر | ١٠٨/٥ |
| «لا ينبغي لذى الوجهين أن يكون أمينًا» | أبو هريرة | ٢٢٠/٢١ |
| «لا ينبغي لصديق أن يكون لعانًا» | أبو هريرة | ٣٣/٢١ |
| «لا ينبغي لمسلم أن يؤدى خراجا...» | - | ٤٥٥/١٨ |
| «لا ينبغي لنبى إذا أخذ لأمة الحرب...» | - | ٤٧٤/١٣ |
| «لا ينبغي لنبى أن يدخل بيتا مزوقا» | أم سلمة | ٢٤/١٥ |
| «لا ينبغي هذا للمتقين» | عقبة بن عامر | ١٠٨/٥ |
| «لا ينصرف حتى يسمع صوتا أو يجد ريحا» | عبد الله بن زيد | ١٧٥/٢، ١٧٦، ٢٨٣/٤، ٣٣٥/١٥ |
| «لا ينظر الله إلى امرأة لا تشكر لزوجها...» | عبد الله بن عمرو | ١١٤/١٥ |
| «لا ينظر الله إلى رجل يأتى امرأته فى دبرها» | أبو هريرة | ٣٦٤/١٤ |
| «لا ينظر الله إلى رجل يوم القيامة أتى امرأة فى دبرها» | أبو هريرة | ٣٦٤/١٤ |
| «لا ينظر الرجل إلى عرية الرجل...» | أبو سعيد | ٦٤/١٤ |
| «لا ينظرن أحد منكم إلى فرج زوجته...» | ابن عباس | ٥١/١٤ |
| «لا ينفتل حتى يسمع صوتًا...» | عبد الله بن زيد | ٣٤٥/١، ٤٦٢ |
| «لا ينفِرنَّ أحد من الحاج حتى يكون آخر عهده بالبيت» | عبد الله بن عباس | ٢١٨/١٠ |
| «لا ينكح المحرم...» | عثمان بن عفان | ٤٩٤/٩- ٤٩٦، ١٣/ ٥٢٧، ٤٠٨/١٤، ٤٠٩ |
| «لا ينكح النساء إلا الأكفاء...» | جابر بن عبد الله | ٥٠٢/١٤ |
| «لا يؤخذ فى شيء من الإبل الصدقة...» | سالم بن عبد الله | ٣٧/٨ |
| «لا يؤذن إلا متوضئ» | أبو هريرة | ١١٥/٣ |
| «لا يورد ممرض على مصح» | أبو هريرة | ١٧١/١٤، ٤٢٥، ٤٢٦ |
| «لا يورد الممرض على المصح» | أبو هريرة | ٤٢٦/١٤، ٤٢٧، ٤٢٨ |

| | | |
|---|---|---|
| «لا يؤم المتيمم المتوضئين» | جابر | ٢٠٩/٢ |
| «لا يؤمن أحد بعدى جالسًا» | الشعبى | ٥٧٥/٥ |
| «لأبعثن عليكم رجلًا أمينًا حق أمين» | حذيفة | ٢٣٧/٢٠ |
| «لأعطين الراية أو ليأخذن الراية غدا...» | سلمة بن الأكوع | ٣٣٠/١٣ |
| «لأعطين الراية رجلا يفتح الله على يديه» | سهل بن سعد | ٣٥٠/١٨ |
| «لأعطين الراية اليوم رجلا يحب الله ورسوله» | سلمة بن الأكوع | ٤٢٨/١٨ |
| «لألقين الله عز وجل من قبل أن أعطى أحدًا من مال أحد شيئا بغير طيب نفسه...» | أبو سعيد الخدرى | ٣٧٣/١١ |
| «لأن أجلس مع قوم يذكرون الله...» | أنس بن مالك | ٢٠٠/١٦، ٣٢١ |
| «لأن أشيع مجاهدا فى سبيل الله...» | معاذ بن أنس | ٥٧٠/١٨ |
| «لأن أقعد فى مثل هذا المجلس أحب إلى من أن أعتق أربع رقاب» | رجل من أصحاب بدر | ٢٤٧/٢٠ |
| «لأن أمتع بسوط فى سبيل الله...» | أبو هريرة، عائشة | ١٥٠/٢٠، ١٥١ |
| «لأن تصلى المرأة فى بيتها خير لها من أن تصلى فى حجرتها...» | عائشة | ١١٥/٦ |
| «لأن يأخذ أحدكم حبلًا فيأتى الجبل...» | الزبير بن العوام | ٣٨٣/٨ |
| «لأن يأخذ أحدكم حبله فيأتى الجبل...» | الزبير بن العوام | ٢٣٧/١٢ |
| «لأن يجلس أحدكم على جمرة أو على نار فتحرق ثيابه» | أبو هريرة | ٥٢٨/٧ |
| «لأن يغدو أحدكم فيحتطب على ظهره...» | أبو هريرة | ٣٨٤/٨ |
| «لأن يمتلئ جوف أحدكم قيحًا حتى يريه...» | الشعبى | ٢١٥/٢١ |
| «لأن يمتلئ جوف أحدكم قيحًا خير له من أن يمتلئ شعرًا» | ابن عمر | ٢١٣/٢١، ٢١٤ |
| «لأن يمتلئ جوف الرجل قيحًا...» | أبو هريرة | ٢١٤/٢١ |
| «لأن يمنح أحدكم أخاه أرضه خير له...» | ابن عباس | ١٧٢/١٢ |
| «لأن يمنح الرجل أخاه أرضه خير له...» | ابن عباس | ١٧١/١٢ |
| «لأنكن تكثرن اللعن...» | جابر بن عبد الله | ٥٧١/٦ |
| «لأنه حديث عهد بربه» | أنس بن مالك | ١١٣/٧ |
| «لأنه قتله أهل الكتاب» | قيس بن شماس | ٥٧٧/١٨ |

| | | |
|---|---|---|
| «لأنهم يدخلون الجنة قبل الأغنياء» | أنس | ٣٨٩/١٣ |
| «لأهل القتيل أن ينحجزوا الأدنى فالأدنى...» | عائشة | ٢٦٥/١٦ |
| «لايمسّ القرآن إلا طاهر» | عبد الله بن عمر | ٢٦٤/١ |
| «لبدت رأسى وقلدت هديى» | - | ٣٣٠/٩ |
| «لبيت عن نفسك» | ابن عباس | ٢٣٦/٩ |
| «لبيك اللهم لبيك» | ابن عباس | ٤٣٤/٩ |
| «لبيك اللهم لبيك» | جابر بن عبد الله | ٣١٦/٩ |
| «لبيك اللهم لبيك» | مجاهد | ٤٣٤/٩، ٤٩٨/١٣ |
| «لبيك اللهم لبيك لبيك لا شريك لك لبيك» | ابن عمر | ٤٣٠/٩، ٤٣١ |
| «لبيك اللهم لبيك لبيك لا شريك لك لبيك» | جابر بن عبد الله | ٤٣٣/٩ |
| «لبيك إله الحق لبيك» | أبو هريرة | ٤٣٤/٩ |
| «لبيك إن العيش عيش الآخرة» | مجاهد | ٤٣٤/٩، ٤٩٨/١٣ |
| «لبيك عمرة وحجًا» | أنس بن مالك | ٣٢١/٩ |
| «لبيك عمرة وحجة» | أنس بن مالك | ٣٢١/٩، ٤١٧ |
| «لتأتينكم أجوركم...» | جبير بن مطعم | ٥٦/١٨ |
| «لتأخذ أمتى مَنسِكها...» | جابر بن عبد الله | ٦٨/١٠ |
| «لتأخذوا مناسككم» | جابر بن عبد الله | ٦٨/١٠، ١١٨ |
| «لتأمرن بالمعروف ولتنهون عن المنكر...» | حذيفة بن اليمان | ٢٦٣/٢٠ |
| «لتجلس أيام أقرائها ثم تغتسل» | زينب بنت جحش | ٥٠٥/٢ |
| «لتحُتّه ثم لتِقرُصه بالماء...» | أسماء بنت أبى بكر | ٣٨/١ |
| «لتخرج العواتق وذوات الخدور...» | أم عطية | ٥٩٦/٦ |
| «لتركبن فلتجيئن به كما بعت بالثمن» | جابر بن عبد الله | ٤١٠/١٨ |
| «لتسوُّن صفوفكم فى صلاتكم...» | النعمان بن بشير | ٢١/٦ |
| «لتشد عليها إزارها ثم شأنك بأعلاها» | زيد بن أسلم | ٣٤٢/١٤ |
| «لتصلى ما عقلت فإذا خشيت أن تغلب فلتنم» | أنس بن مالك | ٤٠٠/٥ |
| «لتفتحن لكم الشام...» | عبد الله بن حوالة | ٥٥٥/١٨ |
| «لتفعلن» | عائشة | ٢٣/٢٠ |
| «لتقيمن صفوفكم أو ليخالفن الله بين وجوهكم يوم القيامة» | النعمان بن بشير | ٢٢/٦ |

| | | |
|---|---|---|
| «لتلبسها أختها من جلبابها» | أم عطية | ٥٩٥/٦ |
| «لتلبسها صاحبتها من جلبابها...» | حفصة عن امرأة عن أختها | ٥٩٦/٦ |
| «لتنبأن أن تصدق وأنت صحيح شحيح...» | أبو هريرة | ٣٦٥/٨، ٣٦٦ |
| «لتنظر أيام قرئها وأيام حيضها...» | أم سلمة | ٤٦٤/٢ |
| «لتنظر عدد الأيام والليالى التى كانت تحيضهن» | أم سلمة | ٤٦٢/٢، ٤٦٣ |
| «لتنظر عدد الليالى والأيام التى كانت...» | أم سلمة | ٤٦٠/٢، ٤٦١ |
| «لتنظر عدة الليالى والأيام التى كانت...» | أم سلمة | ٤٦٣/٢، ٤٩٦/١٥ |
| «لتؤدن الحقوق إلى أهلها يوم القيامة...» | أبو هريرة | ٤١/١٢ |
| «التى تسره إذا نظر إليها...» | أبو هريرة | ١١/١٤ |
| «اللحد لنا والشق لغيرنا» | جرير بن عبد الله | ٢٦٤/٧ |
| «اللحد لنا والشق لغيرنا» | عبد الله بن عباس | ٢٦٣/٧ |
| «لحم صيد البر لكم حلال وأنتم حرم » | جابر بن عبد الله | ٣١٨/١٠ |
| «الذى تفوته صلاة العصر كأنما وتر أهله وماله» | عبد الله بن عمر | ٢٤٤/٣ |
| «الذى عرض على أصحابك...» | عمر بن الخطاب | ٢٢٩/١٨، ٣١٧/٢٠، ٣١٨ |
| «الذى لا يجد غنى يغنيه...» | أبو هريرة | ٣٨٦/١٣ |
| «الذى يأتى هؤلاء بوجه وهؤلاء بوجه» | أبو هريرة | ٢١٩/٢١ |
| «الذى يتخلى فى طريق الناس وظلهم» | أبو هريرة | ٢٩٧/١ |
| «الذى يشرب فى آنية الفضة إنما يجرجر...» | أم سلمة | ٧٧/١ |
| «لزوال الدنيا أهون على الله...» | عبد الله بن عمرو | ١٥٥/١٦ |
| «لست آكله ولا محرمه» | ابن عمر | ٤٥١/١٩ |
| «لست بآكله ولا محرمه» | ابن عمر | ٤٥٢/١٩ |
| «لست من دد ولا دد منى» | أنس | ١١٨/٢١ |
| «لعداوتك لله ولرسوله» | سهل بن أبى حثمة | ٢١٨/١٨ |
| «لعل ابنك هذا نزعه عرق» | أبو هريرة | ٢٨٣/٢١ |
| «لعل الله أن يرفعك فينفع بك ناسا» | سعد بن أبى وقاص | ٢٦/١٣ |
| «لعل صاحب هذه يلم بها...» | أبو الدرداء | ٦٠٤/١٥ |

| | | |
|---|---|---|
| «لعلك آذاك هوامك» | كعب بن عجرة | ٤٦٤/٩ |
| «لعلك أن تمر بقبرى ومسجدى» | معاذ بن جبل | ٦٨/١٨ |
| «لعلك تريدين أن ترجعى إلى رفاعة...» | عائشة | ٣٦٦/١٥ |
| «لعلك جئت تخطب فاطمة؟» | على | ٤٨٦/١٤ |
| «لعلك قبّلت...» | - | ٣٧١/١ |
| «لعلك نفست» | امرأة من بنى غفار | ٦١/٥ |
| «لعلكم تقاتلون قوما فتظهروا عليهم...» | رجل من جهينة | ٧٤/١٩ |
| «لعلكم تقرءون والإمام يقرأ؟» | رجل من الصحابة | ٣٧/٤ |
| «لعلكم ستدركون أقوامًا يصلون الصلاة لغير وقتها...» | عبد الله بن مسعود | ١٠٢/٦ |
| «لعلنا أعجلناك» | أبو سعيد | ١١/٢ |
| «لعله أن يخفف عنهما...» | عبد الله بن عباس | ٣١٨/١، ٧٥/٥ |
| «لعلها أن تجئ به أسود جعدا» | عبد الله بن مسعود | ٤٦٣/١٥، ٤٧٦ |
| «لعلّها تحبسنا؟» | عائشة | ٢٢٤/١٠ |
| «لعلّها حابستنا؟» | عائشة | ٢٢٢/١٠ |
| «لعلهما أن يخفف عنهما ما لم ييبسا» | ابن عباس | ٧٦/٥ |
| «لعن الله الخمر وشاربها وساقيها...» | ابن عمر | ٢١٠/١١، ٣٥٧ |
| «لعن الله السارق يسرق البيضة فتقطع يده...» | أبو هريرة | ٢٨٩/١٧ |
| «لعن الله القاتل غير قاتله...» | - | ١٦٩/١٦ |
| «لعن الله المحل والمحلل له» | أبو هريرة | ٤٠٢/١٤ |
| «لعن الله الناظر والمنظور إليه» | الحسن | ٦٥/١٤ |
| «لعن الله الواصلة والمستوصلة» | أسماء بنت أبى بكر | ١١٩/٥ |
| «لعن الله الواصلة والمستوصلة » | أبو هريرة | [illegible]/٥ |
| «لعن الله اليهود إن الله حرم عليهم الشحوم...» | ابن عباس | ٣٦٠/١١ |
| «لعن الله اليهود حرمت عليهم الشحوم...» | عمر بن الخطاب | ٣٥٦/١١، ٧٨/١٩، ٦٠٢ |
| «لعن الله اليهود لعن الله اليهود...» | ابن عباس | ٥٥٩/١٩ |
| «لعن الله زوارات القبور» | أبو هريرة | ٥٢٢/٧ |
| «لعن الله الذى وسمه» | جابر | ٤٥٥/١٣ |
| «لعن الله من تولى غير مواليه...» | ابن عباس | ٢١٤/١٧ |

| | | |
|---|---|---|
| «لعن الله من ذبح لغير الله...» | على | ٢١٧/١٩ |
| «لعن الله من فعل هذا...» | جابر | ٤٥٦/١٣ |
| «لعن الله من لعن والده...» | على بن أبى طالب | ٥٩/١٢ |
| «لعن الله من مثل بالحيوان» | عبد الله بن عمرو | ٢٨٨/١٨ |
| «لعن المحل والمحلل له» | على بن أبى طالب | ٤٠١/١٤ |
| «لعنة الله على اليهود والنصارى...» | عائشة وابن عباس | ١٤٤/٥، ٥٣٢/٧ |
| «لعنت الخمر وشاربها وساقيها...» | ابن عمر | ٣٨٩/١٧ |
| «لغدوة فى سبيل الله أو روحة خير من الدنيا» | عمر | ٢٦٩/٦ |
| «لقد احتظرت بحظار شديد من النار» | أبو هريرة | ٤٨٥/٧ |
| «لقد أطاف بآل محمد الليلة سبعون امرأة...» | إياس بن أبى ذباب | ١٤٧/١٥، ١٥١ |
| «لقد أعطى هذا مزمارًا من مزامير آل داود» | بريدة بن حصيب | ١٦٦/٢١ |
| «لقد أعطيت الليلة خمسًا» | عبد الله بن عمرو | ١٨٠/٢ |
| «لقد أمدكم الله بصلاة هى خير لكم» | خارجة بن حذافة | ٢٤٧/٥ |
| «لقد أنزل على آيات لم يُر مثلهن» | عقبة بن عامر الجهنى | ٢٤/٥ |
| «لقد أنزلت على آيات هى أحب إلى من الدنيا» | أنس بن مالك | ١٢٧/١٩ |
| «لقد أنزلت على آية هى أحب إلى من الدنيا...» | أنس بن مالك | ٤٠٩/١٠ |
| «لقد أهلكتم (أو قطعتم) ظهر الرجل» | أبو موسى | ٢٠٨/٢١ |
| «لقد تاب توبة لو قسمت بين أمة لوسعتها» | بريدة | ٧/١٢، ١٦٠/١٧ |
| «لقد تابت توبة لو قسمت بين أهل المدينة...» | عمران بن حصين | ١٧٢/١٧ |
| «لقد تحجرت واسعًا» | أبو هريرة | ١٢٦/٥ |
| «لقد تركتم بالمدينة أقواما...» | أنس بن مالك | ٨٣/١٨ |
| «لقد حسن إسلام أخيكم» | أبو هريرة | ٢٩/٢ |
| «لقد حسن إسلام صاحبكم...» | جابر بن عبد الله | ٤٧٠/١٨ |
| «لقد حكم اليوم فيهم بحكم الله...» | سعد بن أبى وقاص | ٢١٢/١٨ |
| «لقد حكمت فيهم بحكم الله» | أبو سعيد الخدرى | ٥٠٣/١١ |
| «لقد حكمت فيهم بحكم الله» | عروة بن الزبير | ٣١٩/١٨ |
| «لقد خشيت على نفسى» | عائشة | ١٩/١٨ |
| «لقد رأى هذا ذعرا» | مروان بن الحكم، المسور بن مخرمة | ١٢٣/١٩ |

| | | |
|---|---|---|
| «لقد رأيت اثنى عشر ملكًا يبتدرونها » | أنس | ٣٨٧/٦ |
| «لقد رأيتنى وصاحبى مكثنا بضع عشرة ليلة» | طلحة النصرى | ١٧٤/٥ |
| «لقد سألنى هذا عن الذى سألنى» | ثوبان | ٢٥/٢ |
| «لقد سمعت فى هؤلاء تأذين إنسان » | أبو محذورة | ١٧٥/٣ |
| «لقد سمعت فى هؤلاء تأذين إنسان » | عثمان بن السائب | ١٩٧/٣ |
| «لقد شهدت فى دار عبد الله...» | طلحة بن عبد الله | ٣٤٥/١٣ |
| «لقد ضحك الله الليلة-أو عجب- من فعالكما» | أبو هريرة | ٣٤٨/٨ |
| «لقد عذت بعظيم الحقى بأهلك» | عائشة | ٤٦٧/١٣ |
| «لقد عذت بعظيم فالحقى بأهلك» | الزهرى | ٥٦٧/١٣ |
| «لقد لزمت السواك حتى تخوفت أن يدردنى» | عائشة | ٥٠٢/١٣ |
| «لقد هممت أن آمر بالصلاة فتقام...» | أبو هريرة | ٥٠١/٥ |
| «لقد هممت أن آمر رجلًا يصلى بالناس...» | عبد الله | ٥٠٢/٥، ٢٢٩/٦، ٢٣٠ |
| «لقد هممت أن آمر فتيانى...» | أبو هريرة | ٥٠٢/٥ |
| «لقد هممت أن آمر فتيتى فيجمعوا...» | أبو هريرة | ٥٠٢/٥ |
| «لقد هممت أن أنهى عن الغيلة...» | جدامة (أو جذامة) بنت وهب | ٤٧٤/١٤، ٤٦/١٦ |
| «لقنوا موتاكم لا إله إلا الله» | أبو سعيد الخدرى | ١٩٢/٧ |
| «لقنوا موتاكم لا إله إلا الله» | أبو هريرة | ١٩٣/٧ |
| «لك أجر الصدقة وأجر الصلة» | زينب امرأة ابن مسعود | ٤٣٨/١٣ |
| «لك أجر ما نويت» | معن بن يزيد | ٤٥٣/١٣ |
| «لك الأجر مرتين» | أبو سعيد الخدرى | ٢٠٢/٢ |
| «لك أو لأخيك أو للذئب...» | عبد الله بن عمرو | ٣٦١/١٢ |
| «لك أو لأخيك أو للذئب» | زيد بن خالد الجهنى | ٣٥٠/١٢، ٣٥١، ٣٥٩ |
| «لك بها يوم القيامة سبعمائة كلها مخطومة» | عقبة بن عمرو | ٥٦٦/١٨ |
| «لك الحمد ربنا غير مكفى...» | أبو أمامة | ٨٦/١٥ |
| «لك ذلك وعشرة أمثاله» | أبو سعيد الخدرى | ١٠١/٢٠ |
| «لك السدس» | عمران بن حصين | ٥٣٩/١٢ |
| «لك سدس آخر» | عمران بن حصين | ٥٣٩/١٢ |

| | | |
|---|---|---|
| «لك سهمك» | - | ١٠٥/١٣، ١٠٦ |
| «لك غيره» | مكحول | ٤٧٦/٩ |
| «لك فى ذلك أجر ما أنفقت عليهم...» | ريطة بنت عبد الله | ٣٢٥/٨ |
| «لك ما فوق الإزار» | عبد الله بن سعد | ٤١٦/٢ |
| «لك ما نويت يا يزيد...» | معن بن يزيد السلمى | ٤٥٢/١٣ |
| «لكل ابن آدم حظه من الزنى...» | أبو هريرة | ٣٣/١٤ |
| «لكل داء دواء فإذا أصيب دواء...» | جابر | ٥٢١/١٩ |
| «لكل سهو سجدتان بعد ما يسلّم» | ثوبان | ٥٢٦/٤ |
| «لكل سورة حظها من الركوع والسجود» | - | ٣٧٢/٥ |
| «لكل غادر لواء يوم القيامة» | أنس | ٥٧٠/١٦ |
| «لكل غادر لواء يوم القيامة...» | أبو سعيد | ٥٧١/١٦ |
| «لكل غادر لواء يوم القيامة...» | عبد الله بن مسعود | ٤٦٨/١٨ |
| «لكل مسكين نصف صاع من طعام» | كعب بن عجرة | ٢٤٧/١٠ |
| «لكل نبى حوارى...» | جابر بن عبد الله | ٤٨٦/١٨ |
| «لكم كذا وكذا» | عائشة | ٢٣٥/١٦ |
| «لكن أحسن الجهاد وأفضله الحج» | عائشة | ٢٠٤/٩ |
| «لكن حمزة لا بواكى له» | أنس بن مالك | ٤٩٣/٧ |
| «لكن حمزة لا بواكى له» | عبد الله بن عمر | ٤٩٣/٧ |
| «لكن عند الله أنت غال» | أنس | ٢٢٧/٢١ |
| «لكن عند الله لست بكاسد» | أنس | ٢٢٧/٢١ |
| «للجنة ثمانية أبواب» | سهل بن سعد | ١٤١/٩ |
| «للسائل حق وإن جاء على فرس» | حسين بن على | ٤٢٢/١٣ |
| «للسائل حق وإن جاء على فرسه» | حسين بن على | ٤٢٢/١٣ |
| «للعبد المملوك المصلح أجران» | أبو هريرة | ١١٩/١٦ |
| «للغازى أجره...» | عبد الله بن عمرو | ٩٧/١٨ |
| «للفارس ثلاثة أسهم وللراجل سهم» | - | ٢١٤/١٣ |
| «للفرس سهمان وللهجين سهم» | مكحول | ٢١٦/١٣ |
| «للقرشى مثل قوة الرجلين من غير قريش» | جبير بن مطعم | ٨٧/٣، ٨٨ |
| «للمسافر ثلاث وللمقيم يوم» | خزيمة بن ثابت | ٣٢١/٢ |

| | | |
|---|---|---|
| «للمسافر ثلاثة أيام وللمقيم يوم وليلة» | أبو بكرة | ٣١٨/٢ |
| «للمسافر ثلاثة أيام ولياليهن» | على | ٣٣٧/٢ |
| «للمقيم يوم وليلة» | خزيمة بن ثابت | ٣٢٥/٢- ٣٢٦ |
| «للمملوك طعامه وكسوته...» | أبو هريرة | ٩٩/١٦، ١٠٥ |
| «للمملوك الذى يحسن عبادة ربه...» | أبو موسى | ١١٨/١٦ |
| «للمهاجرين إقامة ثلاث بعد الصدر بمكة» | السائب بن يزيد | ١٦١/٦ |
| «لله أشد أذنا إلى حسن الصوت...» | فضالة بن عبيد | ١٦٥/٢١ |
| «لله أشد أذنا للرجل الحسن الصوت...» | فضالة بن عبيد | ١٦٥/٢١ |
| «لله أشد فرحًا بتوبة عبده المؤمن...» | ابن مسعود | ١٨/٢١ |
| «لله خمسها وأربعة أخماس للجيش» | رجل من بلقين | ٢٠٣/١٣، ٢٤٦، ١٨/ ٢٠٨ |
| «لله عز وجل تسعة وتسعون اسمًا...» | أبو هريرة | ١١/١٢ |
| «لله ما أخذ ولله ما أعطى وكل إلى أجل مسمى» | أسامة بن زيد | ٤٨٩/٧ |
| «لله ولكتابه ورسوله ولأئمة المؤمنين...» | تميم الدارى | ٥٨٣/١٦ |
| «لله ولكتابه ولأئمة المسلمين...» | أبو هريرة | ٥٨٢/١٦ |
| «لم؟» (لمن سأل: إني أعزل عن امرأتي) | أسامة بن زيد | ٤٧/١٦ |
| «لم؟» (لمن قال: احترقت) | عائشة | ٤٨٨/٨ |
| «لم؟ أصلى فأتوضأ؟!» | ابن عباس | ١٣١/١، ٥٢/١٥ |
| «لم أنسَ ولم تُقصر الصلاة...» | أبو هريرة | ٥٤٨/٤، ٥٦٧، ٥٧٥ |
| «لم تحل الغنائم لقوم سود الرءوس قبلكم» | أبو هريرة | ٩٨/١٣ |
| «لم تحل الغنائم لمن كان قبلنا» | أبو هريرة | ٩٧/١٣ |
| «لم تُقصر الصلاة ولم أنسَ» | أبو بكر بن سليمان | ٥٧٨/٤ |
| «لم تُقصر ولم أنسَ» | أبو هريرة | ٥٧٧/٤ |
| «لم خلعتم نعالكم؟» | أبو سعيد الخدرى | ٤٧/٥ |
| «لم ضربته؟» | عمير مولى آبى اللحم | ٣٨٠/٨ |
| «لم قاتلت وقد نهيتك عن القتال؟» | موسى بن عقبة | ٣٩٣/١٨ |
| «لم نضر» | أنس | ١٩٠/١٨ |
| «لم يأت فى الحمر شىء إلا الآية الجامعة...» | أبو هريرة | ٥٨/٨ |
| «لم يبلغوا الحنث» | أبو هريرة | ٤٨٢/٧ |

| | | |
|---|---|---|
| «لم يحسدونا اليهود بشيء ما حسدونا بثلاث» | عائشة | ٣/٤٤١، ٤٤٢ |
| «لم يروا للمتحابين مثل التزوج» | ابن عباس | ١٣/٥٨٥ |
| «لم يقول أحدكم لامرأته: قد طلقتك؟» | أبو موسى الأشعرى | ١٥/٢١١ |
| «لم يكذب إبراهيم قط إلا ثلاث كذبات...» | أبو هريرة | ١٥/٣٤٠ |
| «لمّا أتى إبراهيم خليل الله عليه السلام المناسك عرض له الشيطان...» | عبد الله بن عباس | ١٠/١٩٠ |
| «لما أصيب إخوانكم بأحد...» | ابن عباس | ١٨/٥٣٥ |
| «لما خلق الله آدم ونفخ فيه الروح عطس...» | أبو هريرة | ٢٠/٤٣٦ |
| «لمن أنت؟» | سلمان الفارسى | ٢١/٤٥٧ |
| «لمن الزرع؟ ولمن الأرض؟» | رافع بن خديج | ١٢/١٦٨ |
| «لمن عمل بها من أمتى» | عبد الله بن مسعود | ١٧/٢٤٧ |
| «لمن هذا؟» | رافع بن خديج | ١٢/١٨١ |
| «لن أستعمل، أو لا أستعمل» | أبو موسى | ١٧/٩٦ |
| «لن أستعين بمشرك» | عائشة | ٢٠/٣٧٤ |
| «لن تراعوا» | أنس | ١٨/٥٦٠، ٢١/٥٩ |
| «لن يدخل أحدًا الجنة عمله» | أبو هريرة | ٧/١٧٢ |
| «لن يفلح قوم ولوا أمرهم امرأة» | أبو بكرة | ٥/٦٠٣، ٢٠/٣٤٧ |
| «له أجر شهيدين» | الواقدى | ١٨/٢٧٥ |
| «له السلب أجمع» | سلمة بن الأكوع | ١٣/١٤٨ |
| «الله» (جوابا لمن سأل: من يمنعك منى؟) | جابر بن عبد الله | ١٨/٢٢٦ |
| «لها بيت من قصب اللؤلؤ...» | الزهرى | ١٣/٥٦٤ |
| «لها الصداق بما استحللت من فرجها...» | بصرة | ١٤/٢٤١ |
| «لهم ذلك ما شاء الله» | أنس | ١٢/٢١٠ |
| «لهم ما أسلموا عليه من أموالهم...» | بريدة | ٨/١٧٥، ١٨/٣٦٨ |
| «لهما أحب إلى من حمر النعم» | عائشة | ٥/٢٥٢ |
| «لهما أحب إلى من الدنيا وما فيها» | عائشة | ٥/٢٥٢ |
| «لو أتخذ أحدًا خليلًا لاتخذته» | عبد الله بن الزبير | ١٢/٥٤٥ |
| «لو أخذتم إهابها؟» | ميمونة | ١/٥٥ |
| «لو أخذوا إهابها فدبغوه...؟» | ميمونة | ١/٤٦ |

| | | |
|---|---|---|
| «لو استرقوا لها فإن بها نظرة» | أم سلمة | ٥٣٨/١٩ |
| «لو استقبلت من أمرى...» | طاوس | ٣١٤/٩ |
| «لو استقبلت من أمرى ما استدبرت ما أهديت» | جابر بن عبد الله | ٥/١٠ |
| «لو أصبحت أكثر مما أصبحت لركعتهما...» | بلال | ٢٥٣/٥ |
| «لو أعطيتها أخوالك كان أعظم لأجرك » | ميمونة بنت الحارث | ٣٢٦/٨ |
| «لو أعلم أن هذا ينظرنى...» | سهل بن سعد | ٥٥٦/١٧ |
| «لو أعلم أنك تنظر لطعنت به فى عينك» | سهل بن سعد | ٥٥٦/١٧ |
| «لو اغتسلتم؟» | عائشة | ٣٦٨/٢ |
| «لو أن امرأ اطلع عليك بغير إذن...» | أبو هريرة | ٥٥٨/١٧ |
| «لو أن رجلا اطلع فى بيت رجل ففقأ عينه...» | ابن عمر | ٥٥٩/١٧ |
| «لو أن رجلا تزوج امرأة على ملء كف...» | جابر | ٤٩٧/١٤ |
| «لو أن لابن آدم واديين من مال » | عبد الله بن عباس | ١٤٣/٧ |
| «لو أن لى مثل أحد ذهبا...» | أبو هريرة | ٤٩١/١٣ |
| «لو أن الناس أعطوا بدعواهم...» | ابن عباس | ٥/١٢ |
| «لو أنفقت ما فى الأرض ما أدركت غدوتهم» | ابن عباس | ٢٧٠/٦ |
| «لو أنكم تطهرتم ليومكم هذا؟» | عائشة | ٢٧٥/٦ |
| «لو أهدى إلى ذراع لقبلت...» | أبو هريرة | ٢٩٣/١٢، ٤١/١٥ |
| «لو أهدى إلى كراع لقبلت...» | أنس | ٢٩٥/١٢ |
| «لو ترك أحد لأحد لترك ابن المقعدين» | عبد الله بن عمر | ٤٨٠/٧ |
| «لو تعلمون ما أعلم لضحكتم قليلا...» | أبو هريرة | ٥٠٨/١٣ |
| «لو ثبت لفقأت عينك» | أنس بن مالك | ٥٥٧/١٧ |
| «لو حجّ صغير حجة لكانت عليه حجّة...» | جابر بن عبد الله | ٢٧٥/١٠ |
| «لو حدث فى الصلاة شىء لأنبأتكم» | عبد الله بن مسعود | ٣٣٣/٣ |
| «لو دخلوها لم يزالوا فيها...» | على | ٥٥٦/١٦ |
| «لو راجعتيه فإنه أبو ولدك» | ابن عباس | ٤٤٤/١٤ |
| «لو رأيتنى وأنا أسمع قراءتك البارحة...» | أبو موسى | ٣٧٨/٥، ١٦٦/٢١ |
| «لو رجمت أحدا بغير بينة لرجمت هذه» | ابن عباس | ٤٦٦/١٥ |
| «لو سترته بثوبك لكان خيرا لك» | محمد بن المنكدر | ٥٣٠/١٧ |
| «لو سرقت فلانة...» | – | ٥٠٢/١٧ |

| | | |
|---|---|---|
| «لو سلك الناس واديا أو شعبا...» | أنس بن مالك | ٢٥١/١٣ |
| «لو شئتم قلتم: جئتنا كذا وكذا...» | زيد بن عاصم | ٢٥٦/١٣ |
| «لو صنعتم لنا من هذا اللحم؟» | عائشة | ٤٣٩/١٤ |
| «لو علمت أنك تنظرنى» | سهل بن سعد | ٥٥٦/١٧ |
| «لو علمت بالذى صنع ما صليت عليه» | عمران بن حصين | ٣٥٤/٢١ |
| «لو علمنا ذلك ما صلينا عليه» | عمران بن حصين | ١٣/١٣ |
| «لو علمنا ما صلينا عليه» | عمران بن حصين | ٣٤٩/٢١ |
| «لو غسل جسده وترك رأسه» | عطاء | ١٩١/٢ |
| «لو قد أسلم الناس قد تهادوا من غير جوع» | أنس | ٢٩٥/١٢ |
| «لو قسمت بين سبعين من أهل المدينة لوسعتهم» | عمران بن حصين | ١٧٢/١٧ |
| «لو قلت نعم لوجبت» | أبو هريرة | ٢٠٢/٩ |
| «لو قلتها لوجبت» | ابن عباس | ٢٠٣/٩ |
| «لو قلتها وأنت تملك أمرك أفلحت كل الفلاح» | عمران بن حصين | ١٩٠/١٣، ٢٢٨/١٨، ٢٤٤ |
| «لو كان تاما على أحد من العرب سبى...» | - | ٢٤٥/١٨ |
| «لو كان ثابتا على أحد من العرب سباء...» | معاذ بن جبل | ٢٤٦/١٨ |
| «لو كان على أبيك دين» | سودة بنت زمعة | ٢١٣/٩ |
| «لو كان على أمك دين أكنت قاضيه؟» | ابن عباس | ٥٨٢/٨ |
| «لو كان عليها دين أكنت قاضيه» | ابن عباس | ٥٣/١٣ |
| «لو كان لى مثل أحد ذهبًا...» | أبو هريرة | ٣٠٨/١١ |
| «لو كان مطعم بن عدى حيا...» | جبير بن مطعم | ١٨٧/١٣، ٢٢٥/١٨ |
| «لو كنت آمرا أحدا أن يسجد لأحد...» | أبو هريرة | ١٠٤/١٥ |
| «لو كنت آمرا أحدا أن يسجد لأحد...» | معاذ بن جبل | ١٠٨/١٥ |
| «لو كنت أحججتها عليها كان فى سبيل الله» | ابن عباس | ٢٧٧/١٢ |
| «لو كنت امرأة لغيرت أظفارك بالحناء» | عائشة | ٢٤/١٤، ٢٥ |
| «لو كنت راجما أحدا بغير بينة لرجمتها» | ابن عباس | ٤٦٨/١٥ |
| «لو كنت سترته بثوبك كان خيرا لك» | هزال | ٥٣٠/١٧ |
| «لو كنت متخذًا خليلًا لاتخذت أبا بكر» | ابن الزبير | ٥٤٥/١٢ |
| «لو كنت متخذًا خليلًا لاتخذته خليلًا» | ابن عباس | ٥٤٤/١٢ |

| | | |
|---|---|---|
| «لو كنتم تغرفون من بطحان ما زدتم» | أبو حدرد الأسلمى | ٤٨٨/١٤ |
| «لو لم يكن فيه تمثال» | رجل من بنى هاشم | ١٥٤/١٣ |
| «لو مُدَّ لنا الشهر لواصلت» | أنس بن مالك | ٦٧/٩ |
| «لو يعطى الناس بدعواهم...» | ابن عباس | ٢٢٤/١١، ٤٢٣/١٨، ٢٤١/٢١- ٢٤٣ |
| «لو يعلم القاعد عنهما ما فيهما لأتوهما ولو حبوًا» | ابن أم مكتوم | ٥٠٩/٥ |
| «لو يعلم الذى يشرب وهو قائم...» | أبو هريرة | ٧٠/١٥ |
| «لو يعلم المارُّ بين يدى المصلى ماذا عليه لكان أن يقف أربعين خيرًا له...» | أبو جُهيم | ٣٢٤/٤ |
| «لو يعلم الناس ما فى النداء والصف الأول» | أبو هريرة | ٢٠٠/٣، ٣٥٦/٢١ |
| «لو يعلم الناس ما فى الوحدة ما سار راكب بليل وحده أبدًا» | عبد الله بن عمر | ٥٤٤/١٠ |
| «لو يعلمون - أو: لو تعلمون- ما فى الصف الأول ما كان إلا قرعة» | أبو هريرة | ٢٦/٦ |
| «لوددت أن ذلك كان وأنا حى...» | عائشة | ٥٤٥/١٦ |
| «لوددت أنى طوقت ذلك» | أبو قتادة | ٧٩/٩ |
| «لولا أن أشق على أمتى لأمرتهم أن يصلوها » | عبد الله بن عباس | ٢٥٦/٣، ٢٥٧ |
| «لولا أن أشق على أمتى لأمرتهم بالسواك...» | أبو هريرة | ١٠٦/١، ١٠٧، ١١٢ |
| «لولا أن أشق على أمتى لأمرتهم بتأخير العشاء...» | أبو هريرة | ١٠٥/١، ١١١ |
| «لولا أن أشق على أمتى لفرضت عليهم السواك...» | أبو هريرة | ١٠٧/١ |
| «لولا أن تجد صفية تركته حتى يحشره الله» | أنس بن مالك | ٣٠٤/٧، ٣٠٥ |
| «لولا أن تكون من الصدقة لأكلتها» | أنس بن مالك | ٣٧٨/١٢ |
| «لولا أن قومك حديث عهد» | عائشة | ٥٨١/٩ |
| «لولا أن الكلاب أمة من الأمم أكره أن أفنيها لأمرت بقتلها....» | جابر بن عبد الله | ٣٥٠/١١ |
| «لولا أن معى الهدى لأحللت» | أنس بن مالك | ٣٣٥/٩ |

| | | |
|---|---|---|
| «لولا أنا محرمون لقبلناه منك» | عبد الله بن عباس | ٣٢٤/١٠ |
| «لولا أنك رسول لضربت عنقك» | عبد الله بن مسعود | ١٠٠/١٩ |
| «لولا أنك رسول لقتلتك» | عبد الله بن مسعود | ١٠١/١٩ |
| «لولا أنها تعطى فقراء المهاجرين ما أخذتها» | عبد الله بن هلال الثقفى | ٣٧٦/١٣ |
| «لولا أنى أخاف أن تكون صدقة لأكلتها» | أنس | ٤٤٠/١٣ |
| «لولا أنى أخشى أن تكون من الصدقة لأكلتها» | أنس | ٣٧٨/١٢ |
| «لولا أنى أكره أن أشق على أمتى...» | أبو هريرة | ١٠٨/١ |
| «لولا الأيمان لكان لى ولها أمر» | ابن عباس | ٤٢٦/١٥ |
| «لولا الأيمان لكان لى ولها شأن» | ابن عباس | ٤٢٧/١٥ |
| «لولا حدثان قومك بالكفر...» | عائشة | ٥٣٩/٩، ٥٧٨، ٥٧٩ |
| «لولا عباد لله ركع وصبية رضع وبهائم رتع» | ابن مسافع الديلى عن أبيه أنه حدثه عن جده | ٧٠/٧ |
| «لولا ما مسه من أنجاس الجاهلية» | عبد الله بن عمرو | ٥٣٢/٩ |
| «لولا ما مضى من الأيمان لكان لى فيها أمر» | مقاتل بن حيان | ٤٧٠/١٥ |
| «لولا ما مضى من كتاب الله» | ابن عباس | ٤٦٥/١٥ |
| «لولا ما مضى من كتاب الله...» | ابن عباس | ٤٢٣/١٥ |
| «لى الواجد يحل عرضه وعقوبته » | الشريد بن سويد | ٤٨٢/١١، ٤٨٣ |
| «ليأتين على الناس زمان لا يبالى المرء بما أخذ» | أبو هريرة | ٩/١١ |
| «ليأتين على الناس زمان لا يبقى أحد إلا أكل الربا...» | الحسن | ٤٦/١١ |
| «ليأخذ كل رجل برأس راحلته...» | أبو هريرة | ١٧٤/٤ |
| «ليأخذ كل رجل منكم برأس راحلته...» | أبو هريرة | ٢٩٣/٥ |
| «ليبدأ الأكبر» | سهل بن أبى حثمة ورافع بن خديج | ٤٣٩/١٦ |
| «ليبصق عن يساره تحت رجله اليسرى» | جابر بن عبد الله | ٤٠٦/٤ |
| «ليبعثن الله الحجر يوم القيامة له عينان» | ابن عباس | ٥٣٣/٩ |
| «ليبلغ شاهدكم غائبكم ...» | عبد الله بن عمر | ٢٣٤/٥ |
| «ليبلغن هذا الأمر ما بلغ الليل...» | تميم الدارى | ٥٩٨/١٨ |

| | | |
|---|---|---|
| «ليتأخر عن الجمعة حتى إنه ليؤخر عن الجنة» | سمرة بن جندب | ٤١٧/٦ |
| «ليحذر أحدكم أن يجيء يوم القيامة...» | أبو هريرة | ٣٣٦/١٨ |
| «ليخرج من كل رجلين رجل» | أبو سعيد الخدرى | ١٣٧/١٨، ١٦٣ |
| «ليراجعها» | ابن عمر | ٢١٢/١٥، ٤٩٠ |
| «ليراجعها ثم ليمسكها حتى تحيض...» | ابن عمر | ٢١٧/١٥ |
| «ليراجعها ثم ليمسكها حتى تطهر...» | ابن عمر | ٢١٥/١٥ |
| «ليراجعها ثم يمسكها حتى تحيض...» | ابن عمر | ٢١٦/١٥ |
| «ليراجعها فإذا طهرت فليطلقها» | ابن عمر | ٢٢١/١٥، ٢٢٢ |
| «ليرد قوى المؤمنين على ضعيفهم» | عبادة بن الصامت | ١٧٣/١٣ |
| «ليس أحد من أهل الأرض ينتظر هذه الصلاة غيركم» | عبد الله بن عمر | ٢٥٨/٣ |
| «ليس بالكاذب من أصلح بين الناس...» | أم كلثوم بنت عقبة | ٥٠/٢١ |
| «ليس بشيء» | عمار بن ياسر | ٤٤٧/١٩ |
| «ليس بك على أهلك هوان...» | أبو بكر بن عبد الرحمن | ١٣٥/١٥ |
| «ليس بكلب صيد ولا ماشية ولا أرض» | أبو هريرة | ٣٤٨/١١ |
| «ليس بنا ردٌّ عليك ولكنّا حرم» | الصعب بن جثّامة | ٣٢٢/١٠، ٣٢٣ |
| «ليس بنجس إنما هن من الطوافين والطوافات» | أبو قتادة | ٢٣٨/٢ |
| «ليس بين العبد والكفر إلا ترك الصلاة» | جابر بن عبد الله | ١٣٤/٧ |
| «ليس ذلك بالحيض إنما ذلك عرق» | عائشة | ٤٤٤/٢ |
| «ليس الشديد بالصرعة» | أبو هريرة | ١٨١/٢١، ٢٠٣ |
| «ليس شيء أطيع الله فيه أعجل ثوابًا...» | أبو هريرة | ٨٣/٢٠ |
| «ليس الصيام من الأكل والشرب فقط» | أبو هريرة | ٣٤/٩ |
| «ليس على الرجل جناح أن يتزوج...» | أبو سعيد الخدرى | ٥٠٢/١٤ |
| «ليس على الرجل طلاق فيما لا يملك...» | عبد الله بن عمرو | ١٩٦/١٥ |
| «ليس على الرجل المسلم زكاة فى كرمه» | جابر بن عبد الله | ١٦١/٨ |
| «ليس على المختلس ولا على المنتهب...» | جابر بن عبد الله | ٣٦٠/١٧، ٣٦١ |
| «ليس على المرء المسلم فى فرسه ولا مملوكه صدقة» | أبو هريرة | ١٢٢/٨ |
| «ليس على المرأة حرم إلا فى وجهها» | ابن عمر | ٤٤١/٩ |

| | | |
|---|---|---|
| «ليس على مسلم صدقة فى عبده ولا فرسه» | أبو هريرة | ١٢٥/٨ |
| «ليس على المسلم فى عبده ولا فرسه صدقة» | أبو هريرة | ١٢٢/٨، ١٢٥، ٢٧١ |
| «ليس على المسلم فى فرسه...» | - | ٢١٥/١٣ |
| «ليس على المسلمين عشور...» | أبى جدة | ٩٧/١٩ |
| «ليس على المسلمين عشور...» | حرب بن عبيد الله عن أبيه عن جده | ٥٧/١٩ |
| «ليس على المسلمين عشور...» | رجل من بنى تغلب | ٥٥/١٩ |
| «ليس على المعتكف صيام» | ابن عباس | ١٨٢/٩ |
| «ليس على مؤمن جزية...» | ابن عباس | ٥٥/١٩ |
| «ليس على المؤمن نذر فيما لا يملك...» | ثابت بن الضحاك الأنصارى | ٦٥/٢٠ |
| «ليس على النساء أذان ولا إقامة ولا جمعة» | أسماء | ١٤٨/٣ |
| «ليس على النساء حلق » | عبد الله بن عباس | ٣٥/١٠ |
| «ليس على الوالد قود من ولد» | عمر بن الخطاب | ٢٠٣/١٦ |
| «ليس عليكم فى غسل ميتكم غسل إذا غسلتموه» | ابن عباس | ٣٩٨/٢ |
| «ليس عليهم فيه إلا صدقة» | - | ٤٦٢/١٨ |
| «ليس عندى» | أبو مسعود الأنصارى | ٩٦/١٨ |
| «ليس فى الإبل العوامل شىء» | عبد الله بن عمرو | ١١٨/٨ |
| «ليس فى أقل من خمسة أوساق من التمر صدقة...» | أبو سعيد الخدرى | ١٨٣/٨ |
| «ليس فى البقر العوامل صدقة» | على بن أبى طالب | ١١٩/٨ |
| «ليس فى الجبهة ولا فى الكسعة ولا فى النخة صدقة» | أبو عبيد | ١٢٨/٨ |
| «ليس فى حب ولا تمر صدقة حتى يبلغ...» | أبو سعيد الخدرى | ١٦٠/٨ |
| «ليس فى الخيل والرقيق زكاة...» | أبو هريرة | ١٢٤/٨ |
| «ليس فى الخيل والرقيق صدقة...» | أبو هريرة | ١٢٤/٨ |
| «ليس فى العبد صدقة إلا صدقة الفطر» | أبو هريرة | ٢٧١/٨ |
| «ليس فى العرايا صدقة» | - | ١٤٨/٨ |

| | | |
|---|---|---|
| «ليس فى المال زكاة حتى يحول عليه الحول» | عائشة | ٧٦/٨ |
| «ليس فى مال زكاة حتى يحول عليه الحول» | على بن أبى طالب | ٧٥/٨ ، ٩٥ |
| «ليس فى مال المستفيد زكاة حتى يحول عليه الحول» | ابن عمر | ٧٨/٨ |
| «ليس فى المأمومة قود» | طلحة | ٢٨١/١٦ |
| «ليس فى النوم تفريط» | أبو قتادة | ٦٠/٣ |
| «ليس فيما دون خمس أواق صدقة...» | أبو سعيد الخدرى | ١٩/٨ |
| «ليس فيما دون خمس أواق من الورق صدقة...» | أبو سعيد الخدرى | ١٩/٨، ٨٦، ١٣٥، ١٨٣ |
| «ليس فيما دون خمس أوسق صدقة...» | أبو سعيد الخدرى | ١٨٢/٨ |
| «ليس فيما دون خمس ذود صدقة...» | أبو سعيد الخدرى | ٢٠/٨، ٣٧٢/١٣ |
| «ليس فيما دون خمسة أوساق زكاة» | أبو سعيد الخدرى | ١٣٧/٨ |
| «ليس فيما دون خمسة أوسق زكاة....» | عبد الله بن عمر | ١٣٦/٨ |
| «ليس فيما دون خمسة أوسق صدقة...» | أبو سعيد الخدرى | ١٤٨/٨، ١٨٢ |
| «ليس فيما دون خمسة أوسق صدقة» | جابر بن عبد الله | ١٣٦/٨ |
| «ليس فيما دون خمسة أوسق صدقة» | - | ١٧٣/٨ |
| «ليس فيها شىء» | ابن عباس | ٦٢/٨ |
| «ليس كما قال أبو السنابل...» | عبد الله بن عتبة | ٥٣٥/١٥ |
| «ليس لشىء من ذلك قضاء» | عائشة | ٩٢/٣، ٩٣ |
| «ليس لقاتل شىء...» | عبد الله بن عمرو | ٤٥٦/١٢، ٦٥/١٧ |
| «ليس لقاتل شىء» | عمر بن الخطاب | ٢٠٢/١٦، ٣٠٠، ٤٨٠ |
| «ليس لقاتل من الميراث شىء» | عبد الله بن عمرو | ٦٥/١٧ |
| «ليس لقاتل ميراث» | ابن عباس | ٤٥٥/١٢ |
| «ليس لقاتل وصية» | على | ٦٦/١٣ |
| «ليس لك إلا ذلك» | وائل بن حجر | ٤٢٦/٢٠ |
| «ليس لك شىء إنك أبيت» | جابر | ٢٨٤/١٦ |
| «ليس لك شىء؛ قد قلت لك: انتظر. فأبيت» | محمد بن طلحة | ٢٨٥/١٦ |
| «ليس لك عليه نفقة» | فاطمة بنت قيس | ٣٠٨/١٤، ٥٤٥/١٥، ٦٣/١٦ |

| | | |
|---|---|---|
| «ليس لك عليهم نفقة وعليك العدة...» | فاطمة بنت قيس | ٦٥/١٦ |
| «ليس لك فيه إلا ذلك» | وائل بن حجر | ٤٠٨/٢٠ |
| «ليس لك منه إلا ذلك» | وائل بن حجر | ٤٢٧/٢٠ |
| «ليس للجار أن يمنع جاره أن يضع أعواده فى حائطه» | أبو هريرة | ٥٣٨/١١ |
| «ليس للعبد من الغنيمة شيء...» | على | ٣١١/١٨ |
| «ليس للقاتل شيء» | عمر بن الخطاب | ٤٥٥/١٢ |
| «ليس للقاتل من الميراث شيء» | عبد الله بن عمرو | ٤٥٦/١٢ |
| «ليس لله شريك» | أسامة بن عمير | ٣٠٩/٢١ |
| «ليس للولى مع الثيب أمر...» | ابن عباس | ١٢١/١٤ |
| «ليس لها أن تنطلق إلا بإذن زوجها» | عبد الله بن عمر | ٤٣٠/١٠ |
| «ليس لهم من الفيء والغنيمة شيء..» | بريدة | ٢٨٥/١٣ |
| «ليس لى من هذا الفيء إلا الخمس...» | عبد الله بن عمرو | ٤٠٤/١٣ |
| «ليس المسكين بهذا الطواف..» | أبو هريرة | ٣٨٦/١٣ |
| «ليس المسكين الذى ترده التمرة والتمرتان» | أبو هريرة | ٣٨٥/٨ ، ٣٨٧/١٣ |
| «ليس المسكين هذا الطواف...» | أبو هريرة | ٣٨٧/١٣ |
| «ليس من امبر صيام فى السفر» | كعب بن عاصم الأشعرى | ٥٤٥/٨ |
| «ليس من البر الصوم فى السفر» | جابر بن عبد الله | ٥٤٦/٨ |
| «ليس من البر الصيام فى السفر» | كعب بن عاصم الأشعرى | ٥٤٥/٨ |
| «ليس منا من ضرب الخدود وشق الجيوب ودعا بدعوى الجاهلية» | عبد الله بن مسعود | ٤٧٠/٧ |
| «ليس منا من غش» | أبو هريرة | ١٨٦/١١ |
| «ليس منا من لطم الخدود...» | عبد الله بن مسعود | ٤٧١/٧ |
| «ليس منا من لم يتغن بالقرآن» | أبو هريرة وسعد بن أبى وقاص | ١٦٢/٢١، ١٦٣ |
| «ليس منا من لم يتغن بالقرآن» | أبو لبابة | ٤٣٤/٣ ٤٣٥، ١٦٤/٢١ |
| «ليس مولود يولد إلا على هذه الملة...» | الأسود بن سريع | ٤٠٣/١٢ |

| | | |
|---|---|---|
| «ليس المؤمن بالطعان ولا اللعان...» | عبد الله | ٢١/٣٤، ٢١١ |
| «ليس المؤمن الذى يشبع وجاره جائع إلى جنبه» | ابن عباس | ١٩/٥٨٥ |
| «ليس هو كما تظنون...» | ابن مسعود | ٢١/٦ |
| «ليس الواصل بالمكافئ....» | عبد الله بن عمرو | ١٣/٤٣٣ |
| «ليسأل أحدكم فى الحاجة أو الفتق...» | معاوية بن حيدة | ١٣/٤١٧ |
| «ليست بالحيضة إنما هو عرق» | أم سلمة | ١٥/٤٩٦ |
| «ليست بنجس» | أبو قتادة | ٢/٢٣٩ |
| «ليست تلك بمعرفة» | ابن أبى نجيح | ٢٠/٣٧٠ |
| «ليست السنة بألا تمطروا...» | أبو هريرة | ٧/١٢٦ |
| «ليستر أحدكم صلاته ولو بسهم» | سبرة بن معبد | ٤/٣٣٠ |
| «ليستمتع أحدكم بحله ما استطاع» | أبو أيوب الأنصارى | ٩/٣٨٢ |
| «ليستمتع المرء بأهله وثيابه» | عطاء | ٩/٣٨١ |
| «ليشربن أناس من أمتى الخمر...» | أبو مالك الأشعرى | ١٧/٤١٣، ٢١/١٣٣ |
| «ليصل أحدكم فى ثوبين...» | عبد الله بن عمر | ٤/٢٢٦ |
| «ليصل من شاء منكم فى رحله» | جابر | ٥/٥٤٧، ٦/١٩١ |
| «ليصوت: يا راعى الإبل ثلاثًا...» | أبو سعيد الخدرى | ١٩/٥٧٩ |
| «ليطعم ستين مسكينا وليرجعك» | ابن عباس | ١٥/٤١٧ |
| «ليعلم بها قبر أخى وأدفن إليه من مات من أهلى» | المطلب بن عبد الله | ٧/٢٧٥، ٢٧٦ |
| «ليفتحن لكم الشام...» | عبد الله بن حوالة | ١٨/٥٩٢ |
| «ليقرأن القرآن رجال لا يجاوز تراقيهم...» | عقبة بن عامر | ٦/٣٧٦ |
| «ليقم إليه رجل منكم فليأخذ بيده...» | ابن عباس | ١٧/٤٧٩ |
| «ليكونن فى أمتى أقوام يستحلون الحرير...» | أبو عامر أو أبو مالك | ٢١/١٣٣ |
| «ليكونن من أمتى أقوام يستحلون...» | أبو عامر أو أبو مالك | ٦/٥١٧ |
| «الليل خلق من خلق الله عز وجل عظيم» | أبو رزين | ١٩/١٨٧ |
| «ليلة سبع وعشرين» | معاوية بن أبى سفيان | ٩/١٦٥ |
| «ليلة الضيف حق على كل مسلم...» | أبو كريمة | ١٩/٥٠ |
| «ليلينى منك أولو الأحلام والنهى» | عبد الله بن مسعود | ٦/١١ |

| | | |
|---|---|---|
| «ليلينى منكم ذوو الأحلام والنهى» | عبد الله بن مسعود | ١١/٦ |
| «ليمسح أحدكم إذا كان مسافرًا على خفيه...» | صفوان بن عسال | ٣٣٧/٢ |
| «ليمسك عن الشر فإن ذلك له صدقة» | أبو موسى الأشعرى | ٢٦٨/٢٠ |
| «لئن بقيت لآمرن» | عبد الله بن عباس | ٨٣/٩ |
| «لئن سلمت إلى قابل لأصومن يوم التاسع» | ابن عباس | ٨١/٩ |
| «لئن صدق ليدخلن الجنة» | أنس | ٢٠٠/٩ |
| «لئن عشت لأخرجن اليهود والنصارى...» | عمر | ٨٥/١٩ |
| «لئن قصرت فى الخطبة لقد عرضت المسألة...» | البراء | ٣٠٧/٢١ |
| «لينبعث من كل رجلين أحدهما...» | أبو سعيد الخدرى | ١٣٧/١٨ |
| «لينتهين أقوام عن رفعهم أبصارهم عند الدعاء...» | أبو هريرة | ٣٧١/٤ |
| «لينتهين أقوام عن ودعهم الجمعات أو ليختمن الله على قلوبهم...» | ابن عمر وأبو هريرة | ٢٢٨/٦ |
| «لينتهين أقوام يرفعون أبصارهم إلى السماء...» | جابر بن سمرة | ٣٧١/٤ |
| «لينزلِ المهاجرون ههنا» | رجل من الصحابة | ١٤٥/١٠ |
| «ليؤذن لكم خياركم وليؤمكم أقرؤكم» | عبد الله بن عباس | ١٩٣/٣ |
| «ليؤمكم أكثركم قراءة للقرآن» | عمرو بن سلمة | ٦٠٨/٥ |


## (الميم)


| | | |
|---|---|---|
| «ما أبالى ما أتيت إن أنا شربت ترياقا...» | عبد الله بن عمرو | ٥٦٤/١٩ |
| «ما أبقيت لأهلك؟» | عمر بن الخطاب | ٣٣٢/٨ |
| «ما أثنيت به على ربك فهاته» | عبد الرحمن بن هشام | ١٨٧/٢ |
| «ما اجتمعن فى امرئ إلا دخل الجنة» | أبو هريرة | ٣٦٤/٨ |
| «ما أجد لك رخصة» | عمرو بن أم مكتوم | ٥٠٨/٥ |
| «ما أجد له فى غزوته هذه...» | يعلى ابن منية | ٢٢٨/١٣ |
| «ما أجد ما أحملك...» | أبو مسعود الأنصارى | ٩٦/١٨ |
| «ما أجد ما أعطيك» | رجل من بنى أسد | ٤٢٤/١٣ |

| | | |
|---|---|---|
| «ما أحب أن أنكئه...» | - | ٣٤٦/١٣ |
| «ما أحب أني حكيت إنسانًا وأن لي كذا وكذا» | عائشة | ٢٢٥/٢١ |
| «ما أحد أغير من الله ولذلك حرم الفواحش...» | ابن مسعود | ١٤٨/٢١ |
| «ما أحد يدخل الجنة فيتمنى أن يخرج منها...» | أنس بن مالك | ٥٣٣/١٨ |
| «ما أحرز الولد أو الوالد فهو لعصبته من كان» | عبد الله بن عمرو | ٤٠٠/٢١ |
| «ما أحسن زرع ظهير» | رافع بن خديج | ١٨١/١٢ |
| «ما أحسن هذا» | ابن عباس | ١٧٠/١٥ |
| «ما أحسنَ هذا البساطَ!» | ابن عمر | ١٦٣/٥ |
| «ما أحسن هذا! فما لك من الولد؟» | هانئ بن يزيد | ٤٢٩/٢٠ |
| «ما أحطتم عليه وأعلمتموه فهو لكم...» | أنس | ٢٢١/١٢ |
| «ما أحل الله شيئا أبغض إليه من الطلاق» | محارب بن دثار | ٢٠٩/١٥ |
| «ما أحل الله في كتابه فهو حلال...» | أبو الدرداء | ٦١٦/١٩ |
| «ما إخاله سرق» | أبو هريرة | ٣٣٩/١٧ |
| «ما أخذ في أكمامه...» | عبد الله بن عمرو | ٥٧٥/١٩، ٥٧٦ |
| «ما أدركتم فصلوا وما فاتكم فأتموا» | - | ٥٦٣/٤، ٤٠٨/٧ |
| «ما أدري أيد رجل أم يد امرأة» | عائشة | ٢٤/١٤ |
| «ما أدري بأيهما أنا أشد فرحا...» | الشعبي | ٧٢/١٤ |
| «ما أدري تبع ألعينا كان أم لا؟» | أبو هريرة | ٥٢٤/١٧ |
| «ما أذن الله لشيء كأذنه لنبي يتغنى بالقرآن» | أبو هريرة | ١٦٠/٢١ |
| «ما أذن الله لشيء ما أذن لنبي...» | أبو هريرة | ٤٣٤/٣، ٣٧٩/٥، ٢١/ ١٥٩، ١٦٠ |
| «ما أراك إلا قد شربته» | عبد الله بن الزبير | ٥٥٣/١٣ |
| «ما أراكم تنتهون يا معشر قريش...» | علي | ١٥١/١٩ |
| «ما أردت أن تعطيه؟» | عبد الله بن عامر | ٥٥/٢١ |
| «ما أردت بها؟» | ركانة بن عبد يزيد | ٢٦٩/١٥ |
| «ما أرى الإمام إذا أمَّ القوم إلا قد كفاهم» | أبو الدرداء | ٢٩/٤ |
| «ما أرى أن نفتحه...» | موسى بن عقبة | ٢٨٠/١٨ |
| «ما أرى بأسا، من استطاع منكم...» | جابر بن عبد الله | ٥٤٢/١٩ |
| «ما استحل به فرج المرأة من مهر...» | عائشة | ٥٢٦/١٤ |

| | | |
|---|---|---|
| «ما استخلف خليفة إلا له بطانتان» | أبو سعيد | ٣٢٣/٢٠ |
| «ما أسكر كثيره فقليله حرام» | ابن عمر | ٤١٨/١٧ |
| «ما أسكر كثيره فقليله حرام» | جابر بن عبد الله | ٤١٧/١٧ |
| «ما أسكر كثيره فقليله حرام» | سعد بن أبي وقاص، ابن عمر | ١٠٩/٢١ |
| «ما أسكر كثيره فقليله حرام» | عبد الله بن عمرو | ٤١٩/١٧ |
| «ما اسمك؟» | حزن | ٤٠٢/١٩ |
| «ما اسمك» | بشير بن معبد | ٥٣٠/٧ |
| «ما اسمه؟» | سهل بن سعد | ٤٠١/١٩ |
| «ما اسمه» | ابن عمر | ٣٧٠/٢٠ |
| «ما أصاب بحده فكل...» | عدى بن حاتم | ١٧٤/١٩، ٢١٤ |
| «ما أصبت بحده فكله...» | عدى بن حاتم | ١٧٤/١٩ |
| «ما أصبح عند آل محمد صاع تمر» | أنس بن مالك | ٤٣٧/١١ |
| «ما أصبح لآل محمد ولا أمسى إلا صاع...» | أنس بن مالك | ٤٣٦/١١ |
| «ما أصدقك؟» | ابن عباس | ١٨٢/١٥ |
| «ما أصر من استغفر وإن عاد» | أبو بكر | ١٧/٢١ |
| «ما اصطدتموه وهو حى فكلوه...» | جابر | ٢٣٧/١٩ |
| «ما أضحى مؤمن يلبى حتى تغرب...» | عامر بن ربيعة | ٤٢٧/٩ |
| «ما أعجب شيء رأيت؟» | بريدة | ٢٦٥/٢٠ |
| «ما أعطيتكها لتلبسها» | على | ١١٥/٥ |
| «ما أعطيتموهن فهو صدقة» | عمر بن الخطاب | ٣٢٣/٨ |
| «ما أعلم إلا قد حرمت عليه» | أبو العالية الرياحى | ٣٩٨/١٥ |
| «ما اغبرت قدما عبد...» | أبو عبس | ٥٣٢/١٨ |
| «ما أغناك الله لا تسأل الناس شيئا...» | عطية | ٣٩٤/٨ |
| «ما أقفر أهل بيت من أدم فيه خل...» | جابر | ٤٤٢/١١ |
| «ما أكل أحد من بنى آدم طعامًا...» | مقدام بن معديكرب | ١٤٥/١٢ |
| «ما أكل لحمه فلا بأس ببوله» | البراء وجابر بن عبد الله | ٧٩ /٥ |
| «ما أكل لحمه فلا بأس بسؤره» | جابر بن عبد الله | ٨٠/٥ |
| «ما ألقى البحر أو جزر عنه فكلوه...» | جابر | ٢٣٦/١٩ |

| | | |
|---|---|---|
| «ما ألوانها؟» | أبو هريرة | ٤٣٢/١٤، ٢٨٣/١٧ |
| «ما لك؟» | أبو هريرة | ٤٨٥/٨ |
| «ما لك؟» | عمار بن ياسر | ٤٤٧/١٩ |
| «ما لك» | عائشة | ٢٩٦/٩، ٢٩٦/١٨ |
| «ما لك أنفست؟» | أم سلمة | ٥١٧/٨ |
| «ما لك أنفست؟» | عائشة | ٤٠٥/٢ ، ٥٧١/٩ |
| «ما لك لا تلبس القبطية؟» | أسامة بن زيد | ٢٢١/٤ |
| «ما لك ولها؟ معها سقاؤها وحذاؤها...» | زيد بن خالد الجهنى | ٣٥٠/١٢ |
| «ما لك ولها؟! معها سقاؤها وحذاؤها...» | عبد الله بن عمرو | ٢٥٠/٨ |
| «ما لك يا أبا قتادة؟» | أبو قتادة | ١٤٤/١٣ |
| «ما لك يا أم السائب» | جابر بن عبد الله | ١٧١/٧ |
| «ما لك يا ثمام؟» | أبو هريرة | ٢٢٢/١٨، ٢٢٣ |
| «ما لك يا زبير؟» | عروة | ٣٤٧/١٣ |
| «ما لك يا عائشة بهت؟» | عائشة | ٥١٥/١٥ |
| «ما لك يا عبد الرحمن؟» | عبد الرحمن بن عوف | ٥٩٨/٤، ٣٣٤/١٩ |
| «ما لك يا عمرو؟» | عمرو بن العاص | ٣٢٤/١٨ |
| «ما لكما لم تصليا معنا؟» | يزيد بن الأسود | ٤٢٧/٤ |
| «ما له؟» | طاوس | ٢٠٥/٢٠ |
| «ما لهم قتلوه قتلهم الله» | ابن عباس | ١٩٠/٢ |
| «ما لى أراكم تأتونى قُلحًا» | عبد الله بن عباس | ١٠٩/١ |
| «ما لى أراكم رافعى أيديكم كأنها أذناب خيل» | جابر بن سمرة | ٣٦٣/٤ |
| «ما لى أراكم عزين ؟» | جابر بن سمرة | ٤٠٣/٦ |
| «ما لى أرى أجسام بنى أخى ضارعة؟...» | جابر بن عبد الله | ٥٤١/١٩ |
| «ما لى رأيتكم أكثرتم التصفيح؟» | سهل بن سعد | ٥٥٣/٤ |
| «ما لى رأيتكم أكثرتم من التصفيح» | سهل بن سعد | ٨٦/٦ |
| «ما لى مما أفاء الله عليكم...» | عبد الله بن عمرو | ٣٣٧/١٨ |
| «ما لى يا عائشة والدنيا» | عائشة | ١٢٨/٢١ |
| «ما المسئول عنها بأعلم من السائل» | عمر | ٧١/٢١ |
| «ما من آدمى... » | ابن عباس | ٨/٢١ |

| | | |
|---|---|---|
| «ما من أحد يخذل مسلما فى موطن...» | جابر بن عبد الله، أبو طلحة | ٥٩٨/١٦ |
| «ما من أحد يدع صفراء أو بيضاء...» | أبو هريرة | ٢١٩/٨ |
| «ما من أحد يسلم على إلا رد الله إلى روحى» | أبو هريرة | ٥٠٤/١٠ |
| «ما من امرأة تخرج إلى المسجد تعصف ريحها...» | أبو هريرة | ٤٤٠/٦ |
| «ما من امرأة تخرج إلى المسجد فتعصف ريحها...» | أبو هريرة | ١٢١/٦ |
| «ما من امرأة تضع ثيابها فى غير بيت زوجها...» | عائشة | ١٦٣/١٥ |
| «ما من امرئ تكون له صلاة بليل...» | عائشة | ٣٨٧/٥ |
| «ما من امرئ مسلم تحضره صلاة مكتوبة فيحسن وضوءها...» | عثمان بن عفان | ٣٩٤/٤ |
| «ما من أمير استرعى رعية...» | معقل بن يسار | ٥٧٣/١٦ |
| «ما من أمير عشرة إلا يؤتى به يوم القيامة ويده مغلولة إلى عنقه» | أبو هريرة | ٢٧٢/٢٠ |
| «ما من أمير عشرة إلا وهو يؤتى به يوم القيامة مغلولًا...» | أبو هريرة | ٢٧٢/٢٠ |
| «ما من أمير عشرة إلا يؤتى به يوم القيامة مغلولًا...» | أبو هريرة | ١٠٦/٦ |
| «ما من أمير يلى أمر المسلمين...» | معقل بن يسار | ١٤٠/١٨ |
| «ما من أيام العمل الصالح...» | ابن عباس | ٧٤/٩، ٧٥ |
| «ما من بعير إلا على ذروته شيطان...» | أبو لاس الخزاعى | ٥٢٩/١٠ |
| «ما من ثلاثة فى قرية ولا بدو لا تقام فيهم» | أبو الدرداء | ٤٩٩/٥ |
| «ما من حاكم يحكم بين الناس...» | عبد الله بن مسعود | ٢٤٨/٢٠، ٢٧٦ |
| «ما من خارج يخرج من بيته فى طلب العلم» | صفوان بن عسال | ٣٣٦/٢ |
| «ما من ذنب أجدر أن يعجل الله لصاحبه العقوبة...» | أبو بكرة | ١٧٩/٢١ |
| «ما من رجل ضاف قوما وأصبح محروما...» | المقدام بن معديكرب | ٥٠/١٩ |

| | | |
|---|---|---|
| «ما من رجل لا يؤدى زكاة ماله إلا...» | عبد الله بن مسعود | ٧/٨ |
| «ما من رجل مسلم يصاب بشىء...» | أبو الدرداء | ٢٥٥/١٦ |
| «ما من رجل مسلم يموت فيقوم على جنازته أربعون رجلًا...» | ابن عباس | ٢٥٠/٦، ٢٥١ |
| «ما من رجل يتوضأ فيحسن الوضوء...» | عثمان بن عفان | ١٩١/١ |
| «ما من رجل يسترعى رعية يموت...» | معقل بن يسار | ٥٧٣/١٦ |
| «ما من رجل يكون بأرض قى فيؤذن بحضرة الصلاة...» | سلمان الفارسى | ١٤٢/٣ |
| «ما من رجل يموت فيترك غنما أو إبلا..» | أبو ذر | ٣٧٢/١٣ |
| «ما من شىء توعدونه إلا وقد رأيته فى صلاتى» | جابر بن عبد الله | ٢٢/٧ |
| «ما من صاحب إبل لا يؤدى زكاتها» | أبو هريرة | ٣٤١/٨ |
| «ما من صاحب إبل ولا غنم ولا بقر...» | جابر بن عبد الله | ٣٣٩/٨ |
| «ما من صاحب ذهب ولا فضة لا يؤدى منها حقها... » | أبو هريرة | ٩/٨، ١٣١، ١٩٥، ١٣/ ٣٦٤ |
| «ما من صاحب كنز لا يؤدى زكاته إلا...» | أبو هريرة | ٧/٨ |
| «ما من عبد إلا وقد أخطأ أو هم بخطيئة...» | ابن عباس | ٨/٢١ |
| «ما من عبد كانت له نية فى أداء دينه إلا كان له من الله عون » | عائشة | ٣٠٩/١١، ٣١٠ |
| «ما من عبد له عند الله خير يحب أن يرجع...» | أنس بن مالك | ٥٣٣/١٨ |
| «ما من عبد يأتى الصلوات الخمس...» | أبو سعيد وأبو هريرة | ١٤/٢١ |
| «ما من عبد يحب الله ورسوله » | ابن عباس | ١٢١/١٢ |
| «ما من عبد يسترعيه الله رعية...» | معقل بن يسار | ١٤٠/١٨ |
| «ما من عبد يسجد لله سجدة...» | ثوبان | ٢٩٩/٥ |
| «ما من عبد يسجد لله سجدة أو يركع لله...» | أبو ذر | ٣٠٩/٥، ٣٧٣ |
| «ما من غازية تغزو فى سبيل الله...» | عبد الله بن عمرو | ٥٥٦/١٨ |
| «ما من فرس عربى إلا يؤذن له » | أبو ذر | ٢٢٥/١٣ |
| «ما من قوم يعمل فيهم بالمعاصى...» | أبو بكر الصديق | ٢٥٧/٢٠ |
| «ما من قوم يعمل فيهم بالمعاصى هم أكثر وأعز ممن يعمل بها...» | جرير | ٢٥٧/٢٠ |

| | | |
|---|---|---|
| «ما من كل الماء يكون الولد...» | أبو سعيد الخدرى | ٤٦٦/١٤ |
| «ما من محرم يضحى للشمس...» | جابر بن عبد الله | ٥١٣/٩ |
| «ما من مسلم تحضره صلاة مكتوبة...» | عثمان | ١٢/٢١ |
| «ما من مسلم تصيبه مصيبة فيقول ما أمره الله» | أم سلمة | ٤٧٥/٧ |
| «ما من مسلم يتوضأ فيحسن الوضوء...» | عقبة بن عامر | ٢٣٤/١، ٣٦٢/٤ |
| «ما من مسلم يتوفى له ثلاثة لم يبلغوا الحنث» | أنس بن مالك | ٤٨٤/٧ |
| «ما من مسلم يغرس غرسًا إلا كان له...» | جابر بن عبد الله | ١٨٥/١٢ |
| «ما من مسلم يغرس غرسًا أو يزرع زرعًا...» | أنس | ١٨٤/١٢ |
| «ما من مسلم يموت فيقوم على جنازته أربعون» | عبد الله بن عباس | ٣٦١/٧ |
| «ما من مسلمين يلتقيان فيتصافحان...» | البراء بن عازب | ٦٧/١٤ |
| «ما من مسلمين يموت لهما ثلاثة...» | أبو ذر | ٥٦٣/١٨ |
| «ما من مسلمين يموت لهما ثلاثة» | أبو هريرة | ٤٨٧/٧ |
| «ما من مصيبة تصيب المسلم إلا كفر الله بها» | عائشة | ١٥٩/٧ |
| «ما من مصيبة يصاب بها المؤمن إلا كفر بها» | عائشة | ١٦٠/٧ |
| «ما من مكلوم يكلم فى الله...» | أبو هريرة | ٥١٤/١٨ |
| «ما من ملب يلبى إلا لبى» | سهل بن سعد | ٤٢٦/٩ |
| «ما من مولود إلا يولد على الفطرة...» | الأسود بن سريع | ٤٠٢/١٢ |
| «ما من مولود فى بنى آدم إلا يولد على الفطرة» | الأسود بن سريع | ٤٠١/١٢ |
| «ما من مؤمن إلا أنا أولى الناس به...» | أبو هريرة | ٥١٩/١٢ |
| «ما من مؤمن إلا وأنا أولى به...» | أبو هريرة | ٥٢٦/١٣ |
| «ما من مؤمن تشوكه شوكة فما فوقها...» | عائشة | ١٦١/٧ |
| «ما من ميت يصلى عليه أمة من المسلمين...» | عائشة | ٣٦٠/٧ |
| «ما من نبى بعثه الله فى أمة قبلى إلا كان له من أمته حوارىّ...» | عبد الله بن مسعود | ٢٥١/٢٠ |
| «ما من نبى من الأنبياء إلا وقد أعطى...» | أبو هريرة | ١٢/١٨ |
| «ما من نبى ولا وال إلا وله بطانتان...» | أبو هريرة | ٣٢٤/٢٠ |
| «ما من نفس تقتل ظلما إلا كان...» | ابن مسعود | ١٢٩/١٦ |
| «ما من يوم أكثر أن يعتق الله فيه عبدًا من النار من يوم عرفة...» | عائشة | ٧٦/١٠ |

| | | |
|---|---|---|
| «ما من يوم يصبح العباد فيه إلا...» | أبو هريرة | ٣٥٦/٨ |
| «ما منعك أن تثبت » | سهل بن سعد | ٥٧/٦ |
| «ما منعك أن تجيبني إذ دعوتك؟» | أبو سعيد ابن المعلى | ٥٤٦/١٣ |
| «ما منعك أن تجيبني حين دعوتك؟...» | أبو سعيد ابن المعلّى | ٥٩٣/٤ |
| «ما منعك أن تحجى معنا العام» | ابن عباس | ٢٦٦/٩ |
| «ما منعك أن تركع ركعتين قبل أن تجلس؟» | أبو قتادة | ٢٩٠/٦ |
| «ما منعك أن تصلى مع الناس؟...» | محجن | ٤٢٣/٤ |
| «ما منعك أن تصلى؟» | عمران بن حصين | ١٧٤/٢ |
| «ما منعك يا فلان أن تصلى مع القوم؟» | عمران بن حصين | ٥١/٢، ١٧٠ |
| «ما منعكما أن تصليا مع الناس؟...» | يزيد بن الأسود | ٤٢٤/٤، ٤٢٦ |
| «ما منكم أحد ينجيه عمله» | أبو هريرة | ٣٩٧/٥ |
| «ما منكم رجل يُقَرِّب وضوءه فيمضمض» | عمرو بن عبسة السلمى | ٢٠٣/٥ |
| «ما منكم من أحد إلا سيكلمه ربه...» | عدى بن حاتم | ٣١٥/٨ |
| «ما منكم من أحد يتوضأ ثم يقول...» | عمر بن الخطاب | ٢٣٥/١ |
| «ما منكم من رجل يقرب وضوءه فيمضمض...» | عمرو بن عبسة السلمى | ٢٤٥/١ |
| «ما منكن من امرأة تقدم بين يديها من ولدها» | أبو سعيد | ٤٨٣/٧ |
| «ما نحل والد ولدًا خيرًا له من أدب حسن» | عمرو بن سعيد | ٣٤٢/٣، ٥٨٧/٥ |
| «ما نقصت صدقة من مال...» | أبو هريرة | ٣٥٦/٨ ، ٥٧٧/١٦ ، ١٨٣/٢١، ١٨٤ |
| «ما نقض قوم العهد قط إلا كان القتل بينهم» | بريدة | ٧٣/٧ ، ٧٤ ، ١٥٦/١٩ |
| «ما نهيتكم عنه فاجتنبوه» | أبو هريرة | ١٥٨/٢ |
| «ما نويت بذلك؟» | ركانة | ١٠٦/٢٠ |
| «ما هاتان الركعتان؟» | قيس الأنصارى | ٢٩٢/٥ |
| «ما هاتان الركعتان يا قيس؟» | قيس الأنصارى | ٢٠٨/٥ |
| «ما هبت جنوب إلا أسالت واديًا» | قتادة | ١٢٩/٧ |
| «ما هذا ، أدعوى الجاهلية؟» | جابر | ٤٠٧/٢٠ |
| «ما هذا؟» | ابن عباس | ٥٩٣/١٩ |
| «ما هذا؟» | أبو هريرة | ٣٩٨/١٤ |

| | | |
|---|---|---|
| «ما هذا؟» | أم سلمة | ٥٩١/١٩ |
| «ما هذا؟» | أنس | ٣٩٦/٥، ٤٤٨/١٣، ١٤/ ٥٦٠ |
| «ما هذا؟» | جابر بن عبد الله | ٥٤٦/٨ |
| «ما هذا؟» | حكيم بن حزام وعثمان | ١٧٠/١١ |
| «ما هذا؟» | على بن أبى طالب | ١٠٠/١٥ |
| «ما هذا الحبل؟» | أنس بن مالك | ٤٠٠/٥ |
| «ما هذا الطهور...» | عبد الله بن عباس | ٣٢٠/١ |
| «ما هذا الذى بلغنا عنكم؟» | أنس بن مالك | ٢٥١/١٣ |
| «ما هذا الذى يبلغنى من حديثكم ؟!» | أبو سعيد مولى المهرى | ٣٥٥/١٠ |
| «ما هذا من تمرنا» | أبو سعيد | ١٠٣/١١ |
| «ما هذا وقد نهيت عن القتال؟» | موسى بن عقبة | ٣٩٣/١٨ |
| «ما هذا يا أبا محمد؟» | أنس | ٢١٣/١٤ |
| «ما هذا يا أسماء؟...» | عائشة | ١٩٦/٤، ٢٣/١٤ |
| «ما هذا يا أم سلمة؟» | أم سلمة | ٥٧٥/١٥ |
| «ما هذا يا أم سلمة؟» | مالك | ٥٧٤/١٥ |
| «ما هذا يا حاطب؟» | على بن أبى طالب | ٤٨٠/١٨ |
| «ما هذا يا سلمان؟» | سلمان الفارسى | ٢٠٩/١١، ٤٥٥/٢١ |
| «ما هذا يا صاحب الطعام؟» | أبو هريرة | ١٨٦/١١ |
| «ما هذا يا عائشة؟» | عائشة | ٢٠١/٨ |
| «ما هذا يا عمر؟» | عائشة | ٣٤٣/١ |
| «ما هذا اليوم الذى تصومونه» | ابن عباس | ٧٨/٩ |
| «ما هذه؟» | عكرمة | ٢٢١/٢٠ |
| «ما هذه؟» | عمران بن حصين | ٥٤٩/١٩ |
| «ما هذه الأبنية» | عائشة | ١٩٢/٩ |
| «ما هذه الريح؟» | ابن عمر | ٤٤٥/١٧ |
| «ما هذه الريطة عليك » | عبد الله بن عمرو | ٤٣٩/٦ ، ٤٨٠/٩ |
| «ما هذه يا سلمان؟» | سلمان الفارسى | ٣٤٩/١٢ |

| | | |
|---|---|---|
| «ما هذه النحيرة التى أمرنى بها ربى عز وجل» | على بن أبى طالب | ٣/٤٩٠، ٤٩١ |
| «ما هو» | عائشة | ٩/٤٧ |
| «ما هؤلاء ؟» | أبو هريرة | ٣/٣٢٧ |
| «ما وراءك؟» | محمد بن عمار | ١٧/١٤٠ |
| «ما ولدنى من سفاح أهل الجاهلية شىء...» | ابن عباس | ١٤/٣٤٠ |
| «ما يبكيك؟» | محمد بن على | ١٨/٤٠٩ |
| «ما يبكيك؟» | سعد بن أبى وقاص | ١٨/٦١ |
| «ما يبكيك» | جابر بن عبد الله | ٩/٢٥٨ |
| «ما يبكيك» | عائشة | ٩/٣٠٣ |
| «ما يبكيك؟ أجائعة أنت أم عارية أنت؟» | ضميرة | ١٨/٤١١ |
| «ما يبكيك يا ابن الخطاب» | عمر بن الخطاب | ١٣/٤٩٠ |
| «ما يجلسكن» | على بن أبى طالب | ٧/٥٢٠ |
| «ما يحل لى مما أفاء الله عز وجل عليكم ...» | عبد الله بن عمرو | ١٣/٤٠٣ |
| «ما يحملك على قول بخ بخ» | أنس بن مالك | ١٨/٣٢٩ |
| «ما يحملك على قولك: بخ بخ؟» | أنس بن مالك | ١٨/١٤٨ |
| «ما يخرج رجل شيئا من الصدقة حتى...» | بريدة | ٨/٣٥٧ |
| «ما يدريك أنها رقية؟» | أبو سعيد | ١٢/١٣٧ |
| «ما يسرنى أن لى مثل أحد ذهبًا أنفقه » | أبو هريرة | ٧/٢٩٤ |
| «ما يصنع هؤلاء ؟» | ثعلبة بن أبى مالك | ٥/٣٢٦ |
| «ما يصيب المؤمن من شوكة فما فوقها...» | عائشة | ٧/١٦١ |
| «ما يصيب المؤمن من نصب ولا وصب...» | أبو هريرة | ٧/١٥٩ |
| «ما يعجلك يا جابر؟» | جابر | ١٤/٥٤٧ |
| «ما يعدل بين اثنين صدقة...» | أبو هريرة | ٨/٣٥٨ |
| «ما يقول ذو اليدين؟» | أبو هريرة | ٤/٥٦٨ |
| «ما يكن عندى من خير فلن أدخره عنكم» | أبو سعيد الخدرى | ٨/٣٨٤ |
| «ما يمنعكم أن تجيبوا؟» | زيد بن عاصم | ١٣/٢٥٦ |
| «ما يمنعكم أن تعلمونى» | عبد الله بن عباس | ٧/٣٦٤ |
| «ما يمنعكما من اتباعى» | صفوان بن عسال | ١٦/٥٩٣ |
| «ما ينبغى لنبى أن يضع أداته بعد أن لبسها» | ابن عباس | ١٣/٤٧٥ |

| | | |
|---|---|---|
| «ما ينتظرها أحد من أهل الأرض غيركم» | عائشة | ٥٣/٣ |
| «ما ينقم ابن جميل إلا أن كان فقيرًا» | أبو هريرة | ٢٧٥/١٢ ، ٢٧٦ |
| «ما ينقم ابن جميل إلا أنه كان فقيرًا...» | أبو هريرة | ١٠٣/٨ ٢٧٥/١٢ ، ٢٧٦ |
| «ماء الرجل أبيض» | ثوبان | ٢٥/٢ |
| «ماء زمزم لما شرب له» | أبو الزبير | ٣٥٩/١٠ |
| «الماء» | بهيسة عن أبيها | ٢٢٦/١٢ |
| «الماء طهور لا ينجسه شيء» | أبو سعيد الخدرى | ١٥/١، ٢٦٩/٢ |
| «الماء لا ينجس» | ابن عباس | ٢٩٤/٢ |
| «الماء لا ينجس إلا ما غير ريحه أو طعمه» | أبو أمامة | ٢٧٦/٢ |
| «الماء لا ينجسه شيء» | ابن عباس | ٢٩٤/٢ |
| «الماء لا ينجسه شيء إلا ما غلب عليه» | أبو أمامة الباهلى | ٢٧٦/٢ |
| «الماء من الماء» | أبو سعيد الخدرى | ١٧/٢ |
| «مات جاهدا مجاهدا...» | سلمة بن الأكوع | ٤١٣/١٦ |
| «مات رجل فقيل له: ما عملت؟» | حذيفة | ٣١٦/١١ |
| «مات اليوم رجل صالح فصلوا على أصحمة» | جابر | ٤٢٥/٧ |
| «مات اليوم عبد صالح أصحمة » | جابر بن عبد الله | ٣٥٩/٧ |
| «ماذا؟» | على | ٢٦٦/١٣ |
| «ماذا أعطيتها؟» | عائشة | ١٨٩/١٥ |
| «ماذا تلقى أمتى منك؟» | عبد الله بن الزبير | ٥٥٣/١٣ |
| «ماذا عندك؟» | سهل بن سعد | ٢٠٢/١٤ |
| «ماذا عندك يا ثمامة؟» | أبو هريرة | ١٨٦/١٣ |
| «ماذا فى الأمرين من الشفاء: الصبر والثفاء» | قيس بن رافع الأشجعى | ٥٣٢/١٩ |
| «مال الله بعضه فى بعض» | ميمون بن مهران | ٣٦٩/١٧ |
| «مال الله سرق بعضه بعضا» | ابن عباس | ٣٦٩/١٧، ٣٣١/١٨ |
| «الماهر بالقرآن مع السفرة الكرام البررة» | عائشة | ٢٩/٥ |
| «المائد فى البحر الذى يصيبه القىء» | أم حرام | ٢٣١/٩ |
| «مائة ألف نبى...» | أبو ذر | ١١/١٨ |
| «مائة من الإبل منها أربعون فى بطونها أولادها» | رجل من الصحابة | ٣٠٢/١٦ |
| «المتبايعان كل واحد منهما بالخيار..» | ابن عمر | ٢٢/١١ |

| | | |
|---|---|---|
| «المتشبع بما لم يعط كلابس ثوبى زور» | أسماء بنت أبى بكر | ١٥٨/١٥ |
| «المتطوع بالخيار إن شاء» | أم هانئ | ٥٢/٩ |
| «متعنا بنفسك» | - | ٦٤/١٧ |
| «متعها» | جابر بن عبد الله | ٥٥٨/١٤ |
| «متعها ولو نصف صاع من تمر» | جابر بن عبد الله | ٥٥٨/١٤ |
| «المتلاعنان إذا تفرقا لا يجتمعان أبدا» | ابن عمر | ٤٧٤/١٥ |
| «المتوفى عنها لا تلبس المعصفر...» | أم سلمة | ٥٧٢/١٥ |
| «متى توتر؟» | أبو قتادة | ٤٤٧/٥، ٤٤٨ |
| «مثل الصلوات الخمس كمثل نهر جار يمر..» | جابر بن عبد الله | ٥٢٣/٥ |
| «مثل القائم على حدود الله والواقع...» | النعمان بن بشير | ٣٥٦/٢١ |
| «مثل الذى لا يتم صلاته كمثل الحبلى...» | على بن أبى طالب | ٦٤٣/٤ |
| «مثل الذى يتصدق أو يعتق...» | أبو الدرداء | ٣٦٦/٨ ٣٦٧ |
| «مثل الذى يسترد ما وهب كمثل الكلب...» | عبد الله بن عمرو | ٣٣٨/١٢ |
| «مثل الذى يعتق عند الموت....» | أبو الدرداء | ٣٦٦/٨، ٣٠٨/٢١ |
| «مثل الذى يقرأ القرآن وهو له حافظ...» | عائشة | ٢٩/٥ |
| «مثل الذى يلعب بالنرد ثم يقوم فيصلى...» | أبو عبد الرحمن الخطمى | ١١٣/٢١ |
| «مثل الذين يغزون من أمتى...» | جبير بن نفير | ٩٤/١٨ |
| «مثل المجاهد فى سبيل الله كمثل الصائم القائم» | أبو هريرة | ٥١٦/١٨ |
| «مثل المسلمين واليهود والنصارى...» | أبو موسى | ١١٩/١٢ |
| «مثل المنفق والبخيل كمثل رجلين...» | أبو هريرة | ٣٥٣/٨ |
| «مثل مؤخرة الرحل» | عائشة | ٣٢٥/٤ |
| «مثل مؤخرة الرحل يكون بين يدى أحدكم...» | طلحة بن عبيد الله | ٣٢٦/٤ |
| «مثل المؤمنين فى توادهم وتعاطفهم وتراحمهم مثل الجسد» | النعمان بن بشير | ٩٥/٧ |
| «مثل الواقع فى حدود الله والمداهن فيها...» | النعمان بن بشير | ٢٥٥/٢٠، ٢٥٦ |
| «مثلت لى الحيرة كأنياب الكلاب...» | عدى بن حاتم | ٤٤٥/١٨ |

| | | |
|---|---|---|
| «مثلى ومثل الأنبياء قبلى...» | جابر بن عبد الله | ١٦/١٨ |
| «مثنى مثنى فإذا خشيت الصبح...» | عبد الله بن عمر | ٤٠٩/٥، ٤٤٣ |
| «مثنى مثنى فإذا خفت الصبح فأوتر بواحدة» | عبد الله بن عمر | ٤٠٩/٥ |
| «المجالس بالأمانة إلا ثلاثة مجالس...» | جابر | ٢٢٣/٢١ |
| «مجالسكم مجالسكم...» | أبو هريرة | ٣٥١/١٤ |
| «المحرم إذا لم يجد النعلين لبس الخفين » | ابن عمر | ٤٥٢/٩ |
| «المحرم لا ينكح ولا ينكح» | - | ٤٩٦/٩ |
| «المحرمة لا تنتقب ولا تلبس القفازين» | ابن عمر | ٤٤٠/٩ |
| «المحل لعن الله المحل والمحلل له» | عقبة بن عامر | ٤٠٣/١٤ |
| «المختلعات والمنتزعات هن المنافقات» | أبو هريرة | ١٩١/١٥ |
| «مدان من قمح» | ابن عباس | ٣٠٢/٨ |
| «المدبر لا يباع ولا يوهب.....» | عبد الله بن عمر | ٤٣٢/٢١ |
| «المدبر من الثلث » | عبد الله بن عمر | ٤٣٢/٢١ |
| «المدعى عليه أولى باليمين...» | عبد الله بن عمرو | ٢٥٥/٢١ |
| «المدينة حرام ما بين عير إلى ثور» | على بن أبى طالب | ٣٣٧/١٠ |
| «المدينة حرم ما بين عير إلى ثور» | أبو هريرة | ٣٣٩/١٠ |
| «مر أختك فلتختمر ولتركب...» | عقبة بن عامر الجهنى | ٢٢٠/٢٠ |
| «مر أختك فلتركب» | عكرمة | ٢١٩/٢٠ |
| «مر بالمعروف وانه عن المنكر» | البراء | ٣٠٧/٢١ |
| «مرّ بى ميكائيل وعلى جناحه أثر غبار...» | جابر بن عبد الله | ٢٧٧/٤ |
| «مرّ على الشيطان فتناولته فأخذته فخنقته..» | عبد الله بن مسعود | ١٧٨/٤ |
| «المرأة تلد فيحصر اللبن فى ثديها...» | المغيرة بن شعبة | ٢٢/١٦ |
| «المرأة المرأة» | الزبير | ٢٤٤/٧ |
| «المرأة يعقلها عصبتها ولا يرثون...» | ابن عباس | ٤٠٥/١٦ |
| «مرتهن بعقيقته» | - | ٣٧٦/١٩ |
| «مرحبا بالقوم غير الخزايا ولا الندامى» | ابن عباس | ١٠٩/١٣ |
| «مرحبًا بالوفد غير الخزايا» | ابن عباس | ٤٠٠/٨ |
| «مرحبا بأم هانئ» | أم هانئ | ٣١٢/١٨ |
| «مررت بك يا عمر وأنت ترفع صوتك» | أبو قتادة | ٣٧٥/٥ |

| | | |
|---|---|---|
| «مره فليتكلم وليستظل...» | ابن عباس | ٢٠٥/٢٠ |
| «مره فليراجعها ثم ليتركها حتى تطهر...» | ابن عمر | ٢١٣/١٥ |
| «مره فليراجعها ثم ليطلقها...» | ابن عمر | ٢١٨/١٥، ٢٢٨ |
| «مره فليراجعها ثم ليمسكها...» | عبد الله بن عمر | ٤٨٩/١٥ |
| «مره فليراجعها حتى تطهر ثم تحيض...» | ابن عمر | ٢١٠/١٥، ٢١٤ |
| «مره فليراجعها فإذا طهرت فليطلقها» | ابن عمر | ٢٢٣/١٥ |
| «مرها أن تركب...» | عكرمة | ٢١٩/٢٠ |
| «مرهم فليصوموا هذا اليوم» | سلمة بن الأكوع | ٤٧٥/٨ |
| «مروا أبا بكر إنكن صواحب يوسف...» | عائشة | ٦١٤/٥ |
| «مروا أبا بكر فليصل بالناس...» | أبو موسى | ٥٤٢/١٦ |
| «مروا أبا بكر فليصلِّ بالناس» | عائشة | ٢٧٤/٤، ٤٣٤، ٥٧٨/٥، ٦١٤ |
| «مروا أبا بكر فليصل بالناس» | عبد الله بن عمر | ٥٤١/١٦ |
| «مروا أبا بكر يصلى بالناس» | أبو موسى | ٥٧٠/٥ |
| «مروا الصبى بالصلاة ابن سبع واضربوه عليها ابن عشر» | سبرة | ٣٣١/٣ |
| «مروا الصبيان بالصلاة لسبع سنين...» | عبد الله بن عمرو | ٥٨٥/٥ |
| «مروا صبيانكم بالصلاة فى سبع سنين...» | عبد الله بن عمرو | ٢٠٤/٤، ٢٠٥ |
| «مروا صبيانكم بالصلاة لسبع...» | عبد الله بن عمرو | ٢٠٤/٤ |
| «مروها فلتغطى رأسها ولتركب» | عكرمة | ٢٢١/٢٠ |
| «مرى ابنك أن يزوجك» | سلمة بن أبى سلمة | ١٦٠/١٤ |
| «مرى غلامك النجار يعمل لى أعوادًا...» | سهل بن سعد | ١٤٧/١٢ |
| «مريه فليذهب إلى فلان بن فلان...» | عطاء بن يسار | ٤١١/١٥ |
| «مريه فليطعم ستين مسكينا» | عطاء بن يسار | ٤١١/١٥ |
| «مريه فليعتق رقبة» | خويلة بنت ثعلبة | ٤٠٩/١٥ |
| «مريه فليعتق رقبة» | عطاء بن يسار | ٤١٠/١٥ |
| «مريه يصوم شهرين متتابعين» | عطاء بن يسار | ٤١٠/١٥ |
| «مزق ملكه» | - | ٥٩٩/١٨ |
| «المسائل كدوح يكدح بها الرجل» | سمرة | ٣٩٠/٨ |

| | | |
|---|---|---|
| «المستبان شيطانان...» | عياض بن حمار | ١٨٢/٢١ |
| «المستبان ما قالا فعلى البادئ...» | أبو هريرة | ١٨٣/٢١ |
| «المستحاضة تدع الصلاة...» | عدى بن ثابت عن أبيه عن جده | ٣٥٢/١ |
| «مستريح ومستراح منه» | أبو قتادة ابن ربعى | ١٧٨/٧ |
| «المستشار مؤتمن» | أبو هريرة وأبو مسعود الأنصارى | ٣٢٦/٢٠، ٣٢٧ |
| «المسجد الحرام» | أبو ذر | ١٣٨/٥ |
| «مسحهما يحط الخطايا» | عبد الله بن عمر | ٥٤٩/٩، ٥٥٠ |
| «المسلم أخو المسلم...» | عقبة بن عامر الجهنى | ١٨٧/١١ |
| «المسلم أخو المسلم لا يظلمه ولا يسلمه...» | عبد الله بن عمر | ٤٤/١٢، ٣٩٥، ٥٢٩/١٧ |
| «المسلم إذا أنفق نفقة على أهله...» | أبو مسعود الأنصارى | ٥٣/١٦ |
| «المسلم من سلم المسلمون من لسانه ويده» | عبد الله بن عمرو | ١٢/٢١ |
| «المسلم من سلم المسلمون من لسانه ويده» | جابر | ١٢/٢١ |
| «المسلم يكفيه اسمه...» | ابن عباس | ١٨٤/١٩ |
| «المسلم يوم الجمعة مُحْرِم...» | ابن عمر | ٤٣٥/٦ |
| «المسلمون تتكافأ دماؤهم...» | عبد الله بن عمرو | ١٧٣/١٦ |
| «المسلمون تتكافأ دماؤهم...» | قيس بن عبادة | ١٧٦/١٦ |
| «المسلمون تكافأ دماؤهم...» | عبد الله بن عمرو | ١٧٨/١٦ |
| «المسلمون شركاء فى ثلاث » | رجل من الصحابة | ٢٢٨/١٢ |
| «المسلمون شركاء فى ثلاث» | رجل من المهاجرين | ٢٢٨/١٢ |
| «المسلمون شركاء فى الكلأ والماء والنار» | ثور بن يزيد | ٢٢٨/١٢ |
| «المسلمون على شروطهم...» | عمرو بن عوف | ٥٧٥/١١ |
| «المسلمون على شروطهم...» | - | ٥٢٨/١٤ |
| «المسلمون على شروطهم» | أبو هريرة | ٥٧٤/١١، ٢٨٤/١٢ |
| «المسلمون عند شروطهم...» | عمرو بن عوف | ٥٢٩/١٤ |
| «المسلمون عند شروطهم فيما وافق الحق» | أبو هريرة | ٥٢٩/١٤ |
| «المسلمون عند شروطهم ما وافق الحق» | عائشة، أنس | ٥٣٠/١٤ |
| «مصدق بعثه صالح فوجد رجلًا بالطائف...» | قيس بن سعد بن عبادة | ٢٦٢/٨ |

| | | |
|---|---|---|
| «مضت صلاتكم» | عامر بن ربيعة | ٣٢٣/٣ |
| «المضمضة والاستنشاق من الوضوء» | عائشة | ١٦١/١ |
| «مضى اثنان وعشرون وبقى سبع» | أبو هريرة وابن عمر | ١٥٧/٩ |
| «مضى ثنتان وعشرون» | أبو هريرة | ١٥٨/٩ |
| «مطل الغنى ظلم...» | أبو هريرة | ٥٤٥/١١ |
| «مع الغلام عقيقته فأهريقوا عنه دما...» | سلمان بن عامر الضبى | ٣٧٥/١٩ |
| «مع الغلام عقيقة فأهريقوا عنه الدم...» | سلمان بن عامر الضبى | ٣٧٣/١٩ |
| «مع من خرجتن...» | جدة حشرج بن زياد | ٢٣٤/١٣ |
| «معاشر المسلمين هذا يوم جعله الله عز وجل لكم عيدًا...» | أبو هريرة | ٤٣٣/٦ |
| «المعتدى فى الصدقة كمانعها» | أنس بن مالك | ٥٥/٨، ٢٦٢ |
| «المعدن جبار والبئر جبار والسائمة جبار» | هزيل بن شرحبيل | ٥٧٦/١٧ |
| «المعدن جبار وفى الركاز الخمس» | - | ٢٤٥/٨ |
| «معقبات لا يخيب قائلهن...» | كعب بن عجرة | ٩٣/٤ |
| «معك ماء» | المغيرة بن شعبة | ٣٣٣/٢، ٦١٠/٥ |
| «معكم منه شيء؟» | أبو قتادة | ٣١١/١٠ |
| «معه سقاؤه وحذاؤه يرد الماء ويرعى الشجر» | زيد بن خالد الجهنى | ٣٥١/١٢ |
| «معها حذاؤها وسقاؤها...» | زيد بن خالد الجهنى | ٣٥٩/١٢ |
| «معها سقاؤها وحذاؤها...» | عبد الله بن عمرو | ٣٦١/١٢ |
| «المعول عليه يعذب» | عمر بن الخطاب | ٥٠٠/٧ |
| «معى من ترون وأحب الحديث إلى أصدقه..» | مروان بن الحكم والمسور بن مخرمة | ٣٢٣/١٣، ٢١٦/١٨ |
| «مفتاح الصلاة الطهور...» | على بن أبى طالب | ٣٣٦/٣، ٤/ ٥٦، ٢٨٣، ٦٢١ |
| «مفتاح الصلاة الطهور وتحريمها التكبير» | أبو سعيد | ٥٠٧/٣، ٥٠٨ |
| «مفتاح الصلاة الوضوء...» | أبو سعيد الخدرى | ٦٢١/٤، ٦٢٢ |
| «مقام الرجل فى الصف فى سبيل الله...» | عمران بن حصين | ٥٢٦/١٨ |
| «المقسطون عند الله يوم القيامة على منابر...» | عبد الله بن عمرو | ٢٤٣/٢٠ |
| «المكاتب عبد ما بقى عليه من مكاتبته درهم» | عبد الله بن عمرو | ٤٦٢/٢١ |

| | | |
|---|---|---|
| «مكانك» | على بن أبى طالب | ١١٢/١٥ |
| «مكانكم» | أبو هريرة | ٣٧/٥ |
| «مكة حرام...» | عبد الله بن عمرو | ٤٣١/١١ |
| «مكة مناخ...» | عبد الله بن عمرو | ٤٣١/١١ |
| «المكيال مكيال أهل المدينة والوزن وزن أهل مكة» | ابن عمر | ٤٢٠/١١ |
| «المكيال مكيال أهل مكة والميزان ميزان أهل المدينة» | ابن عباس | ٤٢١/١١ |
| «ملأ الله بيوتهم وقبورهم نارًا كما شغلونا عن الصلاة» | على بن أبى طالب | ٢٨٠/٣، ٢٨١ |
| «الملائكة تصلى على أحدكم ما دام فى مصلاه..» | أبو هريرة | ٨٨/٤ |
| «الملائكة يتعاقبون فيكم، ملائكة بالليل وملائكة بالنهار» | أبو هريرة | ٢٩٢/٣ |
| «الملح» | بهيسة عن أبيها | ٢٢٦/١٢ |
| «الملح بالملح...» | عبادة بن الصامت | ٥٤/١١ |
| «ملعون ملعون من حملها عليكم بهذه...» | عتبة بن عويم | ٩/٢٠ |
| «ملعون من فرق» | عمران بن حصين | ٤١٥/١٨ |
| «ملعون من وقع على بهيمة» | ابن عباس | ٢٢٣/١٧ |
| «ملكوا أمرهم امرأة» | أبو بكرة | ٣٤٧/٢٠ |
| «مم أطهرك؟» | بريدة | ٧/١٢، ٣٢٤/١٥، ١٧/ ١٥٩، ١٦٠، ١٩٩ |
| «مم ذاك؟» | أبو هريرة | ٢٨٣/١٧ |
| «مما كنت ضاربًا منه ولدك...» | جابر | ٣٢٩/١١ |
| «ممن القوم» | ابن عباس | ١٠٩/١٣ |
| «من آتاه الله مالًا فلم يؤد زكاته...» | أبو هريرة | ٦/٨، ٣٦٤/١٣ |
| «من آسى معسرًا أو وضع عنه...» | أبو قتادة | ٤٨٨/١١ |
| « من آمن بالله ورسوله وأقام الصلاة...» | أبو هريرة | ٥٢/١٨، ٥١٩ |
| «من آوى ضالة فهو ضال ما لم يعرفها» | زيد بن خالد الجهنى | ٣٦٧/١٢ |

| | | |
|---|---|---|
| «من ابتاع سرقة وهو يعلم أنها سرقة...» | شيخ من أهل المدينة | ٢٣٨/١١ |
| «من ابتاع شاة مصراة فهو بالخيار ثلاثة أيام» | أبو هريرة | ١٨٤/١١ |
| «من ابتاع طعامًا فلا يبعه حتى يكتاله» | ابن عباس | ١٦٣/١١ |
| «من ابتاع طعامًا فلا يبيعه حتى يستوفيه» | ابن عمر وجابر | ١٥٦/١١، ١٥٨ |
| «من ابتاع طعامًا فلا يبيعه حتى يستوفيه» | أبو هريرة | ٤٢٠/١١ |
| «من ابتاع طعامًا فلا يبيعه حتى يقبضه» | ابن عمر | ١٥٦/١١، ١٥٧ |
| «من ابتاع عبدًا فماله للذى باعه...» | عبد الله بن عمر | ٩٣/٨ |
| «من ابتاع مصراة فهو بالخيار...» | أبو هريرة | ٣٧/١١ |
| «من ابتاع نخلًا بعد أن تؤبر فثمرتها للذى أبرها...» | ابن عمر | ٢٠٠/١١ |
| «من ابتاع نخلًا بعد أن تؤبر فثمرتها للذى باعها» | ابن عمر | ٢٠٠/١١ |
| «من ابتاع نخلًا قبل أن تؤبَّر فثمرتها للذى باعها» | عبد الله بن عمر | ١٠٦/١١ |
| «من ابتغى القضاء وسأل عليه الشفعاء وكل إلى نفسه...» | أنس | ٢٨٩/٢٠ |
| «من ابتلى بالقضاء بين المسلمين فليعدل » | أم سلمة | ٤٠١/٢٠ |
| «من ابتلى بالقضاء بين الناس فلا يرفعن صوته على أحد الخصمين...» | أم سلمة | ٤٠٢/٢٠ |
| «من ابتلى من البنات بشىء فأحسن إليهن...» | عائشة | ٧٧/١٦ |
| «من أبو هذا معك؟» | اللجلاج | ١٧٣/١٧ |
| «من أتاكم وأمركم جميع...» | عرفجة | ٦/١٧ |
| «من أتاهم منا فأبعده الله» | أنس | ١[illegible]/١٩ |
| «من أتت عليه ستون سنة فقد أعذر الله إليه فى العمر» | أبو هريرة | ١٤٩/٧ |
| «من اتخذ غير ذلك فهو غال أو سارق» | المستورد بن شداد | ٣٠٧/١٣ |
| «من اتخذ كلبًا إلا كلب زرع أو غنم أو صيد» | ابن عمر | ٣٤٧/١١ |
| «من اتخذ كلبًا إلا كلب ماشية...» | ابن عمر | ٣٤٤/١١ |
| «من اتخذ كلبًا إلا كلب ماشية أو صيد...» | أبو هريرة | ٢٥٠/٢ |

| | | |
|---|---|---|
| «من اتخذ كلبًا غير كلب زرع ولا ضرع...» | ابن عمر | ٣٤٧/١١ |
| «من أتى بمولى فله سلبه» | - | ٢٠١/١٣ |
| «من أتى الجمعة من الرجال والنساء فليغتسل» | ابن عمر | ٢٧٢/٦ |
| «من أتى عرافا أو كاهنا فصدقه بما يقول...» | أبو هريرة | ٤٨٥/١٦ |
| «من أتى عرافا فسأله عن شيء...» | بعض أزواج النبى ﷺ | ٤٩٤/١٦ |
| «من أتى الغائط فليستتر...» | أبو هريرة | ٢٨٧/١ |
| «من أتى فراشه وهو ينوى أن يقوم يصلى..» | أبو الدرداء | ٣٨٨/٥ |
| «من أتى كاهنا فصدقه بما يقول...» | أبو هريرة | ٣٦٤/١٤ |
| «من أتى مسجد قباء فصلى فيه كانت كعمرة» | أسيد بن ظهير | ٥١٥/١٠ |
| «من أتى المسجد لشيء فهو حظه» | أبو هريرة | ٥٣٢/٥ |
| «من أتى هذا البيت فلم يرفث ولم يفسق رجع كيوم ولدته أمه» | أبو هريرة | ٥٦٢/١٠ |
| «من أجل الدنانير السبعة التى أتتنا أمس..» | أم سلمة | ٣١٣/١٣ |
| «من أحاط حائطًا على أرض فهى له» | سمرة | ٢٢٠/١٢ |
| «من أحاط على شيء فهو أحق به...» | سمرة | ٢٠٢/١٢ |
| «من أحب أن يبسط له فى رزقه...» | أنس | ٤٣٣/١٣ |
| «من أحب أن يجلس من أهل العالية فليجلس» | عمر بن عبد العزيز | ٦٢٥/٦ |
| «من أحب أن يحلّق حبيبه حلقة من نار...» | أبو هريرة | ٢٠٤/٨ |
| «من أحب أن يستمع الخطبة فليستمع...» | عبد الله بن السائب | ٥٨٦/٦ |
| «من أحب أن يظله الله فى ظله فلينظر معسرًا» | أبو اليسر | ٤٠٧/١١ |
| «من أحب أن يقيم فليقم...» | عبد الله بن السائب | ٥٨٦/٦ |
| «من أحب دنياه أضر بآخرته» | أبو موسى الأشعرى | ١٤٨/٧ |
| «من أحب فطرتى فليستن بسنتى...» | عبيد بن سعد | ٥٨٥/١٣ |
| «من أحب منكم أن يهل بحج فليهل» | عائشة | ٢٩٢/٩ |
| «من أحب منكم أن يهل بعمرة» | عائشة | ٢٩١/٩ |
| «من أحبهما فقد أحبنى» | أبو هريرة | ٣٥٦/٧ |
| «من احتبس فرسًا فى سبيل الله...» | أبو هريرة | ١٦/٢٠ |
| «من احتجم لسبع عشرة...» | أبو هريرة | ٥١٠/١٩ |
| «من احتجم يوم الأربعاء ويوم السبت...» | أبو هريرة | ٥١٢/١٩ |

| | | |
|---|---|---|
| «من احتجم يوم الثلاثاء لسبع عشرة...» | معقل بن يسار، أنس | ٥١١/١٩ |
| «من احتكر فهو خاطئ» | معمر | ٤١٣/١١ |
| «من احتكر يريد أن يغالى بها على المسلمين فهو خاطئ» | أبو هريرة | ٤١٥/١١ |
| «من أحدث فى أمرنا ما ليس فيه فهو رد» | عائشة | ٢٣٩/٢١ |
| «من أحدث فى أمرنا ما ليس منه فهو رد» | عائشة | ٣٥٢/٢٠ |
| «من أحدث فى أمرنا هذا ما ليس منه فهو رد» | عائشة | ٤٤٥/٢٠ |
| «من أحرم بعمرة ولم يهد فليحلل» | – | ٢٦٩/٩ |
| «من أحسن الصلاة حيث يراه الناس...» | عبد الله | ٣٩٥/٤ |
| «من أحسن فى الإسلام لم يؤاخذ بما عمل فى الجاهلية» | عبد الله بن مسعود | ٣٩٩/١٨ |
| «من أحيا أرضًا ميتة فله فيها أجر...» | جابر بن عبد الله | ٢١٩/١٢ |
| «من أحيا أرضًا ميتة فهو أحق بها...» | عروة بن الزبير | ٢٠٠/١٢ |
| «من أحيا أرضًا ميتة فهى له...» | سعيد بن زيد | ٥٩/١٢، ١٩٩ |
| «من أحيا أرضًا ميتة فهى له...» | عروة بن الزبير | ٢٠٣/١٢ |
| «من أحيا أرضًا ميتة لم تكن لأحد قبله...» | عروة بن الزبير | ٢٠٠/١٢ |
| «من أحيا مواتًا من الأرض فهو أحق به...» | عمرو بن عوف | ٢١٩/١٢ |
| «من أحيا مواتًا من الأرض فهى له...» | عروة بن الزبير | ٢٠٠/١٢ |
| «من أحيا مواتًا من الأرض فى غير حق مسلم...» | عمرو بن عوف | ٢٠١/١٢ |
| «من أحيا ميتًا من موتان الأرض فله رقبتها» | ابن طاوس | ٢٠٣/١٢ |
| «من أخذ أحدًا يصيد فيه فليسلبه» | سعد بن أبى وقاص | ٣٥١/١٠ |
| «من أخذ أرضا بجزيتها...» | أبو الدرداء | ٤٥٦/١٨ |
| «من أخذ أموال الناس يريد أداءها أداها الله عنه» | أبو هريرة | ٣٠٧/١١ |
| «من أخذ شبرًا من الأرض...» | أبو هريرة | ٥٦/١٢ ٥٨ |
| «من أخذ شيئا فهو له» | – | ١٧٥/١٣ |
| «من أخذ قوسًا على تعليم القرآن...» | أبو الدرداء | ١٤٢/١٢ |
| «من أخذتموه يقطع من الشجر شيئا فلكم سلبه...» | سعد | ٣٥٠/١٠ |

| | | |
|---|---|---|
| «من ادان دينًا ينوى قضاءه كان معه عون من الله على ذلك» | ميمون | ٣٠٨/١١ |
| «من أدخل فرسًا بين فرسين...» | أبو هريرة | ٣٠/٢٠ |
| «من أدرك ركعة من الصبح قبل أن تطلع الشمس...» | أبو هريرة | ٣٣/٣، ٦١، ٨٨ |
| «من أدرك ركعة من الصلاة فقد أدرك الصلاة» | أبو هريرة | ٨٩/٣، ٥١٩ |
| «من أدرك ركعة من الصلاة فقد أدركها» | أبو هريرة | ٣١١/٦ |
| «من أدرك ركعة من الصلاة مع الإمام فقد أدركها» | أبو هريرة | ٣١١/٦ |
| «من أدرك الصبح ولم يوتر فلا وتر له» | أبو سعيد | ٢٧٥/٥ |
| «من أدرك ماله بعينه عند رجل....» | أبو هريرة | ٤٦١/١١ |
| «من أدرك من الجمعة ركعة فليصل إليها أخرى» | أبو هريرة | ٣١٢/٦ |
| «من أدرك من الصبح ركعة قبل أن تطلع الشمس» | أبو هريرة | ٦٧/٣، ٦٨ |
| «من أدرك من الصلاة ركعة فقد أدرك الصلاة» | أبو هريرة | ٣٠٩/٦، ٣١٠ |
| «من أدرك من الصلاة ركعة فقد أدركها» | أبو هريرة | ٣١٠/٦ |
| «من أدرك من الصلاة ركعة فقد أدركها كلها» | أبو هريرة | ٦٦/٣، ٦٧ |
| «من أدرك من العصر ركعة قبل أن تغرب الشمس...» | أبو هريرة | ٣٣/٣ |
| «من أدرك من العصر سجدة قبل أن تغرب الشمس» | عائشة | ٦٦/٣ |
| «من ادعى أبا فى الإسلام وهو يعلم أنه غير أبيه...» | سعد بن أبى وقاص | ٤٥٧/١٥ |
| «من ادعى إلى غير أبيه وهو يعلم أنه غير أبيه..» | سعد بن أبى وقاص | ٤٥٦/١٥ |
| «من ادعى إلى غير أبيه وهو يعلمه...» | أبو ذر | ٤٥٦/١٥ |
| «من أدى زكاة ماله طيب النفس بها...» | أم سلمة | ١٩٤/٨ |
| «من أدى زكاة ماله فقد أدى الحق...» | الحسن | ١٧/٨ |
| «من أذن اثنتى عشرة سنة وجبت له الجنة...» | عبد الله بن عمر | ٢١٣/٣ |

| | | |
|---|---|---|
| «من أذن خمس صلوات وأمهم إيمانًا واحتسابًا غفر له... » | أبو هريرة | ٢١٤/٣ |
| «من أراد أن يحمل فليتوضأ » | أبو هريرة | ٣٩٠/٢ |
| «من أراد أن ينظر إلى رجل من أهل الجنة..» | أبو هريرة | ١٦/٨ |
| «من أراد الحج فليتعجل» | ابن عباس | ٢٤٤/٩ |
| «من أراد الحج فليتعجل» | الفضل بن عباس | ٢٤٥/٩ |
| «من أراد شراء جارية أو اشتراها فلينظر إلى جسدها... » | عبد الله بن عباس | ١٩٨/٤ |
| «من أراد منكم أن يهل بحج وعمرة» | عائشة | ٣٠٤/٩ |
| «من أربى الربا الاستطالة فى عرض المسلم بغير حق» | سعيد بن زيد | ٢٠٤/٢١ |
| «من أريد ماله بغير حق...» | عبد الله بن عمرو | ٦٧/١٧ |
| «من استأذن ثلاثا فلم يؤذن له فليرجع» | أبو موسى الأشعرى | ٥٦٢/١٧ |
| «من استجمر فليوتر...» | أبو هريرة | ٣١٧/١ |
| «من استحل بدرهم فقد استحل» | أبو لبيبة | ٤٩٨/١٤ |
| «من استرسل إلى مؤمن فغبنه » | أبو أمامة | ٢٨٩/١١ |
| «من استطاع منكم أن ينفع أخاه فلينفعه» | جابر بن عبد الله | ٥٤٢/١٩ |
| «من استعاذكم بالله فأعيذوه...» | ابن عمر | ٣٩٧/٨ |
| «من استعمل عاملًا من المسلمين...» | ابن عباس | ٣٤٨/٢٠ |
| «من استعملناه على عمل فرزقناه رزقا...» | بريدة | ٣٠٨/١٣ |
| «من استعملناه منكم على عملنا...» | عدى بن عميرة | ٢٦٤/٨ |
| «من استغنى عن أرضه فليمنحها أخاه...» | رافع بن خديج | ١٦٨/١٢ |
| «من استلج فى أهله بيمينه...» | أبو هريرة | ٧٥/٢٠ |
| «من استودع وديعة فلا ضمان عليه» | عبد الله بن عمرو | ٩٤/١٣ |
| «من استيقظ من الليل وأيقظ امرأته...» | أبو سعيد وأبو هريرة | ٣٤٤/٥ |
| «من أسلف فى تمر فليسلف فى كيل معلوم» | ابن عباس | ٣٧٨/١١ |
| «من أسلف فى شىء فلا يصرفه إلى غيره» | أبو سعيد | ٤١٨/١١ |
| «من أسلم على شىء فهو له» | أبو هريرة | ٣٦٧/١٨ |
| «من أسلم على يدى رجل فله ولاؤه» | أبو أمامة | ٣٨١/٢١ |

| | | |
|---|---|---|
| «من اشترى بيعًا فوجب له فهو بالخيار...» | ابن عباس | ٢٨/١١ |
| «من اشترى سرقة وهو يعلم أنها سرقة...» | أبو هريرة | ٢٣٧/١١ |
| «من اشترى سلعة ثم أفلس فصاحبها أحق بها» | أبو هريرة | ٤٦٣/١١ |
| «من اشترى شاة محفلة ...» | أنس بن مالك | ١٨٢/١١ |
| «من اشترى شاة مصراة فلينقلب بها فليحلبها» | أبو هريرة | ١٧٧/١١ |
| «من اشترى شاة مصراة فهو بالخيار ثلاثة أيام» | أبو هريرة | ١٨٠/١١ |
| «من اشترى شيئا لم يره فهو بالخيار إذا رآه» | مكحول أبو هريرة | ٢٠/١١ |
| «من اشترى طعامًا فلا يبيعه حتى يستوفيه» | ابن عمر | ١٦٥/١١ |
| «من اشترى غنمًا مصراة احتلبها...» | أبو هريرة | ١٧٨/١١ |
| «من اشترى لقحة مصراة أو شاة مصراة...» | أبو هريرة | ١٨٠/١١ |
| «من اشترى مصراة أو لقحة مصراة فهو بأحد النظرين» | الحسن | ١٨٢/١١ |
| «من اشترى مصراة فردها...» | أبو هريرة | ١٧٩/١١ |
| «من اشترى مصراة فهو بالخيار ثلاثة أيام» | أبو هريرة | ١٨٥/١١ |
| «من أشرك بالله فليس بمحصن» | ابن عمر | ١٦٥/١٧ |
| «من أصاب ذنبا فأقيم عليه حد...» | خزيمة بن ثابت | ٥٢٤/١٧ |
| «من أصاب فى الدنيا ذنبا فعوقب...» | على | ٥٢٣/١٧ |
| «من أصاب منكم من هذه القاذورة شيئا...» | - | ٥٢٧/١٧ |
| «من أصابته فاقة فأنزلها بالناس...» | ابن مسعود | ٣٨٦/٨ |
| «من أصابته مصيبة فليقل: إنا لله وإنا إليه راجعون...» | أم سلمة | ١٥٨/١٤ |
| «من أصبح منكم اليوم صائمًا؟» | أبو هريرة | ٣٦٤/٨ |
| «من أصدق امرأة صداقا...» | صهيب بن سنان | ٥٠٨/١٤ |
| «من اصطبح سبع تمرات من عجوة المدينة» | سعد بن أبى وقاص | ٤٨٥/١٦ |
| «من أصيب بجسده بقدر نصف ديته...» | عبادة بن الصامت | ٢٥٦/١٦ |
| «من أصيب بدم أو خبل فهو بالخيار...» | أبو شريح الخزاعى | ٢٤٥/١٦ |
| «من أصيب دون ماله فهو شهيد...» | سعيد بن زيد | ٥٤٦/١٧ |
| «من أصيب له ولدان أو ثلاثة لم يبلغوا الحنث...» | أبو هريرة | ٤٨٤/٧ |

| | | |
|---|---|---|
| «من أضحى يومًا ملبيًا حتى تغرب...» | جابر بن عبد الله | ٤٢٧/٩، ٤٢٨ |
| «من أطاعنى فقد أطاع الله...» | أبو هريرة | ٥٥٣/١٦ |
| «من اطلع على قوم بغير إذنهم فرموه...» | أبو هريرة | ٥٥٩/١٧ |
| «من اطلع فى بيت قوم بغير إذنهم...» | أبو هريرة | ٥٥٨/١٧ |
| «من اطلع فى دار قوم بغير إذنهم...» | أبو هريرة | ٥٥٩/١٧ |
| «من أظل رأس غازى...» | عمر بن الخطاب | ٥٦٧/١٨ |
| «من أعان على ظلم فهو كالبعير المتردّى...» | عبد الله بن مسعود | ١٧٨/٢١ |
| «من أعان على قتل مسلم بشطر كلمة...» | أبو هريرة | ١٥٣/١٦ |
| «من أعان على قتل مؤمن بشطر كلمة...» | الزهرى | ١٥٤/١٦ |
| «من أعان مجاهدًا فى سبيل الله...» | سهل | ٤٥٢/٢١ |
| «من اعتبط مسلما بقتل...» | - | ٥٥/١٧ |
| «من أعتق رقبة أعتق الله بكل عضو منها...» | أبو هريرة | ٣٠٤/٢١ |
| «من أعتق رقبة كانت فكاكه من النار» | أبو موسى | ٣٠٦/٢١ |
| «من أعتق رقبة مؤمنة...» | أبو هريرة | ٤٠/١٣، ٤١، ٣٠٤/٢١ |
| «من أعتق رقبة مؤمنة...» | عمرو بن عبسة السلمى | ٣٠٥/٢١ |
| «من أعتق سهمًا فى مملوك فعتقه عليه...» | أبو هريرة | ٣١٨/٢١ |
| «من أعتق شركًا فى عبد فقد عتق كله...» | ابن عمر | ٣٢١/٢١ |
| «من أعتق شركًا فى مملوك...» | ابن عمر | ٣١٤/٢١، ٣٢٣ |
| «من أعتق شركًا فى مملوك له فقد ضمن عتقه...» | ابن عباس | ٣٢٤/٢١ |
| «من أعتق شركًا له فى عبد...» | ابن عمر | ٤٨/١٢، ٣١٢/٢١، ٣١٣، ٣١٦، ٣٢٦، ٣٣١ |
| «من أعتق شركًا له فى مملوك فعليه عتقه...» | ابن عمر | ٣٢٩/٢١، ٣٣٠ |
| «من أعتق شركًا له فى مملوك فقد عتق كله» | ابن عمر | ٣٢١/٢١ |
| «من أعتق شقصًا فى مملوك فعليه خلاصه...» | أبو هريرة | ٣٣٤/٢١ |
| «من أعتق شقصًا له فى مملوك...» | ابن عمر | ٣٢٢/٢١ |
| «من أعتق شقصًا له فى مملوك...» | أبو هريرة | ٣٣٥/٢١ |
| «من أعتق عبدًا بينه وبين آخر قوم عليه...» | ابن عمر | ٣١٦/٢١ |
| «من أعتق عبدًا فماله للذى أعتق» | ابن مسعود | ٢٠٧/١١ |

| | | |
|---|---|---|
| «من أعتق عبدًا فماله له....» | ابن عمر | ٢٠٣/١١ |
| «من أعتق عبدًا وله فيه شيء وله وفاء فهو حر...» | ابن عمر وجابر | ٣١٩/٢١ |
| «من أعتق عبدًا وله مال فمال العبد له....» | ابن عمر | ٢٠٣/١١ |
| «من أعتق من عبد شركا فعليه أن يعتق ما بقى» | ابن عمر | ٣٢٣/٢١ |
| «من أعتق نصيبًا أو شقيصًا فى عبد...» | ابن عمر | ٣٤٣/٢١ |
| «من أعتق نصيبًا فى عبد...» | ابن عمر | ٣٣٠/٢١ |
| «من أعتق نصيبًا فى مملوك » | ابن عمر | ٣٢٢/٢١ |
| «من أعتق نصيبًا له فى مملوك أو شركا ...» | ابن عمر | ٣٢٠/٢١ |
| «من أعتق نصيبًا له فى مملوك عتق...» | أبو هريرة | ٣١٧/٢١ |
| «من أعتق نصيبًا من عبد أو شركًا ...» | ابن عمر | ٣٢٧/٢١ |
| «من اعتكف معى فليعتكف العشر» | أبو سعيد | ١٥٤/٩ |
| «من أعطاها مؤتجرًا فله أجرها...» | معاوية بن حيدة | ١١١/٨ |
| «من أعطى حظه من الرفق فقد أعطى حظه...» | أبو الدرداء | ٣٦/٢١ |
| «من أعطى عطاء فوجد فليجز به...» | جابر بن عبد الله | ٣٣٩/١٢ |
| «من أعطى فى صداق ملء كفية برا...» | جابر | ٤٩٨/١٤ |
| «من أعمر رجلًا عمرى له ولعقبه...» | جابر بن عبد الله | ٣٠٤/١٢ |
| «من أعمر شيئا حياته فهو لورثته إذا مات» | شريح | ٣١٦/١٢ |
| «من أعمر شيئا فهو لمعمره محياه ومماته...» | زيد بن ثابت | ٣١٨/١٢ |
| «من أعمر عمرى فهى له ولعقبه...» | جابر بن عبد الله | ٣٠٦/١٢، ٣٠٧ |
| «من اغبرت قدماه فى سبيل الله...» | أبو عبس ابن جبر | ٣٨٨/٦ |
| «من اغبرت قدماه فى سبيل الله...» | جابر بن عبد إلله | ٥٣٣/١٨ |
| «من اغتسل يوم الجمعة غسل الجنابة... » | أبو هريرة | ٣٧٤/٢، ٣٨٠/٦ |
| «من اغتسل يوم الجمعة فتطهر بما استطاع » | سلمان الفارسى | ٣٩٦/٦ |
| «من اغتسل يوم الجمعة كان فى طهارة إلى الجمعة الأخرى» | أبو قتادة | ٣٧٨/٢ |
| «من اغتسل يوم الجمعة واستاك...» | أبو هريرة | ٢٨٤/٦، ٣٩٤ |
| «من اغتسل يوم الجمعة واستاك...» | أبو سعيد | ٢٨٤/٦ |
| «من اغتسل يوم الجمعة واستن...» | أبو هريرة وأبو سعيد | ٤٣١/٦ |

| | | |
|---|---|---|
| «من اغتسل يوم الجمعة وتطهر...» | سلمان | ٥/٢٣١، ٦/٤٣٠ |
| «من اغتسل يوم الجمعة ومس من طيب امرأته...» | عبد الله بن عمرو | ٦/٣٩٤ |
| «من أفاض من عرفات قبل الصبح فقد تم حجُّه...» | عبد الله بن عباس | ١٠/٢٥٧ |
| «من أفضل الصلاة بعد المفروضة...» | جندب بن عبد الله | ٥/٣٥٤ |
| «من أفضى بيده إلى فرجه...» | أبو هريرة | ١/٣٩٣ |
| «من أفطر فى رمضان ناسيًا...» | أبو هريرة | ٨/٥٠٢ |
| «من أفطر يومًا من رمضان فى غير رخصة..» | أبو هريرة | ٨/٤٩٨ |
| «من أقال مسلمًا أقاله الله عثرته» | أبو هريرة | ١١/٤٠٤ |
| «من أقال نادمًا أقاله الله نفسه يوم القيامة» | أبو هريرة | ١١/٤٠٥ |
| «من أقام البينة على أسير فله سلبه» | أبو قتادة | ١٣/٢٠١ |
| «من أقام البينة على قتيل فله سلبه» | أبو قتادة | ١٣/٢٠٢ |
| «من أقام بينة على قتيل فله سلبه» | أبو قتادة | ١٨/١٦٩ |
| «من أقام مع المشركين فقد برئت منه الذمة» | جرير بن عبد الله | ١٨/٤٢ |
| «من اقتبس علما من النجوم اقتبس شعبة من السحر...» | ابن عباس | ١٦/٤٩٦ |
| «من اقتطع حق مسلم بيمينه...» | أبو أمامة | ٢٠/٥٣٥ |
| «من اقتطع شبرًا من الأرض ظلمًا...» | سعيد بن زيد | ١٢/٥٦ |
| «من اقتطع مال امرئ مسلم بيمين كاذبة...» | ابن مسعود | ٢٠/٥٣٣ |
| «من اقتنى كلبًا إلا كلب صيد...» | عبد الله بن عمر | ١١/٣٤٣ |
| «من اقتنى كلبًا إلا كلب ضارى لصيد...» | عبد الله بن عمر | ١١/٣٤٥ |
| «من اقتنى كلبًا إلا كلب ضارية...» | عبد الله بن عمر | ١١/٣٤٦ |
| «من اقتنى كلبًا إلا كلب ماشية...» | عبد الله بن عمر | ١١/٣٤٣، ٣٤٤ |
| «من اقتنى كلبًا لا يغنى عنه زرعًا ولا ضرعًا...» | رجل من الصحابة | ١١/٣٤٩ |
| «من اقتنى كلبًا ليس بكلب صيد» | أبو هريرة | ٢/٢٥١ |
| «من أقرض شيئا مرتين كان له مثل أجر أحدهما لو تصدق به» | ابن مسعود | ١١/٣٠٦، ٣٠٧ |
| «من أقرض ورقًا مرتين كان كعدل صدقة مرة» | ابن مسعود | ١١/٣٠٥ |

| | | |
|---|---|---|
| «من اكتوى أو استرقى فقد برئ من التوكل» | المغيرة بن شعبة | ٥١٦/١٩ |
| «من أكرم سلطان الله أكرمه الله...» | أبو بكرة | ٥٨٤/١٦ |
| «من أكل ثومًا أو بصلًا فليعتزلنا...» | جابر بن عبد الله | ٥٦٤/٥، ٥٠٣/١٣ |
| «من أكل سبع تمرات مما بين لابتيها...» | سعد بن أبي وقاص | ٥٢٨/١٩ |
| «من أكل الطين فكأنما أعان على قتل نفسه...» | أبو هريرة | ٦١٤/١٩ |
| «من أكل من هاتين الشجرتين...» | قرة بن إياس | ٥٦٩/٥ |
| «من أكل من هذه البقلة فلا يقربن...» | عبد الله بن عمر | ٥٦١/٥ |
| «من أكل من هذه الشجرة الثوم...» | جابر | ٥٦٣/٥ |
| «من أكل من هذه الشجرة الخبيثة...» | أبو سعيد الخدرى | ٥٦٦/٥ |
| «من أكل من هذه الشجرة الخبيثة...» | المغيرة بن شعبة | ٥٦٧/٥ |
| «من أكل من هذه الشجرة الخبيثة...» | جابر | ٥٦٣/٥ |
| «من أكل من هذه الشجرة فلا يأتين المساجد» | ابن عمر | ٥٦١/٥ |
| «من أكل من هذه الشجرة فلا يقربنا» | أنس بن مالك | ٥٦٢/٥ |
| «من أكل من هذه الشجرة فلا يؤذينا » | أبو هريرة | ٥٦٢/٥ |
| «من التقط لقطة فليشهد...» | عياض بن حمار | ٣٥٥/١٢، ٣٧٣ |
| «من التقط لقطة فليعرفها سنة....» | زيد بن خالد الجهنى | ٣٧١/١٢ |
| «من التقط لقطة يسيرة حبلًا أو درهمًا...» | يعلى بن مرة | ٣٨٠/١٢ |
| «من ألقى جلباب الحياء فلا غيبة له» | أنس | ٩٦/٢١ |
| «من ألقى السلاح فهو آمن» | أبو هريرة | ٣٨٢/١٨ |
| «مِن الله لا من رسوله: لعن الله عاضد السدر» | معاوية بن حيدة | ١٩٥/١٢ |
| «من أمَّ الناس فأصاب الوقت وأتم الصلاة فله ولهم...» | عقبة بن عامر | ٩٩/٦ |
| «من أمسك كلبًا فإنه ينقص من عمله » | أبو هريرة | ٣٤٨/١١ |
| «من أمسك منكم بحقه» | عبد الله بن عمرو | ٢٤٨/١٣، ٢٥٠/١٨ |
| «من أنا؟» | عمر بن الحكم | ٤٠٤/١٥، ١٤٧/٢٠ |
| «من أنت» | جابر | ١٦٥/٧ |
| «من أنظر معسرًا أو وضع له أظله الله فى ظله» | أبو اليسر | ٣٢٠/١١ |
| «من أنظر معسرًا فإن له بكل يوم مثله صدقة» | بريدة | ٣٢٠/١١ |

| | | |
|---|---|---|
| «من أنفق زوجين فى شىء من الأشياء...» | أبو هريرة | ٥٦٢/١٨ |
| «من أنفق نفقة فاضلة فى سبيل الله » | أبو عبيدة | ١٦٢/٧، ٥٦٤/١٨ |
| «من أنفق نفقة فى سبيل الله فاضلة...» | أبو عبيدة | ٥٦٤/١٨ |
| «من انهمك فى أكل الطين...» | ابن عباس | ٦١٣/١٩، ٦١٤ |
| «من أهدى إليه وعنده قوم فهم شركاء» | ابن عباس | ٣٤٢/١٢ |
| «من أهدى بدنة تطوعًا فعطبت فليس عليه بدل» | عبد الله بن عمر | ٤٩٧/١٠ |
| «من أهدى تطوعًا ثم ضلت فإن شاء أبدلها» | عبد الله بن عمر | ٤٩٨/١٠ |
| «من أهدى هديًا تطوعًا ثم عطب فإن شاء أكل» | عبد الله بن عمر | ٤٩٨/١٠ |
| «من أهديت له هدية وعنده ناس...» | ابن عباس | ٣٤٢/١٢ |
| «من أهراق من هذه الدماء...» | أبو كبشة الأنمارى | ٥١٠/١٩ |
| «من أهريق دمه وعقر جواده» | عبد الله بن حبشى | ٣٣١/٨، ٥٣٩/١٨ |
| «من أهل بحجة أو عمرة من المسجد الأقصى...» | أم سلمة | ٣٧٩/٩ |
| «من أهلُ ذى المروة؟» | سبرة بن معبد | ٢٢٤/١٢ |
| «من أوتى إليه معروف فوجد فليكافئه...» | جابر بن عبد الله | ٣٤٠/١٢ |
| «من أوقف دابة فى سبيل من سبل المسلمين.» | النعمان بن بشير | ٥٧٧/١٧ |
| «من أى ذلك تعجبون» | طلحة بن عبيد الله | ١٥٥/٧ |
| «من أى المال؟» | مالك بن نضلة | ٦٠٨/١٩ |
| «من أين أصبت هذا؟» | عامر | ١٨٧/١٩ |
| «من أين أقبلت يا فاطمة» | عبد الله بن عمرو | ٥٢١/٧ |
| «من أين جئت بهذا الذهب؟» | ابن عباس | ٥٥٧/١١ |
| «من أين علمت أنها رقية؟» | أبو سعيد | ٣٩٢/١٢ |
| «من أين القوم؟» | طارق بن عبد الله | ٣٨٥/١١ |
| «من أين لكم هذا؟» | أبو سعيد | ٧٨/١١ |
| «من أين هذا اللبن؟» | أبو هريرة | ١٧٥/٥ ، ٥٦٦/١٧ |
| «من أين هذا يا أبا الحسن؟» | ابن عباس | ١٢١/١٢ |
| «من بات وفى يده غمر...» | أبو هريرة | ٥١/١٥ |
| «من باع بيعتين فى بيعة فله أوكسهما أو الربا» | أبو هريرة | ٢٦٦/١١ |
| «من باع جلد أضحيته فلا أضحية له» | أبو هريرة | ٣٦٣/١٩ |

| | | |
|---|---|---|
| «من باع الخمر فليشقص الخنازير» | المغيرة | ٣٥٧/١١ |
| «من باع دارًا أو عقارًا فلم يجعل ثمنه فى مثلها لم يبارك له فيها» | سعيد بن حريث | ٤٢٦/١١ |
| «من باع دارًا أو عقارًا فليعلم أنه قمن ألا يبارك له فيه...» | سعيد بن حريث | ٤٢٧/١١ |
| «من باع دارًا ولم يشتر بثمنها دارًا لم يبارك له فيها...» | حذيفة | ٤٢٦/١١ |
| «من باع دارًا ولم يشتر من ثمنها دارًا...» | - | ٤٢٧/١١ |
| «من باع شيئا فلا يحل له حتى يبين ما فيه..» | واثلة بن الأسقع | ١٨٨/١١ |
| «من باع عبدًا له مال فماله للبائع إلا...» | عبد الله بن عمر | ٤٥٣/١٢ |
| «من باع عبدًا وله مال فله ماله وعليه دينه» | جابر بن عبد الله | ٢٠٥/١١، ٣٣٣ |
| «من باع عبدًا وله مال فله ماله وعليه دينه» | ابن عمر | ٢٠٥/١١ |
| «من باع عبدًا وله مال فماله للبائع....» | جابر | ٢٠٦/١١ |
| «من باع نخلًا بعد أن تؤبر فثمرها للبائع» | عبد الله بن عمر | ١٠٧/١١ |
| «من باع نخلًا قد أبّرت فثمرتها للبائع» | عبد الله بن عمر | ١٠٧/١١، ٢٠١ |
| «من باع نخلًا مؤبرًا أو عبدًا له مال فالثمرة والمال للبائع» | جابر بن عبد الله | ٢٠٥/١١ |
| «من بايعت فقل: لا خلابة» | ابن عمر | ٣٨/١١ |
| «من بدا جفا...» | أبو هريرة | ٢٩٠/٢٠ |
| «من بدل دينه فاقتلوه» | ابن عباس | ٩٥/١٧، ١٢٠، ١٢١، ١٢٨، ٢٤١/١٨، ٢٠/ ٢٩٠ |
| «من بلغ بسهم فى سبيل الله فهو له عدل محرر» | أبو نجيح السلمى | ٣٠٦/٢١ |
| «من بلغ حدا فى غير حدٍّ فهو من المعتدين» | الضحاك | ٥١٨/١٧ |
| «من بلغ حدا فى غير حدٍّ فهو من المعتدين» | النعمان بن بشير | ٥١٨/١٧ |
| «من بنى فى رباع قوم بإذنهم فله القيمة...» | عائشة | ٣١/١٢ |
| «من بنى لله مسجدًا ولو مثل مفحص قطاة...» | أبو ذر | ١٥٣/٥ |
| «من بنى لله عز وجل مسجدًا ولو مفحص قطاة..» | أبو ذر | ١٥٢/٥ |

| | | |
|---|---|---|
| «من بنى لله مسجدًا يبتغى به وجه الله...» | عثمان بن عفان | ٢٨٥/١٢ |
| «من بنى مسجدًا لله بنى الله له بيتا في الجنة» | عثمان بن عفان | ٢٨٦/١٢ |
| «من بنى مسجدًا وإن كان مثل مفحص قطاة» | الأعمش | ١٥٣/٥ |
| «من بنى مسجدًا يبتغى به وجه الله...» | عثمان بن عفان | ١٥١/٥، ١٥٢ |
| «من تتهمون به؟» | سهل بن حنيف | ٥٥٣/١٩ |
| «من ترك بيضاء أو صفراء كوى بهما» | أبو مجيب | ٢١٩/٨ |
| «من ترك الجمعة ثلاث مرات تهاونًا بها... » | أبو الجعد الضمرى | ٢٣٠/٦، ٤٤٥ |
| «من ترك الجمعة ثلاثًا متواليات...» | جابر بن عبد الله | ٤٤٦/٦ |
| «من ترك جمعة متعمدًا...» | سمرة | ٤٤٨/٦ |
| «من ترك الجمعة من غير عذر...» | سمرة بن جندب | ٤٤٧/٦ |
| «من ترك دابة بمهلك فأحياها رجل...» | الشعبى | ٣٨٨/١٢ |
| «من ترك الصلاة سكرا مرة واحدة...» | عبد الله بن عمرو | ٩٦/٣، ٣٩٠/١٧ |
| «من ترك صلاة العصر حبط عمله » | بريدة | ٢٤٣/٣ |
| «من ترك صلاة العصر...» | عبد الله بن عمر | ٢٤٦/٣ |
| «من ترك كلًّا فإلينا...» | المقدام | ٤٣٩/١٢ |
| «من ترك اللباس وهو يقدر عليه...» | معاذ الجهنى | ٥١٨/٦ |
| «من ترك مالًا فلورثته...» | جابر | ٣٤٢/٦ |
| «من ترك مالا فلورثته...» | أبو هريرة | ٣٩٦/١٢، ٢٩٤/١٣ |
| «من ترك موضع شعرة من جسده من جنابة...» | على | ٤٠/٢، ١٩٢ |
| «من ترون قتله؟» | أبو قلابة | ٤٦٢/١٦ |
| «من تسمى باسمى فلا يكتنى بكنيتى...» | جابر | ٤٠٨/١٩، ٤٠٩ |
| «من تصبح بتمرات من عجوة لم يضره...» | سعد بن أبى وقاص | ٤٨٥/١٦ |
| «من تصبح سبع تمرات من عجوة لم يضره...» | سعد بن أبى وقاص | ٥٢٧/١٩، ٥٢٨ |
| «من تصدق بعدل تمرة من كسب طيب...» | أبو هريرة | ٣١٧/٨ ، ٣٦٩ |
| «من تطبب ولم يكن بالطب معروفا...» | عبد الله بن عمرو | ٥٠٣/١٦ |
| «من تطهر فى بيته ثم مشى ...» | أبو هريرة | ٥٢٠/٥ |
| «من تعارَّ من الليل فقال لا إله إلا الله» | عبادة بن الصامت | ٣٥٧/٥ |
| «من تعلق شيئا وكل إليه» | الحسن | ٥٥٠/١٩ |
| «من تعلق علاقة وكل إليها» | عبد الله بن عكيم | ٥٥٠/١٩ |

| | | |
|---|---|---|
| «من تفل تجاه القبلة جاء يوم القيامة...» | حذيفة | ٥٦٤/٥ |
| «من تقلد قوسًا على تعليم القرآن» | أبو الدرداء | ١٤٢/١٢ |
| «من توضأ دون وضوئى هذا كفاه» | عثمان بن عفان | ١٩٢/١ |
| «من توضأ على طهر...» | عبد الله بن عمر | ٤٦٩/١ |
| «من توضأ فأحسن الوضوء ثم أتى الجمعة...» | أبو هريرة | ٣٧١/٦ |
| «من توضأ فأحسن الوضوء ثم قال...» | عمر بن الخطاب | ٢٣٥/١ |
| «من توضأ فأحسن وضوءه ثم راح...» | أبو هريرة | ٥٤٢/٥ |
| «من توضأ فبها ونعمت » | عبد الرحمن بن سمرة | ٣٧١/٢ |
| «من توضأ فبها ونعمت » | أنس | ٣٧٢/٢ |
| «من توضأ فبها ونعمت ويجزئ...» | ابن عباس | ٣٦٩/٢ |
| «من توضأ فليستنثر ومن استجمر فليوتر» | أبو هريرة | ١٥٩/١، ٣١٦ |
| «من توضأ فليمضمض وليستنشق» | سليمان بن موسى | ١٦٢/١ |
| «من توضأ كوضوئى هذا ثم صلى ركعتين...» | عثمان بن عفان | ١٧٢/١ |
| «من توضأ للصلاة...» | عثمان بن عفان | ٢٤٨/١ |
| «من توضأ مثل وضوئى...» | عثمان بن عفان | ١٤٨/١، ١٤٩ |
| «من توضأ نحو وضوئى هذا...» | عثمان بن عفان | ١٦٥/١، ٢٠٧، ٣٦٢/٤ |
| «من توضأ وذكر اسم الله تطهر جسده كله...» | أبو هريرة | ١٣٨/١ |
| «من توضأ وذكر اسم الله على وضوئه كان طهورًا لجسده...» | عبد الله بن عمر | ١٣٧/١ |
| «من توضأ وضوئى هذا ثم صلى ركعتين...» | عثمان بن عفان | ٧٦/١ |
| «من توضأ يوم الجمعة فبها ونعمت...» | سمرة | ٣٧٠/٢، ٢٧٦/٦ |
| «من توضأ يوم الجمعة فبها ونعمت...» | أنس بن مالك | ٣٧١/٢ |
| «من توضأ يوم الجمعة فبها ونعمت...» | أبو سعيد | ٣٧٢/٢ |
| «من جاء إلى الجمعة فليغتسل » | أنس بن مالك | ٣٧٢/٢ |
| «من جاء برأس فله على الله ما تمنى » | أبو نضرة | ٤٣٣/١٨ |
| «من جاء بهذا ؟ » | سهل بن حنيف | ١٩٠/٨ |
| «من جاء منكم الجمعة فليغتسل » | ابن عمر | ٣٦٤/٢، ٣٦٥، ٢٧١/٦ |
| «من جاء منكم الجمعة وبكر فليغتسل » | ابن عمر | ٢٧١/٦ |
| «من جاهد فى سبيل الله كان ضامنا ... » | معاذ بن جبل | ٥٤٧/١٨ |

| | | |
|---|---|---|
| «من جاهد المشركين بماله ونفسه » | عبد الله بن حبشى | ٣٣١/٨، ٥٣٩/١٨ |
| «من جرّ ثوبه خيلاء لم ينظر الله إليه يوم القيامة » | عبد الله بن عمر | ٢٥٠/٤ |
| «من جعل على القضاء فكأنما ذبح بغير سكين» | أبو هريرة | ٢٧٤/٢٠ |
| «من جلس مجلسًا ينتظر الصلاة...» | - | ٤٥٦/٦ |
| «من جمع بين الحج والعمرة طاف لهما طوافًا واحدًا...» | عبد الله بن عمر | ٤٦/١٠ |
| «من جمع بين الصلاتين من غير عذر...» | ابن عباس | ٢٢١/٦ |
| «من جهز جيش العسرة فله الجنة» | عثمان بن عفان | ٢٨٦/١٢ |
| «من جهز غازيًا أو خلفه فى أهله...» | زيد بن خالد الجهنى | ٥٣٧/٨ |
| «من جهز غازيا فى سبيل الله فقد غزا...» | زيد بن خالد الجهنى | ٩٥/١٨، ١٦٢، ٥٦٦ |
| «من حافظ على أربع ركعات قبل الظهر...» | أم حبيبة | ٢٥٨/٥ |
| «من حالت شفاعته دون حد من حدود الله...» | ابن عمر | ٥٨٥/١١ ، ٥٣٦/١٧ |
| «من حج فزار قبرى بعد موتى كان كمن زارنى فى حياتى» | عبد الله بن عمر | ٥٠٥/١٠ |
| «من حج فلم يرفث ولم يفسق رجع كيوم ولدته أمه» | أبو هريرة | ٥٦١/١٠ |
| «من حج من مكة ماشيًا...» | ابن عباس | ٢٢٠/٩، ٢١٣/٢٠ |
| «من حج هذا البيت فلم يرفث ولم يفسق... » | أبو هريرة | ٥٠١/٩، ٥٦١/١٠ |
| «من حضر معصية فكرهها...» | أبو هريرة | ١٩/١٥ |
| «من حفر بئر رومة فله الجنة» | عثمان بن عفان | ٢٨٦/١٢ |
| «من حفظ عشر آيات من أول سورة الكهف..» | أبو الدرداء | ٤٥٢/٦ |
| «من حق الزوج على الزوجة...» | أبو هريرة | ١٧/١٤ |
| «من حلف أنه برىء من الإسلام...» | بريدة | ٦٥/٢٠، ٦٦ |
| «من حلف بالأمانة فليس منا...» | بريدة | ٦٦/٢٠ |
| «من حلف بسورة من القرآن...» | الحسن | ١٠٣/٢٠ |
| «من حلف بغير الله فقد كفر. أو: أشرك» | ابن عمر | ٦٢/٢٠ |
| «من حلف بملة سوى الإسلام كاذبا...» | ثابت بن الضحاك | ١٥٨/١٦ |
| «من حلف على أحد بيمين وهو يرى أنه سيبره...» | أبو هريرة | ٩٧/٢٠، ٩٨ |

| | | |
|---|---|---|
| «من حلف على منبرى هذا بيمين آثمة...» | جابر بن عبد الله | ٤٣٧/١٥، ٥٢٥/٢٠ |
| «من حلف على يمين صبر...» | الأشعث بن قيس | ٥٣١/٢٠، ٥٣٢ |
| «من حلف على يمين صبر...» | عبد الله بن مسعود | ٥٣١/٢٠، ٢٤٤/٢١ |
| «من حلف على يمين فرأى تقاءها...» | عدى بن حاتم | ٧٢/٢٠ |
| «من حلف على يمين فرأى خيرًا منها...» | أبو هريرة | ١٣٤/٢٠ |
| «من حلف على يمين فرأى غيرها خيرًا ...» | أبو هريرة | ١٥٨/١٩، ١٥٩، ٢٠/ ٧١، ١٢٧ |
| «من حلف على يمين فرأى غيرها خيرًا ...» | عدى بن حاتم ، أبو هريرة | ٧٢/٢٠، ٧٣، ٧٨ |
| «من حلف على يمين فقال: إن شاء الله...» | ابن عمر | ٣٢٧/١٥، ١١١/٢٠، ١١٢، ١١٩ |
| «من حلف على يمين فقال فى إثر يمينه...» | ابن عمر | ١١٦/٢٠ |
| «من حلف على يمين كاذبًا ليقتطع بها مال امرئ...» | عبد الله بن مسعود | ١٠٨/٢٠ |
| «من حلف على يمين كاذبة ليقتطع بها مال أخيه...» | عدى بن عميرة | ٥٣٣/٢٠، ٢٥٠/٢١ |
| «من حلف على يمين وهو فيها فاجر...» | عبد الله بن مسعود | ٥٣٧/٢٠ |
| «من حلف على يمين يستحق بها مالًا ...» | عبد الله بن مسعود | ٢٤٥/٢١ |
| «من حلف فاستثنى فهو بالخيار...» | ابن عمر | ١١٢/٢٠، ١١٣ |
| «من حلف فقال: إن شاء الله. فله ثنيا» | ابن عمر | ١١٢/٢٠ |
| «من حلف فليحلف برب الكعبة» | قتيلة بنت صيفى | ٣٥٠/٦ |
| «من حلف منكم فقال فى حلفه...» | أبو هريرة | ٤٢٤/١، ٦٤/٢٠، ٦٥ |
| «من حمل السلاح علينا فليس منا» | أبو موسى | ١٤٨/١٦ |
| «من حمل من أمتى دينا جهد فى قضائه...» | عائشة | ٤١٨/١٣ |
| «من خاف ألا يستيقظ آخر الليل فليوتر...» | جابر | ٤٤٦/٥ |
| «من خبب أعمى عن الطريق...» | ابن عباس | ٢١٥/١٧ |
| «من خبب خادما على أهله فليس منا...» | أبو هريرة | ١٢١/١٦ |
| «من خرج مع جنازة من بيتها فصلى عليها» | أبو هريرة | ٢٧٨/٧ |

| | | |
|---|---|---|
| «من خرج من بيته متطهرًا إلى صلاة ...» | أبو أمامة | ٥٢٣/٥ |
| «من خرج من بيته مجاهدا فى سبيل الله...» | عبد الله بن عتيك | ٥٤٥/١٨ |
| «من خرج من الطاعة وفارق الجماعة...» | أبو هريرة | ٥٥٨/١٦، ١٧٦/٢١ |
| «من خلع يدا من طاعة لقى الله يوم القيامة ولا حجة له» | عبد الله بن عمر | ٥٥٨/١٦ |
| «من خير ثيابكم البياض فليلبسها أحياؤكم» | ابن عباس | ٣٩٢/٩ |
| «من خير دواء يتداوى به الناس...» | سمرة بن جندب | ٥٠٦/١٩ |
| «من خير معاش الناس...» | أبو هريرة | ٥٢١/١٨ |
| «من دخل البيت دخل فى حسنة...» | عبد الله بن عباس | ٢٠٧/١٠ |
| «من دخل حائطا فليأكل ولا يتخذ خبنة» | ابن عمر | ٥٧٤/١٩، ٥٧٥ |
| «من دخل دار أبى سفيان فهو آمن» | أبو هريرة | ٤٢٨/١١، ٣٨٢/١٨ |
| «من دخل دارا فهو آمن...» | أبو هريرة | ٣٨٤/١٨ |
| «من دخل داره فهو آمن» | أبو هريرة | ٣٨٣/١٨ |
| «من دخل على غير دعوة...» | ابن عمر | ١٥/١٥ |
| «من دخل على قوم لطعام لم يدع إليه...» | عائشة | ١٦/١٥ |
| «من دخل فى شىء من أسعار المسلمين ليغليه عليهم...» | معقل بن يسار | ٤١٥/١١ |
| «من دخل المسجد فبزق فيه أو تنخم فليحفر فليدفنه...» | أبو هريرة | ٣٩٨/٤ |
| «من دعا لأخيه بظهر الغيب قال الملك الموكل به آمين» | أبو الدرداء | ٩٥/٧ |
| «من دعى إلى حكم من الحكام فلم يجب فهو ظالم» | الحسن | ٤١٧/٢٠ |
| «من دعى فلم يجب فقد عصى الله ورسوله» | ابن عمر | ٥٥٦/١٣ |
| «من دل على خير فله مثل أجر فاعله» | أبو مسعود الأنصارى | ٩٦/١٨ |
| «من ذا؟» | جابر | ٥٦٥/١٧ |
| «من ذا الذى يخالجنى سورتى؟» | عمران بن حصين | ٢٦/٤ |
| «من ذبح قبل أن يصلى فليعد...» | جندب بن سفيان | ٢٥٦/١٩ |
| «من ذبح منكم قبل الصلاة فليعد ذبيحته..» | جندب بن سفيان | ٣٠٤/١٩، ٣٠٥ |

| | | |
|---|---|---|
| «من ذرعه القيء وهو صائم فليس عليه قضاء» | أبو هريرة | ٤٧١/٨ |
| «من رابط يوما وليلة فى سبيل الله...» | سلمان الفارسى | ١٣١/١٨ |
| «من رأى أمرا منكرا فليغيره بيده...» | أبو سعيد الخدرى | ١٦/١٥ |
| «من رأى عورة فسترها...» | عقبة بن عامر | ٥٣١/١٧ |
| «من رأى مقتل حمزة؟» | كعب بن مالك | ٣٠٦/٧ |
| «من رأى من أميره شيئا يكرهه...» | ابن عباس | ٥٦١/١٦ |
| «من رأى منكم رؤيا فليقصّها أعبرها له» | سمرة بن جندب | ٩٤/٤ |
| «من رأى منكم منكرًا...» | أبو سعيد الخدرى | ٥٧٤/٦، ٤٥/١٢، ٢٠/ ٢٥١، ٢٥٢ |
| «من رب هذا الجمل؟» | عبد الله بن جعفر | ١٢٢/١٦ |
| «من ربك؟» | الشريد بن سويد الثقفى | ٤٠٨/١٥ |
| «من ربك» | عتبة بن مسعود | ٤٠٦/١٥ |
| «من رجل يكلؤنا ليلتنا هذه؟» | جابر بن عبد الله | ٤٠٨/١، ٤٩١/١٨ |
| «من رد عن عرض أخيه كان له حجابا...» | أبو الدرداء | ٥٩٩/١٦ |
| «من رطب ما تأكلن وتهدين» | سعد | ٣٧٧/٨ |
| «من رعف فى صلاته فلينصرف فليتوضأ...» | عائشة | ٢٨٨/٤ |
| «من رمى بسهم فبلغ فله درجة فى الجنة» | أبو نجيح السلمى | ٥٢٩/١٨ |
| «من رمى بسهم فى سبيل الله فهو له درجة...» | أبو نجيح السلمى | ٣٠٦/٢١ |
| «من رمى العدو بسهم...» | عمرو بن عبسة | ٥٢٩/١٨ |
| «من زار قبرى- أو قال: من زارني- كنت له شفيعًا» | عمر بن الخطاب | ٥٠٤/١٠ |
| «من زار قومًا فلا يؤمهم وليؤمهم رجل منهم» | مالك بن الحويرث | ٩٦/٦ |
| «من زرع فى أرض قوم بغير إذنهم...» | رافع بن خديج | ١٨٠/١٢، ١٨٢ |
| «من ساق هديًا تطوعًا فعطب فلا يأكل منه...» | أبو قتادة | ٤٩٩/١٠ |
| «من سأل الله الشهادة بصدق...» | سهل بن حنيف | ٥٥٧/١٨ |
| «من سأل الله الشهادة صادقا من قلبه...» | معاذ بن جبل | ٥٥٩/١٨ |
| «من سأل مسألة وهو منها غنى...» | سهل ابن الحنظلية | ٤٢٧/١٣ |
| «من سأل الناس أموالهم تكثرًا...» | أبو هريرة | ٣٨٧/٨ |
| «من سأل الناس عن ظهر غنى...» | زياد بن الحارث | ٣٠٦/٨ |

| | | |
|---|---|---|
| «من سأل وله أربعون درهما فهو ملحف» | عبد الله بن عمرو | ٤٢٦/١٣ |
| «من سأل وله ما يغنيه....» | عبد الله بن مسعود | ٤٢٣/١٣ |
| «من سأله جاره أن يغرز خشبه فى جداره فلا يمنعه» | أبو هريرة | ٢٥١/١٢ |
| «من سبح الله فى دبر كل صلاة ثلاثًا وثلاثين...» | أبو هريرة | ٩٢/٤ |
| «من سبق إلى ما لم يسبقه إليه مسلم فهو له» | أسمر بن مضرس | ٢٠٢/١٢، ٤١٥/٢٠، ٤١٦ |
| «من ستر عورة مؤمن...» | عقبة بن عامر | ٥٣٢/١٧ |
| «من سره أن يقرأ القرآن غضا كما أنزل...» | عبد الله بن مسعود | ٢٦٥/٣ |
| «من سره أن يكتال بالمكيال الأوفى...» | أبو هريرة | ٦٨١/٣ |
| «من سره أن ينجيه الله من كرب يوم القيامة فلينظر معسرًا...» | أبو قتادة | ٣١٨/١١، ٤٠٧ |
| «من سكن البادية جفا...» | ابن عباس | ٢٩٠/٢٠ |
| «من سلَّ سخيمته...» | أبو هريرة | ٢٩٨/١ |
| «من سلف فى تمر فليسلف فى كيل معلوم...» | ابن عباس | ٣٩٣/١١ |
| «من سلم المسلمون من لسانه ويده» | عبد الله بن عمرو | ٢١٠/٢١ |
| «من سمع رجلًا ينشد ضالة فى المسجد..» | أبو هريرة | ١٧٩/٥، ٢٩٥/٢٠ |
| «من سمع رجلًا ينشد فى المسجد ضالة...» | أبو هريرة | ٣٨٢/١٢ |
| «من سمع المنادى فلم يمنعه من اتباعه عذر فلا صلاة له» | ابن عباس | ٢٦٢/٦ |
| «من سمع النداء فارغًا صحيحًا فلم يجب فلا صلاة له» | أبو موسى الأشعرى | ٢٣٥/٦ |
| «من سمع النداء فلم يجب فلا صلاة له...» | ابن عباس | ٥٠٤/٥، ٢٣٤/٦، ٢٣٥، ٢٦٢ |
| «من سن سنة حسنة فعمل بها....» | جرير بن عبد الله | ٣١٤/٨ |
| «من سن فى الإسلام سنة حسنة...» | جرير بن عبد الله | ٣١٣/٨ |
| «من السنة قص الشارب...» | عبد الله بن عمر | ٤٢٧/١ |
| «من شاء اقتطع» | عبد الله بن قرط | ٩٢/١٥ |

| | | |
|---|---|---|
| «من شاء أن يجعلها عمرة فليجعلها» | ابن عباس | ٣٠٨/٩ |
| «من شاء أن يذهب فليذهب» | عطاء | ٥٨٦/٦ |
| «من شاء أن يصلى فليصل...» | زيد بن أرقم | ٦٢٣/٦ |
| «من شاء أن يصومه فليصمه...» | عائشة | ٢١١/١٠ |
| «من شاء صامه ومن شاء... » | عائشة | ٩٢/٩ |
| «من شاء عتر ومن شاء لم يعتر...» | الحارث بن عمرو | ٤١٨/١٩ |
| «من شاب شيبة فى الإسلام...» | كعب بن مرة | ٥٣٠/١٨ |
| «من شاب شيبة فى سبيل الله...» | أبو نجيح السلمى | ٥٢٩/١٨ |
| «من شبرمة؟» | ابن عباس | ٢٣٤/٩ |
| «من شرار خلق الله ذو الوجهين...» | أبو هريرة | ٢٢٠/٢١ |
| «من شرب الخمر فاجلدوه فإن عاد فاجلدوه» | أبو هريرة | ٤٧٤/١٧ |
| «من شرب الخمر فاجلدوه فإن عاد فاجلدوه» | جابر | ٤٧٦/١٧ |
| «من شرب الخمر فاجلدوه فإن عاد فاجلدوه» | قبيصة بن ذؤيب | ٤٧٥/١٧ |
| «من شرب الخمر فى الدنيا ثم لم يتب منها...» | ابن عمر | ٣٨٩/١٧ |
| «من شرب فى إناء ذهب أو فضة... » | عبد الله بن عمر | ٨٣/١ |
| «من شرب فى إناء من ذهب أو فضة...» | أم سلمة | ٢٢٣/٨ |
| «من شرط شرطا ليس فى كتاب الله...» | الزهرى | ٥٣٢/١٤ |
| «من شك فى صلاة فليسجد سجدتين » | عبد الله بن جعفر | ٥٢٦/٤ |
| «من شهد الجنازة حتى يصلى عليها فله قيراط» | أبو هريرة | ٢٧٦/٧ |
| «من شهد له خزيمة أو شهد عليه فهو حسبه» | خزيمة بن ثابت | ٤٣٤/٢٠ |
| «من شهد معنا هذه الصلاة...» | عروة بن مُضَرِّس | ٢٥٦/١٠ |
| «من شهودك أنك خبثت بها...» | ابن عباس | ٢٠٦/١٧، ٢٧٩ |
| «من صاحب تركة الحباب بن عمرو ؟ » | سلامة بنت معقل | ٥٢٦/٢١ |
| «من صاحب الجارية؟» | أبو برزة الأسلمى | ٥٣٦/١٠ |
| «من صاحبتك؟» | ابن عباس | ٢٠٦/١٧ |
| «من صام الدهر ضيقت عليه جهنم هكذا» | أبو موسى | ١٢٤/٩ |
| «من صام رمضان إيمانًا واحتسابًا...» | أبو هريرة | ١٣٨/٩ |
| «من صام رمضان ثم أتبعه ستًّا من شوال...» | أبو أيوب | ٩٨/٩، ٩٩ |
| «من صام رمضان فعرف حدوده...» | أبو سعيد | ١٣٧/٩ |

| | | |
|---|---|---|
| «من صام رمضان وستًا من شوال...» | جابر بن عبد الله | ٩٩/٩ |
| «من صام يوم الأربعاء والخميس والجمعة...» | ابن عمر | ١٠٨/٩ |
| «من صام يومًا فى سبيل الله باعد الله...» | أبو سعيد | ١١١/٩، ٥٦٩/١٨ |
| «من صحبك؟» | عبد الله بن عمرو | ٥٤٣/١٠ |
| «من صلى اثنتى عشرة ركعة كل يوم تطوعًا...» | أم حبيبة | ٢٥٧/٥ |
| «من صلى أربع ركعات خلف العشاء الآخرة...» | ابن عباس | ٢٧٢/٥ |
| «من صلى أربعًا قبل الظهر وأربعًا بعدها..» | أم حبيبة | ٢٥٩/٥ |
| «من صلى البردين دخل الجنة» | عبد الله بن قيس | ٢٩٢/٣، ٢٩٣ |
| «من صلى ثنتى عشرة ركعة بنى الله له بيتا في الجنة» | أم حبيبة | ٢٥٨/٥ |
| «من صلى ثنتى عشرة ركعة فى يوم بنى الله له بيتا في الجنة» | أم حبيبة | ٢٦٠/٥ |
| «من صلى ثنتى عشرة ركعة فى يوم وليلة...» | أم حبيبة | ٢٥٧/٥ |
| «من صلى خلف الإمام فإن قراءة الإمام له قراءة» | جابر بن عبد الله | ٢٠/٤ |
| «من صلى صلاة الصبح فهو فى ذمة الله...» | جندب بن عبد الله بن سفيان | ٢٩٠/٣، ٢٩١ |
| «من صلى صلاة لم يقرأ فيها بأم القرآن فهى خداج» | أبو هريرة | ٣٩٦/٣ ، ١٩/٤ |
| «من صلى صلاة لم يقرأ فيها بأم الكتاب فهى خداج» | أبو هريرة | ٣٩٩/٣ |
| «من صلى صلاة لم يقرأ فيها بفاتحة الكتاب...» | أبو هريرة | ٣٩٧/٣، ٤٠/٤ ، ٦١٠ |
| «من صلى صلاتنا واستقبل قبلتنا فلا يذبح حتى ينصرف» | البراء بن عازب | ٣٠١/١٩ |
| «من صلى صلاتنا واستقبل قبلتنا وأكل ذبيحتنا فذلك المسلم...» | أنس بن مالك | ٣٠٠/٣ |

| | | |
|---|---|---|
| «من صلى صلاتنا ونسك منسكنا فقد أصاب» | البراء بن عازب | ٣٠٢/١٩ |
| «من صلى صلاتنا ونسك نسكنا...» | البراء بن عازب | ٥٥١/٦ ، ٦٠٧ |
| «من صلى العشاء فى جماعة فهو كقيام نصف ليلة...» | عثمان | ٥١٦/٥ |
| «من صلى العشاء فى جماعة كان كقيام نصف ليلة» | عثمان بن عفان | ٢٨٩/٣ |
| «من صلى على جنازة فله قيراط... » | أبو هريرة | ٢٧٧/٧ ، ٢٧٩ |
| «من صلى على جنازة فله قيراط» | ثوبان | ٢٨٠/٧ |
| «من صلى على جنازة فى المسجد فلا شىء له» | أبو هريرة | ٤٣٣/٧ |
| «من صلى فليصل مثنى مثنى...» | ابن عمر | ٤١١/٥ |
| «من صلى فى ثوب واحد فليخالف بين طرفيه» | أبو هريرة | ٢٣٣/٤ |
| «من صلى قائمًا فهو أفضل...» | عمران بن حصين | ٤٤٦/٤، ٣١٤/٥ |
| «من صلى معنا صلاة الغداة ووقف معنا حتى نفيض» | عروة بن مضرس | ٦٩/١٠ |
| «من صلى من صلاة الصبح ركعة قبل أن تطلع الشمس...» | أبو هريرة | ٦٩/٣ |
| «من صنع أمرًا على غير أمرنا فهو رد» | عائشة | ٢٣٩/٢١ |
| «من صور صورة عذب...» | ابن عباس | ٢٨/١٥ |
| «من صور صورة فى الدنيا...» | ابن عباس | ٢٧/١٥، ٣٣ |
| «من ضار أضر الله به...» | أبو صرمة | ٣٩٥/٢٠ |
| «من ضار ضار الله به...» | أبو صرمة | ٥٤٣/١١ |
| «من ضحى قبل الصلاة فإنما ذبح لنفسه...» | البراء بن عازب | ٣٠٣/١٩ |
| «من ضحى منكم فلا يصبحن فى بيته ...» | سلمة بن الأكوع | ٣٥٦/١٩ |
| «من ضرب بسوط ظلما اقتص منه يوم القيامة» | أبو هريرة | ٢٢٤/١٦ |
| «من ضرب حدا...» | النعمان بن بشير | ٥١٨/١٧ |
| «من طاف بالبيت سبعًا يحصيه كُتبت له بكل خطوة حسنة...» | عبد الله بن عمر | ٤٩/١٠ |
| «من طاف سبعًا وركع ركعتين كانت كعتاق رقبة» | عبد الله بن عمر | ٥٠/١٠ |

| | | |
|---|---|---|
| «من طال عمره وحسن عمله» | أبو بكرة | ١٥٢/٧ |
| «من طال عمره وحسن عمله» | عبد الله بن بسر | ١٥٢/٧ |
| «من طعم منهم فليصم بقية يومه» | سلمة بن الأكوع | ٤٧٥/٨ |
| «من طلب أخاه فليطلبه بعفاف...» | أبى بن كعب | ٤٨٧/١١، ٤٨٨ |
| «من طلب حقًّا فليطلب فى عفافٍ وافٍ» | ابن عمر وعائشة | ٣٢٢/١١ |
| «من طلب علمًا فأدركه ...» | واثلة بن الأسقع | ٣٥١/٢٠ |
| «من طلب قضاء المسلمين حتى يناله...» | أبو هريرة | ٢٤٥/٢٠ |
| «من طلب القضاء واستعان عليه وكل إليه...» | أنس بن مالك | ٢٨٨/٢٠ |
| «من طلق امرأته ثلاثا لم تحل له...» | سويد بن غفلة | ٥٥٧/١٤ |
| «من طلق للبدعة ألزمناه بدعته» | معاذ بن جبل | ٢٢٧/١٥ |
| «من طلق ما لا يملك فلا طلاق له...» | عبد الله بن عمرو | ٧٧/٢٠ |
| «من ظلم قيد شبر من أرض...» | عائشة | ٥٧/١٢ |
| «من ظلم من الأرض شيئا فإنه يطوق من سبع أرضين» | سعيد بن زيد | ٥٥/١٢ |
| «من عاد مريضًا بكرة شيعه سبعون ألف ملك» | على بن أبى طالب | ١٨٤/٧ |
| «من عاد مريضًا فلا يزال فى الرحمة...» | محمد بن عمرو بن حزم الأنصارى | ٤٥٥/٧ |
| «من عاد مريضًا لم يزل فى خرفة... » | ثوبان | ١٨١/٧، ١٨٢ |
| «من عاد مريضًا لم يزل يخوض فى الرحمة حتى يجلس» | جابر بن عبد الله | ١٨٣/٧ |
| «من عالمكم؟» | البراء بن عازب | ١٦٢/١٧ |
| «من عرض عرضنا له ومن حرق حرقناه...» | البراء | ٢١٨/١٦ |
| «من عرض عليه طيب فلا يرده...» | أبو هريرة | ٤٣٧/٦ |
| «من عزى مصابًا فله مثل أجره» | عبد الله بن مسعود | ٤٥٥/٧ |
| «من عقر بهيمة ذهب ربع أجره...» | أبو رهم السماعى | ٢٨٩/١٨ |
| «من علق تميمة فلا أتم الله له...» | عقبة بن عامر الجهنى | ٥٤٧/١٩ |
| «من علم أن الصلاة حق واجب...» | عثمان بن عفان | ٦/٣ |
| «من علم أن الليل يؤويه إلى أهله فليشهد الجمعة» | أبو هريرة | ٢٤٠/٦ |

| | | |
|---|---|---|
| «من علم الرمى ثم تركه...» | عقبة بن عامر | ٢٠/٧٦ |
| «من عمر أرضًا ليست لأحد فهو أحق بها» | عائشة | ١٢/١٩٩، ٢١٨ |
| «من عمره الله ستين سنة فقد أعذر إليه فى العمر» | أبو هريرة | ٧/١٤٩ |
| «من عين تسمى سلسبيلا» | ثوبان | ٢/٢٥ |
| «من غدا إلى المسجد وراح...» | أبو هريرة | ٥/٥٢١ |
| «من غرس هذا؟ مسلم أو كافر؟» | أنس | ١٢/١٨٤ |
| «من غرس هذا النخل؟ أمسلم أم كافر؟» | جابر | ١٢/١٨٦ |
| «من غزا وهو لا ينوى فى غزاته إلا عقالا...» | عبادة بن الصامت | ١٣/٣٣٠ |
| «من غسل مسلمًا فكتم عليه غفر الله له أربعين مرة» | أبو رافع | ٧/٢٢٥ |
| «مِن غسل الميت الغسلُ...» | أبو هريرة | ٢/٣٨٧ |
| «من غسل الميت فليغتسل» | أبو هريرة | ٢/٣٨٩ |
| «من غسل ميتًا فليبدأ بعصره» | ابن سيرين | ٧/٢٠٨ |
| «من غسل ميتًا فليغتسل...» | أبو هريرة | ٢/٣٨٢، ٣٨٧، ٣٨٨، ٣٨٩ |
| «من غسل ميتًا فليغتسل» | - | ٢/٣٨٦ |
| «من غسل ميتًا فليغتسل» | أبو سعيد | ٢/٣٨٤ |
| «من غسل ميتًا فليغتسل» | حذيفة | ٢/٣٩٢ |
| «من غسل واغتسل...» | أبو هريرة | ٦/٤٢٨ |
| «من غسل واغتسل وغدا وابتكر...» | أوس بن أوس | ٦/٣٨٢ |
| «من غسل واغتسل يوم الجمعة...» | عبد الله بن عمرو | ٦/٣٨٢ |
| «من غسل يوم الجمعة واغتسل ثم بكر وابتكر...» | أوس بن أوس | ٦/٣٨٩ |
| «من غسله الغسل ومن حمله الوضوء» | أبو هريرة | ٢/٣٨٢، ٣٨٤ |
| «من غشنا فليس منا» | عبد الله بن أبى ربيعة | ١١/٣١١ |
| «من غل فأحرقوا متاعه» | عمر بن الخطاب | ١٨/٣٤٠ |
| «من غير دينه فاضربوا عنقه» | زيد بن أسلم | ١٧/٩٥ |
| «من فاتته الجمعة من غير عذر...» | قدامة بن وبرة | ٦/٤٤٨ |

| | | |
|---|---|---|
| «من فاتته صلاة العصر فكأنما وتر أهله وماله» | عبد الله بن عمر | ٢٤٥/٣ |
| «من فاتته الصلاة فكأنما وتر أهله وماله» | نوفل بن معاوية الديلى | ٢٤٥/٣ |
| «من فاتته العصر فكأنما وتر أهله وماله» | عبد الله بن عمر | ٢٤٥/٣ |
| «من فارق الجماعة شبرا...» | أبو ذر | ٥٦٠/١٦ |
| «من فارق الروح الجسد وهو برىء من ثلاث» | ثوبان | ٣١٢/١١، ٣١٣ |
| «من فرق بين والدة وولدها...» | أبو أيوب الأنصارى | ٤١٠/١٨ |
| «من فرق بين الولد وأمه...» | أبو أيوب الأنصارى | ٤١٠/١٨ |
| «من فطر صائمًا أو جهز غازيًا...» | زيد بن خالد الجهنى | ٥٣٧/٨ |
| «من فطر صائمًا كان له مثل أجر...» | زيد بن خالد الجهنى | ٥٣٦/٨ |
| «من فعل بكِ هذا؟ أفلان؟ أفلان؟» | أنس | ٩/١٢ |
| «من فعل كذا وكذا فله من النفل كذا وكذا» | ابن عباس | ١٠١/١٣ |
| «من فعل كذا وكذا وأتى مكان كذا وكذا...» | ابن عباس | ١٧٥/١٣ |
| «من قاء أو رعف...» | عائشة | ٤١٣/١ |
| «من قاتل فى سبيل الله فواق ناقة» | معاذ بن جبل | ٥٥٩/١٨ |
| «من قاتل فى سبيل الله من رجل مسلم...» | معاذ بن جبل | ٥٥٨/١٨ |
| «من قاتل لتكون كلمة الله هى العليا...» | أبو موسى الأشعرى | ٥٥٠/١٨، ٥٥١ |
| «من قال حين يسمع المؤذن...» | سعد بن أبى وقاص | ١٥٥/٣ |
| «من قال حين يسمع النداء...» | جابر بن عبد الله | ١٥٤/٣، ١٥٥ |
| «من قال علىّ ما لم أقل فليتبوأ بيتًا فى جهنم...» | أبو هريرة | ٣٤٢/٢٠ |
| «من قال علىّ ما لم أقل فليتبوأ مقعده من النار...» | أبو هريرة | ٣٢٨/٢٠ |
| «من قال لامرأته: أنت طالق إن شاء الله...» | ابن عباس | ٣٢٩/١٥ |
| «من قال لصاحبه يوم الجمعة والإمام يخطب...» | أبو هريرة | ٣٥٦/٦ |
| «من قال: باسم الله توكلت على الله...» | أنس بن مالك | ٥٢٣/١٠ |
| «من قال ما شاء الله فليجعل بينهما ثم شئت» | قتيلة بنت صيفى | ٣٥٠/٦ |
| «من قام رمضان إيمانًا واحتسابًا...» | أبو هريرة | ٣١٦/٥- ٣١٨ |
| «من قام رمضان إيمانًا واحتسابًا...» | عائشة | ٣٢٠/٥ |
| «من قام ليلة القدر إيمانًا واحتسابًا...» | أبو هريرة | ١٤٦/٩ |

| | | |
|---|---|---|
| «من قام من مجلسه يوم الجمعة ثم عاد فهو أحق به» | عروة بن الزبير | ٤٠٣/٦ |
| «من قامه إيمانًا واحتسابًا غفر له...» | أبو هريرة | ٣١٧/٥ |
| «من القائل كلمة كذا وكذا؟» | عبد الله بن عمر | ٣٣٨/٣ |
| «من قتل خطأً فديته مائة من الإبل...» | عبد الله بن عمرو | ٣٠٨/١٦ |
| «من قتل دون ماله فهو شهيد...» | سعيد بن زيد | ٤٩٨/٦، ٦٥/١٧، ٦٦ |
| «من قتل دون ماله فهو شهيد» | ثابت مولى عمر بن عبد الرحمن | ٤٩٧/٦ |
| «من قتل دون ماله فهو شهيد» | عبد الله بن عمرو | ٥٤٧/١٧ |
| «من قتل دون ماله مظلوما فله الجنة» | عبد الله بن عمرو | ٥٤٦/١٧ |
| «من قتل الرجل؟» | سلمة بن الأكوع | ١٤٨/١٣ |
| «من قتل عبده قتلناه....» | سمرة | ١٩٣/١٦، ١٩٤ |
| «من قتل عصفورًا بغير حقه سأله الله ...» | عبد الله بن عمرو | ٣١١/١٩ |
| «من قتل عصفورا فما فوقها...» | عبد الله بن عمرو | ٢٨٥/١٨ |
| «من قتل عمدا دفع إلى ولى المقتول...» | عبد الله بن عمرو | ٢٦٨/١٦، ٢٩٩ |
| «من قتل فى سبيل الله أو مات فهو فى الجنة» | عمر بن الخطاب | ٢٣١/١٣، ٥٥٤/١٨ |
| «من قتل فى سبيل الله فهو فى الجنة» | عمر بن الخطاب | ٢٣١/١٣ |
| «من قتل فى عميا أو رميا تكون بينهم...» | ابن عباس | ١٦٣/١٦، ٢٢٣ |
| «من قتل فى عمية أو رمية بحجر أو بسوط...» | ابن عباس | ٢٤٨/١٦ |
| «من قتل فى عمية فى رميا تكون بينهم...» | طاوس | ٢٢٣/١٦ |
| «من قتل قتيلًا فإنه لا يرثه» | ابن عباس | ٤٥٧/١٢ |
| «من قتل قتيلا فله سلبه» | أنس | ١٤٦/١٣ |
| «من قتل قتيلا فله سلبه» | سمرة | ١٥٦/١٣ |
| «من قتل قتيلا فله كذا وكذا...» | ابن عباس | ١٧٥/١٣، ١٧٦ |
| «من قتل قتيلا له عليه بينة...» | أبو قتادة | ١٤٤/١٣، ٢٠٢ |
| «من قتل قتيلا من أهل الذمة لم يرح رائحة الجنة» | عبد الله بن عمرو | ٤٧٨/١٦، ٧٦/١٩ |
| «من قتل كافرا فله سلبه» | أنس | ١٤٥/١٣ |
| «من قتل متعمدا دفع إلى أولياء القتيل...» | عبد الله بن عمرو | ٢٤٧/١٦ |

| | | |
|---|---|---|
| «من قتل متعمدا دفع إلى أولياء المقتول...» | عبد الله بن عمرو | ٢٩٤/١٦ |
| «من قتل معاهدا بغير حق لم يرح رائحة الجنة...» | عبد الله بن عمرو | ٧٥/١٩ |
| «من قتل معاهدا بغير حق لم يرح رائحة الجنة» | عبد الله بن عمرو | ٤٧٧/١٦ |
| «من قتل معاهدا فى غير كنهه حرم الله عليه الجنة» | أبو بكرة | ١٥٦/١٩ |
| «من قتل مؤمنا ثم اغتبط بقتله لم يقبل منه...» | عبادة بن الصامت | ١٥١/١٦ |
| «من قتل نفسا معاهدة بغير حلها...» | أبو بكرة | ٧٦/١٩ |
| «من قتل نفسه بحديدة فحديدته فى يده...» | أبو هريرة | ١٥٩/١٦، ٥٦٣/١٩ |
| «من قتل وزغة فى أول ضربة فله كذا وكذا حسنة...» | أبو هريرة | ٣١٩/٤ |
| «من قتلك؟ فلان؟» | أنس بن مالك | ٢١٤/١٦ |
| «من قد كنت أخذت له مالاً...» | الفضل بن عباس | ٥٥٨/١١ |
| «من قدّم من نسكه شيئا أو أخّره فلا شىء عليه» | عبد الله بن عباس | ١٥٩/١٠ |
| «من قذف مملوكا بريئا...» | أبو هريرة | ١١٢/١٦ |
| «من قرأ ألف آية فى سبيل الله...» | معاذ الجهنى | ٥٦٨/١٨ |
| «من قرأ بالآيتين من آخر سورة البقرة فى ليلة كفتاه» | أبو مسعود | ٤٠٥/٥ |
| «من قرأ بالآيتين من سورة البقرة...» | أبو مسعود | ٤٠٦/٥ |
| «من قرأ سورة الكهف فى يوم الجمعة...» | أبو سعيد الخدرى | ٤٥١/٦ |
| «من قرأ سورة الكهف كما أنزلت...» | أبو سعيد الخدرى | ٤٥١/٦ |
| «من قرأ منكم بالتين والزيتون فانتهى إلى آخرها...» | أبو هريرة | ٤٥٣/٤ |
| «من قريش» | جابر | ٢٩/١١ |
| «من قطع السدر إلا من زرع صُب عليه العذاب صبًّا» | شيخ من ثقيف | ١٩٢/١٢ |
| «من قطع سدرة صوب الله رأسه فى النار» | عبد الله بن حُبشى، جابر بن عبد الله | ١٩٠/١٢ |
| «من قعد فى مصلاه حين ينصرف...» | معاذ بن أنس الجهنى | ٤٨٢/٥ |

| | | |
|---|---|---|
| «من قعد قاضيًا بين المسلمين فقد ذبح بغير سكين» | أبو هريرة | ٢٧٤/٢٠ |
| «من قلد الهدى فإنه لا يحل...» | ابن عباس | ٣٥٨/٩ |
| «من القوم ؟» | عبد الله بن عباس | ١٩٥/١٠ |
| «من كاتب عبده على مائة أوقية...» | - | ٤٧٣/٢١ |
| «من كان أصبح صائمًا فليتم» | الربيع بنت معوذ ابن عفراء | ٨٥/٩ |
| «من كان اعتكف معى فليعتكف العشر الأواخر...» | أبو سعيد الخدرى | ٣٧٩/٤ |
| «من كان بينه وبين قوم عهد فلا يشد عقدة...» | عمرو بن عبسة | ١٥٥/١٩ |
| «من كان حالفًا فلا يحلف إلا بالله» | ابن عمر | ٦٤/٢٠ |
| «من كان خرج فليرجع فإنى أريت...» | أبو سعيد الخدرى | ١٨٥/٩ |
| «من كان ذا وجهين فى الدنيا...» | عمار بن ياسر | ٢٢١/٢١ |
| «من كان ذبح قبل الصلاة فليعد» | أنس | ٢٥٧/١٩ |
| «من كان ذبح منكم قبل الصلاة فليعد...» | جندب | ٦٠٨/٦ |
| «من كان عليه صوم رمضان فليسرده ...» | أبو هريرة | ٥٩٥/٨ |
| «من كان عنده ذبح يريد أن يذبحه...» | أم سلمة | ٢٦٨/١٩ |
| «من كان عنده شىء فليجئ به» | أنس | ٥٦٤/١٤ |
| «من كان عنده شىء من هذه النساء...» | سبرة | ٣٨٠/١٤ |
| «من كان عنده فضل زاد فليأتنا به» | أنس | ٥٦٥/١٤، ١٨٩/١٨ |
| «من كان عنده فضل ظهر فليعد به...» | أبو سعيد | ٥٨٤/١٩ |
| «من كان عنده من هذه الخمر شىء فليأت بها» | عبد الله بن عمر | ٣٨٧/١٧ |
| «من كان فى سفر على حمولة يأوى إلى شبع» | سلمة بن المحبق | ٥٥٤/٨ |
| «من كان لنا عاملا فليكسب زوجة...» | المستورد بن شداد | ٣٠٧/١٣ |
| «من كان له إمام فإن قراءة الإمام له قراءة» | عبد الله بن شداد | ٢١/٤ |
| «من كان له إمام فقراءة الإمام له قراءة» | جابر بن عبد الله | ٢١/٤ |
| «من كان له ثوبان فليصل فيهما...» | عبد الله بن عمر | ٢٢٦/٤ |
| «من كان له شرك فى مملوك فأعتقه فعليه خلاصه...» | أبو هريرة | ٣٣٤/٢١ |

| | | |
|---|---|---|
| «من كان له فرطان من أمتى أدخله الله الجنة» | عبد الله بن عباس | ٤٨٩/٧ |
| «من كان له فضل أرض فليزرعها...» | جابر بن عبد الله | ١٥٥/١٢ |
| «من كان لينًا هينًا سهلًا حرمه الله على النار» | أبو هريرة | ٣٩/٢١ |
| «من كان متحريًا فليتحرها فى السبع البواقى» | ابن عمر | ١٦١ /٩ |
| «من كان متحريًا فليتحرها ليلة سبع وعشرين» | ابن عمر | ١٦١ /٩ |
| «من كان معه فضل من ظهر فليعد به....» | أبو سعيد الخدرى | ٣٣٧/٨ |
| «من كان معه هدى فإنه لا يحل من شىء...» | ابن عمر | ٣٣٨/٩ |
| «من كان معه الهدى فليقم على إحرامه...» | أسماء بنت أبى بكر | ٢٤٢/٩ |
| «من كان معه هدى فليهل بالحج» | عائشة | ٢٦٨/٩، ٣٩/١٠ |
| «من كان معه هدى فليهلل» | عائشة | ٢٨٥/٩، ٢٨٦ |
| «من كان منكم أهدى فإنه لا يحل... » | عبد الله بن عمر | ٣٥٨/٩، ٢٤٧/١٠ |
| «من كان منكنّ تؤمن بالله واليوم والآخر فلا ترفع رأسها حتى يرفع الرجال رءوسهم» | أسماء بنت أبى بكر | ٢٤٢/٤ |
| «من كان موسرا لأن ينكح...» | أبو نجيح | ٥٨٦/١٣ |
| «من كان وصلة لأخيه المسلم...» | ابن عمر | ٥٩٧/١٦ |
| «من كان يصلى بعد الجمعة فليصل أربعًا» | أبو هريرة | ٤٢١/٦ |
| «من كان يؤمن بالله واليوم الآخر فإذا شهد أمرًا...» | أبو هريرة | ١١٥/١٥ |
| «من كان يؤمن بالله واليوم الآخر فعليه الجمعة يوم الجمعة...» | جابر | ٢٥٩/٦ |
| «من كان يؤمن بالله واليوم الآخر فلا يأخذن إلا مثلًا بمثل» | سعد بن أبى وقاص | ٩٥/١١ |
| «من كان يؤمن بالله واليوم الآخر فلا يدخل الحمام إلا بمئزر...» | أبو أيوب الأنصارى | ١٦٥/١٥ |
| «من كان يؤمن بالله واليوم الآخر فلا يسقين ماءه ولد غيره...» | رويفع بن ثابت | ٢٠٨/١٨ |
| «من كان يؤمن بالله واليوم الآخر فلا يقعد على مائدة يدار عليها الخمر...» | عمر بن الخطاب | ١٧/١٥ |
| «من كان يؤمن بالله واليوم الآخر فليكرم جاره» | أبو شريح العدوى | ٤٨/١٩ |

| | | |
|---|---|---|
| «من كان يؤمن بالله واليوم الآخر فليكرم ضيفه» | أبو شريح الخزاعى | ٥٠٥/٩ |
| «من كان يؤمن بالله واليوم الآخر فليكرم ضيفه...» | أبو هريرة | ٥٨٦/١٦ |
| «من كانت عنده مظلمة لأخيه فليتحلله ...» | أبو هريرة | ٥٢٨/١١ |
| «من كانت عنده مظلمة لأخيه من عرضه أو ماله فليؤدها» | أبو هريرة | ١٤٦/٧ |
| «من كانت عنده مظلمة من أخيه...» | أبو هريرة | ٦/١٢ |
| «من كانت عنده نصيحة لذى سلطان...» | جبير بن نفير | ٥٨٥/١٦ |
| «من كانت له أرض فليزرعها...» | جابر بن عبد الله | ١٥٣/١٢، ١٥٤، ١٥٩، ١٦٠ |
| «من كانت له أرض فليزرعها...» | ظهير بن رافع | ١٦١/١٢ |
| «من كانت له امرأتان فمال إلى إحداهما...» | أبو هريرة | ١٢٥/١٥ |
| «من كانت له فضل أرض فليزرعها...» | جابر | ١٥٩/١٢ |
| «من الكبائر شتم الرجل والديه» | عبد الله بن عمرو | ١٨١/٢١ |
| «من كذب على فليتبوأ مقعده من جهنم» | عقبة بن عامر | ٥٢٥/٦ |
| «من كذب على متعمدًا فليتبوأ مقعده من النار» | المغيرة بن شعبة | ٥٠١/٧ |
| «من كذب على متعمدًا فليتبوأ مقعده من النار» | عبد الله بن عمرو | ١٣٥/٢١ |
| «من كسر أو عرج فقد حل» | الحجاج بن عمرو | ٤١٨/١٠، ٤١٩ |
| «من كشف امرأة فنظر إلى عورتها...» | محمد بن ثوبان | ٥٥٤/١٤ |
| «من كشف خمار امرأة ونظر إليها...» | محمد بن ثوبان | ٥٥٤/١٤ |
| «من كظم غيظا وهو قادر على أن ينفذه...» | معاذ بن أنس | ٥٧٦/١٦ |
| «من لا يرحم الناس لا يرحمه الله» | جرير بن عبد الله | ٥٧٥/١٦، ١٤١/١٨ |
| «من لايمكم من مملوكيكم فأطعموه...» | أبو ذر | ١٠٢/١٦ |
| «من لبّد رأسه فليحلق....» | عبد الله بن عمر | ١٣٤/١٠ |
| «من لبّد رأسه للإحرام فقد وجب عليه الحلاق» | عبد الله بن عمر | ١٣٣/١٠ |
| «من لبس الحرير فى الدنيا فلا خلاق له» | عمر بن الخطاب | ٤٩٩/٦ |
| «من لبس الحرير فى الدنيا لم يلبسه فى الآخرة» | أنس بن مالك | ١٠٧/٥ |

| | | |
|---|---|---|
| «من لبس الحرير فى الدنيا لم يلبسه فى الآخرة» | عمر | ١٠٦/٥، ٥١٠/٦ |
| «من لزم الاستغفار جعل الله له من كل هم فرجًا» | عبد الله بن عباس | ٨٨/٧ |
| «من لطم مملوكه أو ضربه حدا لم يأته...» | ابن عمر | ١١٢/١٦ |
| «من لعب بالنرد فقد عصى الله ورسوله» | أبو موسى | ١١١/٢١، ١١٢ |
| «من لعب بالنردشير فكأنما صبغ يده فى لحم خنزير ودمه» | بريدة | ١١١/٢١ |
| «من لعب بالنردشير فهو كمن غمس يده في لحم الخنزير ودمه» | بريدة | ١١١/٢١ |
| «من لك بلا إله إلا الله يوم القيامة؟» | أسامة بن زيد | ١٤٣/١٦، ٨٣/١٧، ٩٨ |
| «من لكعب بن الأشرف...؟» | جابر | ٤٧٢/١٣، ٢٦٩/١٨ |
| «من لم يبيت الصيام قبل طلوع الفجر فلا صيام له» | عائشة | ٤١١/٨ |
| «من لم يبيت الصيام من الليل فلا صيام له» | حفصة | ٤١٠/٨ |
| «من لم يترك ولدًا ولا والدًا فورثته كلالة» | أبو سلمة ابن عبد الرحمن | ٤٧١/١٢ |
| «من لم يجد الإزار فليلبس السراويل» | ابن عباس | ٤٥١/٩ |
| «من لم يجد نعلين فليلبس خفين» | جابر | ٤٥٣/٩ |
| «من لم يجد نعلين فليلبس الخفين وليقطعهما» | ابن عمر | ٤٥٠/٩ |
| «من لم يجمع الصيام قبل الفجر فلا صيام له» | حفصة | ٤٠٩/٨ |
| «من لم يجمع الصيام مع الفجر فلا صيام له» | حفصة | ٤٠٩/٨ |
| «من لم يجمع الصيام من الليل فلا صيام له» | حفصة | ٤٧٧/٨ |
| «من لم يحبسه مرض أو حاجة» | أبو أمامة | ٢٢٧/٩ |
| «من لم يدرك الركعة لم يدرك الصلاة» | عبد العزيز بن رفيع عن رجل | ٥٢٠/٣ |
| «من لم يدع قول الزور والعمل به...» | أبو هريرة | ٣٤/٩ |
| «من لم يذر المخابرة فليؤذن بحرب من الله» | جابر بن عبد الله | ١٥١/١٢ |
| «من لم يصل ركعتى الغداة فليصل إذا طلعت الشمس» | أبو هريرة | ٢٩٤/٥ |

| | | |
|---|---|---|
| «من لم يصل ركعتى الفجر حتى تطلع الشمس فليصلهما» | أبو هريرة | ٢٩٤/٥ |
| «من لم يطهره البحر فلا طهره الله» | أبو هريرة | ١٣/١ |
| «من لم يغز أو لم يجهز غازيا...» | أبو أمامة | ١٦٣/١٨ |
| «من لم يكن منكم معه هدى...» | عائشة | ٢٩٦/٩ |
| «من لهذا؟» | جابر بن عبد الله | ٢٧٤/١٨، ٤٢٧ |
| «من مات على غير هذا فليس منى» | عبادة بن الصامت | ٧٥/٢١ |
| «من مات لا يشرك بالله شيئا دخل الجنة...» | جابر | ٤٨٤/١٣ |
| «من مات له ثلاثة من الولد...» | - | ٥٨٧/١٣ |
| «من مات وعليه صيام صام عنه وليه» | عائشة | ٥٨٠/٨، ٥٨١، ٦١/١٣ |
| «من مات ولم يغز...» | أبو هريرة | ١٦٣/١٨ |
| «من مات وهو برىء من ثلاث؛ من الكبر...» | ثوبان | ٣٣٦/١٨ |
| «من المتكلم؟ أو من القائل؟...» | أنس | ٣٨٧/٦ |
| «من المتكلم؟» | معاوية بن الحكم | ٢٧٠/٤ |
| «من مثل به أو حرق بالنار فهو حر...» | عبد الله بن عمرو | ١٩٦/١٦ |
| «من محمد رسول الله إلى بنى زهير...» | يزيد بن عبد الله | ٥٢٩/١٣ |
| «من محمد رسول الله أخى موسى وصاحبه..» | ابن عباس | ٥٣٩/٢٠ |
| «مَن مسّ ذكره أو أنثييه...» | بسرة بنت صفوان | ٤٠٢/١ |
| «من مسّ ذكره فعليه الوضوء» | أبو هريرة | ٣٨٦/١ |
| «من مسّ ذكره فليتوضأ» | بسرة بنت صفوان | ٣٨٣/١، ٤٠٢ |
| «من مسّ فرجه فلا يصلى حتى يتوضأ» | بسرة بنت صفوان | ٣٨٣/١ |
| «من مسّ فرجه فليتوضأ» | أم حبيبة | ٣٨٥/١ |
| «من المسبِّح آنفًا سبحان الله وبحمده؟» | أنس بن مالك | ٣٥٤/٤ |
| «من مشى إلى صلاة مكتوبة وهو متطهر...» | أبو أمامة | ٤٨٤/٥ |
| «من مشى مع قوم يرى أنه شاهد...» | أبو هريرة | ٥٨٦/١١ |
| «من ملك ذا رحم محرم فهو حر» | سمرة بن جندب | ٣٦٠/٢١ |
| «من ملك ذا رحم محرم فهو عتيق» | عبد الله بن عمر | ٣٦١/٢١ |
| «من ملك ذا محرم من ذى رحم فهو حر» | سمرة بن جندب | ٣٦٠/٢١ |
| «من ملك شيئا حياته فهو له ولورثته بعده» | شريح | ٣١٦/١٢ |

| | | |
|---|---|---|
| «من منح منيحة غدت بصدقة...» | أبو هريرة | ٣٤٧/٨ |
| «من نام عن حزبه أو عن شيء منه...» | عمر بن الخطاب | ٢٩٤/٥ |
| «من نام عن وتره أو نسيه...» | أبو سعيد | ٢٨٢/٥ |
| «من نام وفي يده غمر...» | أبو هريرة | ٥١/١٥ |
| «من نذر أن يطيع الله فليطعه...» | عائشة | ١٥٨/١٩، ١٨٤/٢٠، ٢٠٢، ٢٠٣ |
| «من نذر نذرًا لم يسمه فكفارته كفارة يمين» | ابن عباس | ١١٠/٢٠، ١٩٣ |
| «من نذر نذرًا لم يسمه فكفارته كفارة يمين» | عقبة بن عامر | ١٠٩/٢٠، ١١٠ |
| «من نزل منزلًا ثم قال: أعوذ بكلمات الله...» | خولة بنت حكيم | ٥٣١/١٠ |
| «من نسي صلاة أو نام عنها فكفارتها أن يصليها إذا ذكرها» | أنس بن مالك | ١٧٥/٤ |
| «من نسي الصلاة عليّ خطئ به طريق الجنة» | عبد الرحمن بن عوف | ٣٣٤/١٩، ٣٣٥ |
| «من نسي صلاة فلم يذكرها إلا وهو مع الإمام فليصل مع الإمام...» | عبد الله بن عمر | ١٨٢/٤ |
| «من نسي الصلاة فليصلها إذا ذكرها...» | أبو هريرة | ١٧٢/٤، ١٧٤، ٥٠٩، ٥/ ٢٠٦، ٢٠٧ |
| «من نسي صلاة فوقتها إذا ذكرها» | أبو هريرة | ١٧٦/٤ |
| «من نصر أخاه بظهر الغيب نصره الله...» | أنس | ٥٩٩/١٦ |
| «من هجر ما حرم الله عليه...» | عبد الله بن حبشي | ٣٣١/٨، ٥٣٩/١٨ |
| «من هذا السائق؟» | سلمة بن الأكوع | ١٥٥/٢١ |
| «من هذا معك؟» | أبو رمثة | ١٧٠/١٦ |
| «من هذا؟» | أبو هريرة | ٣٢٧/١ |
| «من هذا؟» | حذيفة عروة بن الزبير | ١١٢/٧، ١١٤ |
| «من هذا؟» | سلمة بن الأكوع | ٥٠٥/١٨ |
| «من هذا؟» | عبد الله بن عباس | ٤١١/٧، ٤٧٨/١٧ |
| «من هذه؟» | أم هانئ | ٣١٢/١٨ |
| «من هذه؟» | حبيبة بنت سهل | ١٧٩/١٥ |
| «من هذه؟» | عائشة | ٣٩٥/٥ |
| «من هما؟» | زينب امرأة ابن مسعود | ٣٢٤/٨ |

| | | |
|---|---|---|
| «من هؤلاء؟» | أبو حميد الساعدى | ١٢٧/١٨ |
| «من والى غير مواليه...» | ابن عباس | ٢١٥/١٧ |
| «من وجد تمرًا فليفطر عليه...» | أنس بن مالك | ٥٣٣/٨ |
| «من وجد دابة قد عجز عنها أهلها...» | عامر الشعبى | ٣٨٧/١٢ |
| «من وجد زادًا وراحلة...» | الحسن | ٢١٧/٩ |
| «من وجد سعة لأن يضحى فلم يضح فلا يحضر...» | أبو هريرة | ٢٥٠/١٩ |
| «من وجد ماله عند رجل فهو أحق به...» | سمرة بن جندب | ٦٣/١٢ |
| «من وجدتموه وقع على بهيمة فاقتلوه...» | ابن عباس | ٢٢٢/١٧ |
| «من وجدتموه يعمل عمل قوم لوط...» | ابن عباس | ٢١٥/١٧ |
| «من وقع على ذات محرم فاقتلوه...» | ابن عباس | ٢٢٣/١٧، ٢٣٣ |
| «من وقع على الرجل فاقتلوه» | ابن عباس | ٢١٦/١٧ |
| «من وقف معنا بعرفة فقد تم حجُّه» | عروة بن مضرس | ٧٠/١٠ |
| «من ولاه الله من أمر الناس شيئا فاحتجب...» | أبو مريم رجل من فلسطين من الأسْد | ٢٩٢/٢٠، ٢٩٣ |
| «من ولد له ولد فأحب أن ينسك عن ولده فليفعل» | رجل من بنى ضمرة عن أبيه | ٣٨٠/١٩ |
| «من ولد له ولد فأحب أن ينسك عنه فلينسك» | عبد الله بن عمرو | ٣٨٠/١٩ |
| «من ولى غسل ميت فأدى فيه الأمانة...» | عائشة | ٢٢٧/٧ |
| «من ولى القضاء فقد ذبح بغير سكين» | أبو هريرة | ٢٧٤/٢٠ |
| «من ولى ليتيم مالًا فليتجر به...» | عبد الله بن عمرو | ٣٢٣/١١ |
| «من ولى منكم عملًا فأراد الله به خيرًا...» | عائشة | ٣٢٥/٢٠ |
| «من وهب هبة فهو أحق بها ما لم يثب منها» | ابن عمر | ٣٣٥/١٢ |
| «من يأتينى بخبر القوم؟» | جابر بن عبد الله | ٣٤٨/١٣، ٤٨٦/١٨ |
| «من يأخذ هذا السيف بحقه؟» | هنيدة (رجل من خزاعة) | ٥٠٧/١٨ |
| «من يبتاع بئر رومة؟ غفر الله له» | عثمان بن عفان | ٢٨٨/١٢ |
| «من يبتاع مربد بنى فلان؟ غفر الله له» | عثمان بن عفان | ٢٨٧/١٢ |
| «من يتَّجر على هذا؟» | أبو سعيد الخدرى | ٥٤٣/٥ |

| | | |
|---|---|---|
| «من يتقبل لى بواحدة أتقبل له بالجنة؟» | ثوبان | ٣٩٠/٨ |
| «من يجهز هؤلاء؟ غفر الله له» | عثمان بن عفان | ٢٨٨/١٢ |
| «من يحرسنا لصلاتنا» | عبد الله بن مسعود | ١٧٥/٤ |
| «من يحرسنا الليلة» | سهل ابن الحنظلية | ٣١٢/٣، ٤٨٩/١٨ |
| «من يحرم الرفق يحرم الخير» | جرير | ٣٤/٢١ |
| «من يحفظ علينا الصلاة» | أبو هريرة | ١٣٤/٣، ١٣٥ |
| «من يردهم عنا وله الجنة» | أنس بن مالك | ١٥٠/١٨، ١٥١ |
| «من يشترى بقعة آل فلان بخير له...؟» | عثمان بن عفان | ٢٨٩/١٢ |
| «من يشترى بئر رومة فيكون دلوه...؟» | عثمان بن عفان | ٢٨٨/١٢ |
| «من يشترى العبد؟» | أنس | ٢٢٧/٢١ |
| «من يشتريه؟» | جابر بن عبد الله | ٤١٣/٢١، ٤١٧ |
| «من يشتريه منى؟» | جابر بن عبد الله | ٣٢١/٨، ٤١٥/٢١، ٤١٩ |
| «من يضمن لى ما بين لحييه...» | سهل بن سعد | ٥٩٢/١٦ |
| «من يضيف هذا؟» | أبو هريرة | ٣٤٨/٨ |
| «من يطع الله إذا عصيته؟!» | أبو سعيد | ٩/١٧ |
| «من يعذرنى من فلان؟» | عائشة | ١٥١/٢٠ |
| «من يعذرنى من فلان؟ أهدى إلى لقحة...» | أبو هريرة | ٣٣٥/١٢ |
| «من يعرفه؟» | ابن أبى نجيح | ٣٧٠/٢٠ |
| «من يقم ليلة القدر فيوافيها إيمانًا...» | أبو هريرة | ١٤٧/٩ |
| «من يقوم لهؤلاء؟» | صهيب | ٥٠١/١٨ |
| «من يمن المرأة أن تتيسر خطبتها» | عائشة | ٤٩٠/١٤ |
| «من ينتدب لهؤلاء فى آثارهم...؟» | عائشة | ٣٤٩/١٣ |
| «من ينظر ما صنع أبو جهل؟» | أنس بن مالك | ٣٠٧/١٨ |
| «من ينفق نفقة متقبلة؟» | عثمان بن عفان | ٢٨٧/١٢ |
| «من يهده الله فلا مضل له...» | جابر | ٣٤٢/٦ |
| «من يولد يولد على هذه الفطرة... » | الأسود بن سريع | ٤٠٢/١٢ |
| «من يؤوينى من ينصرنى حتى أبلغ...» | جابر | ٥٢١/١٦ |
| «من يؤينى وينصرنى...» | جابر بن عبد الله | ٣٠/١٨ |
| «المنان والمسبل إزاره...» | أبو ذر | ١٣/١١ |

| | | |
|---|---|---|
| «منبرى على ترعة من ترع الجنة» | سهل بن سعد | ٥١٠/١٠ |
| «منبرى هذا على ترعة من ترع الجنة» | أبو هريرة | ٥١٢/١٠ |
| «منعت العراق درهمها وقفيزها...» | أبو هريرة | ٤٤٨/١٨ |
| «منكم من أحد يقرأ شيئا من القرآن إذا جهرت بالقراءة؟» | عبادة بن الصامت | ٣٦/٤ |
| «منكم من يصلى الصلاة كاملة ومنكم من يصلى النصف...» | أبو اليسر | ٣٦٦/٤ |
| «منى كلها منحر...» | جابر | ٢٢٨/٢٠ |
| «منّى مناخ من سبق» | عائشة | ٤١٥/٢٠ |
| «مه؟» | عبد الله بن مسعود | ٤٦٣/١٥ |
| «مه لهو أطيب عند الله من ريح المسك» | اللجلاج | ١٧٣/١٧ |
| «مه! عليكم بما تطيقون...» | عائشة | ٣٩٥/٥ |
| «مه! فإن الله لا يمل حتى تملوا...» | عائشة | ٣٩٥/٥ |
| «مه يا عمر» | أنس | ١٥٨/٢١ |
| «مه يا عمر» | عبد الله بن عباس | ٤٩٦/٧ |
| «مهر البغى خبيث» | رافع بن خديج | ١٤٣/١٢ |
| «مهل أهل المدينة من ذى الحليفة» | جابر | ٣٧٢/٩ |
| «مهلًا عن الله مهلًا فإنه لولا شباب خشع...» | أبو هريرة | ٦٩/٧ |
| «مهلًا فإن الله قد نهاكم أن تحلفوا بآبائكم...» | ابن عمر | ٦٠/٢٠ |
| «مهلًا يا بلال فإنما يقيم من أذن» | عبد الله بن عمر | ١٢١/٣، ١٢٢ |
| «مهلا يا خالد بن الوليد لا تسبها...» | بريدة | ١٧٢/١٧، ١٨٤ |
| «مهلا يا عائشة إن الله يحب الرفق...» | عائشة | ٧٠/١٩ |
| «مهيم؟» | أنس | ٤٩٢/١٤، ٤٩٣، ٥٦١ |
| «موتان الأرض لله ولرسوله فمن أحيا منها شيئا فهى له» | ابن عباس | ٢٠٤/١٢ |
| «المؤذن يغفر له مد صوته» | أبو هريرة | ١١٧/٣ |
| «المؤذن يغفر له مدى صوته ويشهد له كل رطب ويابس سمعه» | أبو هريرة | ٢٠٩/٣ |
| «المؤذنون أمناء المسلمين على صلاتهم» | الحسن | ١٩٤/٣، ٢٠٩ |

| | | |
|---|---|---|
| «موضع سوط فى الجنة خير من الدنيا...» | سهل بن سعد | ٥١٧/١٨ |
| «موعدك كذا وكذا» | عائشة | ٣١٢/٩ |
| «المولى أخ فى الدين ونعمة...» | الزهرى | ٤٠٠/٢١ |
| «مولى القوم من أنفسهم وإنا لا تحل لنا الصدقة» | أبو رافع | ٦٨٢/٣ |
| «مولى القوم من أنفسهم» | أنس | ٦٨١/٣ |
| «المؤمن أخو المؤمن...» | عقبة بن عامر | ٢٧٨/١١، ٣١٨/١٤ |
| «المؤمن غر كريم والفاجر خب لئيم» | أبو هريرة | ٤١/٢١ |
| «مؤمن فى شعب من الشعاب...» | أبو سعيد | ٥٢٠/١٨ |
| «مؤمن قتل كافرا ثم سدد» | أبو هريرة | ٥٤١/١٨ |
| «المؤمن القوى خير وأحب إلى الله من المؤمن الضعيف...» | أبو هريرة | ٢٤٨/٢٠ |
| «المؤمن كل له فيه خير وليس ذاك لأحد إلا المؤمن» | صهيب | ١٦٧/٧ |
| «المؤمن الذى يخالط الناس ويصبر على أذاهم...» | ابن عمر | ٢٤٩/٢٠ |
| «المؤمن مألف ولا خير فيمن لا يألف ولا يؤلف» | أبو هريرة | ١٨٩/٢١ |
| «مؤمن مجاهد فى سبيل الله بنفسه وماله» | أبو سعيد | ٥٢٠/١٨ |
| «المؤمن مرآة المؤمن...» | أبو هريرة | ٥٩٧/١٦ |
| «المؤمن يوم الجمعة كهيئة المُحرم...» | ابن عباس | ٤٣٥/٦ |
| «المؤمنون تكافأ دماؤهم...» | عائشة | ١٧٩/١٦ |
| «المؤمنون تكافأ دماؤهم...» | على | ٩٠/١٧، ٣٠٩/١٨ |
| «المؤمنون تكافأ دماؤهم...» | قيس بن عباد | ١٦٦/١٤ |
| «المؤمنون شهداء الله فى الأرض» | أنس | ٢٣٢/٢١ |
| «الميت يعذب ببكاء الحى» | عمر بن الخطاب | ٤٩٩/٧ |
| «الميت يعذب بما نيح عليه فى قبره» | عمر بن الخطاب | ٤٩٨/٧ |
| «ميراثها لزوجها وولدها» | جابر | ٤٠٤/١٦ |
| «الميزان على ميزان أهل مكة...» | ابن عمر | ٢٩٥/٨، ٢٩٦ |

## (النون)


| | | |
|---|---|---|
| «النار جبار...» | أبو هريرة | ٥٧٨/١٧ |
| «النار يا عاصم بن ثابت قدمه فاضربه» | سهل بن أبى حثمة | ٢١٨/١٨ |
| «النار» | عبد الله بن مسعود | ٢١٨/١٨ |
| «الناس تبع لقريش فى الخير والشر» | جابر | ٥٠٥/١٦ |
| «الناس تبع لقريش فى هذا الشأن...» | أبو هريرة | ٨٠/٦، ٥٠٥/١٦ |
| «الناس قد صلوا ورقدوا» | أنس بن مالك | ٥٤/٣ |
| «الناس كالإبل المائة لا يجد الرجل فيها راحلة» | ابن عمر | ٤٠٠/٢٠ |
| «ناس من أمتى عرضوا على غزاة فى سبيل الله» | أنس بن مالك | ٥٤٣/١٨ |
| «نام الغُلَيم؟» | ابن عباس | ٢٧١/٥ |
| «ناولونى صاحبكم» | جابر بن عبد الله | ٣٦٥/٧، ٤٣٥ |
| «ناولينها فإن الحيضة ليست فى يدك» | عائشة | ٨٤/٢ |
| «ناولينى الخمرة من المسجد» | عائشة | ٧٥/٢ |
| «ناولينى الخمرة» | عائشة | ٧٤/٢ |
| «نبدأ بما بدأ الله به» | جابر بن عبد الله | ٦١٨/٦ |
| «النبى فى الجنة والشهيد...» | أسلم بن سليم | ٥٣٦/١٨ |
| «النبيذ وضوء لمن لم يجد الماء» | عبد الله بن عباس | ٣٤/١ |
| «النبيون ثم الأمثل فالأمثل» | سعد بن أبى وقاص | ١٥٧/٧ |
| «نحرت ههنا بمنى» | جابر بن عبد الله | ٢٤٨/١٠ |
| «نحرت ههنا ومنى كلها منحر» | جابر | ٢٢٨/٢٠ |
| «نحن الآخرون السابقون...» | أبو هريرة | ٣٧٦/٢، ٢٢٤/٦، ٢٢٦، ٢٧٣ |
| «نحن الآخرون ونحن السابقون يوم القيامة...» | أبو هريرة | ٢٢٥/٦ |
| «نحن نازلون غدًا إن شاء الله بخَيف بنى كنانة» | أبو هريرة | ٢١٢/١٠ |
| «نحن نازلون غدًا بخيف بنى كنانة» | أسامة بن زيد | ٤٤٩/١٢ |
| «نحن نعطيه من عندنا» | على بن أبى طالب | ٤٨٩/١٠، ٣٦٣/١٩ |

| | | |
|---|---|---|
| «الندم توبة» | ابن مسعود | ٤٥٧/٢٠ |
| «النذر نذران...» | عمران بن حصين | ١٩٠/٢٠ |
| «نرجمها وندع ولدها صغيرا...» | بريدة | ٢٠٨/١٧ |
| «نزل جبريل عليه السلام فأخبرنى بوقت الصلاة...» | أبو مسعود الأنصارى | ٢٢/٣ |
| «نزل جبريل عليه السلام فأمنا فصليت معه...» | عروة بن الزبير | ٢١/٣ |
| «نزل جبريل فأمنا فصليت معه..» | أبو مسعود الأنصارى | ٢١/٣ |
| «نزل نبى من الأنبياء تحت شجرة فلدغته نملة» | أبو هريرة | ٣٩٨/١٠ |
| «نزلت صحف إبراهيم أول ليلة من رمضان...» | واثلة بن الأسقع | ٢٣/١٩ |
| «نزلت على آنفًا سورة» | أنس بن مالك | ٤٠٨/٣ |
| «نزلت الليلة؟» | سهل بن الحنظلية | ٤٨٩/١٨ |
| «نزلت هذه الآية...» | أبو هريرة | ٣٢٠/١ |
| «النساء مع أزواجهن حيثما كانوا...» | أبو أمامة | ٥٣٤/١٤ |
| «نساؤكم وأبناؤكم أحب إليكم أم أموالكم» | عبد الله بن عمرو | ٢٤٨/١٣، ٢٥٠/١٨ |
| «نسخ الأضحى كل ذبح...» | على | ٢٥٥/١٩ |
| «نسخت الزكاة كل صدقة فى القرآن...» | على | ٢٥٥/١٩ |
| «نصرت بالرعب وأعطيت جوامع الكلم...» | أبو هريرة | ٤٩٧/١٣ |
| «نصرت بالرعب وأعطيت الخزائن...» | طاوس | ٤٩٧/١٣ |
| «نصرت بالصبا وأهلكت عاد بالدبور» | عبد الله بن عباس | ١٢٧/٧، ١٢٨ |
| «نصرت يا عمرو بن سالم» | مروان بن الحكم والمسور بن مخرمة | ١٦٣/١٩ |
| «النصف كثير» | سعد بن أبى وقاص | ٢٦/١٣ |
| «نصف لك قضاء » | أبو هريرة | ٢٩٨/١١ |
| «نصف الليل وقليل فاعله» | أبو ذر | ٣٥٥/٥ |
| «نظرت إليها؟» | المغيرة بن شعبة | ١٩/١٤ |
| «نعطيكم نصف الثمر على أن تعملوها...» | أبو هريرة | ١٠٧/١٢ |
| «نعم» (آصلها) | أسماء بنت أبى بكر | ٤٢١/١٨ |
| «نعم» (أفأصلها؟) | الشافعى | ٤٢٠/١٨ |


( السنن الكبير ٢٦/٢٢ )

| | | |
|---|---|---|
| «نعم» (أمهله حتى أتى بأربعة شهداء؟) | أبو هريرة | ٥٥٢/١٧ |
| «نعم» (إن وجدت مع امرأتي...) | أبو هريرة | ٢١١/١٧ |
| «نعم» (أيكره للرجل أن يموت؟...) | أبو بردة | ٦٣/١٨ |
| «نعم» (تستأمر النساء في أبضاعهن؟) | عائشة | ١٣٤/١٤ |
| «نعم» (إن ولد لي بعدك...؟) | علي | ٤١٠/١٩ |
| «نعم» (جوابا لسؤال علي: إن ولد لي ولد...؟) | علي | ٤٠٩/١٩ |
| «نعم» (فهل بعد هذا الخير من شر؟) | حذيفة بن اليمان | ٥٥٧/١٦ |
| «نعم» (فهل من وراء هذا الخير شر؟) | حذيفة بن اليمان | ٥٦١/١٦ |
| «نعم» (هل أتصدق عنها؟) | الحسن | ٦٠/١٣ |
| «نعم» (هل أعتق عن أبي؟) | عائشة | ٦٠/١٣ |
| «نعم» (هل أعتق عن أبي؟) | عطاء بن أبي رباح | ٦٠/١٣ |
| «نعم» (أستأنس يا رسول الله؟) | ابن عباس | ٤٦٤/١٣ |
| «نعم» (هل لأمي أجر إن تصدقت عنها؟) | عائشة | ٥٤/١٣، ٥٥ |
| «نعم» (هل بعد هذا الخير شر؟) | حذيفة | ٧٧/١٧ |
| «نعم» (يا رسول الله أتريد أن تخرج مخرجا؟) | موسى بن عقبة | ١٦٥/١٩ |
| «نعم» (يا رسول الله أرأيت...) | جابر | ٦٠٤/١٩ |
| «نعم» (يا نبي الله ثلاث أعطنيهن؟) | ابن عباس | ١٨٧/١٤ |
| «نعم» ( الرجل لا يقدر على الماء...) | أبو هريرة | ١٦٤/٢ |
| «نعم» ( أن يحضر نحر جزور) | أنس بن مالك | ٢٣٨/٣ |
| «نعم» جواب على السؤال عن الغياب عن الماء ومعه أهله أفيصيب منها | معاوية بن حكيم عن عمه | ١٦٨/٢ |
| «نعم» جواب على وثلاثًا يا رسول الله؟ | أبي بن عمارة | ٣٢٨/٢ |
| «نعم» جواب على: أمسح على الخفين؟ | أبي بن عمارة | ٣٢٨/٢ |
| «نعم» جواب لمن سأل: الله أمرك بهذا؟ | أنس | ٢٠٠/٩ |
| «نعم» جوابا على رجل هل يكفر عن أبيه إن تصدق عنه | أبو هريرة | ٥٧/١٣ |
| «نعم» جوابًا على السؤال عن المسح على الخفين | أبي بن عمارة | ٣٢٧/٢ |
| «نعم» جوابًا على سؤال: يومًا؟ | أبي بن عمارة | ٣٢٨/٢ |

| | | |
|---|---|---|
| «نعم» جوابًا عن السؤال عن المرأة تغتسل إذا احتلمت أو أبصرت الماء | عائشة | ٢١/٢ |
| «نعم» جوابًا عن سؤال: أفأتطهر من لحوم الإبل؟ | جابر بن سمرة | ١٨٣/٥ |
| «نعم» جوابًا عن سؤال: أفأصلى فى مرابض الغنم؟ | جابر بن سمرة | ١٨٣/٥ |
| «نعم» جوابًا عن سؤال: يا رسول الله تَقْرأ فيهن أو يُقرأ فيهن كلهن؟ | أبو أيوب الأنصارى | ٣٠٦/٥ |
| «نعم» جوابًا عن قول ابن الدحداحة: يا رسول الله أرأيت إن ابتعت هذا العذق فأعطيت اليتيم ألى مثله فى الجنة؟ | سعيد بن المسيب | ٢٥٤/١٢ |
| «نعم» جوابا لسؤال الفريعة أن ترجع إلى أهلها | الفريعة بنت مالك بن سنان | ٥٥١/١٥ |
| «نعم» جوابًا لسؤال: أفتحب أن تصلى عليه | أنس بن مالك | ٤٢٩/٧ |
| «نعم» ( فهل يقضى أن أحجَّ عنه؟) | عبد الله بن عباس | ٢٧٦/١٠، ٢٧٧ |
| «نعم» | – | ٢١٢/٩ |
| «نعم» | ابن عباس | ٢٠٨/٩، –٢١١، ٢١٤ |
| «نعم» | أبو وائل | ١٢٩/١٩ |
| «نعم» | البراء | ٩٦/١٦ |
| «نعم» | بريدة بن حصيب | ٢٣٢/٩ |
| «نعم» | عائشة | ٥٧٩/٩ |
| «نعم» | على | ٢١٢/٩ |
| «نعم» | عمر بن الخطاب | ٢٧٦/٩ |
| «نعم». (هل أتصدق عنه؟) | سعيد بن سعد بن عبادة | ٥٦/١٣ |
| «نعم». (إن أعطيته ألى بها عذق فى الجنة؟) | جابر بن عبد الله | ٥٢٤/١١ |
| «نعم». (هل أتصدق عنها؟) | ابن عباس | ٥٥/١٣ |
| «نعم». (هل يستأذن على أمه؟) | عطاء بن يسار | ٦٠/١٤ |
| «نعم». ( فلو صليت فى منزلى مكانًا أتخذه مصلى؟) | عتبان بن مالك | ٩/٦ |

| | | |
|---|---|---|
| «نعم». قاله النبى ﷺ ردًا على من سأله: أفى كلِّ صلاة قراءة؟ | أبو الدرداء | ٢٩/٤ |
| «نعم». قاله النبى ﷺ ردًا على من سأله: أفى كلِّ صلاة قرآن؟ | أبو الدرداء | ٢٩/٤ |
| «نعم»جوابًا على سؤال: فهل لها أجر إن تصدقت عنها؟ | عائشة | ٤٦٣/٧ |
| «نعم (نعمت) الأضحية الجذع من الضأن» | أبو هريرة | ٢٨٣/١٩ |
| «نعم الإدام الخل...» | جابر بن عبد الله | ٦٢/١٥ |
| «نعم الأدم الخل نعم الأدم الخل» | جابر بن عبد الله | ١٦٥/٢٠ |
| «نعم الأدم الخل» | عائشة | ١٦٤/٢٠ |
| «نعم إذا أديتها إلى رسولى فقد برئت منها..» | أنس بن مالك | ٥٦/٨ |
| «نعم إذا توضأ» | ابن عمر | ١١٥/٢ |
| «نعم إذا توضأ» | عمر | ١٢٢/٢ |
| «نعم إذا رأت الماء» | أم سلمة | ١٩/٢ |
| «نعم إذا صليت الصبح فأقصر عن الصلاة...» | أبو هريرة | ٥٨٩/٦ |
| «نعم إذا صليت الصبح فدع الصلاة حتى » | أبو هريرة | ٢٠٥/٥ |
| «نعم إذا كثر الخبث» | زينب بنت جحش | ٢٦٣/٢٠ |
| «نعم أربعة أشياء الصلاة عليهما والاستغفار لهما» | أبو أسيد الساعدى | ٣٥٥/٧ |
| «نعم ارقيهم» | جابر بن عبد الله | ٥٤١/١٩ |
| «نعم أعتق عنها» | أم عبد الرحمن بن أبى عمرة الأنصارى | ٥٩/١٣ |
| «نعم ألست الذى لقيتنى بمكة» | عمرو بن عبسة السلمى | ٢٠٣/٥ |
| «نعم إن أقرب ما يكون الرب من العبد...» | عمرو بن عبسة | ٣٥٤/٥ |
| «نعم إن الرضاعة تحرم ما تحرم الولادة» | عائشة | ٢٤٨/١٤، ٥/١٦ |
| «نعم إن شاء» (أيأكل؟) | عدى بن حاتم | ١٩١/١٩ |
| «نعم إنما النساء شقائق الرجال» | عائشة | ٢٢/٢ |
| «نعم إنما هم إخوانكم» | أبو ذر | ١٠١/١٦ |
| «نعم بالمعروف» | عائشة | ٢٩٨/٢١ |

| | | |
|---|---|---|
| «نعم تستأمر» | عائشة | ١٣٣/١٤ |
| «نعم تقبل الله منا ومنكم» | واثلة | ٦٢٨/٦ |
| «نعم جمرة عظيمة» | مرة الثقفى | ٢٢١/٨ |
| «نعم جهاد لا قتال فيه» | عائشة | ٢٧٧/٩ |
| «نعم حج عنه» | أبو الغوث بن الحصين | ٢٣٣/٩ |
| «نعم حق الولد على الوالد أن يعلمه الكتاب» | أبو رافع | ١٤/٢٠ |
| «نعم دعاة على أبواب جهنم...» | حذيفة بن اليمان | ٥٥٧/١٦، ٧٧/١٧، ٧٨ |
| «نعم رأيته يا عبد الله» | ابن عباس | ٥١٣/١٣ |
| «نعم الرجل عبد الله لو كان يقوم من الليل» | ابن عمر | ٣٤٢/٥ |
| «نعم سحور المؤمن التمر» | أبو هريرة | ٥٢٥/٨ |
| «نعم صليها» | أسماء بنت أبى بكر | ٣٧٢/٨ |
| «نعم ضح به» | زيد بن خالد الجهنى | ٢٧٩/١٩ |
| «نعم فاشترطى» | عبد الله بن عباس | ٤٢٤/١٠ |
| «نعم فإنه دين مقضى» | عائشة | ٢٥٦/١٩ |
| «نعم فتوضأ من لحوم الإبل» | جابر بن سمرة | ٤٥٤/١ |
| «نعم فحج عنه» | أبو الغوث ابن الحصين | ٥٣/١٣ |
| «نعم فحجى عنها أرأيت لو كان» | ابن عباس | ٢٣٢/٩ |
| «نعم فحجى عنها...» | ابن عباس | ٤٣/١٣ |
| «نعم فى الكبد الحرى أجر» | سراقة بن مالك | ٣٥١/٨ |
| «نعم قوموا لها فإنكم لستم تقومون لها» | عبد الله بن عمرو | ٣٤٩/٧ |
| «نعم كما لو كان على أحدكم دين فقضاه» | ابن عباس | ٢١٠/٩ |
| «نعم لا أقضيكها إلا بختية» | العرباض بن سارية | ٢٩٨/١١ |
| «نعم لتكررن عليكم حتى يرد...» | الزبير بن العوام | ٤١/١٢ |
| «نعم لك فيهم أجر ما أنفقت عليهم» | أم سلمة | ٧٨/١٦ |
| «نعم لهما أجران...» | زينب امرأة ابن مسعود | ٣٢٤/٨ |
| «نعم ليتوضأ ثم لينم» | ابن عمر | ١١٨/٢ |
| «نعم ما بدا لك» | أبى بن عمارة | ٣٢٧/٢ ، ٣٢٨ |
| «نعم من دخل دار أبى سفيان فهو آمن» | ابن عباس | ٣٨٥/١٨ |
| «نعم من كف يده وأغلق داره فهو آمن...» | موسى بن عقبة | ٣٩٠/١٨ |

| | | |
|---|---|---|
| «نعم نعم» جواب لمن سأل: الله أرسلك | أنس | ٢٠٠/٩ |
| «نعم هم من جلدتنا يتكلمون بألسنتنا» | حذيفة | ٧٨/١٧ |
| «نعم وأرجو أن تكون منهم يا أبا بكر» | أبو هريرة | ٥٦٢/١٨ |
| «نعم والأجر بينكما نصفان» | عمير مولى آبى اللحم | ٣٨٠/٨ |
| «نعم والصدقة أفضل» | أبو الغوث بن الحصين | ٢٣٣/٩، ٥٣/١٣ |
| «نعم وإن صام وصلى...» | الحارث الأشعرى | ٥٥٩/١٦ |
| «نعم وأنا له شهيد...» | رجل من الصحابة | ٤١٤/١٦ |
| «نعم وبما أفضلت السباع كلها» | جابر بن عبد الله | ٢٤٧/٢ |
| «نعم وبما أفضلت السباع» | جابر بن عبد الله | ٢٤٨/٢ |
| «نعم وتؤجرون» | أبو الغوث بن الحصين | ٢٣٣/٩، ٥٣/١٣ |
| «نعم وذاك كثير» | عمرو القارى | ٦٢/١٨ |
| «نعم وزُرّه ولو بشوكة». | سلمة بن الأكوع | ٢٣٨/٤ |
| «نعم وفيه دخن» | حذيفة بن اليمان | ٥٥٧/١٦، ٧٧/١٧ |
| «نعم وكل ذى كبد حرى» | سراقة بن مالك | ٣٥٢/٨ |
| «نعم ولا تجزى جذعة عن أحد بعدك...» | البراء بن عازب | ٣٠٢/١٩ |
| «نعم ولا تجزى عن إنسان بعدك» | البراء بن عازب | ٣٠١/١٩ |
| «نعم ولك أجر» | جابر بن عبد الله | ١٩٩/١٠ |
| «نعم ولك أجر» | عبد الله بن عباس | ١٩٦/١٠- ١٩٨ |
| «نعم ولن تجزى عن أحد بعدك» | البراء بن عازب | ٥٥١/٦، ٦٠٧، ٣٠٢/١٩ |
| «نعم» (إنا نسمع منك فتأذن لى فأكتبها؟) | عبد الله بن عمرو | ٤٦٣/٢١ |
| «نعم ولو كان شيء يسبق القدر...» | أسماء بنت عميس | ٥٣٩/١٩ |
| «نعم وما شئت» | أبى بن عمارة | ٣٢٧/٢ |
| «نعم ومن لم يسجدهما فلا يقرأهما» | عقبة بن عامر | ٤٧٢/٤ |
| «نعما للعبد أن يتوفاه الله...» | أبو هريرة | ١٢٠/١٦ |
| «نعمتان مغبون فيهما كثير من الناس» | عبد الله بن عباس | ١٥١/٧ |
| «نفس المؤمن معلقة بدينه حتى يقضى عنه» | أبو هريرة | ٤٧٥/١١ |
| «نفس المؤمن معلقة بدينه حتى يقضى عنه» | - | ٥٥٧/١١ |
| «نفس المؤمن معلقة بدينه» | أبو هريرة | ٥٦٢/١١، ٨٦/١٨ |
| «نفس المؤمن معلقة ما كان عليه دين» | أبو هريرة | ٤٦٢/٧ |

| | | |
|---|---|---|
| «النفقة فى الحج كالنفقة» | بريدة الأسلمى | ٢٢١/٩ |
| «نقركم بها على ذلك ما شئنا» | ابن عمر | ١٠٤/١٢، ١٣٣/١٩ |
| «نقركم على ذلك ما شئنا» | ابن عمر | ١٣٣/١٩ |
| «نقركم ما أقركم الله» | عمر | ٨٣/١٩، ١٣٤ |
| «نقل الحديث من بعض الناس إلى بعض» | أنس | ٢٢٢/٢١ |
| «نكسر حر هذا ببرد هذا...» | عائشة | ٦٨/١٥ |
| «نهيتكم عن ثلاث وأنا آمركم بهن...» | بريدة | ٣٥٤/١٩ |
| «نهيتكم عن زيارة القبور فزوروها » | أبو سعيد الخدرى | ٥١٨/٧ |
| «نهيتكم عن النبيذ ألا فانتبذوا...» | أبو سعيد | ٤٦٧/١٧ |
| «نهيتكم عن النبيذ إلا فى سقاء...» | بريدة | ٤٢٥/١٧ |


## (الهاء)


| | | |
|---|---|---|
| «ها أبررت عمى ولا هجرة» | عبد الرحمن بن صفوان | ٩٧/٢٠ |
| «ها يا مخرمة هذا خبأناه لك» | المسور بن مخرمة | ٥١٩/٦ |
| «هات امرأتك فقد نزل القرآن فيكما» | عبد الله بن جعفر | ٤٣٦/١٥ |
| «هاتِ فالقُط لى حصى» | الفضل بن عباس | ١٠٨/١٠ |
| «هاتوا ربع العشر» | على بن أبى طالب | ٤٥/٨، ١٨٦ |
| «هاتوا لى ربع العشور» | على بن أبى طالب | ٤٩/٨، ١٩٦ |
| «هاتوا ما عندكم» | عمران بن حصين | ١٧٣/٢ |
| «هاتيه» | عائشة | ٤٨ /٩ |
| «هاجهم وجبريل معك» | البراء بن عازب | ١٩٣/٢١ |
| «هاشم والمطلب كهاتين» | زيد بن على | ٣٤١/١٣ |
| «هاه ما كانت هذه تقاتل...» | رباح بن الربيع | ٣٠٣/١٨ |
| «هاهنا أحد من أهل قريته؟» | عائشة | ٥٣٦/١٢ |
| «هب لى هذا العذق يا أبا لبابة» | سعيد بن المسيب | ٢٥٤/١٢ |
| «هجاهم حسان فشفى واشتفى» | عائشة | ١٩٤/٢١ |
| «الهجرة هجرتان...» | عبد الله بن عمرو | ٢١٠/٢١ |
| «هدايا الأمراء غلول» | أبو حميد الساعدى | ٤١١/٢٠ |

| | | |
|---|---|---|
| «الهدى الصالح والسمت الصالح...» | ابن عباس | ٣٧/٢١ |
| «هذا ابنك» | - | ٥٠٦/٧ |
| «هذا أبوك وهذه أمك» | أبو هريرة | ٨٩/١٦ |
| «هذا أحسن من الأول» | ابن عمر | ١٦١/٥ |
| «هذا أحسن من هذا كله» | ابن عباس | ١٧٠/١٥ |
| «هذا أحسن من هذا» | ابن عباس | ١٧٠/١٥ |
| «هذا أزكى وأطهر وأطيب» | أبو رافع | ٣٤٧/١٤ |
| «هذا أزكى وأطيب وأطهر» | أبو رافع | ١٢٨/٢ |
| «هذا أمين هذه الأمة» | أنس بن مالك | ٣٣٩/٣ |
| «هذا بيان من الله عز وجل ورسوله...» | ابن شهاب | ٣٢٥/١٦ |
| «هذا تلجئة فأشهد على هذا غيرى» | النعمان بن بشير | ٣٢٥/١٢ |
| «هذا جبريل عليه السلام يعلمكم دينكم » | أبو هريرة | ٣٧/٣ |
| «هذا جبل يحبنا ونحبه...» | أنس بن مالك | ٣٤١/١٠، ١٣٨/١٣، ٤٠٦/١٨ |
| «هذا جور» | النعمان بن بشير | ٣٢٥/١٢ |
| «هذا الحجم» | سمرة بن جندب | ٥٠٦/١٩ |
| «هذا خير من أن تجئ يوم القيامة...» | أنس بن مالك | ٤٢٨/١٣ |
| «هذا رجل قد رأى فزعا» | مروان والمسور | ١٤٣/١٩ |
| «هذا ركاز وفيه الخمس» | أنس بن مالك | ٢٥٥/٨ |
| «هذا ركس » | عبد الله بن مسعود | ٣٢٩/١ |
| «هذا سجع الجاهلية» | جابر | ٤٠٤/١٦ |
| «هذا الطاعون بقية رجز وعذاب عذب به قوم» | أسامة بن زيد | ١٦٩/٧ |
| «هذا عائذ بن عمرو وأبو سفيان...» | عائذ بن عمرو | ٤١٢/١٢ |
| «هذا عرفة وهو الموقف...» | على بن أبى طالب | ٩٠/١٠ |
| «هذا عمل قليلا وأجر كثيرا» | البراء | ٥٤٩/١٨ |
| «هذا عن أمتى جميعا من شهد لك بالتوحيد» | أبو رافع | ٢٧٢/١٩ |
| «هذا فلان وهو من قوم يعظمون البدن...» | المسور بن مخرمة، مروان بن الحكم | ١١٩/١٩ |
| «هذا قبر أبى رغال كان من قوم ثمود...» | عبد الله بن عمرو | ٢٥٧/٨ |

| | | |
|---|---|---|
| «هذا قبر أبي فلان...» | عبد الله بن عمرو | ٢٥٧/٨ |
| «هذا قُزَحُ وهو الموقف...» | على بن أبى طالب | ٩١/١٠ |
| «هذا كان فرعون هذه الأمة» | عبد الله بن مسعود | ٣٠٧/١٨ |
| «هذا كتاب الجراح فى النفس مائة من الإبل..» | عمرو بن حزم | ٣٢٥/١٦ |
| «هذا كتاب من محمد رسول الله ﷺ...» | حصين بن أبى الحر | ١٧٢/١٦ |
| «هذا لحم لم آكله قط فكلوا» | ابن عباس | ٤٥٥/١٩ |
| «هذا ما اشترى العدّاء بن خالد بن هوذة...» | العداء بن خالد بن هوذة | ٢١٢/١١ |
| «هذا ما صالح عليه محمد بن عبد الله» | البراء | ٥١٠/٩ |
| «هذا ما صالح عليه محمد بن عبد الله» | على بن أبى طالب | ٤٤/١٧ |
| «هذا ما صالح عليه محمد رسول الله» | البراء | ٥١٠/٩ |
| «هذا ما قاضى عليه محمد رسول الله» | المسور بن مخرمة ومروان بن الحكم | ١٢٠/١٩ |
| «هذا ماء آجن» | عروة بن الزبير | ٢٩٨/٢ |
| «هذا مصرع فلان غدا» | أنس | ٤٨٥/١٨ |
| «هذا مكرز وهو رجل فاجر» | المسور بن مخرمة ومروان بن الحكم | ١٢٠/١٩ |
| «هذا من إخوان الكهان» | أبو هريرة | ٢٩٥/١٦، ٤٢٢ |
| «هذا من أهل النار» | أبو هريرة | ١٠٤/١٧ |
| «هذا نعم قومى» | أبو هريرة | ٢٥١/١٨ |
| «هذا الوضوء فمن زاد...» | عبد الله بن عمرو | ٢٣٨/١ |
| «هذا وضوء لا يقبل الله الصلاة إلا به» | عبد الله بن عمر | ٢٤٣/١ |
| «هذا وضوء من لا تقبل...» | عبد الله بن عمر | ٢٤٢/١ |
| «هذا وضوء من لم يُحدث» | على بن أبى طالب | ٢٢٦/١ |
| «هذا وضوء من يُضاعف له الأجر مرتين» | عبد الله بن عمر | ٢٤٢/١ |
| «هذا وضوئى ووضوء المرسلين قبلى» | عبد الله بن عمر | ٢٤٢/١ |
| «هذا يوم الحج الأكبر» | محمد بن قيس | ١٠٠/١٠ |
| «هذان حرام على ذكور أمتى» | على | ١١٦/٥ |
| «هذه إدام هذه» | يوسف بن عبد الله | ١٦٥/٢٠ |
| «هذه بتلك السبقة» | عائشة | ٢٣/٢٠، ٢٤ |

| | | |
|---|---|---|
| «هذه بهذه» | امرأة من بنى عبد الأشهل | ١٤١/٥ |
| «هذه ثم ظهور الحصر» | أبو واقد | ٢٠٦/٩ ، ٤٤٠/١٠ |
| «هذه حاجتك» | عمران بن حصين | ١٩٠/١٣، ٢٢٨/١٨، ٢٤٤ |
| «هذه حبيبة بنت سهل قد ذكرت...» | حبيبة بنت سهل | ١٧٩/١٥ |
| «هذه ركس» | عبد الله بن مسعود | ٧٨/٥ |
| «هذه صدقات قومنا» | أبو هريرة | ٣٨٥/١٣ |
| «هذه طابة وهذا أحد...» | أبو حميد | ٣٦١/١٣ |
| «هذه عمرة استمتعنا بها» | ابن عباس | ٣٤٢/٩ |
| «هذه القبلة» | أسامة بن زيد | ٣١٦/٣، ٥٠٥/٤، ٥٠٩ |
| «هذه قبلتنا» | غزوان | ٣٤٦/٤ |
| «هذه قبور أصحابنا» | طلحة بن عبيد الله | ٥١٧/١٠ |
| «هذه لأهل بيت من المسلمين» | أبو هريرة | ٥٨٠/١٩ |
| «هذه مكان عمرتك» | عائشة | ٢٦٨/٩ |
| «هذه وهذه سواء» | ابن عباس | ٣٥٦/١٦ ، ٣٦١ |
| «هذه وهذه وفى الدية سواء» | عبد الله بن عباس | ٤٢٢/٧، ٤٢٣ |
| «الهر من متاع البيت» | أبو هريرة | ٢٤٧/٢ |
| «الهرم» | أسامة بن شريك | ٥٢٢/١٩ |
| «هكذا الإخلاص» | عبد الله بن عباس | ٦٣٤/٣ |
| «هكذا اصنعوا به إذا غلبكم» | المطلب بن أبى وداعة | ٤٤١/١٧ |
| «هكذا أمرنى ربى عزّ وجلّ» | أنس بن مالك | ١٦٨/١ |
| «هكذا البيع» | ابن عباس | ٢٩/١١ |
| «هكذا تجدون حد الزانى فى كتابكم؟» | البراء بن عازب | ٢٦٦/١٧ |
| «هكذا فاعتم فإنه أحسن وأجمل» | ابن عمر | ٣٣٢/١٣ |
| «هكذا الوضوء فمن زاد...» | عبد الله بن عمرو | ٢٣٩/١ |
| «هكذا يا سعد فإنما الاستئذان من النظر» | سعد بن معاذ | ٥٦٠/١٧ |
| «هل أحصنت؟» | أبو هريرة | ١٥٨/١٧ |
| «هل أشار إليه إنسان منكم أو أمره بشىء؟» | عبد الله بن أبى قتادة | ٣١٦/١٠ |

| | | |
|---|---|---|
| «هل أشار إليه إنسان منكم بشيء؟» | عبد الله بن أبى قتادة | ٤٤٨/١٩ |
| «هل أطعمكما أحد ؟» | لقيط بن صبرة | ١٦٠/١ |
| «هل أفضت أبا عبد الله؟» | أم سلمة | ١٤٠/١٠ |
| «هل أكلتم شيئا؟ هل أمر لكم بشيء؟» | لقيط بن صبرة | ١٤٤/١٥ |
| «هل أنت إلا إصبع دميت...» | جندب | ٤٨٢/١٣ |
| «هل بقى فيكم أحد؟» | عطية | ٣٩٤/٨ |
| «هل بك جنون؟» | أبو هريرة | ١٧٧/١٧ |
| «هل تجد رقبة تعتقها؟» | أبو هريرة | ٤٨٥/٨، ٤٨٧ |
| «هل تجد رقبة؟» | أبو هريرة | ٤٨١/٨ |
| «هل تدرون أى يوم هذا؟» | سرّاء بنت نبهان | ١٨٤/١٠ |
| «هل تدرون ما أراد القوم؟» | ابن إسحاق | ١٠٨/١٧، ١١٢/١٨ |
| «هل تدرون ما ذا؟ » | أنس بن مالك | ١٤٢/٧ |
| «هل تدرون ما الكوثر» | أنس بن مالك | ٤٠٧/٣، ٤٠٨ |
| «هل تدرون ما مثل من فعل ذلك؟» | أبو هريرة | ٣٥١/١٤ |
| «هل تدرون ماذا قال ربكم عز وجل» | زيد بن خالد الجهنى | ٩٥/٤، ١٠٨/٧ |
| «هل ترك شيئا؟» | سلمة بن الأكوع | ٥٥١/١١ |
| «هل ترك عليه دين؟» | سلمة بن الأكوع | ٥٥١/١١ |
| «هل ترك لدينه من قضاء؟» | أبو هريرة | ٤٨٥/١٣، ٥١٤ |
| «هل ترك من دين؟» | سلمة بن الأكوع | ٥٥٨/١١ |
| «هل ترك من شيء؟» | سلمة بن الأكوع | ٥٥٨/١١ |
| «هل ترك من وفاء؟» | أبو سعيد الخدرى | ٥٥٣/١١ |
| «هل تستطيع إذا خرج المجاهد...» | أبو هريرة | ٥١٥/١٨ |
| «هل تستطيع أن تعتق رقبة؟» | سعيد بن المسيب | ٤٩٥/٨ |
| «هل تسمع النداء بالصلاة ؟» | أبو هريرة | ٥٠٦/٥، ٥٣٣ |
| «هل تعلمون له نسبًا فيكم؟» | واسع بن حبان | ٤٤٤/١٢ |
| «هل تعلمون ماعز بن مالك؟» | بريدة | ١٨٣/١٧ |
| «هل تفقدون من أحد» | أبو برزة الأسلمى | ٣٣٠/٧ |
| «هل تقرأ من القرآن شيئا؟» | سهل بن سعد | ٥١٠/١٤ |
| «هل تقرءون إذا جهرت بالقراءة؟» | عبادة بن الصامت | ٣٤/٤ |

| | | |
|---|---|---|
| «هل تقرءون فى الصلاة معي؟» | عبادة بن الصامت | ٣٤/٤ |
| «هل تمارون فى القمر ليلة البدر...؟» | أبو هريرة | ١٠٠/٢٠ |
| «هل تنتج إبلك وافية آذانها؟» | مالك بن نضلة | ٦٠٨/١٩ |
| «هل جزيت سلمة؟» | عبد الله بن عباس | ١٣٠/١٤ |
| «هل جئتم فى عهد أحد...» | عبد الله بن مغفل | ١٨٤/١٣ |
| «هل حججت» | ابن عباس | ٢٣٧/٩ ، ٢٣٨ |
| «هل حسستم فارسكم؟» | سهل بن الحنظلية | ٤٨٩/١٨ |
| «هل دعوتموهم إلى الإسلام؟» | أبى بن كعب | ٣٥١/١٨ |
| «هل رأى أحد منكم رؤيا» | سمرة بن جندب | ٩٤/٤ |
| «هل رأى أحد منكم الليلة رؤيا؟» | سمرة بن جندب | ٤٥/١١ |
| «هل رأيت بؤسًا قط...» | أنس بن مالك | ١٠١/٢٠ |
| «هل رأيتمونى صليت العصر» | أبو جمعة حبيب بن سباع | ١٨١/٤ |
| «هل ستنتظره إلا شهرًا واحدًا؟» | ابن عباس | ٥٥٦/١١ |
| «هل سقت هديًا» | أبو موسى | ٢٤٠/٩ ، ٣٤٧ |
| «هل سكر؟» | ديلم الحميرى | ٤٠٤/١٧ |
| «هل سمعت بلالًا ينادى ثلاث...» | عبد الله بن عمرو | ٥٠٣/١٧ |
| «هل سهل لكم من أمركم» | المسور بن مخرمة ومروان بن الحكم | ١٢٠/١٩ |
| «هل عرفت الرهط؟» | ابن إسحاق | ١١٢/١٨ |
| «هل علمت أن الله قد حرمها ؟» | ابن عباس | ٣٥٥/١١ |
| «هل علمتم أنى أتقاكم لله» | جابر | ٢٣٩/٩ |
| «هل على صاحبكم دين؟» | أبو سعيد الخدرى | ٥٥٣/١١ |
| «هل على صاحبكم من دين؟» | على بن أبى طالب | ٥٥٤/١١ |
| «هل عليه دين؟» | أنس | ٥٦٠/١١ |
| «هل عليه دين؟» | جابر بن عبد الله | ٥٥٢/١١ |
| «هل عليه دين؟» | سلمة بن الأكوع | ٥٥١/١١ |
| «هل عليها من هذه الأوثان شيء؟» | ميمونة بنت كردم | ٢٣٠/٢٠ |
| «هل عند أحد منكم شراب فيرسل إليه؟» | المطلب بن أبى وداعة | ٤٤٠/١٧ |

| | | |
|---|---|---|
| «هل عندك رقبة تعتقها؟» | أبو هريرة | ٤٩٢/٨ |
| «هل عندك شيء؟» | سهل بن سعد | ٢٠٩/١٤ |
| «هل عندك غنى يغنيك» | جابر بن سمرة | ٥٦٥/١٩ |
| «هل عندك من شيء تستحلها به؟» | على | ٤٨٦/١٤ |
| «هل عندك من شيء تصدقها إياه؟» | سهل بن سعد | ١٩٩/١٤، ٤٩٠، ٥٠٩ |
| «هل عندك من شيء» | سهل بن سعد | ٤٩١/١٤ |
| «هل عندكم شيء؟» | عائشة | ٤١٣/٨ |
| «هل عندكم من ذلك الطعام؟» | عائشة | ٤١٢/٨ |
| «هل فرغتم» | عائشة | ٢٩٧/٩ |
| «هل فيكم من رجل لم يقارف الليلة» | أنس بن مالك | ٤٣٦/٧ |
| «هل فيها أورق؟» | أبو هريرة | ٤٣٢/١٤، ٢٨٣/١٧ |
| «هل فيها من أورق؟» | أبو هريرة | ٤٧٧/١٥، ٤٧٨ |
| «هل قرأ أحد منكم آنفًا...؟» | عبد الله ابن بحينة | ١٨/٤ |
| «هل قرأ معى أحد منكم آنفًا؟» | أبو هريرة | ١٥/٤ |
| «هل قرأ معى منكم أحد؟» | أبو هريرة | ١٨/٤ |
| «هل قرأ منكم أحد؟» | أبو هريرة | ١٦/٤ |
| «هل كان فيها وثن من أوثان الجاهلية يعبد؟» | ثابت بن الضحاك | ٢٢٩/٢٠ |
| «هل كان معكم لهو؟...» | عائشة | ٩٣/١٥ |
| «هل كنت طفت يوم النحر» | عائشة | ٣١٢/٩ |
| «هل لك بينة؟» | الأشعث بن قيس | ٢٥٤/٢١ |
| «هل لك حاجة؟» | ربيعة بن كعب الأسلمى | ٢٩٩/٥ |
| «هل لك شيء غيره؟» | جابر بن عبد الله | ٤١٨/٢١ |
| «هل لك من إبل؟» | أبو هريرة | ٤٣٢/١٤، ٤٧٧/١٥، ٤٧٨، ٢٨٣/١٧، ٢١/ ٢٨٣ |
| «هل لك من أم؟» | معاوية بن جاهمة | ٩٠/١٨ |
| «هل لك من حاجة؟» | على | ٤٨٦/١٤ |
| «هل لك من شيء تؤديه عن نفسك؟» | وائل بن حجر | ٢٥١/١٦ |

| | | |
|---|---|---|
| «هل لك من مال؟» | مالك بن نضلة | ٦٠٨/١٩ |
| «هل لك من مهر؟» | علي بن أبي طالب | ٥٤٦/١٤ |
| «هل لكم بينة على أنكم أسلمتم» | الزبيب العنبري | ٥١٣/٢٠ |
| «هل له وارث؟» | واسع بن حبان | ٤٤٣/١٢ |
| «هل مسحتما سيفيكما؟» | عبد الرحمن بن عوف | ١٤٢/١٣ |
| «هل مع أحد منكم طعام» | عبد الرحمن بن أبي بكر | ١٠٥/١٩ |
| «هل معك تمر؟» | أنس | ٣٩٥/١٩ |
| «هل معك ماء؟» | المغيرة بن شعبة | ١٧٨/١ |
| «هل معك من شعر أمية بن أبي الصلت شيء؟» | الشريد بن سويد | ١٥٢/٢١ |
| «هل معك من القرآن شيء؟» | سهل بن سعد | ١٩٩/١٤، ٤٩١، ٥٠٩ |
| «هل معك وضوء؟» | عبد الله بن مسعود | ٢٨/١ |
| «هل معكم من لحمه شيء؟» | أبو قتادة | ٣٠٨/١٠ |
| «هل معكم منه شيء؟» | جابر | ٢٢١/١٩ |
| «هل منكم أحد أطعم اليوم مسكينا ؟» | عبد الرحمن بن أبي بكر | ٣٩٧/٨ |
| «هل منكم من أحد لم يقارف الليلة» | أنس بن مالك | ٤٣٥/٧، ٤٣٦ |
| «هل منكن من تفعل ذلك؟» | أبو هريرة | ٣٥١/١٤ |
| «هل نظرت إليها؟» | أبو هريرة | ٤٨٨/١٤ |
| «هل نظرت إليها؟» | المغيرة بن شعبة | ١٩/١٤ |
| «هل هو إلا بضعة...؟» | طلق بن علي | ٣٩٦/١ |
| «هل هويت إلى الحجر» | ضباعة بنت الزبير بن عبد المطلب | ٢٥٦/٨ |
| «هل ينقص الرطب إذا ييس؟» | سعد بن أبي وقاص | ٩٩/١١ |
| «هلّا انتفعتم بإهابها؟» | عبد الله بن عباس | ٥٦/١ |
| «هلّا انتفعتم بجلدها؟» | ميمونة | ٦٤/١ |
| «هلا تركتموه فلعله يتوب فيتوب الله عليه...» | نعيم الأسلمي | ١٧٨/١٧ |
| «هلا كنتم آذنتموني» | أبو هريرة | ٤١٨/٧ |
| «هلاكًا ماذا؟» | أبو هريرة | ٤٩٢/٨ |

| | | |
|---|---|---|
| «هلم إلى الغداء» | أنس بن مالك | ٥٠٨/٨ |
| «هلمّ للغداء» | أنس بن مالك | ١٧٩/٦ |
| «هلموا إلى الغداء المبارك» | العرباض بن سارية | ٥٢٥/٨ |
| «هلمى يا أم سليم ما عندك» | أنس بن مالك | ٤٢/١٥ |
| «هم الأخسرون ورب الكعبة» | أبو ذر | ٥٧/٨، ٥٣/٢٠، ٥٤ |
| «هم إخوانكم جعلهم الله تحت أيديكم...» | أبو ذر | ١٠١/١٦ |
| «هم أشد أمتى على الدجال» | أبو هريرة | ٣٨٥/١٣ |
| «هم أشد الناس قتالا فى الملاحم» | أبو هريرة | ٢٥١/١٨ |
| «هم الأكثرون إلا من قال بالمال هكذا...» | أبو ذر | ٥٧/٨ |
| «هم الأكثرون أموالاً...» | أبو ذر | ٥٣/٢٠ |
| «هم سواء» | جابر | ٤٤/١١ |
| «هم الصائمون» | عبيد بن عمير | ١٤٢/٩ |
| «هم عتقاء الله عز وجل» | على | ١٥١/١٩ |
| «هم فى الظلمة دون الجسر» | ثوبان | ٢٤/٢ |
| «هم الذين لا يسترقون ولا يتطيرون...» | ابن عباس | ٥١٥/١٩، ٥١٦ |
| «هم الذين يؤخرون الصلاة عن وقتها» | سعد بن أبي وقاص | ١٦٣/٤ |
| «هم من آبائهم» | الصعب بن جثامة | ٢٦٠/١٨ |
| «هم من جلدتنا ويتكلمون...» | حذيفة بن اليمان | ٥٥٧/١٦ |
| «هم من كذا ويتكلمون بألسنتنا» | حذيفة بن اليمان | ٥٥٧/١٦ |
| «هم منهم» | الصعب بن جثامة | ٢٦٠/١٨، ٢٦٢ |
| «هما فجران فأما الذى كأنه ذنب...» | محمد بن عبد الرحمن | ٤٥٨/٨ |
| «هن حرث لكم فأتوا حرثكم...» | معاوية بن حيدة | ١١٧/١٥ |
| «هن صيام الدهر» | منهال بن ملحان | ١٠٥/٩ |
| «هن فواحش وفيهن عقوبة....» | النعمان بن مرة | ١٤٤/١٧ |
| «هن فواحش وفيهن عقوبة» | عمران بن حصين | ١٤٣/١٧ |
| «هن لهم ولكل من أتى عليهن» | ابن عباس | ٣٧٦/٩ |
| «ههنا أبو طلحة؟» | أنس بن مالك | ١٢٢/٥ |
| «ههنا من بنى فلان أحد؟» | سمرة | ٥٦٢/١١ |
| «ههنا» | أنس بن مالك | ١٣٢/١ |

| | | |
|---|---|---|
| «هو اختلاس يختلسه الشيطان » | عائشة | ٣٦٧/٤ |
| «هو أخوك يا عبد» | عائشة | ١٧/١٢ |
| «هو أهنأ وأمرأ وأبرأ» | أنس بن مالك | ٧٨/١٥ |
| «هو أهنأ وأمرأ وأبرأ» | ربيعة بن أكثم | ١٢٣/١ |
| «هو أولى به فى حياته ومماته» | تميم الدارى | ٣٨١/٢١ |
| «هو أولى الناس بمحياه ومماته» | تميم الدارى | ٣٧٩/٢١، ٣٨٠ |
| «هو أولى الناس به بمحياه ومماته» | تميم الدارى | ٣٧٨/٢١ |
| «هو حر كله ليس لله شريك» | أبو المليح | ٣٠٩/٢١ |
| «هو حلال فكلوه» | أبو قتادة | ٣٠٩/١٠ |
| «هو رزق أخرجه الله لكم...» | جابر | ٢٢٣/١٩ |
| «هو رزق الله» | أبو سعيد الخدرى | ٣٧٥/١٢ |
| «هو شر الثلاثة» | السَّفْر بن نُسَير الأسدى | ٦٠٦/٥ |
| «هو شر الثلاثة» | عائشة ، أبو هريرة | ١٥١/٢٠، ١٥٣ |
| «هو شيء عجلته» | البراء بن عازب | ٣٠١/١٩ |
| «هو صغير» | زينب بنت حميد | ٢٧٣/١٩ |
| «هو صغير» | عبد الله بن هشام | ٥٧٢/١١ ، ٥٣٠/١٦ |
| «هو الطهور ماؤه الحل ميتته» | أبو هريرة | ١٠/١ ، ٢٢٥/١٩، ٢٣٨ |
| «هو الطهور ماؤه الحل ميتته» | جابر بن عبد الله | ٢٥٩/٢ |
| «هو على ما أردت» | يزيد بن ركانة | ٢٦٩/١٥ |
| «هو عليها صدقة ولنا هدية» | عائشة | ٤٣٨/١٤، ٤٣٩ |
| «هو عليها صدقة وهو لنا هدية» | عائشة | ٣٤٨/١٢ |
| «هو عليها صدقة وهو منها لنا هدية » | عائشة | ٤٧٦/٢١ |
| «هو فى النار» | أبو هريرة | ٥٤٨/١٧ |
| «هو فى النار» | عبد الله بن عمرو | ٣٣٣/١٨ |
| «هو كلام الرجل فى بيته: كلا والله...» | عائشة | ١٢١/٢٠ |
| «هو كلام فحسنه حسن وقبيحه قبيح» | عائشة | ١٩٨/٢١ |
| «هو لك إن خير القوم خيرهم قضاء» | العرباض بن سارية | ٢٩٨/١١ |
| «هو لك هو أخوك يا عبد بن زمعة» | عائشة | ١٨/١٢ |
| «هو لك يا عبد الله بن عمر» | ابن عمر | ١٧٢/١١ |

| | | |
|---|---|---|
| «هو لك يا عبد الله فاصنع به ما شئت» | ابن عمر | ٣٠٠/١٢ |
| «هو لك يا عبد بن زمعة...» | عائشة | ١٦/١٢، ٤٨١/١٥، ٤٨٢ |
| «هو لك يا عبد بن زمعة؛ الولد للفراش» | عائشة | ١٧/١٢ |
| «هو لك يا عبد ، الولد للفراش...» | عائشة | ٤٤٥/٢٠ ، ٢٨٤/٢١ |
| «هو لك» | عبد الله بن المغفل | ٢٠٠/١٨ |
| «هو لنا هدية وعليها صدقة» | أنس | ٤٤٩/١٣ |
| «هو لها صدقة ولنا هدية» | عائشة | ٤٤٨/١٣، ٤٤٨/١٤، ٤٤٩ |
| «هو لها صدقة ولنا هدية» | عبد الله بن عباس | ٤٤٣/١٤ |
| «هو لها صدقة وهو لنا هدية» | عائشة | ٣٤٧/١٢ |
| «هو لهم فى الدنيا ولكم فى الآخرة» | حذيفة بن اليمان | ٨١/١ ، ٥٠٠/٦ |
| «هو لهم فى الدنيا وهو لكم فى الآخرة» | حذيفة بن اليمان | ٨٠/١ |
| «هو لى ثم هو مردود فيكم» | - | ٢٥١/١٣ |
| «هو ما اصطلح عليه أهلوهم» | أبو سعيد الخدرى | ٥٠١/١٤ |
| «هو مسجدى هذا» | أبو سعيد الخدرى | ٥٠٧/١٠ |
| «هو من أمر اليهود» | أبو عمير بن أنس عن عمومة له من الأنصار | ٩٩/٣، ١٠٠ |
| «هو من عمل الشيطان» | جابر بن عبد الله | ٥٥١/١٩ |
| «هو مولاك فإذا مت فأوص له» | معاوية بن إسحاق | ٣٧٨/٢١ |
| «هو ومثله معه والنكال وليس فى شىء من الشمر...» | عبد الله بن عمرو | ٢٤٩/٨، ٣٥٧/١٧ |
| «هؤلاء أهل بيتى» | أم سلمة | ٦٧٨/٣ |
| «هؤلاء اليهود المغضوب عليهم...» | رجل من بلقين | ٢٤٦/١٣ |
| «هى بمنزلة أبيه ومنزلة أمه» | أخو عبد الله بن عبيد | ٥٩٠/١٢ |
| «هى حسبك من النار» | عائشة | ٢٠١/٨ |
| «هى خير نسيكتيك...» | البراء بن عازب | ٢٥٧/١٩ |
| «هى رخصة من الله تبارك وتعالى...» | حمزة بن عمرو | ٥٤٩/٨ |
| «هى زكاة الفطر» | عمرو بن عوف | ٢٦٨/٨ |
| «هى السبع المثانى والقرآن العظيم...» | أبو سعيد ابن المعلى | ٥٤٧/١٣ |

| | | |
|---|---|---|
| «هى صدقة تصدق الله بها عليكم فاقبلوا صدقته» | عمر بن الخطاب | ١٤٤/٦ |
| «هى صيد» | جابر بن عبد الله | ٢٩١/١٠ |
| «هى على حرام» | مسروق | ٣٠٣/١٥ |
| «هى فى العشر وهى فى تسع يمضين أو فى سبع يبقين» | ابن عباس | ١٥٣/٩ |
| «هى فى كل رمضان» | ابن عمر | ١٤٨/٩ |
| «هى كهيئة الدهر» | قتادة بن ملحان القيسى | ١٠٥ /٩ |
| «هى لك» | عدى بن حاتم | ٤٤٥/١٨ |
| «هى لمن أخذ بها من أمتى» | عبد الله بن مسعود | ٥٠٣/١٧ |
| «هى لنا هدية وعليها صدقة» | - | ٤٧٥/٢١ |
| «هى لها حياتها وموتها» | جابر بن عبد الله | ٣١٢/١٢ |
| «هى ما بين أن يجلس الإمام إلى أن يقضى الصلاة» | أبو موسى الأشعرى | ٤٥٣/٦ |
| «هى من دواب الجنة» | - | ١٨٧/٥ |
| «هى هى» | بريدة | ١٦٤/٢٠ |
| «هى ومثلها والنكال ليس فى شىء من الماشية...» | عبد الله بن عمرو | ٢٤٩/٨ |
| «هى ومثلها والنكال» | عبد الله بن عمرو | ٣٥٧/١٧ |
| «هى يتيمة ولا تنكح إلا بإذنها» | ابن عمر | ١٠٩/١٤، ١٢٨ |
| «هيه يا فلان ما ولدت؟» | لقيط بن صبرة | ١٤٥/١٥ |


## (الواو)


| | | |
|---|---|---|
| «وآمروا النساء فى أنفسهن...» | عرس بن عميرة | ١٣٤/١٤ |
| «وآمروا النساء فى بناتهن» | ابن عمر | ١١٣/١٤، ١١٤ |
| «وآية ما بينك وبينه...» | عبد الله بن أنيس | ٤٧٠/٦ |
| «وأبيك لو طعنت فى فخذها لأجزأ عنك» | أسامة بن مالك، أو مالك بن قهطم | ٢٠٥/١٩ |
| «واتبع أصحاب القليب لعنة...» | عبد الله بن مسعود | ٢٥/١٨ |

| | | |
|---|---|---|
| «واتق دعوة المظلوم...» | ابن عباس | ٣٨/١٢ |
| «واثنان» | عمر | ٣٦٦/٢٠ |
| «وأجرك» | - | ١٠٥/١٣، ١٠٦ |
| «وأجرك» | عروة بن الزبير | ١٩٥/١٨ |
| «واحلب ثم صر وبق للبن دواعيه» | مخول البهزى | ٥٧٩/١٩ |
| «وأخرى يرفع بها العبد...» | أبو سعيد | ٥١٩/١٨ |
| «الوأد الخفى...» | جدامة بنت وهب | ٤٧٤/١٤ |
| «وإذا أدبرت فاغتسلى وصلى» | عائشة | ٤٤٧/٢ |
| «وإذا أقمت فقلها مرتين قد قامت الصلاة» | أبو محذورة | ١٧٧/٣ |
| «وإذا باع المجيزان فالأول أحق» | عقبة بن عامر | ١٨٩/١٤ |
| «وإذا حاصرت أهل حصن...» | بريدة | ٣٢٠/١٨، ١٩٠/١٩ |
| «وإذا رميت بسهمك فاذكر اسم الله...» | عدى بن حاتم | ١٩٠/١٩ |
| «وأرجو أن أكون أنا هو فمن سأل لى الوسيلة حلت له الشفاعة» | عبد الله بن عمرو | ١٥٤ /٣ |
| «وأسلموا؟» | أبو حميد الساعدى | ١١٧/١٨ |
| «واصباحاه» | ابن عباس | ٢٢/١٨ |
| «وأعطى زكاة ماله طيبة بها نفسه...» | عبد الله بن معاوية | ٩٥/٨ |
| «واقضوا ما سبقكم» | أبو هريرة | ٤١٦/٤ |
| «واقضوا ما فاتكم» | أبو هريرة | ٤١٧/٤ |
| «وأقيموا حدود الله فى السفر والحضر» | عبادة بن الصامت | ٣٤٣/١٨ |
| «وإلا فقد عتق منه ما عتق» | ابن عمر | ٣٢٧/٢١ |
| «والله إن من كان قبلكم ليؤخذ الرجل...» | خباب | ١٧/١٨ |
| «والله إنكم لتجهلون وتجبنون...» | خولة بنت حكيم | ٦٥/٢١ |
| «والله إنى لأرجو أن أكون أخشاكم لله...» | عائشة | ٤٤٩/٨، ٤٥٠ |
| «والله إنى لرسول الله وإن كذبتمونى...» | المسور بن مخرمة، مروان بن الحكم | ١٢٠/١٩ |
| «والله لا أحملكم ولا أجد ما أحملكم عليه» | أبو موسى | ١٢٦/٢٠، ١٢٨ |
| «والله لا أحملكم وما عندى ما أحملكم عليه» | أبو موسى | ٧٠/٢٠ |
| «والله لا أشربه» | ابن عباس | ٣٠٥/١٥ |

| | | |
|---|---|---|
| «والله لا تذرون درهما» | أنس بن مالك | ٢٣١/١٨ |
| «والله لأرضينك وإنى مسر إليك...» | ابن عباس | ٣٠٢/١٥ |
| «والله لأغزون قريشًا...» | ابن عباس | ١١٧/٢٠ |
| «والله لأغزون قريشًا...» | عكرمة | ١١٨/٢٠ |
| «والله لأن يلج أحدكم بيمينه فى أهله...» | أبو هريرة | ٧٤/٢٠ |
| «والله لقد علموا أنى أداهم للأمانة » | عائشة | ٣٩٨/١١ |
| «والله لكأن ماءها نقاعة الحناء...» | عائشة | ٤٨٤/١٦ |
| «والله للدنيا وما فيها أهون على الله...» | أبو هريرة | ١٥٤/١٦ |
| «والله للذى تركت أحب إلى ...» | جرير بن حازم | ٧٢/٨ |
| «والله لو أنها لم تكن ربيبتى...» | أم حبيبة | ٢٦٠/١٤ |
| «والله لو تعلمون ما أعلم لضحكتم قليلًا...» | عائشة | ٥٢/٢٠ |
| «والله لو كانت فاطمة لقطعت يدها» | جابر بن عبد الله | ٣٦٥/١٧ |
| «والله ليفتحنها الله عليكم...» | عبد الله بن حوالة | ٥٩١/١٨ |
| «والله ما أحملكم وما عندى ما أحملكم عليه» | أبو موسى | ٥١/٢٠ |
| «والله ما أردت إلا واحدة؟» | ركانة بن عبد يزيد | ٢٦٨/١٥، ١٠٦/٢٠، ٥٤٣ |
| «والله ما أردت إلا واحدة؟» | نافع بن عجير | ٢٦٧/١٥ |
| «والله ما أمرتكم بالقتال فى الشهر الحرام» | عروة بن الزبير | ١٩٨/١٨ |
| «وإليك السلام تباركت يا ذا الجلال والإكرام» | ثوبان | ٨٠/٤ |
| «وأما أنا فأهل بالحج فإن معى الهدى» | عائشة | ٣٠٥/٩ |
| «وأما أهل اليمن» | ابن عمر | ٣٧٠/٩ |
| «وأما ما ذكرت أنك بأرض صيد فما أصبت بقوسك فاذكر...» | - | ٢١٠/١٩ |
| «وأمرت بصلاة الضحى ولم تؤمروا بها» | ابن عباس | ٢٦٢/١٩ |
| «وإن ، اكشفى عن فخذيك» | عائشة | ٤٢٠/٢ |
| «وإن أكل منه» | عبد الله بن عمرو | ١٧٩/١٩ |
| «وإن بكت وسكتت» | أبو هريرة | ١٣٣/١٤ |
| «وأن تتركه تحت أمه حتى يكون ابن لبون..» | رجل عن أبيه أو عمه | ٤١٨/١٩ |
| «وإن تغيب عنك ما لم يصل...» | عبد الله بن عمرو | ١٩٤/١٩ |

| | | |
|---|---|---|
| «وإن توارى عنك بعد ألا ترى فيه إلا أثر سهمك...» | أبو ثعلبة الخشنى | ١٩٤/١٩ |
| «وإن زنا وإن سرق» | أبو ذر | ٢٠/٢١ |
| «وإن ظلمتم» | جرير بن عبد الله | ١٩٣/٨ |
| «وإن قتلن ما لم يشركها كلب ليس معها» | عدى بن حاتم | ١٧١/١٩ |
| «وإن كان بعيرا فليأخذ بذروة سنامة» | عبد الله بن عمرو | ٢١٢/١٤ |
| «وإن كان مائعًا فلا تقربوه» | أبو هريرة | ٥٥٩/١٩ |
| «وإن لم تجد إلا جذعا فاذبح» | بشير بن يسار | ٢٥٩/١٩ |
| «وإن لم يكن ماشيًا أمامها» | عامر بن ربيعة | ٣٤٤/٧ |
| «وإن مكثت ثلاث سنين» | معاوية بن حكيم عن عمه | ١٦٨/٢ |
| «وأنا أريد الصوم ولكن مؤذننا ...» | شيبان | ٤٦٩/٨ |
| «وأنا أصبح جنبًا وأنا أريد الصيام...» | عائشة | ٤٤٩/٨ |
| «وأنا أقول: اللهم بك أقاتل...» | صهيب | ٥٠١/١٨ |
| «وأنا أقوله الآن من استعملناه على عمل فليجئ بقليله وكثيره...» | عدى بن عميرة | ٢٦٥/٨، ٤٠٠/١٣، ٢٠/ ٤١٢ |
| «وأنا آمركم بخمس كلمات أمرنى الله ...» | الحارث الأشعرى | ٥٥٩/١٦ |
| «وأنا تدركنى الصلاة وأنا جنب فأصوم...» | عائشة | ٤٥٠/٨ |
| «وأنا صائم» | عائشة | ٥١٦/٨ |
| «وأنا صائم» | معاوية بن أبى سفيان | ٩٠/٩ |
| «وأنا كنت أرعاها لأهل مكة بالقراريط» | أبو هريرة | ١١٥/١٢ |
| «وأنا والله ما صليتها بعدُ» | جابر بن عبد الله | ١٧٨/٤ |
| «وأنا وأنا» | عائشة | ١٥٣/٣ |
| «وأنتما تقولان مثلما يقول؟» | نعيم بن مسعود | ٩٩/١٩ |
| «وإن الله أوحى إلى أن تواضعوا...» | عياض بن حمار | ١٨٠/٢١ |
| «وإن الرجل يقتل بالمرأة» | عبد الله بن عمرو | ١٧٤/١٦ |
| «وإن فى النفس الدية مائة من الإبل» | عمرو بن حزم | ٣٠٣/١٦، ٣٢٦ |
| «وإنكم لتفعلون ذلك ؟» | أبو سعيد الخدرى | ٥٣٢/٢١ |
| «وإنكم لتفعلون؟ وإنكم لتفعلون؟» | أبو سعيد الخدرى | ٤٦٥/١٤ |

| | | |
|---|---|---|
| «وإنه ليس فى عبد مسلم ولا فى فرسه شىء» | عمرو بن حزم | ١٢٦/٨ |
| «وإنه من أسلم من يهودى أو نصرانى إسلاما» | عمرو بن حزم | ٤٠/١٩ |
| «وإنى أريتها ليلة وتر» | أبو سعيد | ١٧٢/٩ |
| «الواهب أحق بهبته ما لم يثب» | أبو هريرة | ٣٣٧/١٢ |
| «وأهل بيتى أذكركم الله فى أهل بيتى» | زيد بن أرقم | ٤٤٢/١٣ ، ٣٣٣/٢٠ |
| «وأهل اليمن من يلملم» | ابن عمر | ٣٦٩/٩ |
| «وأيكم مثلى إنى أبيت» | أبو هريرة | ٦٧/٩ |
| «وايم الله لو أن فاطمة بنت محمد سرقت...» | عائشة | ٣٦٤/١٧ |
| «وأيما قرية عصت الله ورسوله...» | أبو هريرة | ١٨٣/١٣ |
| «وبالغ فى الاستنشاق» | - | ٥/٩ |
| «وبقرن أى النساء هى؟» | ميمونة بنت كردم | ٢٠٤/١٤ |
| «وبما أفضلت السباع» | جابر بن عبد الله | ٢٤٩/٢ |
| «وبماذا؟» | جابر بن عبد الله | ٥٤١/١٩ |
| «وبينما هو فى أرض جبار...» | أبو هريرة | ٣٤١/١٥ |
| «والتوبة معروضة بعد» | أبو هريرة | ١١/٢١ |
| «وتحبين ذلك؟» | أم حبيبة | ٢٦١/١٤ |
| «وتدرى ما الزنى؟» | أبو هريرة | ٢٠٢/١٧ |
| «الوتر حق على كل مسلم...» | أبو أيوب الأنصارى | ٤١٣/٥ |
| «الوتر حق فمن أحب أن يوتر بخمس فليفعل» | أبو أيوب الأنصارى | ٤١٥/٥ |
| «الوتر حق فمن شاء أوتر بسبع...» | أبو أيوب الأنصارى | ٤١٤/٥ |
| «الوتر حق فمن لم يوتر فليس منا» | بريدة | ٢٤٩/٥ |
| «الوتر ركعة من آخر الليل» | ابن عباس | ٤١٠/٥ |
| «الوتر ركعة من آخر الليل» | ابن عمر | ٤١٠/٥ |
| «الوتر فيما بين العشاء إلى طلوع الفجر» | خارجة بن حذافة | ٢٤٨/٥ |
| «الوتر قبل الصبح» | أبو سعيد الخدرى | ٢٧٤/٥ |
| «الوتر قبل الفجر» | ابن عمر | ٢٧٦/٥ |
| «وتراصوا» | أنس | ٢١/٦ |
| «وتطاوعا» | أبو موسى | ٤١٠/١٧ |
| «وتعاجلوا» | ابن عباس | ٤٠٨/١١ |

| | | |
|---|---|---|
| «وتغتسلين مع الفجر فافعلى» | حمنة بنت جحش | ٤٧٤/٢ |
| «وتغريب عام» | عبادة بن الصامت | ١٨٦/١٧ |
| «وتغنوا به...» | سعد بن مالك | ١٦٨/٢١ |
| «وتلك العدة التى أمر الله أن يطلق لها النساء» | نافع مولى ابن عمر | ٣٤٧/١٥ |
| «وتوضئى» | عائشة | ٤٨٤/٢ |
| «وثلاثة» | أبى بن عمارة | ٣٢٧/٢ |
| «وثلاثة» | عمر | ٣٦٦/٢٠ |
| «وجاهدوا فى الله القريب والبعيد...» | عبادة بن الصامت | ٧٠/١٨ |
| «وجب أجرك ورجع إليك فى الميراث» | بريدة بن حصيب | ٢٣٢/٩ |
| «وجب أجرك وردها عليك الميراث» | بريدة | ٥٨٦/٨ |
| «وجب الخروج على كل ذات نطاق» | أخت عبد الله بن رواحة | ٥٩٧/٦ |
| «وجبت محبتى على من سعى بين الغرضين بقوسى...» | جابر بن عبد الله | ١٣/٢٠ |
| «وجبت» | أنس بن مالك | ٥١١/٧ ، ٣٦٤/٢٠ ، ٩٣/٢١ |
| «وجدناه بحرا» | أنس | ٥٦٠/١٨ |
| «وجعل ترابها لنا طهورا» | حذيفة | ١٥٥/٢ |
| «وجعلت لى الأرض طيبة» | جابر | ١٥٢/٢ |
| «وجهت وجهى للذى فطر السموات والأرض حنيفا» | جابر بن عبد الله | ٣٣٢/١٩ |
| «وجهت وجهى للذى فطر السموات والأرض حنيفا» | على بن أبى طالب | ٣٧٨/٣- ٣٨٢ |
| «وجهوا هذه البيوت عن المسجد» | عائشة | ١٦٧/٥ |
| «وحوارى الزبير وابن عمتى» | جابر بن عبد الله | ٤٨٦/١٨ |
| «وخالفوا المجوس » | أبو هريرة | ٤٢٨/١ |
| «وخمروا وجهه ولا تخمروا رأسه» | عبد الله بن عباس | ٢٢١/٧، ٤٦١/٩ |
| «وددت أن عندنا خبزة بيضاء من برة...» | ابن عمر | ٤٦٢/١٩ |
| «ودم الحيض أسود خاثر...» | أبو أمامة الباهلى | ٤٤٦/٢ |

| | | |
|---|---|---|
| «وذبحتم فقد حلّ لكم كل شيء...» | محمد بن أبى بكر | ١٣٩/١٠ |
| «وذلك الزبن تلك المزابنة» | بعض أصحاب النبى | ١٥٠/١١ |
| «والرجل فى مال ابنه راع...» | عبد الله بن عمر | ٨٧/١٣ |
| «الورق بالورق ربًا...» | عمر بن الخطاب | ٧٢/١١ |
| «ورق منه ما رق» | - | ٣٢٧/٢١ |
| «الوزغ فويسق» | عائشة | ٣٨٩/١٠ |
| «وزيادة» | سلمة بن الأكوع | ٥٢٣/١٦ |
| «والسلطان ولى من لا ولى له» | عائشة | ٨٧/١٤ |
| «والسلعة كما هى» | ابن مسعود | ٢٣٠/١١ |
| «وشبه العمد مغلظة ولا يقتل به صاحبه...» | ابن عباس | ٢٢٤/١٦ |
| «والشفعة كحل العقال» | ابن عمر | ٨٥/١٢ |
| «والشنظير الفاحش» | عياض بن حمار المجاشعى | ٢٤٣/٢٠ |
| «وشهادة الزور» | أبو بكرة | ٣٥٨/٢٠، ٤٦٦ |
| «وصدقة الغنم فى سائمتها....» | أنس بن مالك | ٦٥/٨ ، ١١٧ |
| «وصلوا كما رأيتمونى أصلى...» | مالك بن الحويرث | ٧٩/٦ |
| «وصماتها إقرارها» | ابن عباس | ١١٣/١٤ |
| «وصنعت كيف؟» | عروة بن أبى الجعد البارقى | ٩٩/١٢ |
| «وصيام شهر رمضان...» | طلحة بن عبيد الله | ١٤/٣ |
| «وضع الله عن أمتى الخطأ والنسيان...» | عقبة بن عامر | ٣١٤/١٥ |
| «وضع عن أمتى الخطأ والنسيان...» | ابن عمر | ١٠/١٢ |
| «الوضوء على من نام مضطجعًا» | - | ٣٦٥/١ |
| «الوضوء مفتاح الصلاة...» | أبو سعيد الخدرى | ٦٢٢/٤ |
| «الوضوء مما خرج...» | عبد الله بن عباس | ٣٥٣/١ |
| «الوضوء مما مست النار» | زيد بن ثابت | ٤٤٤/١ |
| «وضئنى» | أبو هريرة | ٣٢٦/١ |
| «وعدنى جبريل عليه السلام أن يلقانى» | ميمونة | ٢٣٣/٢ |
| «وعصى الإمام ولم ينفق الكريمة...» | معاذ بن جبل | ٥٥٢/١٨ |

| | | |
|---|---|---|
| «وعلى أهل الذهب ألف دينار» | عمرو بن حزم | ٣٢١/١٦ |
| «وعلى قومك» | ضماد | ٣٤٣/٦ |
| «وعليك ارجع فصل فإنك لم تصل» | أبو هريرة | ٦١٧/٣، ٦٠٣/٤ |
| «وعليك ارجع فصلِّ فإنك لم تصلِّ» | رفاعة بن رافع | ٥٤٦/٤ |
| «وعليك رحمة الله» | أبو ذر | ١٧٢/١٠ |
| «وعليك السلام ارجع فصل فإنك لم تصل» | أبو هريرة | ٣٣٤/٣، ٤٥٦، ٦٠٢/٤، ٦٠٦ |
| «وعليك السلام ارجع فصل فإنك لم تصل» | رفاعة بن رافع | ٥٥٨/٣ |
| «وعليك» | ابن عباس | ٣٧٠/١٣ |
| «وعند الجمرتين» | ابن عباس | ٥٢٢/٩ |
| «وعندكم شيء؟» | على | ٥٧٦/١٣ |
| «والغبيراء وكل مسكر حرام» | قيس بن سعد | ١٣٦/٢١، ١٣٧ |
| «وفد الله ثلاثة...» | أبو هريرة | ٥٦٢/١٠ |
| «وفر من المجذوم فرارك من الأسد» | أبو هريرة | ٤٣٣/١٤ |
| «وفرضت على خمسون صلاة كل يوم...» | مالك بن صعصعة | ١١/٣ |
| «والفرع حق وأن تتركوه ..» | عبد الله بن عمرو | ٤١٧/١٩ |
| «وفطركم يوم تفطرون...» | أبو هريرة | ٦٢٢/٦ |
| «الوفود ثلاثة» | كعب | ٥٦٢/١٠ |
| «وفى الإبل» | على بن أبى طالب | ٤٥/٨ |
| «وفى الأذن خمسون من الإبل» | عمرو بن حزم | ٣٣٩/١٦ |
| «وفى الأسنان كلها مائة من الإبل» | معاذ بن جبل | ٣٥٤/١٦ |
| «وفى الأنف إذا استؤصل المارن الدية كاملة» | عمرو بن حزم | ٣٤٧/١٦ |
| «وفى الأنف إذا أوعب جدعه الدية» | عمرو بن حزم | ٣٤٧/١٦ |
| «وفى الأنف إذا أوعى جدعًا مائة من الإبل» | عمرو بن حزم | ٣٤٧/١٦ |
| «وفى الأنف إذا قطع المارن» | طاوس | ٣٤٨/١٦ |
| «وفى البقر فى كل ثلاثين تبيع....» | على بن أبى طالب | ٦٢/٨ |
| «وفى البيضتين الدية وفى الذكر الدية» | عمرو بن حزم | ٣٧٧/١٦ |
| «وفى الثالثة» | أبو سعيد | ١٥٢/٩ |
| «وفى خمس وعشرين خمس من الغنم...» | على بن أبى طالب | ٤٥/٨ |

| | | |
|---|---|---|
| «وفي الرقة ربع العشر...» | أنس بن مالك | ١٨٥/٨ |
| «وفي السمع مائة من الإبل» | معاذ بن جبل | ٣٤٠/١٦ |
| «وفي السن خمس من الإبل» | عمرو بن حزم | ٣٥٣/١٦ |
| «وفي الشفتين الدية» | عمرو بن حزم | ٣٤٩/١٦ |
| «وفي الصلب الدية» | عمرو بن حزم | ٣٧٠/١٦ |
| «وفي العقل الدية مائة من الإبل» | معاذ بن جبل | ٣٤٠/١٦ |
| «وفي العقل مائة من الإبل» | معاذ بن جبل | ٣٤١/١٦ |
| «وفي العينين الدية» | عمرو بن حزم | ٣٤٣/١٦ |
| «وفي كل ثلاثين باقورة تبيع جذع...» | عمرو بن حزم | ٦٣/٨ |
| «وفي كل خمس من الإبل سائمة شاة...» | عمرو بن حزم | ١١٧/٨ |
| «وفي اللسان الدية» | عمرو بن حزم | ٣٥٠/١٦ |
| «وفي المأمومة ثلث النفس...» | أبو بكر ابن عمرو بن حزم | ٣٣٢/١٦ |
| «وفي المنقلة خمس عشرة من الإبل» | عمرو بن حزم | ٣٣١/١٦ |
| «وفي الموضحة خمس من الإبل» | معاذ بن جبل | ٣٣٣/١٦ |
| «وفي الموضحة خمس» | عمرو بن حزم | ٣٢٧/١٦ |
| «وفي النفس مائة من الإبل» | عبد الله بن أبي بكر | ٣٠٣/١٦ |
| «وفي النفس المؤمنة مائة من الإبل» | عمرو بن حزم | ٣٨٧/١٦ |
| «وفي اليد خمسون...» | أبو بكر ابن عمرو بن حزم | ٣٥٩/١٦ |
| «وفيما هنالك من الأصابع عشر عشر» | سعيد بن المسيب | ٣٦٥/١٦ |
| «وقال عمرة في حجة» | - | ٣٣٢/٩، ٣٣٣ |
| «الوقت الأول رضوان الله» | عبد الله بن عمر | ٢١٩/٣ |
| «وقت صلاة الظهر إذا زالت الشمس...» | عبد الله بن عمرو | ٢٦/٣ |
| «وقت صلاة العشاء إلى نصف الليل» | عبد الله بن عمرو | ٥٣/٣ |
| «وقت صلاة الفجر ما لم يطلع قرن الشمس» | عبد الله بن عمرو | ٢٥/٣ |
| «وقت الظهر إذا زالت الشمس وكان ظل الرجل كطوله» | عبد الله بن عمرو | ٣٠/٣ |
| «وقت الظهر ما لم يحضر العصر...» | عبد الله بن عمرو | ٣٢/٣ |

| | | |
|---|---|---|
| «الوقت فيما بين هذين» | أبو موسى الأشعرى | ٤١/٣ |
| «وقت النفساء أربعون ليلة» | أنس بن مالك | ٤٨٢/٢ |
| «وقتل نفس بغير نفس» | - | ٥٥/١٧ |
| «وقد زوجتكها» | أبو هريرة | ٥١٠/١٤ |
| «وقد سمعتك يا بلال وأنت تقرأ...» | أبو هريرة | ٣٧٦/٥ |
| «وقفت ههنا بعرفة وعرفة كلها موقف...» | جابر بن عبد الله | ٦٥/١٠، ٤٨٣ |
| «وقل لهم فليحتلبوا عليها سخالها» | سوادة بن الربيع | ١٢٥/١٦ |
| «وكل خطوة يمشيها إلى الصلاة صدقة» | أبو هريرة | ٣٨٨/٦ |
| «وكل شيء يلهو به الرجل باطل إلا رمى الرجل...» | عقبة بن عامر | ١٢٣/٢١ |
| «وكلهم أعطيت مثل الذى أعطيت النعمان» | النعمان بن بشير | ٣٢٥/١٢ |
| «وكنت نهيتكم عن زيارة القبور ثم بدا لى فزوروها» | أنس بن مالك | ٥١٩/٧ |
| «وكونوا عباد الله إخوانا» | أبو هريرة | ١٦٩/٢١ |
| «وكيف وقد زعمت أنها أرضعتكما؟» | عقبة بن الحارث | ٤١/١٦ |
| «ولا أنا إلا أن يتغمدنى الله منه برحمة...» | أبو هريرة | ٣٩٧/٥ |
| «ولا بالأنداد ولا تحلفوا إلا بالله...» | أبو هريرة | ٦٢/٢٠ |
| «ولا تحقرن من المعروف شيئا...» | جابر بن سليم | ١٨٥/٢١ |
| «ولا تخلطوا برمضان إلا أن يوافق ذلك...» | أبو هريرة | ٤٢٤/٨ |
| «ولا تشفوا أحدهما على الآخر» | أبو سعيد | ٥٧/١١ |
| «ولا تعجلوا الأنفس حتى تزهق» | - | ٣١٤/١٩ |
| «ولا تفوتينا بنفسك» | فاطمة | ٣٠٩/١٤ |
| «ولا تقتلوا وليدا طفلا...» | على بن أبى طالب | [illegible]/١٨ |
| «ولا تقذفوا المحصنة» | صفوان بن عسال المرادى | ٥٩٣/١٦ |
| «ولا الجهاد فى سبيل الله» | ابن عباس | ٧٥ /٩ |
| «ولا خاتم من حديد؟» | سهل بن سعد | ٢٠٩/١٤ |
| «ولا ركعتى الفجر» | أبو هريرة | ٢٩٠/٥ |
| «ولا صاحب إبل لا يعطى حقها....» | أبو هريرة | ٣٤٠/٨، ٣٤١ |

| | | |
|---|---|---|
| «ولا صاحب إبل لا يؤدى حقها...» | أبو هريرة | ٣٦٥/١٣ |
| «ولا صاحب غنم ولا بقر لا يؤدى...» | أبو هريرة | ٣٦٥/١٣ |
| «ولا الضالين» | وائل الحضرمى | ٤٤٥/٣ |
| «ولا ظنين ولا متهم بقرابة» | عائشة | ٦٦/٢١ |
| «ولا لذى مرة قوى» | - | ٣٩٢/١٣ |
| «ولا ورس» | ابن عمر | ٤٤٠/٩ |
| «ولا يبغى أحد على أحد» | عياض بن حمار | ١٨٠/٢١ |
| «ولا يبيع حاضر لباد» | ابن عباس | ٢٨٥/١١ |
| «ولا يجاز على جريحهم ولا يقسم فيؤهم» | ابن عمر | ٥٣/١٧ |
| «ولا يجمع بين متفرق ولا يفرق بين مجتمع...» | أنس بن مالك | ٨٣/٨ |
| «ولا يحل لأحد من مال أخيه إلا ما طابت...» | عمرو بن يثربى | ٥١/١٢ |
| «ولا يحل لى من غنائمكم مثل هذا...» | عمرو بن عبسة | ٢٥٥/١٣ |
| «ولا يخالف أحدكم أصابع يديه فى الصلاة» | كعب بن عجرة | ٣٩١/٦ |
| «ولا يزاد على حفيرته التراب» | جابر | ٢٧٢/٧ |
| «ولا يسوم الرجل على سوم أخيه» | أبو هريرة | ٢٧٢/١١ |
| «ولا يطوفن بالبيت عريان» | أبو هريرة | ٥٧٤/٩ |
| «ولا يمسّ القرآن إلا طاهر» | عمرو بن حزم | ٢٦٣/١، ٤٠٧/٢ |
| «ولا ينسى حق الله فى ظهورها وبطونها...» | أبو هريرة | ١٣٢/٨ |
| «ولا يؤخذ فى الصدقة هرمة ولا ذات عوار» | - | ٥٠/٨ |
| «ولا يُؤم الرجلُ فى بيته إلا بإذنه» | - | ٥٣٤/٥، ٥٣٥ |
| «ولا يؤم الرجل فى سلطانه ولا فى أهله...» | أبو مسعود البدرى | ٩٤/٦ |
| «الولاء بمنزلة النسب...» | على بن أبى طالب | ٣٧٢/٢١ |
| «الولاء لحمة كالنسب...» | عبد الله بن عمر | ٣٧١/٢١ |
| «الولاء لحمة كلحمة النسب...» | - | ٥٠٨/٢١ |
| «الولاء لحمة كلحمة النسب لا يباع ولا يوهب» | الحسن | ٥٢٨/١٢ |
| «الولاء لحمة كلحمة النسب...» | عبد الله بن عمر، الحسن | ٣٦٩/٢١، ٣٧٠ |

| | | |
|---|---|---|
| «الولاء لمن أعتق» | – | ٣٧٧/٢١، ٤٠٥، ٥٠٧ |
| «الولاء لمن ولى النعمة» | عائشة | ٣٤٧/١٢، ١٦٨/١٤، ٤٣٩، ٣٧٦/٢١ |
| «الولاة من قريش ما أطاعوا لله واستقاموا...» | عمر بن الخطاب | ٥١١/١٦ |
| «ولتلبس بعد ذلك ما أحبت» | ابن عمر | ٤٧٦/٩ |
| «ولد الرجل من كسبه...» | عائشة | ٨٢/١٦ |
| «ولد الزنا شر الثلاثة إذا عمل بعمل أبويه» | عائشة وابن عباس | ١٥٢/٢٠ |
| «ولد الزنا شر الثلاثة» | أبو هريرة عائشة | ١٤٩/٢٠، ١٥٠، ١٥١ |
| «ولد الزنى شر الثلاثة» | السَّفْر بن نُسَير الأسدى | ٦٠٦/٥ |
| «الولد للفراش وللعاهر الحجر» | أبو هريرة | ٤٥٢/١٥، ٤٨١ |
| «الولد للفراش وللعاهر الحجر» | عائشة وأبو هريرة | ٢٤٠/١٤ |
| «الولد للفراش» | – | ٣٧٧/٢١ |
| «ولد لى الليلة غلامًا فسميته بأبى إبراهيم» | أنس بن مالك | ٤٩٠/٧ |
| «ولد الملاعنة عصبته عصبة أمه» | رجل من أهل الشام | ٥٩٢/١٢ |
| «والذى لا إله غيره لا يحل دم رجل مسلم...» | عبد الله بن مسعود | ٩٤/١٧ |
| «والذى نفس محمد بيده إن على الأرض من مؤمن إلا...» | أبو هريرة | ٥٢٠/١٢ |
| «والذى نفس محمد بيده إنها لتعدل ثلث القرآن» | أبو سعيد الخدرى | ٤٠٧/٥ |
| «والذى نفس محمد بيده لو أن عندى أحدًا...» | أبو هريرة | ٥٣/٢٠ |
| «والذى نفس محمد بيده لوددت أن أقاتل...» | أبو هريرة | ٥١٥/١٨ |
| «والذى نفس محمد بيده لولا أن أشق...» | أبو هريرة | ٥١٥/١٨ |
| «والذى نفس محمد بيده ما أصبح عند آل محمد صاع حبٍّ ولا صاع تمر» | أنس بن مالك | ٤٣٧/١١ |
| «والذى نفسى بيده إنكم لتضربونه...» | أنس | ٤٨٥/١٨ |
| «والذى نفسى بيده إنها لتعدل ثلث القرآن» | أبو سعيد الخدرى | ٤٠٦/٥ |
| «والذى نفسى بيده لا تدخلوا الجنة حتى تؤمنوا...» | أبو هريرة | ١٧١/٢١ |

| | | |
|---|---|---|
| «والذى نفسى بيده لا تقتسم ورثتى شيئا» | أبو هريرة | ١٢٢/١٣ |
| «والذى نفسى بيده لا يسألونى...» | أبو بكر | ١١٦/١٩ |
| «والذى نفسى بيده لا يكلم أحد فى سبيل الله» | أبو هريرة | ٣٠٨/٧ |
| «والذى نفسى بيده لأقضين بينكم بكتاب الله» | أبو هريرة | ١٥٧/١٧ |
| «والذى نفسى بيده لأقضين بينكما بكتاب الله...» | أبو هريرة وزيد بن خالد وشبل | ١٧٩/١٧، ١٨٦ |
| «والذى نفسى بيده لأقضين بينكما بكتاب الله» | أبو هريرة | ١٩٥/١٧، ١٩٦ |
| «والذى نفسى بيده لخلوف» | أبو هريرة | ١٣٩/٩ |
| «والذى نفسى بيده لقد تابت توبة لو قسمت...» | عمران بن حصين | ١٩٦/١٧ |
| «والذى نفسى بيده لقد هممت أن آمر بحطب...» | أبو هريرة | ٤٩٩/٥ |
| «والذى نفسى بيده لكأنما تنضحونهم بالنبل...» | كعب بن مالك | ١٩٧/٢١ |
| «والذى نفسى بيده لمناديل سعد فى الجنة أحسن من هذا» | أنس بن مالك | ٥٢١/٦ |
| «والذى نفسى بيده لو تعلمون ما أعلم...» | أبو هريرة | ٥٢/٢٠ |
| «والذى نفسى بيده لو دعيت إلى كراع لأجبت» | أبو هريرة | ٤١/١٥ |
| «والذى نفسى بيده لوددت أن أغزو...» | أبو هريرة | ٥١٤/١٨ |
| «والذى نفسى بيده لولا أن أشق على أمتى...» | أبو هريرة | ٥١٤/١٨ |
| «والذى نفسى بيده لولا أن أشق على المؤمنين» | أبو هريرة | ٨٤/١٨ |
| «والذى نفسى بيده لولا أن رجالا من المؤمنين» | أبو هريرة | ٥٥٧/١٨ |
| «والذى نفسى بيده ليفرجن عنكم...» | زيد بن ثابت | ١٠٨/١٨ |
| «والذى نفسى بيده ليهلن ابن مريم بفج الروحاء» | أبو هريرة | ٣٠٢/٩ |

| | | |
|---|---|---|
| «والذى نفسى بيده ليوشكن أن ينزل فيكم...» | أبو هريرة | ٥٩٥/١٨ |
| «والذى نفسى بيده ليوشكن...» | أبو هريرة | ٢٣٥/٢ |
| «والذى نفسى محمد بيده لقد هممت أن آمر فتيانى...» | أبو هريرة | ٥٠١/٥ |
| «ولعل عرقا نزعه...» | أبو هريرة | ٢٨٤/١٧ |
| «ولك ظهره إلى المدينة» | جابر بن عبد الله | ٢٤٣/١١- ٢٤٥ |
| «ولك ظهره حتى ترجع» | جابر بن عبد الله | ٢٤٤/١١ |
| «ولكن أنزلوهم على حكمكم...» | بريدة | ٣٢٠/١٨ |
| «ولكن شرّقوا أو غرّبوا» | أبو أيوب الأنصارى | ٢٧٥/١ |
| «ولكن نقوم لمن معها من الملائكة» | أبو موسى الأشعرى | ٣٤٩/٧ |
| «ولكن يستخرج به من الشحيح» | ابن عمر | ٢١١/٢٠ |
| «ولم تكن أميرا ولا جابيا ولا عرافا» | المقدام | ٣٢٥/١٣ |
| «ولم عذبت نفسك» | أبو مجيبة الباهلى وأخوه | ٩٦/٩ |
| «ولم فعلتم انطلقوا» | بعض الصحابة | ٤٢١/٧ |
| «ولم لا تنام الليل؟ خذوا من العمل ما تطيقون...» | عائشة | ٣٩٤/٥ |
| «ولم يحرمها الناس...» | أبو شريح الخزاعى | ٣٩٨/١٨ |
| «ولم يفعل أحدكم؟» | أبو سعيد | ٤٦٤/١٤ |
| «ولم يؤخروا تأخير أهل المشرق» | سهل بن سعد | ٥٢٦/٨ |
| «ولن أعود له وقد حلفت» | عائشة | ٣٠٥/١٥ |
| «ولن يضرب خياركم» | أم كلثوم بنت أبى بكر | ١٤٨/١٥ |
| «ولّنى قفاك» | أبو السمح | ٨٣/٥ |
| «ولو استقبلت من أمرى» | جابر بن عبد الله | ٣٦٠/٩ |
| «ولو أنى استقبلت من أمرى» | جابر بن عبد الله | ٣٤٤/٩ |
| «ولى عقدة النكاح الزوج» | عبد الله بن عمرو | ٥٣٨/١٤ |
| «ولياليهن» | خزيمة بن ثابت | ٣٢٤/٢ |
| «وليتب إلى الله فإنه من يبد لنا صفحته...» | ابن عمر | ٥٢٨/١٧ |
| «وليترك يمينه» | عدى بن حاتم | ٧٢/٢٠ |

| | | |
|---|---|---|
| «وليس أن يقول هكذا ولكن يقول هكذا» | عبد الله بن مسعود | ٤٦٨/٨ |
| «وليس فى مال زكاة حتى يحول عليه الحول» | جرير بن حازم | ١٩٦/٨ |
| «وليس مال زكاة حتى يحول عليه الحول» | على بن أبى طالب | ٤٩/٨ |
| «وليقطعهما حتى يكونا أسفل الكعبين» | ابن عمر | ٤٥٢/٩ |
| «الوليمة أول يوم حق والثانى معروف» | زهير بن عثمان | ٥٦٧/١٤ |
| «الوليمة حق؛ من دعى فلم يجب...» | ابن عمر | ١٥/١٥ |
| «الوليمة فى أول يوم حق والثانى معروف» | أنس | ٥٦٨/١٤ |
| «وليمسح أحدكم على خفيه إذا كان مسافرًا ثلاثة أيام... » | صفوان بن عسال المرادى | ٣٢٠/٢ |
| «ولئن طالت بك حياة لتفتحن كنوز كسرى» | عدى بن حاتم | ٥٨٤/١٨ |
| «وما أهلكك؟» لما قال له أبو ذر: هلكت | أبو ذر | ١٦٧/٢ |
| «وما أهلكك؟» | أبو هريرة | ٤٧٨/٨ |
| «وما تراهم قد قدموا؟!» | أبو هريرة | ١٣٣/٤ |
| «وما حملك على ذلك يرحمك الله؟» | ابن عباس | ٤٠١/١٥ |
| «وما حملك على ذلك؟» | عكرمة | ٤٠٢/١٥ |
| «وما ذاك؟» | بريدة | ١٦٠/١٧ |
| «وما ذاك؟» | سعيد بن المسيب | ٤٩٥/٨ |
| «وما ذاك» | أبو هريرة | ٩١/٤، ٤٨٢/٨ |
| «وما ذاك» | عبد الله بن مسعود | ٣٣٣/٣، ٥٢٣/٤ |
| «وما ذاكِ؟» | بريدة | ٧/١٢ |
| «وما ذاكم؟» | أبو سعيد الخدرى | ٤٦٦/١٤ |
| «وما ذلك؟» | بريدة | ٢٠٠/١٧ |
| «وما سبيل الله إلا من قتل؟...» | أبو هريرة | ٨٥/١٨ |
| «وما عليكم أن تدعوه؟...» | أشياخ من بنى سلمة | ٨٤/١٨ |
| «وما الذى أهلكك؟» | ابن عباس | ٣٦٥/١٤ |
| «وما لك؟» | عدى بن عميرة الكندى | ٨/ ٢٦٤، ٢٦٥ |
| «وما المزر؟» | طاوس | ٤٠٤/١٧ |
| «وما هو؟» | أبو عثمان | ٤٨٧/١٥ |

| | | |
|---|---|---|
| «وما يدريك أن الله أكرمه» | أم العلاء الأنصارية | ٢٥٩/٧، ٥١٥ |
| «وما يدريكِ» | أم العلاء | ٣٥٧/٢١ |
| «وما يزال الرجل يصدق ويتحرى الصدق حتى يكتب عند الله صديقًا» | ابن مسعود | ٤٥/٢١ |
| «وما يزال الرجل يكذب ويتحرى الكذب حتى يكتب عند الله كذابًا» | ابن مسعود | ٤٥/٢١ |
| «وما يقول أبو كبير؟» | عائشة | ٥١٥/١٥ |
| «وما يمنعك أن تأذنى لعمك؟» | عائشة | ٧/١٦ |
| «ومسكر هو» | جابر | ٤٠٣/١٧ |
| «والمسلمون يد على من سواهم...» | عبد الله بن عمرو | ١٧٤/١٨ |
| «ومن اتبعها حتى تدفن» | أبو هريرة | ٢٧٧/٧ |
| «ومن أحق بذلك منك؟» | على | ٣٩٦/٢ |
| «ومن أحييته منا فأحيه على الإسلام» | أبو إبراهيم الأشهلى عن أبيه | ٣٩٦/٧ |
| «ومن اشترى مصراة فهو بخير النظرين» | رجل من الصحابة | ١٨٢/١١ |
| «ومن أصيب دون دينه فهو شهيد» | سعيد بن زيد | ٤٩٩/٦ |
| «ومن أظلم ممن ذهب يخلق خلقا كخلقى» | أبو هريرة | ٢٧/١٥ |
| «ومن أعان على خصومة بظلم...» | ابن عمر | ٥٨٦/١١ |
| «ومن أنت؟» | عائشة | ١٨٩/١٥ |
| «ومن أنت» | أبو مجيبة الباهلى أو أخوه | ٩/ ٩٦ |
| «ومن بايع إماما فأعطاه صفقة قلبه...» | عبد الله بن عمرو | ٨/١٧ |
| «ومن البكر ومن الثيب؟» | عائشة | ١٥٤/١٤ |
| «ومن بلغت عنده من الإبل صدقة الجذعة...» | أنس بن مالك | ٢٢/٨ |
| «ومن تمام الحج أن تحرم من دويرة أهلك» | أبو هريرة | ٣٨١/٩ |
| «ومن حقها حلبها يوم وردها» | أبو هريرة | ١٣١/٨ |
| «ومن سأل وله أوقية فهو ملحف» | أبو سعيد الخدرى | ٤٢٥/١٣ |
| «ومن الصلاة صلاة من فاتته فكأنما وتر أهله وماله» | أبو هريرة | ٢٤٦/٣ |

| | | |
|---|---|---|
| «ومن فصل فى سبيل الله فمات...» | أبو مالك الأشعرى | ٥٤٦/١٨ |
| «ومن قتل دون أهله أو دون...» | سعيد بن زيد | ٦٦/١٧، ٥٤٦ |
| «ومن قتل له قتيل فهو بخير النظرين...» | أبو هريرة | ٢٤٦/١٦ |
| «ومن يستغن يغنه الله» | حكيم بن حزام | ٣٢٠/٨ |
| «ومن يطع الله إن عصيته...» | أبو سعيد الخدرى | ٤٠٧/١٣ |
| «ومن يطيق ذلك يا عمر» | أبو قتادة | ١٢٣/٩ |
| «ومن يطيق ذلك» | أبو قتادة | ٧٩/٩ |
| «ومن يكن على يهوديته أو على نصرانيته...» | أبو زرعة بن سيف بن ذى يزن | ٤١/١٩ |
| «ومن؟» (ألا تزوج؟) | عائشة | ١٥٤/١٤ |
| «ومهل العراق من ذات عرق» | جابر | ٣٧٢/٩ |
| «والنفخ فى الصلاة» | بريدة | ٣٨٠/٤ |
| «ونقمة للفاجر» | أبو هريرة | ١٣٦/٩ |
| «ونهيتكم عن زيارة القبور فزوروها ولا تقولوا هجرًا» | أبو سعيد الخدرى | ٥١٩/٧ |
| «وهذا أعجب الأمرين إلى» | حمنة بنت جحش | ٤٧٤/٢ |
| «وهذا لعله نزعة عرق» | أبو هريرة | ٤٧٨/١٥ |
| «وهذا ما صالح عليه محمد بن عبد الله قريشا» | على بن أبى طالب | ٤٤/١٧ |
| «وهذا مصرع فلان غدا» | أنس | ٤٨٥/١٨ |
| «وهكذا وهكذا وهكذا» | عبد الله بن عمر | ٥٦٨/٨ |
| «وهل ترك لنا عقيل بن أبى طالب شيئا؟» | أسامة بن زيد | ٤٤٩/١٢ |
| «وهل ترك لنا عقيل من دار أو دور؟» | أسامة بن زيد | ٤٢٨/١١ |
| «وهل ترك لنا عقيل من رباع أو دور؟!» | أسامة بن زيد | ٤٤٩/١٢، ٣٩٥/١٨ |
| «وهل ترك لنا عقيل منزلًا؟» | أسامة بن زيد | ٢١٣/١٠ |
| «وهل تلد الإبل إلا النوق؟» | أنس | ٢٢٦/٢١ |
| «وهل خياركم إلا أولاد المشركين؟...» | الأسود بن سريع | ٤٢٢/١٨ |
| «وهل يكون الشبه إلا من قبل ذلك...» | عائشة | ٢٨٢/٢١ |
| «وهن حولى كما ترى يسألننى النفقة» | جابر | ٤٦٦/١٣ |
| «وهن شر غالب لمن غلب» | الأعشى المازنى | ٢٠٠/٢١ |

| | | |
|---|---|---|
| «وهو جالس قبل التسليم» | أبو هريرة | ٥٣٠/٤ |
| «ووقت صلاة الصبح من طلوع الفجر» | عبد الله بن عمرو | ٦٥/٣ |
| «ويبقى رجل بين الجنة والنار...» | أبو هريرة | ١٠٠/٢٠ |
| «ويتطهر ما استطاع من طهر» | سلمان | ٤٣٠/٦ |
| «ويُتوضأ من مس الذكر» | بسرة بنت صفوان | ٣٨٩/١ |
| «ويُتوضَّأ من مس الذكر» | مروان بن الحكم | ٣٨١/١ |
| «واليتيمة تستأمر» | - | ١١٥/١٤ |
| «ويجزئ عنه إذا مروا بين يديه على قدر رمية بحجر» | عبد الله بن عباس | ٣٤٥/٤ |
| «ويحك ارجع فاستغفر الله وتب إليه» | بريدة | ٦/١٢، ١٥٩/١٧، ١٩٩ |
| «ويحكِ ارجعي فاستغفرى الله وتوبى إليه» | بريدة | ٧/١٢، ١٦٠/١٧، ١٩٩ |
| «ويحك حدثني عن قتل حمزة» | وحشى | ٣٢٢/١٨ |
| «ويحك قطعت عنق صاحبك» | أبو بكرة | ٢٠٧/٢١ |
| «ويحك لعلك قبلت أو غمزت أو نظرت؟» | ابن عباس | ٢٠٠/١٧ |
| «ويحك ما تقول فى بنت عمك وابن عمك؟» | مقاتل بن حيان | ٤٦٩/١٥ |
| «ويحك ما حملك على هذا؟» | ابن إسحاق | ١٠٩/١٧ |
| «ويحك! ما صنعت» | أبو هريرة | ٣٠٣/١٠ |
| «ويحك ما لك؟» | مروان والمسور بن مخرمة | ١٤٣/١٩ |
| «ويحك! ما لك» | أبو هريرة | ٤٩٣/٨ |
| «ويحك ما يقول ابن عمك؟» | مقاتل بن حيان | ٤٦٩/١٥ |
| «ويحك ما يقول زوجك؟» | مقاتل بن حيان | ٤٦٩/١٥ |
| «ويحك ماذا أطعمتينا؟» | عبد الرحمن بن أبى لبيبة | ٢٢٨/١٦ |
| «ويحك ماذا أعددت لها ؟» | أنس | ٣٦٣/٦ |
| «ويحك! وما ذاك؟» | أبو هريرة | ٤٨٦/٨، ٤٨٧، ١٠/ ٣٠٢، ٤١٩/١٥، ٢٠/ ١٣٧ |
| «ويحك وما ربحت؟» | رجل من الصحابة | ٢٣٠/١٣ |

| | | |
|---|---|---|
| «ويحك! وما شأنك؟» | أبو هريرة | ٤٩٦/٨ |
| «ويحك! ومن يعدل إذ لم أعدل؟...» | أبو سعيد | ١٤/١٧ |
| «ويحك يا أنجشة رويدًا سوقك بالقوارير» | أنس | ١٥٣/٢١، ١٥٤ |
| «ويحك يا وحشى غيب عنى وجهك...» | وحشى | ٣٢٢/١٨ |
| «ويحكم (ويلكم) لا ترجعوا بعدى كفارًا...» | عبد الله بن عمر | ٣٤/١٢ |
| «واليد زناها اللمس» | أبو هريرة | ٣٧١/١ |
| «واليد العليا خير من اليد السفلى...» | عبد الله بن عمر | ٣٩٢/٨ |
| «ويصلى مع المسلمين صلاة الجماعة» | أبو سعيد الخدرى | ٣٣٨/٣ |
| «ويل أمه محش حرب...» | مروان والمسور بن مخرمة | ١٤٣/١٩ |
| «ويل أمه مسعر حرب لو كان له أحد» | مروان والمسور | ١٢٣/١٩ |
| «ويل أمه مسعر حرب...» | موسى بن عقبة | ١٤٦/١٩ |
| «ويل للأعقاب من النار يوم القيامة» | عائشة | ٢١١/١ |
| «ويل للأعقاب من النار» | أبو أمامة أو أخوه | ٢٥٦/١ |
| «ويل للأعقاب من النار» | أبو هريرة | ٢١٠/١ |
| «ويل للأعقاب من النار» | عائشة | ٢٠٠/٢ |
| «ويل للأعقاب من النار» | عبد الله بن عمرو | ٢٠٨/١ |
| «ويل للأعقاب وبطون الأقدام من النار» | عبد الله بن الحارث بن جزء الزبيدى | ٢١٢/١ |
| «ويل للأمراء ويل للعرفاء ويل للأمناء...» | أبو هريرة | ٢٧٦/٢٠ |
| «ويل للذى يحدث فيكذب ليضحك به الناس...» | بهز بن حكيم عن أبيه عن جده | ٤٨/٢١ |
| «ويل للعراقيب من النار» | عائشة | ٢١٢/١ |
| «ويلك قطعت عنق صاحبك...» | أبو بكرة | ٢٠٧/٢١ |
| «ويلك لأى شىء سممتنى؟» | أبو هريرة | ٢٢٧/١٦ |
| «وينطلق الذى عليه المال...» | أبو هريرة | ٣٨٥/٢٠، ٣٨٦ |
| «ويهل أهل اليمن» | ابن عمر | ٣٧٠/٩ |
| «ويومين» جواب عن سؤال: قلت: يومًا | أبى بن عمارة | ٣٢٧/٢ |
| «ويومين» | أبى بن عمارة | ٣٢٨/٢ |

## (الياء)


| | | |
|---|---|---|
| «يا أبا بصير إن هؤلاء القوم قد صالحونا...» | مروان والمسور | ١٤٣/١٩ |
| «يا أبا بكر إن لكل قوم عيدًا وهذا عيدنا» | أبو بكر | ١٤٤/٢١ |
| «يا أبا بكر ما من عبد ظلم مظلمة فيغضى عنها...» | أبو هريرة | ١٨٨/٢١ |
| «يا أبا بكر ما منعك أن تثبت إذ أمرتك» | سهل بن سعد | ٢٥٨/٤، ٨٦/٦ |
| «يا أبا بكر مررت بك وأنت تصلى...» | أبو قتادة | ٣٧٥/٥ |
| «يا أبا بكر وعلى وعمر ما ترون فى هؤلاء الأسارى؟» | عمر بن الخطاب | ١٩١/١٣ |
| «يا أبا الدرداء إن لجسدك» | أبو جحيفة | ٥١/٩ |
| «يا أبا ذر» | أبو ذر | ٣٣٢/١٧ |
| «يا أبا ذر ابدُ فيها» | أبو ذر | ١٧٥/٢ |
| «يا أبا ذر أحب لك ما أحب لنفسى...» | أبو ذر | ٢٧٠/٢٠ |
| «يا أبا ذر إذا صمت من الشهر» | أبو ذر | ١٠٦/٩ |
| «يا أبا ذر إن الصعيد الطيب طهور» | أبو ذر | ١٦٧/٢ |
| «يا أبا ذر إنك ضعيف وإنها أمانة...» | أبو ذر | ٢٧١/٢٠ |
| «يا أبا ذر إنى أراك ضعيفا... » | أبو ذر | ١٠٦/٦، ٧١/١٣ |
| «يا أبا ذر الصعيد الطيب كافيك» | رجل من بنى عامر | ٥١/٢ |
| «يا أبا ذر كيف تصنع إذا بلغ الناس من الجهد؟» | أبو ذر | ٨٠/١٧ |
| «يا أبا ذر كيف تصنع إذا كثر القتل...؟» | أبو ذر | ٨٠/١٧ |
| «يا أبا ذر لا تحقرن من المعروف شيئا...» | أبو ذر | ٣٦١/٨ |
| «يا أبا ذر ما أحب أن أحدًا ذاك لى ذهبًا تأتى عليه ليلة...» | أبو ذر | ٢٠/٢١ |
| «يا أبا رافع إن الصدقة حرام على آل محمد» | عبد الله بن عباس | ٤٤٦/١٣ |
| «يا أبا سعيد من رضى بالله ربا...» | أبو سعيد | ٥١٩/١٨ |
| «يا أبا عمير ما فعل النغير؟» | أنس بن مالك | ٣٦٢/١٠ ، ٢٢٦/٢١ |
| «يا أبا الفضل ألا تسألنى...» | على | ٢٧١/١٣ |
| «يا أبا لبابة أعطه هذا اليتيم...» | سعيد بن المسيب | ٢٥٤/١٢ |

| | | |
|---|---|---|
| «يا أبا موسى خذهن» | أبو موسى | ١٣٠/٢٠ |
| «يا أبا موسى كيف قلت حين أحرمت» | أبو موسى | ٢٤٠/٩ |
| «يا أبا هِرّ» | أبو هريرة | ١٧٦/٥ |
| «يا أبا هريرة» | أبو هريرة | ١٧٥/٥، ١٥/١٤، ١٦ |
| «يا أبا هريرة اهتف بالأنصار» | أبو هريرة | ٣٨٤/١٨ |
| «يا أبا هريرة قد جف القلم بما أنت لاق..» | أبو هريرة | ٥٩١/١٣ |
| «يا أبا الوليد اتق لا تأتى يوم القيامة ببعير تحمله...» | عبادة | ٢٦٥/٨ |
| «يا ابن آدم إنك أن تبذل الفضل خير لك..» | أبو أمامة | ٣٣٧/٨ |
| «يا ابن أخى إذا اشتريت بيعًا فلا تبعه حتى تقبضه» | حكيم بن حزام | ١٦٢/١١ |
| «يا ابن أخى لا تبيعن شيئا حتى تقبضه» | حكيم بن حزام | ١٦٣/١١ |
| «يا ابن الأكوع ملكت فأسجح...» | سلمة بن الأكوع | ١٨٦/٢١ |
| «يا ابن أم عبد لا طاعة لمن عصى الله» | عبد الله بن مسعود | ١٠١/٦ |
| «يا ابن حذافة لا تسمعنى وأسمع الله» | أبو هريرة | ٢٨/٤ |
| «يا ابن حوالة إذا رأيت الخلافة قد نزلت...» | عبد الله بن حوالة | ٥٥٦/١٨ |
| «يا ابن الخطاب اذهب فناد فى الناس...» | عمر بن الخطاب | ٣٣٣/١٨ |
| «يا ابن الخطاب ألا ترضى أن تكون لنا الآخرة...» | عمر بن الخطاب | ٤٩٠/١٣ |
| «يا ابن الخطاب إنى رسول الله...» | أبو وائل | ١٢٩/١٩ |
| «يا ابن رواحة انزل فحرك الركاب» | عبد الله بن رواحة | ١٥٦/٢١ |
| «يا ابن صوريا أنشدك الله وأذكرك أيامه...» | أبو هريرة | ٢٦٨/١٧ |
| «يا ابن عمر ما هكذا أمر الله تبارك وتعالى..» | عبد الله بن عمر | ٢٤٢/١٥ |
| «يا ابن عمر ما هكذا أمرك الله...» | عبد الله بن عمر | ٢٣٢/١٥ |
| «يا ابن عوف اركب فرسك ثم ناد...» | العرباض بن سارية | ٧٣/١٩ |
| «يا ابن مسعود أتدرى ما حكم الله فيمن بغى؟» | ابن عمر | ٥٣/١٧ |
| «يا أخا بنى تميم ما تريد أن تفعل بأسيرك؟» | ثعلبة التميمى، أو الهرماس بن زياد | ٤٨٧/١١ |
| «يا أرض ربى وربك الله...» | عبد الله بن عمر | ٥٣٠/١٠ |

| | | |
|---|---|---|
| «يا أسامة تشفع فى حد من حدود الله؟» | عائشة | ٥٣٥/١٧ |
| «يا أسلع مالى أرى راحلتك تضطرب» | الأسلع بن شريك | ١٨/١ |
| «يا أعرابى إن الله عز وجل غضب على سبطين...» | أبو سعيد | ٤٥٩/١٩ |
| «يا أكثم بن الجون اغز مع غير قومك...» | أكثم بن الجون | ٥١٢/١٨ |
| «يا أم حارثة إنها جنان فى الجنة...» | أنس بن مالك | ٥٤٨/١٨ |
| «يا أم سليم إن الله قد كفى وأحسن» | أنس | ١٤٦/١٣ |
| «يا أم عطية اخفضى ولا تنهكى...» | الضحاك بن قيس | ٥٠٨/١٧ |
| «يا أم معقل ما منعك أن تخرجين..» | أم معقل | ٤٤/١٣ |
| «يا أنس اجعل بصرك حيث تسجد» | أنس بن مالك | ٣٧٥/٤ |
| «يا أنس انطلق بهذا إلى أبى طلحة وأم سليم» | أنس بن مالك | ١٢٣/٥ |
| «يا أنس كتاب الله القصاص» | أنس | ١٦٢/١٦، ٢٧٩ |
| «يا أهل البقيع لا يفترقن بيعان إلا عن رضًا» | أنس | ٣١/١١ |
| «يا أهل البلد صلوا أربعًا فإنا سفر» | عمران بن حصين | ١٨٦/٦ |
| «يا أهل القرآن أوتروا فإن الله تعالى وتر يحب الوتر» | سعيد بن المسيب | ٢٤٦/٥ |
| «يا أهل المدينة لا تأكلوا لحم الأضاحى...» | أبو سعيد الخدرى | ٣٥٥/١٩ |
| «يا أهل مكة أتموا الصلاة؛ فإنا قوم سفر» | عمران بن حصين | ١٢٧/٦، ١٢٨ |
| «يا أهل مكة قوموا فصلوا ركعتين؛ فإنا سفر» | عمران بن حصين | ١٧٨/٦ |
| «يا أهل مكة لا تقصروا الصلاة أدنى من أربعة بُرُد...» | ابن عباس | ١٣٤/٦ |
| «يا أيها الناس أحلوا» | جابر بن عبد الله | ٢٩٥/٩ |
| «يا أيها الناس اربعوا على أنفسكم...» | أبو موسى الأشعرى | ٨٣/٤ |
| «يا أيها الناس اسعوا؛ فإن السعى قد كتب عليكم» | نسوة من بنى عبد الدار | ١٣/١٠ |
| «يا أيها الناس أطعموا الطعام...» | عبد الله بن سلام | ٣٤٥/٥ |
| «يا أيها الناس إن الله بعثنى إليكم فقلتم كذبت...» | أبو الدرداء | ١٨٧/٢١ |

| | | |
|---|---|---|
| «يا أيها الناس إن الله كتب عليكم الحج» | ابن عباس | ٢٠٣/٩ |
| «يا أيها الناس إن البر ليس بإيجاف الخيل والإبل...» | عبد الله بن عباس | ١٠٦/١٠ |
| «يا أيها الناس إن الشمس والقمر آيتان من آيات الله » | جابر بن عبد الله | ٢١/٧، ٢٢ |
| «يا أيها الناس انصرفوا فقد عصمنى الله...» | عائشة | ٢٦/١٨ |
| «يا أيها الناس إنما أنا بشر ورسول الله فأذكركم الله » | سمرة بن جندب | ٥٠/٧- ٥٢ |
| «يا أيها الناس إنما صنعت هذا لتأتموا بى ولتعلموا صلاتى» | سهل بن سعد الساعدى | ٤٤/٦ ، ٢٩٢ |
| «يا أيها الناس إنما هذه الصلوات فى البيوت» | كعب بن عجرة | ١٠٠/٤ |
| «يا أيها الناس إنه لا يحل لى مما أفاء الله عليكم» | عبادة بن الصامت | ١٣٤/١٣، ٢٤٧ |
| «يا أيها الناس إنى أرى الله عز وجل يعرض بالخمر» | أبو سعيد | ٣٥٤/١١ |
| «يا أيها الناس إنى أنبئت بليلة القدر» | أبو سعيد | ١٥٢/٩ |
| «يا أيها الناس توبوا إلى الله عز وجل قبل أن تموتوا...» | جابر بن عبد الله | ٢٢٧/٦ |
| «يا أيها الناس خذوا العطاء ما كان عطاء» | - | ٣٢١/١٣ |
| «يا أيها الناس خذوا من الأعمال ما تطيقون» | عائشة | ٤٩/٦ |
| «يا أيها الناس ردوا على ردائى...» | عبد الله بن عمرو | ٢٤٨/١٣ |
| «يا أيها الناس على كل أهل بيت فى كل عام أضحية وعتيرة» | مخنف بن سليم الغامدى | ٤١٩/١٩ |
| «يا أيها الناس عليكم السكينة والوقار...» | أسامة بن زيد | ٧٩/١٠ |
| «يا أيها الناس عليكم السكينة» | عبد الله بن عباس | ١٠٥/١٠ |
| «يا أيها الناس عليكم من الأعمال ما تطيقون» | عائشة | ٤٨/٦ |
| «يا أيها الناس قولوا: لا إله إلا الله تفلحوا» | طارق بن عبد الله المحاربى | ٢٢٩/١، ٣٨٥/١١ |
| «يا أيها الناس كنت أذنت لكم...» | سبرة | ٣٨٥/١٤ |

| | | |
|---|---|---|
| «يا أيها الناس لا تتمنوا لقاء العدو...» | عبد الله بن أبى أوفى | ٥٠٠/١٨ |
| «يا أيها الناس لا يتلقين أحد منكم سوقًا» | عبد الله بن عمر | ١٨١/١١ |
| «يا أيها الناس لا يقتل بعضكم بعضًا...» | أم جندب | ١١٠/١٠ |
| «يا أيها الناس لا يقتل بعضكم بعضًا...» | أم جندب | ١١١/١٠، ١١٩، ١٢٠ |
| «يا أيها الناس ما لكم إذا نابكم شيء فى الصلاة أخذتم فى التصفيق؟!» | سهل بن سعد الساعدى | ٢٥٩/٤ |
| «يا أيها الناس من عمل لنا على عمل فكتمنا مخيطا...» | عدى بن عميرة | ٤١٢/٢٠ |
| «يا أيها الناس من عمل منكم لنا على عمل...» | عدى بن عميرة | ٣٩٩/١٣ |
| «يا بريدة أتبغض عليا» | بريدة | ٢٦٧/١٣ |
| «يا بشير ألك ولد سوى ولدك هذا؟» | النعمان بن بشير | ٣٢٢/١٢ |
| «يا بلال اجعل بين أذانك وإقامتك بقدر ما يفرغ الآكل» | جابر بن عبد الله | ٣٤٧/٣ |
| «يا بلال إذا أذنت فترسل» | أبو هريرة | ١٩٩/٣ |
| «يا بلال إذا أذنت فترسل» | جابر بن عبد الله | ١٩٨/٣ |
| «يا بلال أذن فى الناس أن يصوموا غدا» | ابن عباس | ٤٤٢/٨ |
| «يا بلال اقضه وزده» | أبو هريرة | ٥٧٨/١١ |
| «يا بلال اقطع عنى لسانه» | عكرمة | ٢٠٥/٢١ |
| «يا بلال إن أخا صداء أذن ومن أذن فهو يقيم» | بلال | ١٢١/٣ |
| «يا بلال قم فأذن: لا يدخل الجنة إلا مؤمن...» | أبو هريرة | ١٠٥/١٧ |
| «يا بلال قم فناد بالصلاة» | عبد الله بن عمر | ٩٨/٣، ١٠٤، ١٤٩، ١٥٠ |
| «يا بنت أبى أمية سألت عن الركعتين بعد العصر...» | أم سلمة | ٣٠٢/٤ |
| «يا بنى بياضة أنكحوا أبا هند...» | أبو هريرة | ١٧٤/١٤ |
| «يا بنى خطمة اجعلوا مؤذنكم أفضلكم» | صفوان بن سليم | ١٩٤/٣ |
| «يا بنى سلمة ألا تحتسبون آثاركم؟» | أنس بن مالك | ٥٢٧/٥ |
| «يا بنى سلمة دياركم فإنما تكتب آثاركم» | جابر بن عبد الله | ٥٢٧/٥ |
| «يا بنى عبد المطلب - أو يا بنى عبد مناف - إن وليتم...» | جبير بن مطعم | ٢٢٠/٥ |

| | | |
|---|---|---|
| «يا بنى عبد مناف لا تمنعوا أحدًا طاف» | جبير بن مطعم | ٥٨٨/٩ |
| «يا بنى عبد مناف من ولى منكم...» | جبير بن مطعم | ٢٢٠/٥، ٢٢١ |
| «يا بنى فلان يا بنى فلان...» | ابن عباس | ٢٢/١٨ |
| «يا بنى فهر يا بنى عدى يا بنى فلان» | ابن عباس | ٣٥٩/١٣ |
| «يا ثابت اقبل الحديقة وطلقها تطليقة» | ابن عباس | ١٨٠/١٥ |
| «يا ثابت خذ منها» | حبيبة بنت سهل | ١٨٠/١٥ |
| «يا ثوبان اذهب بهذا إلى آل فلان... » | ثوبان | ٧٥/١ |
| «يا ثوبان أصلح لحمها» | ثوبان | ٣٣٦/١٩ |
| «يا ثوبان هيئ لنا هذه الشاة وأصلحها» | ثوبان | ٣٥١/١٩ |
| «يا جابر» | جابر بن عبد الله | ٢٣٥/٤ |
| «يا جابر انطلق فقل...» | جابر بن عبد الله | ٢٨٣/١ |
| «يا جابر تزوجت» | جابر | ٥/١٤ |
| «يا جابر خذ الإداوة...» | جابر بن عبد الله | ٢٨٣/١ |
| «يا جابر لا أراك ميتًا من وجعك هذا» | جابر بن عبد الله | ٤٩٨/١٢ |
| «يا جابر ما أراك إلا ميتًا- أو قال: ما أراك ميتًا» | جابر بن عبد الله | ٤٩٧/١٢ |
| «يا جبريل أى البقاع خير؟» | ابن عمر | ٥٢٩/٥، ٥٠٥/١٣ |
| «يا جبريل مالى أرى الشمس اليوم طلعت» | أنس بن مالك | ٤٢٨/٧ |
| «يا جرير لأى شىء جئت» | جرير بن عبد الله | ٦٠٠/١٦ |
| «يا جنادة أما وجدت عضوا...؟» | جنادة بن جراد | ٤٥٧/١٣ |
| «يا حذيفة قم فأتنا بخبر القوم» | حذيفة | ٤٨٧/١٨ |
| «يا حسان أجب عن رسول الله...» | حسان بن ثابت | ١٩٢/٢١ |
| «يا حكيم إن هذا المال خضرة حلوة...» | حكيم بن حزام | ٣٨٨/٨ |
| «يا حلال يا حلال» | - | ٣٢٩/١٣ |
| «يا خالد رد عليه ما أخذت منه» | عوف بن مالك | ١٥٨/١٣ |
| «يا خالد لا ترد عليه...» | عوف بن مالك | ١٥٨/١٣ |
| «يا خالد ما حملك على ما صنعت» | عوف بن مالك | ١٥٨/١٣ |
| «يا خويلة أبشرى» | ابن عباس | ٣٩٣/١٥ |
| «يا خويلة ما أمرنا فى أمرك بشىء» | ابن عباس | ٣٩٣/١٥ |
| «يا ذا الأذنين» | أنس | ٢٢٦/٢١ |

| | | |
|---|---|---|
| «يا رافع لم ترمى نخلهم؟» | رافع بن عمرو | ٥٨٢/١٩ |
| «يا رب إن أمتى ضعاف أجسادهم وقلوبهم...» | أنس بن مالك | ١٣/٣ |
| «يا ربّ إنك قادر على أن تثيب هذا المظلوم خيرًا من مظلمته....» | عباس بن مرداس | ٧٦/١٠ |
| «يا رب خفف عنا؛ فإن أمتى لا تستطيع هذا...» | أنس بن مالك | ١٣/٣ |
| «يا رب رجل ترك عمة وخالة» | عطاء بن يسار | ٤٣٦/١٢ |
| «يا رويفع...» | رويفع بن ثابت | ٣٣٤/١ |
| «يا زبير اسق ثم احبس الماء... » | عبد الله بن الزبير | ٢٣٨/١٢ ، ٣٠٨/٢٠ |
| «يا سلمان كل طعام وشراب وقعت فيه دابة ليس لها دم» | سلمان | ٢٥٧/٢ |
| «يا سلمان لا خير فى النصارى ولا فيمن يحبهم» | سلمان الفارسى | ٢٠٩/١١ |
| «يا سلمة ألا تبايع» | سلمة بن الأكوع | ٥٢٣/١٦ |
| «يا سلمة هب لى المرأة... » | سلمة بن الأكوع | ٤٢٠/١٨ |
| «يا سواد بن عمرو خلوق ورس...» | سواد بن عمرو | ٢٣٤/١٦ |
| «يا سودة أعلى الله وعلى رسوله؟!» | سودة بنت زمعة | ٢٩٦/١٨ |
| «يا صخر إن القوم إذا أسلموا احرزوا دماءهم...» | صخر بن العيلة الأحمسى | ٣٧١/١٨، ٣٧٢ |
| «يا صفوان » | صفوان بن أمية | ٦٣/١٥ |
| «يا صفوان هل عندك سلاح؟» | أناس من آل عبد الله بن صفوان | ٢٧/١٢، ٤٠٨/١٣ |
| «يا صفية ما هذه الخضرة؟» | ابن عمر | ٤٥١/١٨ |
| «يا عائشة أفلا أكون عبدا شكورا؟» | عائشة | ٤٦٩/١٣ |
| «يا عائشة انظرن ما إخوانكن...» | عائشة | ٣٠/١٦ |
| «يا عائشة إن الله رفيق يحب الرفق...» | عائشة | ٣٥/٢١ |
| «يا عائشة إن شر الناس منزلة يوم القيامة...» | عائشة | ٢١٧/٢١ |

| | | |
|---|---|---|
| «يا عائشة إن عينى تنامان ولا ينام قلبى» | عائشة | ٣٢٨/٥ ، ٣٦١، ١٣/ ٥٤٠ |
| «يا عائشة إنى أجد ألم الطعام الذى أكلت...» | عائشة | ٦١٣/١٩ |
| «يا عائشة إنى أحب أن أعرض عليك أمرا» | جابر | ٤٦٦/١٣ |
| «يا عائشة إنى مخبرك خبرا...» | عائشة | ٤٦١/١٣ |
| «يا عائشة أين الأسير» | عائشة | ٢٩٦/١٨ |
| «يا عائشة أين المرأة؟» | أبو العالية الرياحى | ٣٩٨/١٥ |
| «يا عائشة لولا أن قومك حديثو عهد» | عائشة | ٥٨٠/٩ |
| «يا عائشة ما فعلت شاتكم؟» | عائشة | ٢١٩/١٩ |
| «يا عائشة من أعطاك عطاء بغير مسألة...» | عائشة | ٣٤٦/١٢ |
| «يا عائشة من هذا؟» | عائشة | ٣٠/١٦ |
| «يا عائشة ناولينى الخمرة» | عائشة | ٨٣/٢ |
| «يا عائشة هل عندك شىء» | عائشة | ٤٧/٩ |
| «يا عائشة هل عندكم شىء؟» | عائشة | ٤١٢/٨ ، ٤٧/٩ |
| «يا عائشة هلمى المدية» | عائشة | ٢٧٠/١٩ ، ٣١٥، ٣٣٧ |
| «يا عائشة وما يؤمننى أن يكون فيه عذاب» | عائشة | ١١٦/٧ |
| «يا عباد الله أنا عبد الله ورسوله...» | أنس | ١٤٥/١٣ |
| «يا عباس يا عم رسول الله ألا أهدى لك؟...» | عكرمة | ٤٩٠/٥ |
| «يا عباس يا عم رسول الله نفس تنجيها...» | محمد بن المنكدر | ٢٧٢/٢٠ |
| «يا عباس يا عماه ألا أعطيك؟ ألا أحبوك؟..» | ابن عباس | ٤٨٩/٥ |
| «يا عبد الله ارفع إزارك» | عبد الله بن عمر | ٢٥١/٤ |
| «يا عبد الله بن عمرو إن قاتلت صابرا محتسبا» | عبد الله بن عمرو | ٥٥٢/١٨ |
| «يا عبد الله بن عمرو إن هذه ثياب الكفار...» | ابن عمرو | ٤٣٩/٦ |
| «يا عبد الله بن قيس؟» | أبو موسى | ٩٦/١٧ |
| «يا عبد الله ما فعلت الريطة» | عبد الله بن عمرو بن العاص | ٤٣٩/٦، ٤٨٠/٩ |
| «يا عبد الرحمن بن سمرة إذا حلفت على يمين...» | عبد الرحمن بن سمرة | ١٢٥/٢٠ |
| «يا عبد الرحمن بن سمرة لا تسأل الإمارة...» | عبد الرحمن بن سمرة | ١٣١/٢٠ |

| | | |
|---|---|---|
| «يا عبد الرحمن لا تسأل الإمارة...» | عبد الرحمن بن سمرة | ٢٠/٦٨، ١٢٥، ٢٨٦، ٢٨٧ |
| «يا عبد الله أى عرى الإسلام أوثق؟» | عبد الله بن مسعود | ٢١/١٧٣ |
| «يا عتاب بن أسيد إنى قد بعثتك...» | ابن عباس | ١٥/٤٣٤ |
| «يا عدى بن حاتم هل رأيت الحيرة؟» | عدى بن حاتم | ١٠/٤٣٤ |
| «يا عقبة ألا أعلمك خير سورتين قرئتا؟» | عقبة بن عامر الجهنى | ٥/٢٥، ٢٦ |
| «يا عقبة تعوذ بهما فما تعوذ متعوذ بمثلهما» | عقبة بن عامر | ٥/٢٧ |
| «يا عقبة كيف رأيت؟» | عقبة بن عامر الجهنى | ٥/٢٥، ٢٦ |
| «يا على» | على بن أبى طالب | ٣/٦٠٤ |
| «يا عليّ أحب لك ما أحب لنفسى...» | على | ٦/٣٣٨ |
| «يا على أدِّ الدينار» | أبو سعيد الخدرى | ١٢/٣٧٥ |
| «يا على إذا تاك أحد الخصمين...» | على | ٢٠/٤١٧ |
| «يا على اذهب إلى الجزار فقل له...» | على بن أبى طالب | ١٢/٣٧٦ |
| «يا على امح رسول الله» | البراء | ١٣/٤٧٩ |
| «يا على ثلاثة لا تؤخرها...» | على بن أبى طالب | ١٤/١٦٣ |
| «يا على جزاك الله خيرًا...» | على بن أبى طالب | ١١/٥٥٤ |
| «يا عليّ غطِّ فخذك فإنها من العورة» | على بن أبى طالب | ٤/٢٠٣ |
| «يا على قد جعلت إليك هذه السبقة بين الناس» | على | ٢٠/٣٥ |
| «يا على لا تتبع النظرة النظرة» | بريدة | ١٤/٣٦ |
| «يا على لا يحل لأحد يجنب فى هذا المسجد» | أبو سعيد | ١٣/٥٥٠ |
| «يا على لم أكسكها لتلبسها» | على بن أبى طالب | ٥/١١٢ |
| «يا على مثل الذى لا يتم صلاته كمثل حبلى حملت...» | على بن أبى طالب | ٤/٦٤٢ |
| «يا عم أريدهم على كلمة تدين لهم العرب...» | ابن عباس | ١٩/٢٢ |
| «يا عمار إنما كان يكفيك أن تقول هكذا» | عمار | ٢/١٤٤ |
| «يا عمار ما نُخامتك ولا دموع عينيك إلا...» | عمار بن ياسر | ١/٤١ |
| «يا عمر أتدرى من السائل» | عمر بن الخطاب | ٩/١٩٩ |
| «يا عمر أما شعرت أن عم الرجل صنو أبيه؟» | أبو هريرة | ٨/١٠٤ |

| | | |
|---|---|---|
| «يا عمر أنا وهو كنا إلى غير هذا منك أحوج» | عبد الله بن سلام | ٤٨٦/١١ |
| «يا عمر إنك رجل قوى» | عمر بن الخطاب | ٥٥٠/٩ |
| «يا عمر إنه من أهل بدر...» | على بن أبى طالب | ٤٨٢/١٨ |
| «يا عمر لا تزاحم عند الركن» | شيخ من خزاعة | ٥٥٠/٩ |
| «يا عمر ما تدرى من السائل؟» | عمر | ٧٢/٢١ |
| «يا عمر يكفيك آية الصيف...» | عمر بن الخطاب | ٥٣٦/١٦ |
| «يا عمرو بايع فإن الإسلام يجب ما كان قبله» | عمرو بن العاص | ٣٩٨/١٨ |
| «يا عمرو صليت بأصحابك وأنت جنب» | عمرو بن العاص | ١٨٧/٢ |
| «يا عوف اعدد ستا بين يدى الساعة... » | عوف بن مالك الأشجعى | ١٣١/١٩، ١٣٢ |
| «يا عيينة ألا تقبل الغير؟» | الزبير بن العوام | ٣٧٩/١٨ |
| «يا غلام سم الله وكل بيمينك...» | عمر بن أبى سلمة | ٥٦/١٥ |
| «يا غلام لم ترمى نخلهم؟» | أبو رافع بن عمرو | ٥٨٢/١٩ |
| «يا فاطمة احلقى رأسه وتصدقى...» | على | ٣٩٢/١٩ |
| «يا فاطمة اسكبى لى غسلًا» | أم هانئ بنت أبى طالب | ٢٤/١ |
| «يا فاطمة إنما السكنى والنفقة...» | عائشة | ٧٠/١٦ |
| «يا فاطمة بنت محمد...» | عائشة | ٦٥/١٣ |
| «يا فاطمة قومى فاشهدى أضحيتك...» | على، عمران بن حصين | ٣٢٦/١٩ |
| «يا فاطمة قومى فاشهدى أضحيتك» | عمران بن حصين | ٤٨١/١٠ |
| «يا فاطمة من أين جئت» | عبد الله بن عمرو بن العاص | ٤٥٧/٧ |
| «يا فتى لقد شققت علىّ...» | عبد الله بن أبى الحمساء | ٥٣/٢١ |
| «يا فديك أقم الصلاة...» | صالح بن بشير بن فديك | ٥٦/١٨ |
| «يا فلان أصليتَ؟» | جابر | ٢٨٧/٦ |
| «يا فلان ألا تحسن صلاتك؟...» | أبو هريرة | ٣٩٥/٤ |

| | | |
|---|---|---|
| «يا فلان انزل فاجدح لنا» | عبد الله بن أبي أوفى | ٤٥٩/٨ |
| «يا فلان أيما كان أحب إليك أن تمتع به عمرك» | معاوية بن قرة عن أبيه | ٤٥٦/٧ |
| «يا فلان بأى صلاتيك اعتددت؟...» | عبد الله بن سرجس | ٢٨٧/٥ |
| «يا فلان فعلت كذا وكذا؟» | أنس | ٨٩/٢٠ |
| «يا فلان ما منعك أن تصلى معنا؟» | عمران بن حصين | ١٧٢/٢ |
| «يا فلان ما منعك أن تصلى» | عمران بن حصين | ١٦٢/٢ |
| «يا فلان ما يمنعك مما يأمرك أصحابك» | أنس بن مالك | ٤٥٣/٣ |
| «يا قيس لا تأتى يوم القيامة على رقبتك بعير...» | قيس بن سعد بن عبادة | ٢٦٢/٨ |
| «يا كعب» | كعب بن مالك | ٤٨٦/١١، ٥٢٢ |
| «يا كعب إذا توضأت فأحسنت الوضوء» | كعب بن عجرة | ٣٩٣/٦ |
| «يا كعب ضع من دينك هذا» | كعب بن مالك | ٥٢٢/١١ |
| «يا مرثد، الزانى لا ينكح إلا زانية» | مرثد بن أبي مرثد | ٢٢٧/١٤ |
| «يا معاذ أطع كل أمير...» | معاذ بن جبل | ٦٢/١٧ |
| «يا معاذ أنت عسى ألا تلقانى بعد عامى هذا...» | معاذ بن جبل | ٢٣٨/٢٠ |
| «يا معاذ بن جبل إذا قال الرجل لامرأته: أنت...» | معاذ بن جبل | ١١٥/٢٠ |
| «يا معاذ لا تكن فتانًا» | حزم بن أبى كعب | ٦٩/٦ |
| «يا معاذ ما خلق الله شيئا على وجه الأرض...» | معاذ بن جبل | ٣٢٨/١٥ |
| «يا معاشر المسلمين إن هذا يوم جعله» | أبو هريرة | ٣٧٩/٢ |
| «يا معشر الأنصار...» | أبو أيوب وجابر وأنس | ٣٢١/١ |
| «يا معشر الأنصار ألا تسمعون ما يقول سيدكم؟» | ابن عباس | ٤٢٤/١٥ |
| «يا معشر الأنصار ألم أجدكم ضلالا...» | عبد الله بن زيد بن عاصم | ٢٥٦/١٣ |
| «يا معشر الأنصار» | أبو هريرة | ٣٨٢/١٨ |
| «يا معشر التجار إن سوقكم هذه يخالطها الحلف» | قيس بن أبى غرزة | ١٤/١١ |

| | | |
|---|---|---|
| «يا معشر التجار إن هذا البيع يحضره الكذب واللغو» | قيس بن أبى غرزة | ١٤/١١ |
| «يا معشر التجار إنكم قد وليتم أمرًا هلكت فيه الأمم السالفة...» | ابن عباس | ٤٢٣/١١ |
| «يا معشر الشباب من استطاع منكم الباءة...» | علقمة وعبد الرحمن ابن يزيد | ٥٨٢/١٣ |
| «يا معشر الشباب من استطاع منكم...» | عبد الله | ١١٢/٩ |
| «يا معشر قريش اشتروا أنفسكم من الله..» | أبو هريرة | ٦٤/١٣ |
| «يا معشر قريش إنكم تحبون الماشية...» | على بن الحسين | ١٨٧/١٢ |
| «يا معشر المسلمين إن هذا يوم جعله الله عيدًا للمسلمين...» | ابن السباق | ٤٣٢/٦ |
| «يا معشر المسلمين من يعذرنا من رجل قد بلغنا أذاه فى أهل بيتى؟» | عائشة | ٩٩/٢٠ |
| «يا معشر من آمن بلسانه ولم يدخل الإيمان قلبه» | أبو برزة | ٢٢٤/٢١ |
| «يا معشر المهاجرين والأنصار» | جابر بن عبد الله | ٥٦٧/١٨، ٥٦٨ |
| «يا معشر النساء أما لكن فى الفضة ما تحلين به...» | أخت حذيفة | ٢٠٤/٨، ٢٠٥ |
| «يا معشر النساء تصدقن فإنى رأيتكن أكثر أهل النار» | أبو سعيد الخدرى | ٤٠٣/٢، ٥٢١/٨ |
| «يا معشر النساء تصدقن وأكثرن الاستغفار...» | ابن عمر | ٤٤١/٢٠ |
| «يا معشر يهود أخرجوا إلى أعلمكم» | أبو هريرة | ٢٦٨/١٧ |
| «يا معشر يهود أسلموا تسلموا» | أبو هريرة | ٨٨/١٩ |
| «يا معشر يهود أسلموا قبل أن يصيبكم مثل...» | ابن عباس | ١٠/١٩ |
| «يا معشر اليهود أنشدكم بالله الذى أنزل التوراة على موسى...» | أبو هريرة | ٥٣٩/٢٠ |
| «يا معمر غطِّ فخذيك فإن الفخذين عورة» | محمد بن عبد الله بن جحش | ٢٠٢/٤ |
| «يا مغيرة خذ الإداوة» | المغيرة بن شعبة | ٧٤/٥ |

| | | |
|---|---|---|
| «يا نساء المسلمات لا تحقرن جارة لجارتها..» | أبو هريرة | ٣١٧/٨، ٥٠٩/١١، ١٢/ ٢٩٣ |
| «يا هزال لو سترته بثوبك كان خيرا لك...» | نعيم | ٥٣٠/١٧ |
| «يا هزال لو كنت سترت عليه بثوبك...» | نعيم بن هزال | ٢٠٥/١٧ |
| «يأتى أحدكم بما يملك فيقول: هذه صدقة...» | جابر بن عبد الله | ٢٥١/٨ |
| «يأتى الشيطان أحدكم فى صلاته فيلبس عليه...» | أبو هريرة | ٥٢٩/٤ |
| «يأتى على الناس زمان يأكلون فيه الربا..» | أبو هريرة | ٤٦/١١ |
| «يأتى فى آخر الزمان قوم حدثاء الأسنان...» | على | ٦٩/١٧ |
| «يأكل إن شاء» | عدى بن حاتم | ١٩١/١٩ |
| «يأكل حتى يشبع إذا كان جائعًا...» | أبو هريرة | ٥٨١/١٩ |
| «يأكله إلا أن ينتن» | أبو ثعلبة الخشنى | ١٩٣/١٩ |
| «يأمر بالمعروف وينهى عن المنكر» | أبو موسى الأشعرى | ٢٦٧/٢٠ |
| «يبارك لكم فيه» | المقدام بن معد يكرب | ٤٢١/١١ |
| «يبوء بإثمك وإثمه...» | أبو بكرة | ٧٩/١٧ |
| «يترك للمكاتب الربع» | على بن أبى طالب | ٤٧٧/٢١ |
| «يتصدق بدينار...» | ابن عباس | ٤٢٣/٢، ٤٢٨ ، ٤٣٠، ٤٣١ |
| «يتم صلاته» | أبو هريرة | ٦٨/٣ |
| «يتمون الصفوف المقدمة ويتراصون فى الصف» | جابر ين سمرة | ٢٥/٦ |
| «يجاء بالرجل يوم القيامة فيلقى فى النار...» | أسامة بن زيد | ٢٦٩/٢٠ |
| «يجتمع ملائكة الليل وملائكة النهار فى صلاة الفجر» | أبو هريرة | ٢٨٩/٣ |
| «يجزئ عن الجماعة إذا مروا...» | على بن أبى طالب | ١٦٥/١٨ |
| «يجزئ عنك الثلث من مالك» | بعض بنى السائب بن أبى لبابة | ١٨٠/٢٠ |
| «يجزئ عنك الثلث» | أبو لبابة | ٣٣٣/٨، ٣٣٤ |

| | | |
|---|---|---|
| «يجزئ عنك الثلث» | أبو أمامة، أو كعب بن مالك أو غيرهما | ١٨١/٢٠ |
| «يجزئ من الوضوء المد» | جابر | ١٠٠/٢ |
| «يجزيك طواف واحد بين الصفا والمروة لحجك وعمرتك» | عائشة | ٤٢/١٠ |
| «يجوز الجذع من الضأن أضحية» | أم بلال بنت هلال | ٢٨٢/١٩ |
| «يجيء الرجل آخذا بيد الرجل...» | عبد الله (ابن مسعود) | ٨٢/١٧ |
| «يجيء العبد يوم القيامة وقد تعلق بالرجل...» | رجل | ٨٣/١٧ |
| «يجير على أمتى أدناهم» | أبو هريرة | ٣١٠/١٨ |
| «يحرم من الرضاعة ما يحرم من الولادة» | عائشة | ٤٧/١٣، ٢٤٧/١٤، ٦/١٦ |
| «يحشر الناس يوم القيامة عليهم الفدام...» | معاوية بن حيدة القشيرى | ١١٧/١٥ |
| «يحضر الجمعة ثلاثة نفر...» | عبد الله بن عمرو | ٣٥٨/٦ |
| «يحلف منكم خمسون رجلا؟» | رجال من الأنصار | ٤٤٥/١٦ |
| «يخرب الكعبة ذو السويقتين من الحبشة» | أبو هريرة | ٢٤٦/٩ |
| «يخرج فى آخر الزمان قوم أحداث الأسنان...» | على | ١٠/١٧ |
| «يخرج قوم من النار بالشفاعة...» | جابر | ٢٥/٢١ |
| «يخرج من أمتى قوم يقرءون القرآن...» | على | ١٢/١٧ |
| «يخرص العنب كما يخرص النخل...» | عتاب بن أسيد | ١٤٠/٨ |
| «يخرص كما يخرص النخل...» | عتاب بن أسيد | ٣٧٣/١٣ |
| «يد الله مع القاضى حين يقضى...» | أبو أيوب الأنصارى | ٣٩٢/٢٠ |
| «اليد العليا خير من اليد السفلى...» | ابن عمر | ٣٩٢/٨، ٣٩٣ |
| «اليد العليا خير من اليد السفلى...» | حكيم بن حزام بن خويلد | ٣٢٠/٨ |
| «يد المعطى العليا ابدأ بمن تعول...» | ثعلبة بن زهدم | ٥٧٩/١٧ |
| «يد المعطى العليا وابدأ بمن تعول...» | طارق بن عبد الله المحاربى | ٣٨٦/١١ |
| «يد من أيديكم جنت» | أبو هريرة | ٤٠٤/١٦ |

| | | |
|---|---|---|
| «يدخل الجنة من أمتى زمرة هى سبعون ألفًا...» | أبو هريرة | ٤١٦/٢٠ |
| «يدخل الجنة من أمتى سبعون ألفا بغير حساب» | ابن عباس | ٥١٥/١٩ |
| «يدع شهوته وأكله وشربه من أجلى» | - | ٥١٩/٨ |
| «يذبحه فيأكله ولا يقطع رأسه فيرمى به» | عبد الله بن عمرو | ٣١١/١٩ |
| «يذهب الصالحون الأول فالأول...» | مرداس الأسلمى | ٣٦٣/٢٠ |
| «يرث هذا العلم من كل خلف عدوله...» | إبراهيم بن عبد الرحمن | ٩٤/٢١ |
| «يرحم الله المحلقين» | عبد الله بن عمر | ١٣٠/١٠ |
| «يرحم الله عز وجل ابن عفراء» | سعد بن أبى وقاص | ٥٣/١٦ |
| «يرحم الله فلانًا كأيّن من آية أذكرنيها..» | عائشة | ٣٧٨/٥ |
| «يرحمك الله ابن عفراء...» | سعد بن مالك | ٦٠/١٨ |
| «يرحمك الله ويأجرك» | أبو خالد الوالبى | ٤٥٨/٧ |
| «يرحمه الله لقد أذكرنى كذا وكذا آية...» | عائشة | ٣٧٧/٥ |
| «يرى يوم القيامة يعرف به» | أنس | ٥٧٠/١٦ |
| «يسأل أحدكم عن خبر السماء وهو يدع أظفاره» | أبو أيوب | ٤١/٢ |
| «يسألنى أحدكم عن خبر السماء ويدع...» | أبو أيوب الأزدى | ٤٢/٢ |
| «يسرا ولا تعسرا وبشرا ولا تنفرا...» | أبو موسى الأشعرى | ٢٣٨/٢٠ |
| «يسعك طوافك لحجك وعمرتك» | عائشة | ٤٣/١٠ |
| «يسلم الراكب على الماشى...» | أبو هريرة | ٦٩/١٩ |
| «يسلم الصغير على الكبير...» | أبو هريرة | ٦٨/١٩ |
| «يشفع الشهيد فى سبعين من أهل بيته» | أبو الدرداء | ٥٣٠/١٨ |
| «يصب عليه العذاب» | عروة بن الزبير | ١٩١/١٢ |
| «يصبح على كل سلامى من أحدكم صدقة...» | أبو ذر | ٤٧٧/٥ |
| «يصبح على كل سلامى منكم صدقة...» | أبو ذر | ٢٦٨/٢٠ |
| «يصلون لكم فإن أصابوا فلكم ولهم» | أبو هريرة | ٣٤/٥، ٩٨/٦ |
| «يصلى بكم أكثركم أخذًا - أو جمعًا- للقرآن» | عمرو بن سلمة | ٣٧٧/٦ |

| | | |
|---|---|---|
| «يصلى المريض قائمًا إن استطاع...» | الحسين بن على بن أبى طالب | ٤٤٥/٤ |
| «يصوب رأسه فى النار» | عروة بن الزبير | ١٩١/١٢ |
| «يضرب أحدكم امرأته ضرب العبد...؟» | عبد الله بن زمعة | ١٥٠/١٥ |
| «يضمدهما بالصبر» | عثمان بن عفان | ٤٨٤/٩ |
| «يضمن» | أبو هريرة | ٣١٧/٢١ |
| «يطبع المؤمن على كل شىء إلا الخيانة والكذب» | سعد بن أبى وقاص | ٤٩/٢١ |
| «يطعم عنه كل يوم مسكين» | ابن عمر | ٥٧٨/٨ |
| «يطعم عنه لكل يوم نصف صاع من بر» | ابن عمر | ٥٧٨/٨ |
| «يطفئون السنة» | عبد الله بن مسعود | ٩١/٦ |
| «يطهره ما بعده» | أم سلمة | ٥٧/٥ |
| «يعتق الرجل من عبده ما شاء...» | عبد الله المزنى | ٣١٠/٢١، ٣١١ |
| «يعتق رقبة» | خويلة بنت مالك بن ثعلبة | ٤١٥/١٥ |
| «يعتق؛ لأن الله يشاء العتق ولا يشاء الطلاق» | معاذ بن جبل | ٣٢٨/١٥ |
| «يعتمل بيده فينفع نفسه ويتصدق» | أبو موسى الأشعرى | ٢٦٧/٢٠ |
| «يعجب ربك من راعى غنم فى رأس شظية للجبل» | عقبة بن عامر | ١٤١/٣ |
| «يعض أحدكم أخاه كما يعض الفحل؟!...» | عمران بن حصين | ٥٥١/١٧ |
| «يعق عن الغلام شاتان مكافأتان...» | عائشة | ٣٩٠/١٩ |
| «يعقد الشيطان على قافية رأس أحدكم...» | أبو هريرة | ٣٤٢/٥، ٣٨٩ |
| «يعمد أحدكم إلى جمرة من نار فيجعلها فى يده» | عبد الله بن عباس | ١١٣/٥ |
| «يعمد أحدكم فى صلاته فيبرك كما يبرك الجمل» | أبو هريرة | ٥٥١/٣ |
| «يعمد أحدكم فيأتى بماله فيتصدق به...» | جابر بن عبد الله | ٣٣٤/٨ |
| «يعين ذا الحاجة الملهوف» | أبو موسى الأشعرى | ٢٦٧/٢٠ |
| «يغتسل» (الرجل يرى فى المنام البلل) | عائشة | ١٨/٢ |

| | | |
|---|---|---|
| «يغتسل» (الرجل يرى الماء ولا يذكر الاحتلام) | عائشة | ٢٢/٢ |
| «يغتسل من أربع من الجنابة ويوم الجمعة» | عائشة | ٣٨٠/٢ |
| «يغسل ذكره ويتوضأ» | على بن أبى طالب | ٣٤٨/١ |
| «يغسل ذكره ويتوضأ» | أبى بن كعب | ٧٢/٥ |
| «يغسل ذلك المكان» | ابن مسعود | ٦٨/٢ |
| «يغسل فرجه وأنثييه ويتوضأ وضوءه للصلاة» | على | ٧٠/٥ |
| «يغسل ما أصابه من المرأة ثم يتوضأ ويصلى» | أبى بن كعب | ٧١/٥ |
| «يغسل ما مس المرأة منه» | أبى بن كعب | ٩/٢ |
| «يغسل من بول الجارية ويرش من بول الغلام» | أبو السمح | ٨٤/٥ |
| «يغضب على ألا أجد ما أعطيه» | رجل من بنى أسد | ٤٢٤/١٣ |
| «يغفر الله لك يا أبا بكر» | أبو الدرداء | ١٨٧/٢١ |
| «يغفر للمؤذن مد صوته ويشهد له كل رطب ويابس سمع صوته» | عبد الله بن عمر | ٢٠٨/٣ |
| «يغفر للمؤذن مدى صوته ويشهد له كل رطب ويابس سمعه» | أبو هريرة | ٢٠٨/٣ |
| «يقال لصاحب القرآن يوم القيامة اقرأه وارقه» | عبد الله بن عمرو | ٤٣٢/٣ |
| «يقتل» | ابن عباس | ٢١٦/١٧ |
| «يقتل القاتل ويحبس الممسك» | إسماعيل بن أمية | ٢٤٠/١٦ |
| «يقتل قتيل وأنا فيكم لا يدرى من قتله؟...» | ابن عباس | ١٥٣/١٦ |
| «يقتل المحرم الحية والعقرب...» | أبو سعيد الخدرى | ٣٨٧/١٠ |
| «يقسم خمسون منكم على رجل منهم...» | سهل بن أبى حثمة ورافع بن خديج | ٤٣٩/١٦، ٤٤٠ |
| «يقضى الله عز وجل فى ذلك» | جابر بن عبد الله | ٤٨٩/١٢ |
| «يقضى الله فى ذلك» | جابر بن عبد الله | ٤٤٦/١٢ |
| «يقضى عنه» | صالح بن كيسان | ٥٩٤/٨ |
| «يقطع صلاة الرجل إذا لم يكن بين يديه مثل مؤخرة الرحل...» | أبو ذر | ٣٤١/٤ |

| | | |
|---|---|---|
| «يقطع الصلاة الكلب والحمار والمرأة الحائض واليهودي...» | عبد الله بن عباس | ٣٤٥/٤ |
| «يقطع الصلاةَ المرأةُ الحائض والكلب» | عبد الله بن عباس | ٣٤٤/٤ |
| «يقطع الصلاةَ المرأةُ والكلب والحمار...» | أبو هريرة | ٣٤٣/٤ |
| «يقعد أعرابها على أذناب» | أبو هريرة | ٢٤٧/٩ |
| «يقول ابن آدم: مالى مالى» | عبد الله بن الشخير | ٤٦٢/٧ |
| «يقول الله تبارك وتعالى: قسمت هذه السورة...» | أبو هريرة | ٣٩٨/٣ |
| «يقول الله تبارك وتعالى: يؤذينى ابن آدم...» | أبو هريرة | ١٣٣/٧ |
| «يقول الله عز وجل: إن عبدًا أصححت جسمه» | أبو سعيد الخدرى | ٥٦٥/١٠ |
| «يقول الله عز وجل: أنا ثالث الشريكين» | أبو هريرة | ٥٧١/١١ |
| «يقول الله عز وجل: الصوم لى وأنا أجزى» | أبو سعيد | ٤٥/٩ |
| «يقول الله عز وجل: الصوم لي...» | أبو هريرة | ٥٢٠/٨ |
| «يقول العبد مالى مالى إنما له من ماله ثلاث ما أكل فأفنى» | أبو هريرة | ١٤٤/٧ |
| «يقول الله: الصوم لى وأنا أجزى به» | أبو هريرة | ٤٣/٩ |
| «يقيم المهاجر بعد قضاء نسكه ثلاثًا» | - | ١٦٣/٦ |
| «يقيم المهاجر بمكة بعد قضاء نسكه ثلاثًا» | العلاء بن الحضرمى | ١٦٢/٦ |
| «يكشف» | أبو مسعود | ٤٥/٧ |
| «يكفر السنة الماضية والباقية» | أبو قتادة | ٦٩/٩ |
| «يكفر السنة والسنة التى قبلها» | أبو قتادة | ١٢٣/٩ |
| «يكفر السنة» | أبو قتادة | ٧٠/٩، ١٢٣ |
| «يكفر سنتين» | أبو قتادة | ٧٠/٩ |
| «يكفرن العشير ويكفرن الإحسان...» | عبد الله بن عباس | ١١٣/١٥ |
| «يكفيك أن تأخذ كفًا من ماء فتنضح...» | سهل بن حنيف | ٦٩/٥ |
| «يكفيك طواف واحد بعد المعرَّف لحجك وعمرتك» | عائشة | ٢٥٤/١٠ |

| | | |
|---|---|---|
| «يكفيك الماء ولا يضرك أثره» | أبو هريرة | ٦٤/٥ |
| «يكفيك منها آية الصيف التى أنزلت...» | عمر بن الخطاب | ٤٧٠/١٢ |
| «يكفيكن الحج» | عائشة | ٢٠٥/٩ |
| «يكون بعدى أئمة لا يهتدون...» | حذيفة بن اليمان | ٥٦١/١٦ |
| «يكون فرقة بين طائفتين من أمتى...» | أبو سعيد | ٩/١٧ |
| «يكون في آخر الزمان قوم يخضبون...» | ابن عباس | ١٧٢/١٥ |
| «يمرقون من الدين كما يمرق السهم من الرمية» | على | ١١/١٧ |
| «يمسح المسافر ثلاثة أيام» | خزيمة بن ثابت | ٣٢٤/٢، ٣٢٦ |
| «يمكث المهاجر بمكة بعد قضاء نسكه ثلاثًا» | ابن الحضرمى | ١٦١/٦ |
| «يمن الخيل فى شقرها» | ابن عباس | ٢٢٥/١٣ |
| «اليمين على المدعى عليه» | ابن عباس | ٢٤٢/٢١ |
| «اليمين الكاذبة منفقة للسلعة ممحقة للكسب» | أبو هريرة | ١٢/١١ |
| «اليمين للذى بيده الأرض» | عدى | ٢٤٩/٢١ |
| «يمينك على ما يصدقك به صاحبك» | أبو هريرة | ١٧٠/٢٠ |
| «ينام الرجل نومة فتقبض الأمانة من قلبه...» | حذيفة | ٣٦١/٢٠ |
| «ينحر لهم ثور الجنة» جواب علي سؤال: فما غذاء أهل الجنة بعد زيادة كبد الحوت؟ | ثوبان | ٢٤/٢ |
| «ينزل الله عز وجل إلى السماء الدنيا...» | أبو هريرة | ٣٤٩/٥ |
| «ينزل ربنا عز وجل كل ليلة...» | أبو هريرة | ٣٤٨/٥ |
| «ينصب لكل غادر لواء يوم القيامة» | ابن عمر | ٥٦٩/١٦ |
| «ينضح بول الغلام ويغسل بول الجارية» | على بن أبى طالب | ٨٤/٥ |
| «ينفى عاما من المدينة» | أبو هريرة | ١٨٨/١٧ |
| «ينقطع كل نسب إلا نسبى...» | المسور بن مخرمة | ٥٤٦/١٣ |
| «ينهاكم الله عن الربا ويقبله منكم؟!» | عمران بن حصين | ١٧١/٤ |
| «يهرم ابن آدم وتبقى منه اثنتان الحرص والأمل» | أنس بن مالك | ١٤٢/٧ |
| «يهل أهل المدينة من ذى الحليفة» | ابن عمر | ٣٦٨/٩، ٣٦٩، ٣٧٠ |

| | | |
|---|---|---|
| «يهل أهل المدينة من ذى الحليفة» | عائشة | ٣٧٥/٩ |
| «يهل أهل اليمن من يلملم» | ابن عمر | ٣٦٨/٩ |
| «يؤتى بالقاضى العادل... » | عائشة | ٢٧٥/٢٠ |
| «يؤتى بالقاضى العدل يوم القيامة فيلقى من شدة الحساب...» | عائشة | ٢٧٥/٢٠ |
| «يود أهل العافية يوم القيامة أن جلودهم قرضت بالمقاريض» | جابر بن عبد الله | ١٦٧/٧ |
| «يودى المكاتب بحصة ما أدى دية حر...» | عبد الله بن عباس | ٤٦٧/٢١ |
| «يودى المكاتب بقدر ما أدى» | على بن أبى طالب | ٤٦٨/٢١ |
| «يودى المكاتب بقدر ما عتق منه دية الحر...» | عبد الله بن عباس | ٤٦٩/٢١ |
| «يورث من حيث يبول» | ابن عباس | ٥٩٩/١٢ |
| «يوشك أحدكم أن يصلى الصبح أربعًا» | مالك بن القشب | ٢٨٤/٥ |
| «يوشك أن تضربوا أكباد الإبل» | أبو هريرة | ٨٧/٣ |
| «يوشك أن يقعد الرجل منكم على أريكته» | المقدام بن معد يكرب الكندى | ٥٧٩/١٣ |
| «يوشك أن ينزل فيكم ابن مريم...» | أبو هريرة | ٦٤/١٢ |
| «يوشك الرجل متكئ على أريكته...» | المقدام | ٤٧٩/١٩ |
| «يوفى الجذع مما يوفى منه الثنى» | مجاشع بن مسعود | ٢٨٠/١٩ |
| «يوفى الجذع من الضأن ما توفى الثنية» | رجل | ٢٨١/١٩ |
| «يوفى الجذع من المعز ما توفى الثنية» | رجل | ٢٨١/١٩ |
| «يوكل الموكل على النطفة بعدما تستقر...» | حذيفة بن أسيد | ٥١٢/١٥ |
| «يوم الجمعة لا يوجد عبد مسلم يسأل الله شيئا إلا آتاه...» | جابر بن عبد الله | ٤٥٤/٦ |
| «يوم سابعه ويحلق ويسمى» | سمرة بن جندب | ٣٨٨/١٩ |
| «يوم عاشوراء يوم كان يصومه أهل الجاهلية» | ابن عمر | ٩٢/٩ |
| «يوم عرفة ويوم النحر وأيام التشريق عيدنا» | عقبة بن عامر | ١١٧/٩ |

| | | |
|---|---|---|
| «يوم عرفة اليوم الذى يُعرِّف الناس فيه » | عبد العزيز بن عبد الله | ٢٦٤/١٠ |
| «يؤم القوم أقرؤهم لكتاب الله...» | أبو مسعود الأنصارى | ٦٠٤/٥ ، ٧٥/٦، ٩٣ |
| «يؤم القوم أقرؤهم لكتاب الله» | - | ٦٠٨/٥ |
| «يؤم القوم أكثرهم قرآنًا...» | أبو مسعود الأنصارى | ٧٦/٦ |
| «يوم المجاهد فى سبيل الله كألف يوم فيما سواه» | عثمان بن عفان | ٥٢٧/١٨ |
| «يوم من إمام عدل أفضل من عبادة ستين سنة...» | ابن عباس | ٥٧٩/١٦ |
| «اليوم الموعود يوم القيامة» | أبو هريرة | ٢٢٤/٦ |
| «يؤمكم أقرؤكم لكتاب الله...» | أبو مسعود البدرى | ٩٤/٦ |